हिंदी पुस्तक-साहित्य

[१८६७-१९४२ ईस्वी]

माताप्रसाद गुप्त,

एम० ए०, डी० लिट्०

लेक्चरर, हिंदी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय

१९४५

हिंदुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०,

इलाहाबाद

स्वर्गीय पितामह

श्री० नारायणदास साहु की

पुण्य-स्मृति में

जिन्हें १९४० की विजयादशमी की छुट्टियों में

मृत्यु-शैया पर छोड़ कर

इस कार्य की धुन में दिल्ली गया

और पुनः जिनके दर्शन प्राप्त न कर सका

—लेखक

प्रस्तावना

प्रस्तुत कृति ईस्वी सन् १८६७ और १९४२ के बीच में प्रकाशित उन समस्त मुद्रित पुस्तकों तथा उनके लेखकों, शीर्षकों, प्रकाशकों और संस्करणों का यथासंभव एक तिथि-क्रम में उल्लेख करने का प्रयत्न करती है जो मूलतः हिन्दी में है, अथवा हिन्दी में अनूदित या रूपांतरित हैं, और जो अपने-अपने विषय के साहित्य के इतिहास में स्थान पाने की अधिकारिणी हैं।

समय की सीमाएँ—१८६७ की तिथि तीन कारणों से रक्खी गई है। एक तो १८६७ में ही देश के पुस्तक-प्रकाशन का नियंत्रण करने के की आवश्यकता समझी गई, और 'रेजिस्ट्रेशन आव बुक्स ऐंड प्रेस ऐक्ट' बना, जिसके द्वारा भारत में प्रकाशित प्रत्येक पुस्तक के अनिवार्य रूप से अपने-अपने प्रान्तीय रजिस्टर में दर्ज कराने और इस प्रकार निर्मित सूची के त्रैमासिक रूप में प्रान्तीय गज़ट में प्रकाशित होने की व्यवस्था की गई; दूसरे, १८६७ के पहले हिंदी में प्रकाशन की गति इतनी धीमी रही कि उसके कुछ ही बाद आनेवाले वर्षों के अनुपात में वह प्रगतिहीन तक कही जा सकती है; और तीसरे, हिन्दी साहित्य के एक युग का आरंभ इसी तिथि से माना जा सकता है—इसी वर्ष भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पहली मौलिक रचना प्रकाशित हुई, उन भारतेन्दु की जिनको उस युग का उन्नायक और आधुनिक हिन्दी साहित्य का पिता माना जा सकता है। १९४२ को दूसरी सीमा मानने के कारण भी इसी प्रकार एक से अधिक हैं; १९४२ तक की त्रैमासिक सूचियाँ समस्त प्रान्तीय गज़टों में प्रकाशित हो चुकी हैं; पर बाद की सूचियाँ उस संयुक्तप्रान्त के ही गज़ट में अभी नहीं प्रकाशित हुई हैं जिसमें वस्तुतः अधिकांश हिन्दी साहित्य का सृजन हो रहा है; दूसरे, कागज़ के प्रतिबंधों और छपाई की बढ़ी दर के कारण भी १९४३ से प्रकाशन-कार्य एक प्रकार से रुक सा गया है; और तीसरे, अपने देश में १९४२ से जो युद्धोयोग प्रारंभ हुआ उसके कारण इधर देश की चिन्ताधारा अपनी समस्त स्वच्छंदता के

साथ प्रवाहित नहीं हो सकी है। फलतः १८६७ तथा १९४२ की तिथियाँ देश के साहित्य के इतिहास में अलग-अलग अपना स्वतंत्र महत्व रखती हैं।

चयन—इस अवधि के बीच मुद्रित प्रत्येक पुस्तक का समावेश करना प्रस्तुत कृति का लक्ष्य नहीं है; इसमें केवल ऐसी ही कृतियों का समावेश हुआ है जो प्रायः अपने विषय के साहित्य के इतिहास में एक निश्चित स्थान की अधिकारिणी हैं।* प्रत्येक विषय के साहित्य के इतिहास में कुछ धाराएँ और परंपराएँ दिखलाई पड़ती हैं, जिनके प्रारंभ, समृद्धि और ह्रास का स्पष्ट करना साहित्य के इतिहास का एक सर्व-प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए। यह स्पष्टीकरण प्रत्येक धारा का सूत्रपात करने वाली प्रायः समस्त रचनाओं, समृद्धिकाल की कलापूर्ण और अधिकारपूर्ण रचनाओं, और ह्रासकाल की सबसे अधिक पूर्ण और त्रुटिहीन रचनाओं का विवरण दिए बिना यथेष्ट रूप से कदाचित् नहीं हो सकता, इस कारण चयन में उपर्युक्त सिद्धान्त का निरंतर ध्यान रक्खा गया है। अपूर्णता तथा त्रुटियों की संभावना इस प्रकार के चयन में अवश्यंभावी है। आशा है कि उन्हें यथासंभव दूर करने में विद्वानों का सहयोग अवश्य प्राप्त होगा।

पुस्तक विभाजन—मुख्य पुस्तक दो अंशों में विभक्त है प्रत्येक विषय के साहित्य की सूची—जिसे सुविधा के लिए 'विषय सूची' कहा गया है, और प्रत्येक लेखक द्वारा प्रस्तुत साहित्य की सूची—जिसे सुविधा के लिए 'लेखक सूची' कहा गया है। इनके अतिरिक्त दो अंश और हैं; भूमिका तथा पुस्तक अनुक्रमणिका। भूमिका में कुछ अन्य बातों के अतिरिक्त प्रत्येक विषय के साहित्य का उसके दो युगों में सिंहावलोकन किया गया है। और पुस्तक अनुक्रमणिका में प्रत्येक पुस्तक के उल्लेख की पृष्ठ-संख्या दी गई है। इन चारों अंशों की रचना अलग-अलग उद्देश्यों से हुई है।

---

*शिक्षा-विभाग की आवश्यकताओं के लिए लिखी गई पुस्तकों का समावेश इसी दृष्टि से १९०९ के अनंतर प्रायः नहीं किया गया है।

मुख्य पुस्तक के प्रथम अंश का उद्देश्य है प्रत्येक विषय के साहित्य का एक ही दृष्टि में ऐतिहासिक परिचय। किसी भी विषय वर्ग के संबंध में यदि यह जानना हो कि उस पर साहित्य कितना है और किसी भी काल-भाग में उसकी प्रगति किन दिशाओं अथवा धाराओं में रही है तो उक्त सूची को उठाकर देखने पर जानने में देर न लगेगी। इस अंश में प्रत्येक विषय का साहित्य चार विभागों में बाँट कर रक्खा गया है; 'प्राचीन' अर्थात् १८६७ से पूर्व निर्मित साहित्य, 'तत्कालीन' अर्थात् १८६७-१९४२ में निर्मित सामान्य साहित्य, 'बाल' अर्थात् १८६७-१९४२ में अपरिपक्क बुद्धि के पाठकों के लिए निर्मित साहित्य, और 'अनूदित' अर्थात् अन्य भाषाओं से रूपांतरित साहित्य। तत्कालीन साहित्य को प्रकाशन-क्रम से रखने का यत्न किया गया है, और इस प्रयास में प्रथम संस्करण की तिथि को ही, यदि वह प्राप्त है, आधारभूत माना गया है। परवर्ती संस्करणों की तिथियाँ केवल प्रथम के अप्राप्य होने पर ही गई हैं, और जब इस प्रकार की तिथियाँ दी गई हैं तब संस्करण का भी उल्लेख कर दिया गया है—अन्यथा प्रथम संस्करण ही समझना चाहिए। प्राचीन साहित्य का समावेश सामान्यतः ग्रंथों के रचना-काल के क्रम से किया गया है, किन्तु अनेक ग्रंथों के रचना-काल अप्राप्य या निश्चित रूप से प्राप्य न होने के कारण इस नियम में व्यतिक्रम भी हो गया है। अनूदित अंश में यह काल-क्रम की व्यवस्था और भी शिथिल है, क्योंकि अन्य भाषाओं के साहित्य का इतिहास मेरा और भी कम पढ़ा हुआ है। इस क्रम के स्थान पर प्राचीन तथा अनूदित साहित्य प्रकाशन की तिथियों के क्रम में दिया जा सकता था; किन्तु उससे ऐतिहासिक धारणा के निर्माण में सहायता मिलने के स्थान पर बाधा ही पड़ती, इसलिए वह क्रम नहीं रक्खा गया—वैसे प्रकाशन की यह तिथियाँ लेखक-सूची से प्राप्त की जा सकती हैं। रचना-काल-संबंधी इस अनिश्चय और अज्ञान के कारण ही इन विभागों में कोई भी तिथियाँ नहीं दी गई हैं।

दूसरा अंश इसी प्रकार अलग-अलग विभिन्न लेखकों के साहित्यो-

द्योग का इतिहास प्रस्तुत करने का यत्न करता है, और इसमें संख्याओं के द्वारा प्रत्येक कृति के विषय का भी संकेत कर दिया गया है। विषय-सूची देखने के अनंतर यदि जानना यह हो कि किसी कृति का उसके लेखक के साहित्योद्योग में क्या स्थान है तो वह लेखक के नाम को अकारादि क्रम से इस सूची में देखकर उक्त रचना की तिथि को देखते हुए अभीष्ट स्थान पर पहुँच सकता है—केवल प्राचीन तथा अनूदित साहित्य के संबंध में तिथि विषय-सूची में न होने के कारण सहायक न होगी। और, इसी प्रकार यदि लेखक-सूची को देखने के अनंतर किसी लेखक की किसी रचना के संबंध में यह जानना हो कि वह अपने विषय के साहित्योद्योग में क्या स्थान रखती है तो लेख-सूची में दिए हुए विषय-विभाजन संबंधी संकेत देखकर रचना-तिथि का अनुगमन करते हुए अविलंब उस कृति के स्थल तक पहुँच सकता है। विषय-सूची में तिथि का उल्लेख न होने के कारण प्राचीन तथा अनूदित साहित्य के संबंध में यहाँ भी थोड़ी-सी असुविधा हो ही सकती है।

भूमिका में अन्य कुछ बातों के अतिरिक्त साहित्य का एक सिंहावलोकन है। यह सिंहावलोकन 'तत्कालीन' सामान्य साहित्य तक ही सीमित है, और दो अंशों में विभक्त है : १८६७-१९०९, जिसे विगत युग का साहित्य कहा गया है, और १९०९-१९४२, जिसे वर्त्तमान युग का साहित्य कहा गया है। १९०९ की तिथि को इन ७५ वर्षों के इतिहास में एक क्रांतिविन्दु इसलिए माना गया है कि आधुनिक काल में यह तिथि हिंदी के लगभग प्रत्येक विषय के साहित्य के इतिहास में एक नवीन युग का सूत्रपात करती है, जैसा इस सिंहावलोकन से स्वतः स्पष्ट हो जावेगा। इस अंश में ध्यान केवल विचार और भाव-धाराओं के विकास का रक्खा गया है, और इसी के आधार पर प्रत्येक विषय के साहित्य का विभाजन किया गया है। इस प्रकार के सिंहावलोकन में पुस्तकों का विषय-संकेत आवश्यक था, उसे करने का यत्न किया गया है; पर जो भी विषय-परिचायक सूचनाएँ प्राप्त हैं, वह प्रायः ऐसी अपर्याप्त और कभी-कभी अविश्वसनीय हैं कि उनसे पूरा काम लेना या

उन पर पूर्णरूप से निर्भर करना असंभव था, और अनेकानेक पुस्तकों के संबंध की यह सूचनाएँ भी अप्राप्य हैं; ऐसी दशा में दो ही बातें हो सकती थीं : या तो सिंहावलोकन इस सामग्री की सहायता से किया जाता और रिक्त स्थलों की पूर्ति काम चलाने के लिये किसी न किसी प्रकार—कभी-कभी अनुमान का आश्रय लेते हुए भी—की जाती, या तो सिंहावलोकन का विचार ही छोड़ दिया जाता। मैंने दूसरे की अपेक्षा पहले को ही ठीक समझा, क्योंकि इस प्रकार का प्रयास आवश्यक था, चाहे उसमें कितनी भी अपूर्णता और कितना ही अनिश्चय क्यों न हो। एक बार इस प्रकार का प्रयास हो जाने पर कभी-न-कभी वह लेखकों और विद्वानों के सहयोग से पूर्ण और निश्चित हो ही सकता है। फलतः इस सिंहावलोकन के उपयोक्ताओं को बहुत सतर्कता के साथ उसमें उल्लिखित तथ्यों को ग्रहण करना होगा यह बात अधिक से अधिक स्पष्ट हो जानी चाहिए।

चौथे अंश में अकारादि क्रम से पुस्तकों का नामोल्लेख करते हुए वे पृष्ठ-संख्याएँ दी हुई हैं जिन पर प्रस्तुत ग्रंथ में उनका उल्लेख हुआ है—केवल पुस्तक के नाम की सहायता से भी अनुक्रमणिका का आश्रय लेते हुए तत्संबंधी सूचनाएँ ग्रंथ में देखी जा सकती हैं।

उल्लेख प्रणाली—लेखकों का नाम पूरा-पूरा, प्रायः उनकी उपाधियों आदि के सहित, केवल लेखक-सूची में दिया हुआ है—अन्य स्थानों पर उनके नामों का सर्वप्रमुख वैयक्तिक अंश ही उद्धृत हुआ है; पुनः, 'प्राचीन' में लेखकों का उल्लेख उनके उपनामों की सहायता से हुआ है, और इसी प्रकार 'तत्कालीन' में लेखकों का उल्लेख उनके वास्तविक नामों की सहायता से, यद्यपि कभी-कभी दोनों का उल्लेख किया गया है; इस नियम की अवहेलना आवश्यक ज्ञान के अभाव में ही हुई है। पुस्तकों का नामोल्लेख भी, इसी प्रकार, पूर्ण रूप से केवल लेखक-सूची में मिलेगा; अन्य अंशों में नाम बड़ा होने पर प्रायः उसका मुख्यांश ही उल्लिखित हुआ है। पुस्तकों के प्रकाशन-स्थान की सूचनाएँ तो केवल लेखक-सूची में दी गई हैं; यद्यपि अन्य

किसी सूची के साथ भी वे दी जा सकती थीं पर दो कारणों से यह उचित समझा गया : एक तो इसलिए कि प्रकाशन-गृहों का संबंध हिंदी के सामान्य प्रकाशनोद्योग के इतिहास में—विज्ञानपरिषद् जैसी दो-चार संस्थाओं को छोड़कर—विशेष विषयों के साथ उतना नहीं है जितना विशेष लेखकों के साथ इस—संबंध में 'वैशेषिकता' (Specialisation) का सूत्रपात अभी हुआ ही नहीं है, और दूसरे, इसलिए कि लेखकों और पुस्तकों का नाम भी पूर्ण विस्तार के साथ उसी सूची में दिया गया है। प्रकाशन-गृहों तथा तिथियों के संबंध में एक अव्यवस्था अनिवार्य हो गई है। प्राप्त सूचनाओं में कभी तो केवल प्रकाशन-गृहों के अध्यक्षों और अधिष्ठाताओं का उल्लेख मिला है, और कभी केवल प्रकाशन-गृहों का; दोनों का सर्वत्र उल्लेख नहीं मिला है, इसलिए कभी-कभी एक ही प्रकाशक का उल्लेख विभिन्न पुस्तकों के संबंध में दो प्रकार से हो गया है। तिथियाँ मैंने प्रकाशन की ही देने का यत्न किया है—जो केवल गज़टों में प्रकाशित त्रैमासिक सूचियों में प्राप्त होती हैं; उन्हीं पुस्तकों के संबंध में मुझे मुद्रण-तिथियाँ देकर संतुष्ट होना पड़ा है जिनकी सूचनाएँ मैंने अन्यत्र से प्राप्त की हैं। पुस्तकों पर मुद्रण-तिथि ही दी हुई होती है, जो प्रकाशन-तिथि से प्रायः कुछ महीने पहले हुआ करती है; इसलिए उन पुस्तकों की तिथियों के सम्बंध में कभी-कभी १ वर्ष का अंतर मिल सकता है जो वर्ष के अन्तिम महीनों में मुद्रित होती हैं।

वर्गीकरण—वर्गीकरण के अनेक दृष्टिकोण, और उन्हीं के अनुसार अनेक आधार हो सकते हैं। साथ ही ड्यूयी जैसी एक बहुप्रचलित प्रणाली को लेकर बहुप्रचारजनित उसकी सुविधाओं के कारण भी उसके स्वीकार का समर्थन किया जा सकता है। किंतु, मेरा विचार है कि वह प्रणाली और इस प्रकार की और भी कुछ वैदेशिक प्रणालियाँ हमारी आवश्यकताओं के ध्यान से अनुपयुक्त हैं। इस प्रसंग में ज़रा विस्तार के साथ विचार करना आवश्यक होगा। पहले हम ड्यूयी के मुख्य वर्गों में से कुछ को ले सकते हैं : पहला वर्ग है सामान्य कृतियों (General works), का जिसमें विभिन्न ढंगों के साहित्य का

समावेश हुआ है। साहित्यिक विवेचन और साहित्यिक इतिहास के दृष्टिकोण से इस वर्ग की न कोई विशेष आवश्यकता है, और न हिंदी में इस वर्ग का कोई उल्लेखनीय साहित्य ही है। दूसरे और तीसरे वर्ग हैं दर्शन (Philosophy) और धर्म (Religion) के। भारत में दर्शन और धर्म—ज्ञान और कर्म—अलग-अलग विवेचित नहीं हुए हैं, और केवल पश्चिमी आदर्शों पर लिखे गए दर्शन-ग्रंथों का अब भी प्रायः अभाव ही है, इसलिए इन्हें अलग-अलग वर्गों में रखने की आवश्यकता नहीं है। एक ओर तो इस प्रकार का विस्तार है, दूसरी ओर समस्त ललित साहित्य (Literature) को जो कदाचित् किसी भी भाषा में संपूर्ण साहित्य का आधे से कम न ठहरेगा और हिंदी में तो आधे से अधिक ही होगा—एक ही वर्ग में रखा गया है; प्रकट है कि इसका समर्थन भी साहित्यिक विवेचन तथा साहित्यिक इतिहास-लेखन के दृष्टिकोण से करना कठिन होगा। विषयों के विभाजन-विस्तारों में जाइये तो सैद्धान्तिक मतभेद हो सकता है। ललित साहित्य (Literature)—जिससे हमें सबसे अधिक संबंध है—इतिहास-भूगोल की तरह विषय के अनुसार विभाजित न होकर देश के अनुसार विभाजित हुआ है: अमेरिकन इंग्लिश, जर्मन, फ्रेंच, इटालियन, स्पैनिश, लैटिन, ग्रीक तथा अन्य। विभिन्न देशों का यह साहित्य तदनंतर विभिन्न साहित्य-रूपों जैसे काव्य आदि में रखा गया है। फिर प्रत्येक का साहित्य काल-विभाग के अनुसार ६ कालों में विभक्त हुआ है। और फिर प्रत्येक काल में ६ विभाग किए गए हैं—आठ में आठ सर्वप्रमुख लेखक हैं, और नवें में उनसे उतरी कक्षा के लेखक हैं। ललित साहित्य का संकेताङ्क ८०० है। अंग्रेज़ी साहित्य का ८२० है। अंग्रेज़ी काव्य का ८२१ है। अंग्रेज़ी काव्य के विक्टोरियन काल का ८२१·८ है और यह निम्नलिखित प्रकार से विभक्त है, ·८१ टेनीसन, ·८२ इलिज़ाबेथ ब्राउनिंग, ·८३ राबर्ट ब्राउनिंग, ·८४ रॉसेटी, ·८५ मॉरिस, ·८६ स्विनबर्न, ·८७ ब्रिजेज़, ·८८ वाट्सन तथा ·८९ छोटे कवि। इस प्रकार के वर्गीकरण से यह स्पष्ट होगा कि चिन्ता-धाराओं और

काव्य-परंपराओं का अध्ययन नहीं हो सकता। साथ ही, इस प्रणाली में विषय-विभाजन अनिवार्य रूप से ६ या कम वर्गों में ही किया जा सकता है, अधिक में नहीं। यह व्यवधान अत्यंत कृत्रिम है, और पुस्तकालय-प्रबंध की दृष्टिकोण से चाहे जितना सुविधाजनक हो अध्ययन विवेचन और इतिहास की दृष्टि से नितांत अवैज्ञानिक और असुविधाजनक है। शेष प्रणालियों में से केवल एक और प्रणाली का उल्लेख करना आवश्यक होगा—जिसका प्रयोग हाल में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से प्रकाशित अंग्रेज़ी में अपने ढंग की अद्वितीय पुस्तक 'कैम्ब्रिज बिब्लिओग्राफ़ी आव् इंग्लिश लिटरेचर' में किया गया है। उसके संपादकों ने १८००-१६०० के साहित्य को इन वर्गों में रक्खा है : १. साहित्यिक सूचियाँ और साहित्यिक इतिहास, २. कविता, ३. उपन्यास और आख्यायिका, ४. नाटक, ५. समालोचनात्मक और मिश्रित गद्य, ६. इतिहास, दर्शन, विज्ञान तथा अन्य ज्ञान प्रणालियाँ, और ७. अन्य देशों का साहित्य। इन विभागों में एक-एक लेखक की समस्त कृति एकत्र हो गई है, और उस लेखक के संबंध का साहित्य भी वहीं दिया गया है। यह प्रणाली ड्यूयी से कितना विपरीत है यह समझने में कठिनाई न होगी। मैंने इन दोनों अतिवादों से बचने का यत्न किया है। न तो समस्त ललित—और समस्त देशों के ललित—साहित्य को एक वर्ग में कसने का व्यर्थ यत्न किया है, और न इतिहास, दर्शन, विज्ञान तथा अन्य ज्ञान-प्रणालियों में से सबको अलग-अलग रक्खा है। साथ ही, साहित्य में मिलने वाली लेखकों और साहित्यकारों से संबंध रखने वाली समालोचनात्मक और परिचयात्मक सामग्री का स्वतंत्र ऐतिहासिक और विवेचनात्मक अध्ययन भी हो सकता है, इसलिए उसका एक स्वतंत्र-वर्ग रक्खा है। आशा है कि वर्गीकरण और विषय विभाजन का यह प्रयास हमारी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सुविधाजनक होगा। प्रत्येक मुख्य वर्ग में किन-किन विषयों का समावेश होना चाहिए, इस संबंध में भी मतभेद के लिए अवसर पर्याप्त हो सकता है, और जितना ही अधिक विचार किया जावेगा उतना ही अधिक उसमें

सुधार की भी संभावना हो सकती है। किन-किन विषयों का समावेश मैंने किस-किस वर्ग में किया है प्रस्तुत पुस्तक के उपयोग के लिए यही जानना यथेष्ट होगा, और वह भूमिका के सिंहावलोकन की विषयानुक्रमणिका को देख कर हृदयंगम किया जा सकता है।

आभार प्रदर्शन शेष है। सबसे पहले मैं कृतज्ञ हूँ इंपीरियल रेकॉर्ड्‌स आफ़िस, दिल्ली के अध्यक्ष डा० सुरेन्द्रनाथ सेन तथा उनके विभाग के कर्मचारियों का जिन्होंने मुझे समस्त प्रान्तों के १८६७ से १९४१ तक के गज़ट देखने की संपूर्ण सुविधाएँ प्रदान कीं। १९४२ तथा १९४३ के शेष आवश्यक गज़ट मैंने कलकत्ता की इंपीरियल लाइब्रेरी में देखे, इसलिए उक्त लाइब्रेरी के भी अध्यक्ष तथा कर्मचारियों का मैं अनुगृहीत हूँ। अपने प्रान्त के अधिकतर गज़ट मैंने प्रयाग विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी तथा स्थानीय पब्लिक लाइब्रेरी में देखे। इन लाइब्रेरियों के अध्यक्षों और कर्मचारियों का मैं बाधित हूँ। पुस्तकालयों और उनके सूचीपत्रों के उपयोग के संबंध में हिंदी साहित्य-सम्मेलन-संग्रहालय तथा पुनः प्रयाग विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी के अधिकारियों का उपकृत हूँ, जिन्होंने अपने समस्त सूचीपत्र और संग्रह मेरे उपयोग के लिए सुलभ किए। नागरी-प्रचारिणी सभा काशी के आर्यभाषा पुस्तकालय के नवीन सूचीपत्र का उपयोग न कर सका इसका मुझे खेद है। सन् १९४३-४४ में बहुत सी लिखा-पढ़ी के अनंतर भी प्रस्तुत कार्य के लिए वहाँ के अधिकारी उसे एक सप्ताह के लिए भी न दे सके, यद्यपि उसकी दो टाइप की हुई प्रतियाँ उनके पास थीं, और उनके पास उसका एक कार्ड-इन्डेक्स भी था।

प्रकाशन के संबंध में हिन्दुस्तानी अकेडेमी, यू० पी० के अधिकारियों का हृदय से कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने इस ग्रंथ को प्रकाशित कर हिंदी जनता के लिए इसे सुलभ किया।

इस ग्रंथ के लिए प्रेस कापी तैयार करने में मेरे एक पूर्वछात्र और इस समय प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में रिसर्च-स्कालर श्री रामसिंह तोमर तथा पुस्तक-अनुक्रमणिका तैयार करने में मेरे एक

पूर्वछात्र और इस समय प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में रिसर्च-स्कालर श्री विश्वनाथ मिश्र से मुझे अमूल्य सहायता मिली है; उनका मैं कृतज्ञ हूँ। पुस्तक के प्रेस में जाने के पूर्व उसकी भूमिका के कुछ अंश देख कर प्रयाग विश्वविद्याल के अपने सहयोगी डा० रामकुमार वर्मा तथा डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, और हिंदू विश्वविद्यालय, काशी के डा० श्री कृष्ण लाल ने कुछ संशोधन किए हैं, इसके लिए इन महोदयों का भी मैं आभारी हूँ।

कार्य-सपादन के लिए मैं वाधित हूँ प्रयाग विश्वविद्यालय के अधिकारियों का, और विशेषरूप से उसके वाइस-चांसलर माननीय डा० अमरनाथ जी झा का, जिन्होंने समय-समय पर प्रयाग से बाहर जाकर इस कार्य को पूरा करने में सुविधाएँ प्रदान की। अंत में, पर सब से अधिक, मैं कृतज्ञता-प्रकाश करना चाहता हूँ श्रद्धेय डा० धीरेन्द्र वर्मा के प्रति, जिनके निरंतर प्रोत्साहन के बिना यह कार्य असंभव था, और जिन्होंने इस कार्य के संपादन में अनेक सत्परामर्श दिए हैं।

इस प्रकार का कार्य, जहाँ तक मुझे ज्ञात है, किसी भी भारतीय भाषा में अभी तक नहीं हुआ है, इसलिए मुझे आशा है कि हिंदी जनता और हिंदी विद्वान् अनेक त्रुटियों के रहते हुए भी इसे सगर्व अपनावेंगे और त्रुटि-परिहार में सहायक होंगे। प्रेस के आवश्यक सहयोग के अनंतर भी इस ग्रंथ में छपाई की भूलों की कमी नहीं है, इसका कारण अधिकतर प्रूफ़ देखने में मेरी ही असावधानी है। पुस्तक साल भर में धीरे-धीरे छपती रही है, इसलिए ज्ञान वृद्धि के साथ-साथ प्रायः बाद में छपे हुए अंशों में पहले छपे हुए अंशों की अपेक्षा दूसरे प्रकार की भूलें कम मिलेंगी, किंतु छापे की भूलों से वह अंश भी ख़ाली नहीं हैं। शुद्धि-पत्र में केवल अत्यंत आवश्यक संशोधनों का ही समावेश किया गया है। ऐसे संशोधनों का समावेश उसमें नहीं किया जा सका है जो विचारशील पाठक स्वतः कर सकते हैं। आशा है कि वे इसके लिए मुझे क्षमा करेंगे।

हिंदी विभाग,
प्रयाग विश्वविद्यालय

माता प्रसाद गुप्त

विषय-तालिका

भूमिका खंड

(३) वर्त्तमान युग का साहित्य :

विषय-सूची खंड

संकेत और संक्षेप

लेखक-सूची में प्रत्येक पुस्तक के नाम के अनंतर ही कुछ संख्याएँ और कुछ वर्ण कोष्टको के भीतर दिए गए है। वे उनके विषय-विभाजन का संकेत करते हैं, और उनसे इस प्रकार का आशय लेना चाहिए :—

१ = काव्य
२ = उपन्यास
३ = कहानी
४ = नाटक
५ = निबंध
६ = साहित्य-शास्त्र
७ = जीवन-चरित्र
८ = इतिहास
९ = देश-दर्शन
१० = भाषा-दर्शन
११ = ललित कला
१२ = उपयोगी कला
१३ = शरीर-रक्षा
१४ = विज्ञान
५१ = समाज-शास्त्र
१६ = शिक्षा
१७ = धर्म
१८ = समालोचना
१९ = साहित्य का इतिहास
२० = विभाषा साहित्य का अध्ययन

अनू० = प्राचीन
प्रा० = अनूदित
बा० = बाल

इसके अतिरिक्त दो और संक्षिप्त रूप कुछ स्थलों पर व्यवहृत हुए हैं :—

सं० = संपादक लि० = लिमिटेड

भूमिका

१. हमारी चिन्ताधारा

हिंदी साहित्य का प्रथम सूत्र सिद्धों और नाथपंथियों के साहित्य में मिलता है, जो बौद्धमत की उस महायान शाखा के विकसित रूप थे जो समाज के समस्त स्तरों के प्राणियों को निर्वाण दिलाने का दावा करता था, और जो हीनयान की भाँति केवल विरक्तों और सन्यासियों के निर्वाण से संतुष्ट नहीं था। ये साधक नाना मतों का खंडन करते थे, सहज और शून्य में समाधि लगाने को कहते थे और गुरु की भक्ति—कभी-कभी उन्हें बुद्ध से भी बड़ा बताकर—करने का उपदेश करते थे। प्रायः समाज के दलित वर्ग से उत्पन्न होने के कारण इन्हें सामाजिक विषमता का कटु अनुभव हुआ करता था, और इसीलिए जाति-पाँति का खंडन इन्होंने खूब किया है—यद्यपि यह भी हो सकता है कि स्वतः महायान धर्म का ही इसमें काफ़ी हाथ हो, क्योंकि उसके उपदेशक और भी से जाति-पाँति का विरोध करते आ रहे थे। यह सिद्ध और नाथपंथी साधक एक विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग करते थे, और कभी-कभी अपने उपदेश विरोधाभास-प्रचुर उलटवासियों के रूप में रखते थे। इनका साहित्य मुख्यतः गीतों में, दोहों में और चौपाइयों में है, और उसका विकास पूर्वी मध्यदेश और उसकी पूर्वी सीमा पर हुआ।

मध्यदेश की पश्चिमी सीमा पर तथा राजस्थान में प्रायः इसी समय एक अन्य साहित्य का विकास हुआ जो चारण-साहित्य कहा जाता है। इन चारणों ने अपने क्षत्रिय आश्रयदाता शासकों की कीर्ति का गान किया है जिनमें जातीय दर्प और कुलाभिमान की एक अति के कारण पारस्परिक युद्ध और कलह का प्राधान्य था—और जिसके फलस्वरूप ही यह देश विधर्मी आक्रमणकारियों के हाथ में चला गया। चारणों ने अनेक रासों में उनके इसी वीर और उद्धत चरित्र का अतिरंजित वर्णन किया है। इस परंपरा का सबसे अधिक विकसित ग्रंथ 'पृथ्वीराज रासो' है जो अनेक छंदों में निर्मित हुआ है।

उपर्युक्त समस्त साहित्य अपभ्रंश-मिश्रित हिंदी में है—हिंदी का पूर्ण विकास उसमें नहीं दिखाई देता। उसका वास्तविक विकास बाद में आने-वाले साहित्य में मिलता है।

१४०० ई० के लगभग हिंदी साहित्य में एक नवीन धारा का प्रादुर्भाव होता है जो हमारे साहित्य के इतिहास में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है : वह है भक्ति-धारा। दक्षिण भारत में इसका इतिहास पुराना है किंतु, उत्तर भारत में इसका पुनरावर्तन मुख्यतः रामानंद जी के द्वारा हुआ। रामानंद जी की शिष्य-परंपरा में दो विभिन्न परंपराओं का विकास हुआ; निर्गुण राम-भक्ति और सगुण राम-भक्ति। निर्गुण भक्ति वाले संत—जिनमें कबीरदास सर्वप्रमुख हैं—प्रायः हिंदू समाज के निम्न स्तर और मुसलमान समाज से उत्पन्न हैं, और इन पर उस सिद्धमत और नाथपंथ का गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। उन्हीं की भाँति यह भी नाना मतों का खंडन करते थे, शून्य और सहज में समाधि लगाने को कहते थे, और गुरुभक्ति का उप देश—कभी-कभी उन्हें गोविन्द से भी बड़ा बताकर—किया करते थे। जाति-पाँति का खंडन इन्होंने भी खूब किया। और इनकी रचनाएँ भी गीतों में—जिन्हें यह सबद (शब्द) कहते थे, दोहों में—जिन्हें यह साखी कहते थे, और चौपाइयों में—जिन्हें यह रमैनी (रामायणी) कहते थे पाई जाती हैं। पर इनमें उनकी अपेक्षा विशेषता यह है कि भक्ति को इन्होंने सर्वोपरि माना है, उनके वामाचार की इन्होंने निन्दा की है, और इस्लाम से भी कभी-कभी कुछ बातें ग्रहण की हैं।

रामानंद जी की सगुणभक्ति-परंपरा में—जिसमें सर्वप्रमुख तुलसीदास हैं—किसी भी मत-मतान्तर का खंडन नहीं है, बल्कि सभी के प्रति एक उदार भावना है : नाभादास जी ने अपने समय के और अपने पूर्व के प्रायः समस्त संप्रदायों के संतों का उल्लेख 'भक्तमाल' में अभूतपूर्व श्रद्धा और आदर के साथ किया है। इस परंपरा में शून्य और सहज आदि योग के तत्वों को कोई महत्व नहीं दिया गया

है। गुरु को भी उतना महत्व नहीं प्रदान किया गया है जितना निर्गुणभक्ति-परंपरा में। और, जाति-पाँति के संबंध में समाज के लिए वर्णाश्रम व्यवस्था का समर्थन किया गया है—यद्यपि साधना क्षेत्र में उसका निराकरण किया गया है। वर्णाश्रम धर्म के सबसे बड़े समर्थक तुलसीदास स्वत: अपनी कोई जाति-पाँति नहीं मानते और अपना गोत्र भी अपने स्वामी का ही गोत्र बताते हैं। भक्ति के संबंध में इस परंपरा की श्रद्धा अविभाजित थी—योग तथा ज्ञानादि में इनकी आस्था कदाचित् एकदम नहीं थी। तुलसीदास ने अपने समय में प्रचलित हिंदी की प्राय: समस्त साहित्यिक और लोकगीत की पद्धतियों में अपनी अपूर्व प्रतिभा का चमत्कार दिखाया, और हमारे मध्ययुग के साहित्य के इतिहास में प्रबंध-काव्य का वह आदर्श उपस्थित किया जो अब भी उच्चतम है। किंतु, तुलसीदास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने भारतीय संस्कृति का एक ऐसा सर्वमान्य रूप सब के सामने रक्खा जैसा बहुत कम हुआ है। वे भारतीय संस्कृति के सबसे अधिक सच्चे प्रतिनिधियों में से हैं, और यही कारण है कि उनका स्थान भारतीय साहित्य में ही नहीं विश्व-साहित्य में भी महत्वपूर्ण है।

सगुण भक्ति की एक और धारा इसी समय प्रवाहित हुई : वह थी कृष्णभक्ति धारा। इसमें अनेक परंपराएँ विकसित हुईं—जिनमें से सबसे अधिक महत्वपूर्ण है वल्लभाचार्य की, जिसमें हमारे साहित्य के अप्रतिम कवि सूरदास का आविर्भाव हुआ। तुलनाप्रेमी समालोचक भले ही यह कह दें कि सूरदास ने केवल एक ही साहित्यिक पद्धति पर रचना की, और जीवन की बहुरूपता उनकी रचनाओं में नहीं पाई जाती, पर उन्हें भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि जिस पद्धति को उन्होंने अपनाया और जीवन के जिस क्षेत्र को उन्होंने अपनी प्रतिभा का क्रीड़ाक्षेत्र बनाया उनमें वह अद्वितीय हैं। बालस्वभाव और मातृ-हृदय के चित्रण में जितने सफल सूरदास हुए है संसार का कोई भी अन्य कवि कदाचित् ही उतना सफल हुआ होगा, और प्रेम के दोनों पक्षों—संयोग और विरह का जितना पूर्ण और मनोरम विकास

सूरदास ने किया है वह भी हिंदी साहित्य के लिए कम गर्व की बात नहीं है। कृष्णभक्ति-धारा के कवियों की एक बड़ी विशेषता है लोक-जीवन की उपेक्षा, और यह उपेक्षा एक प्रकार से अनिवार्य थी, क्योंकि इनकी भक्ति ही कृष्ण के उस जीवन से संबद्ध थी जिसमें लोक मर्यादा की उपेक्षा है। इन कवियों ने प्रायः गीति-परंपरा को ही सम्पन्न बनाया, और निस्संदेह उसे काफ़ी ऊँचा उठाया।

साधना की एक और धारा हिंदी साहित्य के इतिहास में उल्लेखनीय है; वह है सूफ़ी प्रेमधारा, जो इस देश में मुसलमानों के साथ आई। यह एक प्रकार से हिंदू और मुसलमान संस्कृतियों और साधनाओं की उस सामान्य भावभूमि का स्पर्श करती थी जिसका केन्द्र प्रेम है। समाज में प्रचलित कुछ कथानकों को लेकर इन सूफ़ी कवियों ने लौकिक सौन्दर्य के द्वारा अलौकिक सौन्दर्य, लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम की अद्भुत व्यंजना की है। इनकी समस्त रचनाएँ चौपाई-दोहा पद्धति पर प्रबंधकाव्य के रूप में मिलती हैं, और साहित्य में एक आवश्यक अभाव की पूर्ति करती हैं।

ईस्वी १७वीं शताब्दी के प्रारंभ से साहित्य में एक नवीन धारा प्रकट हुई, वह थी रीतिधारा। यह आमूल साहित्यिक थी और साहित्य शास्त्र का आधार लेकर चली थी। रस और अलंकार इस धारा के दो किनारे थे—यद्यपि रस-विवेक इसमें उतना ही ग्रहण किया गया था जितना नायक-नायिका भेद के अन्तर्गत आता था। नायक और नायिका के पदों पर आसीन किए गए कृष्ण और राधिका, और उन्हें शृङ्गार-रस के ही आलंबन के रूप में ग्रहण किया गया। नवीनता इस बात में नहीं थी कि कृष्ण और राधा को शृङ्गाररस के आलंबन के रूप में पहले-पहल ग्रहण किया गया—ऐसा तो पहले से भी था, और सूरदास के भी पद-समूह को यथावत् समझने के लिए कभी-कभी नायक-नायिका भेद का ज्ञान अनिवार्य हो जाता है। नवीनता इस बात में थी कि वर्ण्य विषय कृष्ण-चरित्र नहीं था वरन् नायक-नायिका भेद ही था। अलंकारों के संबंध में भी एक प्रवृत्ति प्रायः देखी जाती है: आश्रयदाताओं की

कथाचर्चा—क्योंकि इस धारा के अधिकतर कवि किसी न किसी के आश्रित थे—अलंकारों के उदाहरण में की गई है, और कभी-कभी छंद-संग्रहों के नाम के साथ उनके नाम भी संबद्ध हुए हैं। इस समस्त साहित्य के संबंध में एक बात और भी ध्यान देने योग्य है। वह यह है कि इस धारा का कवि-समुदाय साहित्य की सृष्टि कर रहा था, साहित्य-शास्त्र की नहीं—उसका लक्ष्य काव्य-रचना ही विशेष था, काव्यशास्त्र का विवेचन नहीं; इसीलिए यद्यपि शास्त्रीय विवेचन की दृष्टि से इसका योग सामान्य ही है—और कभी-कभी तो प्राचीन आचार्यों के द्वारा निर्दिष्ट लक्षणों की उपेक्षा भी उदाहरणों में मिल सकती है—पर उदाहरणों की सरसता और काव्योचित उदाहरणों की बहुलता में निस्संदेह इसका योग असाधारण है। कुछ समालोचकों की सम्मति में तो इस बात में यह संस्कृत के रीति-साहित्य से भी आगे बढ़ जाता है। इस धारा के कवियों ने विशेष रूप से कवित्त और सवैया छंदों को ही माँजा है, यद्यपि दोहे को भी उन्होंने परिष्कार प्रदान किया है।

ईस्वी १६वीं शताब्दी के आरंभ में इस रीतिधारा में ह्रास परिलक्षित होने लगता है। वास्तविक कविता का स्थान रूढ़िवाद लेने लग गया और प्रायः शताब्दी के मध्य तक पहुँचते-पहुँचते ह्रास की यह प्रक्रिया पूर्ण हो गई। इसी समय हमने पाश्चात्य साहित्य और संस्कृति से परिचय प्राप्त करना प्रारंभ किया, और हमारे राजनैतिक जीवन में एक बड़ी क्रांति उपस्थित हुई। १८५७ ई० तक समस्त हिंदी प्रदेश अंग्रेज़ी शासन की परिधि में आ चुका था, और उसके अनंतर वह निरंतर अधिकाधिक अंग्रेज़ी साहित्य और संस्कृति से प्रभावित होने लगा था। अभी तक हमारा लगभग समस्त साहित्य पद्य में था और—निस्संदेह अनेक कारणों से—जीवन से बहुत दूर था, अब वह गद्य में भी ढलने लगा और जीवन के निकट आने लगा। आश्रयदाता दरबारों के नष्ट हो जाने के कारण अपने गुण-ग्राहक हमारे कवियों और लेखकों को सामान्य जनता में बनाने पड़े, और पाश्चात्य जगत के वस्तुवाद से प्रभावित होकर उनका ध्यान दैनिक जीवन की ओर भी गया। परिणाम

यह हुआ कि साहित्य में एक अभूतपूर्व परिवर्तन दिखाई पड़ा—यद्यपि शताब्दी के अन्त तक रीतिधारा का प्रभाव काव्य-क्षेत्र में बहुत कुछ अक्षुण्ण बना रहा, और एकाध नवीन साहित्य-रूपों—जैसे उपन्यास—में वह कुछ आगे तक भी बना रहा।

ईस्वी २०वीं शताब्दी के प्रारंभ में यह दशा भी बदल जाती है। साहित्य में न धर्म का वह बाह्य और संकुचित रूप रह जाता है और न वह रीतिरूढ़ता। साहित्य के प्रत्येक अंग में एक स्वस्थ विकास लक्षित होने लगता है, और जीवन के आदर्शों में एक क्रांति परिलक्षित होने लगती है। अहर्निशि यह प्रवृत्ति बढ़ती जाती है, और धीरे-धीरे साहित्य की एक बहुमुखी वृद्धि होने लगती है। काव्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, समालोचना, इतिहास और विज्ञान, आदि सभी अंगों पर तेज़ी से साहित्य-निर्माण प्रारंभ हो जाता है। आज का साहित्य पिछले समस्त युगों के साहित्य की अपेक्षा समाज के सामान्य जीवन के अधिक निकट है। नारी अब पिछली शताब्दी तक की वासना-पूर्ति का साधन-मात्र न रह कर हमारे लिए एक कोमल, उदार और पवित्र भावनाओं को उद्दीप्त करनेवाली देवी बन गई है। धर्म का पिछला सांप्रदायिक रूप अब चला गया है, और वह एक व्यापक मानव धर्म का रूप ग्रहण करने लग गया है। जीवन का भी कुछ और व्यापक अर्थ लिया जाने लगा है, और उसके आदर्श बदले हुए दिखाई पड़ने लगे हैं। जीना अपने लिए उतना नहीं है, और न उस परोक्ष सत्ता और उस परोक्ष जीवन के लिए है जो अज्ञात है, जीना है मानवता के लिए; आज का साहित्य—और साहित्यिक—मानवतावादी है।

किंतु, यह सब हुआ है प्रायः पिछले ७५ वर्षों में ही। क्या फिर भी, हमारे साहित्य का भविष्य आशापूर्ण नहीं है? एक पराधीन जाति का साहित्य, बिना किसी राजकीय सहायता के, शासक जाति के एक अत्यंत विकसित साहित्य के सामने जिसे सभी प्रकार के प्रोत्साहन प्राप्त हैं, और उर्दू जैसी विभाषा के अनेक रूपों में आड़े आते हुए भी इतना आगे बढ़ सका यह बात साधारण नहीं है। पर यह बात कुछ

नई भी नहीं है। और, जब हम यह देखते हैं कि प्रायः अपने जन्म के साथ ही हमारे साहित्य को इन्हीं परिस्थितियों में से गुज़रना पड़ा है, और फिर भी इसने निरंतर उन्नति की है तो हमें यह विश्वास कर लेना चाहिए कि इसके मूल में जीवन का शाश्वत तत्व विद्यमान है। अपूर्णता इसमें बहुत है पर हमारे जीवन में भी तो बड़ी अपूर्णता है। और जब तक हम पराधीन बने रहेंगे तब तक अपने जीवन और साहित्य की पूर्णता हमारे लिए एक मिथ्या कल्पना मात्र होगी। फिर भी, पिछले दस सौ वर्षों से लगातार कुचले गए मध्यदेश के दस करोड़ मनुष्यों की चिन्ताधारा से वास्तविक परिचय प्राप्त करने का एकमात्र साधन यही साहित्य है, इसलिए विश्वास है कि मानवता के विकास में रुचि रखने वाला विश्व स्वतः इसकी रक्षा में दत्तचित्त रहेगा।

पिछले ७५ वर्षों के अपने इस साहित्य का ज़रा और विस्तृत परिचय प्राप्त करने की आवश्यकता है। हमें और निकट से इसकी गतिविधि का निरीक्षण करना चाहिए, और देखना चाहिए कि इसके प्रत्येक अंग पर कार्य क्या हुआ है और कहाँ तक हमने प्राप्त साधनों से लाभ उठाया हैं, और कहाँ तक हमने उनकी अवहेलना की है; कहाँ तक हमने अपनी शक्ति का सदुपयोग किया है, और कहाँ तक उसका दुरुपयोग किया है और पुनः जो कुछ हमने किया है वह हमने अपनी किन भावनाओं तथा किन प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर किया है। नीचे उक्त काल के समस्त साहित्य को दो युगों—१८६७-१६०६ ई० जिसको विगत युग कहा गया है, तथा १६०६-१६४२ ई० जिसे वर्तमान युग कहा गया है—में विभाजित कर इसी दिशा में एक सामान्य प्रयास किया है। आशा है कि अपने आधुनिक साहित्योद्योग को यथावत् समझने में यह सहायक होगा।

२. विगत युग का साहित्य

काव्य

विगत युग के हिंदी काव्य-साहित्य को उसकी मुख्य प्रवृत्तियों के अनुसार हम निम्नलिखित वर्गों में विभक्त पाते हैं। १. राम-चरित्र, २. कृष्ण-चरित्र, ३. शिव-चरित्र, ४. पौराणिक उपाख्यान, ५. संत-चरित्र, ६. भक्ति-स्तुति, ७. शृङ्गारात्मक, ८. नखशिख, ९. प्रकृति-चित्रण, १०. लोकगीत, ११. स्थान-वर्णन, १२. मानव-चरित्र, १३. सामाजिक, १४. विनोद-व्यंग्य, १५. सामयिक तथा राष्ट्रीय, और १६. स्फुट मुक्तक। यह वर्ग यद्यपि एक दूसरे से सर्वथा स्वतंत्र नहीं हैं, फिर भी प्रायः प्रत्येक का एक व्यक्तित्व है। उसी के अनुसार हम नीचे इस साहित्य पर विचार करेंगे।

१. राम-चरित्र—आलोच्यकाल में राम के पौराणिक चरित्र को लेकर बहुत थोड़ी रचनाएँ हुईं। जानकीप्रसाद महंत का 'सुजस कदंब' (१८७७) इस परंपरा की पहली उल्लेख-योग्य रचनाओं में से है। रघुराज सिंह का 'राम-स्वयंवर' (१८७९), जो अपने वर्णन-विस्तारों के के लिए अति प्रसिद्ध है, रमणविहारी की 'रामकीर्ति-तरङ्गिणी' (१८८३ रिप्रिंट), जिसमें केवल बालकाण्ड की कथा कही गई है, श्रीराम कृत 'प्रेम-सरोवर' (१८८४), जिसमें पूरी कथा राग-रागिनियों में कही गई है, लाला सीताराम की 'सीताराम चरित्र-माला' (१८८५), रमण-विहारी की एक दूसरी और पहिली की अपेक्षा कुछ विस्तृत रचना 'रामचन्द्र सत्योपाख्यान' (१८८६ रिप्रिंट), जिसमें पुनः केवल विवाह तक की कथा का समावेश हुआ है, जानकीप्रसाद महंत की एक दूसरी रचना 'रामनिवास रामायण' (१८८९), जो विविध छंदों में कथा का विस्तार करती है, कालिकाप्रसाद सिंह की 'मानस-तरंगिणी' (१८९६),

जिसमें धनुर्भंग की घटना का विस्तृत वर्णन किया गया है, तथा अक्षय-कुमार का 'रसिक-विलास रामायण' (१९०१) इस परंपरा की अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं।

इस युग में राम-काव्य का विकास वस्तुत: एक दूसरी ही दिशा में हुआ। कृष्ण-साहित्य तथा अवध की नवाबी की शृङ्गारपूर्ण परंपराओं से प्रभावित होकर इस काल के भक्तों और कवियों ने राम को 'कन्हैया' बना कर छोड़ा। रमणविहारी का 'जुगल-विहार' (१८७७) इसी दूसरी दिशा में किया गया एक प्रयास है। नंदकिशोर दूबे का 'जल-झूलन' (१८७९) राम-सीता के सरयू-विहार का वर्णन करता है। रघुबरचरण की 'दोलोत्सव दीपिका' (१८८५) में उनके हिंडोले के वर्णन हैं। हीराप्रसाद का 'शृङ्गार-प्रदीप' (१८८६) दिव्य दंपति के शृङ्गार का चित्रण करता है। रामरत्न गोस्वामी का 'सियावर-केलि पदावली' (१८९०) गोपीवल्लभ कृष्ण के अनुकरण पर सीता-वल्लभ राम की क्रीड़ाओं का वर्णन करती है। सियादासके 'षट्ऋतु विनोद' (१८९२) में विभिन्न ऋतुओं में रामसीता-विहार का विस्तार किया गया है। रामनाथ प्रधान के 'राम होरी-रहस्य' (१८९३) में राम को होली खेलाई गई है। रानी. रघुराज कुँवरि का 'रामप्रिया-विलास' (१८९३), कालिकाप्रसाद सिंह का 'राम रसिक-शिरोमणि' (१८९५), स्वामी सूरकिशोर का 'मिथिला-विलास' (१८९५), मधुर अली की 'युगल-विनोद पदावली' (१८९६), रसरङ्गमणि की 'सरयू-रसरङ्ग-लहरी' (१८९८), 'युगलप्रिया' की 'युगलप्रिया' (१९०२) तथा महादेवलाल की 'रहस्य-पदावली' (१९०६) इसी परंपरा की अन्य रचनाएँ हैं।

२. कृष्ण-चरित्र—कृष्ण का पौराणिक रूप अब लुप्त हो चला था। थोड़े से 'रुक्मिणी-मङ्गलों' को छोड़ कर—जिनमें से उल्लेखनीय शंभुराय (१८६९), विष्णुदास (१८७५), तथा हरिनारायण (१८९३) के हैं—एकाध ही रचना हमें ऐसी मिलती है जिसमें हमें कृष्ण के पौराणिक चरित्र के दर्शन होते हैं, जैसे गंगाधर कवि की

'कृष्ण-चरितावली' (१८६३), में; शेष समस्त कृष्ण-काव्य में हमें गोपीवल्लभ कृष्ण ही मिलते हैं।

इस दूसरी प्रकार की रचनाओं में हरिश्चंद्र का 'विरह-शतक' (१८६७), जो उनकी प्राथमिक रचनाओं में से है, गोपिकाओं के विरहोद्गार उपस्थित करता है। उनकी 'देवी छद्मलीला' (१८७३) में राधा देवी के रूप में कृष्ण के सामने आती हैं, और उन्हें विस्मित करने का प्रयत्न करती हैं। राधाकृष्ण के 'व्रजविलास' (१८७६) में व्रज की लीलाओं का वर्णन है। रघुवंश सहाय ने 'व्रज-वनयात्रा' (१८७६) में गोचारण आदि लीलाओं का वर्णन किया है। कुन्दन-लाल की 'लघुरस-कलिका' (१८७६) के पदों में राधाकृष्ण की कथा द्वारा साहित्य के नवरसों तथा वात्सल्य का परिपाक किया गया है। हरिश्चंद्र का 'युगल-सर्वस्व' (१८७६) दिव्य दंपति के प्रेम का चित्रण करता है। छत्रदास के 'मानमुंज-चरित्र' १८८०) में निम्बार्क मत के सिद्धान्तों के अनुसार राधाकृष्ण की कथा कही गई है। खड्गबहादुर-मल्ल की 'जोगिन-लीला' (१८८३) में कृष्ण की एक छद्मलीला का वर्णन हुआ। व्रज की लीलाओं का एक संक्षिप्त वर्णन गोवर्धनदास धूसर की 'व्रजविलास-सारावली' (१८८४ द्वितीय) में मिलता है। अम्बिकादत्त व्यास ने 'सुकवि-सतसई' (१८८७) में कृष्ण की प्रेमलीलाओं का विस्तार सात सौ दोहों में किया है। राधागोविन्ददास की 'दोहावली मानलीला' (१८८६) में राधा के मान की कथा है। गोविन्द सहाय की 'श्याम-केलि' (१८८६) में कृष्ण की कुछ लीलाओं का वर्णन है। राधाकान्त शरण ने 'साहित्य युगल-विलास' (१८८६) में दिव्य दंपति के विलास का वर्णन किया है। नवनीत लाल की 'कुब्जा पचीसी' (१८८६), में कुब्जा और कृष्ण के प्रेम सम्बन्धी छन्द हैं। दुनियामणि त्रिपाठी की 'कृष्ण पदावली' (१८६०) में कृष्ण-चरित्र संबंधी स्फुट पद हैं। वैद्यनाथ शर्मा की 'गोपी-विरह छंदावली' (१८६१) का विषय स्वतः प्रकट है। दंपति की काम-क्रीड़ाओं का एक वर्णन महेश्वरबख्श सिंह कृत 'प्रिया-प्रियतम-विलास' (१८६१) में भी हुआ

है। वृन्दावन के उनके विहार का वर्णन विस्तारपूर्वक वेणीमाधव अग्निहोत्री के 'वृन्दावन आमोद' (१८६२) में हुआ है। बच्चू चौवे के 'ऊधो-उपदेश' (१८६२) का विषय भ्रमरगीत है। बलवीर के 'राधिका-शतक' (१८६२) में राधा-संबंधी एक सौ छंद हैं। श्यामसुन्दर का 'राधा-विहार' (१८६२) भी इसी प्रकार की रचना है। द्वारकादास के 'रासपञ्चाध्यायी' (१८६२) का विषय स्पष्ट ही है। बसंत जायसी के 'कृष्ण-चरित्र' (१८६४) में भी ब्रज की लीलाओं का विस्तार किया गया है। श्यामसुन्दर के 'रसिक-विनोद' (१८६५) का विषय भी राधा-कृष्ण-प्रेम है। और 'राधिका-मङ्गल' (१६०३) में लक्ष्मीनारायण नृसिंहदास ने राधा-कृष्ण का विवाहोत्सव तक मनाया है। गजराजसिंह के 'अजिर-विहार' (१६०४) में कृष्ण की शिशुलीला का विस्तार किया गया है। हीरासखी के 'अनुभवरस' (१६०६) में राधा-कृष्ण की लीलाओं का एक विस्तृत तथा गिरिराज कुँवर के 'ब्रजराज-विलास' (१६०६) में उसका एक सामान्य वर्णन मिलता है। फलतः कृष्ण-काव्य में ब्रजवल्लभ और गोपीवल्लभ कृष्ण को कितनी प्रधानता दी गई है यह स्पष्ट हो गया होगा।

३. शिव-चरित्र—शिव की उपासना बहुप्रचलित होते हुए भी हिन्दी-प्रदेश में स्वतंत्र न हो सकी, इसीलिए वह व्यापक रूप से यहाँ काव्य का विषय भी न हो सकी। शिव-चरित्र का स्थान इस युग के साहित्य में भी नगण्य है। राजाराम कृत 'शंकर-चरित-सुधा' (१८८२), लाला सीताराम का 'पार्वती-पाणिग्रहण' (१८८४), तंत्रधारी सिंह की 'शिव-उमंग' (१८८६) तथा लखपतराय कृत 'शशिमौलि' (१८८६) इस परंपरा की इनी-गिनी रचनाएँ हैं।

शक्ति-उपासना तो भक्ति के प्रवाह में पहले ही न टिक सकी थी। हिन्दी-प्रदेश में मुख्यतः बिहार प्रान्त में ही उसको आश्रय मिला था। आलोच्य-काल में केवल एक उल्लेखनीय रचना शाक्त-मत की मिलती है: वह है टेकनारायण प्रसाद की 'शाक्त-मनोरञ्जन' (१८६१), जो बिहार की देन है।

४. पौराणिक उपाख्यान—पौराणिक उपाख्यानों को लेकर काव्य-रचना हिंदी प्रदेश में बहुत पहले से होती आ रही है। वस्तुतः रामकाव्य और कृष्णकाव्य भी पौराणिक काव्य ही हैं, किन्तु इनकी स्वतंत्र परंपराएँ – विशेष रूप से कृष्ण-काव्य की—इस प्रकार विकसित हुईं कि उनमें पौराणिकता नाममात्र की रह गई, इसलिए इनकी गणना पौराणिक काव्य-कोटि में न की जानी चाहिए। राम और कृष्ण-काव्य की अत्यधिक लोकप्रियता का एक परिणाम और भी हुआ : दूसरे प्राचीन आख्यानों-उपाख्यानों को लेकर उत्कृष्ट काव्य-निर्माण हिंदी में आलोच्य-काल तक न हो सका।

रामकथाश्रित उपाख्यानों में से एक को लेकर 'सुलोचनाख्यान' (१८७७) नाम की एक रचना रघुनाथप्रसाद की मिलती है; एक अन्य उपाख्यान को लेकर 'श्रवणाख्यान' (१८९३) नाम की रचना दलपतिराम कवि की मिलती है; और लवकुश-चरित्र को लेकर उसी नाम की एक रचना (१९०२) मिश्रबंधु की मिलती है।

कृष्णकथाश्रित उपाख्यानों में से उषा-अनिरुद्ध की कथा लेकर सबसे अधिक रचनाएँ की गईं। सीताराम का 'उषा-चरित्र' (१८७१), गजाधर शुक्ल का 'उषा-चरित्र' (१९०२), ललनप्रिया का 'अनिरुद्ध-परिणय' (१९०३), तथा शंकर का 'उषा-चरित्र' (१९०४), उसी कथा से संबंध रखते हैं। कृष्ण-सुदामा की मैत्री की कथा लेकर भी इसी प्रकार अनेक रचनाएँ उपस्थित की गईं। वीर कवि का 'सुदामा-चरित्र' (१८८१), शालिग्राम वैश्य का 'सुदामा-चरित्र' (१८९३), तथा कुञ्जनदास का 'सुदामा-विनोद' (१९०२) उसी कथा पर आधारित हैं। रामदयाल का 'बलभद्र विजय' (१९०३) भी कृष्णकुल का ही है।

पौराणिक कुल के शेष उपाख्यान-काव्यों में से उल्लेखनीय हैं ईश्वरदास जगन्नाथ कृत 'द्रौपदी आख्यान' (१८८४), लालताप्रसाद का 'धनञ्जय-विजय' (१८९२) तथा लक्ष्मीनारायण नृसिंह जी कृत 'नलदमयंती-चरित्र' (१९०४), जो महाभारत कुल के हैं।

स्फुट उपाख्यान-काव्यों में से उल्लेखनीय हैं जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

कृत 'हरिश्चंद्र' (१८९९), प्रसिद्ध नारायणसिंह कृत 'सावित्री उपाख्यान' (१९०३) तथा खुन्नालाल शर्मा कृत 'इन्दुमती-परिणय' (१९०६) जिनमें से अंतिम की रचना 'रघुवंश' के आधार पर हुई है।

पौराणिक कथाओं के संबंध में यह धारणा बहुत प्राचीन है कि वे शोक और विषाद का हरण करती हैं। अतएव कतिपय पौराणिक कथाओं को लेकर इस युग में गोकुलचंद ने 'शोक-विनाश' (१८७०) तथा रामभजन त्रिवेदी ने 'राधा-विषाद-मोचनावली' (१९०७) की रचना की। अन्तिम के साथ राधा का संबंध हेतुमात्र का है।

५. संत-चरित्र—हमारे काव्य-साहित्य के इतिहास में संतों के चरित्र इने-गिने हैं। आलोच्य काल में केवल एक संत-चरित्र ऐसा मिलता है जिसका उल्लेख किया जा सके; वह है दलपतिराम कवि कृत 'पुरुषोत्तम-चरित्र' (१८८४)। किंतु, यह अकेली रचना भी महत्वपूर्ण है। इसमें गुजरात के स्वामीनारायण संप्रदाय के संस्थापक सहजानंद जी का जीवन-वृत्त ब्रजभाषा में ७६४ पृष्ठों में उपस्थित किया गया है।

६. भक्ति-स्तुति—रामभक्ति काव्य आलोच्य काल में प्रायः नगण्य है। जानकीप्रसाद महंत की 'बजरङ्गबत्तीसी' (१८७७), 'नाम पचीसी' (१८७७), 'इश्क अजायब' (१८८४), तथा 'विरह-दिवाकर' (१८८९), कृष्णदेवनारायण सिंह का 'अनुराग-मुकुल' (१८८६) तथा 'अनुराग-मञ्जरी' (१९०१), लालदास कवि का 'रामचरणानुराग' (१८९९) और लछिराम कवि का 'हनुमानशतक' (१९०२) प्रस्तुत विषय की इनी-गिनी रचनाएँ हैं।

वास्तव में विकास कृष्ण-भक्ति काव्य का ही हुआ। हरिश्चंद्र के 'भक्ति-सर्वस्व' (१८७०), 'प्रेमाश्रुवर्षण' (१८७३), 'स्वरूप-चिन्तन' (१८७५) तथा 'रागसंग्रह' (१८८१) में कृष्ण की प्रेमात्मिका भक्ति के सुंदर छंद और पद हैं। लक्ष्मणप्रसाद पांडेय का 'रस-तरङ्ग' (१८७८), गोकुलदास साधु की 'प्रेमपत्रिका' (१८८२), श्यामलाल की 'अनुराग लतिका' (१८८५), जिसका सम्पादन हरिश्चंद्र ने किया

था, वंशीधर की 'प्रेम-लतिका' (१८८५), शिवराज मिश्र की 'अनुराग लतिका' (१८८७), देवतीर्थ स्वामी की 'श्यामसुधा' (१८८८), अनन्त-राम शर्मा की 'अनन्त-प्रेमवाणी' (१८६२), रामदयाल नेवटिया का 'प्रेमांकुर' (१८६६), तथा श्यामनारायण का 'प्रेमप्रवाह' (१८६७) कृष्ण-सम्बन्धी अन्य भक्ति-स्तुति काव्य-ग्रंथ हैं।

शिव-भक्ति संबंधी कोई भी उल्लेखनीय रचना आलोच्य-काल में नहीं मिलती। शक्ति-भक्ति संबंधी दो रचनाएँ अवश्य उल्लेखनीय हैं; महावीरप्रसाद द्विवेदी कृत 'देवीस्तुति-शतक' (१८६२) तथा भगवानदीन लाला कृत 'भक्तिभवानी' (१६०७)।

तुलसीदास की 'विनयपत्रिका' के अनुकरण पर विभिन्न देवताओं की स्तुतियों की दो रचनाएँ अलग उल्लेखनीय हैं—इनके नाम भी वही हैं: मदनगोपालसिंह कृत 'विनयपत्रिका' (१८८१) तथा गङ्गादास कृत 'विनयपत्रिका' (१८६८)।

इस काल की रचनाओं में से निम्नलिखित और भी ऐसी हैं जिन्हें भक्ति-स्तुति काव्य में स्थान मिलना चाहिए: माधवसिंह कृत 'भक्ति-तरंगिणी' (१८७४), श्यामलालसिंह कृत 'ईश्वर-प्रार्थना' (१८८०), शिवशरणलाल मिश्र कृत 'भक्तिसार' (१८८८), पाटेश्वरीप्रसाद कृत 'प्रेम-प्रकाशिका' (१८६१), रघुराजसिंह कृत 'भक्ति-विलास' (१८६१ द्वितीय) तथा 'पदावली' (१८६४), अम्बिकादत्त व्यास कृत 'ईश्वर-इच्छा' (१८६८), बलवन्तसिंह कृत 'भक्ति-शिरोमणि' (१८६६), मोतीराम भट्ट कृत 'मनोद्वेग-प्रवाह' (१६०१), रामप्रतापसिंह कृत 'भक्ति-विलास' (१६०४) तथा कमला कृत 'भजन-सरोवर' (१६०८)। इन रचनाओं में प्रायः राम और कृष्ण की सम्मिलित उपासना मिलती है, इसलिए इन रचनाओं को भक्ति-स्तुति साहित्य में एक अलग स्थान दिया जा सकता है।

७. शृङ्गारात्मक—शृङ्गारात्मक काव्य दो रूपों में मिलता है: रीतिप्रधान और स्वतंत्र। पहले प्रकार की रचनाओं में से दो सतसई-

प्रणाली पर हैं : गुलाबसिंह धाऊ की 'प्रेम-सतसई' (१८७०) तथा जानकीप्रसाद द्विवेदी की 'जानकी-सतसई' (१८९९), शेष प्रायः सामान्य मुक्तक प्रणाली पर हैं। इन पिछली में से प्रमुख हैं बलदेवप्रसाद का 'शृङ्गार-सुधाकर' (१८७७), भेदीराम का 'सुंदरी-विलास' (१८८०), चुन्नीलाल का 'रसिक-विनोद' (१८८२), बिहारीसिंह की 'मालती-मञ्जरी' (१८८२), शेरसिंह का 'रस-विनोद' (१८८३), ईश्वरीप्रताप नारायण राय का 'रहस्यकाव्य-शृङ्गार' (१८८४), बच्चू चौबे की 'सुरस-तरंगिणी' (१८८५), खड्गबहादुर मल्ल का 'रसिक-विनोद' (१८८५), नारायण का 'अष्टयाम' (१८८७), गौरीशंकर का 'प्रेम-प्रकाश' (१८८९), ब्रह्म-दत्त कवि का 'दीपप्रकाश' (१८९०) विश्वेश्वरदयाल का 'प्रेमोद्रेक' (१८९०), रामकिङ्करसिंह का 'अनुराग-विनोद' (१८९०), माधवप्रसाद की 'सुंदरी-सौदामिनी' (१८९१), नकछेदी तिवारी का 'उपालम्भ-शतक' (१८९२), सज्जनसिंह का 'रसिक-विनोद' (१८९२), हरिशंकरसिंह का 'शृङ्गारशतक' (१८९२), विजयसिंह की 'विजयरसचन्द्रिका' (१८९३), प्रभुदयाल का 'प्रेमविलास' (१८९४), गोपालराम का 'दम्पति वाक्य-विलास' (१८९५), बलदेवप्रसाद का 'शृङ्गारसरोज' (१८९५), राम-किङ्करसिंह का 'रसिक-विहार-रत्नाकर' (१८९६), ठाकुरदीन मिश्र की 'प्रेमतरङ्ग दोहावली' (१८९७), उदयभानुलाल की 'भानुविरहावली' (१८९७), अयोध्यासिंह उपाध्याय का 'रसिक-रहस्य' (१८९९), मोहन-लाल गुप्त का 'प्रेमरसामृत' (१८९९), पातेश्वरप्रसाद का 'अनुराग प्रकाश' (१८९९), दौलतराम कवि का 'महेश्वर रसमौर ग्रंथ' (१८९९), शीतलप्रसाद का 'प्रेम-सरोवर' (१९००), जैनेन्द्र किशोर की 'शृङ्गार-लता' (१९००), किशोरीलाल गोस्वामी की 'प्रेमवाटिका' (१९०२), रङ्गनारायण लाल की 'प्रेमलतिका' (१९०२), बालमुकुन्द वर्मा की 'प्रेम-रत्नावली' (१९०३), हर्षादराय मुन्शी की 'रसिक-प्रिया' (१९०४), जयपाल महाराज का 'रसिक-प्रमोद' (१९०५), कार्त्तिकप्रसाद का 'शृङ्गार-दान' (१९०५), बलदेवप्रसाद मिश्र की 'मन्न मनमोहिनी' (१९०५), अत्यन्नट मिश्र का 'आनंद कुसुमोदय' (१९०६) तथा बदरी-

नारायण चौधरी का 'आनंद अरुणोदय' १९०६)। इन ग्रंथों में प्रेम का चित्रण प्रायः रीति परिपाटी पर ही हुआ है।

दूसरे प्रकार की रचनाओं में उल्लेखनीय हैं जगमोहनसिंह कृत 'प्रेम-रत्नाकर' (१८७३) तथा 'प्रेमसम्पत्तिलता', (१८८५), हरिश्चन्द्र कृत 'प्रेम-माधुरी' (१८७५), कृष्णदेवनारायणसिंह कृत 'सनेह-सुमन' (१८८७), किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'प्रेमरत्नमाला' (१९०२ द्वितीय), अयोध्यासिंह उपाध्याय कृत 'प्रेमाम्बु-वारिधि' (१९००), 'प्रेम-प्रपञ्च' (१९००), 'प्रेमाश्रु वर्षण' (१९०१), 'प्रेमाम्बु प्रवाह' (१९०१) तथा 'प्रेम-पुष्पोहार' (१९०४)। इन रचनाओं में अवश्य प्रायः प्रेम का स्वाभाविक स्वरूप ही प्रमुख है।

८. नखशिख—नखशिख-वर्णन काव्य-परंपरा का पहले ही से एक प्रिय विषय रहा है। कवि-समुदाय में इसकी एक प्रथा-सी हो गई थी। आलोच्यकाल में भी उस प्रथा का निर्वाह होता रहा। यह नखशिख प्रायः राधिका के नखशिख के रूप में मिलता है। हनुमानप्रसाद का 'नखशिख' (१८७८), बिहारीसिंह का 'नखशिख-भूषण' (१८८३), नवनीत कवि का 'श्यामाङ्ग अवयव भूषण' (१८८३), दिवाकर भट्ट का 'नखशिख' (१८८५), लोकनाथ चौबे की 'राधिका-सुषमा' (१८८६), खूबचंद कुँवर की 'अङ्गचंद्रिका' (१८९०), गणेशदत्त मिश्र की 'नख-शिख बत्तीसी' (१८९२), रङ्गनारायण लाल का 'अङ्गादर्श' (१८९३), शंभुनाथ राजा की 'नखशिख बत्तीसी' (१८९३), विश्वेश्वर बख्श पाल वर्मा का 'अङ्गादर्श' (१८९४), बैजनाथ कुर्मी का 'नखशिखवर्णन' (१८९९), कालिकाप्रसाद सिंह का 'राधाजी का नखशिख' (१८९९), तथा माधवदास का 'नखशिख' (१९०५) अपने विषय की उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। सूर्यनाथ मिश्र कृत 'लोचन-पचीसी' (१९०६) केवल नेत्रों पर है। केवल एक नखशिख ग्रंथ इस परंपरा से कुछ अलग है: वह है योगेन्द्रनारायण सिंह का 'शारदा का नखशिख' (१८९९), जिसमें सरस्वती का नखशिख वर्णित हुआ है।

९. प्रकृति-चित्रण—स्वतंत्र रूप से प्रकृति-वर्णन केवल ऋतु-

वर्णन के रूप में प्रायः मिलता है, और उसकी भी एक प्रथा सी हो गई थी। वह प्रथा इस काल में भी चलती रही। कुछ ग्रंथ समस्त ऋतुओं का वर्णन करते हैं, और कुछ किसी विशेष ऋतु का ही। षट्ऋतु-वर्णन संबंधी रचनाओं में उल्लेखनीय हैं बैजनाथ कुर्मी कृत 'षट्ऋतु-वर्णन' (१८८७), जगमोहनसिंह महाराज कृत 'ऋतु-प्रकाश' (१८८७) तथा कृष्णलाल गोस्वामीकृत 'पंचऋतु-वर्णन' (१८८३)। ऋतु-विशेष संबंधी रचनाओं का पावस ही सब से प्रिय वर्ण्य रहा है। अम्बिकादत्त व्यास का 'पावस पचासा' (१८८६), तथा लोकनाथ चतुर्वेदी कृत 'पावस पचीसी' (१८८६) पावस-संबंधी सामान्य ग्रंथ हैं। हिंडोला पावसोत्सव का एक लोकप्रिय अंग रहा है। जगन्नाथदास 'रत्नाकर' कृत 'हिंडोला' (१८८४) तथा रामानंद कृत 'हिंडोला' (१८६२) पावसोत्सव के इसी अंग पर हैं। शेष ऋतुओं से संबंध रखनेवाले काव्य-साहित्य में महत्त्वपूर्ण हैं राधाचरण गोस्वामी कृत 'शिशिर-सुषमा' (१८८३), ललनपिया कृत 'होली शतक' (१८६३), तथा श्रीधर पाठक कृत 'गुनवंत हेमंत' (१६००)। अंतिम में प्रकृति-निरीक्षण ध्यान देने योग्य है। इस ऋतु-वर्णन की प्रथा से किंचित स्वतंत्र केवल एक रचना इस काल में महत्त्वपूर्ण दिखाई पड़ती है, वह है बलदेवदास कृत 'प्रभात-शतक' (१८६७)।

१०. लोकगीत—प्रायः शृङ्गारपूर्ण रचनाओं के लिए ही इस काल में एक नवीन परंपरा का अनुसरण किया गया: लोकगीतों के कुछ बहुप्रचलित तर्ज़ों को लेकर कविता की गई। लावनी इसी प्रकार का एक तर्ज़ है। इस तर्ज़ की उल्लेखनीय प्रारंभिक रचनाएँ हैं हरिश्चंद्र कृत 'फूलों का गुच्छा' (१८७३) तथा बनारसी कृत 'लावनी' (१८७७ द्वितीय)। लावनी का विकास दो शैलियों पर हुआ, जिन्हें क़लगी' और 'तुर्रा' कहते हैं। 'क़लगी' वे गीत हैं जिनमें स्त्री (या प्रकृति) पुरुष (या देव) से प्रेम की याचना करती है, और 'तुर्रा' वे हैं जिनमें पुरुष (या देव) स्त्री (या प्रकृति) से प्रेम की याचना करता है। इन विकसित शैलियों पर जमशेदजो होरमसजी पीरान के 'क़लगी के दिलपसंद ख़्याल' (१८८२), नन्दलाल का 'तुर्रा राग' (१८८३),

आदितराम जोइतराम के 'क़लगी नी लावनियो' (१८८७) तथा शम्भु-दयाल का 'अमसी व लावनी ख्यालात तुर्रा' (१८८८) उल्लेखनीय हैं।

पुराने ढंग के कुछ ऋतु-गीतों का भी प्रयोग प्रायः शृङ्गारपूर्ण रचनाओं के लिए किया गया। कजली इनमें सबसे अधिक लोकप्रिय ठहरी। खड्गबहादुर मल्ल कृत 'सुधाबुंद' (१८८२) तथा 'पावस-प्रेम-प्रवाह' (१८८२), बदरीनारायण चौधरी कृत 'कजली-कादम्बिनी' (१८६०), हरिश्चन्द्र कृत 'रस-बरसात' (१६००), अम्बिकादत्त व्यास कृत 'रसीली कजरी' (१६०४ तृतीय) तथा किशोरीलाल गोस्वामी का 'सावन-सुहावन' (१६०५) इनमें प्रमुख हैं। फाग या धमार भी लोकप्रियता में कजली से थोड़ा ही पीछे रहा। खड्गबहादुर मल्ल का 'फाग-अनुराग' (१८८२), तेगबहादुर राना का 'फाग-धमाल' (१८६१) तथा ललनपिया का 'ललन-फाग' (१६०२) इस शैली की रचनाएँ हैं।

११. स्थान-वर्णन—स्थान-वर्णन-संबंधी काव्य के लिए प्रेरणा आलोच्यकाल के प्रारंभ में प्रायः धार्मिक भावना से ही प्राप्त होती थी, इसलिए वर्ण्य प्रायः तीर्थादि ही हुए, किन्तु आगे चलकर दूसरी भावनाएँ भी इसी प्रकार प्रेरक होने लगीं। सच्चिदानन्द स्वरूप का 'विहार-वृन्दावन' (१८७३), रामचरण की 'ब्रजयात्रा' (१८८३), देवदास का 'अद्भुत वृन्दावन' (१८६७) पहले प्रकार की भावना के परिणाम हैं। दूसरी भावनाओं की स्फूर्ति का प्रारम्भ श्रीधर पाठक के कुछ ग्रंथों में देखा जाता है। उनके 'आगरा' (१८८२) तथा 'काश्मीर-सुषमा' (१६०४) इसी प्रकार के हैं। कालीचरण सिंह का 'अमहरा' (१६०५) उक्त स्थान की ऐतिहासिक महत्ता का वर्णन करता है। इन्हीं के साथ जगमोहन सिंह की 'मानस-सम्पत्ति' (१८८६) तथा शिवचन्द्र भरतिया की 'प्रवास कुसुमावली' (१६०४—) का भी उल्लेख किया जा सकता है जिनमें अनेक स्थानों की यात्रा करते हुए उनका वर्णन किया गया है।

१२. मानव-चरित्र—मानव-चरित्र सम्बन्धी रचनाएँ इस काल में

दो प्रकार की मिलती हैं। एक हैं वे जिनके लिए प्रेरणा किसी स्वार्थ के कारण मिलती है, और दूसरी हैं वे जिनके लिए प्रेरणा चित्त की उदात्त वृत्तियों से प्राप्त होती है। पहले प्रकार की रचनाओं में प्रमुख हैं उत्तमराम कवि कृत 'विवाह-वर्णन' (१८७१), जिसमें किन्हीं दीवान हरिभाऊ लाल की कन्या के विवाह का वर्णन है, करणीदान कवि कृत 'भैरव विनोद' (१९०१), जिसमें किन्हीं भैरव सिंह के शौर्य और प्रेम की कथा है, मोहनलाल शर्मा कृत 'माधव-यशेन्दु-प्रकाश' (१९०४), जिसमें किन्हीं जयपुराधीश की विलायत-यात्रा का वर्णन है, तथा तुलसीप्रसाद कृत 'हज्जो' (१९०५) जो किसी की निन्दा में लिखी गई है। दूसरे प्रकार की रचनाओं में से उल्लेखनीय हैं रामकिशोर शर्मा व्यास कृत 'चंद्रास्त' (१८८५) तथा शेरसिंह वर्मा कृत 'संताप चालीसा' (१८९२); पहले में हरिश्चन्द्र भारतेन्दु तथा दूसरे में स्वामी दयानन्द के निधन पर उस संताप की व्यञ्जना हुई है, जो दोनों युग-प्रवर्तकों के निर्वाण पर हिन्दी-प्रदेश में व्याप्त हुआ था। जवाहरमल्ल का 'उपालंभ' (१८८७) एक अलग ढंग की रचना है : इसमें एक माता अपने पुत्र को कुछ प्रेमपूर्ण उलाहने देती है।

१३. सामाजिक—आर्यसमाज के प्रादुर्भाव के कारण आलोच्य काल में लेखकों का ध्यान समाज की ओर विशेष रूप से आकृष्ट हुआ। परिणाम-स्वरूप काव्य-क्षेत्र में भी कतिपय रचनाएँ ऐसी पाई जाती हैं जिनमें समाज-सुधार का शंखनाद प्रतिध्वनित होता है। इनमें से उल्लेखनीय हैं 'एक विधवा' कृत 'स्त्री-विलाप' (१८८२), जिसमें हिन्दू-समाज की नारी जाति सम्बन्धी अनुदारता की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है, प्रतापनारायण मिश्र कृत 'मन की लहर' (१८८५), जिसमें समाज में प्रचलित अनेक कुरीतियों पर गीति-रचनाएँ की गई हैं, जङ्गबहादुर सिंह कृत 'बाल-विवाह' (१८९३), जिसमें उक्त प्रथा के दोषों का निदर्शन किया गया है, कन्हैयाप्रसाद मिश्र कृत 'विहार के गृहस्थों का जीवन चरित्र' (१९०३), जो अपना विषय स्वतः सूचित करता है, तथा अयोध्यासिंह उपाध्याय कृत 'उद्बोधन' (१९०६), जिसमें समाज को जाग्रत करने

की चेष्टा की गई है। इनमें से प्रभावशाली कविता केवल अंतिम में पाई जाती है। कन्हैयाप्रसाद मिश्र की 'विद्याशक्ति' (१६०१) की की गणना भी, जिसमें विद्या प्राप्ति के लाभ बताए गये हैं, इसी वर्ग की जा सकती है।

१४. विनोद-व्यंग्य—आलोच्य काल में विनोद-व्यंग्य साहित्य में एक नवीन भावना और नवीन स्फूर्ति दिखाई पड़ी। लेखकों ने सामाजिक और सामयिक विषयों को इस प्रकार की कविता का वर्ण्य बनाने का यत्न किया; परिणामस्वरूप हमें राधाचरण गोस्वामी कृत 'नापित-स्तोत्र' (१८८२), हरिश्चन्द्र कृत 'वेश्यास्तोत्र' (१८८२), देवकीनन्दन तिवारी कृत 'बुढ़िया बखान शतक' (१८८३), राधाचरण गोस्वामी कृत 'रेलवे स्तोत्र' (१८८३), कृष्णलाल गोस्वामी कृत 'हास्य-नक्षरत्न' (१८८४), नवनीत कवि कृत 'मूर्खशतक' (१८६२), प्रतापनारायण मिश्र कृत 'तृप्यंताम्' (१६०५), तथा महादेव प्रसाद कृत 'खटकीरा-युद्ध' (१६०६) जैसी रचनाएं मिलती हैं। यदि पहेली-साहित्य की गणना भी इस वर्ग में की जावे तो उसकी एक उल्लेखनीय कृति चण्डीप्रसाद सिंह कृत 'पहेली-भूषण' (१८८६–) है जो कई भागों में प्रकाशित हुई।

१५. सामयिक तथा राष्ट्रीय—सामयिक पत्रों के प्रचार के साथ-साथ इस काल में सामयिक साहित्य की सृष्टि खूब हुई। काव्य-क्षेत्र भी इस सामयिकता से अप्रभावित न रह सका। राधाचरण गोस्वामी की 'दामिनी दूतिका' (१८८२) तार के द्वारा प्रेमियों की बातचीत कराकर तार के उपयोग का समर्थन करती है। हरिश्चन्द्र की 'विजयिनी-विजय-वैजयंती' (१८८२) एक भारतीय सेना की विदेश में विजय पर गर्व प्रगट करती है। आलाराम स्वामी कृत 'कांग्रेस-पुकार-मंजरी' (१८६२) तथा ब्लैकेट का 'देशोद्धार कांग्रेस काव्य' (१८६२) कांग्रेस की स्थापना द्वारा देशोन्नति का आश्वासन दिलाते हैं। बदरी नारायण चौधरी कृत 'मङ्गलाशा हार्दिक धन्यवाद' (१८६२) और 'भारत-बधाई' (१६०३) अंग्रेजी शासन पर संतोष और हर्ष प्रगट

करते हैं। श्रीधर पाठक का 'क्लाउड मेमोरियल' (१६००) १८६६ ई० के सूखे पर लिखा गया है। हिन्दी बनाम उर्दू और व्रजभाषा बनाम खड़ी बोली की समस्याओं पर भी कुछ रचनाएँ की गई। सोहनप्रसाद कृत 'हिन्दी और उर्दू की लड़ाई' (१८८५), महावीरप्रसाद द्विवेदी कृत 'नागरी' (१६००), तथा श्यामजी शर्मा कृत 'खड़ी बोली पद्यादर्श' (१६०५) इसी प्रकार की हैं। इन समस्त रचनाओं में स्थायित्व का अभाव है।

विदेशीय शासन का एक बड़ा प्रसाद यह प्राप्त हुआ कि धीरे-धीरे देश में एक 'स्वदेश' की भावना जागृत हुई। आलोच्य काल के अंतिम चरण में फलतः कुछ रचनाएँ ऐसी भी मिलती हैं जो इसी राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर लिखी गई हैं। भोपालदास कृत 'भारत-भजनावली' (१८६७), गुरुप्रसाद सिंह कृत 'भारत-संगीत' (१६०१), गिरिधर शर्मा कृत 'मातृ-वन्दना' (१६०५) तथा गदाधर सिंह कृत 'भारत मही' [१६०८ ?] इस प्रकार की रचनाओं में सर्वप्रमुख हैं।

१६. स्फुट मुक्तक—आलोच्यकाल में मुक्तकों के आश्रयदाता दरबार नष्ट-प्राय हो चले थे, किन्तु उनका स्थान सामयिक पत्र-पत्रिकाएँ और उनके द्वारा उनकी पाठक जनता लेने लग गए थे; कवि-सम्मेलनों से भी इस प्रकार की रचना के लिए प्रोत्साहन मिलने लगा था; इसलिए स्फुट मुक्तक काव्य में हमें प्रायः समाज के समस्त वर्गों की रुचि का साहित्य मिल जाता है। ईश्वरी प्रसाद सिंह की 'चित्र-चन्द्रिका' (१८७५), छाया सिंह की 'आनंद-लहरी' (१८७६), साजन भाई खोजा के 'साजन-काव्यरत्न' (१८७६), भानजी मूनजी कृत 'भान-भवानी', 'मणिरत्न-माला' तथा 'भान-बावनी' (१८७६), विष्णु-कुमारी देवी की 'पद-मुक्तावली' (१८८१), श्रीधर पाठक के 'मनो-विनोद' (१८८२), कन्हैयालाल लाला के 'शारदा-विलास' (१८८३), नकछेदी तिवारी के 'जगद् विनोद' (१८८६), गिरिधरलाल की 'छंद रत्नमाला' (१८८६), किशन सिंह के 'सवैये शतक' (१८८८), वल्लभ-

राम सूजाराम व्यास के 'वल्लभ कृत काव्य' (१८८८), गोपीश्वर राजा के 'गोपीश्वर-विनोद' (१८८८), वामनाचार्य गोस्वामी के 'वामन-विनोद' (१८८८), माधव प्रसाद त्रिपाठी के 'माधव-विलास' (१८८८), प्रेमदास के 'लोकोक्ति-शतक' (१८८८), महावीरप्रसाद द्विवेदी के 'विद्या-विनोद' (१८८६), झूमकलाल के 'नवरस-विहार' (१८६०), शालिग्राम कवि के 'शतपञ्च-विलास' (१८६१), सज्जनसिंह महाराणा के 'रसिक-विनोद' (१८६२), हरिशंकर सिंह के 'काव्य-रत्नाकर, (१८६२), प्रभुदयाल की 'कवितावली' (१८६३), सीताराम शर्मा की 'काव्य-कलापिनी' (१८६४), मुकुन्दलाल नागर के 'गुलदस्ता-ए-मुकुन्द' (१८६४), गजाधरप्रसाद शुक्ल के 'जगदीश-विनोद' (१८६५), लाल जी राम के 'काव्यांकुर' (१८६६), शिवदास के 'सुधासिंधु' (१८६६), जानकीप्रसाद महंत की 'कवित्त-वर्णावली' (१८६६), प्रताप-नारायण मिश्र के 'लोकोक्ति-शतक' (१८६६), रघुराजसिंह महाराजा के 'रघुराज-पचासा' (१८६६), शिवम्बर प्रसाद के 'मित्र-विलास' (१८६७), रघुबर दयाल के 'रस-प्रकाश' (१८६७), रामसुख की 'कवितावली' (१८६७), गौरीशंकर शुक्ल के 'मनरञ्जन-प्रकाश' (१८६७), गङ्गानारायण के 'पद-कुसुमाकर' (१८६७), महेश्वरबख्श सिंह के 'महेश्वर-विनोद' (१८६७), श्यामसुन्दर के 'महेश्वर-सुधाकर' (१८६८), लक्ष्मीनारायण सिंह की 'विनोदमाला' (१८६६), पतिराम बाबू के 'कवि-भूषण-विनोद' (१६००), महेश्वरबख्श सिंह के 'महेश्वर-प्रकाश' (१६०२) गदाधर शुक्ल के 'भुवनेन्द्र-भूषण' (१६००), श्याम जी शर्मा के 'श्याम-विनोद' (१६०१), ललनपिया के 'ललन-प्रदीपिका' (१६०१) तथा 'ललन-प्रभाकर' (१६०१), रामचन्द्र शुक्ल के 'चारण-विनोद' (१६०१), श्यामसुन्दर मिश्र के 'सुधासिंधु' (१६०२), ललन-पिया की 'ललन-चन्द्रिका' (१६०२), रघुनाथप्रसाद त्रिपाठी के 'माला चतुष्ठय' (१६०३), शिवपाल सिंह के 'शिवपाल-विनोद' (१६०३), ललनपिया के 'ललन-विनोद' (१६०३), अक्षयबट मिश्र के 'पुष्पोपहार' (१६०३), ललनपिया के 'ललन-सागर' (१६०४), कार्त्तिकप्रसाद के

'कवित्त-रत्नाकर' (१६०४), बालमुकुन्द गुप्त की 'स्फुट कविता' (१६०६), ब्रजनेश मिश्र के 'नवरत्न' (१६०६), राधारमण मैत्र की 'केशर-मञ्जरी' (१६०७) तथा चूड़ामणि और बाँकेलाल की 'समस्यावली' (१६०८), में विविध विषयों की मुक्तक रचनाओं के संग्रह मिलते हैं। इनमें अनेक शैलियों और अनेक प्रणालियों पर रची हुई कविता के दर्शन होते हैं। पर इस समस्त परंपरा में भी नवीन विचार-धारा का अनुपात प्राचीन की तुलना में वैसा ही है, जैसा हम ऊपर शेष परंपराओं के संबंध में देख चुके हैं। श्रीधर पाठक के 'मनोविनोद' (१८८२), महावीरप्रसाद द्विवेदी के 'विद्या-विनोद' (१८८६), प्रतापनारायण मिश्र के 'लोकोक्ति-शतक' (१८६६), रामचन्द्र शुक्ल के 'चारण-विनोद' (१६०१) तथा बाल-मुकुन्द गुप्त की 'स्फुट कविता' (१६०६)—विशेष रूप से अन्तिम—जैसी थोड़ी ही रचनाएँ ऐसी हैं जिनमें काव्य-धारा प्राचीन परिपाटी को छोड़ कर देश-काल के अनुरूप नए क्षेत्रों और नए दृष्टिकोणों की ओर अग्रसर हुई है, और जिनमें एक नव-चेतना के लक्षण स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं; शेष में प्रायः वही पुराने पचड़े और वही पुराने राग हैं।

इस समस्त साहित्य के संबंध में यदि एक व्यापक दृष्टि से विचार किया जावे तो ज्ञात होगा कि कविता-सरिता प्रायः पहले से चली आती उन धाराओं में प्रवाहित हुई जो ह्रासोन्मुख थीं; विकासोन्मुख और सामान्य गतिशील धाराओं का सम्मिलित उद्योग भी उनकी तुलना नहीं कर सका। इसलिए, इस काल तक कविता ने नवयुग में प्रवेश नहीं किया, वह प्रसुप्त अवस्था में रहती हुई अपने बीती रँग-रलियों का स्वप्न—वह भी स्वप्न मात्र—देखती रही, और उसमें जागरण के चिह्न वस्तुतः नहीं दिखाई पड़े, यदि यह कहा जावे तो कदाचित् अनुचित न होगा।

उपन्यास

आलोच्यकाल में उपन्यास का जन्म एक महान घटना थी, और जितनी शीघ्रता के साथ इसने लोकप्रियता प्राप्त की वह भी अभूतपूर्व

थी। यद्यपि साधारणतः श्रीनिवासदास इसके जन्मदाता माने जाते हैं और उनका 'परीक्षागुरु' (१८८४ द्वितीय) हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास माना जाता है, किंतु यह धारणा ठीक नहीं है क्योंकि १८७१ से भी पूर्व उपन्यास-रचना के प्रमाण मिलते हैं। इस प्रकार का पहला उपन्यास जिसका उल्लेख मिलता है 'मनोहर उपन्यास' (१८७१) है, जिसके संपादक हैं सदानंद मिश्र तथा शंभुनाथ मिश्र। लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है, किंतु यह अनुवाद नहीं ज्ञात होता क्योंकि यह संपादकों द्वारा केवल 'संगृहीत और संशोधित' कहा गया है। इसकी कथावस्तु के संबंध में भी कोई संकेत नहीं है यह अवश्य खेदजनक है।

इस काल का उपन्यास-साहित्य चार प्रमुख धाराओं में विभक्त मिलता है; १. सामाजिक, २. ऐतिहासिक, ३. ऐयारी-तिलस्मी, और ४. जासूसी। सामाजिक उपन्यासों के हमें चार भेद मिलते हैं : (अ) उद्देश्य-प्रधान, (आ) रस-प्रधान, (इ) वस्तु-प्रधान, तथा (ई) चरित्र-प्रधान। इन्हीं शीर्षकों में हम उपन्यास-साहित्य का निरीक्षण करेंगे।

१. (अ) उद्देश्य-प्रधान—आलोच्यकाल में उद्देश्य-प्रधान उपन्यासों का सबसे अधिक बाहुल्य रहा। श्रीनिवासदास का परीक्षा-गुरु' (१८८४ द्वितीय) इस परंपरा के पहले उपन्यासों में से है। इसमें लेखक ने अपने जीवन के अनेक क्षेत्रों के अनुभव को समाविष्ट करने का यत्न किया है। बालकृष्ण भट्ट का 'नूतन ब्रह्मचारी' (१८८६) भी उपदेश-प्रधान है। किशोरीलाल गोस्वामी ने 'त्रिवेणी' [१८८८ ?] में आर्यसमाज आदि सुधारवादी समाजों के विरुद्ध सनातनधर्म के सिद्धान्तों का समर्थन किया है। अपने एक दूसरे उपन्यास 'स्वर्गीय कुसुम' [१८८९ ?] में उन्होंने देवदासी प्रथा का विरोध किया है। राधाकृष्ण दास का 'निःसहाय हिंदू' (१८९०) तत्कालीन हिन्दू समाज की दुरवस्था का परिचय कराता है। देवदत्त का 'सच्चा मित्र' (१८९१) मित्र का आदर्श उपस्थित करता है। बालकृष्ण भट्ट का एक दूसरा उपन्यास 'सौ अजान एक सुजान' (१८९२) भी उपदेश-प्रधान है। गोपालराम गहमरी के एक उपन्यास 'नए बाबू' (१८९४)

का भी उल्लेख यहाँ किया जा सकता है। लेखक विधवा-विवाह तथा स्त्री-स्वातंत्र्य के विरुद्ध है, और वह इन प्रश्नों पर सनातनधर्म के आदर्शों का समर्थक है। रामगुलाम का 'सुवामा' (१८६४) नायक और नायिका में प्रेम का विकास करता है और अंत में दोनों के माता-पिता द्वारा उनका विवाह करा देता है। मुरलीधर शर्मा का 'सत्कुलाचरण' (१६००) अपने विषय का निरूपण करता है। अमृतलाल चक्रवर्ती का 'सती सुखदेवी' (१६०२) सतीत्व का आदर्श उपस्थित करने का यत्न करता है। शारदाप्रसाद वर्मा का 'प्रेमपथ' (१६०३) प्रेम के दुर्गम पथ का परिचय कराने के लिए लिखा गया है। लज्जाराम शर्मा के 'आदर्श-दंपति' (१६०४) तथा रामचीज़सिंह के कुलवन्ती' (१६०४) की विशेषताएँ स्वतः स्पष्ट हैं। कमलाप्रसाद के 'कुलकलङ्किनी' (१६०५) के विषय के संबंध में भी कोई संदेह नहीं हो सकता। उपर्युक्त देवदत्त मिश्र के 'सच्चा मित्र' की भाँति लोचनप्रसाद पाण्डेय का 'दो मित्र' (१६०६) भी मैत्री-धर्म का आदर्श उपस्थित करने का यत्न करता है। गोकुलप्रसाद का 'पवित्र-जीवन' (१६०७) अपनी कहानी आप कहता है। बलदेवप्रसाद मिश्र ने 'संसार' (१६०७) में कलि के प्रभावों का वर्णन किया है। लालजीदास ने 'धोखे की टट्टी' (१६०७) में भारतीय विद्यार्थी-जीवन की कथा रख कर उसके सुधार का यत्न किया है। लज्जाराम शर्मा के 'बिगड़े का सुधार' (१६०७) में सतीत्व का आदर्श उपस्थित किया गया है, और गयाचरण त्रिपाठी के 'सती' (१६०७) में भी वही किया गया है। लोलाराम शर्मा के 'सुशीला विधवा' (१६०६) में वैधव्य जीवन का समर्थन किया गया है। यही इस काल के प्रमुख उद्देश्य-प्रधान सामाजिक उपन्यास हैं। आलोच्यकाल के अंत में ऐसे भी एकाध उपन्यासों का आविर्भाव हुआ जिनमें चरित्र अथवा समाज-सुधार को ध्यान में रखते हुए कुछ हास्य तथा व्यंग्य-प्रधान सामाजिक चित्रों की उद्भावना हुई। महादेवप्रसाद मिश्र का 'झाड़ूलाल की करतूत' (१६०८) इसी प्रकार की रचना है।

इन उपन्यासों के विश्लेषण से ज्ञात होगा कि लेखकों की दृष्टि विशेष रूप से स्त्रियों के चरित्रों पर थी, यद्यपि समाज-सुधार के अन्य प्रश्न भी कभी-कभी उन्हें व्यग्र करते थे। १६०० के बाद उनकी यह प्रवृत्ति और भी स्पष्ट रूप से लक्षित होती है। क्या यह आर्य-समाज तथा पाश्चात्य सभ्यता के प्रभावों की प्रतिक्रिया तो नहीं थी?

(आ) रस-प्रधान—रस-प्रधान उपन्यासों की परंपरा यद्यपि सामाजिक उपन्यासों का ही एक अंग है पर आलोच्यकाल में उसका विकास प्रायः एक स्वतंत्र परंपरा के रूप में हुआ दिखाई पड़ता है। क्षेत्रपाल शर्मा का 'कामलता' (१८६०) इस परंपरा का एक प्रारंभिक उपन्यास है जो शृङ्गार-प्रधान है। किशोरीलाल गोस्वामी का 'लीलावती' (१६०१), वासुदेव मोरेश्वर पोतदार का 'प्रणयि माधव' (१६०१), हरिहरप्रसाद जिज्ञल का 'शीला' (१६०१), श्याम जी शर्मा का 'प्रिया-वल्लभ-प्रेममोहिनी' (१६०२), हरिहरप्रसाद जिज्ञल का 'कामोदकला' (१६०३), शिवचंद्र भरतिया का 'कनकसुंदर' (१६०४), शीतल-प्रसाद का 'मनमोहिनी' (१६०५), किशोरीलाल गोस्वामी के 'चंद्रावली' (१६०५), 'हीराबाई' (१६०५), 'चंद्रिका' (१६०५) तथा 'तरुण तपस्विनी' (१६०६), गिरिजानंद तिवारी का 'सुलोचना' (१६०६) तथा लक्ष्मीनारायण गुप्त का 'नलिनी' (१६०८) इस परंपरा के कतिपय अन्य उल्लेखनीय प्रयास हैं, और इन सब में भी शृङ्गार रस की ही व्याप्ति है।

इस काल के रस-प्रधान सामाजिक उपन्यासों के निरीक्षण से फलतः ज्ञात होगा कि उनमें रसराज की उपासना सी की गई है और वासनापूर्ण चित्र ही इनके लेखकों की भेंट है। क्या इन उपन्यासों के लेखकों और पाठकों के जीवन में अन्यथा कोई रस ही इस समय नहीं रह गया था?

(इ) वस्तु-प्रधान—वस्तु-प्रधान उपन्यास उपर्युक्त की अपेक्षा कम लिखे गए। गोपालराम गहमरी के 'चतुर चञ्चला' (१८६३), 'भानमती' (१८६४), तथा 'नेमा' (१८६४) इस परंपरा के पहले उपन्यास ज्ञात होते हैं। यह प्रायः मनोरंजन की दृष्टि से लिखे गए हैं। शेष में से

भुवनेश्वर मिश्र का 'घराऊ घटना' (१८६४) अपनी घटना-प्रधानता को इंगित करता है; गोपालराम गहमरी के 'सास-पतोहू' (१८६६) का विषय स्पष्ट है; जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी का 'संसार-चक्र' (१८६६) भी घटना-प्रधान है : लेखक के पूर्वजन्म में विश्वास के कारण बहुत-सी ऐसी बातें आप से आप घट जाती हैं जो सामन्यतः न उपस्थित हो सकतीं; गोपालराम गहमरी के 'डबल बीबी' (१६०२) में सौतों के झगड़े तथा 'देवरानी-जेठानी' (१६०२) में उनके झगड़ों की कथाएँ हैं; उनके 'दो बहन' (१६०३) तथा 'तीन पतोहू' (१६०५) में भी गार्हस्थ्य-जीवन के चित्र हैं; विट्ठलदास नागर का 'क़िस्मत का खेल' (१६०५) भाग्यवाद-प्रधान है; हज़ारीलाल का 'तीन बहिन' (१६०५) गोपालराम के उपर्युक्त 'दो बहन' की नक़ल-सा ज्ञात होता है, और किशोरीलाल गोस्वामी का 'पुनर्जन्म' (१६०७) गोपालराम के उपर्युक्त 'डबल बीबी' की भाँति सौतिया डाह का चित्रण करता है।

इस प्रकार ज्ञात होगा कि आलोच्यकाल के वस्तु-प्रधान सामाजिक उपन्यासों में गार्हस्थ्य जीवन का ही चित्रण प्रायः किया गया है, और उसमें भी विशेष लेखा घरेलू झगड़ों का लिया गया है, जो उतने ही पुराने हैं जितना पुराना हिंदू कुल का संगठन। कभी-कभी हमारे गार्हस्थ तथा सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाली 'नई रोशनी' की ओर भी दृष्टिपात किया गया है पर वह बहुत अपर्याप्त ढंग से। यद्यपि कला की दृष्टि से यह उपन्यास अपने काल के दूसरे उपन्यासों के समकक्ष संभव है न खड़े हो सकें, किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे यह उनकी अपेक्षा जीवन की वास्तविकता के अधिक निकट हैं, इसलिए साहित्य के इतिहास में उनकी अपेक्षा इनका महत्व कम नहीं कहा जा सकता।

(ई) चरित्र-प्रधान—आलोच्य काल में चरित्र-प्रधान उपन्यास कदाचित् सबसे कम हैं। इनमें से जगमोहन सिंह के 'श्यामा-स्वप्न' में उसकी नायिका श्यामा एक ब्राह्मण बालिका है जो एक खत्री नवयुवक पर अनुरक्त है और जातिच्युत होकर भी प्रेम का निर्वाह करती है; अयोध्यासिंह उपाध्याय के 'प्रेमकान्ता' [१८६४ ?] की नायिका में एक

प्रेम-प्रधान चरित्र की अवतारणा की गई है; और उनके 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' (१८९९) में निराश प्रणय का चित्रण किया गया है; लज्जाराम शर्मा के 'धूर्त्त रसिकलाल' (१८९९ में एक धूर्त चरित्र की अवतारणा की गई है; प्रथम पुरुष में वर्णित कार्त्तिकप्रसाद खत्री का 'दीनानाथ' (१८९९), व्रजनन्दन सहाय का 'अद्भुत प्रायश्चित' (१९०६), नवलराय का 'प्रेम (१९०७), तथा सकलनारायण पाण्डेय का 'अपराजिता' (१९०७) इस परंपरा के अन्य उल्लेखनीय प्रयास हैं।

संख्या में कम पर कला की दृष्टि से लिखे गये उपन्यासों की यह परंपरा आनेवाले युग में विकसित हुई। इन उपन्यासों में भी यद्यपि प्रधानता प्रेम की ही रही, किन्तु वह एक वासनापूर्ण प्रवृति के रूप में नहीं बल्कि प्राय: जीवन की एक साधना के रूप में ही प्रायः इन उपन्यासों में प्रस्फुटित हुआ है।

२. ऐतिहासिक—हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यासों का आरम्भ संभवतः किशोरीलाल गोस्वामी से होता है। उनकी 'लवङ्गलता'[५] (१८९०) इस परंपरा के प्रारम्भिक उपन्यासों में से है। इसकी नायिका में लेखक ने एक ऐसी वीराङ्गना का चित्र उपस्थित किया है जिसने अनेक विपत्तियाँ झेल कर भी पातिव्रत की रक्षा की है। जादेश्री उन्नदजी कवि कृत 'खुशबू कुमारी' (१८९१ रिप्रिन्ट) भी इसी परंपरा का उपन्यास ज्ञात होता है, यद्यपि कथावस्तु अज्ञात होने के कारण निश्चयपूर्वक उसके विषय में और कुछ नहीं कहा जा सकता। यह उपन्यास व्रजभाषा में है और आकार में भी बड़ा है, इसलिए महत्वपूर्ण है। एक अन्य प्रारम्भिक उपन्यास उदयराम कवि का 'मोजदीन-महताब' (१८९३) है जिसमें महताब के प्रेम के कारण फारस का राजकुमार मोजदीन उत्तराधिकार का परित्याग करता है। यह कथा गुजराती और हिन्दी में है। बलदेवप्रसाद मिश्र के 'अनारकली' (१९००), 'पृथ्वीराज चौहान' (१९०२), तथा 'पानीपत' (१९०२), गङ्गाप्रसाद गुप्त का 'नूरजहाँ' (१९०२), किशोरीलाल गोस्वामी के 'कुसुमकुमारी' (१९०१), 'राजकुमारी' (१९०२), तथा 'तारा'

(१६०२), भी इस परंपरा में उल्लेखनीय है। अंतिम में लेखक ने अकबर-कालीन दरबारी जीवन का एक अच्छा चित्र उपस्थित किया है। रामप्रताप शर्मा का 'नरदेव' (१६०३), विट्ठलदास नागर का 'पद्मा-कुमारी' (१६०३) गङ्गाप्रसाद गुप्त के 'वीरपत्नी' (१६०३), 'कुमारसिंह सेनापति' (१६०३) तथा 'पूना में हलचल' (१६०३ द्वितीय), किशोरी-लाल गोस्वामी के 'चपला' (१६०३), तथा 'कनक-कुसुम' (१६०३), मिट्ठूलाल मिश्र का 'रणधीरसिंह' (१६०४), श्यामसुन्दर वैद्य का 'पञ्जाब पतन' (१६०४), गङ्गाप्रसाद गुप्त का 'हम्मीर' (१६०४), भगवानदास का 'उरदू बेगम' (१६०५), मथुराप्रसाद शर्मा का 'नूरजहाँ' (१६०५), लालजी सिंह का 'वीरबाला' (१६०६) कतिपय अन्य उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। अंतिम में लेखक औरंगज़ेब और मेवाड़ के बीच के संघर्ष का चित्रण करता है। किशोरीलाल गोस्वामी का 'लखनऊ की कब्र' (१६०६) अवध के एक नवाब नासिरुद्दीन हैदर के समय की घट-नाओं का उपस्थित करता है। जयरामलाल रस्तोगी का 'सौतेली माँ' (१६०६), देवीप्रसाद मुंशी का 'रूठीरानी' (१६०६), जैनेन्द्रकिशोर का 'गुलेनार' (१६०७), जङ्गबहादुर सिंह का 'राजेन्द्रकुमार' (१६०७) और जयरामदास गुप्त के 'काश्मीर-पतन' (१६०७) तथा 'रङ्ग में भङ्ग' (१६०७) भी अच्छे ऐतिहासिक उपन्यास हैं। अंतिम दो में लेखक ने १८१८ में सिक्ख अधिकार के बाद काश्मीर की दुरवस्था का चित्रण किया है, किन्तु इन पर लिटन के 'लास्ट डेज़ आव पॉम्पियाई' की छाया बताई गई है। जयरामदास गुप्त का 'मायारानी' (१६०८) भी ऐतिहासिक है। उनका 'नवाबी परिस्तान' (१६०६) वाजिदअली शाह के राज्यकाल से सम्बन्ध रखता है। उनके 'कलावती' (१६०६) तथा 'मल्का चाँदबीबी' (१६०६) भी इसी युग की ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा में आते हैं।

ये उपन्यास कहने को ऐतिहासिक अवश्य हैं पर निकट से देखनेपर ज्ञात होगा कि इनमें ऐतिहासिक वातावरण का प्रायः अभाव है। साथ ही साथ इनमें नायिकाभेद वाले ढंग के प्रेम का प्राधान्य है,

और उसी के लिए इनमें युद्धादि की अवतारणा प्रमुख रूप से की गई है।

३. ऐयारी-तिलस्मी—हिंदी में ऐयारी और तिलस्मी उपन्यासों का आरंभ देवकीनदंन खत्री से होता है: उनका 'चंद्रकांता' (१८९२) इस परंपरा का प्रथम तथा 'नरेन्द्रमोहिनी' (१८९३) दूसरा उपन्यास है। इनके बाद तो ऐयारी और तिलस्मी उपन्यासों की एक समृद्ध परंपरा चल पड़ी। देवीप्रसाद उपाध्याय का 'सुन्दर-सरोजिनी' (१८९३), जैनेन्द्र किशोर का 'कमलिनी' (१८९४), देवकीनन्दन खत्री के 'वीरेन्द्र वीर' (१८९५), 'चन्द्रकान्ता-सन्तति' (१८९६), 'कुसुम-कुमारी' (१८९९), तथा 'नौलखा हार' [१८९९ ?], मदनमोहन पाठक का 'माया-विलास' (१८९९—), जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी का 'वसन्त-मालती' (१८९९), हरेकृष्ण जौहर के 'कुसुमलता' (१८९९) तथा 'भयानक भ्रम' (१९००), सरस्वती गुप्ता का 'राजकुमार' (१९००), बालमुकुन्द वर्मा के 'कामिनी' (१९००) तथा 'राजेन्द्र-मोहिनी' (१९०१), हरेकृष्ण जौहर के 'नारी-पिशाच' (१९०१), 'मयङ्क-मोहिनी' (१९०१) तथा 'जादूगर' (१९०१), देवकीनन्दन खत्री का 'गुप्त गोदना' (१९०२), हरेकृष्ण जौहर का 'कमलकुमारी' (१९०२) मदनमोहन पाठक का 'आनन्दसुन्दरी' (१९०२), मुन्नीलाल खत्री का 'सच्चा बहादुर' (१९०२), देवकीनन्दन का 'काजर की कोठरी, (१९०२), हरेकृष्ण जौहर के 'निराला नक़ाबपोश' (१९०२), तथा 'भयानक खून' (१९०३), किशोरीलाल गोस्वामी का 'कटे मूड़ की दो-दो बातें' (१९०५), देवकीनन्दन खत्री का 'अनूठी बेगम' (१९०५) विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा का 'वीरेन्द्र कुमार' (१९०६), किशोरीलाल गोस्वामी का 'याकूती तख्ती' (१९०६) तथा रामलाल वर्मा का 'पुतली महल' (१९०८) इस परंपरा के अन्य उल्लेखनीय उपन्यास हैं। यह धारा अगले युग के प्रथम चरण तक इसी प्रकार अप्रतिहत गति से प्रवाहित होती रही।

इन ऐयारी और तिलस्मी उपन्यासों का प्रचार खूब हुआ—यहाँ तक

कि दूसरी परंपराओं के उपन्यासों में भी कभी-कभी ऐयार और तिलस्म ढूँढ़े जाने लगे। एक अतिप्राकृत भावना के आधार पर ही इन उपन्यासों की रचना हुई थी। पाठक-जनता में यह अतिप्राकृत भावना क्यों इतनी अशेष समादृत हुई? इसके लिए मेरा ध्यान है कि उसकी मध्ययुगीन विकृत रुचि को ही उत्तरदायिनी समझना चाहिए।

४. जासूसी उपन्यास—हिंदी में जासूसी उपन्यासों का आरम्भ गोपालराम गहमरी से होता है। उनके 'अद्भुत लाश' (१८९६) तथा 'गुप्तचर' (१८९९), और रुद्रदत्त शर्मा का 'वरसिंह दारोगा' (१९००) इस परंपरा के प्रारंभिक प्रयासों में हैं। गोपालराम गहमरी के 'वेक़सूर की फाँसी' (१९००), 'सरकती लाश' (१९००), 'खूनी कौन है?' (१९००) 'वेगुनाह का खून' (१९००) 'जमुना का खून' (१९००), 'डबल जासूस' (१९००), 'मायाविनी' (१९०१), 'जादूगरनी मनोरमा' (१९०१), 'लड़की चोरी' (१९०१), 'जासूस की भूल' (१९०१), 'थाना की चोरी' (१९०१), 'भयङ्कर चोरी' (१९०१), 'अन्वे की आँख' (१९०२) 'जालराजा' (१९०२), 'जाली काका' (१९०२), 'जासूस की चोरी' (१९०२), 'मालगोदाम में चोरी' (१९०२), 'डाके पर डाका' (१९०३), 'डाक्टर की कहानी' (१९०३), 'घर का भेदी' (१९०३), 'जासूस पर जासूस' (१९०३), 'देवीसिंह' (१९०४), 'लड़का गायब' (१९०४), 'जासूस चक्कर में' (१९०६), किशोरीलाल गोस्वामी का 'ज़िन्दे की लाश' (१९०६), जयरामदास गुप्त का 'लँगड़ा खूनी' (१९०७), माधव केसीट का 'अद्भुत रहस्य' (१९०७) तथा ईश्वरीप्रसाद शर्मा का 'कोकिला' (१९०८) इस परंपरा के अन्य उल्लेखनीय प्रयास हैं।

ऐयारी-तिलस्मी उपन्यासों की भाँति ही उपन्यासों की यह परंपरा भी अप्रतिहत गति से चलती रही, और अगले युग के प्रथम चरण तक उसी की भाँति यह भी खूब प्रचलित रही। हिंदी में यह परंपरा नवीन थी, अंग्रेज़ी से आई थी और भारतीय वातावरण के अनुकूल भी नहीं थी। तब हिंदी जनता ने इसका स्वागत इतना अधिक क्यों किया?

मेरा अनुमान है कि शेष बातों में प्रायः मध्ययुगीन इस युग की जनता इन उपन्यासों के अतिरंजित बुद्धिवाद से प्रभावित हुई, और इसीलिए यह परंपरा भी उसमें खूब लोकप्रिय हुई।

उपन्यास इस युग के लिए एक नई वस्तु थी, किन्तु फिर भी जितना विकास इसका प्रस्तुत युग में हुआ वह एक आश्चर्यजनक घटना थी। यह अवश्य था कि अपने आदर्शों में उपन्यास अपने युग से आगे न बढ़ सका।

कहानी

हिंदी के कहानी-साहित्य का प्रारंभ प्रायः विद्वान् १९०६ के बाद मानते हैं, किन्तु यह विचार ठीक नहीं है, यद्यपि यह सही है कि आलोच्यकाल में उसका यथेष्ट विकास नहीं हुआ। ऐतिहासिक कहानियाँ—कम से कम वह भी जिनमें इतिहास की किसी घटना को लेकर कथावस्तु का संगठन किया गया हो—कोई भी नहीं दिखलाई पड़तीं। ऐयारी-तिलस्मी कहानियाँ भी कठिनाई से ही मिलेंगी। और, लगभग यही दशा जासूसी कहानियों की भी है। पर यह अवश्य है कि यदि ऐयारी-तिलस्मी, और विशेष रूप से जासूसी उपन्यासों का और निकट से निरीक्षण किया जावे तो उनमें से अनेक वास्तव में कहानी ग्रंथ ही ठहरेंगे, उपन्यास उनको कहना बहुत उचित न होगा। आवश्यकता है कि इस दृष्टि से उनका निरीक्षण किया जावे, और तब निस्संदेह हिंदी कहानी-साहित्य के इतिहास पर मूल्यवान प्रकाश पड़ेगा। सामाजिक कहानियाँ अवश्य मिलती हैं, और सब से अधिक संख्या में मिलती हैं, किंतु उनमें भी चरित्र-प्रधान कहानियाँ—वे कहानियाँ जिनमें किसी मनोवैज्ञानिक तथ्य का निरूपण हो—बिलकुल नहीं मिलतीं। मिलती हैं केवल उद्देश्य-प्रधान, रस-प्रधान और वस्तु-प्रधान कहानियाँ; साथ ही कुछ उक्ति-प्रधान कहानियाँ भी मिलती हैं। इन्हीं चार से आलोच्यकाल का कहानी-साहित्य निर्मित होता है।

१. उद्देश्य-प्रधान—उद्देश्य-प्रधान कहानियों के दो भेद दिखाई

पड़ते हैं : वे कहानियाँ जो पाठ्य-क्रम के लिए लिखी गई थीं, और वे जो स्वतंत्र रूप से लिखी गईं।

पहले प्रकार की कहानियाँ आलोच्यकाल में प्रारंभ से ही मिलती हैं। कृष्णदत्त मिश्र कृत 'बुद्धि फलोदय' (१८६७) की कहानी अपने षष्ठ संस्करण में हमारे सामने सबसे पहले आती है। इसमें सुबुद्धि और दुर्बुद्धि की कहानी कही गई है। दूसरी कहानी-पुस्तक शिवप्रसाद सितारेहिंद सं० 'वामा-मनोरंजन' (१८६७) है, जो तृतीय संस्करण में उसी समय हमारे सामने आती है। इसकी कहानियाँ स्त्रीशिक्षा के दृष्टिकोण से लिखी हुई हैं। कुछ और आगे बढ़ने पर पं० गौरीदत्त की 'तीन देवों की कहानी' (१८७० द्वितीय) मिलती है, जिसमें एक उपदेशप्रद अलौकिक कथा है। नजमुद्दीन कृत 'सूरजपुर की कहानी' (१८७१ तृतीय) भी प्रायः इसी समय की है, और इसी श्रेणी की है। इसी प्रकार की एक अन्य कृति रामप्रसाद तिवारी की 'नीतिसुधा तरङ्गिणी' (१८७५ द्वितीय) है, जिसकी नीति-प्रधानता स्पष्ट है।

दूसरे प्रकार की कहानियाँ भी पहले से ही मिलने लगती हैं, यद्यपि उतना नहीं जितना ऊपर वाली कहानियाँ। पराहूदास के 'दृष्टान्त-कोष' (१८७०) में नीति-उपदेशपूर्ण,कहानियाँ पर्याप्त संख्या में हैं। अम्बिकादत्त व्यास की 'कथाकुसुम-कलिका' (१८८८) में भी नीति-प्रधान कहानियाँ प्रमुख हैं। पं० गोपालप्रसाद शर्मा की 'नेकी का दर्जा बदी' (१८९३) कहानी भी उद्देश्य-प्रधान है। ज्वालादत्त जोशी का 'दृष्टान्त-समुच्चय' (१८९८) उपर्युक्त 'दृष्टान्त-कोष' तथा भेदीराम का 'नेकी-बदी' (१९०१) उपर्युक्त 'नेकी का दर्जा बदी' की कोटि की रचनाएँ हैं।

२. रस-प्रधान—आलोच्यकाल की सबसे पहली रस-प्रधान कहानी पं० गौरीदत्त कृत 'देवरानी-जेठानी की कहानी' (१८७१) है, जो शृङ्गार-प्रधान है। आकार में यह १३६ पृष्ठों की है, और इसलिए किसी औसत आकार के प्रारंभिक हिंदी उपन्यास से छोटी नहीं है। श्यामलाल चक्रवर्ती की 'कहानी कला-कामी' (१८७९) दूसरी रस-प्रधान कहानी है। इसमें भी प्रधानता शृङ्गाररस की है, और आकार में यह भी

छोटी नहीं है। साहबप्रसाद सिंह की 'सपने की संपति' (१८८८) एक अन्य प्रेम-कथा है। पर आकार में यह छोटी है, और वस्तु-संकलन की दृष्टि से लिखी गई ज्ञात होती है। दुर्गाप्रसाद मुंशी की 'फुलवारी की छवि अर्थात् मनफूल की कहानी' (१८८५) भी एक प्रेम-कथा है। यह अवश्य आकार में काफ़ी बड़ी है—१२२ पृष्ठों में समाप्त हुई है। सूरजभान का 'लज्जावती का क़िस्सा' (१८८६) १२ पृष्ठों की एक अत्यन्त साधारण रचना ज्ञात होती है।

३. वस्तु-प्रधान—आलोच्यकाल की वस्तु-प्रधान कहानियों का प्रारंभ—जो प्रायः मनोरञ्जन मात्र की दृष्टि से लिखी गई थीं—कदाचित् 'मनोहर कहानी' (१८८०) से होता है, जिसमें १०० कहानियों का संग्रह है। मुंशी नवलकिशोर इसके संपादक बताए गये हैं। इस परंपरा की शेष कहानियों में से उल्लेखनीय केवल गोपालप्रसाद शर्मा की 'कंजूस-चरित्र' (१८९३) तथा 'ठग-लीला' (१८९३) हैं।

४. उक्ति-प्रधान—एक और प्रकार की कहानियाँ वे हैं जिनमें वास्तव में कहानी-तत्व बहुत ही कम होता है, केवल उक्ति-चमत्कार उपस्थित करने के लिए एक देश-काल-पात्र की काम चलाऊ भूमिका गढ़ ली जाती है। ऐसी रचनाएँ प्रायः हास्यरसात्मक हैं, और अधिकतर अकबर-बीरबल अथवा कालिदास-भोज को लेकर लिखी गई हैं। चण्डीप्रसाद सिंह कृत 'हास्य-रतन' (१८८६), रामस्वरूप शर्मा कृत 'हास्यरस की मटकी' (१८९७), बालकृष्ण शर्मा कृत 'हास्य-सुधाकर (१९०२) तथा सूर्यनारायण शर्मा कृत 'हास्य-रत्नाकर' (१९०६) एक ओर, तथा सूर्यनारायण सिंह सं० 'बीरबर-अकबर उपहास' (१८९५ रिप्रिन्ट), जगन्नाथ शर्मा सं० 'अकबर-बीरबर समागम' (१८९७-) किशनलाल सं० 'बीरबल-विलास' (१९०४) तथा स्वरूपचन्द जैन सं० 'भोज और कालिदास' (१९०३) दूसरी ओर इसी परंपरा की रचनाएँ हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं कि कहानी-क्षेत्र में भी लेखकों और पाठकों की रुचि मध्ययुगीन ही रही, उसमें नव-चेतना के लक्षण स्पष्ट नहीं दिखाई पड़े।

नाटक

इस काल के नाटक-साहित्य को हम निम्नलिखित वर्गों में विभाजित पाते हैं : १. राम-चरित्र, २. कृष्ण-चरित्र, ३. पौराणिक, ४. संत-चरित्र, ५. ऐतिहासिक, ६. शृंगाररस-प्रधान, ७. प्रतीकवादी, ८. सामयिक और राष्ट्रीय, ९. सामाजिक, और १०. व्यंग्य-विनोद-प्रधान। इन्हीं के अनुसार हम उसका अध्ययन करेंगे।

१. राम-चरित्र—राम-चरित्र से सम्बन्ध रखनेवाले कुछ नाटकों का उल्लेख अवश्य मिलता है, पर वे रामलीला के लिए ही प्रायः लिखे गये हैं, नाटकीयता का विकास उनमें कम दिखाई पड़ता है।

२. कृष्ण-चरित्र—काव्य-साहित्य की भाँति यहाँ भी कृष्ण-चरित्र प्रायः दो रूपों में अलग-अलग हमारे सामने आता है : एक वह जिसका सम्बन्ध ब्रज से है, और दूसरा वह जिसका सम्बन्ध द्वारका से है। ब्रजनायक कृष्ण के चरित्र से सम्बन्ध रखनेवाला आलोच्यकाल का सबसे अधिक उल्लेखनीय नाटक हरिश्चन्द्र कृत 'चन्द्रावली' नाटिका (१८७७) है, जिसमें लेखक ने चन्द्रावली के चरित्र में एक स्वर्गीय प्रेम का चित्रण किया है। अम्बिकादत्त व्यास की 'ललिता' नाटिका (१८८४) तथा सूर्यनारायणसिंह की 'श्यामानुराग' नाटिका (१८९९) भी उसी शैली पर लिखे गये हैं। कृष्ण की रासलीला को विषय बना कर भी कुछ नाटकों की रचना हुई : एक है हरिहरदत्त दूबे कृत 'महारास' (१८८४), तथा दूसरा है खड्गबहादुर मल्ल कृत 'महारास' (१८८५)। कृष्ण-चरित्र के इस पक्ष से संबंध रखने वाले दो नाटक और उल्लेखनीय हैं : बलदेवप्रसाद मिश्र कृत 'नन्दविदा' (१९००) तथा राधाचरण गोस्वामी कृत 'श्रीदामा' (१९०४)। पहले में ब्रज से उनके द्वारका-गमन की घटना का चित्रण हुआ है, और दूसरे में एक सखा के साथ उनकी मैत्री का।

द्वारकाधीश कृष्ण के चरित्र को लेकर लिखे गए नाटकों में से एक है खड्गबहादुर मल्ल का 'कल्पवृक्ष' (१८८६), जिसमें सत्यभामा

के गर्वखण्डन की कथा है। अयोध्यासिंह उपाध्याय का एक नाटक 'रुक्मिणी-परिणय' (१८९४) कृष्ण-रुक्मिणी विवाह लेकर लिखा गया है। बलदेवप्रसाद मिश्र के 'प्रभास-मिलन' (१९०३) में कृष्ण वसुदेवादि यदुवंशियों और नन्दादि गोपों की तीर्थ-यात्रा प्रसंग में परस्पर मिलने की कथा है। संस्कृत में भी इसी नाम का एक नाटक है, संभव है यह नाटक उसकी छाया लेकर लिखा गया हो। सुदामा के साथ कृष्ण की मैत्री की प्रसिद्ध कथा लेकर 'कृष्ण-सुदामा' (१९०७) नाम का एक नाटक शिवनन्दन सहाय का लिखा हुआ है। रूपनारायण पांडेय का 'कृष्णलीला' (१९०७) कृष्ण के व्यापक चरित्र को लेकर लिखा गया है. पर उसमें नाटकीयता कम है।

३. पौराणिक—शेप पौराणिक कथा-वस्तु के आधार पर लिखे गए नाटकों में एक तो प्राधान्य है महाभारत-कुल के नाटकों का। विष्णु गोविन्द शिर्वादेकर का 'हिंदुस्तानी कर्णपर्व' (१८७६) इस प्रकार की प्रारम्भिक रचनाओं में से है; गजराज सिंह का 'द्रौपदी वस्त्र-हरण' (१८८५), अम्बाप्रसाद का 'वीर-कलंक' (१८९६), और शालिग्राम लाला का 'अभिमन्यु' (१८९६) भी 'महाभारत' की मूल कथा लेकर लिखे गए अन्य उल्लेखनीय नाटक हैं। उपर्युक्त से भी अधिक प्राधान्य है उन नाटकों का जो कतिपय पुराण-प्रसिद्ध चरित्रों को लेकर लिखे गए हैं। हरिश्चंद्र का 'सत्य हरिश्चन्द्र' [१८७५ ?], जो इस युग का कदाचित् सबसे अधिक लोकप्रिय नाटक कहा जा सकता है, कुशीराम का 'राजा हरिश्चन्द्र' (१९०८), श्रीनिवासदास का 'प्रह्लाद-चरित्र' (१८८८), जगन्नाथदास का 'प्रह्लाद-चरितामृत' (१९००), दामोदर शास्त्री का 'बाल खेल या ध्रुवचरित्र' (१८८६), सावित्री का उपाख्यान को लेकर हरिश्चन्द्र का लिखा हुआ 'सती-प्रताप' (१८९२), कन्हैया-लाल बाबू का 'शील-सावित्री' (१८९८), देवराज लाला का 'सावित्री' (१९००), नलोपाख्यान को लेकर लिखे गए बालकृष्ण भट्ट कृत 'नलदमयंती स्वयंवर' (१८९५) तथा सुदर्शनाचार्य शास्त्री का 'अनर्घनल-चरित्र' (१९०८) इसी प्रकार की रचनाएँ हैं। शेष

में से उल्लेखनीय हैं केवल दो : कन्हैयालाल बाबू का 'अंजना सुन्दरी' (१६०१) तथा सी० एल० सिंह का 'विषया-चन्द्रहास' (१६०२), जिनके विषय प्रकट हैं।

राम-कुल के आख्यानों के आधार पर कोई भी सुन्दर रचना नहीं दिखाई पड़ती।

कृष्ण-कुल के आख्यानों के आधार पर लिखे गए नाटकों में उल्लेखनीय हैं उषा-चरित्र संबंधी तथा प्रद्युम्न-चरित्र संबंधी : चन्द्र शर्मा कृत 'उषाहरण' (१८८७), कार्तिकप्रसाद खत्री लिखित 'उषाहरण' (१८६२), बलवन्तराव सिंधिया लिखित 'उषा' (१६०४) पहले चरित्र से संबंध रखनेवाले प्रमुख नाटक हैं; दूसरे चरित्र से संबंध रखनेवाले नाटकों में से केवल एक नाटक उल्लेखनीय है : अयोध्यासिंह उपाध्याय लिखित 'प्रद्युम्न विजय' (१८६३) व्यायोग; शेष सामान्य हैं।

४. संत-चरित्र—संत-चरित्र संबंधी नाटकों में गोपीचन्द, मोरध्वज, तथा भर्तृहरि से संबंध रखनेवाले नाटक आते हैं; अन्नाजी गोविन्दजी इनामदार कृत 'गोपीचन्द' (१८७७), सखाराम बालकृष्ण सरनायक कृत 'गोपीचन्द' (१८८३), लालीदेवी कृत 'गोपीचन्द' (१८६६), शालिग्राम लाला कृत 'मोरध्वज' (१८६०) तथा कृष्ण बलदेव कृत 'भर्तृहरि राज-त्याग' (१८६८) इसी वर्ग के नाटक हैं।

५. ऐतिहासिक—ऐतिहासिक नाटकों में प्रधानता मध्ययुग की कथा की रही। इनका प्रारंभ भारतेन्दु से होता है : उनका 'नीलदेवी' (१८८२) इस प्रकार का पहला उल्लेखनीय नाटक है। श्री निवासदास का 'संयोगिता-स्वयंवर' (१८८६) संयोगिता और पृथ्वीराज के विवाह की घटना को लेकर लिखा गया है; गोपालराम बाबू के 'यौवन-योगिनी' (१८६३) की कथा यह है कि गुजरात की राजकुमारी मायावती पृथ्वीराज से प्रेम करती है, और जब पृथ्वीराज शत्रु के हाथ से मारा जाता है वह आत्म-हत्या कर लेती है। राधाचरण गोस्वामी का 'अमरसिंह राठौर' (१८६५) उसी नाम के एक प्रसिद्ध वीर-चरित्र को लेकर लिखा गया है। इस काल का एक नाटक अकबर की गोरक्षिणी-नीति को

भी लेकर लिखा गया है : नारायण शर्मा का 'अकबर-गोरक्षा न्याय' (१८९५)। राधाकृष्णदास के 'महाराणा प्रताप' (१८९८) के संबंध में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। अपने युग के ऐतिहासिक नाटकों में कदाचित् यही सबसे अधिक सफल रहा। राजस्थान के एक आदर्श वीर जयमल के चरित्र को लेकर लिखा गया गङ्गाप्रसाद गुप्त का 'वीर जयमल' (१९०३), अलाउद्दीन के चित्तौर-संबंधी आक्रमण को लेकर लिखा गया राधाकृष्णदास का 'महारानी पद्मिनी' (१९०३ द्वितीय), एक अन्य वीर-चरित्र को लेकर लिखा गया हरिहरप्रसाद जिज्ञल का 'राजसिंह' (१९०६) इस परंपरा की अन्य सुंदर कृतियाँ हैं। परमेश्वर मिश्र लिखित 'रूपमती' (१९०७) की भी गणना इन्हीं के साथ की जा सकती है, जिसमें औरंगज़ेब नाटक की नायिका को अपनी प्रेयसी बनाना चाहता है, पर अन्त तक विफल ही रहता है। अंग्रेज़ी शासन-काल के ऐतिहासिक नाटकों का नितान्त अभाव रहा। हिंदू युग के ऐतिहासिक नाटक भी इने-गिने हैं; और उल्लेखनीय उनमें से हैं केवल महेन्द्रनाथ कृत 'बुद्धदेव चरित्र' (१९०२), तथा शालिग्राम लाला कृत 'पुरु-विक्रम' (१९०६)। पहले का विषय स्पष्ट ही है, दूसरा सिकंदर के इतिहास-प्रसिद्ध भारत-आक्रमण को लेकर लिखा गया है।

६. **शृङ्गाररस-प्रधान**—कल्पित प्रेम कथानकों को लेकर प्रेमाख्यानक उपन्यासों की भाँति प्रेमाख्यानक नाटकों की भी रचना इस काल में खूब हुई। इस परंपरा का पहला नाटक केशवराम भट्ट का 'सज्जाद-संबुल' (१८७७) है, जिसे उसके प्रकाशकों ने भ्रमवश हिंदी का प्रथम मौलिक नाटक कहा है। वास्तव में वह एक बँगला नाटक के आधार पर ही लिखा गया है। श्रीनिवासदास का 'रणधीर-प्रेममोहिनी' (१८८०) शृङ्गार-रस का एक दुःखान्त है, और इसीलिए नाटक-साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसी परंपरा में आने वाला केशवराम भट्ट का एक अन्य नाटक 'शमशाद-सौसन' (१८८१) भी एक बँगला नाटक के आधार पर ही लिखा गया है, मौलिक नहीं है। श्रीनिवासदास का एक अन्य नाटक पुनः इसी परंपरा

में आता है : वह है 'तपता-संवरण' (१८८३)। महादेवप्रसाद का 'चंद्रप्रभा-मनस्वी' (१८८४), अमनसिंह गोतिया का 'मदन-मंजरी' (१८८४), खड्गबहादुर मल्ल का 'रति-कुसुमायुध' (१८८५), सतीशचन्द्र वसु का 'मैं तुम्हारा ही हूँ' (१८८६), विन्ध्येश्वरीप्रसाद त्रिपाठी का 'मिथिलेश-कुमारी' (१८८६), किशोरीलाल गोस्वामी का 'प्रणयिनी-परिणय' (१८९०), खवास डोलाजी बाबाजी का 'रतन सेन अने रतनावती' (१८९०), किशोरीलाल गोस्वामी का 'मयंक-मंजरी' (१८९१), शालिग्राम लाला का एक दुखान्त 'लावण्य-वती-सुदर्शन' (१८९२), गोपालराम बाबू का 'विद्या-विनोद' (१८९२), कृष्णानंद द्विवेदी का 'विद्या-विनोद' (१८९४), गोकुलनाथ शर्मा का 'पुष्पवती' (१८९९), ज्ञानानंद का 'प्रेम-कुसुम' (१८९९), वज्र-प्रसाद शर्मा का 'मालती-वसंत' (१८९९), सूरजभान का 'रूप-बसंत' (१९०१) हरिहरप्रसाद जिज्ञल का 'जया' (१९०३), देवीप्रसाद 'पूर्ण' का 'चन्द्रकला-भानुकुमार' (१९०४), हरिहरप्रसाद जिज्ञल का 'कामिनी-मदन' (१९०७), तथा हरनारायण चौबे का 'कामिनी-कुसुम' (१९०७) इसी परंपरा के अन्य उल्लेखयोग्य नाटक हैं। इनमें नायक और नायिका के हृदयों में प्रणय का विकास दिखाया जाता है, और वे अनेक विषम परिस्थितियों का सामना करने के अनंतर या तो अपने प्रणयोद्योगों में सफल होते हैं या विफल, और उसीके अनुसार नाटक भी प्रायः सुखान्त होता है या दुःखान्त। किन्तु कथावस्तु का विकास अधिकतर एक ही प्रकार से होता है, और इसलिए यह समस्त नाटक प्रायः एक ही साँचे में ढले-से ज्ञात होते हैं।

७. प्रतीकवादी—कमलाचरण मिश्र का 'अद्भुत नाटक' (१८८५), राधाचरण गोस्वामी का 'यमलोक की यात्रा' (१८८९), रत्नचन्द प्लीडर का 'न्यायसभा' (१८९२) दरियावसिंह का 'मृत्युसभा' (१८९६), शंकरानंद का 'विज्ञान' (१८९७) तथा नाट्यकला की उत्पत्ति पर किशोरीलाल गोस्वामी का 'नाट्य-संभव' (१९०४), इस परंपरा के प्रमुख नाटक हैं। इनके पात्र मनुष्य न होकर मानसिक भावादि हैं।

८. सामयिक और राष्ट्रीय—इस युग में देश की तत्कालीन दशा पर कई नाटक लिखे गए। हरिश्चन्द्र का 'भारत-दुर्दशा' (१८८३) इस परंपरा का प्रथम नाटक ज्ञात होता है। खड्गबहादुर मल्ल का 'भारत-आरत' (१८८५) अम्बिकादत्त व्यास का 'भारत-सौभाग्य' (१८८७) बदरीनारायण चौधरी का 'भारत-सौभाग्य' (१८८९) दुर्गादत्त शर्मा का 'वर्त्तमान दशा' (१८९०), गोपालराम गहमरी का 'देशदशा' (१८९२), काशीनाथ खत्री का 'ग्राम पाठशाला और निकृष्ट नौकरी' (१८९३ द्वितीय), देवकीनन्दन त्रिपाठी का 'भारत-हरण' (१८९९), प्रतापनारायण मिश्र का 'भारत-दुर्दशा' (१९०२), तथा जीवानन्द शर्मा का 'भारत-विजय' (१९०७) राष्ट्रीय और सामयिक समस्याओं को लेकर लिखे गये उसी परंपरा के अन्य उल्लेखनीय नाटक हैं। हिन्दी-उर्दू की समस्या पर भी लिखे गये दो नाटक मिलते हैं : रामगरीब चौबे का 'नागरी-विलाप' (१८८५) तथा रत्नचन्द प्लीडर का 'हिन्दी-उर्दू का नाटक' (१८९२)। इन सभी नाटकों में देश की आर्थिक, सामाजिक, तथा राजनैतिक विवशता का चित्र अच्छा उतरा है।

९. सामाजिक—सामाजिक समस्याओं को लेकर भी नाटकों की रचना काफ़ी हुई। निस्संदेह आर्यसमाज ने जो जागृति उत्पन्न कर दी थी उसका इसमें एक बड़ा हाथ था।

अनमेल विवाह इस युग की सामाजिक समस्याओं में सबसे प्रमुख रूप से नाटक का विषय बना। बालविवाह पर राधाकृष्णदास का 'दुःखिनी बाला' (१८८२ द्वितीय), विवाहिता-परित्याग पर निद्धुलाल मिश्र का 'विवाहिता-विलाप' (१८८३) तथा हिन्दू वैवाहिक प्रथा की बुराइयों पर तोताराम वकील का 'विवाह-विडंबन' (१८८४) इस श्रेणी के नाटकों में उल्लेखनीय हैं।

सतीत्व और नारी-आदर्श पर भी काफ़ी नाटक लिखे गये। खड्गबहादुर मल्ल का 'भारत ललना' (१८८८), रघुवीर सिंह का 'मनोरंजनी' (१८९०), छगनलाल कासलीवाल का 'सत्यवती' (१८९६), बाल-

मुकुन्द पाण्डेय का 'गंगोत्तरी' (१८९७'), पुत्तनलाल सारस्वत का 'स्वतन्त्रा बाला' (१९०३), तथा बलदेवप्रसाद मिश्र का 'नवीन तपस्विनी' (१९०२) इस प्रकार के नाटकों में उल्लेखनीय हैं। क्या इस युग के नाटककार भी उपन्यासकारों की भाँति स्त्री-स्वातंत्र्य के आन्दोलन से भयभीत थे ?

गोरक्षा की समस्या लेकर भी कुछ नाटक लिखे गए : अम्बिकादत्त व्यास का 'गो-संकट' (१८८७) तथा जगतनारायण शर्मा का 'भारत-दुर्दिन' (१८८९) इसी प्रकार के नाटक हैं।

आर्यसमाज के प्रचार के लिए भी कुछ नाटकों की रचना की गई : रुद्रदत्त शर्मा के 'पाखंड-पूर्ति' (१८८८) तथा 'आर्यमत-मार्तण्ड' (१८९५) उनमें मुख्य हैं।

१०. प्रहसन—नई परंपरा के प्रहसनों का प्रारम्भ, जिनमें सामाजिक और धार्मिक समस्याओं पर रहस्यपूर्ण व्यंग्य की अवतारणा हुई, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से होता है, जिनकी पहली मौलिक रचना 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' (१८८८) प्रहसन था, जो उन्होंने १८७३ में लिखा था। इसमें मांस और मदिरा को धार्मिक दृष्टि से ग्राह्य बतानेवालों का उपहास किया गया है। देवकीनन्दन त्रिपाठी का 'जय नारसिंह की' (१८७६) तथा बालकृष्ण भट्ट का 'शिक्षादान' या 'जैसे को तैसा' (१८७७) भी हिन्दी के प्रारम्भिक प्रहसनों में से हैं। हरिश्चन्द्र के 'अन्धेरनगरी' (१८८२ द्वितीय) में एक ऐसे शासक के प्रति व्यंग्य है जिसकी शासन-व्यवस्था में न्याय और विवेक का अभाव है। हरिश्चन्द्र कुलश्रेष्ठ का 'ठगी की चपेट' (१८८४), मन्नालाल शर्मा का हास्यार्णव (१८८५ द्वितीय) देवदत्त मिश्र का 'बाल-विवाह दूषक' (१८८५), प्रतापनारायण मिश्र का 'कलि-कौतुक रूपक' (१८८६), जिसमें इस युग की सभ्यता का खोखलापन दिखाने की चेष्टा की गई है, देवकीनन्दन त्रिपाठी का 'कलियुगी जनेऊ' (१८८६), राधाचरण गोस्वामी का वृद्ध-विवाह पर 'बूढ़े मुँह मुँहासे' (१८८७), रामशरण शर्मा का 'अपूर्व रहस्य' (१८८८), हरिश्चन्द्र का 'विषस्य विषमौषधम्' (१८८८),

जो तत्कालीन गायकवाड़ नरेश के अपदस्थ किये जाने से संबंध रखता है, और १८७६ का लिखा हुआ बताया जाता है, माधवप्रसाद का 'हास्यार्णव का एक भाग' (१८९१), राधाचरण गोस्वामी के 'तन मन धन गुसाईं जी के अरपन' (१८९२) तथा 'भंग-तरंग' [१८९२ ?], देवकीनंदन तिवारी का 'कलियुगी विवाह' (१८९२), अचनेश मिश्र का 'हास्य' नाटक (१८९३), विजयानन्द त्रिपाठी का 'महा अंधेरनगरी' (१८९३), जो हरिश्चन्द्र के 'अँधेरनगरी' अनुकरण में लिखा गया जान पड़ता है, गोपालराम गहमरी का 'दादा और मैं' (१८९३), बलदेव-प्रसाद मिश्र का 'लालाबाबू' (१९००), जसवंतसिंह महाराजा कृत 'गोबर गणेश' (१९०८) इस परंपरा की अन्य उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। यदि ध्यानपूर्वक देखा जावे तो ज्ञात होगा कि यह नाटक भी प्रायः सामाजिक विषयों—या कभी-कभी सामयिक विषयों को—लेकर लिखे गए हैं, और तत्कालीन समाज की मनोवृत्ति का अच्छा परिचय देते हैं। स्पष्ट है कि यह परंपरा १८९३ के अनंतर शिथिल पड़ गई और इसमें आवश्यक स्फूर्ति का अभाव हो गया।

फलतः ज्ञात होगा कि इस युग का नाटक-साहित्य ऊपर विवेचित अन्य सभी साहित्य रूपों की अपेक्षा अधिक अपने युग के साथ रहा; सामयिक, राष्ट्रीय और सामाजिक रचनाओं तथा वैसे ही प्रहसनों की बाढ़ जैसी नाटक-साहित्य में आई वैसी दूसरों में नहीं आई. यही उक्त कथन को प्रमाणित करने के लिए यथेष्ट होगा। वैसे भी, इस युग का नाटक-साहित्य उक्त अन्य साहित्य-रूपों की अपेक्षा मध्ययुगीन रुचियों से सबसे कम अभिभूत रहा यह समझने में कठिनाई न होनी चाहिये।

निबंध

आलोच्यकाल में निबंध-ग्रन्थ इने-गिने मिलते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में जनता उन्हें भले ही पढ़ लेती थी, किंतु पुस्तक रूप में उनके संग्रहों की माँग इस काल में कभी नहीं हुई। हरिश्चन्द्र के अतिरिक्त इस काल के निबंध-लेखकों में सर्वप्रमुख हैं प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, तथा बालमुकुन्द गुप्त। इनमें से अंतिम तथा भारतेन्दु के अतिरिक्त

और किसी के निबंध ग्रन्थ उसके जीवनकाल में प्रकाशित नहीं हुए। अध्ययन के लिए हम इस साहित्य को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित कर सकते हैं : १. विनोदपूर्ण, २. विशिष्ट विषयक, और ३. विविध विषयक।

१. विनोदपूर्ण निबंध—पुस्तक के रूप में पहले निबंध विनोद-पूर्ण शैली में मुक्तकों के ढंग के मिलते हैं : ऐसे निबंध-संग्रह हैं हनुमानप्रसाद कृत 'प्रज्ञा-वाटिका' (१८८१) तथा हरनाथप्रसाद खत्री कृत 'मानव-विनोद' (१८८५ द्वितीय); त्रिलोचन-झा का 'आत्म-विनोद' (१९०३) भी इसी प्रकार की रचना ज्ञात होती है।

२. विशिष्ट विषयों के निबंध—विशेष विषयों पर लिखे गये उल्लेखनीय निबंधग्रंथ केवल तीन हैं : हरिश्चन्द्र कृत 'खुशी' (१८९७), रामगरीब चौबे कृत 'पुस्तक सहवास' (१९०८) तथा 'कार्य-संपादन' (१९०८)। विशेष विषयों के निबंध-संग्रह कुछ और भी मिलते हैं, किंतु उनमें विषय प्रतिपादन इतना प्रमुख और कला इतनी गौण है कि उनका उल्लेख विशेष विषयों के साहित्य के संबंध में ही अधिक उप-युक्त होगा।

बालमुकुन्द गुप्त कृत 'शिवशंभु का चिट्ठा' (१९०६) तथा 'चिट्ठे और ख़त' (१९०८) का स्थान अलग ही है। वास्तव में इतने सुरुचि-पूर्ण हास्य और व्यंग्य से परिवेष्ठित, प्रायः संयत और उत्तरदायित्वपूर्ण, पर निर्भीक और विचार-पूर्ण निबंध फिर कम ही देखने में आए।

३. विविध विषयों के निबंध-संग्रह—फिर भी, बालमुकुन्द गुप्त की 'गुप्त-निबंधावली', भाग १ (१९१३) उनके देहावसान के बाद ही प्रकाशित हुई। यही दशा प्रतापनारायण मिश्र के निबंध-संग्रह 'निबंध-नवनीत', भाग १ (१९१९) तथा बालकृष्ण भट्ट के निबंधों 'भट्ट-निबंधावली', (१९४२) की भी हुई। पिछले युग की इन कृतियों को पुस्तक रूप में प्रकाशन के लिए आनेवाले युग की बाट देखनी पड़ी।

निबंध इस युग में बहुत पिछड़ा रहा, यद्यपि निस्संदेह अपने आदर्शों में वह अपने युग के किसी साहित्यरूप से पीछे नहीं रहा। यह भी कम नहीं है।

साहित्य-शास्त्र

प्रस्तुत विषय का साहित्य निम्नलिखित वर्गों में विभाजित मिलता है : १. छंदानुशासन, २. अलंकार, ३. नायिका-भेद, ४. रस-विवेचन, ५. काव्यशास्त्र, ६. नाट्यशास्त्र, और ७. विविध; इन्हीं वर्गों के अनुसार नीचे हम उसका निरीक्षण करेंगे।

१. छंदानुशासन—आलोच्यकाल के प्रारंभ ही से पिंगल या छंद-रचना-संबंधी ग्रंथों का प्राधान्य रहा : ज्वालास्वरूप का 'रुद्र-पिङ्गल' (१८६६), बलवानसिंह राजा का 'चित्र-चंद्रिका' (१८६६), श्रीधर का 'पिङ्गल' (१८६६), कन्हैयालाल शर्मा का 'छंद-प्रदीप' (१८७५), हृषीकेष भट्टाचार्य का 'छंदोबोध' (१८७७), उमराव सिंह का 'छंदोमहोदधि' (१८७८), रामप्रसाद का 'छंद-प्रकाश' (१८६१), जादेजी उन्नदजी कवि का गुजराती अनुवाद सहित 'भागवत पिंगल' (१८६३), जगन्नाथप्रसाद 'भानु' का 'छंद-प्रभाकर' (१८६४), रामकिशोरसिंह का 'छंद-भास्कर' (१८६५), महावीरप्रसाद राव का 'मनोदूत' (१८६५), जगन्नाथदास 'रत्नाकर' का 'घनाक्षरी नियम-रत्नाकर' (१८६७), गदाधर कवि का 'छंदोमंजरी' (१६०३ द्वितीय), गिरिवरस्वरूप पाण्डेय का 'गिरीश पिंगल' (१६०५) तथा हरदेवदास वैश्य का 'पिंगल' (१६०६) इस विषय के उल्लेखनीय प्रयास हैं। किंतु इनमें से अधिकतर छोटे और अपर्याप्त हैं; बड़े और कुछ पूर्ण प्रयास उपर्युक्त में से 'चित्र-चन्द्रिका' 'छंदोबोध,' तथा 'छंद-प्रभाकर' हैं। विशेष उल्लेखनीय इनमें से अंतिम है, जिसमें हिंदी छंदों का एक विस्तृत और पूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। घनाक्षरी छंद के विषय में 'घनाक्षरी नियम-रत्नाकर' भी एक प्रामाणिक ग्रन्थ है।

२. अलंकार—पिंगल के अनंतर अलंकार ही सबसे अधिक लोकप्रिय विषय रहा। इस युग के अलंकार ग्रन्थ अलंकार-निरूपण के साथ उदाहरणों के लिए प्रायः किसी चरित्र का आश्रय लेते हुए दिखाई पड़ते हैं ; ऐसे अलंकार ग्रन्थ थोड़े ही हैं जिनमें यह प्रवृत्ति नहीं मिलती। पहले प्रकार की रचनाओं में उल्लेखनीय हैं रूपदास स्वामी कृत 'सुर-

सालंकृति बोधिनी' (१८७६), जिसमें पाण्डवों की यशगाथा है, त्रिलोकीनाथसिंह कृत 'भुवनेश-भूषण' (१८८२), जिसमें राधाकृष्ण चरित्र है, लछिराम कवि कृत 'रावणेश्वर कल्पतरु' (१८६२), जिसमें शिव-चरित्र तथा 'रामचन्द्र भूषण' (१८६८) जिसमें राम-चरित्र हैं, गङ्गाधर शर्मा कृत 'महेश्वर-भूषण' (१८६७), जिसमें लेखक ने अपने आश्रयदाता महेश्वरबख्श सिंह को अमर करना चाहा है, मुरारिदान कविराजा कृत 'जसवंत जसोभूषण' (१८६७), जिसमें लेखक ने अपने आश्रयदाता जसंवतसिंह महाराजा की कीर्ति का गान किया है, और नन्दकिशोर मिश्र कृत 'गंगाभरण' (१६०१) जिसमें गंगा की प्रशंसा की गई है। दूसरे प्रकार की रचनाओं में गोविन्द कवि की एक छोटी-सी कृति 'कर्णाभरण' (१८६४), बिहारीलाल आचार्य का 'अलंकारादर्श' (१८६७) तथा कन्हैयालाल पोद्दार का 'अलंकार-प्रकाश' (१६०२) आते हैं। इन समस्त में से विषय-विवेचन की दृष्टि से महत्वपूर्ण 'जसवंत जसोभूषण', 'अलंकारादर्श' तथा 'अलंकार-प्रकाश' ही हैं, विशेषरूप से अंतिम जिसमें विषय का विवेचन यथेष्ट विस्तार और पाण्डित्य के साथ हुआ है।

३ नायिका-भेद—उपर्युक्त के अनंतर प्राधान्य रहा है नायिका-भेद ग्रंथों का, जिनमें से उल्लेखनीय हैं बिहारीसिंह का 'दूती-दर्पण' (१८८२), लक्ष्मीनाथसिंह राजा का 'लक्ष्मी-विलास' (१८८५), शिवसहाय उपाध्याय का 'नायिका-रूपदर्शन' (१८८८) तथा रामकृष्ण वर्मा का 'बिरहा नायिका-भेद' (१६००)। रस-निरूपण संबंधी ग्रंथों में भी प्रायः नायिका-भेद का निरूपण किया गया है।

४. रस-निरूपण—रस-संबंधी उल्लेखनीय ग्रंथ हैं कृष्णलाल कृत 'रस-सिंधुविलास' (१८८३), राधामोहन शर्मा कृत 'रस-लहरी' (१८८४), साहबप्रसाद सिंह कृत 'रस-रहस्य' (१८८७), तथा प्रतापनारायण सिंह महाराजा कृत 'रस-कुसुमाकर' (१८६५); शेष सामान्य हैं।

नायिका-भेद तथा रस-संबंधी इन समस्त ग्रन्थों में विशेष उल्लेखनीय साहबप्रसादसिंह कृत 'रस-रहस्य' और प्रतापनारायण सिंह महाराजा कृत 'रस-कुसुमाकर' हैं, जिनमें विषयों का विशद विवेचन मिलता है।

५. काव्यशास्त्र—संपूर्ण काव्यशास्त्र पर भी कुछ प्रयास मिलते हैं : काशीनाथ का 'काव्य-संग्रह पञ्चांग' (१८७७), जानकीप्रसाद का 'काव्य-सुधाकर' (१८८६), अम्बिकादत्त व्यास का 'गद्य-काव्य-मीमांसा' (१८९७), जिसमें गद्य तथा काव्य दोनों का विवेचन है, कालूराम की 'काव्यभूमिका' (१९०१) जो उर्दू-लिपि में एक अत्यंत छोटी कृति है, तथा कन्हैयालाल पोद्दार कृत 'काव्य-कल्पद्रुम' (१९०१) इसी प्रकार की रचनाएँ हैं। इनमें से प्रमुख हैं 'काव्य-सुधाकर' तथा 'काव्य-कल्पद्रुम' जिनमें काव्य-निरूपण शास्त्रीय पद्धति पर हुआ है, और 'गद्यकाव्य-मीमांसा' तथा 'काव्य-भूमिका' जिनमें नवीन और प्राचीन काव्यादर्शों का कुछ समन्वय मिलता है।

६. नाट्यशास्त्र—नाट्यशास्त्र पर केवल दो रचनाएँ मिलती हैं : हरिश्चंद्र कृत 'नाटक' (१८८३) तथा बलदेवप्रसाद मिश्र कृत 'नाट्य-प्रबंध' (१९०३)। इन दोनों से अपने समय की नाटक-कला पर भी कुछ प्रकाश पड़ता है।

७. विविध—नवीन साहित्यरूपों के संबंध में केवल दो कृतियाँ ऐसी मिलती हैं जिनका उल्लेख किया जा सकता है : बद्रीप्रसाद कृत 'प्रबंध-अर्कोदय' (१८९५), जो निबंध-कला पर है, और गङ्गाप्रसाद अग्निहोत्री की कृत 'समालोचना' (१८९६) जो समालोचना के सिद्धान्तों का निरूपण करती है। अपने युग के ध्यान से यह दोनों कृतियाँ—विशेष रूप से अंतिम—महत्वपूर्ण हैं।

साहित्य-शास्त्र संबंधी इस साहित्य में भी लेखकों की रुचि मध्ययुगीन रही, नवीन चेतना के दर्शन प्रायः नहीं हुए यह स्पष्ट प्रतीत होता है।

जीवनचरित्र*

इस काल के जीवन-वृत्तों को हम पाँच वर्गों में विभक्त कर सकते हैं : १. आधुनिक संत-चरित्र, २. आधुनिक राजनैतिक चरित्र, ३. मध्ययुगीन

* साहित्यकारों के जीवन-वृत्त अन्यत्र पीछे आये हैं। इस शीर्षक में केवल उन्हीं के जीवनवृत्त हैं जो साहित्यकार नहीं हैं।

संत-चरित्र, ४. ऐतिहासिक चरित्र ५. विदेशीय चरित्र, तथा ६. स्फुट चरित्र। इन्हीं के अनुसार हम प्रस्तुत विषय का अध्ययन करेंगे।

१. आधुनिक संत-चरित्र—आधुनिक संतों में से सबसे अधिक स्वामी दयानन्द के जीवन-वृत्त लिखे गए: गोपालशर्मा शास्त्री का 'दयानन्द-दिग्विजय' (१८८१), रामविलास सारडा के 'आर्यधर्मेन्द्र जीवन महर्षि' (१९०४), तथा, 'दयानन्द-चरितामृत' (१९०४) तथा चिम्मन लाल वैश्य का 'स्वामी दयानन्द' (१९०७) इसी प्रकार के प्रयास हैं। 'स्वामी दयानन्द की कुछ दिनचर्या' (१८८४) शीर्षक एक पुस्तिका में उनकी डायरी के कुछ पृष्ठ भी इस काल में प्रकाशित हुए। इस श्रेणी के अन्य चरित्रों में उल्लेखनीय हैं अम्बिकादत्त व्यास कृत 'स्वामी चरितामृत' (१८६६), जिसमें स्वामी भास्करानन्द सरस्वती का जीवन-चरित्र है, माधवप्रसाद मिश्र लिखित 'स्वामी विशुद्धानन्द' (१९०३), विज्ञानानन्द लिखित 'रामकृष्ण परमहंस और उनके उपदेश' (१९०४), नरेन्द्रकुमार देव शर्मा लिखित 'स्वामी रामतीर्थ' (१९०७) तथा शिवनन्दन सहाय लिखित 'भगवानप्रसाद जी' (१९०८); शेष सामान्य हैं।

२. आधुनिक राजनैतिक चरित्र—आधुनिक देशभक्तों की जीवनियाँ इस युग में बहुत थोड़ी मिलती हैं, कारण यह है कि देश की आर्थिक तथा राजनैतिक दशा सुधारने के लिए इस काल में न वैसे प्रबल आन्दोलन ही हुए जैसे आनेवाले युग में हुए, और न उस प्रकार देश-सेवकों ने अपने जीवन का ही उत्सर्ग किया जैसा इस युग में किया। अस्तु, कुछ उल्लेखनीय जीवनियाँ इस काल की हैं, गङ्गाप्रसाद गुप्त कृत 'दादाभाई नौरोजी' (१९०६), और महादेव भट्ट कृत 'लाजपत महिमा' (१९०७) तथा 'अरविन्द महिमा' (१९०८)। यह स्मरणीय है कि यह जीवनियाँ प्रायः स्वदेशी आन्दोलन के समय की हैं।

३. मध्ययुगीन संत-चरित्र—मध्ययुग के अनेक संतों के चरित्र इस काल में लिखे गये। जयदत्त जोशी लिखित 'गोपीचन्द' (१८६८), अमरसिंह लिखित 'क़िस्सा हक़ीक़तराय' (१८७५), जयमहाराज कृत 'धनाजू को बखान' (१६६५), भगवानप्रसाद कृत 'पोपीजी

की कथा' (१८६६), कन्हैयालाल शास्त्री कृत 'वल्लभाचार्य दिग्विजय' (१६०४), तथा वृन्दावनदास लिखित 'अर्हतपाशा-केवली' (१६०८) इसी श्रेणी की रचनाएँ हैं। इन जीवनियों में तथ्य कितना है और भावुकता कितनी है, इतिहास कितना है और और किंवदंतियों का हाथ कहाँ तक रहा है यह कहना कठिन है।

४. ऐतिहासिक चरित्र—भारतीय इतिहास के चरित्र ही विशेष रूप से लिखे गए, और इन चरित्रों में कुछ इतिहास का अध्ययन भी दिखाई पड़ता है। इस प्रकार की रचनाओं में सबसे अधिक उल्लेखनीय हैं देवीप्रसाद मुंसिफ़ की, जिन्होंने राजस्थान के इतिहास से संबंध रखनेवाले चरित्रों पर विशेष प्रकाश डाला : उनके 'मानसिंह' (१८८६), 'मालदेव' (१८८६), 'उदयसिंह महाराणा' (१८६३), 'जसवंत सिंह' (१८६६), 'प्रतापसिंह, महाराणा' (१६०३), तथा 'संग्रामसिंह, राणा' (१६०४) उसी दिशा के प्रयास हैं। अन्य लेखकों की रचनाओं में से उल्लेखनीय हैं राधाकृष्णदास लिखित 'आर्यचरितामृत-बाप्पा रावल' (१८८४), कर्तिकप्रसाद लिखित 'महाराज विक्रमादित्य' (१८६३), तथा 'अहल्याबाई' (१८६७), रामनारायण दूगण रचित 'पृथ्वीराज-चरित्र' (१८६६), लज्जाराम शर्मा लिखित 'अमीर अब्दुलरहमान खाँ' (१६०३), गंगाप्रसाद गुप्त लिखित 'रानी भवानी' (१६०४), तथा नंदकुमारदेव शर्मा लिखित 'महाराणा प्रतापसिंह' (१६०७)।

५. विदेशीय चरित्र—इतर जीवनियों में से रमाशंकर व्यास कृत 'नैपालियन बोनापार्ट' (१८८३), जगन्नाथदास कृत 'मुहम्मद' (१८८७), सिद्धेश्वर वर्मा कृत 'गैरीबाल्डी' (१६०१), गौरीशंकर हीराचन्द ओझा लिखित 'कर्नल जेम्स टॉड' (१६०२), विदेशी महापुरुषों की सुन्दर जीवनियाँ हैं।

६. स्फुट चरित्र—शेष कृतियाँ अत्यन्त साधारण हैं। केवल एक का उल्लेख और किया जा सकता है वह है। द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी लिखित 'गौरीशंकर उदयशंकर ओझा' (१६०५)।

जीवनी-साहित्य इस काल की एक नवीनता थी, और जैसी नई सृष्टि

यह थी वैसी काफ़ी सफल रही, इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता। इस क्षेत्र में मध्ययुगीन रुचि केवल मध्ययुग के संतों के चरित्रों तक ही सीमित रही, शेष के संबंध में एक नवचेतना के लक्षण दिखाई पड़ते हैं।

[वृत्त-संग्रह तथा] इतिहास *

इस काल के वृत्त-संग्रहों का अध्ययन विभिन्न शीर्षकों के नीचे नहीं किया जा सकता : क्योंकि एक तो जीवन-वृत्तों के जिन वर्गों का ऊपर हमने निरीक्षण किया है उनमें से एक से अधिक वर्गों के चरित्र प्रायः एक साथ संगृहीत हैं, दूसरे संख्या में भी यह वृत्त-संग्रह इने-गिने ही हैं। उल्लेखनीय इनमें से हैं संतसिंह कृत 'गुरुचरित्र प्रभाकर' (१८७७) जिसमें दस सिक्ख गुरुओं के चरित्र पद्यबद्ध हुए हैं, हरिश्चन्द्र लिखित 'प्रसिद्ध महात्माओं के जीवनचरित' (१८८४-), प्रतापनारायण मिश्र लिखित 'चरिताष्टक' (१८९४), प्यारेलाल कृत 'चरित्र-संग्रह' (१९०२), काशीनाथ खत्री कृत 'भारतवर्ष की विख्यात स्त्रियों के जीवन-चरित्र' (१९०२ पंचम), तथा 'भारतवर्ष की विख्यात रानियों के जीवन चरित्र' (१९०२ पंचम) गङ्गाप्रसाद गुप्त कृत 'विहारी वीर' (१९०४), शिवव्रतलाल कृत 'हमारी माताएँ' (१९०७), रामचंद्र वैद्यशास्त्री कृत 'भारत नररत्न चरितावली' (१९०८), तथा सूर्यकुमार वर्मा लिखित 'कांग्रेस-चरितावली' (१९०८)। इसी प्रसंग में हम मदनलाल तिवारी के 'मदन-कोष' (१९०८) नामक जीवनीकोष का भी उल्लेख कर सकते हैं।

इतिहास के अध्ययन को हम निम्न-लिखित वर्गों में विभाजित कर सकते हैं : १. देश का राजनैतिक इतिहास, २. देश का धार्मिक इतिहास, ३. स्थानीय और देशी रियासतों का इतिहास और, ४. विदेशीय इतिहास।

१. भारतीय राजनैतिक इतिहास—भारतीय राजनैतिक इतिहासों का प्रारंभ वस्तुतः शिक्षा-विभाग की आवश्यकताओं के कारण हुआ।

---

* इस वर्ग में साहित्य का इतिहास नहीं रक्खा गया है, वह पीछे अन्यत्र आता है।

अंशतः आलोच्यकाल के प्रारंभ में लिखा हुआ शिवप्रसाद सितारेहिंद का 'इतिहास-तिमिर-नाशक' (-१८७३), मुहम्मद नज़ीर का 'भारत वृत्तावली' (१८६८ द्वितीय), जिसमें भारतवर्षीय राजाओं का वर्णन है, तथा गोपाललाल शर्मा का 'इतिहास-कौमुदी' (१८७३) जो पद्य-बद्ध है इसी उद्देश्य से लिखे गए। हरिश्चंद्र का 'बादशाह-दर्पण' (१८८४) दूसरे प्रकार के प्रारंभिक प्रयासों में से ज्ञात होता है। जवाहर मल्ल का 'इतिहास-मुकुर' (१८८६) जो पद्य में आलमगीर द्वितीय तक के शासन-काल का इतिहास संक्षेप में देता है, हरिश्चंद्र का 'काल-चक्र' (१८९६), जो कुछ आवश्यक तिथियों के निर्णय का यत्न करता है, श्यामसुंदर दास सं० 'प्राचीन लेख मणिमाला' (१९०३), जिसमें प्राचीन शिलालेखादि का कुछ परिचय है, तथा रामदयाल कृत 'इतिहास-संग्रह' (१९०४) जो एक ऐतिहासिक कोष है इस दूसरी दिशा के अन्य उल्लेखनीय प्रयास हैं। किंतु, यह सभी प्राचीन इतिहास-संबंधी ग्रंथ हैं। आधुनिक इतिहास-संबंधी केवल एक ग्रंथ है जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी लिखित 'स्वदेशी आन्दोलन' (१९०८), जिसका विषय प्रकट है।

२. **धार्मिक इतिहास**—यह इने-गिने ही मिलते हैं जिनमें, से प्रमुख हैं रामनारायण मिश्र कृत 'पारसियों का इतिहास' (१८९५), तथा गोविंदसिंह साधु कृत 'इतिहास गुरु खालसा' (१९०२)।

३. **स्थानीय इतिहास**—देशी रियासतों के संबंध में लिखे गए इतिहास उपर्युक्त की अपेक्षा कुछ अधिक पूर्ण तथा सुव्यवस्थित रहे। निरञ्जन मुकर्जी का 'भारतवर्षीय राज्य-संग्रह' (१८७५-) जिसका प्रथम भाग बनारस-राज्य से संबंध रखता है, पूरनचंद मुंशी कृत 'अवध, समाचार' (१८७६), हरिश्चंद्र कृत 'बूँदी का राजवंश' (१८८२), कल्हण की 'राजतरंगिणी' की सहायता से लिखा गया काश्मीर का इतिहास 'काश्मीर-कुसुम' (१८८४), दामोदर शास्त्री के लिखे 'चित्तौर का इतिहास' (१८९१), तथा 'लखनऊ का इतिहास' (१८९७), देवीप्रसाद मुंसिफ़ लिखित 'आमेर के राजे' (१८९३) तथा 'मारवाड़

के प्राचीन लेख' (१८६६), राधारमण चौबे लिखित 'भरतपुर राज्य का इतिहास' (१८६६), महराजसिंह लिखित 'इतिहास बुंदेलखंड' (१८६६), हनुवंतसिंह तथा पूर्णसिंह लिखित 'मेवाड़ का इतिहास' (१६०४), बलदेवप्रसाद मिश्र लिखित 'नेपाल का इतिहास' (१६०४) तथा गङ्गाप्रसाद गुप्त लिखित 'पूना का इतिहास' (१६०६) इस श्रेणी के प्रमुख ग्रंथों में से हैं।

४. विदेशीय इतिहास—विदेशीय इतिहास लिखना इस काल के अंत में प्रारंभ हुआ। रूस-जापान-युद्ध में जापान ऐसे छोटे पूर्वीय देश का रूस ऐसे बड़े पश्चिमीय देश के विरुद्ध विजयी होने के कारण उसकी ओर तत्कालीन लेखकों का ध्यान जाना स्वाभाविक था, फलतः इस श्रेणी के पहले ग्रंथ रूस-जापान-युद्ध तथा जापान के इतिहास-संबंधी ही हैं। रामनारायण मिश्र का 'जापान का संक्षिप्त इतिहास' (१६०४), डा० मुहेन्दुलाल गर्ग की 'जापान की कहानी' (१६०७), गौरीशंकर पाठक का 'जापान का उदय' (१६०७), तथा गदाधरसिंह का 'रूस-जापान-युद्ध' (१६०५-) इस संबंध में उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार, अफ़ग़ानिस्तान के साथ आधुनिक भारत के राजनैतिक संबंध स्थापित होने के अनंतर उसके इतिहास पर भी लेखकों का ध्यान गया : नटवर चक्रवर्ती कृत 'अफ़ग़ानिस्तान का इतिहास' (१६०५) उसी का परिणाम था। कांग्रेस के आन्दोलनों तथा रूस-जापान-युद्ध के परिणामों के फलस्वरूप जनता का ध्यान दूसरे देशों की स्वाधीनता के इतिहास की ओर भी जाना प्रारंभ हुआ। सूर्यकुमार वर्मा का 'ग्रीस की स्वाधीनता का इतिहास' (१६०६) इस दृष्टिकोण से लिखे जाने वाले इतिहासों में से कदाचित् पहला है, किंतु इस परंपरा में आने वाले दूसरे इतिहास-ग्रंथ प्रायः आने वाले युग में लिखे गए।

ऐतिहासिक साहित्य भी इस युग की नवीनता थी। इस नवीन क्षेत्र में यद्यपि शिक्षा, साधन तथा विचार-स्वातंत्र्य की कमी के कारण यथेष्ट उन्नति नहीं हुई, फिर भी यह साहित्य बहुत पीछे भी नहीं रहा, और इसमें नवचेतना के लक्षण स्पष्ट दिखाई पड़े यह मानना पड़ेगा।

देश-दर्शन

प्रस्तुत विषय के साहित्य को हम निम्नलिखित वर्गों में विभाजित कर सकते हैं : १. भारत की राजनैतिक स्थिति, २. भारत की सामाजिक स्थिति, ३. भारत की आर्थिक स्थिति, ४. भारत-यात्रा, ५. स्थानीय वर्णन, ६. विदेश-दर्शन ७. विश्व-दर्शन, तथा ८. विश्व-कोष ।

१. भारत की राजनैतिक स्थिति—भारतीय समस्याओं में राष्ट्रीयता की समस्या इस काल के प्रारंभ से ही मिलने लगती है । कांग्रेस के जन्म से पूर्व ही लोगों का ध्यान इधर आकृष्ट होने लगा था : पानचंद आनंदजी पारीख की 'आर्य देशपनता' (१८७५) की समस्या यही है। इस पुस्तक का अंग्रेजी शीर्षक लेखक ने 'इंडियन नेशनालिटी' दिया है, और इसमें अन्य बातों के अतिरिक्त एक राष्ट्रभाषा के लिए भी उसने आग्रह किया है। राधाचरण गोस्वामी की 'देशोपकारी पुस्तक' (१८८२) देश की दुर्दशा पर लिखी गई है । १८८५ से कांग्रेस की स्थापना के अनंतर तत्सम्बन्धी साहित्य भी लिखा जाने लगा : आलाराम सागर की 'कांग्रेस-पुकार-मंजरी' (१८९३) जैसे पैम्फ़लेटों का विषय यही है। राधारमण चौबे के 'देशोन्नति' (१८९६) का विषय भी देश की विभिन्न समस्याएँ हैं ।

२. भारत की सामाजिक स्थिति—सामाजिक समस्याओं में से स्त्रियों की चिन्तनीय स्थिति पर लोगों का ध्यान विशेष गया : खुन्नूलाल का 'स्त्री-सुदशा' (१८८३), हरदेवी का, 'स्त्रियों पर सामाजिक अन्याय' (१८९२) तथा गोकलचन्द का 'नारी-महत्व' (१९०७) इसी समस्या से संबंध रखते हैं ।

३. भारत की आर्थिक दशा—देश के उद्योग-धन्धों पर लोगों का ध्यान बहुत कम गया, इस लिए इस विषय पर ग्रंथ इने-गिने ही लिखे गए । उल्लेखनीय हैं केवल चतुर्भुज औदीच्य कृत 'भारत के कारखाने' (१९०५) तथा गोकुलानंदप्रसाद कृत 'मोती' (१९०६) ।

४. भारत-यात्रा—रेल की सुविधा प्राप्त होने के कारण इस काल में

यात्राएँ सरल हो गईं, इस लिए इस विषय का साहित्य भी यथेष्ट रूप से मिलने लगा। हरिश्चन्द्र का 'तहक़ीक़ात पुरी की' (१८७१), दामोदर शास्त्री का 'मेरी पूर्वदिक् यात्रा' (१८८५), 'मेरी दक्षिण दिक् यात्रा' (१८८६) तथा 'मेरी जन्मभूमि यात्रा' (१८८८), देवीप्रसाद का 'रामेश्वर-यात्रा' (१८९२), अम्बिकादत्त व्यास का 'आश्चर्य वृत्तान्त' (१८९३) तथा साधुचरण प्रसाद का 'भारत-भ्रमण' (१९०३–) इसी प्रकार की रचनाएँ हैं।

५. स्थानीय वर्णन—स्वतंत्र रूप से लिखे गए स्थानीय वर्णन एकाध ही हैं। उनमें से हरिश्चन्द्र का 'काशी के छायाचित्र' (१८८४) जिसमें उन्होंने वहाँ के भले-बुरे सभी प्रकार के चरित्रों और स्थानों का वर्णन किया है तथा हरेकृष्ण जौहर कृत 'भारत के देशी राज्य' (१९०६) उल्लेखनीय है। शेष स्थानीय वर्णन प्रायः यात्राओं के वर्णन में पड़ते हैं।

६. विदेश-दर्शन—विदेशों के संबंध में अवश्य काफ़ी लिखा गया; और उनमें से भी जापान पर सबसे अधिक। उसका कारण रूस के विरुद्ध उसकी तत्कालीन विजय ही थी। हरेकृष्ण जौहर का 'जापान-वृत्तान्त' (१९०४), डा० महेन्दुलाल गर्ग का 'जापान-दर्पण' (१९०७) तथा 'जापानीय स्त्री-शिक्षा' [१९०७ ?] तत्संबंधी ग्रंथ हैं। चीन पर भी जापान के साथ ही ध्यान आकृष्ट हुआ: डा० महेन्दुलाल गर्ग का 'चीना-दर्पण' (१९०३) तथा गदाधरसिंह का 'चीन में तेरह मास' (१९०३) इसी के परिणामस्वरूप हैं। तिब्बत पर भी एक पुस्तक लगभग उसी समय की है: गंगाप्रसाद गुप्त की 'तिब्बत-वृत्तान्त' (१९०५) यूरोप-यात्रा भी राजकीय संबंधों के कारण होने लग गई थी: भगवानदास वर्मा की 'लन्दन-यात्रा' (१८८५), तथा अमृतलाल चक्रवर्ती की 'विलायत की चिट्ठी' (१८९२) उसीके परिणाम हैं। शेष में उल्लेखनीय हैं प्यारेलाल कृत 'कस्टम्स ऐंड कास्ट्यूम्स' (१९०१), जो विभिन्न देशों के रस्म-रिवाजों पर है और 'दुनिया की सैर' (१९०१) तथा हरिचरणदास का 'प्रसिद्ध देशों का वर्णन' (१९०१)।

७. विश्व-दर्शन—देश तथा विदेशों के भूगोल शिक्षा-प्रणाली की

आवश्यकताओं के कारण पर्याप्त लिखे गए : भगवानदास वर्मा का 'पश्चिमोत्तर तथा अवध का भूगोल' (१८८७) तथा देवीप्रसाद मुंसिफ़ का 'स्वप्न राजस्थान' (१८९३), मुहम्मदहुसैन का 'भूगोल एशिया' (१८८३), शिवप्रसाद सितारेहिंद का 'भूगोल हस्तामलक' (१८७७-), रामप्रसाद लाल का 'भूतत्व-प्रदीप' (१८८५), तथा ज्वालानाथ नागर का 'जगत-दर्शन' (१८९९-) इनमें से प्रमुख हैं।

८. विश्वकोष—विश्वकोष केवल एक मिलता है। और वह भी जेबी ही है, वह है 'वृहत् रत्नसमुच्चय' (१९०७) जिसका लेखक अज्ञात है।

यह साहित्य भी इस युग की नवीनता थी, इसलिए इसका जो कुछ भी निर्माण हुआ वह कम न मानना चाहिए, किन्तु, फिर भी यथेष्ट कार्य इस क्षेत्र में नहीं हुआ यह स्वीकार करना पड़ेगा। न तो अपने ही देश की राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर सम्यक् रूप से विचार किया गया और न अन्य देशों की ही।

भाषा-दर्शन

इस काल के भाषा-ज्ञान-संबंधी साहित्य को हम निम्नलिखित शीर्षकों में विभाजित कर सकते हैं : १. हिंदी-आन्दोलन, २. हिंदी-भाषा तथा लिपि, ३. हिंदी व्याकरण, ४. हिंदी शब्द-कोष, ५. हिंदी लोकोक्ति संग्रह, ६. विशिष्ट विषयों के कोष तथा ७. विभाषा-ज्ञान।

१. हिंदी-आन्दोलन—इस युग की भाषा-संबंधी सबसे बड़ी समस्या उर्दू के विरुद्ध हिंदी के जीवित रहने की थी। शिक्षा-विभाग की नीति उर्दू-प्रचार के पक्ष में थी—हिंदी की आड़ में भी—देवनागरी लिपि में शिवप्रसाद सितारेहिंद की उर्दू-प्रधान पाठ्य पुस्तकों से और क्या अभिप्राय लिया जा सकता है? इसके विरुद्ध आन्दोलन होना स्वाभाविक था, और वह उठ खड़ा हुआ। पं० गौरीदत्त—प्रमुख रूप से—हिंदी का पक्ष लेकर आगे आए, और उन्होंने उर्दू भाषा और लिपि के विरुद्ध हिंदी-भाषा और लिपि की श्रेष्ठता प्रमाणित करके हिंदी को उसका

उचित स्थान दिलाने का सफल उद्योग किया। उनके 'उर्दू अक्षरों से हानि' (१८८२), 'देवनागरी प्रचार के उपदेश' (१८८५), 'नागरी और उर्दू का स्वाँग' (१८८५), 'देवनागरी स्तोत्र' (१८९२) 'नागरी का दफ़्तर' (१८९२), 'देवनागरी के भजन' (१८९६) तथा 'गौरी नागरी कोष' (१९०१) के द्वारा हिंदी और देवनागरी का प्रचार बढ़ा। हरिश्चंद्र ने भी इस आन्दोलन में यथेष्ट भाग लिया: उनके 'हिंदी-भाषा' (१८८३), तथा 'हिंदी लेक्चर' (१९०२ द्वितीय) इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। काशीनाथ खत्री ने भी इस समस्या पर लिखा: 'मातृ-भाषा की उन्नति किस विधि करना योग्य है' (१८८५) नामक उनकी पुस्तिका इसी प्रश्न पर है। पं० गौरीदत्त के साथ ही एक और भी वैसी ही लगन के सज्जन इस क्षेत्र में दिखाई पड़े—वह थे बाबू अयोध्या-प्रसाद खत्री। पंडित जी का प्रचार-क्षेत्र पश्चिमी हिंदी प्रान्त था, खत्री जी का पूर्वीय। *और एक बात में यह पंडित जी से कुछ भिन्न और आगे* थे। पंडित जी का विशेष आग्रह देवनागरी लिपि के लिए था, खत्री जी ने उर्दू-प्रधान हिंदी का ही विरोध किया—उनकी 'मौलवी स्टाइल की हिंदी का छंद-भेद' (१८८७) इसी विषय की पुस्तक है। इसी समय प्रमुख रूप से नागरी-प्रचार का उद्देश्य लेकर काशी की उस नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना भी १८९३ में हुई जिससे आगे चलकर भाषा और साहित्य का अप्रतिम उपकार हुआ। इसी संबंध में एक और सज्जन का नाम भी लिया जा सकता है वे हैं: जगन्नाथप्रसाद मेहता जिन्होंने 'पश्चिमोत्तर प्रदेश तथा अवध के न्यायालयों और सर्कारी दफ्तरों में नागरी अक्षरों के प्रचार' (१८९८) नामक पुस्तिका लिखी। कहने की आवश्यकता नहीं कि उपर्युक्त दो दृष्टिकोणों में लिपि-संबंधी दृष्टिकोण प्रायः असफल ही सिद्ध हुआ। नागरी लिपि सर्कारी तथा कुछ अन्य दफ्तरों में अगर स्थान पा भी गई तो भी वह कुछ न कर सकी। प्रमाण के लिए नागरी लिपि में आनेवाले समनों को आज भी देखा जा सकता है, जिनमें हिंदी वाक्य-संगठन, हिंदी ध्वनियाँ, और हिंदी के शब्द ढूँढ़ने पर भी नहीं मिल सकते। अयोध्याप्रसाद खत्री ने एक

दूसरी ओर भी ध्यान दिया : उन्होंने हिंदी के समस्त क्षेत्रों में खड़ी बोली को प्रस्थापित करना चाहा। अपने 'खड़ी बोली का पद्य' (१८८८) में उन्होंने हिंदी साहित्य के प्रारंभिककाल से लेकर उस समय तक की पद्यात्मक रचनाओं में से खड़ी बोली के अंश लेकर यह दिखाने का यत्न किया कि खड़ी बोली में भी पद्य-रचना की वह क्षमता है जो हिंदी की दूसरी उपभाषाओं में है। उनकी 'खड़ी बोली आन्दोलन' (१८८८) नामक रचना अपने विषय को स्वतः स्पष्ट करती है। अपने इस उद्योग में खत्री जी को पूर्ण सफलता मिली। हिंदी को राष्ट्र-भाषा-पद प्रदान करने की भावना भी इसी युग में उत्पन्न हुई : गङ्गाप्रसाद अग्निहोत्री की 'राष्ट्र-भाषा' (१८६०) की समस्या यही है।

२. हिंदी भाषा-लिपि—भाषा तथा लिपि के संबंध में वैज्ञानिक कार्य का सूत्रपात इस युग के अंत में होता है : महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'हिंदी भाषा की उत्पत्ति' (१६०७) तथा बालमुकुंद गुप्त की 'हिंदी भाषा' (१६०८) भाषा के संबंध में, और गौरीशंकर हीराचंद ओझा की 'प्राचीन लिपि-माला' (१८६४) तथा चंद्रधर शर्मा गुलेरी का 'अंक' (१६०५) लिपि के संबंध की अनुसंधानपूर्ण कृतियाँ हैं, विशेष रूप से ओझा जी का ग्रंथ, जो अपने क्षेत्र में अप्रतिम ही रहा है।

३. हिंदी व्याकरण—इस युग में हिंदी के व्याकरण कई लिखे गए, पर वे प्रायः शिक्षा-विभाग की आवश्यकताओं के लिए ही लिखे गए। उनमें से कुछ हैं : भैरवप्रसाद मिश्र लिखित 'हिंदी लघु व्याकरण' (१८७१ द्वितीय), शिवप्रसाद सितारेहिंद लिखित 'हिंदी व्याकरण' (१८८६), देवीदयाल लिखित 'भाषा शब्द-निरूपण' (१८६२)। कामताप्रसाद गुरु लिखित 'भाषा वाक्य पृथक्करण' (१६००) तथा पन्नालाल बानलीवाल लिखित 'लिङ्ग-बोध' (१६०४) ही कुछ उल्लेखनीय स्वतंत्र प्रयास ज्ञात होते हैं।

४. हिंदी शब्द-कोष—कोषों की पुरानी परंपरा चल रही थी—मातादीन शुक्ल कृत 'नानार्थ नव-संग्रहावली' (१८७४), तथा लाड़िलीप्रसाद की 'नाममाला' (१६०६), नंददास के 'अनेकार्थ' और 'नाम

माला' की परंपरा में ज्ञात होते हैं—किंतु यह परंपरा शिथिल हो रही थी। नई परंपरा के कोष बहुत से बने : कलकत्ता बुक ऐंड लिटरेचर सोसाइटी का 'हिंदी-कोष' (१८७१), राधालाल का 'शब्द-कोष' (१८७३), सदासुखलाल का 'कोष-रत्नाकर' (१८७६), मङ्गलीलाल लाला का 'मङ्गल-कोष' (१८७७), देवदत्त तिवाड़ी का 'देवकोश' (१८८३ द्वितीय ', कैसरबख्श मिर्ज़ा का 'कैसर-कोष' (१८८५), मूलचंद शर्मा का 'भाषा-कोष' (१८६८ चतुर्थ), श्रीधर का 'श्रीधर भाषा-कोष' (१६०३ द्वितीय) इस प्रकार के छोटे-बड़े प्रमुख हिंदी शब्द-कोष हैं। हिंदी-अंग्रेज़ी कोष भी दो बड़े मिलते हैं : टामसन जे० टी० का 'हिंदी-अंग्रेज़ी' कोष (१८७० द्वितीय) तथा बेट्स जे० डी० की 'हिंदी इंग्लिश डिक्शनरी' (१८७५)। हिंदी-उर्दू का भी एक कोष है : गौरीशंकर शर्मा का 'हिंदी-उर्दू-कोष' (१६०१), पर यह बहुत छोटा है।

५. हिंदी लोकोक्ति-संग्रह—लोकोक्तियों और मुहावरों के कुछ स्वतंत्र कोष भी इस युग में निकले। शिवदास का 'लोकोक्ति कौमुदी' (१८६०), संतप्रसाद का 'कहावत-संग्रह' (१६०२), सिद्धेश्वर वर्मा का 'लोकोक्ति या कहावत' (१६०७–) इसी दिशा के प्रयास हैं। इसी प्रसंग में एस० डब्ल्यू० फैलन की 'ए डिक्शनरी अव् हिंदुस्तानी प्रावर्ब्स' (१८८४–) का भी उल्लेख किया जा सकता है जिसमें अंग्रेज़ी माध्यम से हिंदी की सभी बोलियों के मुहावरों और लोकोक्तियों के अर्थ दिए गए हैं।

६. विशिष्ट विषयों के कोष—इस प्रसंग में उल्लेखनीय है वैज्ञानिक शब्दावली का कार्य जो नागरी प्रचारिणी सभा काशी से हुआ। १६०१ में तथा उसके बाद उसने क्रमशः अनेक विषयों के लिए 'हिंदी वैज्ञानिक कोष' प्रकाशित किए, जिनके संपादक डा० श्यामसुन्दर दास, पं० सुधाकर द्विवेदी तथा पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी आदि विद्वान् रहे।

७. विभाषा-ज्ञान—अन्य भाषाओं के अध्ययन से संबंध रखने वाली पुस्तकों में से उल्लेखनीय हैं प्रभाकर शास्त्री का 'बाल संस्कृत प्रभाकर' (१८६५) जो व्याकरण-ग्रन्थ है, रामकर्ण का 'मारवाड़ी व्या-

करण' (१८९६), हूपर रेवरेंड का 'यवन भाषा व्याकरण' (१८७४) तथा 'यवन भाषा का कोष' (१८७८) जो यूनानी भाषा के हैं, एस्० डबलू० फैलन का 'न्यू इंगलिश-हिंदुस्तानी डिक्शनरी' (१८८३-), तथा प्यारेलाल का 'जापानी बोलचाल' (१९०६)।

भाषा-दर्शन का क्षेत्र इस युग के लिए नवीन था, और कुछ अच्छे ग्रन्थ अवश्य निकले, पर इस समय इस क्षेत्र में जितना अच्छा कार्य अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से हुआ उतना हिंदी में नहीं हुआ। हिंदी में भी कुछ और अच्छा कार्य हो सकता था।

ललित कला

प्रस्तुत विषय का साहित्य प्रमुख रूप से संगीत संबंधी है, शेष कलाओं के संबंध में साहित्य का सर्वथा-अभाव-सा है।

१. संगीत—संगीत के उल्लेखनीय ग्रन्थ हैं डा० सौरीन्द्र मोहन ठाकुर का 'गीतावली' (१८७८), जो भारतीय संगीत विषयक एक अच्छी रचना है, गोपालदास संगीत शास्त्री का 'संगीत सप्तार्णवतरङ्ग' (१८८२), हरिश्चन्द्र का 'संगीतसार' (१८८३), रामेश्वर हरिजी ज्ञानी का 'गायन-सागर' (१८८५), जो व्रजभाषा में है, भक्तराम का 'रागरत्नाकर' (१८८५) आदित्यराम वैकुण्ठराम का 'संगीतादित्य' (१८९०–), तथा राजा फतेहसिंह वर्मा का 'राग-प्रकाशिका' (१८९९)। स्वतंत्र रूप से रागों का केवल एक विवेचन मिलता है : तुलाहीराम का 'राग मालश्री' (१९०५)।

वाद्य-संगीत मात्र से संबंध रखनेवाले भी कुछ ग्रन्थ है : लोकनाथ चौबे का 'वंशी रागमाला' (१८८९), मणिराम उस्ताद का 'सितार-चन्द्रिका' (१८९३), शिवनारायण तुलसीदास का 'संगीत-पञ्चरत्न' (१८९५) जिसमें पाँच वाद्यों के शिक्षण का प्रयास किया गया है, तथा विष्णुदिगंबर पालुस्कर का 'मृदंग और तबलावादन पद्धति' (१९०३)।

२. अन्य कलाएँ—अन्य कलाओं में से केवल दो पर एक-एक उल्लेखनीय रचना मिलती है : वक्तृत्वकला पर तथा चित्रकला पर :

काशीनाथ खत्री की 'उत्तम वक्तृता देना सीखने की विधि' (१८८७) तथा बलदेव शर्मा का 'बलदेवचित्ररत्नाकर' (१८६८–) । अंतिम में केवल चित्रों का संग्रह है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि यह साहित्य कितना पिछड़ा रह गया। जान पड़ता है कि ललित कला हिन्दी प्रान्त में मध्ययुग की एक भग्नावशेष मात्र बनी रही।

उपयोगी कला

इस काल के पूर्वार्द्ध में उपयोगी कला संबन्धी साहित्य का सर्वथा अभाव रहा। उत्तरार्द्ध में पुस्तकें अवश्य मिलती हैं, किन्तु उनमें भी महत्वपूर्ण रचनाएँ अधिक नहीं हैं और कुछ ही कलाओं से संबंध भी रखती हैं। समस्त साहित्य को निम्नलिखित वर्गों में रक्खा जा सकता है : १. कृषि आदि, २. वस्त्र-शिल्प, ३. सिलाई आदि, ४. युद्ध-कला, गृह-शिल्प, ६. स्काउट-कला, ७. पशु-शिक्षण, ८. सामान्य विर्वचन।

१. कृषि, बाग़बानी तथा मधुमक्खी-पालन—उल्लेखनीय रचनाओं में से उमानाथ मिश्र की 'खेतीबारी' (१८८६-), तथा यमुनाशंकर नागर की 'कृषिविद्या' (१६००) कृषि-संबंधिनी है; प्यारेलाल का 'विटप-विलास' (१८६७) बाग़वानी पर है महावीरप्रसाद की 'मधुमक्षिका' (१६०३) मधुमक्खी-पालन पर है।

२. वस्त्र शिल्प—कताई बुनाई की उल्लेखनीय पुस्तकें हैं पूर्णिमा देवी की 'ऊन की बुनाई की प्रथम शिक्षा' (१६०६) तथा ठाकुरप्रसाद खत्री का 'देशी करघा' (१६०८)।

३. सिलाई तथा कुछ अन्य शिल्प—सिलाई की एक ही पुस्तक है : ठाकुर प्रसाद खत्री की 'सुघर दर्जिन' (१६०८)। अन्य व्यवसाय प्रधान कलाओं में से कुछ पर पुस्तकें और हैं : रामप्रताप शर्मा का 'मसि-दर्पण' (१८६०) तथा वेणीमाधव त्रिपाठी का 'मसिसागर' (१८६७) स्याही बनाने पर हैं, और रामजीवन नागर की 'देशी बटन' (१६०४) बटनें बनाने पर है। जौहरियों और सुनारों के व्यवसाय से संबंध रखने-

वाली उल्लेखनीय रचनाएँ हैं गणेश सीताराम शास्त्री की 'रत्नपरीक्षा' (१८८८), गुरुदास की 'रत्नपरीक्षा' (१८६६), ओंकारलाल शिवलाल शर्मा की 'नमूना-ए-ज़ेवरात' (१८६७) तथा ठाकुरप्रसाद खत्री की 'सुनारी' (१६०७)। फोटोग्राफी बिल्कुल नई कला थी, इस पर केवल एक पुस्तक मिलती है : मोहनलाल शर्मा कृत लिखित 'प्रतिबिम्ब चित्र चिंतामणि (१८८६)।

४. युद्ध-कला—युद्ध-कला से संबंध रखने वाली केवल दो कृतियाँ उल्लेखनीय हैं : प्यारेलाल की 'बाण-विद्या' (१६०१) जो बाण द्वारा लक्ष्यवेध पर है, तथा गङ्गाप्रसाद की 'नलिका आविष्कार' (१८६६) जो आधुनिक युद्ध-प्रणाली से संबंध रखती है।

५. गृह-शिल्प—गृह-शिल्पों में से केवल पाक-कला पर एक पुस्तक उल्लेखनीय है : कार्तिकप्रसाद खत्री की 'पाकराज या मोहनथाल' (१६०३)।

६. स्काउट-कला—स्काउट-कला के भी केवल एक ही अंग-सांकेतिक वार्तालाप—पर एक पुस्तक है : शिवनाथ मिश्र कृत 'अवाक्-वार्तालाप' (१८८५)।

७. पशु-शिक्षण—पशुओं और हिंस्र जीवों को वश में करने की कला पर उल्लेखनीय कृतियाँ हैं 'बाजीवा प्रकाश' (१८६६), जो घोड़ों को सिखाने के विषय पर हैं, बीर विक्रमदेव का 'गज-शास्त्र' (१६०६), जो हाथियों को सिखाने के संबंध में है, और मोहनगिरि गोसाईं का 'सर्पमंत्र भंडार' (१६०७), जिसमें सर्पों को वश में करने आदि के विषय के मंत्रों का संग्रह है।

७. सामान्य विवेचन—अनेक शिल्पों की अवस्था के संबंध में दो पुस्तकें महत्वपूर्ण हैं : लज्जाराम शर्मा की 'भारत की कारीगरी' (१६०२), तथा गङ्गाप्रसाद गुप्त की 'देशी कारीगरी की दशा और स्वदेशी वस्तु स्वीकार' (१६०६); पिछली में स्वदेशी आन्दोलन की दृष्टि से देशी शिल्पों का एक लेखा उपस्थित किया गया है।

ऊपर जो बात हम ललित कला के संबंध में कह चुके हैं प्रायः वही

यहाँ भी कही जा सकती है : उपयोगी कलाओं की स्थिति उनसे कुछ ही अच्छी ठहरती है।

[खेल तथा] शरीर-रक्षा

खेल तथा शरीर-रक्षा संबंधी साहित्य को हम निम्नलिखित वर्गों में विभाजित कर सकते हैं : १. गोष्ठी खेल, २. बाहरी खेल, ३. आयुर्वेद-प्रणाली, ४. ऐलोपैथी, ५. होम्योपैथी, ६. यूनानी और जर्राही प्रणालियाँ, ७. स्वास्थ्य-रक्षा, और ८. पशु-चिकित्सा।

१. गोष्ठी खेल—आलोच्यकाल के प्रधान गोष्ठी खेल ताश और शतरंज थे। इन पर कई पुस्तकें लिखी गईं : अम्बिकादत्त व्यास का 'महाताश-कौतुक-पचासा' (१८७२) तथा 'ताश-कौतुक-पच्चीसी' (१८८०) ताश के खेलों पर, तथा मदन भट्ट का 'शतरंज विलास' (१८८३), अम्बिकादत्त व्यास का 'चतुरंग-चातुरी (१८८४), तथा जानकीप्रसाद का 'चतुरंग-विनोद' (१८८५) शतरंज के खेलों पर प्रमुख हैं।

२. बाहरी खेल—बाहरी खेलों में भारतीय खेलों के संबंध में ही पुस्तकें मिलती हैं। उनमें से उल्लेखनीय हैं दामोदर शास्त्री सप्रा की 'नियुद्ध-शिक्षा' (१८८२) तथा पत्तनलाल की 'देशी खेल' (१९०१-)।

३. आयुर्वेद प्रणाली—चिकित्सा प्रणालियों में से सबसे अधिक रचनाएँ आयुर्वेद प्रणाली पर हैं। जनार्दन भट्ट का 'वैद्यक रत्न' (१८८२) सामान्य वैद्यक की एक उल्लेखनीय पुस्तक है। श्रीकृष्ण शास्त्री का 'चिकित्साधातुसार' (१८८५) रसायनिक चिकित्सा का ग्रंथ है। प्यारेलाल का 'काया-कल्प' (१९०१) अपने नाम की विशिष्ट चिकित्सा-परिपाटी का निरूपण करता है। निदान-संबंधी रचनाओं में उल्लेखनीय हैं गंगाराम यती का 'निदान' (१८७७), तथा नारायणदास शर्मा 'निदान विद्या' (१९०१)। दत्तराम चौवे कृत 'नाड़ी-प्रकाश' (१८९२) तथा किशोरीलाल शर्मा की 'मृत्यु परीक्षा' (१९०२) भी इसी श्रेणी में रक्खी जा सकती हैं। निघंटु ग्रंथों में दत्तराम चौवे के 'वृहत् निघंटु

रत्नाकर' (१८८६), 'निघंटु रत्नाकर' (१८९२) तथा 'अभिनव निघंटु' (१९०१) मुख्य हैं।

४. ऐलोपैथी—ऐलोपैथी के ग्रंथ शरीर-शास्त्र, शल्य-चिकित्सा और परिचर्या प्रणाली पर मिलते हैं। डीमलर जी० का 'ए ट्रैक्ट आन हार्ट' (१८६७), वेलीराम का 'ह्यूमन ऐनौटॉमी (१८८७) तथा विष्णुदत्त शुक्ल का 'शारीरक भाग' (१८९७) शरीर-शास्त्र संबंधी हैं। डा० व्रजलाल की 'शस्त्र चिकित्सा' (१८८७) पाश्चात्य शल्य-चिकित्सा पर एक वृहद् ग्रंथ है। डा० महेन्दुलाल गर्ग की 'परिचर्या-प्रणाली' (१९००) रोगी-परिचर्या संबंधी उल्लेखनीय कृति है। सत्यभामा देवी की 'धात्री-विद्या' (१९०३) का विषय स्वतः प्रकट है।

५. होम्योपैथी—होम्योपैथी के प्रचार का प्रारंभ ही हुआ था। केदारनाथ चैटर्जी का 'होम्योपैथिक सार' (१८८२-) उक्त प्रणाली की एकमात्र उल्लेखीय कृति है।

६. यूनानी और जर्राही—केवल एक-एक पुस्तकें इन प्रणालियों पर भी मिलती हैं : रघुबरदयाल का 'तिब्बरत्न' (१८८६) तथा रङ्गीलाल का 'जर्राही प्रकाश' (१८८५)।

७. स्वास्थ्य-रक्षा—सामान्य स्वास्थ्य-रक्षा के विषय में एकमात्र उल्लेखनीय कृति काशीनाथ खत्री की 'सदासुखी' (१८८८) है। अङ्ग-विशेष की रक्षा के लिए लिखे गये ग्रंथों में भी एक कृति उल्लेखनीय है : डा० महेन्दुलाल गर्ग की 'दन्तरक्षा' (१८९६)।

८. पशु-चिकित्सा—सामान्य पशु-चिकित्सा के संबंध में उल्लेखनीय है डा० शिवचन्द्र मैत्र की 'पशु-चिकित्सा' (१८९५)। पशु विशेष की चिकित्सा-संबंधी रचनाओं में उल्लेखनीय हैं केशवसिंह की 'करि कल्पलता' (१८९८) तथा लल्लयजनसिंह देव की 'महिषी चिकित्सा' (१८९९) जो क्रमशः हाथी तथा भैंस की चिकित्सा पर हैं।

इस साहित्य में भी नवचेतना के लक्षण नहीं दिखाई पड़े यह स्पष्ट होगा।

विज्ञान

इस काल का विज्ञान-साहित्य निम्न कोटियों में विभाजित किया जा सकता है : १. भौतिक, २. गणित, ३. ज्यौतिष, ४. रसायन, तथा ५. प्राणिशास्त्र।

१. भौतिक—भौतिक तथा उसके विभिन्न अंगों पर ग्रंथ प्रायः शिक्षा-विभाग की आवश्यकताओं के कारण ही लिखे गए। उनमें से प्रमुख हैं सोहनलाल का 'दौत बिजली बल' (१८७१) जो 'वोलैटाइल इलेक्ट्रिसिटी' पर है, उन्हीं का 'रगड़ बिजली बल' (१८७१) जो 'फ्रिक्शनल इलेक्ट्रिसिटी' पर है, महेन्द्रनाथ भट्टाचार्य का 'पदार्थ-दर्शन' (१८७३) तथा लक्ष्मीशंकर मिश्र का 'पदार्थ विज्ञान विटप' (१८७५)। यह ग्रंथ युग के पूर्वार्द्ध के ही हैं, उत्तरार्द्ध में कोई उल्लेखनीय ग्रंथ नहीं मिलते।

२. गणित—गणित तथा उसके विभिन्न अंगों पर भी ग्रंथ प्रायः शिक्षा-विभाग के लिए ही लिखे गए, पर कुछ ग्रंथ स्वतन्त्र ढंग से भी लिखे गए। आदित्यराम भट्टाचार्य का 'बीजगणित' (१८७४), शिवचरणलाल का 'क्षेत्रमिति-प्रकाश' (१८७५) जो 'युक्लिड' संबंधी है, नवीनचन्द्र राय का 'जलस्थिति और जलगति' (१८८२), जो 'हाइड्रॉस्टैटिक्स', 'हाइड्रॉलिक्स' तथा 'न्युमैटिक्स' पर है, और उनका 'स्थितितत्व और गतितत्व' (१८८२) जो 'स्टैटिक्स' और 'डाइनैमिक्स' पर है, लक्ष्मीशंकर मिश्र की 'गतिविद्या' (१८८५) जो पुनः 'डाइनैमिक्स' पर है, तथा इन्द्राजी भगवानजी का 'शिल्पशास्त्रांगत आयतत्व' (१८९७), जिसका संबंध वास्तुशिल्प संबंधी गणित से है, गणित के प्रमुख ग्रंथ हैं। इनके अतिरिक्त सुधाकर द्विवेदी के 'चलन-कलन' (१८८६), 'चल-राशि-कलन' [१८८६ ?] तथा 'समीकरण मीमांसा' [१८८६ ?] भी गणित के कतिपय अंगों पर महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

३. ज्यौतिष—ज्यौतिष-संबंधी ग्रंथों में हरिप्रसन्न बैनर्जी की 'यंत्री शतवार्षिकी (१८६७), हनुमानकिशोर शर्मा की 'गुरुसारिणी' (१८८१),

शिवकुमारसिंह का 'कालबोध' (१८६५) तथा श्रीनारायण पाण्डेय का 'कालनिर्णय' (१८६७) मुख्य हैं। प्राकृतिक भूगोल पर उल्लेखनीय है लक्ष्मीशंकर मिश्र की 'प्राकृतिक भूगोल चंद्रिका' (१८७६)।

४. रसायन—रसायन पर साहित्य का प्रायः अभाव रहा। केवल रासायनिक चमत्कार संबंधी एकाध पुस्तकें मिलती हैं : जैसे भुवनचन्द्र बसु की 'दिग्विजय या आश्चर्यचंद्रिका' (१८६६) और बलदेवप्रसाद मिश्र की 'कीमिया' (१८६६)।

५. प्राणि-शास्त्र—प्राणि-शास्त्र पर उल्लेखनीय केवल दो कृतियाँ दिखाई पड़ीं : लक्ष्मीनाथ सिंह का 'जीवजंतु' (१८६५) तथा पृथ्वीनाथ सिंह की 'उद्भिज्ज विद्या' (१९०४-)।

विज्ञान इस युग के लिए नया विषय था, और निस्संदेह जैसा पिछड़ा युग यह था उस के ध्यान से इसमें काम अच्छा ही हुआ।

समाज-शास्त्र [और दर्शन]

आलोच्यकाल के पूर्वार्द्ध में इस विषय का जो साहित्य निर्मित हुआ उसमें वैज्ञानिक धारणा का प्रायः अभाव है, केवल उत्तरार्द्ध के साहित्य में—सो भी प्रायः इस युग के अंत में—वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रादुर्भाव दिखाई पड़ता है। अध्ययन के लिए प्रस्तुत साहित्य को हम निम्नलिखित शीर्षकों में रख सकते हैं : १. राजनीति, २. अर्थशास्त्र, ३. तर्कशास्त्र, तथा ४. मनोविज्ञान।

१. राजनीति—राजनीति संबंधी-रचनाएँ हैं श्री निवासदास की 'राजनीति' (१८६६), जसुराम का 'राजनीति संग्रह' (१८७२), तथा देवीदास की 'राजनीति' (१८७३)। यह सभी प्राचीन परिपाटी पर हैं। उत्तरार्द्ध में कोई रचनाएँ नहीं मिलतीं।

२. अर्थशास्त्र—इस काल के पूर्वार्द्ध में अर्थशास्त्र-विषयक साहित्य का अत्यंताभाव रहा; उत्तरार्द्ध में उल्लेखनीय हैं : मिश्रबंधु का 'व्यय' (१९०५ द्वितीय), ब्रजनन्दनसहाय का 'अर्थशास्त्र' (१९०६) तथा गणेशदत्त पाठक की 'अर्थशास्त्र प्रवेशिका' (१९०७)। यह रचनाएँ युग

के अंत की हैं, और नवीन अर्थ-शास्त्र की प्रारंभिक कृतियाँ मानी जा सकती हैं।

३. तर्कशास्त्र—तर्कशास्त्र पर केवल दो कृतियाँ हैं: सुखदयाल शर्मा की 'न्याय-बोधिनी' (१८८९) तथा परमानंद का 'तर्कशास्त्र' (१९०६); इनमें से पहली पुरानी परिपाटी पर है और दूसरी नवीन परिपाटी पर।

४. मनोविज्ञान—मनोविज्ञान पर केवल एक पुस्तक उल्लेखनीय है: गणपति जानकीराम दुबे की 'मनोविज्ञान' (१९०४), जो अपने विषय की पहली पुस्तकों में से है।

स्पष्ट है कि प्रस्तुत विषय पर इस काल में साहित्य-निर्माण बहुत पिछड़ा रहा।

शिक्षा

शिक्षा-संबंधी पुस्तकों का अत्यन्ताभाव रहा; केवल एक पुस्तक ऐसी मिलती है जिसका उल्लेख किया जा सके: वह है मुहम्मदहुसैन कृत 'पाठशालाओं का प्रबंध' (१८८३)।

धर्म

धर्म-साहित्य आलोच्यकाल में प्रचुर मात्रा में मिलता है। इस समय हिंदी-प्रान्त में तीन धर्मों का प्रचार था: हिंदू, इस्लाम, और ईसाई। इनमें से इस्लाम ने हिंदी-संस्कृति के साथ मध्ययुग में किसी समय एक समन्वय का यत्न किया भी था—जिसके परिणाम-स्वरूप हिंदी की वे प्रेम-गाथाएँ लिखी गईं जिन्हें सूफ़ी-साहित्य के अन्तर्गत माना जाता है—पर ईसाई धर्म हिंदी-संस्कृति के साथ कभी सामंजस्य स्थापित नहीं कर सका—कारण चाहे जो कुछ भी हो—और इसीलिए वह हमको एक भी ऐसी रचना नहीं दे सका जिसकी गणना 'साहित्य' में हो सके। इस्लाम भी अधिक दिनों तक हमारे साहित्य-निर्माण में योग न दे सका। शासक जाति कब तक शासितों की भाषा और संस्कृति से अपना संबंध स्थिर रख सकती थी? फलतः उसने 'उर्दू' का विकास किया। और अंग्रेज़ जाति को भी अगर भारत में बसने की नौबत आती तो

कदाचित् एक तीसरी साहित्यिक और सांस्कृतिक भाषा और उसके साहित्य का सृजन होना अवश्यंभावी था। अस्तु, आलोच्यकाल में हिंदी में इस्लाम या ईसाई धर्म का साहित्य बिलकुल नहीं मिलता। जो कुछ भी साहित्य मिलता है वह हिंदू धर्म या उसके ही कुछ रूपांतरों का है। इस साहित्य का निरीक्षण हम निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत कर सकते हैं: १. जाति-व्यवस्था, २. संप्रदाय-व्यवस्था, ३. वेदान्त, ४. भक्ति, ५. योग, ६. निर्विशिष्ट धर्म, ७. नीति-धर्म।

१. जाति-व्यवस्था—जाति-व्यवस्था विषयक इस काल की रचनाओं में उल्लेखनीय हैं शिवप्रसाद सितारेहिंद की 'जाति की फ़िहरिस्त' (१८७१), ज्वालाप्रसाद मिश्र का 'जाति-निर्णय' (१९००), अवधविहारीलाल मुंशी का 'वर्ण-निर्णय' (१९०४) तथा शिवशंकर शर्मा का 'जाति-निर्णय' (१९०७)। अंतिम कृति आर्यसमाज का दृष्टिकोण उपस्थित करती है। कुछ जातियों के रीति-रस्मों के संबन्ध में भी पुस्तकें मिलती हैं: ठाकुरप्रसाद खत्री की 'दस्तूर-अमल शादी' माला (१८७१) अहीर, कसेरा, कोइरी, बनिया, तथा हलुवाई जातियों के विषय में है। जातियों की उत्पत्ति के विषय में दो पुस्तकें मिलती हैं: हरिश्चन्द्र कृत 'अगरवालों की उत्पत्ति' (१८७१) तथा 'खत्रियों की उत्पत्ति' (१८८३)।

२. संप्रदाय—विभिन्न संप्रदायों तथा हिन्दू-धर्म के रूपान्तरों के संबन्ध में प्रचुर साहित्य मिलता है। जैनधर्म के सम्बन्ध में हरिश्चन्द्र का 'जैन कुतूहल' (१८७३) तथा आत्मारामजी महामुनि का 'जैनतत्वादर्श ग्रंथ' (१८८४)—जिनमें से पिछला एक बड़ा और महत्वपूर्ण ग्रन्थ है—उल्लेखनीय हैं। कबीर-पन्थ के सम्बन्ध में इसी प्रकार बालजी वेचर का 'सोर्सेज़ ऑव् कबीर रेलिजन' (१८८१) तथा मकन जी कबीर-पंथी का 'कबीरोपासना पद्धति' (१९०४) प्रमुख हैं। इनमें से पहले में कबीर-पंथ को ईसाई धर्म का एक रूपान्तर सिद्ध करने का यत्न किया गया है, और दूसरा अपने संप्रदाय का एक ग्रंथ है। वल्लभ-संप्रदाय संबंधी ग्रंथ दो वर्गों में रक्खे जा सकते हैं: एक वे जो संप्रदाय के

सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हैं, और दूसरे वे जो संप्रदाय की व्यवस्था में दोष-दर्शन करते हैं। पहले प्रकार की रचनाएँ हैं व्रजदास की 'श्री गोस्वामी महाराज नी वंशावली, (१८६८), गोपालदास का 'वल्लभाख्यान' (१८७३), व्रजजीवनदास का 'वल्लभ-विलास' (१८८६), हरिश्चन्द्र का 'उत्सवावली' [१८६०?], शंकरदयालु मिश्र का 'वल्लभाचार्य सम्प्रदायष्टकम्' (१९०३), रघुनाथ जी शिवाजी का 'वल्लभपुष्टिप्रकाश' (१९०६) तथा एक अज्ञात लेखक का 'पुष्टिमार्गीय गुरु-परंपरा-विचार' (१८९१)। दूसरे प्रकार की रचनाएँ हैं ब्लैकेट का 'वल्लभकुल चरित्र-दर्पण' (१८८१) तथा भक्तानन्द का 'वल्लभकुल छल-कपट-दर्पण' (१९०७)। नानक मत पर विष्णुदास कृत 'द्वादश-ग्रन्थी' (१८९४), गणेश सिंह कृत 'गुरु नानक सूर्योदय' (१९००) तथा कृष्णानंद उदासी कृत 'नानक सत्यप्रकाश' (१९०२) प्रमुख हैं। आर्यसमाज की स्थापना इसी काल में हुई, और इस काल की रचनाओं में से आर्यसमाज के साम्प्रदायिक ग्रंथ स्वामी दयानन्द के 'सत्यार्थप्रकाश' (१८७५) के बराबर किसी ने भी प्रचार नहीं पाया। समर्थदान का 'आर्यसमाज परिचय' (१८८७) तथा शिवनाथ का 'वैदिक जीवन' (१९०५) आर्यसमाज की इस काल की अन्य उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। ब्रह्म-समाज की स्थापना भी प्रायः इसी काल में हुई। हिंदी में उसके उल्लेखीय ग्रंथ हैं नवीनचंद्र राय कृत 'आचारादर्श' (१८७२), 'धर्मदीपिका' (१८७३) 'ब्राह्मधर्म के प्रश्नोत्तर' (१८७३) तथा 'तत्वबोध' (१८७५), हरनामचंद्र कृत 'हिंदूधर्म विवर्धन' (१८७४); प्रतापसिंह भोसले कृत 'सत्यसागर' (१८८६) तथा 'ब्रह्मस्मृति' (१८८३) जिनमें से अंतिम दो महत्वपूर्ण हैं। राधास्वामी मत के संस्थापक—जिसकी स्थापना १८६१ में हुई थी—राधास्वामी साहब के 'सार वचन' (१८८४) के हिंदी पद्य और गद्यरूप इसी काल के हैं। शेष संप्रदायों की कोई उल्लेखनीय रचना नहीं मिलती है।

३. वेदान्त—इस काल में वेदान्त की एक प्रबल धारा साहित्य-क्षेत्र में बहती हुई दिखाई पड़ती है। कुछ सांप्रदायिक सिद्धान्तों के रूप में ही नहीं बल्कि वह एक और विस्तृत रूप में प्रकट हुई। श्रद्धाराम शर्मा की

'आत्म-चिकित्सा' (१८७१), कृष्णचंद्र धर्माधिकारी का 'ज्ञान-प्रदीप' (१८७४), तथा 'सम्यक्त निर्णय' (१८७४), कृष्णदास का 'ज्ञान-प्रकाश' (१८७४), भगवतसरन का 'आत्मज्ञान-मंजरी' (१८७५), साधूराम का 'वाक्-सुधाकर' (१८७५), हरिदास बाबा का 'परमार्थ-चिंतनविधि' (१८७६), पीतांबर पंडित के 'विचार-चन्द्रोदय' (१८७८), तथा 'बाल-बोध' (१८८२), श्यामदास साधु का 'ग्रंथत्रयम्' (१८८४), चिद्घना-नंद गिरि का 'तत्वानुसंधान' (१८८६), नन्दलाल शर्मा का 'उद्यान-मालिनी' (१८९०), बसंत जायसी की 'समुद्र-लहरी' (१८९४), खुशालदास की 'विचार-रत्नावली' (१८९३), विशुद्धानंद का 'पक्षपात-रहित अनुभव प्रकाश' (१८९५), तथा भजनदेव स्वामी का 'क्षेत्र-ज्ञान' (१८९८) इस धारा की वे प्रमुख रचनाएँ हैं जिनमें वेदान्त के सिद्धान्तों का विवेचन हुआ है। वेदान्त-धारा के भावना-ग्रंथ भी हैं— अर्थात् वे ग्रंथ जिनमें सिद्धान्त-विवेचन नहीं प्रत्युत उन सिद्धान्तों की भावना में परिणति दिखाई पड़ती है : तोताराम का 'शांतिशतक' (१८७७), लक्ष्मीनाथ सिंह परमहंस की 'पदावली' (१८७९), ज्ञानानंद की 'गीत-ध्वनि' (१८७९), यमुनाशंकर नागर की 'विज्ञान-लहरी' (१८८३), हरिहरप्रसाद का 'वैराग्य-प्रदीप' (१८८६) निर्मलदास की 'निर्मल कृति' (१८८८), नृसिंहाचार्य का 'नृसिंहवाणी-विलास' (१८८९), ब्रह्मा-नंद स्वामी के 'प्रबोध-शतक' (१८८८), तथा 'भजनमाला' (१९०६), हेमराज स्वामी का 'शांति-सरोवर' (१८९२ रिप्रिन्ट), सेवानंद ब्रह्म-चारी का 'ब्रह्मसंगीत' (१८९५) तथा साहबदास का, 'वैराग्यरत्नाकर' (१९०३) इसी दूसरे प्रकार की रचनाएँ हैं। यह सभी पद्य में हैं— केवल इनमें वह कलात्मक विशेषता नहीं पाई जाती जिससे इनको ललित साहित्य में स्थान दिया जा सकता।

४. **भक्ति**—इस काल के भक्ति-संबन्धी कुछ उल्लेखनीय सिद्धान्त-ग्रंथ हैं: रमाकांतशरण का 'प्रेमसुधा-रत्नाकर' (१८९३), तेज-नाथ झा का 'भक्ति-प्रकाश' (१९०५), गोपालदास का 'भक्ति-प्रकाश' (१९०५), ओंकारदास शर्मा की 'उपासनातत्व-दीपिका'

(१६०५) तथा बोधिदास का 'भक्तिविवेक' (१६०६)। भक्ति-संबन्धी भावना-ग्रंथ भावप्रचुरता के कारण ऊपर ललित-साहित्य की कतिपय कोटियों में आ गये हैं, इससे उनका उल्लेख यहाँ नहीं किया गया है।

५. योग—योग-संबंधी केवल दो ग्रंथ उल्लेखनीय हैं: लक्ष्मणानंद योगी 'लिखित 'ध्यानयोग-प्रकाश' (१६०१) तथा हंसस्वरूप स्वामी लिखित 'षट्चक्र-निरूपण' (१६०३)। ये दोनों सिद्धान्त-ग्रंथ हैं; भावना ग्रंथ कोई भी नहीं हैं।

६. निर्विशिष्ट हिन्दू धर्म—समाज में हिन्दू-धर्म का एक ऐसा रूप भी प्रचलित रहा है जिसमें जाति-व्यवस्था, सांप्रदायिकता, वेदान्त, भक्ति, और योग में से किसी पर कोई विशेष बल नहीं दिया जाता रहा है; इसको हम निर्विशिष्ट हिन्दू धर्म कह सकते हैं। चम्पाराम की 'धर्म लावनी' (१८७४), श्यामलाल सिंह कुंवर की 'ईश्वरोपासना' (१८८०) रामावतारदास का 'संत-विलास' (१८८१), अम्बिकादत्त व्यास की 'धर्म की धूम' (१८८५), जगमोहन सिंह ठाकुर की 'देववानी' (१८८६), श्रीरामशरण का 'भजनामृत' (१८६०), नरसिंह केसरीसिंह की 'भजनावली' (१८६०), अम्बिकादत्त व्यास की 'स्वर्ग-सभा' (१८६१), प्रतापनारायण मिश्र का 'पञ्चामृत' (१८६२), अम्बिकाप्रसाद वर्मा का 'अम्बिका-भजनावली' (१८६८), जगन्नाथदास 'रत्नाकर' का 'धर्म-संताप' [१६०० ?] तथा दुर्गाप्रसाद मिश्र का 'भारत धर्म' (१६००) प्रायः इसी धारा के ग्रंथ हैं, और यह सभी भावना-ग्रंथ हैं।

७. नीति-धर्म—नीति-उपदेश-साहित्य भी जिसे हम समाजधर्म-साहित्य कह सकते हैं—इस युग में प्रचुर परिमाण में मिलता है। रूपनारायण शर्मा का 'स्त्री-चर्या' (१८६८), पालराम शर्मा का 'शील-रत्नाकर' (१८७२), रामस्वरूप तिवारी का 'नीतिसुधा-तरंगिणी' (१८७२), हरिदयाल की 'सार-उक्तावली' (१८८३ रिप्रिन्ट), वल्लभ-राम सूजाराम व्यास की 'वल्लभ-नीति' (१८८३), प्रतापनारायण मिश्र का 'मानस-विनोद' (१८८६), काशीनाथ खत्री का 'तावीज' (१८८८),

बालाबख्श चारण का 'उपदेश-पंचाशिका' (१८६०), अयोध्यासिंह उपाध्याय का 'उपदेश-कुसुम' (१६०१), देवरतन शर्मा का 'शिष्टाचार' (१६०२), सीताराम लाला की 'नीति-वाटिका' (१६०४), जवाहिर लाल शर्मा का 'उपखान पचासा' (१६०४) तथा गोविन्दशरण त्रिपाठी का 'कर्त्तव्य-पालन' (१६०८) इस परंपरा की प्रमुख रचनाएँ हैं।

यह समस्त धर्म-साहित्य प्रायः पूर्णरूप से मध्ययुग की परंपरा में है यदि यह कहा जावे तो कदाचित् अनुचित न होगा। थोड़े से समाजों के ग्रंथों को छोड़ कर नवचेतना के लक्षण इस साहित्य में भी नहीं दिखाई देते। धर्म निस्संदेह जीवन की एक आवश्यकता है, किंतु क्या इन अतिरंजित रूपों में ही ? कुछ और गंभीरता के साथ 'धर्म' की समस्या पर मनन किया जा सकता था, वह इस युग में बिलकुल नहीं हुआ। या तो पुरानी लकीरें पीटी जाती रहीं, अन्यथा कुछ खंडन-मंडन होता रहा। यही इस युग के धर्म-साहित्य की विशेषता है।

समालोचना*

प्रस्तुत विषय के साहित्य को हम दो वर्गों में रख सकते हैं : १. प्राचीन लेखकों का अध्ययन, तथा २. आधुनिक लेखकों का अध्ययन।

१. प्राचीन लेखक—हिंदी के प्राचीन कवियों और लेखकों के विषय में यद्यपि कोई पूर्ण और सुव्यवस्थित अध्ययन इस काल में प्रकाशित नहीं हुआ; पर उनके जीवन और कृतियों के स्फुट पक्षों पर विचार और तथ्यपूर्ण सामग्री प्रकाश में आने लगी, और उनके इतिवृत्त भी लिखे जाने लगे। कालक्रम से इस प्रकार के प्रमुख लेखक और उनके विषय की सामग्री निम्नलिखित है :

चंद—'पृथ्वीराज रासो' की प्रामाणिकता पर श्यामलदास कविराजा

---

*इस शीर्षक के नीचे साहित्यकारों के वैयक्तिक अध्ययन से संबंध रखने वाली उन समस्त पुस्तकों का समावेश किया गया है जो केवल किसी एक साहित्यकार से संबंध रखती हैं—एक से अधिक साहित्यकारों से संबंध रखने वाली इस प्रकार की सामग्री का समावेश आनेवाले वर्ग में किया गया है।

की 'पृथ्वीराज रहस्य की नवीनता', (१८८६) तथा उसके उत्तर में मोहनलाल विष्णुलाल पांड्या की 'चंद बरदाई कृत पृथ्वीराज रासो की प्रथम संरक्षा' (१८८७) ; और हरिचरण सिंह लिखित 'अनङ्गपाल पृथ्वीराज समय' (१९०२) ।

कबीर—लोचनदास ज्योतिषी की 'कबीर साहब का जीवन-चरित्र' (१९०३) तथा शंभुदास महंत की 'कबीर-सिद्धान्त-बोधिनी' (१९०४) ।

मीरा—कार्त्तिकप्रसाद खत्री लिखित 'मीराबाई का जीवन-चरित्र' (१८९३) तथा देवीप्रसाद मुंसिफ़ लिखित 'मीराबाई का जीवन-चरित्र' (१८९८) ।

सूर—देवीप्रसाद मुंसिफ का 'सूरदास जी का जीवन-चरित्र' (१९०६) ।

तुलसीदास—तुलसीदास संबंधी रचनाएँ सबसे अधिक विस्तृत क्षेत्र पर हैं । उनके जीवन-वृत्त से संबंध रखनेवाले ग्रंथ हैं : विश्वेश्वरदत्त शर्मा का 'तुलसीदास-चरित-प्रकाश' (१८७७), कमलकुमारी देवी लिखित 'गोस्वामी तुलसीदास जी का जीवन-चरित्र' (१८९५) तथा [रामस्वरूप लिखित ?] 'गोस्वामी तुलसीदास का जीवन चरित्र'। उनकी कृतियों के प्रमुख संग्रह हैं [नवलकिशोर सं० ?] 'पञ्चरत्न' (१८८६), जिसमें 'जानकी-मंगल'· 'पार्वती-मङ्गल,' 'वैराग्य-संजीविनी', 'नहछू' तथा 'बरवा' संगृहीत हैं ; [खेमराज श्रीकृष्णदास सं० ?] षोडस रामायण संग्रह' [नूत बिहारी दे सं० ?] 'षोड्स रामायण' (१९०३), जिनमें १६ ऐसी रचनाएँ संग्रहीत हैं, जो तुलसीदास की मानी जाती हैं तथा [नूत बिहारी दे सं० ?] 'तुलसीदास जी की ग्रंथावली' (१९०४) । कुछ ग्रन्थ केवल 'मानस' संबंधी हैं : मन्नालाल शर्मा लिखित 'मानस-शंकावली' (१८८४), जानकीदास लिखित 'तुलसीकृत रामायण की मानस-प्रचारिका' (१८८५), देवी प्रसाद रामायणी की 'कवित्त रत्नावली मानस-प्रकाश' (१८८९), तथा सुधाकर द्विवेदी सं० 'मानस-पत्रिका' (१९०४) , जो प्रायः सामान्य अर्थ-संबंधी हैं, बहादुरदास का 'निर्द्वन्द-रामायण' (१८८५), यमुनाशंकर नागर का

'रामायण अध्यात्म-विचार' (१८८७), सहजानंद स्वामी का 'आत्म-रामायण' (१९०४) तथा गुरुसहाय सिंह का 'मानस-अभिराम' (१९०६), जो रामकथा के एक वेदान्त-परक अर्थ का प्रतिपादन करते हैं। इनमें यमुनाशंकर नागर का ग्रन्थ बहुत ही विस्तृत है, और 'मानस' के अवतरणों का उल्लेख करते हुए अपने अर्थ के प्रतिपादन का प्रयास करता है। 'मानस' के कुछ शब्द-कोष भी लिखे गए : जयगोपाल बोस का 'तुलसी शब्दार्थ-प्रकाश' (१८६९), तथा अमरसिंह का 'मानस-कोष' (१८९०) इसी प्रकार के प्रयास हैं। 'मानस' के अतिरिक्त कवि के केवल एक ग्रन्थ पर विशेष कार्य हुआ—वह है 'सतसई'; सुधाकर द्विवेदी का 'सतसई-सुधाकर' (१८९९) 'सतसई' के दोहों का एक पद्यात्मक विस्तार उपस्थित करता है।

रहीम—रामलाल दीक्षित सं० 'रहिमन-शतक' (१८९८) तथा उमराव सिंह सं० 'रहीम-रत्नाकर' (१९०२)।

ध्रुवदास—रामकृष्ण वर्मा सं० 'ध्रुव-सर्वस्व' (१९०४)।

बिहारी—रसिकेश कृत 'रस-कौमुदी' (१८८५), तथा राधाकृष्ण दास लिखित 'कविवर बिहारीलाल' (१८९५)।

भूषण—[नूत बिहारी दे सं० ?] 'भूषण-ग्रंथावली' (१९००)।

नागरीदास—राधाकृष्णदास लिखित 'नागरीदास जी का जीवन-चरित्र' (१८९४)।

दत्त कवि—चण्डीप्रसाद सिंह लिखित 'दत्त कवि' (१८९६)।

२. आधुनिक लेखक—आधुनिक लेखकों के संबंध में और भी कम लिखा गया। काल क्रम से उल्लिखित केवल निम्नलिखित लेखकों के संबंध का साहित्य प्रकाश में आया :

हरिश्चन्द्र—रामदीन सिंह सं० 'हरिश्चन्द्र-कला' (१८८७-१९०५) जिसमें उनकी कृतियों का संग्रह हुआ है, तथा राधाकृष्णदास का 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन-चरित्र' (१९०४), शिवनंदनसहाय का 'सचित्र हरिश्चन्द्र' (१९०५)।

लछिराम कवि—नकछेदी तिवारी का 'कविराज लछिराम कवि' (१९०४)।

अंबिकादत्त व्यास—'निज वृत्तान्त' (१९०१) स्वतः कवि लिखित।

तोताराम—मुन्नीलाल लिखित 'बाबू तोताराम का जीवन-चरित्र' (१९०६)।

बलदेवप्रसाद मिश्र—ब्रजनंदनसहाय लिखित 'पं० बलदेवप्रसाद मिश्र की जीवनी' (१९०७)।

कार्त्तिकप्रसाद खत्री—बालमुकुन्द वर्मा लिखित 'बाबू कार्तिकप्रसाद खत्री का जीवन-चरित्र' (१९०४)।

राधाकृष्णदास—ब्रजनंदनसहाय लिखित 'बाबू राधाकृष्णदास की जीवनी' (१९०७), तथा गङ्गाप्रसाद गुप्त लिखित 'राधाकृष्णदास (१९०७)।

दूधदास स्वामी—स्वसंपादित काव्य-संग्रह 'लाल दे बिहारी का दीवान' (१८८९)। लाल दे बिहारी कृष्ण की एक मूर्ति का नाम है जिसके यह उपासक थे, इसीलिए उन्होंने अपनी कृति-संग्रह का यह नाम रक्खा।

जयप्रकाश लाल—जगन्नाथदास 'रत्नाकर' सं० 'जयप्रकाश-सर्वस्व' (१८९५)।

गणेशप्रसाद शर्मा—स्वसंपादित 'गणाधिप-सर्वस्व' (१९०१)।

हरिरामजी—स्वसंपादित 'हरि-सागर' (१९०८)।

वैयक्तिक अध्ययन का यह क्षेत्र नवीन था, इस ध्यान से उपर्युक्त कार्य भी निस्संदेह महत्वपूर्ण है।

साहित्य का इतिहास

इस शीर्षक के अध्ययन को हम निम्नलिखित वर्गों में विभाजित कर सकते हैं : १. वृत्त-संग्रह, २. काव्य-संग्रह, ३. नाटक-संग्रह, ४. निबंध-संग्रह, ५. इतिहास।

१. वृत्त-संग्रह—साहित्य के शुद्ध इतिहास तो इस काल में नहीं

लिखे गए, पर लेखकों और कवियों के इतिवृत्त ग्रंथ—उनकी रचनाओं से उदाहरण भी कभी-कभी देते हुए—अनेक लिखे गए। इनमें से अग्रगण्य है शिवसिंह सेंगर का 'शिवसिंह-सरोज' (१८७८) जिसमें लेखक ने बड़ी खोज के साथ हिंदी के प्राचीन कवियों के इतिवृत्त और उनकी रचनाओं के उदाहरण दिए हैं। राधाचरण गोस्वामी का 'नव-भक्तमाल' (१८८६), जीवाराम का 'रसिक-प्रकाश भक्तमाल' (१८८७) तथा हरिश्चंद्र का 'उत्तरार्द्ध भक्तमाल' कुछ भक्त कवियों के भी वृत्त उपस्थित करते हैं। शिवनाथ योगी के 'मत्स्येन्द्रनाथ और गोरखनाथ की उत्पत्ति' (१८६०) का विषय प्रकट ही है। भागवत-प्रसाद राव के 'मदन-सरोज' (१८६०) में इक्कीस कवियों के जीवन-वृत्त दिए गए हैं। छेदीदास का 'संत-महिमा-सनेह-सागर' (१८६२), सियादास की 'अवध संतमाला' (१८६२) तथा खण्डेराव कवि की 'भक्त-बिरुदावली' (१६०६) भी उपर्युक्त भक्तमालों की परंपरा में है। देवीप्रसाद मुंसिफ़ के 'महिला-मृदुवाणी' (१६०५ रिप्रिंट) और 'राजरसनामृत' (१६०६) क्रमशः राजस्थान की कवियित्रियों और भूप कवियों की जीवनी और रचनाओं से परिचय कराते हैं। इसी संबंध में कहानजी धरमसिंह सं० 'साहित्य-संग्रह' (१८६७-) का भी उल्लेख किया जा सकता है, जिसमें अनेक हिंदी-कवियों की रचनाएँ आवश्यक टिप्पणियों के साथ संगृहीत हैं।

२. काव्य-संग्रह—काव्य-संग्रहों से कुछ ऐसे हैं जो विषयों के अनुसार हैं। निम्नलिखित इसी प्रकार के हैं :

राम-काव्य-संग्रह—उल्लेखनीय इनमें से केवल तीन हैं : वल्लभ सं० 'रसिक-रञ्जन रामायण' (१८८८), रामकृष्ण वर्मा सं० 'रघुनाथ-शतक' (१८६७) तथा लक्ष्मीचंद सं० 'रामायण आनंद-प्रकाश' (१८६८)।

कृष्ण-काव्य-संग्रह—और इनमें प्रधानता है पुष्टि मार्गीय कवियों के काव्य-संग्रह की। नाथूभाई तिलकचंद सं० 'पुष्टिमार्गीय वैष्णव मार्गवतन अष्टसखानिकृतीन पद' (१८६८), रेवाशंकर वेलजी सं० 'रासलीला' (१८८६-), ठाकुरदास सूरदास सं० 'पुष्टिमार्गीय संग्रह

(१८८८ रिप्रिन्ट) जो इन समस्त पद-संग्रहों में सबसे वृहत्काय है, त्रिभुवनदास रणछोड़ सं० 'नित्यनियम तथा वर्षोत्सव-कीर्तन' (१८८६), ज्येष्ठाराम मुकुंद जी सं० 'जमुना जी के पद तथा धौल' (१६०६) प्रायः पुष्टिमार्गीय कवियों के ही काव्य-संग्रह हैं। शेष में उल्लेखनीय हैं महावीरप्रसाद मुंशी सं० 'श्रीकृष्ण-गीतावली' (१८८७), रङ्गीलाल शर्मा सं० 'वृहद् रागरत्नाकर' (१८६२) तथा 'व्रज-विहार' (१८६२)।

कबीर-पंथी संग्रह—केवल दो संग्रह उल्लेखनीय हैं : बसनजी चतुर्भुज सं० 'गुरुस्तुति संग्रह' (१८७१), और मकन जी कबीरपंथी सं० 'कबीर-स्तुति' (१६००)।

स्वामीनारायण संप्रदाय का—जिसका प्रचार गुजरात में है—केवल एक संग्रह है : जगजीवन वीरजी सं० 'कीर्तन-संग्रह' (१८६१ रिप्रिंट)।

जैनधर्मावलंबी संग्रह—प्रमुख केवल तीन संग्रह हैं : सिताबचंद्र नाहर 'जैन-स्तवनावली' (१८७४), यशोविजय, विनय-विजय और ज्ञानसार जी के 'वैराग्योपदेशक विविध पद-संग्रह' (१८८२) तथा चंद्रसेन बाबू सं० 'जैन-ग्रंथ-संग्रह' (१६०३)।

शृङ्गारात्मक काव्य-संग्रह—सबसे अधिक यही हैं। लछिमनदास लाला सं० 'प्रेमरत्नाकर' (१८७६), हरिश्चंद्र सं० 'प्रेम-तरङ्ग' (१८७६), तथा सुंदरी-तिलक' (१८८०), मन्नालाल शर्मा सं० 'शृङ्गार-सरोज' (१८८०), बनारसीप्रसाद सं० 'सुंदरी-तिलक' (१८८१), हफीजुल्ला खाँ सं० 'नवीन-संग्रह' (१८८२), बच्चूराम सं० 'अनुराग शिरोमणि' (१८८३), नकछेदी तिवारी सं० 'मनोज-मञ्जरी' (१८८५ द्वितीय), मन्नालाल शर्मा सं० 'सुंदरी-सर्वस्व' (१८८६), तथा 'शृङ्गार-सुधाकर' (१८८७), विद्याधर त्रिपाठी सं० 'नवोढ़ादर्श' (१८८७), खूबचंद कुँवर सं० 'प्रेम-पत्रिका' (१६८८), रामरत्न पाठक सं० 'प्रेम-प्रवाह-तरङ्ग' (१८६०), रामरत्न वाजपेयी सं० 'सुंदरी तिलक' (१८६६), विश्वेश्वरप्रसाद सं० 'रसिक-मुकुंद' (१६०६), तथा हरिश्चंद्र सं० 'प्रेम-सन्देश' (१६०६) और 'मान-चरित्र' (१६०६) इनमें प्रमुख हैं।

नखशिख-संबंधी संग्रह—प्रमुख हैं मन्नालाल शर्मा सं० 'प्रेम-तरङ्ग' (१८७७) तथा परमानंद सुहाने सं० 'नख-शिख-हज़ारा' (१८९३)।

ऋतु-काव्यसंबंधी संग्रह—हफ़ीजुल्ला खाँ सं० 'षट्ऋतु-काव्यसंग्रह' (१८८६), परमानंद सुहाने सं० 'षट्ऋतुहज़ारा' (१८९४), हरिश्चन्द्र सं० 'पावस कविता-संग्रह' (१८९७) तथा भगवतीप्रसाद सिंह सं० 'पावस-मंजरी' (१९००) प्रमुख हैं।

ऋतुगीत-संबंधी संग्रह—प्रमुख हैं हरिचंद्र सं० 'मलार' हिंडोला, कजली, जयंती' (१८७५) तथा नानकचंद्र सं० 'पावस-प्रमोद' (१८८५)।

नीति-उपदेश 'संबंधी संग्रह—इनमें उल्लेखनीय हैं सदानंद मिश्र सं० 'नीतिमाला' (१८७२), बलदेवप्रसाद बाबू सं० 'नीति-रत्नावली' (१८९५), [गौरा बेवा सं० ?] 'गिरिधर व्यास और बेताल की कुण्डलियाँ' (१९००); शिवनंदन त्रिपाठी सं० 'अन्योक्ति मुक्तावली' (१९०४), में अन्योक्तियों का संग्रह है। हरिश्चंद्र सं० 'परिहासिनी' [१८८० ?] तथा नकछेदी तिवारी सं० 'विचित्रोपदेश या भड़ौआ-संग्रह' (१८८४) हास्य-व्यंग्य के काव्य-संग्रह हैं।

मिश्रित विषयों के काव्य-संग्रह प्रमुख हैं : कामताप्रसाद लाला से 'संगीतमाला' (१८८४), हरिप्रसाद भागीरथ सं० 'बृहद् रागकल्प-द्रुम' (१८९२ रिप्रिंट) तथा मेघजी मावजी सं० 'भजनसागर' (१९९३ रिप्रिन्ट), प्रमुख गीत-संग्रह हैं; श्रीधर शिवलाल सं० 'छंदरत्न-संग्रह' (१८७०), दयाराम सं० 'काव्य-संग्रह' (१८७६ तृतीय), और 'कवित्त' और 'परचूरन संग्रह' (१८८१), साहबप्रसाद सिंह सं० 'काव्य-कला' (१८८५), महेश्वरस्वरूप सिंह सं० 'कवि-वचन-सुधा' (१८८६), गोवर्धन चतुर्वेदी सं० 'काव्य-संग्रह' (१८९१–) प्रमुख कविता-संग्रह हैं; और समस्यापूर्ति-संबंधी कुछ संग्रहों की गणना भी इन्हीं के साथ की जा सकती है, जैसे जगन्नाथदास 'रत्नाकर' सं० 'समस्यापूर्ति' (१८९४) तथा रामकृष्ण वर्मा सं० 'समस्यापूर्ति' (१८९७); इनमें तत्कालीन कवियों के अनेक मुक्तक मिल जाते हैं।

३. नाटक-संग्रह—इस काल में लोकप्रचलित कुछ नक़लों का भी एक संग्रह मिलता है : वह है गोविन्द मारोबा कारलेकर सं० 'ललित संग्रह' (१८८४ चतुर्थ), जिसमें हिन्दी के साथ मराठी की भी कुछ नक़लें संगृहीत हैं।

४. निबन्ध संग्रह—निबन्ध-संग्रह भी एक मिलता है : माधवराव सप्रे सं० 'निबन्ध-संग्रह' (१६०५ द्वितीय)। इसीके साथ कुछ व्याख्यान-संग्रहों की भी गणना की जा सकती है : बलदेवप्रसाद सं० 'व्याख्यान-रत्नमाला' (१६०३) तथा रामस्वरूप शर्मा सं० 'व्याख्यानमाला' (१६०४)।

५. इतिहास—वास्तविक इतिहास केवल एक मिलता है : वह है राधाकृष्णदास लिखित 'हिंदी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास' (१८६४) और यह प्रयत्न निस्संदेह सराहनीय है।

इस विषय में भी यह युग प्रायः पूर्णरूप से मध्ययुगीन रहा, यह समझने में कठिनाई न होगी। साहित्यिक इतिहास की भावना आनेवाले युग के लिए रही।

विभाषा साहित्य का अध्ययन

आलोच्यकाल में प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र भारतीय भाषा-साहित्य तक ही सीमित रहा; अभारतीय भाषा-साहित्य-संबंधी एकाध ही रचना मिलती है।

१. भारतीय भाषा-साहित्य—इस शाखा में भी प्राधान्य संस्कृत-संबंधी ग्रंथों का रहा। संस्कृत-संबंधिनी रचनाओं में कुछ रचनाएँ धार्मिक साहित्य से संबंध रखती हैं जिनमें से उल्लेखनीय हैं नवीनचंद्रराय का 'उपनिषत्सार' (१८७५), शिवशंकर का 'वाशिष्ट-सार' (१८८८ रिप्रिंट), 'हरिश्चन्द्र का 'अष्टादश पुराण उपक्रमणिका' (१८८६), मिहिरचंद्र का 'अष्टादश स्मृति' (१८६१), लेखराम का 'पुराण किसने बनाए ?' (१६००),—जो उस संबंध में आर्यसमाज के विचार सामने रखता है—तथा ज्वालाप्रसाद मिश्र का 'अष्टादश पुराण-दर्पण' (१६०५);

कुछ रचनाएँ साहित्यकारों के वैयक्तिक अध्ययन से सम्बन्ध रखती हैं; प्रमुख हैं हरिश्चंद्र लिखित 'जयदेव का जीवन-चरित' (१८८२), दामोदर शास्त्री का 'रामायण समय-विचार' (१८८८), महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'नैषध-चरित-चर्चा' (१६००), विश्वेश्वरराव दे स्वामी ? 'रामायण-समालोचना' (१६०५) तथा महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'विक्र-माङ्कदेव-चरित-चर्चा'(१६०७); कुछ और, रचनाएँ संस्कृत साहित्य के इतिहास से संबंध रखती हैं, उसमें से मुख्य है हरिमङ्गल मिश्र का 'भारतीय संस्कृत कवियों का समय-निरूपण' (१६०१) ।

उर्दू साहित्य संबंधिनी रचनाओं से तीन रचनाएँ नज़ीर के अध्ययन से संबंध रखती हैं : जगन्नाथप्रसाद गुप्त संपादित 'नज़ीर' (१८७०), अज्ञात संपादक की 'दीवान-ए-नज़ीर' (१८८१), तथा भोलानाथ संपादित 'मजमूआ-ए-नज़ीर' (१८६२) । इस युग की हिंदी जनता में कदाचित् नज़ीर से अधिक लोकप्रिय दूसरा उर्दू कवि या लेखक नहीं हुआ । और, एक रचना उर्दू कविता का संकलन है : भगवानदास वर्मा सं० 'गुलदस्ता-ए-वेनज़ीर' [१८८५ ?] ।

एक रचना मैथिली-साहित्य से संबंध रखती है—और वह प्रसिद्ध साहित्यकार उमापति के जीवन से संबंधित है : महेशदत्त शुक्ल लिखित 'उमापति-दिग्विजय' (१८८०) ।

२. **अभारतीय भाषा-साहित्य**—इस शाखा में केवल एक रचना उल्लेखनीय है : वह है शिवनन्दनसहाय सं० 'कविता-कुसुम' (१६०६), जिसमें शेली, टेनीसन आदि कुछ अंग्रेज़ी कवियों की सुन्दर कविताओं का अनुवाद-सङ्कलन है ।

उपर्युक्त निरीक्षण से ज्ञात होगा कि प्रस्तुत काल में विभाषा साहित्य का अध्ययन पिछड़ा रहा; जो तत्परता इस युग के लेखकों और साहित्यकारों ने विभाषा साहित्य के अनुवाद में दिखाई वह उसके अध्य-यन में नहीं देख पड़ी । इस विषय में भी उनकी मध्ययुगीन रुचि प्रकट है ।

३. वर्तमान युग का साहित्य

काव्य

इस काल के काव्य-साहित्य को अध्ययन और निरीक्षण के लिए हम निम्नलिखित शीर्षकों में बाँट सकते हैं : १. राम-चरित्र, २. कृष्ण-चरित्र, ३. शिव-चरित्र, ४. पौराणिक उपाख्यान, ५. संत-चरित्र, ६. पौराणिक महाकाव्य, ७. भक्ति-स्तुति, ८. ऐतिहासिक खंडकाव्य, ९. ऐतिहासिक महाकाव्य, १०. मानव-चरित्र, ११. प्रेमोपाख्यान, १२. भावानुभाव, १३. सामयिक तथा राष्ट्रीय, १४. प्रगतिशील, १५. सामाजिक, १६. विनोद-व्यंग्य, १७. प्रकृति-चित्रण, १८. रहस्य-वाद का काव्य।

१. राम-चरित्र—आलोच्यकाल के रामचरित्र-काव्यों में से प्रबंध-परंपरा पर लिखे हुए पहले काव्य जानकीप्रसाद महंत के 'राम-रसायन' (१९११) तथा प्रयागनारायण मिश्र के 'राघव-गीत' (१९११) हैं, जिनमें राम की कथा विविध छंदों तथा गीतों में कही गई है। 'राम-चरणांक माला' (१९१२) एक छोटी रचना केवल राम के चरणों की प्रशंसा में लिखी हुई लाला भगवानदीन की मिलती है। और, रामकथा के प्रमुख चरित्रों का एक चित्रण रामचरित उपाध्याय की 'रामचरित चंद्रिका' (१९१९) में मिलता है। इसी काल में अर्द्धशिक्षित समाज में विशेष समादृत राधेश्याम के 'रामायण' (१९१९-) की भी रचना हुई। रामचरित उपाध्याय का एक दूसरा और अधिक महत्वपूर्ण रामचरित-काव्य 'रामचरित-चिंतामणि' (१९२०) भी इसी समय की रचना है। इसमें उन्होंने राम की कथा भक्ति के दृष्टिकोण से नहीं वरन् राजनीति के दृष्टिकोण से उपस्थित करने का प्रयत्न किया है। किंतु रामचरित पर सबसे सुंदर रचनाएँ मैथिलीशरण गुप्त की हैं। राम के अतिमानुषिक और अलौकिक कृत्यों का चित्रण न करते हुए भी इन रचनाओं में गुप्त

जी ने उनके प्रति अपनी ईश्वरत्व की भावना का पूर्ण निर्वाह किया है। 'पंचवटी' (१९२५) उनकी इस प्रकार की पहली उल्लेखनीय कृति है। गुप्तजी की रामचरित-संबंधी सर्वोत्कृष्ट कृति 'साकेत' (१९३२) है। इस रचना में उनकी एक युग की साधना निहित है—'साकेत' के कुछ अंश तो कदाचित् इस युग के प्रारंभ के हैं। उर्म्मिला के उपेक्षित चरित्र को अपनी इस कृति में गुप्त जी ने एक कलापूर्ण ढंग से उपस्थित किया है। 'साकेत' के थोड़े ही पीछे की एक रचना शिवरत्न शुक्ल की 'भरत-भक्ति' (१९३२) है, जिसमें भरत के रामभक्ति-पूर्ण चरित्र को प्रमुख रूप से चित्रित करने का यत्न किया गया है। अयोध्या-सिंह उपाध्याय के 'वैदेही वनवास' (१९३९) का विषय स्वतः स्पष्ट है। बलदेवप्रसाद मिश्र का 'कौशल-किशोर' (१९३५) तथा रामनाथ 'जोतिषी' का 'रामचन्द्रोदय' (१९३७) इस प्रणाली की कुछ अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। किंतु, इस युग में रामचरित-संबंधी महत्वपूर्ण रचनाएँ कम ही दिखाई पड़ीं। क्या कवि-प्रतिभा के प्रयोग के लिए रामचरित में कोई नवीन दृष्टिकोण नहीं रहा? या समय के साथ ही साथ कवियों और पाठकों की रुचि भी बदल गई? फिर भी राम-साहित्य में इस युग का योग नगण्य नहीं है, यह स्पष्ट होगा। राम के शृंगारपूर्ण चित्रण की वह प्रवृत्ति जो पिछले युग में दिखलाई पड़ी थी इस युग में प्रायः तिरोभूत ही रही।

२. कृष्ण-चरित्र—कृष्णचरित-संबंधी एक अत्यंत महत्वपूर्ण रचना आलोच्यकाल के प्रारंभ में ही हमारे सामने आती है: वह है अयोध्यासिंह उपाध्याय कृत 'प्रियप्रवास' (१९१४) महाकाव्य, जिसका विषय है लोकनायक कृष्ण का मथुरा-प्रवास। कृष्ण का चरित्र लेखक ने एक आदर्श देश-सेवी और समाज के नेता के रूप में उपस्थित किया है, और उनके अतिमानुषिक कार्यों को भी मानवीय-तल पर लाकर उन्हें एक स्वाभाविक रूप दिया है। इस प्रयास में महाकवि को यथेष्ट सफलता मिली है। 'श्रीमद्भागवत' के प्रसिद्ध 'गोपिका-गीत' के आधार पर इसी समय एक सुन्दर रचना हुई, वह है श्रीधर पाठक कृत 'गोपिका-

गीत' (१९१६)। इसके अनंतर बहुत दिनों तक देवीप्रसाद 'प्रीतम' के 'कृष्ण-जन्मोत्सव' (१९२२) के अतिरिक्त कृष्ण-साहित्य में कोई उल्लेखनीय रचना नहीं हुई। लगभग पन्द्रह वर्ष बाद जगन्नाथदास 'रत्नाकर' का 'उद्धव-शतक' (१९३१) प्रकाशित हुआ, जिसकी रचना कवि ने बहुत कुछ रीति-शैली पर किन्तु अत्यंत सहृदयता के साथ की है। इसी समय कृष्ण-रुक्मिणी-विवाह पर कृष्ण के पौराणिक चरित्र का अनुगमन करते हुए नन्दकिशोर झा ने 'प्रिया-मिलन' (१९३२) की रचना की, और राधावल्लभीय संप्रदाय की उपासना-प्रणाली पर दिव्य दंपति की निकुंज लीलाओं के संबंध में युगल वल्लभ महाराज ने 'हित-युगल अष्टयाम' (१९३५) की रचना की। किंतु, ये सभी रचनाएँ केवल गोपी-वल्लभ कृष्ण-संबंधी हैं; पौराणिक महापुरुष कृष्ण से संबंध रखनेवाली इस काल की एकमात्र सत्कृति मैथिलीशरण गुप्त का 'द्वापर' (१९३६) है। महाकवि की प्रतिभा इस रचना में यथेष्ट रूप में दिखलाई पड़ती है:. 'द्वापर' में भी उसने चरित्रों की सुंदर सृष्टि की है। कृष्ण-चरित्र पिछले युग तक कविता का एक सर्वप्रमुख विषय रहा है, किंतु उसमें हमें एक बालक कृष्ण, एक ईश्वर कृष्ण, या एक विलासप्रिय नायक कृष्ण की मनोवैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि ही मिली है। मानव कृष्ण और महापुरुष कृष्ण इसी युग की देन हैं, इसलिये इस क्षेत्र में भी प्रस्तुत युग का योग असाधारण है।

३ शिव-चरित्र—शिव-शक्ति-चरित-संबंधी काव्य इस युग में भी निर्मित होने से रहा। केवल एक रचना ऐसी मिलती है जिसका उल्लेख किया जा सकता है: वह है मैथिलीशरण गुप्त की 'शक्ति' (१९२८), जिसमें 'दुर्गा-सप्तशती' की कथा के आधार पर शक्ति का जन्म और उसके द्वारा महिषासुर के वध की कथा कही गई है। इस अकेली रचना में भी विशेष काव्यत्व की अवतारणा नहीं हो सकी है।

४. पौराणिक उपाख्यान—पौराणिक उपाख्यानों को लेकर भी इस काल में कई सुंदर कृतियों की रचना हुई। मैथिलीशरण गुप्त का 'जयद्रथ-वध' (१९१०) पथ-प्रदर्शक हुआ। सुप्रसिद्ध हरिश्चंद्र के

सत्यपालन की कथा लेकर कृष्णदत्त शर्मा ने 'हरिश्चंद्रोपाख्यान' (१६१४) की रचना की। शिवदास गुप्त ने 'महाभारत' की एक अन्य कथा लेकर 'कीचक-वध' (१६२१) लिखा। और, अम्बरीष की पुराण-प्रसिद्ध कथा को लेकर इसी समय रामनारायण चतुर्वेदी ने 'अम्बरीष' (१६-२१) की रचना थी। मैथिलीशरण गुप्त की एक अन्य रचना 'शकुन्तला' (१६२३ चतुर्थ), 'महाभारत' के शकुंतलोपाख्यान तथा कालिदास के 'शाकुंतल' के आधार पर प्रस्तुत हुई। जगदीशनारायण तिवारी ने 'महाभारत' की कथा लेकर 'दुर्योधन-वध' (१६२६) की रचना की। और, पुनः मैथिलीशरण गुप्त ने 'महाभारत' की तीन कथाओं को लेकर 'त्रिपथगा' के रूप में 'सैरिंध्री' (१६२८), 'बकसंहार' (१६२८) तथा 'वनवैभव' (१६२८) की रचना की। किंतु इस प्रणाली में इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण रचना इसी समय 'महाभारत' की एक और कथा को लेकर हुई : वह है जगन्नाथदास 'रत्नाकर' कृत 'गङ्गावतरण' (१६२८)। इसके बाद पौराणिक उपाख्यानों की परंपरा कुछ रुक सी गई, और सात-आठ वर्षों के बाद भी एक ही रचना ऐसी प्रकाश में आई जो महत्वपूर्ण कही जा सकती है:—वह है वचनेश मिश्र रचित 'शबरी' (१६३६), जो ब्रजभाषा में है। मैथिलीशरण गुप्त कृत 'नहुष' (१६४०) इस परंपरा की सबसे आधुनिक रचनाओं में से है ; इसकी रचना भी 'साकेत' और उसके इधर की कवि की अन्य रचनाओं की भाँति सुन्दर हुई है। पिछले युग के साहित्य का निरीक्षण करते हुए हमने देखा था कि पौराणिक उपाख्यान-परक रचनाएँ मुख्यतः राम-कुल तथा कृष्ण-कुल की ही थीं, महाभारत-कुल की प्रायः नगण्य थीं, इस युग में प्राधान्य महाभारत-कुल की रचनाओं का हुआ। और, यदि कला की दृष्टि से देखा जावे तो ज्ञात होगा कि इस युग की रचनाओं में खंड-काव्य लेखन की कला भली-भाँति विकसित हुई।

५. संत-चरित्र—इस युग में भी संतचरित के नाते केवल तीन उल्लेखनीय रचनाएँ मिलती हैं : एक है ठाकुर पुगारानाइ (?) कृत "अमर कथा' (१६१२), जिसमें भक्त राजकुमार अमर की कथा कही

गई है। किन्तु यह रचना छोटी नहीं है : ३१४ पृष्ठों में समाप्त हुई है। दूसरी रचना नन्हेंलाल वर्मा कृत 'श्री नामदेव वंशावली' (१६२६) है, जिसमें भक्त नामदेव का जीवन-वृत्त है। और, तीसरी है सूर्यकांत त्रिपाठी कृत 'तुलसीदास' (१६३६), जो एक अनुपम कृति है, और नायक की महानता से प्रेरित होकर स्वाभाविक स्फूर्ति के साथ लिखी गई है।

६. पौराणिक महाकाव्य—पौराणिक आख्यानों की सामग्री लेकर रचे गए बड़े काव्यों की एक नव-विकसित परंपरा भी इस युग में हमारे सामने आती है। प्रारंभ में यह पौराणिक उपन्यासों की समानान्तर सी ज्ञात होती है, किंतु आगे इस परंपरा में कुछ बड़ी मौलिक और विचारपूर्ण रचनाएँ हमें मिलती हैं। इस परंपरा की पहली उल्लेख-योग्य कृतियाँ हैं शहज़ाद सिंह कृत 'विश्वामित्र' (१६२५) तथा प्रतापनारायण कृत 'नल-नरेश' (१६३३); और बाद की हैं जयशंकर 'प्रसाद' कृत 'कामायनी' (१६३७), हरदयालुसिंह कृत 'दैत्यवंश' (१६४०), जो ब्रजभाषा में है, तथा सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन कृत 'चिंता' (१६४२)। 'विश्वामित्र' और 'नल-नरेश' कथानक-प्रधान रचनाएँ हैं, और बहुत कुछ इतिहासों की भाँति हैं, 'कामायनी' में मानव जाति के विकास का इतिहास और उसकी सभ्यता का आदर्श उपस्थित करने का यत्न किया गया है, और वास्तव में वह मानव-जीवन की गंभीर आलोचना वाला एक उत्कृष्ट महाकाव्य है। 'दैत्यवंश' में ऐसी जीवन की कोई गंभीर समस्याएँ नहीं ज्ञात होतीं। 'चिंता' में लिंग-विकास—प्राणिमात्र के स्त्री और पुरुष-रूपों में विभाजन की समस्या—पर विचार किया गया है। आशा है कि इस नवीन परंपरा में यथेष्ट वृद्धि होगी।

७. भक्ति-स्तुति—भक्ति तथा स्तुति-संबंधी साहित्य इस काल में नगण्य कोटि का रहा। कृष्णप्यारी के 'प्रेमरत्न' (१६११), प्रभु-सेवक के 'विनय-सरोज' (१६१२) तथा कृष्णदेव नारायण सिंह के 'कनक-मंजरी' (१६१४) का उल्लेख पुराने ढंग की, और पं० शिवाधार पांडेय के 'पदार्पण' का उल्लेख नए ढंग की भक्ति-रसात्मक रचनाओं में

किया जा सकता है। पर इनमें काव्य बहुत साधारण कोटि का है। १९१५ के बाद तो जैसे कवि-प्रतिभा का प्रयोग इस परंपरा के काव्य के लिए हुआ ही नहीं। इसका स्थान कदाचित् रहस्यवाद की रचनाओं ने ले लिया।

८. ऐतिहासिक खंडकाव्य—पौराणिक उपाख्यानों पर आधारित खंडकाव्य परंपरा के साथ उसी प्रकार की एक नवीन परंपरा भी इस युग में विकसित हुई। इसका आधार था इतिहास। आरंभ मध्ययुग के इतिहास से हुआ। रामनारायण ठाकुर की 'हल्दीघाटी का युद्ध' (१९०९) इस परंपरा की पहली रचना कही जा सकती है। इसका विषय महाराणा प्रताप का स्वतंत्रता के लिए सङ्घर्ष था। जयशंकर 'प्रसाद' की प्रारंभिक रचनाओं में से भी एक इसी परंपरा में आती है: उनके 'प्रेम-राज्य' (१९१०) में १५६५ के प्रसिद्ध तालीकोट के युद्ध के अनंतर की विजयनगर राजवंश की दशा का वर्णन हुआ है। टॉड राजस्थान के एक कथानक के आधार पर इसी समय मैथिलीशरण गुप्त की भी एक प्रारंभिक रचना प्रकाश में आई: वह थी 'रंग में भंग' (१९१०), जिसमें एक हाड़ा सरदार चित्तौर में बूँदी के एक नक़ली क़िले की रक्षा में एक सेना के साथ लड़ते-लड़ते वीर-गति प्राप्त करता है। इसी काल में प्रसिद्ध इतिहासज्ञ देवीप्रसाद मुंसिफ़ ने बुंदेलखंड के इतिहास से सत्रह चित्र 'बुंदेलखंड का अलबम' (१९११) में उपस्थित किए। हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध पर पुनः एक खंडकाव्य की रचना हुई: हरिदास माणिक कृत 'हल्दीघाटी की लड़ाई' (१९१२); जयशंकर 'प्रसाद' के 'महाराणा का महत्व' (१९१४) का विषय भी वैसा ही है। सियारामशरण गुप्त ने 'मौर्य-विजय' (१९१४) में सिल्यूकस के विरुद्ध चंद्रगुप्त मौर्य के इतिहास-प्रसिद्ध सफल युद्ध का कवित्वपूर्ण वर्णन किया। लोचनप्रसाद पांडेय की 'मेवाड़-गाथा' (१९१४) की भी गणना इसी परंपरा के साहित्य में की जा सकती है। श्रीनारायण चतुर्वेदी के 'चारण' (१९१४) में कई कथात्मक कविताएँ संकलित हुई हैं। एक रचना गोकुलचंद्र शर्मा की भी प्रताप के स्वतंत्रता-युद्ध को विषय

बनाकर की हुई 'प्रणवीर-प्रताप' (१९१५) नाम की है। 'औरङ्गज़ेब की नंगी तलवार' (१९१९) में जगदीशप्रसाद तिवारी ने हिंदू-प्रजा के ऊपर औरंगज़ेब के अत्याचारों को अपनी रचना का विषय बनाया है। लाला भगवानदीन ने 'वीर-पंचरत्न' (१९२०) में तो भारतीय इतिहास के अनेक वीरोचित चरित्रों की अवतारणा की है। जलालुद्दीन के चित्तौर पर आक्रमण की कथा लेकर एक रचना लोकनाथ सिलाकारी की 'पद्मिनी' (१९२३) भी इसी काल की है। 'पत्रावली' (१९२३ द्वितीय) में मैथिलीशरण गुप्त ने अनेक ऐतिहासिक महत्व के पत्रों का समावेश काव्य-रूप में किया है। सुरेन्द्रनाथ तिवारी की 'वीराङ्गना तारा' (१९२४) एक अन्य ऐतिहासिक वीरचरित्र को लेकर लिखी गई है। रामकुमार वर्मा की भी एक प्रारंभिक रचना ऐतिहासिक आधार लेकर की गई है : वह है 'वीर हम्मीर' (१९२४), जिसमें अलाउद्दीन के चित्तौर वाले आक्रमण का विषय चुना गया है। श्रीनाथ सिंह की 'पद्मिनी' (१९२५) का विषय भी उपर्युक्त 'पद्मिनी' का ही है। दिवाकर प्रसाद वर्मा का 'वसुमती' (१९२५) इसी काल का लिखा हुआ एक ऐतिहासिक गीत है। सुभद्राकुमारी चौहान की प्रसिद्ध 'झाँसी की रानी' (१९२६) आधुनिक युग के इतिहास को लेकर लिखी गई है। मैथिली-शरण गुप्त ने 'गुरुकुल' (१९२९) में गुरुनानक के वंशजों के धार्मिक बलिदान की कथाएँ कही हैं। अपने 'विकट भट' (१९२८) में गुप्त जी ने पुन: राजस्थान के इतिहास के पृष्ठ उलटे हैं; एक राजपूत नायक के वीर-दर्पपूर्ण कथनों का उल्लेख करते हुए कवि ने इसमें नाटकीय काव्य की सृष्टि की है। रामकुमार वर्मा की एक अन्य रचना 'चित्तौर की चिता' (१९२८) भी इस प्रसंग में उल्लेखनीय है। इसमें राणा संग्रामसिंह की वीरता और महारानी करुणा के जौहर का वर्णन किया गया है। १९२८ के अनंतर कुछ वर्षों के लिए इस धारा में शिथिलता आ जाती है। इधर की उल्लेखनीय कृतियों में से मुंशी अजमेरी का 'मधुकरशाह' (१९३८) है, जिसमें उन्होंने उक्त ओरछा-नरेश का इतिहास-प्रसिद्ध व्यक्तित्व उपस्थित करने का यत्न किया है। रामकुमार वर्मा का 'जौहर'

(१९३९) क्षत्राणियों के वीरत्वपूर्ण आत्म-बलिदान का चित्रण करता है। राजेश्वर गुरु की 'दुर्गावती' (१९४०) में गढ़मंडला की उक्त क्षत्राणी का वीर चरित्र अंकित हुआ है। श्यामनारायण पांडेय की 'हल्दीघाटी' (१९४१) महाराणा प्रताप की वीरता के संबंध की एक सफल कृति है। आलोच्यकाल में इस परंपरा की सबसे आधुनिक कृति सोहनलाल द्विवेदी की 'वासवदत्ता' (१९४२) है, जिसमें उन्होंने अपनी कई कथात्मक कविताओं का संकलन किया है। ऐतिहासिक काव्यों की यह नवीन परंपरा कितनी समृद्ध है! इस परंपरा के निर्माण के लिए हम मध्ययुग के राजपूत वीरों की ओर क्यों झुके? इसका कारण है इन राजपूतों में चरित्र की एक बड़ी विशेषता जिसे 'औदात्य' शब्द से इंगित किया जा सकता है। पर यह 'औदात्य' व्यक्तिगत नहीं था, एक प्रकार से यही उनकी जातीयता थी। अपने स्वत्व के लिए, अपनी स्वतंत्रता के लिए, माँ-बहिनों की मान-मर्यादा के लिए, शरणार्थियों की रक्षा के लिए, अपनी बात के लिए, अपनी आन के लिए, अपने स्वामी के लिए मर मिटना राजपूतों के लिए एक सामान्य बात थी। पिछले युग तक हम ऐसी गहरी विलासिता की नींद में पड़े थे कि इन वीरों की याद भी आने देना नहीं चाहते थे। अपनी सांस्कृतिक चेतना के इस नवयुग में ही हमने उनकी स्मृतियाँ सजग कीं, और उन स्मृतियों से साहित्य को समृद्ध किया।

९. **ऐतिहासिक महाकाव्य**—इन छोटे प्रयासों के साथ-साथ इस काल में कुछ मिलते-जुलते बड़े प्रयोग भी हुए। प्रारंभ में तो इतनी क्षमता का अनुभव हमने नहीं किया, किंतु युग-विकास के साथ हमने इधर भी क़दम बढ़ाया। बुद्ध का चरित्र अनेक ग्रंथों का विषय बना। रामचन्द्र शुक्ल का 'बुद्ध-चरित' (१९२२) इस प्रकार का पहला उल्लेखनीय प्रयास कहा जा सकता है, यद्यपि यह अनेक अंशों में 'लाइट ऑव् एशिया' के आधार पर लिखा गया है। मैथिलीशरण गुप्त का 'अनघ' (१९२५) भी एक बौद्ध कथा को लेकर लिखा गया है। उदयशंकर भट्ट का 'तक्षशिला' (१९३१) इस परंपरा की एक अन्य

उल्लेखनीय रचना है। मैथिलीशरण गुप्त का 'यशोधरा' (१९३३) चरित्र-चित्रण की दृष्टि से तो अपूर्व है। गुरुभक्तसिंह की 'नूरजहाँ' (१९३५), मैथिलीशरण गुप्त का 'सिद्धराज' (१९३६) तथा अनूप शर्मा का 'सिद्धार्थ' (१९३७) इस परंपरा के अन्य उल्लेखनीय प्रयास हैं।

१०. मानव-चरित्र—मानव-काव्य में लेखक के किसी निकट संबंध की प्रेरणा से की हुई रचनाओं में से गिरिजादत्त शुक्ल की 'स्मृति' (१९२३) एक मित्र के निधन पर लिखी गई है, और भगवतीलाल श्रीवास्तव की 'अनंत अतिथि' (१९३६) वात्सल्य की प्रेरणा के कारण। अमरनाथ कपूर की एक रचना 'पत्र-दूत' (१९४१) में जेल से लिखे गए उनके पत्रों का संग्रह है। चित्त की उदात्त वृत्तियों से प्रेरित होकर लिखे गए मानव-काव्य-क्षेत्र में एक नवीन स्फूर्ति के दर्शन इस काल में होने लगे हैं: हमने आधुनिक राष्ट्रीय वीरों और महापुरुषों के चरित्र-गान का आरंभ किया है। इनके बलिदानों की कथाएँ लिखने का समय अभी नहीं आया है, किन्तु स्वतंत्र भारत में निस्संदेह यह उसी प्रकार हमारी कला के विषय होंगे जिस प्रकार इस नवयुग में मध्य-काल के राजपूत वीर हुए हैं। इस प्रकार की इनी-गिनी उल्लेखनीय रचनाएँ हैं श्रीधर पाठक कृत 'गोखले-गुणाष्टक' (१९१५) तथा 'गोखले-प्रशस्ति' (१९१५), गोकुलचंद शर्मा कृत 'गांधी-गौरव' (१९१९) और सियारामशरण गुप्त कृत 'बापू' (१९३८), जिनके विषय हैं देशभक्त गोखले और लोकनायक महात्मा गांधी।

११. प्रेमोपाख्यान—एक और नवीन काव्य-परंपरा प्रेमोपाख्यान-काव्यों की है। इनकी तुलना किसी-किसी बात में सूफ़ी कवियों के प्रेमाख्यान-काव्यों से की जा सकती है। जयशंकर 'प्रसाद' का 'प्रेम-पथिक' (१९१३) इस प्रकार की पहली रचना है, और हरिप्रसाद द्विवेदी 'वियोगी हरि' कृत 'प्रेम-पथिक' (१९१८) इस प्रकार की दूसरी। रामनरेश त्रिपाठी के 'मिलन' (१९१८) में ऐतिहासिक आधार लेते हुए वैयक्तिक प्रेम का राष्ट्रीय प्रेम के साथ समन्वय किया गया है। इटली के मिलान नगर पर आस्ट्रियन अत्याचार और उससे मुक्ति की कथा के बीच

में इस प्रेम की कथा का विकास किया गया है। उनकी एक दूसरी रचना 'पथिक' (१६२०) में भी वैयक्तिक प्रेम और राष्ट्र-प्रेम का उसी प्रकार सामंजस्य उपस्थित करने का यत्न किया गया है। उनकी एक तीसरी रचना 'स्वप्न' (१६२६) में इन दोनों प्रकार के भावों में अपूर्व संघर्ष चित्रित किया गया है। सुमित्रानन्दन पंत की 'ग्रंथि' (१६३०) तथा रामकुमार वर्मा की 'निशीथ' (१६३३) इस शैली की आधुनिकतम रचनाएँ है। इधर जैसे यह परंपरा कुछ शिथिल सी हो गई है।

१२. भावानुभाव—उपर्युक्त से एक मिलती-जुलती परंपरा भावानुभाव काव्यों की है। मन्नन द्विवेदी का 'प्रेम' (१६१५ , सुमित्रानंदन पंत का 'उछ्वास' (१६२२) और जयशंकर 'प्रसाद' का 'आँसू' (१६२६) इस परंपरा की प्रारंभिक कृतियों में प्रमुख हैं। रामकुमार वर्मा का 'अभिशाप' (१६३०) हरिकृष्ण प्रेमी की 'आँखों में' (१६३०), विश्वनाथ प्रसाद के 'मोती के दाने' [आँसू] (१६३४) तथा गौरीशंकर झा की 'स्मृति' (१६३४) अन्य उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। इन समस्त रचनाओं में एक अमूर्त विषय लेकर कल्पना तथा भावुकता के बल पर उसे मूर्त की भाँति अंकित करने का यत्न किया गया है। यह परंपरा अभी थोड़े दिन की है, फिर भी इसमें विकास का क्षेत्र विशेष नहीं ज्ञात होता, इसलिए इसके भविष्य के बारे में यदि संदेह किया जावे तो कदाचित् अनुचित न होगा।

१३. सामयिक तथा राष्ट्रीय—सामयिक तथा राष्ट्रीय प्रबंध-काव्य-परंपरा की एक सर्वोत्कृष्ट और सबसे अधिक लोकप्रिय रचना मैथिलीशरण गुप्त की 'भारतभारती' (१६१२) इस युग के प्रारंभ में ही आती है। इसमें भारत के महान अतीत तथा पतनोन्मुख वर्त्तमान के मार्मिक चित्र उपस्थित किए गये हैं। उन्हीं का 'किसान' (१६१७) भारत के कृषक वर्ग की दयनीय दशा का चित्रण करता है। गयाप्रसाद शुक्ल के 'कृषक-क्रंदन' (१६१६) का भी विषय वही है। 'भारतभक्ति' (१६१६) नाम की रामचरित उपाध्याय की भी एक रचना में भारत के महान भूत तथा अवनत वर्तमान का वर्णन है, किंतु उसमें भविष्य की

ओर आशा की दृष्टि से देखा गया है। सियारामशरण गुप्त का 'अनाथ' (१९२२ एक अनाथ की कथा कहता है। किशनचंद 'ज़ेबा' का 'हमारा देश' (१९२२) काव्य की दृष्टि से उतना नहीं जितना प्रचार की दृष्टि से लिखा गया है। आनंदिप्रसाद श्रीवास्तव का 'कुर्बानी' (१९२३) हिन्दू-मुस्लिम एकता की समस्या को लेकर लिखा गया है। मोहनलाल महतो की एक रचना 'अछूत' (१९२५) अछूतों की समस्या लेकर लिखी गई है। सियारामशरण गुप्त की 'आर्द्रा' (१९२८) में देश तथा समाज से संबंध रखने वाली छोटी-छोटी करुण कहानियाँ हैं। इस परंपरा की सबसे आधुनिक कृति सोमनाथ शर्मा की 'वर्तमान भारत' (१९३०) कही जा सकती है, जिसका विषय स्वतः स्पष्ट है।

सामयिक तथा राष्ट्रीय मुक्तकों की प्राचीन परंपरा में इस काल के प्रारंभ में हमें माधव शुक्ल की 'भारत गीताञ्जलि' (१९१४), मिश्रबंधु की 'भारत-विनय' (१९१६) तथा श्रीधर पाठक की 'भारत-गीत' (१९१८) नामक रचनाएँ मिलती हैं। बादकी रचनाओं में उल्लेखनीय हैं गयाप्रसाद शुक्ल की 'त्रिशूल-तरङ्ग' (१९१९), 'राष्ट्रीय मंत्र' (१९२१) तथा 'राष्ट्रीय वीणा' (१९२२), ईश्वरीप्रसाद शर्मा की 'मातृवन्दना' [१९२० ?], हनुमंत प्रसाद जोशी की 'हृदयवीणा' (१९१९), रामचरित उपाध्याय की 'राष्ट्र भारती' (१९२१) तथा माधव शुक्ल की 'जाग्रत भारत' (१९२२)। इन बाद की रचनाओं का सर्वप्रमुख प्रेरक था महात्मा गाँधी द्वारा संचालित प्रथम असहयोग आंदोलन। उनके द्वारा संचालित दूसरे आंदोलन ने इस प्रकार के मुक्तकों के लिए वैसी प्रेरणा नहीं प्रदान की। केवल एक रचना इस दूसरी बार के आंदोलन के समय की उल्लेखनीय है : वह है हरिकृष्ण प्रेमी कृत 'स्वर्णविहान' (१९३०), किंतु यह पहले वाली रचनाओं से कुछ अधिक कलापूर्ण है।

१४. प्रगतिशील—इधर कुछ दिनों से सामयिक तथा राष्ट्रीय कविताधारा का विकास एक नई ओर हो रहा है। सुमित्रानंदन पंत का 'युगान्त' (१९३७) इस प्रकार की रचनाओं में कदाचित् सबके पहले आता है। उन की 'युगवाणी' (१९३९) और पुनः उनकी 'ग्राम्या'

(१९४०) इस नवीन परंपरा की अन्य प्रारंभिक कृतियाँ हैं। इन समस्त कृतियों में पहले की कृतियों की अपेक्षा एक बड़ी विशेषता है : वह यह है कि राष्ट्रीयता कविता का विषय नहीं है वरन् कविता के संबंध में दृष्टिकोण ही बदला हुआ है ; कविता राष्ट्र और मानव का प्रतीक बन गई है, और राष्ट्रीयता और मानवता ही कविता बनकर सामने आई है। श्रीमन्नारायण अग्रवाल के 'रोटी का राग' (१९३७) और 'मानव' (१९४०) में संकलित प्रगतिवाद की कविताएँ तथा सियाराम-शरण गुप्त का 'उन्मुक्त' (१९४१), जिसमें जीवन में अहिंसा की आवश्यकता का प्रतिपादन किया गया है, भी इसी कोटि में रक्खी जा सकती हैं। इस नवीन परंपरा का भविष्य उज्ज्वल ज्ञात होता है।

१५. सामाजिक—सामाजिक रचनाओं की परंपरा इस काल में अधिकाधिक शिथिल होती गई। प्रारंभ में नाथूराम 'शङ्कर' शर्मा के 'शङ्कर-सरोज' (१९१३ द्वितीय) तथा 'अनुरागरत्न' (१९१३) में आर्य-समाज की कलाविहीन रचनाएँ मिलती हैं। कुछ और आगे बढ़ने पर अमीरअली 'मीर' की एक रचना 'बूढ़े का ब्याह' (१९१४) में सामान्य कला के दर्शन होते हैं। कला की दृष्टि से अपेक्षाकृत कुछ अधिक सफल रामचरित उपाध्याय की 'सूक्ति-मुक्तावली' (१९१५), तथा अयोध्यासिंह उपाध्याय कृत 'कर्मवीर' (१९१६) है। गिरिजादत्त शुक्ल के 'रसालबन' (१९२०) की गणना भी—जिसमें कतिपय सामाजिक कहानियाँ दी हुई हैं--इसी परंपरा में की जा सकती है।

१६. विनोद-व्यंग्य—विनोद और व्यंग्यपूर्ण रचनाएँ भी अधिक नहीं मिलती, पर वे पिछले युग की रचनाओं की अपेक्षा प्रायः अधिक कलापूर्ण हैं। [श्री नारायण चतुर्वेदी ?] का 'चोंच महाकाव्य' (१९१७), बलभद्र दीक्षित का 'चकल्लस' (१९३३), 'बेढब बनारसी' की 'बेढब की बहक' (१९३९) तथा [श्रीनारायण चतुर्वेदी ?] की 'छेड़छाड़' (१९४२) इसी धारा की रचनाएँ हैं।

१७. प्रकृति-चित्रण—पिछले युग की ऋतु-वर्णन की परंपरा इस युग के प्रारंभ तक चलती रही। उसकी तीन उल्लेखनीय रचनाएँ

हैं प्रयागनारायण मिश्र कृत 'ऋतु-काव्य' (१९१०), अयोध्यासिंह उपाध्याय कृत 'ऋतु-मुकुर' (१९१७) तथा श्रीधर पाठक का 'वनाष्टक' (१९१२)। किंतु, काव्यकला के विकास के साथ-साथ प्रकृति-वर्णन कुछ नवीनता के साथ हमारे सामने आया। जगन्नारायण देव शर्मा के 'मधुप' (१९२३) में मधुकर को संबोधित करके कही गई उनकी कविताओं का संकलन है। विद्याभूषण विभु का 'चित्रकूट-चित्रण' (१९२५) भी प्रकृति-चित्रण का सुंदर काव्य है। श्यामाकांत पाठक की 'उषा' (१९२५) और दरब खाँ के 'प्रकृति-सौन्दर्य' (१९२९) के विषय स्पष्ट ही हैं। किंतु यह परंपरा नितांत गतिहीन दिखाई पड़ रही है। कोई भी महत्वपूर्ण रचना १९२९ के अनंतर नहीं दिखाई पड़ी।

१८. **रहस्यवाद का काव्य**—नवयुग की सबसे अधिक विकसित परंपरा स्फुट काव्य की है। प्रारंभ के आठ-सात वर्षों तक यह परंपरा यद्यपि अनेक अंशों में पिछले युग के स्फुट मुक्तकों की प्रवृत्तियों को लिए हुई चलती रही, पर इससे वह असंतुष्ट सी ही रही, और इसने शीघ्र अपना नया मार्ग खोज निकाला। इस नए पथ की सब से बड़ी विशेषता एक काल्पनिक सर्वचेतनवाद थी, और चेतना की वह कल्पना प्रायः प्रणय-व्यापारों के रूप में हुई। समस्त सृष्टि को इस परंपरा के कवियों ने सचेतन अनुभव करने का प्रयास किया, यद्यपि उनका यह अनुभव अधिकांश उनके अपने प्रेम का प्रतिबिंब मात्र था। उनके चित्त की वृत्तियाँ जितनी ही व्यापक या जितनी ही संकुचित थीं—उनका प्रेम जितना ही दिव्य अथवा जितना ही वासनापूर्ण था—उसी के अनुरूप उन्होंने सृष्टि के समस्त व्यापारों में उस चेतना का दर्शन किया। इस दिशा में और आगे बढ़े तो उन्होंने अमूर्त पदार्थों में भी उसी चेतना का आरोप किया : उनकी कल्पना ने मानसिक तत्त्वों और व्यापारों को भी एक सजीवता प्रदान कर दी। अभिलाषाएँ करवट बदलने लगीं, व्यथा सोने और जागने लगी, 'अश्रु में जीता सिसकता गान' मिलने लगा। पर यहाँ तक 'छायावाद' का क्षेत्र था। 'रहस्यवाद' के क्षेत्र में पहुँचने पर उन्होंने उस व्यापक अमूर्त सत्ता को मूर्त्त मानव का रूप

दिया जो समस्त चेतना के मूल में मानी जाती है, यद्यपि यह कोई नया देश नहीं था, पर मार्ग नया अवश्य था। वह पुराना सूफ़ी-साधना या भक्ति का मार्ग नहीं था, मार्ग था 'छायावाद' का ही। जब उन्होंने समस्त अमूर्त पदार्थों को मूर्त्त रूप देना चाहा तब यह अमूर्त सत्ता कैसे बच सकती थी ?

भाषा में तो इस नई प्रवृत्ति के कारण एक नया जीवन आ गया। इस काल्पनिक सर्वचेतनवाद ने धीरे-धीरे भाषा में वह विशेषता उत्पन्न कर दी जिसे 'लाक्षणिकता' कहा जाता है। इस भाषा-शैली का सहयोग पाकर अमूर्त जगत् और भी मूर्त्त तथा निर्जीव सृष्टि और भी सजीव हो उठी।

इस परंपरा की एक और विशेषता है 'वेदनावाद', और इस दृष्टि से भी यह काव्य-परंपरा महत्वपूर्ण है। हमारी सारी परवशता, विवशता, और अवशता ने एक गहरी छाया हमारे जीवन पर डाली है। जब इस जीवन में दुःख और वेदना के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं, तो हम उसी से प्रेम क्यों न करें ? उसी को अपनी सम्पत्ति क्यों न समझें ? हाँ, कभी-कभी हमने सुख के भी गीत गाये हैं, परिवर्तन और क्रांति के भी आलाप भरे हैं, किंतु कदाचित् उन क्षणों में हमें अपनी वास्तविकता का स्मरण न था। हमारे सच्चे गान तो वे ही हैं जिनमें हमारा मूक रुदन हिलोरें मार रहा है। आखिर हम खुल कर रो भी तो नहीं सकते !

युग के पूर्वार्द्ध में इस प्रकार की कविता का सूत्रपात भर हुआ, किंतु, उत्तरार्द्ध में इस वर्ग की कविता-पुस्तकों का इतना बाहुल्य हुआ कि केवल अत्यंत प्रमुख कृतियों का ही उल्लेख यहाँ संभव है। वे हैं : जयशंकर 'प्रसाद' के 'काननकुसुम' (१९१३) तथा 'चित्राधार' (१९१८), लोचनप्रसाद शर्मा का 'प्रवासी' (१९१४), मुकुटधर पांडेय का 'पूजा-फूल' (१९१६), ईश्वरीप्रसाद शर्मा का 'सौरभ' (१९२१), सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की 'अनामिका' (१९२३), रूपनारायण पांडेय का 'पराग' (१९२४), मोहनलाल महतो का 'निर्माल्य'

(१६२६), रामनाथलाल 'सुमन' की 'विपञ्ची' (१६२६), सुमित्रानंदन पंत के 'पल्लव' (१६२७) और 'वीणा' (१६२७), मोहनलाल महतो का 'एक तारा' (१६२७), रामनरेश त्रिपाठी की 'मानसी' (१६२७), गुरुभक्त सिंह का 'कुसुमकुञ्ज' (१६२७), जयशंकर 'प्रसाद' का 'झरना' (१६२७ द्वितीय), सियारामशरण गुप्त की 'आर्द्रा (१६२८), आनंदिप्रसाद श्रीवास्तव का 'उषाकाल' (१६२८), जगदीश झा 'विमल' की 'छाया' (१६२८), गोपालशरण सिंह की 'माधवी' (१६२६), शांतिप्रिय द्विवेदी का 'नीरव' (१६२६), विद्याभूषण विभु की 'ज्योत्स्ना' (१६२६), सियारामशरण गुप्त का 'दूर्वादल' (१६२६), महेन्द्र शास्त्री की 'हिलोर' (१६२६), मैथिलीशरण गुप्त की 'झंकार' (१६२६), सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का 'परिमल' (१६३०), महादेवी वर्मा का 'नीहार' (१६३०), मंगलप्रसाद विश्वकर्मा की 'रेणुका' (१६३१), सुभद्राकुमारी चौहान का 'मुकुल' (१६३१), रामकुमार वर्मा की 'अंजलि' (१६३१), बालकृष्ण राव की 'कौमुदी' (१६३१), हरिकृष्ण 'प्रेमी' का 'अनंत के पथ पर' (१६३१), सुमित्रानंदन पंत का 'गुञ्जन' (१६३२), भगवतीचरण वर्मा का 'मधुकण' (१६३२), महादेवी वर्मा की 'रश्मि' (१६३२), हरिवंशराय 'बच्चन' का 'तेरा हार' (१६३२), जनार्दनप्रसाद झा 'द्विज' की 'अनुभूति' (१६३३), रामकुमार वर्मा की 'रूपराशि' (१६३३), रामेश्वरी देवी 'चकोरी' का 'किञ्जल्क' (१६३३), नरेन्द्र का 'शूल-फूल' (१६३४), तारा पांडेय का 'सीकर' (१६३४), रत्नकुमारी देवी का 'अंकुर' (१६३४), सियारामशरण गुप्त का 'पाथेय' (१६३४), महादेवी वर्मा की 'नीरजा' (१६३४), आनंदकुमार का 'मधुवन' (१६३५), जयशंकर 'प्रसाद' की 'लहर' (१६३५), मोहनलाल महतो की 'कल्पना' (१६३५), हरिवंशराय 'बच्चन' की 'मधुशाला' (१६३५), रामकुमार वर्मा की 'चित्ररेखा' (१६३५), रामधारी सिंह 'दिनकर' की 'रेणुका' (१६३५), बालकृष्ण राव का 'आभास' (१६३५), हरिवंशराय 'बच्चन' की 'मधुबाला' (१६३६), नरेन्द्र का 'कर्णफूल' (१६३६), महादेवी वर्मा का 'सांध्यगीत' (१६३६), सूर्यकांत

त्रिपाठी 'निराला' की 'गीतिका' (१९३६), तारा पांडेय का 'शुक-पिक' (१९३७), इलाचन्द्र जोशी की 'विजनवती' (१९३७), भगवतीचरण वर्मा का 'प्रेम-संगीत' (१९३७), हरिवंशराय 'बच्चन' का 'मधु-कलश' (१९३७), रामकुमार वर्मा की 'चन्द्रकिरण' (१९३७), गोपालशरण सिंह की 'कादंबिनी' (१९३७), आनन्दकुमार का 'पुष्पवाण' (१९३८), गोपालशरण सिंह की 'मानवी' (१९३८), रामेश्वर शुक्ल 'अञ्चल' की 'मधूलिका' (१९३८), हरिवंशराय 'बच्चन' का 'निशा-निमंत्रण' (१९३८), आरसीप्रसाद सिंह का 'कलापी' (१९३८), आनन्दकुमार की 'सारिका' (१९३९), गोपालशरण सिंह की 'संचिता' (१९३९), रामेश्वरी देवी चकोरी का 'मकरंद' (१९३९), राजेश्वर गुरु की 'शेफाली' (१९३९), उदयशंकर भट्ट की 'मानसी' (१९३९), 'सुदर्शन' की 'झंकार' (१९३९), रामेश्वर शुक्ल 'अञ्चल' की 'अपराजिता' (१९३९), अनूपशर्मा की 'सुमनाञ्जलि' (१९३९), तोरनदेवी शुक्ल 'लली' की 'जागृति' (१९३९), उदयशंकर भट्ट का 'विसर्जन' (१९३९), हरिवंश-राय 'बच्चन' का 'एकांत संगीत' (१९३९), महादेवी वर्मा की 'यामा' (१९४०), जिसमें उसके प्रकाशन तक की कवियित्री की समस्त काव्य-रचनाओं का संग्रह हुआ है, नरेन्द्र का 'पलाशवन' (१९४०), सुमित्रानंदन पंत की 'पल्लविनी' (१९४०), 'हरिकृष्ण प्रेमी' का 'अग्निगान' (१९४०), गोपालशरण सिंह की 'सुमना' (१९४१), रामेश्वर शुक्ल 'अञ्चल' की 'किरण-वेला' (१९४१), उपेन्द्रनाथ 'अश्क' की 'ऊर्मियाँ' (१९४१), भगवतीप्रसाद वाजपेयी की 'ओस के बूँद' [१९४१ ?], माखनलाल चतुर्वेदी की 'हिम-किरीटिनी' (१९४१), महादेवी वर्मा की 'दीपशिखा' (१९४२) तथा हृदयनारायण 'हृदयेश' की 'सुषमा' (१९४२)। इस परंपरा में जीवन यथेष्ट है, इसलिए आशा है कि अभी और भी सत्साहित्य इसमें निर्मित होगा।

केवल ब्रजभाषा की कुछ कृतियों का उल्लेख करना शेष है। यह कृतियाँ प्राय: अपने पुराने आदर्शों पर ही चलती रहीं, नवयुग के वादों ने इन पर कोई असर नहीं किया। या तो यह रीतिकालीन रहीं, और

यदि आगे बढ़ीं भी तो पिछले युग की उन रचनाओं के समकक्ष आईं जो उस युग के ध्यान से प्रगतिशील कहला सकती हैं। सबसे प्रमुख रचनाएँ इस श्रेणी में हैं: सत्यनारायण कविरत्न की 'हृदय-तरङ्ग' (१९२०), दुलारेलाल भार्गव की 'दुलारे-दोहावली' (१९३४), रामेश्वर शुक्ल 'करुण' की 'करुण-सतसई' (१९३४), हरिशरण मिश्र का 'मुक्तक' (१९३६), उमाशंकर वाजपेयी की 'ब्रजभारती' (१९३६) तथा राय कृष्णदास की 'ब्रज-रज' (१९३६)। इस परंपरा में जीवन की एक क्लांति परिलक्षित होती है, और इसलिए इसका भविष्य प्रायः अन्धकार पूर्ण ही ज्ञात होता है। केवल एक रचना प्रमुख रूप से इससे सर्वथा भिन्न प्रवृत्ति की है: हरिप्रसाद 'वियोगी हरि' की 'वीर-सतसई' (१९२७) जो स्फुट काव्य के रूप में ऐतिहासिक महापुरुषों की वीरगाथा का गान करती है।

कविता ने इस युग में बड़ा विकास किया, और यदि ध्यानपूर्वक देखा जावे तो अपने युग की भावनाओं के जितना निकट यह रही उतना कोई भी साहित्य-रूप नहीं रहा—बल्कि कहना यह चाहिए कि बहुधा यह अपने समय से आगे भी रही। पिछले युग में इसकी जो दशा रही उसे देखते हुए इसे क्रांति ही कहना होगा।

उपन्यास

इस काल के उपन्यास-साहित्य को भी पिछले काल के उपन्यास-साहित्य की भाँति चार वर्गों में विभाजित कर सकते हैं: १. सामाजिक, २. ऐतिहासिक ३. ऐयारी-तिलस्मी और ४. जासूसी। और उसी प्रकार, सामाजिक उपन्यासों के इस काल में भी चार भेद कर सकते हैं:

(अ) उद्देश्य-प्रधान, (आ) रस-प्रधान, (इ) वस्तु-प्रधान तथा (ई) चरित्र-प्रधान। इन्हीं शीर्षकों में हम उपन्यास-साहित्य का अध्ययन करेंगे।

१. (अ) उद्देश्य-प्रधान—आलोच्यकाल में उद्देश्य-प्रधान उपन्यासों में पहले के ७-८ वर्षों तक पिछले ही युग की परंपरा चलती

रही। ईश्वरीप्रसाद शर्मा का 'स्वर्णमयी' (१९१०), जो इस युग के प्रारंभिक उपन्यासों में से है, एक आदर्शवादी सामाजिक है। रामनरेश त्रिपाठी का 'मारवाड़ी और पिशाचिनी' (१९१२) मारवाड़ी-समाज के सुधार के लिए लिखा गया है। ओंकारनाथ के 'शांता' तथा 'लक्ष्मी' (१९१२ तृतीय) आदर्श-गार्हस्थ्य जीवन की समस्या लेकर लिखे गए हैं। शिवनाथ शर्मा का 'मिस्टर व्यास की कथा' (१९१३) हास्य-व्यंग्य प्रधान है। जगतचंद रमोला के 'सत्य-प्रेम' (१९१३) की उद्देश्य-प्रधानता स्वतः स्पष्ट है। योगेन्द्रनाथ का 'मानवती' (१९१४) मद्यपान पर एक बड़ा उपन्यास है। लज्जाराम शर्मा का 'आदर्श हिंदू' (१९१५) समाज-सुधार के लिए लिखा गया है। हरस्वरूप पाठक का 'भारत-माता' (१९१५) राष्ट्रीयता के दृष्टिकोण से लिखा गया है। व्रजनंदन सहाय ने 'अरण्य-बाला' (१९१५) में भारतीय जीवन-आदर्शों की श्रेष्ठता प्रमाणित करने का यत्न किया है। चाँदकरण सारडा का 'कॉलेज होस्टल' (१९१६) एक रूपकात्मक उपन्यास है जिसमें रूपक के द्वारा कॉलेजी जीवन के सुधार का प्रयत्न किया गया है। श्रीकृष्ण मिश्र के 'प्रेम' (१९१७) में प्रेम का आदर्श उपस्थित करने का यत्न हुआ है। राधिकाप्रसाद सिंह अखौरी के 'मोहिनी' (१९१८) में यह दिखालने का यत्न किया गया है कि हमारे चरित्र पर संगति का कितना अधिक प्रभाव पड़ा करता है।

यहाँ तक के उद्देश्य-प्रधान उपन्यासों में उद्देश्य इतना प्रधान है कि चरित्रों अथवा समाज का जो चित्र हमारे सामने इन उपन्यासों के द्वारा आता है वह प्रायः विकृत और कृत्रिम-सा ज्ञात होता है। किन्तु उपन्यास-क्षेत्र में प्रेमचंद के आविर्भाव के साथ ऐसी कलापूर्ण कृतियाँ आने लगीं जिनमें हमारे सामाजिक जीवन की समस्याएँ समाज की वास्तविक परिस्थितियों के बीच में उपस्थित होने लगीं। एक और अंतर भी उपस्थित हुआ : अब तक समाज की अत्यंत साधारण समस्याएँ ही उपन्यास-लेखकों का विषय बनती थीं; प्रेमचंद ने समाज की गंभीर समस्याओं को हाथ में लिया, और उनका ऐसा समाहार किया कि वे उद्देश्य-

प्रधान उपन्यासों की रचना में अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं रखते। प्रेमचंद के पहले हिन्दी उपन्यास 'सेवासदन' (१६१८) में यह दिखलाया गया है कि हिन्दू-समाज की कुछ अक्षम्य त्रुटियों के कारण उसके मध्यवर्ग के परिवारों की स्त्रियों का पतन कितना भयानक हो सकता है। जगह-जगह पर लेखक उपदेशक भी बन गया है, यह अवश्य उसकी एक बड़ी त्रुटि है। दुर्गाप्रसाद खत्री का 'बलिदान' (१६१८) पिछली परंपरा की रचना है। उसमें यह दिखलाया गया है कि अपने चरित्रहीन पति की रक्षा के लिए स्त्री किस कोटि का आत्म-बलिदान करती है। प्रेमचंद के 'प्रेमाश्रम' (१६२२) में अन्य विषयों के साथ ज़मींदार-समस्या का एक हल उपस्थित करने का यत्न किया गया है। नित्यानंद देव के 'भाई-भाई' (१६२४) में भ्रातृ-भाव का आदर्श उपस्थित करने का यत्न किया गया है। रामनरेश त्रिपाठी का 'लक्ष्मी' (१६२४) गार्हस्थ्य-जीवन का एक उपदेशप्रद उपन्यास है। नवजादिकलाल श्रीवास्तव के 'शांति-निकेतन' (१६२४) में भारतीय रहन-सहन तथा शिक्षा-प्रणाली का समर्थन किया गया है। श्रीनाथ सिंह का 'क्षमा' (१६२५) विवाहित जीवन से संबंध रखता हुआ इसी श्रेणी का उपन्यास है। शिवपूजनसहाय का 'देहाती दुनिया' (१६२६) हमारे देहातों की समस्याओं तथा उनकी शोचनीय दशा का चित्रण करता है। प्रेमचंद का इस परंपरा का एक और उपन्यास 'कायाकल्प' (१६२६) बहु-विवाह की बुराइयाँ चित्रित करता है। गङ्गाप्रसाद (जी० पी) श्रीवास्तव ने 'गङ्गा-जमुनी' (१६२७) में हमारे समाज के कुछ संपन्न चरित्रों की उस मधुपवृत्ति का परिहास किया है जिसका परिचय अनेक नायिकाओं के साथ नायकों के प्रेम-व्यापारों में मिला करता है। भगवतीप्रसाद वाजपेयी की 'मीठी चुटकी' (१६२७) में हिन्दू-विवाह-व्यवस्था का समर्थन किया गया है। राजेश्वरप्रसाद सिंह के 'मंच' (१६२८) में वेश्यावृत्ति की बुराइयाँ बतलाई गई हैं। प्रेमचंद के 'निर्मला' (१६२८) में अनमेल विवाह की बुराइयाँ सामने लाई गई हैं। तेजरानी दीक्षित का 'हृदय का काँटा' (१६२८) हिंदू विधवाओं

की असहाय दशा का चित्रण करता है। भगवतीप्रसाद वाजपेयी का 'अनाथ पत्नी' (१९२८) भी समाज की एक बुराई को लेकर लिखा गया है। प्रेमचंद का 'प्रतिज्ञा' (१९२९) हिंदू-समाज की विधवा-समस्या पर विचार उपस्थित करता है। विश्वंभरनाथ शर्मा के 'मा' (१९२९) में माता के अनुचित तथा उचित मात्रा में स्नेह के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। जयशंकर 'प्रसाद' का आगमन उपन्यास-क्षेत्र में 'कंकाल' (१९२९) के साथ इसी समय होता है। 'कंकाल' में 'प्रसाद' जी ने हमारे नागरिक जीवन को लेते हुए हिंदू-समाज के धार्मिक दंभ और आचार के ढोंग की पोल खोलकर यह दिखलाने का प्रयत्न किया है कि इसकी आड़ में हमारे समाज के निरपराध स्त्री-वर्ग पर कितना भीषण अत्याचार होता रहता है। ऋषभ-चरण जैन के 'वेश्यापुत्र' (१९२९), और इसी प्रकार प्रफुल्लचंद्र ओझा के 'पाप और पुण्य' (१९३०) की समस्याएँ उनके नामों से ही प्रकट हैं। गङ्गाप्रसाद (जी० पी०) श्रीवास्तव का 'लतखोरीलाल' (१९३१) समाज के एक विकृत 'टाइप' का परिहास करता है। ऋषभचरण जैन के 'सत्याग्रह' (१९३०) की समस्या-प्रधानता स्पष्ट है। उनका 'भाई' (१९३१) भ्रातृभाव का विषय लेकर लिखा गया है। ज़हूरबख्श का 'स्फुलिंग' (१९३१) समाज-सुधार के दृष्टि-कोण से लिखा गया है। प्रफुल्लचंद्र ओझा के 'तलाक़' (१९३२) की समस्या स्वतः प्रकट है। भगवतीप्रसाद के 'त्यागमयी' (१९३२) तथा शिवरानी देवी के 'नारी-हृदय' (१९३२) स्त्री-जाति की त्याग और अनुरागपूर्ण प्रकृति का विकास चित्रित करते हैं। प्रेमचन्द के 'कर्मभूमि' (१९३२) में भारत के किसान और मज़दूरवर्ग के ऊपर होने वाले अन्यायों की कथा है, और हमारी बहुतेरी सार्वजनिक संस्थाओं में किस प्रकार बुराइयाँ भरी पड़ी हैं यह उसमें अंकित किया गया है। कन्हैयालाल का 'हत्यारे का व्याह' (१९३३) भी समाज की एक विकृति को लेकर लिखा गया है। चंद्रशेखर शास्त्री का 'विधवा के पत्र' (१९३३) वैधव्य जीवन को विषय बनाकर पत्रों के रूप में कथा का विकास करता है। भगवती-

प्रसाद वाजपेयी के 'प्रेम-निर्वाह' [१९३४ ?] की समस्या स्पष्ट ही है। जयशंकर 'प्रसाद' के 'तितली' (१९३४) में ग्रामीण जीवन को लेकर सामाजिक समस्याओं के चित्र खींचने का प्रयास किया गया है। प्रेमचन्द का 'गोदान' (१९३६), जो कला की दृष्टि से उनकी सबसे सफल रचना मानी जाती है, ग्रामीण और नागरिक जीवन की तुलना उपस्थित करता है। गङ्गाप्रसाद (जी० पी०) श्रीवास्तव का 'स्वामी चौखटानंद' (१९३६) समाज के ढोंगी महात्माओं का उपहास करता है। भगवतीप्रसाद वाजपेयी का 'पतिता की साधना' (१९३६) हिंदू-नारी-जीवन का एक अध्ययन उपस्थित करने का प्रयास करता है। धनीराम प्रेम का 'मेरा देश' (१९३६) पुकार कर कहता है कि वह राष्ट्रीय भावनाओं से लिखा गया है। राधिकारमणप्रसाद सिंह का 'राम-रहीम' (१९३७) हिन्दू-मुसलमान ऐक्य के दृष्टिकोण से लिखा गया है। श्रीनाथ सिंह का 'जागरण' (१९३७) असहाय कृषकवर्ग तथा अछूतों की कठिनाइयों का चित्रण करता है। राहुल सांकृत्यायन का 'सोने की ढाल' (१९३७) उपदेश-प्रधान सामाजिक है। सियारामशरण का 'नारी' (१९३८) नारी-जाति की स्वभाव-सुलभ कोमलता और स्नेहपूर्णता का आदर्शपूर्ण चित्रण करता है। गोविंदवल्लभ पन्त के 'जूनिया' (१९३८) में भारत की अछूत-समस्या को लेकर विचार किया गया है। भगवतीप्रसाद वाजपेयी का 'दो बहनें' (१९४०) स्त्रियों के लिए आधुनिक शिक्षा-प्रणाली तथा सभ्यता की अनुपयुक्तता का चित्रित करता है। राधिकारमणप्रसाद सिंह का नया उपन्यास 'पुरुष और नारी' (१९४०) उक्त आदिम समस्या पर विचार करता है। इन्द्रविद्यावाचस्पति के 'ज़मीदार' (१९४२) का विषय प्रकट ही है।

१ (आ) रस-प्रधान—पिछले युग के शृङ्गारपूर्ण उपन्यासों की परंपरा इस काल के प्रारंभ के सात-आठ वर्षों तक अक्षुण्ण चलती रही। किशोरीलाल गोस्वामी का 'माधवी-माधव' (१९०९) इसी प्रकार की रचना है। झाबरमल्ल दारु का 'चंद्रकुमारी' (१९१०), परानमल सारस्वत ओझा का 'चपला' (१९१०), काशीप्रसाद का 'गौहर जान' (१९११),

जगन्नाथ मिश्र का 'मधुप-लतिका' (१९१२), कृष्णलाल वर्मा का 'चंपा' (१९१६), शिवनारायण द्विवेदी का 'चंपा' (१९१८), तथा कृष्णलाल गोस्वामी का 'माधवी' (१९१८) प्रेम की उसी परिपाटी का प्रतिपादन करते हैं।

प्रेम की बहुमुखी व्यंजना का प्रारंभ अब हुआ। रामगोपाल मिश्र का 'माया' (१९१७) इस प्रकार के प्रारम्भिक उपन्यासों में से है: इसमें एक दुखान्त प्रेम-कथा का विकास किया गया है। चतुरसेन शास्त्री का आविर्भाव उपन्यास-जगत् में इसी समय होता है। उनके उपन्यासों में प्रेम का चित्रण प्रायः विषम सामाजिक परिस्थितियों में होता है। उनकी इस प्रकार की पहली रचना 'हृदय की परख' (१९१८) मिलती है, जिसमें एक चरित्रहीन पति की कथा है। उनका 'व्यभिचार' (१९२४) भी इसी प्रकार प्रेम-संबंधिनी एक सामाजिक विकृत का निरूपण करता है। उनकी 'अमर अभिलाषा' (१९३३) में वैधव्य की करुण प्रेम-कथा है। उनके 'आत्मदाह' (१९३६) में भी इसी प्रकार प्रेम की एक सामाजिक समस्या है। उनकी इस प्रणाली की सबसे आधुनिक रचना 'नीलमती' (१९४०) है। ये समस्त रचनाएँ उतनी ही उद्देश्य-प्रधान हैं जितनी रस-प्रधान, केवल शृंगार का चित्रण इतना गहरा हुआ है कि पाठक पर लेखक के उद्देश्य का इतना प्रभाव नहीं पड़ सकता जितना इस शृंगार का, इसीलिए इनकी गणना रस-प्रधान उपन्यासों में करनी चाहिए।

बेचन शर्मा 'उग्र' ने भी अपने चित्र समाज से लिए हैं: उनके 'चंद हसीनों के खतूत' (१९२७) में एक हिंदू युवक तथा एक मुसलमान कन्या का प्रगाढ़ प्रेम चित्रित हुआ है। भारत की हिन्दू-मुस्लिम समस्या का एक हल भी इसमें सन्निहित ज्ञात होता है। उनका दूसरा उपन्यास 'दिल्ली का दलाल' (१९२७) हिंदू समाज की कन्याओं और युवती स्त्रियों के क्रय-विक्रय की संस्थाओं के हथकंडों का चित्रण करता है। 'बुधुआ की बेटी' (१९२८) समाज में अवैध प्रेम की विविधरूपता का दिग्दर्शन कराता है। 'शराबी' (१९३०) में मैखानों, ताड़ीखानों, और वेश्यालयों के घृणित जीवन का चित्रण है। उनका 'घंटा'

(१९३७) समाज के ढोंगों का चित्रण करता है। उनका सबसे आधुनिक उपन्यास 'सरकार तुम्हारी आँखों में' (१९३७) समाज की एक अन्य वासनापूर्ण प्रवृत्ति का चित्रण करता है। इन चित्रों में एक ऐसा नग्न और उग्र प्रकार का शृंगार मिलता है जिसके कारण पाठक का ध्यान सामाजिक विकृति की ओर जाने ही नहीं पाता, और उन नग्न चित्रों के आस्वादन में लग जाता है। ऐसी दशा में यह समझना कि किसी भी प्रकार से यह साहित्य समाज को ऊँचा उठाने के लिए लिखा गया है भ्रम-मात्र होगा।

'निराला' जी के भी उपन्यास लगभग इसी प्रणाली के ज्ञात होते हैं, यद्यपि वे इतने उग्र नहीं हैं। उनके 'अप्सरा' (१९३१), 'अलका' (१९३३), 'लिली' (१९३३) तथा 'निरुपमा' (१९३६) में स्त्री-चरित्र बड़े गहरे रंग से चित्रित हुए हैं। 'अप्सरा' में उन्होंने वाराङ्गना-समाज के चित्र दिए हैं।

एक प्रणाली प्रेमपूर्ण उपन्यासों की 'गीतिप्रधान' है, जिसमें उद्दाम प्रेम की व्यंजना कवित्वपूर्ण शैली में की गई है। ब्रजनंदन सहाय का 'सौंदर्योपासक' (१९१९) इस प्रकार की पहली रचनाओं में से है। इसमें उपन्यास-तत्व नाममात्र को है। चण्डीप्रसाद 'हृदयेश' की रचनाएँ भी इसी कोटि में आती हैं, यद्यपि उनका प्रेम कोई व्यक्तिगत वस्तु नहीं है, वह लोक-मंगल की भावना से परिप्लुत है। उनकी 'मनोरमा' (१९२४) तथा 'मङ्गल प्रभात' (१९२६) इसी प्रकार के उपन्यास हैं।

गोविंदवल्लभ पंत के भी कुछ उपन्यास इसी कोटि में रक्खे जा सकते हैं। उनके 'प्रतिमा' (१९३४) में प्रेम के आदर्श चित्रों की सृष्टि हुई है। वृंदावनलाल वर्मा के भी कुछ सामाजिक उपन्यास हैं, जिनमें 'प्रेम की भेंट' (१९३१) और 'कुण्डलीचक्र' (१९३२) प्रमुख हैं। इनमें प्रेम का विकास कथावस्तु के घटनात्मक विकास के साथ-साथ चित्रित हुआ है।

पुरानी परिपाटी के प्रेम-प्रधान उपन्यासों की सृष्टि इस विकास-काल में भी थोड़ी-बहुत होती रही, यद्यपि साहित्य के इतिहास में उनका कोई

महत्वपूर्ण स्थान नहीं है। किशोरीलाल गोस्वामी का 'अँगूठी का नगीना' (१६१८), अंबिकाप्रसाद चतुर्वेदी का 'कोहेनूर' (१६१६), जयगोपाल लाला का 'भयानक तूफ़ान' (१६१६), शिवदास गुप्त का 'उषा' (१६२५), चन्द्रभूषण का 'नरेन्द्रमालती' (१६२८) तथा ऋषभचरण के अनेक उपन्यास इसी प्रणाली के हैं। इनमें आधुनिक युग की विकसित उपन्यास-कला की तुलना में उस ढंग की औपन्यासिकता है जिसे 'सस्ती' कहा जा सकता है।

१. (इ) **वस्तु-प्रधान**—आलोच्यकाल में वस्तुप्रधान सामाजिकों में यथेष्ट उन्नति नहीं हुई, प्रारंभ में आनेवाली रचनाओं में से रामचीज़ सिंह का 'वन-विहंगिनी' (१६०६) उल्लेखनीय है। इसमें कोल-जीवन का चित्रण किया गया है। जमुनाप्रसाद का 'दुर्भाग्य-परिवर्तन' (१६१२) घटना-प्रधान है। गोपालराम गहमरी के 'अर्थ का अनर्थ' (१६१३) तथा 'प्रेमभूल' (१६१४) भी इसी कोटि में रक्खे जा सकते हैं। राधिकारमणप्रसाद सिंह का 'तरङ्ग' (१६२१) तत्कालीन राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण करता है। जगदीश झा का 'आशा पर पानी' (१६२५) भी घटना-प्रधान है। शिवनाथ शास्त्री का 'मझली बहू' (१६२८) पुराने ढंग का वस्तु-प्रधान सामाजिक है। विश्वनाथ सिंह शर्मा के 'कसौटी' (१६२६) में ग्रामीण जीवन का चित्रण किया गया है। शंभुदयाल सक्सेना का 'बहू-रानी' (१६३०) हिन्दू गार्हस्थ्य जीवन से संबंध रखता है। राहुल सांकृत्यायन का 'बीसवीं सदी' (१६३१) इस युग के जीवन का चित्रण करता है। उनके 'जादू का मुल्क' (१६३८) की वस्तु-प्रधानता स्पष्ट है। उनका 'जीने के लिए' (१६४०) आधुनिक युग के जीवन की एक दुःखांत कथा है। विमलाकुमारी के 'अभिनेत्री जीवन के अनुभव' (१६३६) में सिनेमा घरों के दूषित वातावरण का चित्रण है।

१. (ई) **चरित्र-प्रधान**—आलोच्यकाल में चरित्र-प्रधान उपन्यासों में बड़ा विकास हुआ। ब्रजनंदनसहाय का 'राधाकांत' (१६१२), जो अंशतः गिरीशचन्द्र घोष के बंगला उपन्यास 'कंगाल' के आधार पर

लिखा गया है, चरित्र-प्रधान है। इसमें चरित्र की उस विशेषता का विकास किया गया है जिसे 'लगन' कहते हैं। मन्नन द्विवेदी के 'रामलाल' (१९१७) तथा 'कल्याणी' (१९२१) की भी गणना चरित्र-प्रधान उपन्यासों में की जा सकती है। इनके चरित्रों में यद्यपि व्यक्तित्व का विकास नहीं हुआ है पर बहुत से सफल रेखाचित्र इनमें हमें मिल जाते हैं। 'रामलाल' में द्विवेदी जी ने संयुक्त प्रांत के पूर्वीय ज़िलों के ग्रामीण जीवन का यथातथ्य परिचय इन रेखा-चित्रों के सहारे दिया है। अवध-नारायण का 'विमाता' (१९२३ द्वितीय) सौतेली माँ के चरित्र का सुंदर विकास उपस्थित करता है। प्रेमचंद का आगमन उपन्यास-क्षेत्र में यद्यपि कई वर्ष पूर्व हो चुका था, तथापि 'रंगभूमि' (१९२५) के पूर्व वाले उनके उपन्यास उद्देश्य-प्रधान ही हैं, उन्हें चरित्र-प्रधान कहना ठीक न होगा। उनका पहला वास्तविक चरित्र-प्रधान उपन्यास 'रंगभूमि' ही है। इसके नायक अंधे सूरदास का जीवन के प्रति एक विशेष दृष्टि-कोण है; वह जीवन को एक खेल समझता है, और संसार को एक रंगभूमि, जिसमें सभी अपना-अपना 'पार्ट' खेलते हैं। हार-जीत कोई चीज़ नहीं। सच्चा खिलाड़ी वही है जो इस हार-जीत पर निर्विकार चित्त रहता है; हारा तो जीतनेवाले से कीना नहीं रक्खा, जीता तो हारनेवालों पर तालियाँ नहीं बजाई; जिसने खेल में सदैव नीति का पालन किया। सूरदास में इसी चरित्रता का विकास मिलता है, और यह विकास अत्यंत सुंदर हुआ है। देश के ग्रामीण और नागरिक जीवन के कुछ रेखा-चित्र भी रंगभूमि में बड़े सफल उतरे हैं, और पात्रों की मनोवृत्तियों का विश्लेषण यथेष्ट हुआ है। विनोदशंकर व्यास का एक उपन्यास 'अशांत' (१९२७) भी इसी परंपरा में रक्खा जा सकता है। इसके चरित्रों में शुद्ध प्रेम का विकास किया गया है। ऋषभचरण जैन का 'मास्टर साहिब' (१९२७), यदुनंदनप्रसाद का 'अपराधी' (१९२८) तथा प्रतापनारायण श्रीवास्तव का 'विदा' (१९२८) भी इसी कोटि के हैं। अंतिम में लेखक ने अपने पात्रों के द्वारा यह दिखलाने का यत्न किया है कि हमारे बाहरी पाश्चात्य ढंग के जीवन में भी हमारी प्राचीन संस्कृति

की अंतर्धारा प्रवाहित होती रहती है। उपन्यास-क्षेत्र में इसी समय जैनेन्द्रकुमार की पहली रचना 'परख' (१९३०) आती है। मनोवैज्ञानिक चरित्र-विकास ही इसकी विशेषता है, यद्यपि लेखक के नैतिक आदर्शों के प्रति साधारणतः समालोचकों और पाठकों को शिकायत हो सकती है। प्रेमचंद का एक दूसरा उपन्यास 'ग़बन' (१९३१) भी इसी परंपरा में आता है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें मानव-चरित्र की एक बड़ी कमज़ोरी को यथावत् उपस्थित करने के अतिरिक्त लेखक और कुछ नहीं चाहता। किसी प्रकार का आदर्शवाद लेखक की इस रचना में नहीं मिलता, जैसा कि प्रायः उसकी अन्य रचनाओं में किसी-न-किसी अंश में अवश्य मिलता है। इसके नायक में झूठे दिखावे का एक बड़ा रोग है, और वह रोग अपनी पत्नी के आभूषणों को चोरी से लेकर सरकारी रुपये के ग़बन तक पहुँच जाता है। यह लेखक ने बड़ी स्वाभाविकता से चित्रित किया है। जैनेन्द्रकुमार और ऋषभचरण जैन की एक सम्मिलित रचना 'तपोभूमि' (१९३२) भी चरित्र-प्रधान है। धनीराम प्रेम के 'वेश्या का हृदय' (१९३३) की चरित्र-प्रधानता स्पष्ट है। रूपनारायण पाण्डेय के 'कपटी' (१९३४) में एक कपटी चरित्र का विकास है। जैनेन्द्रकुमार की 'सुनीता' (१९३६) में भी चरित्र-चित्रण में मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक प्रवृत्तियों का प्राधान्य है। गोविंदवल्लभ पंत के 'मदारी' (१९३६) तथा उषादेवी मित्र के 'वचन का मोल' (१९३६) को भी हम इसी परंपरा में रख सकते हैं। सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन का 'शेखर' (१९४१) नायक के जीवन का एक संपूर्ण अध्ययन उपस्थित करता है, और अपने ढंग की एक स्वतंत्र रचना है। इलाचंद्र जोशी के 'संन्यासी' (१९४१) तथा 'पर्दे की रानी' (१९४१) भी मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का आधार लेकर चरित्र-विकास का प्रयत्न करते हैं।

२. ऐतिहासिक उपन्यास—पिछले काल के ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा में हमने देखा था कि नायक-नायिका भेद के ढंग के प्रेम और उसके लिए युद्धादि की अवतारणा ही लेखकों का प्रायः एकमात्र

लक्ष्य था। १९०९ से उनकी इस प्रवृत्ति में कुछ अंतर पड़ने लगा, और सात-आठ वर्षों में ऐतिहासिक उपन्यास अपने आदर्शों के निकट आने लगे। इस प्रकार की प्रारंभिक रचनाओं में रामप्रसाद सत्याल का 'अनंत' (१९०९), जो अंग्रेजों के शासन के पूर्व का चित्र उपस्थित करता है, बलभद्र सिंह का 'सौंदर्य-कुसुम' (१९१०) जो महाराष्ट्र के इतिहास से संबंध रखता है, किशोरीलाल गोस्वामी का 'सोना और सुगंधि' (१९११) जो इतिहास-प्रसिद्ध पन्ना धाय के जीवन से संबंध रखता है, बलभद्र सिंह का 'जयश्री' (१९११) जो मुसलमानों के सिंध-विजय की कथा के आधार पर लिखा गया है, तथा उन्हीं का 'सौंदर्य-प्रभा' (१९११) जो शिवाजी के जीवन से संबंध रखता है, किशोरीलाल गोस्वामी का 'लाल कुँवर' (१९१२) जो दिल्ली के जहाँदारशाह के समय की एक ऐतिहासिक कथा लेकर लिखा गया है, कृष्णप्रकाश सिंह अखौरी का 'वीर चूड़ामणि' (१९१५) जिसमें चित्तौर के राजपूतों और भीलों के संघर्ष की कथा है, तथा किशोरीलाल गोस्वामी का 'रजिया बेगम' (१९१५), जो मध्ययुग की उक्त प्रसिद्ध रानी के चरित्र को लेकर लिखा गया है, उल्लेखनीय हैं। विकसित परंपरा के उपन्यासों में सबसे पहले ब्रजनंदनसहाय के 'लाल चीन' (१९१६) का उल्लेख किया जा सकता है जिसका नायक लाल चीन ग़यासुद्दीन बलबन का एक ग़ुलाम है। मुरारीलाल पंडित का 'विचित्र वीर' (१९१६) अलाउद्दीन ख़िलजी के समय के एक कथानक के आधार पर लिखा गया है। दुर्गादास खत्री का 'अनंगपाल' (१९१७) भारत पर महमूद गज़नवी के आक्रमण से संबंध रखता है। मिश्रबंधु के 'वीरमणि' (१९१७) में अलाउद्दीन ख़िलजी के प्रसिद्ध चित्तौर के आक्रमण को पृष्ठभूमि में रखते हुए एक कथानक की रचना की गई है। शेरसिंह का 'दुर्गा' (१९१८) एक वीरतापूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास है। हरिदास माणिक के 'चौहानी तलवार' (१९१८) तथा 'राजपूतों की बहादुरी' (१९२०) भी उसी श्रेणी के हैं। गोविंदवल्लभ पंत के 'सूर्यास्त' (१९२२) में इतिहास के साथ कला का सुंदर सम्मिश्रण

हुआ है। किशोरीलाल गोस्वामी का एक ऐतिहासिक उपन्यास इस काल में भी मिलता है : 'गुप्त गोदना' (१९२३), जिसमें अपने भाइयों के विरुद्ध किए गए औरंगज़ेब के षड्यंत्रों का वर्णन है। विश्वंभरनाथ जिज्जा का 'तुर्क तरुणी' (१९२५) शृङ्गार-प्रधान ऐतिहासिक है। भगवतीचरण वर्मा का 'पतन' (१९२७) वाजिदअली शाह की विलासिता का चित्र उपस्थित करता है। ऋषभचरण के 'ग़दर' (१९३०) का विषय प्रकट ही है।

किंतु वास्तविक ऐतिहासिक उपन्यासों का लिखा जाना अब प्रारंभ हुआ है। अभी तक के उपन्यासों में ऐतिहासिकता कहने भर को थी, अभीष्ट समय की और समाज की मनोवृत्तियों और समस्याओं आदि का अध्ययन करके ऐतिहासिक उपन्यासों का लिखना प्रायः १९३० के लगभग प्रारंभ हुआ मानना चाहिए। इस प्रकार की रचनाओं में वृंदावनलाल के 'गढ़ कुंडार' (१९३०) तथा 'विराटा की पद्मिनी' (१९३६) का स्थान ऊँचा है। दोनों ही उपन्यासों का संबंध बुंदेलखंड से है, और दोनों ही में वहाँ के भूखंड, वहाँ की मध्य-युग की संस्कृति, वहाँ की वीर जातियों के पारस्परिक वैमनस्य, उनके प्रेम-प्रसंग तथा उनकी सच्ची वीरता के चित्र मिलते हैं। कृष्णानंद गुप्त का 'केन' (१९३०) भी इसी प्रकार की रचना है। भगवतीचरण वर्मा का 'चित्रलेखा' (१९३४) हिंदू-काल की घटनाओं को लेकर पाप और पुण्य की समस्या पर एक नया दृष्टिकोण उपस्थित करता है। प्रेमचंद का 'दुर्गादास' (१९३८), और चतुरसेन शास्त्री का 'राणा राजसिंह' (१९३९) इधर के अन्य उल्लेखनीय प्रयास हैं।

३. ऐयारी-तिलस्मी—ऐयारी-तिलस्मी उपन्यासों की पिछले काल की धारा इस युग के प्रथम चरण में अप्रतिहत गति से प्रवाहित होती रही, पर दूसरे चरण में वह लुप्तप्राय सी हो गई। देवकीनंदन खत्री का प्रसिद्ध उपन्यास 'भूतनाथ' (१९०९), जो आत्मकथा के रूप में है, इसी युग का है। रूपकिशोर जैन का 'सूर्यकुमार संभव' (१९१२), चतुर्भुज औदीच्य का 'हवाई महल' (१९१४), चंद्रशेखर पाठक का 'हेमलता'

(१९१५) इस परंपरा के अन्य उल्लेखनीय उपन्यास हैं। यद्यपि कुछ प्रतिभाविहीन रचनाएँ इस काल में भी—और कुछ न कुछ न आगे भी—मिलती हैं पर इस परंपरा का अंत यहीं समझना चाहिये। वास्तविक उपन्यास कला के साथ प्रेमचंद के आविर्भाव के कारण ही इस परंपरा का अंत हुआ ज्ञात होता है।

४. जासूसी उपन्यास—आलोच्यकाल के प्रारंभिक सात-आठ वर्षों तक यह परंपरा भी अप्रतिहत गति से चलती रही : जंगबहादुर सिंह का 'विचित्र खून' (१९०९), गोपालराम गहमरी का 'खूनी का भेद' (१९१०), शेरसिंह का 'विलक्षण जासूस' (१९११), चंद्रशेखर पाठक के 'अमीरअली ठग' (१९११), तथा 'शशिबाला' (१९११), गोपालराम गहमरी के 'भोजपुर की ठगी' (१९११), 'बलिहारी बुद्धि' (१९१२), 'योग महिमा' (१९१२) तथा 'गुप्त भेद' (१९१३) और शिवनारायण द्विवेदी का 'अमरदत्त' (१९१५) उसी परंपरा के हैं। गोपालराम गहमरी के कुछ अन्य जासूसी उपन्यास भी प्रायः इसी काल के हैं, यद्यपि उनकी ठीक तिथियाँ ज्ञात नहीं हैं : वे हैं 'अद्भुत खून', 'आँखों देखी घटना', 'इन्द्रजालिक जासूस', 'कटा सिर', 'क़िले में खून', 'केतकी की शादी', 'खूनी का भेदी', 'खूनी की खोज', 'लाइन पर लाश', 'चक्करदार चोरी', 'चोरों की लीला' तथा 'मृत्यु विभीषिका'। उन के कुछ जासूसी उपन्यास इधर भी प्रकाशित हुए हैं, किंतु लिखे वे भी संभवतः उसी के युग के हैं। एक प्रकार से इसलिए गहमरी जी ही इस परंपरा के जन्मदाता और उसके एकमात्र प्रतिभाशाली और अंतिम लेखक माने जा सकते हैं। किंतु परंपरा प्रायः १९१७-१८ के लगभग समाप्त हो गई और उसमें कोई जीवन शेष नहीं रहा। कारण संभवतः यह है कि प्रेमचंद तथा उनके समकालीन कुछ अन्य उपन्यास-लेखकों के मनोवैज्ञानिक तथा चरित्र-प्रधान उपन्यासों के पढ़ने के अनंतर पाठक-जनता की रुचि इतनी परिष्कृत हो गई कि इन उपन्यासों की लोकप्रियता के लिए वह प्रायः घातक-सी सिद्ध हुई।

उपन्यास-साहित्य की गति इस युग में बड़ी अव्यवस्थित रही है।

प्रेमचंद के आविर्भाव के पूर्व ऐयारी और तिलस्मी तथा जासूसी उपन्यासों का वैसा ही-प्राधान्य था जैसा पिछले युग के उत्तरार्द्ध में। प्रेमचंद के आविर्भाव के अनंतर उपन्यास-क्षेत्र में एक कायापलट हो गई। वह पूर्ण रूप से अपने युग के समकक्ष आ गया। और, प्रेमचंद के उठ जाने पर कदाचित् पुनः उसकी गति रुक-सी गई है। अतः वर्तमान युग के उपन्यास की समस्या असाधारण-सी ज्ञात होती है, और वह समान रूप से कलाकारों और समालोचकों के अध्ययन की अपेक्षा करती है।

कहानी

जिस प्रकार का निरीक्षण हमने ऊपर प्रथम युग के समस्त विषयों का तथा इस युग के विषयों का यहाँ तक किया है उस प्रकार का निरीक्षण कहानी-साहित्य के विषय में संभव नहीं है, कारण यह है कि इस युग के प्रारंभ के दो-चार कहानी-पुस्तकों को छोड़कर, जो प्रायः पिछले युग की परंपरा में हैं, शेष में कहानियाँ एक से अधिक हैं—नवयुग की कहानी पुस्तकों में दस-पाँच ऐसी मिलेंगी जिनमें एक ही कहानी हो—और उन कहानियों में प्रायः दृष्टिकोण का बड़ा वैभिन्य है : कोई कहानी उद्देश्य-प्रधान है तो कोई रस-प्रधान या वातावरण प्रधान; कोई वस्तु-प्रधान है तो कोई चरित्र-प्रधान; कोई ऐतिहासिक है तो कोई अतिप्राकृत; कोई कार्य-प्रधान है तो कोई भावना-प्रधान। फलतः किसी भी कहानी-पुस्तक को हम न किसी एक वर्ग में रख सकते हैं और न उसका परिचय समष्टि रूप से इन सांकेतिक शब्दों में दे सकते हैं। अधिक से अधिक इस युग के प्रमुख कहानी-लेखकों को एक कालक्रम में हम स्मरण कर सकते हैं—उनकी रचनाएँ अन्यत्र मिल जावेंगी—वे हैं जयशंकर 'प्रसाद', गङ्गाप्रसाद (जी० पी०) श्रीवास्तव, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, प्रेमचंद, सुदर्शन, विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक, गोविन्दवल्लभ पंत, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, चण्डीप्रसाद 'हृदयेश', राधिकारमणप्रसाद सिंह, बेचन शर्मा 'उग्र', विनोदशंकर व्यास, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, राय कृष्णदास, चंद्रगुप्त विद्यालंकार, जैनेन्द्रकुमार, चतुरसेन शास्त्री, श्रीराम

शर्मा, सियारामशरण गुप्त, भगवतीचरण वर्मा, राजेश्वरप्रसाद सिंह, शिवरानी देवी, यशपाल, तथा रमाप्रसाद 'पहाड़ी'। हाँ, समस्त कहानी-साहित्य पर विचार करते हुए हम यह अवश्य कह सकते हैं कि इस युग में कहानी-साहित्य में एक क्रांति उपस्थित हो गई, यहाँ तक कि पिछले युग में भी 'कहानी' थी इसमें साधारणतः संदेह होने लगा, अनेक बातों में यह इतनी परिवर्तित हो गई, और फिर लोकप्रिय तो इतनी हुई कि कोई भी साहित्यरूप इसकी प्रतिस्पर्द्धा में न ठहर सका। ऐसा जान पड़ता है कि प्रतिभा के प्रयोग के लिए हिंदी लेखकों को जितना क्षेत्र इसमें मिला अन्यत्र कम मिला। इसलिए कहानी का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल ज्ञात होता है।

नाटक

आलोच्यकाल के नाटक-साहित्य को हम निम्नलिखित वर्गों में विभाजित कर सकते हैं : १. राम-चरित्र, २. कृष्ण-चरित्र, ३. पौराणिक, ४. संत-चरित्र, ५. ऐतिहासिक, ६. शृङ्गाररस-प्रधान, ७. प्रतीकवादी, ८. सामयिक और राष्ट्रीय, ९. सामाजिक, १०. व्यंग्य-विनोदपूर्ण, ११. स्फुट तथा एकांकी। इन्हीं के अनुसार हम प्रस्तुत साहित्य का अध्ययन करेंगे।

१. राम-चरित्र—रामचरित्र को लेकर पिछले काल में रामलीला के लिए लिखे गए कलाहीन प्रयासों के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता। इस काल में भी वही बात रही। केवल गोविंददास ने 'कर्त्तव्य' (१९३५) पूर्वार्द्ध में श्री रामचंद्र के कर्तव्य की रूपरेखा स्पष्ट की है और इधर चतुरसेन शास्त्री के दो नाटक इस विषय के मिलते हैं : 'सीताराम' (१९३९), तथा 'श्रीराम' (१९४०)

२. कृष्ण-चरित्र—ब्रजवासी कृष्ण के चरित्र को लेकर आलोच्य-काल में उल्लेखनीय नाटक इने-गिने ही लिखे गए, जब कि पिछले काल में उनकी संख्या पर्याप्त थी। ब्रजनंदनसहाय के 'उद्धव' (१९०९) में धार्मिक दृष्टिकोण की प्रधानता है। हरिप्रसाद 'वियोगी हरि' का 'छद्म-योगिनी' (१९२३) कृष्ण की एक छद्म-लीला लेकर लिखा गया है। इसमें भी भक्ति की भावना प्रधान है। जमुनादास मेहरा के 'कृष्ण-सुदामा'

(१९२४) में मैत्री की सुप्रसिद्ध कथा है। गोविन्ददास ने 'कर्त्तव्य' (१९३५) के उत्तरार्द्ध भी श्री कृष्ण के कर्त्तव्य की रूपरेखा स्पष्ट की है। उदयशंकर भट्ट का 'राधा' (१९४१) इस विषय का आधुनिकतम प्रयास है। पौराणिक कथानकों को लेकर कलात्मक नाटकों की रचना में भट्ट जी भली भाँति सफल हुए हैं। उनकी 'राधा' भी इसी प्रकार की रचना है। द्वारकावासी कृष्ण के चरित्र को लेकर केवल एक कलात्मक रचना इस काल में मिलती है, जो इधर की ही है, वह है किशोरीदास वाजपेयी कृत 'सुदामा' (१९३९)।

२. पौराणिक—पौराणिक कथानकों को लेकर लिखे गए नाटकों में नवयुग का प्रथम उल्लेखनीय नाटक लक्ष्मीप्रसाद का 'उर्वशी' (१९१०) है, जिसमें पुरुरवा और उर्वशी की प्रेम-कथा है। जयशंकर 'प्रसाद' का आविर्भाव नाटक-क्षेत्र में इसी समय होता है। उनका 'करुणालय' (१९१२) एक वैदिक कथा को लेकर सामाजिक जीवन में करुणा और अहिंसा की आवश्यकता को चित्रित करने का प्रयत्न करता है। मैथिलीशरण गुप्त का 'तिलोत्तमा' (१९१६) भी पौराणिक नाटक है। उनके 'चंद्रहास' (१९१६) में नियति की लीला इस प्रकार दिखाई गई है कि नायिका और नायक का विवाह समस्त विरोधों के होते हुए भी अनायास ही हो जाता है। शिवनंदन मिश्र का 'उषा' (१९१८) उषा-अनिरुद्ध-विवाह की प्रसिद्ध कथा को लेकर लिखा गया है। माखनलाल चतुर्वेदी का 'कृष्णार्जुन-युद्ध' (१९१८) एक सामान्य मानव के अधिकारों की रक्षा के लिए कृष्ण और अर्जुन ऐसे स्नेहियों में भी परस्पर संघर्ष का अवसर उपस्थित कर देता है। जमुनादास मेहरा के 'विश्वामित्र' (१९२१) तथा 'देवयानी' (१९२२) के विषय प्रकट हैं। बदरीनाथ भट्ट के 'वेन चरित्र' (१९२२) में एक क्रूर पौराणिक राजा की कथा है। सुदर्शन का 'अंजना' (१९२३), जमुनादास मेहरा का 'विपद् कसौटी' (१९२३), हरद्वारप्रसाद जालान का 'क्रूर वेन' (१९२४) इस काल के दूसरे उल्लेखनीय प्रयास हैं। बलदेवप्रसाद मिश्र के 'असत्य संकल्प' (१९२५) में हिरण्यकशिपु और

प्रह्लाद के संघर्ष और 'वासना-वैभव' (१६२५) में ययाति के कथा-वृत्त पर नाटकों की रचना हुई है। गोविन्दवल्लभ पंत का 'वरमाला' (१६२५) नाट्य-कला की दृष्टि से अत्यंत उत्कृष्ट है। सरल कथानक के बीच प्रेम का एक मनोवैज्ञानिक विकास इस नाटक में चित्रित हुआ है। 'जन्मेजय का नागयज्ञ' (१६२६) में जयशंकर 'प्रसाद' ने आर्यों और नागों की पुराण-प्रसिद्ध घटना को ऐतिहासिक रंग देने में अद्भुत सफलता प्राप्त की है। कालिदास के 'रघुवंश' के आधार पर दिलीप की प्रसिद्ध कथा को लेकर गोपाल दामोदर तामस्कर की एक रचना 'दिलीप' (१६२६) भी इस काल की है। जमुनादास मेहरा के 'मोरध्वज' (१६२६) तथा 'सती चिंता' (१६२६) इसी प्रकार की पौराणिक कथाओं के आधार पर लिखे गए हैं। एक अन्य पौराणिक कथा लेकर कामताप्रसाद गुरु ने 'सुदर्शन' (१६३१) की रचना की है। पौराणिक नाटकों के सबसे सफल आधुनिक लेखक उदयशंकर भट्ट हैं, जिनके 'अंबा' (१६३५) में भीम ऐसे बलशाली पात्र से भी नारी-अपमान का प्रायश्चित्त, 'सगर-विजय' (१६३७) में सगर का अपने पिता के शत्रु पर विजय, तथा 'मत्स्यगंधा' (१६३७) में अनंत यौवन की प्राप्ति का पश्चाताप उपस्थित करने का यत्न किया गया है। उनके 'विश्वामित्र' (१६३८) तथा 'कमला' (१६३६) इसी श्रेणी के सबसे आधुनिक प्रयास हैं।

महाभारत के संघर्ष की कथा को लेकर लिखे गए नाटकों का इस परंपरा में इतना बाहुल्य है कि उनका अलग ही उल्लेख किया जा सकता है। इस प्रकार के नाटकों में पहला उल्लेखनीय नाटक इस काल का बदरीनाथ भट्ट का 'कुरुवन दहन' (१६१५) है, जिसमें नाट्य-कला का यथेष्ट विकास परिलक्षित होता है। माधव शुक्ल का 'महाभारत' पूर्वार्द्ध (१६१६) भी इस परंपरा की एक सफल रचना है। राधेश्याम कथावाचक ने भी महाभारत की कथा लेकर एक नाटक की रचना की है, वह है 'वीर अभिमन्यु' (१६१८), किंतु साहित्यिक दृष्टिकोण की अपेक्षा इसमें कृति की लोकप्रियता का ध्यान विशेष है। विश्वंभर-

नाथ शर्मा 'कौशिक' का 'भीष्म' (१९१८) अवश्य कलात्मक दृष्टि से सफल है। द्वारकाप्रसाद गुप्त का 'अज्ञातवास' (१९२१) पांडवों के अज्ञातवास की कथा लेकर लिखा गया है। मिश्रबंधु के दो नाटक 'पूर्व भारत' (१९२२) तथा 'उत्तर भारत' (१९३२) अपना अलग स्थान रखते हैं। जगन्नाथशरण का 'कुरुक्षेत्र' (१९२८) भी महाभारत की कथा लेकर लिखा गया है, और उल्लेखनीय है। बेचन शर्मा 'उग्र' का 'गङ्गा का बेटा' (१९४०) भीष्म के चरित्र को लेकर लिखा गया है।

४. संत-चरित्र— संतों के चरित्रों को लेकर इस काल में भी नाटक-रचना हुई। बलदेवप्रसाद मिश्र का 'मीराबाई' (१९१८) इस प्रकार के प्राथमिक नाटकों में से है। अन्य उल्लेखनीय नाटक हैं सुदर्शन का 'दयानंद' (१९१७), हरिप्रसाद द्विवेदी 'वियोगी हरि' का 'प्रबुद्ध यामुन' (१९२९)—जो यामुनाचार्य का चरित्र लेकर लिखा गया है—तथा जमुनादास मेहरा का 'भारत पुत्र अर्थात् कबीरदास' (१९३०)। अंतिम में कला की अपेक्षा लोकप्रियता का दृष्टिकोण विशेष प्रधान है। डा० बलदेवप्रसाद मिश्र ने 'शंकर दिगविजय' (१९३५) नाम का एक अन्य नाटक भी लिखा है जिसमें स्वामी शंकराचार्य की धार्मिक क्रांति का उल्लेख है। मुरारि मांगलिक का 'मीरा' (१९४०) इस परंपरा की सबसे आधुनिक कृतियों में से है। कुछ नाटक गोस्वामी तुलसीदास पर भी लिखे गए : बद्रीनाथ भट्ट का 'तुलसीदास' (१९२२), पुरुषोत्तमदास गुप्त का 'तुलसीदास' (१९२४-द्वितीय) तथा जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी का 'तुलसीदास' (१९३४) उनमें से उल्लेखनीय हैं। अन्य देशों के महात्माओं के चरित्र लेकर रचनाएँ बहुत कम हुईं। इस प्रसंग में केवल एक कृति उल्लेखनीय है : वह है बेचन शर्मा 'उग्र' का 'महात्मा ईसा' (१९२२)।

५. ऐतिहासिक—ऐतिहासिक नाटक पिछले युग में भी रचे जाते थे और इस युग में भी उनकी रचना खूब हुई, किंतु इस युग के नाटकों में उस युग के नाटकों से प्रारम्भ से ही कुछ अंतर होने लगा। पिछले

युग में ऐतिहासिक नाटकों का प्रमुख रस श्रृङ्गार होता था, जिसके साथ-साथ प्रायः वीर रस का भी समावेश हुआ करता था। वह श्रृङ्गार-प्रधानता इस युग में धीरे-धीरे लुप्त होने लगी। दूसरा अंतर यह पड़ा कि पिछले युग के नाटककार साधारणतः केवल हमारे इतिहास के मुस्लिम युग को ही लेकर चलते थे। इस काल के प्रारम्भ से ही उनकी कृतियों में एक व्यापक दृष्टिकोण दिखलाई पड़ने लगा : वे दूसरे युगों की भी कथाएँ लेकर हमारे सामने धीरे-धीरे आने लगे। तीसरा अंतर ऐतिहासिकता के संबंध का है : यद्यपि इस युग के प्रारंभ में ऐतिहासिक घटनाओं के साथ ऐतिहासिक वातावरण वे नहीं निर्मित कर सके, किंतु धीरे-धीरे इसका भी विकास उन्होंने किया; उनके ऐतिहासिक नाटक नाटक-मात्र न रह कर इतिहास के सजीव चित्र होने लगे।

वृन्दावनलाल वर्मा का 'सेनापति उदाल' (१९०९) ५५४ ई० के लगभग के हूण-आक्रमण को लेकर लिखा गया है। जयशंकर 'प्रसाद' का आगमन नाटक-क्षेत्र में इसी समय होता है: 'राज्यश्री' (१९१५) हर्षवर्धन के शासन-काल की कथाओं को लेकर लिखा गया शुद्ध ऐतिहासिक नाटक है। इसमें लेखक ने उस युग की उदार संस्कृति का चित्रण किया है, और नाट्य-कला की दृष्टि से भी उसे यथेष्ट सफलता मिली है। बदरीनाथ भट्ट का 'चंद्रगुप्त' (१९१५) मौर्य-साम्राज्य की स्थापना करनेवाले प्रसिद्ध ऐतिहासिक वीर के चरित्र को लेकर लिखा गया है। जयशंकर 'प्रसाद' ने 'विशाख' (१९२१) में दूसरी शती ईस्वी की काश्मीर की संस्कृति का चित्र उपस्थित करने का यत्न किया है। जिनेश्वरप्रसाद 'मायल' का 'भारत-गौरव' (१९२२), पुनः सम्राट् चंद्रगुप्त के चरित्र को लेकर लिखा गया है। जयशंकर 'प्रसाद' के 'अजातशत्रु' (१९२२) में बुद्ध के समय की सामाजिक अवस्था तथा राजनैतिक उथल-पुथल का चित्रण किया गया है। 'सिद्धार्थ कुमार' (१९२२) नाम का चंद्रराज भंडारी का नाटक बुद्ध के जीवन से ही संबंध रखता है। उनका दूसरा नाटक 'सम्राट् अशोक' (१९२३) इतिहास-प्रसिद्ध बौद्ध सम्राट् का चरित्र उपस्थित करता है। लक्ष्मीधर बाजपेयी का

'राजकुमार कुंतल' (१९२८) हिंदू-युग की एक कथा को लेकर लिखा गया है। जयशंकर 'प्रसाद' का 'स्कंदगुप्त' (१९२८) प्रसिद्ध हिंदू सम्राट् विक्रमादित्य के जीवन की घटनाओं को लेकर उस युग की संस्कृति का एक सफल चित्रण करता है। उनका एक दूसरा नाटक 'चंद्रगुप्त मौर्य' (१९३१) उसी वीर सम्राट् के जीवन का चित्रण करता है जो इसी नाम के उपर्युक्त दूसरे नाटकों का विषय है। उदयशंकर भट्ट के 'चंद्रगुप्त मौर्य' (१९३१ द्वितीय) तथा 'विक्रमादित्य' (१९३३) के भी विषय वही हैं जो जयशंकर 'प्रसाद' के उक्त नाटकों के हैं। उनका 'दाहर' (१९३४) खलीफा द्वारा की गई सिंध-विजय से संबंध रखता है। जयशंकर 'प्रसाद' का 'ध्रुवस्वामिनी' (१९३४), हिंदू-युग की एक कथा को लेकर उपस्थित किया गया है। तंजौर की एक रानी के चरित्र को लेकर भगवतीप्रसाद पंथारी ने 'काल्पी' (१९३४) नाटक लिखा है। 'कुमार-हृदय' का 'भग्नावशेष' (१९३६) भी हिंदू-काल के इतिहास से संबंध रखता है। कैलाशनाथ भटनागर का 'कुणाल' (१९३७) बौद्ध-संस्कृति का एक चित्र उपस्थित करता है। चंद्रगुप्त विद्यालंकार का 'अशोक' (१९३५), रूपनारायण पांडेय का 'अशोक' (१९३९) तथा लक्ष्मीनारायण मिश्र का 'अशोक' [१९३९ ?] पुनः उस नाम के प्रसिद्ध बौद्ध सम्राट् के जीवन को लेकर लिखे गये हैं। गोविन्दवल्लभ पंत का 'अंतःपुर का छिद्र' (१९४०) एक बौद्धकालीन कथा को लेकर लिखा गया है। विश्वंभरसहाय के 'बुद्धदेव' (१९४०) का विषय प्रकट है। गोविन्ददास सेठ का 'कुलीनता' (१९४०) हैहयवंश के अंतिम त्रिपुरी-शासन-काल की घटनाओं को लेकर लिखा गया है। कैलाशनाथ भटनागर का 'श्रीवत्स' (१९४१) बौद्ध-युग के एक प्रसिद्ध नायक का चित्रण करता है। गोविंददास सेठ का 'शशिगुप्त' (१९४२) पुनः चंद्रगुप्त के जीवन को लेकर लिखा गया है।

अंग्रेजी शासन-काल की ऐतिहासिक कथावस्तु लेकर बहुत थोड़े नाटकों की रचना हुई है, और कदाचित् अभी कुछ दिनों तक विशेष न हो सकेगी। इन थोड़े से नाटकों में श्यामनारायण का 'वीर सरदार'

(१९०९), जो बरमा-युद्ध की एक घटना के आधार पर लिखा गया है, 'आरज़ू' का 'झाँसी-पतन' (१९२८), जमुनादास मेहरा का 'पंजाब-केसरी' (१९२८), द्वारकाप्रसाद मौर्य का 'हैदर अली' (१९३४), शिवदत्त ज्ञानी का तांत्या भील-संबंधी 'नीमाड़ केसरी' (१९३८) तथा परिपूर्णानंद वर्मा का 'रानी भवानी' (१९३८) उल्लेखनीय हैं।

मुस्लिम युग के इतिहास से संबंध रखनेवाले नाटक कई लिखे गए, किंतु इस युग में उनमें वह स्फूर्ति नहीं ज्ञात होती जो पिछले युग में दिखलाई पड़ी थी। पन्ना, संयोगिता तथा पद्मिनी के ही चरित्र प्रमुख रहे हैं। इस परंपरा के उल्लेखनीय नाटक कृष्णप्रकाश सिंह अखौरी का 'पन्ना' (१९१५), हरिदास माणिक का 'संयोगिता-हरण' (१९१५), किशनचंद 'ज़ेबा' का 'पद्मिनी' (१९२३), और कन्हैयालाल का 'वीर छत्रसाल' (१९२५) हैं। दुर्गाप्रसाद गुप्त कृत जसवंत सिंह की स्त्री महामाया के नाम से 'महामाया' (१९२४) तथा गढ़मंडला की वीर रानी दुर्गावती के नाम से 'दुर्गावती' (१९२६) की रचनाएँ भी उल्लेखनीय हैं। श्यामाकांत पाठक का 'बुंदेलखंड-केसरी' (१९३४) भी छत्रसाल के जीवन से संबंध रखता है। धनीराम प्रेम की 'वीरांगना पन्ना' (१९३४) तथा गोविंदवल्लभ पंत का 'राजमुकुट' (१९३५) पुनः इतिहास-प्रसिद्ध पन्ना धाय के जीवन से संबंध रखते हैं। उपेन्द्रनाथ 'अश्क' के 'जय-पराजय' (१९३७) में राणा लाखा के पुत्र चंड की भीष्म-प्रतिज्ञा है। हरिकृष्ण प्रेमी का 'शिवा-साधना' (१९३७) शिवाजी के शासन से संबंध रखता है; और उनका 'रक्षा-बंधन' (१९३८) राजस्थान की उस प्राचीन प्रथा से संबंध रखता है जिसमें राजपूत नारियाँ वीरों के पास राखी भेजकर अपनी रक्षा के लिए उनसे भ्रातृसंबंध स्थापित कर लिया करती थीं। इस परंपरा के सबसे आधुनिक नाटक जगन्नाथप्रसाद 'मिलिंद' कृत 'प्रताप-प्रतिज्ञा' (१९३८), गौरीशंकर 'सत्येंद्र' का छत्रसाल द्वारा बुंदेलखंड की मुक्ति-संबंधी 'मुक्ति-यज्ञ' (१९३८), मायादत्त नैथानी का 'संयोगिता' (१९३९), तथा रूपनारायण पांडेय का 'पद्मिनी' (१९४२) हैं। यह नाटक पुनः उन्हीं

इतिहास-प्रसिद्ध चरित्रों को लेकर लिखे गए हैं जिनके विषय के नाटक इस युग के प्रारंभ में मिलते हैं।

इस परंपरा में भी अन्य देशों और जातियों के इतिहासों को लेकर नाटकों की रचना बहुत कम की गई है। प्रेमचंद का 'कर्बला' (१६२४) ही—जिसमें हसन-हुसैन के प्रसिद्ध धर्मयुद्ध का वर्णन किया गया है इस प्रकार का एकमात्र उल्लेखनीय नाटक है।

६. शृङ्गार-रस-प्रधान—यह नाटक-परंपरा प्रस्तुत काल के प्रारंभ में अपने प्राचीन रूप में थोड़ी बहुत अवश्य दिखाई पड़ी, किंतु फिर बड़ी तेज़ी से लुप्त हो गई। कन्हैयालाल बाबू का 'रत्न-सरोज' (१६१०), दुर्गादत्त पांडे का 'चंद्रानन्नी' (१६१७) और ब्रजनंदन सहाय का 'उषाङ्गिनी' (१६२५) ही इस परंपरा के उल्लेखनीय प्रयास हैं, और इनमें से भी अंतिम एक काव्यपूर्ण प्रयोग मात्र कहा जा सकता है।

७. प्रतीकवादी—इस काल में प्रतीकवादी नाटकों की परंपरा भी शिथिल रही। जयशंकर 'प्रसाद' का 'कामना' (१६२७) तथा सुमित्रानंदन पंत का 'ज्योत्स्ना' (१६३४) ही इसमें उल्लेखनीय हैं। पहले में यह दिखाया गया है कि विलास के साधन किस प्रकार समाज में अशांति उत्पन्न कर देते हैं, और दूसरे में प्रकृति के पात्रों द्वारा मानव-समाज की संघर्ष-प्रधान परिस्थितियों की समालोचना कराई गई है।

८. सामयिक और राष्ट्रीय—देश की समस्याओं को लेकर इस काल में बहुत से नाटक लिखे गए—जैसे पिछले काल में, किंतु इनमें प्रायः कला और सुरुचि का अभाव रहा। इनका विशेष उत्थान १६२१ के राष्ट्रीय आंदोलन के समय में हुआ—आगे और पीछे इनकी रचना यदा-कदा ही होती रही। प्रारंभ के प्रयासों में से उल्लेखनीय हैं प्रयाग-प्रसाद त्रिपाठी कृत 'हिंदी-साहित्य की दुर्दशा' (१६१४), तथा लोचन-प्रसाद पाण्डेय कृत 'छात्र-दुर्दशा' (१६१५)—जिनके विषय स्वतः स्पष्ट हैं, मिश्रबंधु कृत 'नेत्रोन्मीलन' (१६१५), जिसमें अदालतों के दोषों का दिग्दर्शन कराया गया है, तथा काशीनाथ वर्मा कृत 'समय' (१६१७), जिसमें तत्कालीन राजनैतिक उद्योगों का एक चित्र मिलता

है। १६२१ के सत्याग्रह आंदोलन युग के प्रमुख नाटक हैं जमुनादास मेहरा का 'हिंद' (१६२२), किशनचंद 'ज़ेबा' के 'ग़रीब हिन्दुस्तान' (१६२२) तथा 'भारत-उद्धार' (१६२२), प्रेमचंद का 'संग्राम' (१६२२), कन्हैयालाल का 'देश-दशा' (१६२३), तथा लक्ष्मणसिंह का 'ग़ुलामी का नशा' (१६२४)। इनमें से प्रेमचंद की कृति ही विशेष उल्लेखनीय कही जा सकती है; उसमें कृषक-वर्ग की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। इधर के नाटकों में उल्लेखनीय हैं केवल बेचन शर्मा 'उग्र' कृत 'डिक्टेटर' (१६३७), सूर्यनारायण शुक्ल कृत 'खेतिहर देश' (१६३६), श्री वृन्दावनलाल वर्मा का 'धीरे-धीरे' (१६३६) तथा गोविन्ददास कृत 'विकास' (१६४१)। अंतिम में देश की आधुनिक राजनैतिक समस्याओं पर विचार किया गया है।

६. **सामाजिक नाटक**—पिछले युग के सामाजिक नाटकों की समस्याएँ थीं—अनमेल विवाह, सतीत्व, गोरक्षा तथा आर्यसमाज। यहीं तक उनके नाटककार पहुँच पाए। जीवन की और गंभीर समस्याओं तक उनकी दृष्टि नहीं पहुँची। प्रस्तुत युग में इस क्षेत्र में एक व्यापक और सूक्ष्म दृष्टि के दर्शन होते हैं—यद्यपि उसका विकास अत्यंत धीरे-धीरे होता है और प्रारंभ के कुछ वर्षों तक बिल्कुल नहीं होता। इस परंपरा के पहले उल्लेखनीय नाटक हैं आनंदप्रसाद खत्री कृत 'संसार-स्वप्न' (१६१३), लोचन शर्मा पांडेय कृत 'प्रेम-प्रशंसा' (१६१४) तथा राधेश्याम कथा-वाचक कृत 'परिवर्तन' [१६२४ ?]। प्रथम में संसार के प्रति एक वैराग्यपूर्ण दृष्टिकोण ज्ञात होता है, दूसरे में गार्हस्थ्य-जीवन का एक चित्र है, और तीसरे में वेश्यालयों से हानि दिखाई गई है। कृष्णानंद जोशी के 'उन्नति कहाँ से होगी ?' (१६१५) में कुछ व्यापक दृष्टिकोण ज्ञात होता है। अधिक व्यापक दृष्टिकोण का परिचय १६२१ के आंदोलन के बाद से मिलता है। गोपाल दामोदर तामस्कर के 'राधा-माधव' (१६२२) में कर्मयोग का उपदेश किया गया है। जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी के 'मधुर मिलन' (१६२३) में गुंडों के हथकंडों का परिचय कराया गया है। दुर्गाप्रसाद गुप्त के 'भारत-रमणी' में भारतीय नारीत्व

के आदर्श का चित्र उपस्थित करने का यत्न किया गया है। रामनरेश त्रिपाठी का 'सुभद्रा' (१९२४ द्वितीय) भी इसी कोटि में रक्खा जा सकता है। ईश्वरीप्रसाद शर्मा के 'रंगीली दुनियाँ' (१९२६) में वृद्ध-विवाह की बुराइयाँ दिखाई गई हैं। बलदेवप्रसाद खरे के 'प्रणवीर' (१९२६) में सत्य और धर्म के पालन का उपदेश किया गया है। छविनाथ पांडेय के 'समाज' (१९२९) में समाज का एक चित्र उपस्थित करने का यत्न किया गया है। जयगोपाल कविराज के 'पश्चिमी प्रभाव' (१९३०) का विषय स्वतः स्पष्ट है। घनानंद बहुगुणा के 'समाज' (१९३०) का विषय है अछूतोद्धार। लक्ष्मीनारायण मिश्र का 'संन्यासी' (१९३१) सहशिक्षा की बुराइयाँ चित्रित करता है। नरेन्द्र का 'नीच' (१९३१) दलित जातियों की समस्या लेकर लिखा गया है। आनंदस्वरूप साहब जी महाराज का एक नाटक 'संसार-चक्र' (१९३२) संसार के प्रति राधा-स्वामी समाज का दृष्टिकोण उपस्थित करता है। प्रेमचंद का 'प्रेम की वेदी' (१९३३) तथा प्रेमसहाय सिंह का 'नवयुग' (१९३४) अपने विषय स्वतः स्पष्ट करते हैं। लक्ष्मीनारायण मिश्र के 'राक्षस का मंदिर' (१९३१), 'मुक्ति का रहस्य' (१९३२), 'राजयोग' (१९३४) तथा 'सिंदूर की होली' (१९३४) नारी-समस्या-प्रधान हैं; इनमें से अंतिम में ही प्रेम का आदर्श उपस्थित करने का यत्न किया गया है, शेष दो में वह निम्नकोटि का है। गोविन्द-वल्लभ पंत का 'अंगूर की बेटी' (१९३७), जिसका विषय मधुपान है, कलाप्रधान है। बेचन शर्मा 'उग्र' के 'चुंबन' (१९३८) का विषय स्पष्ट है। उपेन्द्रनाथ 'अश्क' के 'स्वर्ग की झलक' (१९४०) में शिक्षा-प्राप्त पत्नियाँ पतियों के लिए भारस्वरूप हुआ करती हैं यह दिखाने का यत्न किया गया है। गोविन्ददास सेठ का 'सेवापथ' (१९४०) समाज-सेवा का एक आदर्श उपस्थित करता है। शारदा देवी का 'विवाह-मंडप' (१९४१) तथा बेचन शर्मा 'उग्र' का 'आवारा' (१९४२) सबसे आधुनिक सामाजिक नाटक हैं, और उनके विषय स्पष्ट हैं।

१०. व्यंग-विनोदपूर्ण—आलोच्यकाल में प्रहसनों के क्षेत्र में

कोई उल्लेखनीय विकास नहीं दिखाई पड़ता, न तो इनमें विषयों की नवीनता है और न दृष्टिकोण की; हास्य-उत्पादन के लिए अतिनाटकीय चरित्रों और घटनाओं का आश्रय लिया गया है। इस काल के किंचित् उल्लेखनीय प्रहसन हैं गुरुमुख सिंह का 'नूतन अंधेर नगरी' (१६११), अनंतसहाय अखौरी का 'गृह का फेर' (१६१३), बदरीनाथ भट्ट का 'चुंगी की उम्मीदवारी' (१६१४), शिवनाथ शर्मा के 'मानवी कमीशन' [१६१४ ?], 'नवीन बाबू' [१६१४ ?], 'बहसी पंडित' (१६१४), 'दरबारी लाल' [१६१४ ?], 'कलियुगी प्रह्लाद' [१६१४ ?] 'नागरी निरादर' [१६१४ ?], और 'चराडूलदास' [१६१४ ?], लोचन-प्रसाद पाण्डेय का 'साहित्य-सेवा' (१६१४) तथा 'ग्राम्य विवाह-विधान' (१६१५), गङ्गाप्रसाद (जी० पी०) श्रीवास्तव के 'उलट-फेर' (१६१८), 'दुमदार आदमी' (१६१६), 'गड़बड़झाला' (१६१६), और 'मर्दानी औरत' (१६२०), हरद्वारप्रसाद जालान का 'घरकट सूम' (१६२२), गोविन्दवल्लभ पंत का 'कंजूस खोपड़ी' (१६२३), रामदास गौड़ का 'ईश्वरीय न्याय' (१६२५), बदरीनाथ भट्ट का 'लबड़ धोंधों' [१६२६ ?], जिसमें छः प्रहसन हैं, तथा 'विवाह-विज्ञापन' (१६२७), गङ्गाप्रसाद (जी० पी०) श्रीवास्तव का 'भूलचूक' (१६२८), बेचन शर्मा 'उग्र' का 'चार बेचारे' (१६२६), ठाकुरदत्त शर्मा का 'भूलचूक' (१६२६), बदरीनाथ भट्ट का 'मिस अमेरिकन' (१६२६), सुदर्शन का 'आनरेरी मजिस्ट्रेट' (१६२६) तथा गङ्गाप्रसाद (जी० पी०) श्रीवास्तव के 'चाल बेढब' (१६३४), 'चोर के घर छिछोर (१६३४) तथा 'साहित्य का सपूत' (१६३५)। उपर्युक्त में से 'नूतन अंधेर नगरी' भारतेन्दु के 'अंधेर नगरी' के अनुकरण पर लिखा गया है। 'मर्दानी औरत' में लेखकों की दुर्दशा का चित्रण है। 'ईश्वरीय न्याय' में हमारी सामाजिक कमज़ोरियों का दिग्दर्शन कराया गया है। 'चार बेचारे' में संपादक, अध्यापक, सुधारक, तथा प्रचारक वर्ग की कमज़ोरियों का परिहास उपस्थित किया गया है। 'मिस अमेरिकन' में सेठों और अमीरों की हँसी उड़ाई गई है। शेष के विषय या तो उनके नामों से ही स्पष्ट हैं,

या वे इतने साधारण हैं कि उनके उल्लेख की आवश्यकता नहीं है। ये नाटक प्रायः इतने अस्वाभाविक हैं कि हमारे जीवन पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता, और ककदाच्चित् हमारे साहित्य और हमारी संस्कृति के इतिहास में इनका कोई स्थायी स्थान न हो सकेगा। हास्य की उच्चकोटि की प्रतिभा हिंदी लेखकों में जैसे दिखलाई ही नहीं पड़ी, और इस काल में यह अभाव पिछले काल से भी अधिक चिंत्य रहा।

११. स्फुट तथा एकांकी—एकांकी नाटक कोई नवीनता नहीं है: पुराने नाट्य-साहित्य में भी एकांकी मिलता है, और कई रूपों में मिलता है। एकांकी-परंपरा अवश्य नवीन है। और यह परंपरा प्राचीन नाट्य-शास्त्र के नियमों को लेकर नहीं चली है। इस परंपरा का विकास सामयिक पत्रों के लिए नाटकीय प्रबंधों की आवश्यकताओं का अनुभव करते हुए पाश्चात्य एकांकी के अनुकरण पर हुआ है। यह एकांकी जब पुस्तकाकार प्रकाशित हुए तो प्रायः संग्रह के रूप में। संग्रह का यह रूप आलोच्यकाल के प्रारंभ से ही मिलने लगता है, यद्यपि उस समय वह एकांकियों का उतना संग्रह नहीं था जितना छोटे नाटकों का। सुविधा के लिए हम दोनों को एक साथ ले सकते हैं। सोमेश्वरदत्त शुक्ल का 'तरल-तरंग' (१९११) पहला संग्रह है, इसमें दो नाटक संगृहीत हैं। मोहनसिंह के 'स्वरावली' (१९२८) में तीन सामाजिक प्रश्नरूपक हैं; कैलाशनाथ भटनागर के 'नाट्य-सुधा' (१९३३) तथा भुवनेश्वरप्रसाद के 'कारवाँ' (१९३५) में कई छोटे-छोटे विविध नाटक हैं; गणेशप्रसाद द्विवेदी का 'सुहागबिंदी' (१९३५) तथा रामकुमार वर्मा का 'पृथ्वीराज की आँखें' (१९३६) छः एकांकी नाटकों का संग्रह है। गौरीशङ्कर 'सत्येन्द्र' का 'कुनाल' (१९३७) भी एकांकी है। राधेश्याम कथावाचक का एक एकांकी है 'घंटा पंथ' (१९३९); द्वारकाप्रसाद का एक एकांकी है 'आदमी' (१९४०); सद्‌गुरुशरण अवस्थी के 'दो एकांकी नाटक' (१९४०) एकत्र संगृहीत हैं; श्री उदयशंकर भट्ट का 'अभिनव' एकांकी नाटक (१९४०) छः एकांकी नाटकों का संग्रह है; गोविन्ददास सेठ के 'सप्तरश्मि' (१९४१) में

सात एकांकी हैं; रामकुमार वर्मा के 'रेशमी टाई' (१९४१) में पाँच एकांकी हैं; और उनके 'चारुमित्रा' (१९४२) में चार; गोविन्द-दास के 'पंचभूत' (१९४२) में पाँच एकांकी नाटक हैं; और उदय-शंकर भट्ट का 'स्त्री का हृदय' (१९४२) सात एकांकी नाटकों का संग्रह है। इस परंपरा में सबसे आधुनिक है प्यारेलाल का 'माता की सौगात' (१९४२), जिसमें पाँच एकांकी संगृहीत हैं। इनमें से राधेश्याम का 'घंटापंथ' हास्य-प्रधान है, और द्वारकाप्रसाद के 'आदमी' में विवाह की आवश्यकता का समर्थन है, शेष एक से अधिक नाटकों के संग्रह हैं और उनके विषय भी विभिन्न प्रकार के हैं। इस नवीन परंपरा में एक नवजीवन और स्फूर्ति दिखाई दे रही है जिससे इसका भविष्य उज्ज्वल ज्ञात होता है।

नाटक यद्यपि पिछले युग में खूब लिखे गए थे, और आदर्शों में वे अपने युग के साथ भी रहे थे, किंतु उनमें तत्र कला का विकास यथेष्ट नहीं हुआ था, और वह इस युग में हुआ। नाटक इस युग में अच्छे से अच्छे शिल्पियों के हाथ में पड़ा, और वह भली भाँति चमका, यद्यपि कभी-कभी इसी कारण से वह दृश्यकाव्य की अपेक्षा श्रव्यकाव्य अधिक हो गया। हिंदी रंगमंच के अभाव में इस अतिक्रम से किसी हानि की संभावना नहीं जान पड़ती। अपना रंगमंच होने पर उसके अनुसार हिंदी नाटक पुनः अपने को व्यवस्थित कर सकता है। उसका भविष्य आशापूर्ण ज्ञात होता है।

निबंध

इस युग में यद्यपि निबंध-ग्रंथों की माँग बढ़ी फिर भी अन्य ललित साहित्यरूपों के बराबर नहीं: यही कारण है कि इस विकास-काल में भी जब कि पत्र-पत्रिकाएँ अनेक हैं, और उनमें निबंधों की कमी नहीं है, निबंध-संग्रह इने-गिने हैं।

अध्ययन के लिए हम प्रस्तुत विषय के साहित्य को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित कर सकते हैं: १. विशिष्ट विषयों के निबंध, २. विविध विषयों के निबंध-संग्रह, ३. गद्य-गीति तथा ४. विनोद-व्यंग्य।

१. विशिष्ट विषयों के निबंध—विशिष्ट विषयों के निबंध इने-गिने हैं: गोपाललाल खत्री लिखित 'राष्ट्र-सुधार में नाटकों का भाग' (१९१२), 'रेशम' लिखित 'उन्नति' (१९२२), तथा अमीरअली 'मीर' कृत 'मातृभाषा की महत्ता' (१९३४)। कुछ निबंध स्वतंत्र विषयों की सूची में भी मिलेंगे, किंतु उनमें विषय-विवेचन ही प्रायः सब कुछ है, कला-पक्ष गौण है, इसलिए उनका उल्लेख यहाँ नहीं किया गया है।

२. विविध विषयों के निबंध-संग्रह—संग्रहों में से उल्लेखनीय हैं जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी कृत 'गद्यमाला' (१९०९), सत्यदेव स्वामी कृत 'सत्य-निबंधावली' (१९१३), 'ग्रामीण' कृत 'किरण' (१९१६), मिश्रबंधु कृत 'पुष्पाञ्जलि' (१९१६), देवेन्द्रप्रसाद जैन कृत 'त्रिवेणी' (१९१७), महावीरप्रसाद द्विवेदी कृत 'रसज्ञ-रंजन' (१९२०), 'साहित्य-संदर्भ' (१९२८), 'साहित्य-सीकर' (१९३०), तथा 'अद्भुत आलाप' (१९२४), गोविन्दनारायण मिश्र कृत 'गोविन्द-निबंधावली' (१९२५), जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी कृत 'निबंध-निचय' (१९२६), जगदीश झा कृत 'तरङ्गिणी' (१९२८), डा० भगवानदास कृत 'समन्वय' (१९२८), महावीरप्रसाद द्विवेदी लिखित 'लेखाञ्जलि' (१९२८), रामचन्द्र शुक्ल कृत 'विचार-वीथी' (१९३०) तथा 'चिन्तामणि' (१९३९), पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी कृत 'मकरन्द-बिन्दु' (१९३१) तथा 'प्रबंध-पारिजात' (१९३२), महावीरप्रसाद द्विवेदी कृत 'विचार-विमर्श' (१९३१), हरिभाऊ उपध्याय कृत 'बुद्बुद' (१९३२), राधामोहन गोकुलजी कृत 'विप्लव' (१९३२), रघुबीरसिंह कृत 'बिखरे फूल' (१९३३), सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' कृत 'प्रबंध-पद्म' (१९३४), माधव मिश्र कृत 'निबंधमाला' (१९३६), जैनेन्द्रकुमार कृत 'जैनेन्द्र के विचार' (१९३७), प्रेमचन्द कृत 'कुछ विचार' (१९३९), सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' कृत 'प्रबंध-प्रतिमा' (१९४०), गङ्गाप्रसाद पाण्डेय कृत 'निबंधिनी' [१९४१ ?], नलिनीमोहन सान्याल कृत 'उच्च विषयक लेखमाला' (१९४१), मोहनलाल महतो कृत 'विचारधारा' (१९४१), धीरेन्द्र वर्मा कृत 'विचार-

धारा' (१९४२) तथा महादेवी वर्मा कृत 'शृङ्खला की कड़ियाँ' (१९४२)।

यदि इस परंपरा को ध्यानपूर्वक देखा जावे तो ज्ञात होगा कि इसकी रचनाओं को हम साधारणतः कुछ श्रेणियों में रख सकते हैं। पहली श्रेणी में वे होंगी जिनमें जीवन की विविध समस्याओं पर मननीय सामग्री मिलती है : जैसे उपर्युक्त में से 'समन्वय', 'शृङ्खला की कड़ियाँ', 'सत्य-निबंधावली', 'त्रिवेणी', 'तरंगिणी', 'बुदबुद', 'विप्लव', 'बिखरे फूल', 'प्रबंध-पद्म', 'प्रबंध-प्रतिमा' तथा 'जैनेन्द्र के विचार'। दूसरी श्रेणी में वे होंगी जिनमें विशेषरूप से साहित्य-चर्चा होगी : जैसे उपर्युक्त में से 'रसज्ञ-रञ्जन', 'साहित्य-सदंर्भ', 'साहित्य सीकर', तथा 'विचार विमर्श'। और, तीसरी श्रेणी में वे रचनाएँ आवेंगी जिनमें जीवन-पक्ष और साहित्य-पक्ष दोनों ही का अध्ययन मिलता है : जैसे उपर्युक्त में से 'विचार-वीथी', 'चिन्तामणि', तथा 'विचार-धारा'। खोज और अध्ययन की कमी है, विशेष रूप से कल्पना का ही आश्रय लिया जाता है। ऐसे खोज और अध्ययनपूर्ण निबंधों का अभी प्रारंभ ही हुआ है जिनमें हमारे जीवन और हमारे साहित्य का परस्पर सापेक्ष्य अध्ययन हुआ हो, और इनमें से धीरेन्द्र वर्मा की 'विचारधारा' अग्रगण्य है।

३. गद्यगीति—गद्यगीति की परंपरा का प्रवर्तन इसी युग की बात है। रायकृष्णदास की 'साधना' (१९१९), जिसमें उनकी भक्तिभावना के उद्‍गार हैं, इस परंपरा की पहली रचनाओं में से है। हरिप्रसाद द्विवेदी 'वियोगी हरि' की 'तरङ्गिणी' (१९२०), चतुरसेन शास्त्री का 'अन्तस्तल' (१९२१), हरिप्रसाद द्विवेदी 'वियोगी हरि' के 'अन्तर्नाद' (१९२६) 'पगली' (१९२८), 'भावना' (१९२९), और 'प्रार्थना' (१९२९), सद्‍गुरुशरण अवस्थी का 'भ्रमित पथिक' (१९२९), राय कृष्णदास के 'प्रवाल' (१९२९), तथा 'छांयापथ' (१९३०), दुर्गाशंकरप्रसाद सिंह का 'ज्वालामुखी' (१९२९), शांतिप्रसाद वर्मा का 'चित्रपट' (१९३२), लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु' का 'वियोग' (१९३२), हरिप्रसाद द्विवेदी 'वियोगी हरि' का 'ठंडे छींटे' (१९३३), देवशरण विद्यालंकार का

'तरंगित हृदय' (१९३६ द्वितीय), दिनेशनंदिनी चोरड्या के 'शबनम' (१९३६), 'मौक्तिक माल' (१९३७), तथा 'शारदीया' (१९३९), रघुवीरसिंह की 'शेष स्मृतियाँ' (१९३९), सियारामशरण गुप्त का 'झूठ-सच' (१९३९), गुलाबराय का 'मेरी असफलताएँ' (१९४०), 'रजनीश' की 'आराधना' (१९४१) तारा पाण्डेय की 'रेखाएँ' (१९४१), तथा हरिप्रसाद द्विवेदी 'वियोगी हरि' की 'मेरी हिमाक़त' (१९४२), इस परंपरा की अन्य उत्कृष्ट कृतियाँ हैं। इनमें प्रायः रहस्यवादात्मक अथवा छायावादात्मक भाव-चित्रों का अंकन हुआ है, किन्हीं-किन्हीं में देश की सामाजिक, राजनैतिक, तथा धार्मिक कमज़ोरियों पर चुभते हुए व्यंग्य हैं, और किसी में देश के पुनरुत्थान के लिए भगवान से प्रार्थना की गई है। गद्यगीति की इस परंपरा में यथेष्ट स्फूर्ति और जीवन है इसलिए यह आशा करना अनुचित न होगा कि इसका भविष्य उज्जवल है।

४. विनोद-व्यंग्य—निबंधों की इस परंपरा में पिछले युग की अपेक्षा कोई विशेषता नहीं दिखाई पड़ी। इस युग की उल्लेखनीय रचनाएं हैं सोमेश्वरदत्त कृत 'विनोद-वैचित्र्य' (१९१५), विजयानंद दुबे कृत 'दुबे जी की चिट्ठियाँ' (१९२६), गुलाबराय कृत 'ठलुआ क्लब' (१९२८) कैलाशचंद्र कृत 'विदूषक' (१९२८), कान्तानाथ चोंच कृत 'टाल-मटोल' (१९३५), 'छड़ी बनाम सोंटा' (१९३९), तथा 'चूना-घाटी' (१९४२), सरजूप्रसाद पंडा गौड़ कृत 'मिस्टर तिवारी का टेलीफोन' (१९३६), तथा 'चार चण्डूल' (१९३८)।

निरीक्षण से ज्ञात होगा कि ललित साहित्यरूपों में से सबसे कम निबंध साहित्य का विकास और प्रचार हुआ। ऐसा ज्ञात होता है कि हिंदी-जनता में अभी उनके पठन-पाठन के लिए यथेष्ट रुचि नहीं है। इस रुचि-उत्पादन के लिए निबंध-लेखकों को यत्नशील होना चाहिए।

साहित्य-शास्त्र

प्रस्तुत विषय के साहित्य का अध्ययन हम निम्न-लिखित शीर्षकों में कर सकते हैं : १. छंद-शास्त्र, २. अलंकार-शास्त्र, ३. ध्वनि- शास्त्र,

४. रस-शास्त्र, ५. नाट्य-शास्त्र, ६. उपन्यास, कहानी, पत्रलेखन-कला ६. साहित्यिक समस्याएँ, ८. साहित्यिक वाद-प्रवाद ९. कवि-कर्त्तव्य, १०. समालोचना-शास्त्र, ११. लेखन-कला, तथा १२. पत्रकार-कला।

१. छंद-शास्त्र— पिंगल अथवा छंद-रचना-संबंधी साहित्य अलोच्य काल में बहुत उपेक्षित रहा। केवलराम शर्मा कृत 'छंदसार-पिंगल' (१९१६), जगन्नाथप्रसाद 'भानु' कृत 'छंद-सारावली' (१९१७), नारायणप्रसाद 'बेताब' कृत 'पिंगल-सार' (१९२२), जैसी सामान्य रचनाओं के अतिरिक्त, जो इस काल के पूर्वार्द्ध में ही प्रकाशित हो चुकी थीं, इस क्षेत्र में कार्य नहीं हुआ। एक तुकों का कोष अवश्य प्रकाशित हुआ : वह हैं नारायणप्रसाद 'बेताब' कृत 'प्राशपुञ्ज' (१९१९)।

२. अलंकार-शास्त्र—अलंकार-संबंधी अच्छे ग्रंथ प्रायः आलोच्य काल के प्रारंभ में ही प्रकाशित हुए, इधर तो उनका क्षेत्र भी प्रायः सूना ही रहा। भगवानदीन लाला का 'अलंकार-मंजूषा' (१९१६), जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी का 'अनुप्रास-अन्वेषण' (१९१८), जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' का 'हिंदी काव्यालंकार' (१९१८), अर्जुनदास केडिया का 'भारती-भूषण' (१९३०), रामशंकर शुक्ल के 'अलंकार-पीयूष' (१९२९-३०) तथा अलंकार-कौमुदी' (१९३०) ही अलंकार विषय के अच्छे ग्रंथ हैं। इनमें से भी विशेष उल्लेखनीय 'अलंकार-पीयूष' तथा 'भारती-भूषण' हैं जिनमें विषय का शास्त्रीय विवेचन मिलता है। इस परंपरा का एक और ग्रंथ है जगन्नाथप्रसाद 'भानु' का 'अंक-विलास' (१९२५), जिसमें लेखक ने एक से लेकर नौ तक के अंकों द्वारा कविता और पहेलियों की रचना की है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इसमें कला की अपेक्षा चमत्कार प्रदर्शन ही विशेष है।

३. ध्वनि-शास्त्र—हिंदी में ध्वनि-शास्त्र का विकास नहीं हुआ। इस युग में भी केवल एक पुस्तक में विषय का विवेचन हुआ है : वह है भगवानदीन लाला की 'व्यंग्यार्थ-मंजूषा' (१९२७)।

४. रस-शास्त्र—रस-शास्त्र पर कुछ अच्छे ग्रंथ इस काल में लिखे गए। जगन्नाथप्रसाद 'भानु' का 'रस-रत्नाकर' (१९१९), गुलाबराय

का 'नवरस' (१९२१), कृष्णबिहारी मिश्र का 'नवरस-तरंग' (१९२५), अयोध्यासिंह उपाध्याय का 'रस-कलश' (१९२५), किशोरीदास वाजपेयी का 'रस और अलंकार' (१९३१) इस परंपरा के प्रमुख ग्रंथ हैं। 'रस-कलश' में विशेष रूप से नायिका-भेद का निरूपण किया गया है, और वह भी कुछ मौलिक उद्भावना के साथ। विशेष रसों में से केवल हास्य पर एक स्वतंत्र पुस्तक मिलती है: गङ्गाप्रसाद (जी० पी०) श्रीवास्तव का 'हास्यरस' (१९३४), और अपने विषय की यह एक उल्लेखनीय कृति है।

५. नाट्य-शास्त्र—नाट्य-शास्त्र-संबंधी रचनाएँ दो श्रेणियों में विभक्त हैं: पहली वे जो प्राचीन भारतीय नाट्य-शास्त्र के आधार पर हैं, और दूसरी वे जो पाश्चात्य नाट्य-शास्त्र का अनुसरण करती हैं। पहली श्रेणी की रचनाओं में से उल्लेखनीय हैं महावीरप्रसाद द्विवेदी का 'नाट्य-शास्त्र' (१९११), रामशंकर शुक्ल का 'नाट्य-निर्णय' (१९३०), तथा श्यामसुंदरदास का 'रूपक-रहस्य' (१९३२)। अंतिम में विषय का एक पूर्ण विवेचन मिलता है। दूसरी श्रेणी की रचनाएँ हाल में ही प्रकाश में आने लगी हैं; गोविन्ददास सेठ की 'नाट्य-कला-मीमांसा' (१९३६) इसी प्रकार की एक छोटी रचना है। इसी प्रसंग में 'हिंदी नाट्य-कला' (१९३७) नाम की वेदव्यास लाला की एक रचना का भी उल्लेख किया जा सकता है।

६. उपन्यास, कहानी, तथा पत्रलेखन-कला—उपन्यास, कहानी, तथा पत्रलेखन-कलाएँ नवीन युग की हैं, और इन पर अभी तक इने-गिने ही ग्रंथ निकले हैं। उपन्यास-कला पर विनोदशंकर व्यास की 'उपन्यास-कला' (१९४१), कहानी-कला पर कन्हैयालाल मुंशी की 'कहानी कैसे लिखनी चाहिए' (१९३२) तथा विनोदशंकर व्यास की 'कहानी-कला (१९३८), और पत्रलेखन-कला पर सूर्यबलीसिंह का 'लव-लेटर्स' (१९३९) इने-गिने उल्लेखनीय ग्रंथ हैं।

७. साहित्यिक समस्याएँ—इधर साहित्य की विभिन्न समस्याओं पर भी विचार किया जाने लगा है। मौलिकता को साहित्य की सृष्टि के

लिए एक आवश्यक उपादान मान कर उस पर दो ग्रंथ लिखे गए : हरिहरप्रसाद जिज्ञल का 'नया ग्रन्थकार' (१६२२) जिसमें उसे साहित्यिक चोरी से बचने के लिए आदेश किया गया है, तथा गोपाल दामोदर तामस्कर का 'मौलिकता' (१६२६), जिसका विषय स्पष्ट है। इसी प्रकार तीन और समस्याओं पर भी ग्रंथ लिखे गए : कन्हैयालाल गुप्त कृत 'चरित्र-चित्रण' (१६२३), लक्ष्मीधर वाजपेयी कृत 'काव्य और सङ्गीत' (१६३८) तथा करुणापति त्रिपाठी कृत 'शैली' (१६४२)। अंतिम में विशेष रूप से हिंदी की विभिन्न शैलियों पर विचार किया गया है।

८. साहित्यिक वाद-प्रवाद—काव्य-क्षेत्र में कुछ दार्शनिक प्रवृत्तियाँ, विभिन्न वादों के नाम से प्रचलित हुईं; उनके संबंध में भी कुछ ग्रंथ इस काल में मिलते हैं: पं० रामचन्द्र शुक्ल का 'काव्य में रहस्यवाद' (१६२६), लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु' का 'काव्य में अभिव्यञ्जनावाद' (१६३६), पुरुषोत्तमलाल का 'आदर्श और यथार्थ' (१६३७), जयशङ्कर 'प्रसाद' का 'काव्य और कला' (१६३६) तथा गङ्गाप्रसाद पाण्डेय का 'छायावाद और रहस्यवाद' (१६४१) उसी दिशा के प्रयास हैं। इस प्रकार के व्याख्यात्मक ग्रंथों की परंपरा अभी नई है, और आशा है कि इसमें यथेष्ट उन्नति होगी।

६. कवि-कर्त्तव्य—कवि-कर्त्तव्य विषयक ग्रंथ इस काल में पर्याप्त संख्या में लिखे गए; जगन्नाथदास विशारद अधिकारी का 'कवि-कर्त्तव्य (१६११), जगन्नाथप्रसाद 'भानु' का 'काव्य-प्रभाकर' (१६१०), जगन्नाथ 'गोप' का 'काव्य-प्रभाकर' (१६१४), सीताराम शास्त्री का 'साहित्य-सिद्धांत' (१६२३), गङ्गानाथ झा महामहोपाध्याय का 'कवि-रहस्य' (१६२६) तथा विहारीलाल भट्ट का 'साहित्य-सागर' (१६३७) इसी परंपरा के हैं। इनमें से 'कवि-रहस्य' सर्वोत्कृष्ट है, और अधिकार के साथ अपने विषय का निरूपण करता है।

६. समालोचना-शास्त्र—समालोचना-शास्त्र की नवीन परंपरा में

इस युग में अच्छे साहित्य की सृष्टि हुई। उल्लेखनीय हैं उसमें श्याम-सुन्दरदास कृत 'साहित्यालोचन' (१९२३), किशोरीदास वाजपेयी कृत 'साहित्य-मीमांसा' (१९२७), तथा 'साहित्य की उपक्रमणिका' (१९३०), कालिदास कपूर कृत 'साहित्य-समीक्षा' (१९३०), नलिनीमोहन सान्याल कृत 'समालोचना-तत्व' (१९३६), मोहनलाल महतो कृत 'कला का विवेचन' (१९३६), शान्तिप्रिय द्विवेदी कृत 'कवि और काव्य' (१९३७), गङ्गाप्रसाद पाण्डेय कृत 'काव्य-कलना' (१९३८), रामकुमार वर्मा कृत 'साहित्य-समालोचना' (१९३८), रामशङ्कर शुक्ल कृत 'आलोचनादर्श' (१९३८), गोपाललाल खन्ना कृत 'काव्य-कला' (१९३९), इलाचन्द्र जोशी कृत 'साहित्य-सर्जना' (१९४०), विनयमोहन कृत साहित्य-कला' (१९४०) तथा सूर्यकांत शास्त्री कृत 'साहित्य-मीमांसा' [१९४१ ?] इन ग्रंथों में साहित्यालोचन का स्थान सर्वोपरि कहा जा सकता है: उसमें कला के पूर्वीय और पाश्चात्य आदर्शों का समन्वय करते हुए ललित साहित्य के समस्त अंगों पर यथेष्ट विस्तार के साथ विचार किया गया है।

१०. लेखन-कला—लेखन-कला पर पुस्तकें प्रारंभिक ही हैं: सत्यदेव स्वामी की 'लेखन-कला' (१९१७), गुलाबराय का 'प्रबन्ध-प्रभाकर' (१९३४), सत्यजीवन वर्मा की 'लेखनी उठाने से पूर्व' (१९४०) तथा किशोरीदास वाजपेयी की 'लेखन-कला' (१९४१) इसी प्रकार की रचनाएँ हैं।

११. पत्रकारकला—पत्र-कार-कला पर एकांध ही पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं; उनमें से केवल नन्दकुमारदेव शर्मा की 'पत्र-सम्पादन-कला' (१९२३) उल्लेखनीय है।

इस निरीक्षण से ज्ञात होगा कि यद्यपि साहित्य-शास्त्र के साहित्य में इस युग में काफ़ी उन्नति हुई, और वह नवीन युग के साहित्य के निकट आ गया, पर अभी भी उसमें बहुत कमी है—विभिन्न साहित्यरूपों पर विस्तृत, गंभीर और वैज्ञानिक विवेचनों का प्रायः अभाव है।

जीवन-चरित्र*

प्रस्तुत विषय के साहित्य का निरीक्षण हम निम्नलिखित शीर्षकों में कर सकते हैं : १. आत्म-चरित्र, २. आधुनिक संत-चरित्र, ३. आधुनिक राजनैतिक चरित्र, ४. स्फुट चरित्र, ५. ऐतिहासिक चरित्र, ६. मध्ययुगीन संत-चरित्र, तथा ७. विदेशीय चरित्र।

१. आत्म-चरित्र—जीवनी-साहित्य के क्षेत्र में इस काल में एक नई परंपरा प्रकाश में आई; वह थी आत्मकथा-परंपरा। स्वामी दयानन्द का अत्यंत संक्षिप्त 'स्वरचित जीवन-चरित्र' (१९१७) अवश्य रचना के दृष्टिकोण से पिछले युग की वस्तु है, किंतु वास्तव में वह आत्मकथा-कोटि में नहीं आता, उसे एक सामान्य आत्म-परिचय मात्र समझना चाहिए। वास्तविक आत्मकथाएँ इसी युग में मिलती हैं। सत्यानन्द अग्निहोत्री की कुछ रचनाएँ इस युग के प्रारंभ में ही उत्कृष्ट आत्मकथा के रूप में हमारे सामने आती हैं : उनका 'मुझमें देव-जीवन का विकास' (१९१०-) जो ८०० पृष्ठों में है, उनका 'अपने देव-जीवन के विकास और जीवनव्रत की सिद्धि के लिए मेरा अद्वितीय त्याग' (१९१५-) जो १६०० पृष्ठों में है, और उनकी एक छोटी रचना 'अपने छोटे भाई के संबंध से मेरी सेवाएँ' (१९२१) आत्मकथा-साहित्य में उल्लेखनीय हैं। परमानन्द भाई की स्वलिखित देश-निर्वासन आदि की कथा 'आप बीती' (१९२१), रामविलास शुक्ल लिखित 'मैं क्रांतिकारी कैसे बना' (१९३३), भवानीदयाल सन्यासी की अपनी प्रवास-कहानी 'प्रवासी की कहानी' (१९३९), राजाराम की 'मेरी कहानी' (१९३९) घनश्याम-दास बिड़ला के 'डायरी के कुछ पृष्ठ' (१९४१) इस परंपरा की अन्य उत्कृष्ट रचनाएँ हैं।

२. आधुनिक संत-चरित्र—धार्मिक महापुरुषों के जीवन-चरित्रों की परंपरा में स्वामी दयानन्द का जीवन प्रारंभ में सबसे अधिक प्रिय विषय रहा : अखिलानन्द शर्मा लिखित और अनुवादित 'दयानन्द-दिग्विजय'

---

*यहाँ पर साहित्यकारों के जीवनवृत्त नहीं हैं, वे पीछे अन्यत्र आए हैं।

(१६१०) तथा स्वामी सत्यानन्द का 'दयानन्द-प्रकाश' (१६१६) उनमें से सर्वप्रमुख हैं। महात्मा मुंशीराम 'श्रद्धानन्द' लिखित 'आर्य-पथिक लेखराम' (१६१४) एक अन्य सुंदर वृत्त है। पूर्णसिंह वर्मा रचित 'भीमसेन शर्मा का जीवन-चरित्र' (१६१८) तथा जयकृष्ण लिखित उनके संबंध का एक संस्करण 'भीमसेन शर्मा से दो-दो बातें' (१६२४), पं० सत्यदेव लिखित 'स्वामी श्रद्धानन्द' (१६३३), सत्यदेव विद्यालङ्कार लिखित 'लाला देवराज' (१६३७), शिवनारायण द्विवेदी लिखित 'राजा राममोहनराय' (१६१७), 'एक भारतीय-हृदय' लिखित 'केशवचन्द्र सेन' (१६२०), गङ्गाप्रसाद उपाध्याय लिखित 'राजा राममोहनराय', 'केशवचन्द्र सेन', तथा 'स्वामी दयानन्द' (१६२०), नारायण स्वामी का 'श्री रामतीर्थ महाराज' (१६१४) तथा द्वारकानाथ तिवारी का 'रामकृष्ण-लीलामृत' (१६३६) अन्य उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

३. आधुनिक राजनैतिक चरित्र—राजनैतिक जीवनियों में से दयाचन्द्र गोयलीय लिखित 'कांग्रेस के पिता ए० ओ० ह्यूम' (१६१०), व्रजनाथ शर्मा लिखित 'सर विलियम वेडरबर्न' (१६१०), राधामोहन गोकुलजी का 'देशभक्त लाजपत' (१६१२), मुकुन्दीलाल वर्मा का 'कर्मवीर गांधी' (१६१३), सम्पूर्णानन्द का 'धर्मवीर गांधी' (१६१४), रामचन्द्र वर्मा का 'महात्मा गांधी' (१६१६), राजेन्द्रप्रसाद लिखित 'चम्पारन में महात्मा गांधी' (१६१६), 'एक भारतीय हृदय' लिखित 'भारत-भक्त ऐंड्रयूज़' (१६२२), नन्दकुमारदेव शर्मा का 'प्रेमपुजारी राजा महेन्द्रप्रताप' (१६२३), गोपीनाथ दीक्षित लिखित 'जवाहरलाल नेहरू' [१६३७ ?], मन्मथनाथ गुप्त लिखित 'चन्द्रशेखर आज़ाद' १६३८) तथा 'अमर शहीद यतीन्द्रनाथ दास' (१६३८), प्रेमनारायण अग्रवाल लिखित 'भवानीदयाल सन्यासी' (१६३६), जगदीशनारायण तिवारी लिखित 'सुभाषचन्द्र बोस' (१६४०), रामनरेश त्रिपाठी लिखित 'तीस दिन मालवीय जी के साथ' (१६४२) तथा घनश्यामदास बिड़ला लिखित 'श्री जमुनालाल जी' (१६४२) उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

४. स्फुट चरित्र—स्फुट चरित्रों में से किशोरीलाल गोस्वामी लिखित 'नन्हेलाल गोस्वामी' [१९१० ?], लालमणि नौठिया लिखित 'पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र' (१९१८); रघुवंशभूषणशरण का 'रूपकला-प्रकाश' (१९३२) तथा सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' लिखित किन्हीं पटवारीदीन भट्ट की हास्यपूर्ण जीवनी 'कुल्ली भाँट' (१९३९) प्रमुख हैं।

५. ऐतिहासिक चरित्र—ऐतिहासिक महापुरुषों के चरित्र खूब लिखे गए, और प्रायः यह चरित्र ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर लिखे गए यही इनकी विशेषता है। परमानन्द स्वामी का 'बुद्ध का जीवन-चरित्र' (१९०९), जगमोहन वर्मा का 'बुद्धदेव' (१९१७), जयशङ्कर प्रसाद का 'चन्द्रगुप्त मौर्य' [१९१२ ?], देवराज लाला का 'भीमदेव' (१९१९), जो जनसत्तात्मक शासन-प्रणाली के लिए राजपद का त्याग करता है, सम्पूर्णानन्द कृत 'सम्राट् हर्षवर्धन' (१९२०), गौरीशङ्कर चैटर्जी लिखित 'हर्षवर्धन' (१९३८); सम्पूर्णानन्द लिखित 'सम्राट् अशोक' (१९२४); विश्वेश्वरनाथ रेउ लिखित 'राजा भोज' (१९३२), तथा गङ्गाप्रसाद मेहता लिखित 'चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य' (१९३३) हिंदू युग के महापुरुषों के उत्कृष्ट जीवन-चरित्र हैं। मुस्लिम युग के चरित्रों में से उल्लेखनीय हैं नन्दकुमारदेव शर्मा लिखित 'मुग़ल सम्राट् बाबर' (१९०९), रघुनंदप्रसाद मिश्र लिखित 'शिवाजी और मराठा जाति' (१९१४), आनन्दकिशोर मेहता लिखित 'गुरु गोविन्दसिंह जी' (१९१४), बेनीप्रसाद लिखित 'गुरु गोविन्दसिंह' (१९१४), सूर्यनारायण त्रिपाठी का 'रानी दुर्गावती' (१९१४), सम्पूर्णानन्द का 'महाराज छत्रसाल' (१९१६), चन्द्रमौलि सुकुल लिखित 'अकबर' (१९१७), परमानन्द भाई लिखित 'वीर वैरागी' (१९२३) बाबा बंदा का जीवन-चरित्र, नन्दकुमार देव शर्मा लिखित 'वीरकेसरी शिवाजी' (१९२३), गोपाल दामोदर तामस्कर लिखित 'शिवाजी की योग्यता' (१९२६), मथुराप्रसाद दीक्षित लिखित 'नादिरशाह' (१९२४), हरविलास सारडा लिखित 'महाराणा सांगा' (१९२४), तथा व्रजरत्नदास लिखित 'बादशाह हुमायूँ' (१९३१)। अंग्रेज़ी युग के चरित्रों में से

लज्जाराम शर्मा मेहता का एक वीर जाट 'झुझार तेजा' (१९१४) की जीवनी, सम्पूर्णानन्द लिखित 'चेतसिंह और काशी का विद्रोह' (१९१९), बेनीप्रसाद लिखित 'रणजीत सिंह' (१९२०), नन्दकुमारदेव शर्मा लिखित 'पञ्जाब केसरी महाराणा रणजीत सिंह' (१९२०), सम्पूर्णानन्द लिखित 'महादजी सिंधिया' (१९२०), तथा हरिहरनाथ शास्त्री लिखित 'मीर कासिम' (१९२८) प्रमुख चरित्र हैं।

६. मध्ययुगीन संत-चरित्र—मध्ययुगीन संतों के चरित्रों में से उल्लेखनीय हैं गौरचरण गोस्वामी लिखित 'गौराङ्ग-चरित्र' (१९०९), शिवनन्दसहाय लिखित 'गौराङ्ग महाप्रभु' (१९२७), प्रभुदत्त कृत 'चैतन्य-चरितावली' (१९३३), परमानन्द स्वामी लिखित 'स्वामी शङ्कराचार्य' (१९१३) चतुर्भुजसहाय लिखित 'भक्तवर तुकारामजी (१९२९), हरिरामचन्द्र दिवेकर लिखित 'सन्त तुकाराम' (१९३७), अगरचन्द नाहटा लिखित—अकबर के समकालीन—'जिनचन्द्र सूरि' (१९३६), मङ्गल लिखित 'भक्त नरसिंह मेहता' (१९३७) तथा बलदेवप्रसाद बाहीक लिखित 'नामदेव-चरितावली' (१९३८)।

७ विदेशीय चरित्र—विदेशी महापुरुषों के जीवनवृत्तों में से प्रमुख हैं नाथूराम प्रेमी कृत 'जान स्टुअर्ट मिल' (१९१२), इन्द्र वेदालङ्कार कृत—जर्मनी के राजकुमार—'प्रिन्स बिस्मार्क' (१९१५), राधामोहन गोकुल जी लिखित 'नैपोलियन बोनापार्ट' (१९१७), शिवनारायण द्विवेदी लिखित 'कोलम्बस' (१९१७), बेनीप्रसाद लिखित 'महात्मा सुकरात' (१९१७), विश्वम्भरनाथ शर्मा लिखित 'रूस का राहु—रासपुटिन' (१९१९), इन्द्रवाचस्पति का इटली के नेता 'महावीर गैरीबाल्डी' (१९२०), राधामोहन गोकुल जी लिखित 'जोज़ेफ़ गैरीबाल्डी' (१९२२), सुरेन्द्रनाथ तिवारी लिखित 'वेदज्ञ मैक्समूलर' (१९२२), अशरफ़ी मिश्र लिखित 'धनकुबेर कारनेगी' (१९२४), सत्यव्रत लिखित 'अब्राहम लिङ्कन' (१९२८) लक्ष्मीसहाय माथुर लिखित 'बेञ्जामिन फ़्रैङ्कलिन' (१९२८), शिवकुमार शास्त्री लिखित 'नेलसन की जीवनी' (१९२८), नारायणप्रसाद अरोड़ा

लिखित 'डी वेलेरा' (१९३२), सत्यभक्त लिखित 'कार्ल मार्क्स' (१९३३), सदानन्द भारती लिखित 'महात्मा लेनिन' (१९३४), चन्द्रशेखर शास्त्री लिखित 'हिटलर महान' (१९३६), रामइक़बाल सिंह लिखित 'स्टालिन' (१९३९), त्रिलोकीनाथ सिंह लिखित 'स्टालिन' (१९४०), विश्वनाथराय लिखित 'चीन का क्रान्तिकारी राष्ट्र-निर्माता—सनयात सेन' (१९३९), जितेन्द्रनाथ सान्याल लिखित 'च्याङ्काई शेक' [१९४१ ?], तथा रामनारायण यादवेन्दु लिखित 'हिटलर की विचारधारा' (१९४१)। इस युग में जीवनी-साहित्य में यथेष्ट उन्नति हुई, किन्तु विकास के लिए क्षेत्र भी अभी बहुत है यह स्पष्ट हुआ होगा। प्रत्येक वर्ग के जीवनी-साहित्य में प्रामाणिक, पूर्ण और कला-प्रधान कृतियों की बड़ी कमी है। आशा है कि यह कमी धीरे-धीरे दूर हो जावेगी।

[वृत्त-संग्रह तथा] इतिहास*

प्रस्तुत विषय के साहित्य का निरीक्षण हम निम्नलिखित शीर्षकों में कर सकते हैं: १. वृत्त संग्रह, २. जीवनी-कोष, ३. भारतीय इतिहास, ४. भारतीय राजवंशों का इतिहास, ५. विशिष्ट जातियों और संप्रदायों का इतिहास, ६. स्थानीय इतिहास, ७. विदेशों का इतिहास, तथा ८. शासन-विकास।

१. वृत्त-संग्रह—इस काल की वृत्त-संग्रह-संबंधी प्रमुख रचनाएँ हैं देवेन्द्रप्रसाद जैन कृत 'ऐतिहासिक स्त्रियाँ (१९१३), शिवनन्दनसहाय कृत 'सिक्ख गुरुओं की जीवनी। [१९१७ ?] परमानन्द भाई लिखित 'देशपूजा में आत्म-बलिदान' (१९२१), जिसमें कतिपय भारतीय देश-भक्तों के जीवन-चरित्र हैं, उमादत्त कृत 'भारतीय देशभक्तों के कारावास की कहानी' (१९२१ द्वितीय), भूदेव विद्यालङ्कार लिखित 'स्वाधीनता के पुजारी' (१९२५), जिसमें रूस के क्रांतिकारियों की जीवनियाँ हैं, महावीरप्रसाद द्विवेदी कृत 'चरितचर्या' (१९३०), गिरीशचन्द्र त्रिपाठी लिखित 'महापुरुषों की प्रेम-कहानियाँ (१९३७), तथा 'महापुरुषों

*यहाँ पर साहित्यों के इतिहास नहीं हैं, वे अन्यत्र पीछे आए हैं।

की करुण कहानियाँ' (१९३७), देवीदयाल चतुर्वेदी लिखित 'दुनिया के तानाशाह' (१९४०), मोहनलाल महतो लिखित 'आरती के दीप' (१९४०), और श्यामनारायण कपूर लिखित 'भारतीय वैज्ञानिक (१९४२)।

२. जीवनी-कोष—जीवनी-कोष-संबंधी ग्रंथ इने-गिने हैं, जिनमें से केवल एक उल्लेखनीय है : द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी लिखित 'हिन्दी-चरिताम्बुधि' (१९२१)।

३. भारतीय इतिहास—भारतीय इतिहास-संबंधी ग्रंथों को हम चार वर्गों में रख सकते हैं : (क) सामान्य इतिहास, (ख) हिंदू युग का इतिहास, (ग) मुस्लिम युग का इतिहास, तथा (घ) अंग्रेज़ी युग का इतिहास।

सामान्य इतिहास-संबंधी ग्रंथों में उल्लेखनीय हैं उदयनारायण वाजपेयी लिखित 'प्राचीन भारतवासियों की विदेश यात्रा और वैदेशिक व्यापार' (१९११), बालकृष्ण का 'भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास' (१९१४–) हरिमङ्गल मिश्र का 'भारतवर्ष का इतिहास' (१९१४), जयचन्द्र विद्यालङ्कार के 'भारतीय इतिहास का भौगोलिक आधार' (१९२५), और 'भारतभूमि और उसके निवासी' (१९३१), विद्याभास्कर शुक्ल का 'प्राचीन भारतीय युद्ध' (१९३१), जयचन्द्र विद्यालङ्कार के 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा' (१९३४–), तथा 'इतिहास प्रवेश' (१९३८), सत्यकेतु विद्यालङ्कार की 'अपने देश की कथा' (१९३८), कालिदास कपूर का 'भारतीय सभ्यता का विकास' (१९३९)। तथा श्रीप्रकाश का 'भारत के समाज और इतिहास पर स्फुट विचार' (१९४१), इसी प्रसंग में हम भारतीय कलाओं के कुछ इतिहास-ग्रंथों का उल्लेख कर सकते हैं : वे हैं एन० सी० मेहता की 'भारतीय चित्रकला' (१९३५), और राय कृष्णदास के 'भारत की चित्रकला' (१९३९) तथा 'भारत की मूर्तिकला' (१९३९)।

हिंदू युग के प्रमुख इतिहास-ग्रंथ हैं रामदेव का 'भारतवर्ष का इतिहास' (१९११ द्वितीय), जो केवल वैदिक तथा आर्ष काल तक आता

है, रघुनन्दनशरण सिंह का 'आर्य-गौरव' (१९१३), मिश्रबन्धु का 'भारतवर्ष का इतिहास' (१९१९–), धर्मदत्त कृत 'प्राचीन भारत में स्वराज्य' (१९२०), हरिमङ्गल मिश्र का 'प्राचीन भारत' (१९२०), गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा का 'अशोक की धर्मलिपियाँ' (१९२३), जनार्दनभट्ट का 'अशोक के धर्मलेख' (१९२४), चन्द्रराज भण्डारी का 'भारत के हिन्दू सम्राट्' (१९२४), आर्यमुनि का 'वैदिक काल का इतिहास' (१९२५), जनार्दन भट्ट का 'बुद्धकालीन भारत' (१९२६), कमलापति त्रिपाठी का 'मौर्यकालीन भारत का इतिहास' (१९२८), गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा की 'मध्यकालीन भारतीय संस्कृति' (१९२८), वेनीप्रसाद की 'हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता' (१९३१), रघुवीर सिंह कृत 'पूर्व मध्यकालीन भारत' (१९३१), महादेव शास्त्री दिवेकर का 'आर्य-संस्कृति का उत्कर्षापकर्ष' (१९३१), रघुनन्दन शास्त्री का 'गुप्तवंश का इतिहास' (१९३२), गङ्गाप्रसाद मेहता लिखित 'प्राचीन भारत' (१९३३), राहुल सांकृत्यायन की 'पुरातत्व-निबन्धावली' (१९३७), चन्द्रगुप्त वेदालङ्कार का 'बृहत्तर भारत' (१९३९), प्राणनाथ विद्यालङ्कार का 'हरप्पा तथा मोहेन-जो-दड़ो के प्राचीन लेख' (१९३९), सतीशचन्द्र काला का 'मोहेन-जो-दड़ो तथा सिन्धु-सभ्यता' (१९४१), भगवद्दत्त का 'भारतवर्ष का इतिहास' (१९४०), जो केवल गुप्तकाल तक है, तथा सम्पूर्णानन्द का 'आर्यों का आदि देश' (१९४१)। इसी प्रसंग में हम हिंदू युग की कला-संबंधी एक इतिहास का भी उल्लेख कर सकते हैं : वह है आर० एम० रावल लिखित 'अजन्ता के कला-मण्डप' (१९३८)।

मुस्लिम युग संबंधी इतिहास-ग्रंथों में प्रमुख हैं देवीप्रसाद मुंसिफ़ लिखित 'हिंदोस्तान में मुसलमान बादशाह' (१९०९), जिसमें उनकी एक तिथि-संयुक्त सूची है, रामनाथ पांडेय का 'भारत में पोर्चुगीज़' (१९१२), रामप्रसाद त्रिपाठी का 'महाराष्ट्रोदय' (१९१३), देशव्रत का, हिंदू-जाति का स्वातंत्र्य-प्रेम' (१९२०), मन्नन द्विवेदी का 'मुसलमानी राज्य का इतिहास' (१९२०), परमात्माशरण का

'मध्यकालीन भारत' (१९३५), तथा इन्द्र विद्यावाचस्पति का 'मुग़ल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण' (१९३८),।

अंग्रेज़ी-युग के प्रमुख इतिहास-ग्रंथ हैं अमृतलाल चक्रवर्ती का 'भरतपुर का युद्ध' (१९१२), शिवनारायण द्विवेदी का 'सन् १८५७ के ग़दर का इतिहास', (१९२२), ईश्वरीप्रसाद शर्मा का 'सन् सत्तावन का ग़दर' (१९२४), सूरजमल जैन का 'मराठे और अंग्रेज़' (१९२२), गङ्गाशङ्कर मिश्र का 'भारतवर्ष में बृटिश साम्राज्य' (१९३०), तथा रामनाथलाल 'सुमन' का 'जब अंग्रेज़ आए' (१९३०), इसी प्रसंग में हम स्वतंत्रता के अन्दोलनों से संबंध रखनेवाले कुछ इतिहास-ग्रंथों का भी उल्लेख कर सकते हैं कन्हैयालाल का 'कांग्रेस के प्रस्ताव' (१९३१), बैजनाथ महोदय लिखित 'विजयी बारदोली' (१९२९), जो गुजरात के बारदोली तालुक़े के लगानबंदी के आन्दोलन के संबंध में है, नवजादिकलाल का 'पराधीनों की विजय-यात्रा' (१९३४), जो दूसरी बार के कांग्रेस के सत्याग्रह-आन्दोलन से संबंध रखता है, तथा मन्मथनाथ गुप्त का 'भारत में सशस्त्र क्रान्ति-चेष्टा का रोमाञ्चकारी इतिहास' (१९३७) जिसका विषय प्रकट है।

४. राजवंशों का इतिहास—राजवंशों के इतिहासों में देवीप्रसाद मुंसिफ़ कृत 'पड़िहाड़-वंश-प्रकाश' (१९११), लक्ष्मीनारायण गर्दे लिखित 'महाराष्ट्र-रहस्य' (१९१२), नन्दकुमारदेव शर्मा का 'सिक्खों का उत्थान और पतन' (१९१७), विश्वेश्वरनाथ रेउ का 'क्षत्रप वंश का इतिहास' (१९१९) तथा 'भारत के प्राचीन राजवंश' (१९२६-), प्रतिपाल सिंह ठाकुर का आर्यदेवकुल का इतिहास' (१९२८), गोपाल दामोदर तामस्कर का 'मराठों का उत्थान और पतन' (१९३१), विश्वेश्वरनाथ-रेउ का 'राठौड़ों का इतिहास' (१९३४), सुरेश्वरानंद का 'कैकयवंश चन्द्रोदय' (१९३९), तथा रामनारायण यादवेन्दु का 'यदुवंश का इतिहास' (१९४२) महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं।

५. जातीय और धार्मिक इतिहास—जातियों और धर्मों का एक सामान्य इतिहास है शिवशङ्कर मिश्र का 'भारत का धार्मिक इति-

हास' (१६२३)। विशेष जातियों और धर्मों के इतिहास-ग्रंथों में उल्लेखनीय हैं पूरनचंद नाहर का 'जैन-लेख-संग्रह' (१६१८-) शीतल-प्रसाद ब्रह्मचारी लिखित 'मध्यप्रांत, मध्य-भारत और राजपूताने के प्राचीन जैन, स्मारक' (१६२६),—अयोध्याप्रसाद गोयलीय लिखित 'जैन-वीरों का इतिहास' (१६३०) तथा 'मौर्य-साम्राज्य के जैन वीर' (१६३२), हीरालाल जैन लिखित 'जैन इतिहास' की पूर्व-पीठिका '(१६१६), कामताप्रसाद जैन लिखित 'संक्षिप्त जैन इतिहास' (१६४१) तथा संपादित 'प्रतिमा लेख-संग्रह' (१६४२), जो जैन-धर्म के इतिहास से संबंध रखते हैं, भदन्त आनन्द कौसल्यायन लिखित 'बुद्ध और उनके अनुचर' (१६३७), जो बौद्धधर्म-संबंधी है, कण्ठमणि शास्त्री का 'काङ्करौली का इतिहास' (१६३६) जो पुष्टिमार्ग-संबंधी है, बालचन्द मोदी लिखित 'देश के इतिहास में मारवाड़ी जाति का स्थान' (१६४०), परमेश्वरीलाल गुप्त लिखित 'अग्रवाल जाति का इतिहास' (१६४२) तथा रामलाल लौला कृत 'जाट क्षत्रिय-इतिहास' (१६४१) जो विशेष जातियों से संबंध रखते हैं।

६. स्थानीय इतिहास—स्थानीय इतिहास-ग्रंथों में से उल्लेखनीय हैं: रामनारायण दूगड़ लिखित 'राजस्थान-रत्नाकर' (१६०६), नारायण पाण्डेय लिखित 'नेपाल' [१६१० ?], सकलनारायण पाण्डेय लिखित 'आरा-पुरातत्व' (१६१०), गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा लिखित सिरोही-राज्य का इतिहास' (१६११), सम्पूर्णानन्द लिखित 'भारत के देशी राष्ट्र' (१६१८), गौरीशङ्करलाल लिखित 'चित्तौर की चढ़ाइयाँ' (१६१६), शिवपूजन सहाय लिखित 'बिहार का बिहार' (१६१६), देवीप्रसाद मुंसिफ़ लिखित 'सिन्ध का इतिहास' [१६२१ ?] वृन्दावन भट्टाचार्य लिखित 'सारनाथ का इतिहास' (१६२२), रामेश्वर प्रसाद वर्मा लिखित 'लङ्का का इतिहास' (१६२२), नन्दकुमार देव शर्मा का 'पञ्जाब का हरण और महाराजा दिलीपसिंह' (१६२२), गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा लिखित्त 'राजपूताना का इतिहास' (१६२५-) जगदीशसिंह गहलोत लिखित 'मारवाड़ राज्य का इतिहास' (१६२५), सुखसम्पत्तिराय भंडारी

लिखित 'भारत के देशी राज्य' (१९२७), हरिकृष्ण रतूड़ी लिखित 'गढ़वाल का इतिहास' (१९२८), प्रतिपाल सिंह ठाकुर लिखित 'बुन्देलखण्ड का इतिहास' (१९२८), सीताराम लाला लिखित 'अयोध्या का इतिहास' (१९२९), गोरेलाल तिवारी लिखित 'बुन्देलखण्ड का इतिहास' (१९३३), हीरालाल रायबहादुर लिखित 'मध्यप्रदेश का इतिहास' (१९३७), बदरीदत्त पाण्डेय लिखित 'कुमाऊँ का इतिहास' (१९३७), विश्वेश्वर नाथ रेउ लिखित 'मारवाड़ का इतिहास' (१९३८), मथुरालाल शर्मा लिखित 'कोटा-राज्य का इतिहास' (१९३९), जगदीश सिंह गहलौत लिखित 'राजपूताने का इतिहास' (१९३९) व्योहार राजेन्द्र सिंह लिखित 'त्रिपुरी का इतिहास' (१९३९), रामशरण उपाध्याय लिखित 'मगध का प्राचीन इतिहास' [१९३९ ?] तथा पृथ्वीसिंह मेहता लिखित 'बिहार' एक ऐतिहासिक दिग्दर्शन (१९४०)।

७. विदेशीय इतिहास—पिछले काल की भाँति इस काल में भी विदेशों के इतिहास में दो भावनाएँ दिखलाई पड़ती हैं: एक सामान्य इतिहास की भावना, और दूसरी स्वातंत्र्य तथा क्रांति की भावना। किन्तु, दूसरे प्रकार की भावना पिछले युग में केवल अंकुरित ही मिलती है, पल्लवित वह इस युग में हुई। कांग्रेस के आन्दोलनों के कारण उत्पन्न सामूहिक चेतना के फल-स्वरूप। पहले प्रकार की भावना के कारण लिखे गए इतिहास-ग्रंथों में उल्लेखनीय हैं सोमेश्वरदत्त शुक्ल के 'फ्रांस का इतिहास' (१९०८), 'जर्मनी का इतिहास' (१९०८), तथा 'इंग्लैंड का इतिहास' (१९११), मिश्रबन्धु का 'रूस का इतिहास' (१९०९), तथा 'जापान का इतिहास' (१९०९), नटवर चक्रवर्ती लिखित 'रूस-जापान-युद्ध' (१९०९), जीतन सिंह लिखित 'रूस-रूम-युद्ध' (१९११), मनोहरचन्द्र मिश्र लिखित 'स्पेन का इतिहास' (१९१४), भवानीसिंह लिखित 'सर्विया का इतिहास' (१९१८), कृष्णबिहारी मिश्र लिखित 'चीन का इतिहास' (१९१८), प्राणनाथ विद्यालङ्कार लिखित 'इंग्लैंड स' (१९२६) शङ्करराव जोशी लिखित 'रोम-साम्राज्य'

(१६२१), प्यारेलाल गुप्त लिखित 'ग्रीस का इतिहास' (१६२३), वासुदेव लिखित 'राजनैतिक इतिहास' (१६२६) जिसमें मोरक्को, चीन, यूनान तथा पोलैंड के इतिहास हैं, गङ्गाप्रसाद लिखित 'अंग्रेज़ जाति का इतिहास' (१६३८), तथा रामकृष्ण सिन्हा लिखित 'प्राचीन तिब्बत' (१६४१) । दूसरे प्रकार की भावना से प्रेरित होकर लिखे गए इतिहास-ग्रंथों में से उल्लेखनीय हैं नन्दकुमारदेव शर्मा लिखित 'इटली की स्वाधीनता का इतिहास' (१६१५), भवानीदयाल सन्यासी का 'दक्षिण-अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास' (१६१६), रमाशङ्कर अवस्थी लिखित 'रूस की राज्यक्रान्ति' (१६२०), सम्पूर्णानन्द लिखित 'चीन की राज्यक्रान्ति (१६२१), सोमदत्त विद्यालंकार लिखित 'रूस का पुनर्जन्म' (१६२१), रमाशंकर अवस्थी लिखित 'लाल क्रान्ति' (१६२८), विश्वम्भरनाथ जिज्जा लिखित 'रूस में युगान्तर' (१६२३), छविनाथ पाण्डेय लिखित अमरीका कैसे स्वाधीन हुआ' (१६२३), सम्पूर्णानन्द लिखित 'मिश्र की स्वाधीनता' (१६२३), सत्यभक्त लिखित 'आयर्लैंड के ग़दर की कहानियाँ' (१६२७), प्यारेलाल गुप्त लिखित 'फ्रांस की राज्य-क्रांति' (१६२६), देवकीनंदन लिखित 'अमेरिका की स्वाधीनता का इतिहास' (१६३०), विश्वनाथ राय लिखित 'मिश्र की स्वाधीनता का इतिहास' (१६३६), तथा शङ्करदयालु श्रीवास्तव लिखित 'रूस की क्रान्ति' (१६४२) ।

इसी प्रसंग में हम ऐसे इतिहास-ग्रंथों का भी उल्लेख कर सकते हैं जो देश-समूहों से संबंध रखते हैं । इनमें भी उपर्युक्त दोनों भावनाओं के दर्शन होते हैं। पहले प्रकार की भावना से प्रेरित होकर लिखे गए ग्रंथों में से उल्लेखनीय हैं : शिवनारायण द्विवेदी लिखित 'युद्ध की झलक' (१६१४), प्राणनाथ विद्यालङ्कार लिखित 'सभ्यता का इतिहास' (१६१८), कृष्णकान्त मालवीय लिखित 'संसार-सङ्कट' (१६२०), पशुपाल वर्मा लिखित 'यूरोप का आधुनिक इतिहास' (१६२२), रामकिशोर शर्मा का 'यूरोप का इतिहास' (१६२७), श्रीनारायण चतुर्वेदी का 'संसार का संक्षिप्त इतिहास' (१६३५), रामनारायण यादवेन्दु का

'युद्ध छिड़ने से पहिले' (१९३६) तथा राजबहादुर सिंह का 'वर्तमान युद्ध में पोलैंड का बलिदान' (१९४०)। दूसरे प्रकार से लिखे गए इतिहास-ग्रंथों में उल्लेखनीय हैं इन्द्र वेदालङ्कार लिखित 'राष्ट्रों की उन्नति' (१९१४), लक्ष्मीनारायण गर्दे लिखित 'एशिया का जागरण' (१९२३), एस० एन० जोशी का 'एशिया की पराधीनता का इतिहास' (१९३०) तथा सुखसम्पत्तिराय लिखित 'संसार की क्रांतियाँ' (१९३०)।

८. शासन-विकास—शासन-विकास के इतिहास इस काल में भी इने-गिने हैं। उल्लेखनीय उनमें से हैं शेषमणि त्रिपाठी का 'अकबर की राज्य-व्यवस्था' (१९२१), गोपाल दामोदर तामस्कर लिखित 'यूरोप के राजकीय आदर्शों का विकास' (१९२४), शालिग्राम शास्त्री का 'रामायण में राजनीति' (१९३१), रामप्रसाद त्रिपाठी का 'भारतीय शासन-विकास' (१९३६), जिसमें १६०० से १९३६ ई० तक का शासन-विकास विशद रूप से स्पष्ट किया गया है, और भगवानदास केला लिखित 'कौटिल्य की शासन-पद्धति' (१९४१)।

इस निरीक्षण से ज्ञात हुआ होगा कि यद्यपि इतिहास के कुछ अंगों पर परिश्रम हुआ है, किंतु अभी समस्त अंगों पर खोजपूर्ण और मौलिक कार्य की आवश्यकता है, और किसी भी अंग का साहित्य पर्याप्त नहीं माना जा सकता।

देश-दर्शन

प्रस्तुत विषय के साहित्य को निरीक्षण के लिए हम निम्नलिखित शीर्षकों में विभाजित कर सकते हैं : १. प्रसिद्ध भारतीय स्थान, २. भारतीय अर्थ-शास्त्र, ३. भारतीय व्यापार, ४. भारतीय ग्रामीय अर्थ-शास्त्र, ५. भारतीय संस्कृति, ६. भारतीय शासन, ७. विदेश-दर्शन, ८. विश्व-दर्शन, ९. आर्थिक और वैधानिक वाद-प्रवाह तथा, १०. अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था।

१. भारतीय स्थान—आलोच्यकाल में कुछ ऐसी कृतियाँ मिलती हैं जिनमें भारत के मुख्य-मुख्य स्थानों के परिचय मिलते हैं: सत्यदेव स्वामी का 'मेरी कैलाश-यात्रा' (१९१५), शिवनन्दनसहाय

का 'कैलाश-दर्शन' (१६३४), हीरालाल लिखित 'दमोह दीपक' (१६१७), 'जबलपुर-ज्योति' (१६१६), तथा 'सागर-सरोज' (१६२२), भगवतीप्रसाद सिंह का 'बनारस के व्यवसायी' (१६२०), बालमुकुन्द गुप्त का 'बनारस' (१६२४), पूरनचन्द नाहर का 'जैसलमेर' (१६२८), सीताराम लाला का 'चित्रकूट की झाँकी' (१६३०), वासुदेवशरण अग्रवाल का 'श्रीकृष्ण की जन्मभूमि' (१६३७), विजयधर्म सूरि का 'आबू' (१६३३), श्रीगोपाल नेवटिया का 'काश्मीर' (१६३४), राहुल सांकृत्यायन की 'लङ्का' (१६३५), मनोरञ्जन का 'उत्तराखंड के पथ पर' (१६३६), केशरीमल अग्रवाल का 'दक्षिण तथा पश्चिम के तीर्थस्थान' (१६३७), शालिग्राम श्रीवास्तव का 'प्रयाग-प्रदीप' (१६३७), गुरुनाथ शर्मा का 'मैसूर में' (१६४१), तथा मदनमोहन नागर का 'सारनाथ का संक्षिप्त परिचय' (१६४१) इस प्रकार की रचनाओं में प्रमुख हैं।

२. भारतीय अर्थ-शास्त्र—भारतीय अर्थ-शास्त्र के संबंध में पिछले काल में प्रायः कोई उल्लेखनीय ग्रंथ नहीं मिलता। इस काल के प्रारंभ से ही इस विषय की रचनाएँ मिलने लगती हैं। राधामोहन गोकुल जी का 'देश का धन' (१६१०), पारसनाथ द्विवेदी की 'देश की दशा' (१६१५), शिवनन्दनसिंह का 'देश-दर्शन' (१६१८), राधाकृष्ण झा की 'भारत की साम्पत्तिक अवस्था' (१६२२), गणेशदत्त शर्मा का 'भारत में दुर्भिक्ष' (१६२१), प्राणनाथ विद्यालङ्कार का 'किसानों पर अत्याचार' (१६२१), सुखसम्पत्ति राय भंडारी का 'भारत-दर्शन' (१६२१), अमरनाथ बली, का 'भारतीय अर्थशास्त्र' (१६२३), प्राणनाथ विद्यालङ्कार का 'भारतीय सम्पत्ति-शास्त्र' (१६२३), प्यारेलाल गङ्गरांडे का 'आधुनिक भारत' (१६२३), सियाराम दुबे का 'हिन्दुस्तान की कर-संस्थिति' (१६२४), भगवानदास केला का 'भारतीय अर्थशास्त्र' (१६२५-), शङ्करसहाय सक्सेना का 'भारतीय सहकारिता आन्दोलन' (१६३५) तथा उत्तमचन्द मोहता का 'भारतीय गोशालाएँ' (१६४०), देश की विविध आर्थिक समस्याओं का अध्ययन प्रस्तुत करते हैं।

३. भारतीय व्यापार—भारतीय व्यापारादि के संबंध में भी इस काल के प्रारंभ से ही पुस्तकें मिलने लगती हैं : हरिनारायण टण्डन की 'भारतीय वाणिज्य की डायरेक्टरी' (१९१०) में अन्य बातों के साथ-साथ हिंदी पत्रिकाओं, पुस्तकालयों, और संस्थाओं की भी सूची दी हुई है; नागरमल केडिया की 'तीसी' (१९१६) में उसके उत्पादन-क्षेत्र, विक्रय-क्षेत्र तथा अन्य प्रयोजनीय विषयों का समावेश हुआ है। तीर्थराम सेठी के 'वज़न-प्रकाश' का विषय स्पष्ट है। ईश्वरदास जालान का 'लिमिटेड कम्पनियाँ (१९२३), 'इण्डियन कम्पनीज़ ऐक्ट' के आधार पर लिखा गया है, और उसी प्रकार कस्तूरमल बाँठिया का 'कम्पनी-व्यापार-प्रवेशिका' भी। रामनिवास पोद्दार का भारत में 'रेल-पथ' (१९२४), सियाराम दुबे का 'स्टाक बाज़ार या सट्टा' (१९२४), तथा गौरीशङ्कर शुक्ल का 'स्टाक इक्सचेंज' (१९२६) अपने विषयों के अच्छे परिचायक हैं। अज्ञात संपादकों द्वारा प्रस्तुत 'भारतीय व्यापारियों का परिचय' (१९२९) एक बड़ी और महत्वपूर्ण व्यापारिक डायरेक्टरी है। इसी प्रसंग में रघुनाथ विनायक धुलेकर सम्पादित 'मातृभूमि शब्दकोष' का भी उल्लेख किया जा सकता है जो 'इण्डियन इयरबुक' के ढंग का प्रकाशन है और १९३९ से प्रकाशित हो रहा।

४. ग्रामीय अर्थ-शास्त्र—देश के ग्रामीय अर्थ-शास्त्र पर स्वतंत्र पुस्तकें ज़रा देर में निकलना प्रारंभ हुईं। दयाशङ्कर दुबे का 'भारत में कृषि-सुधार' (१९२३), शङ्करराव जोशी का 'ग्राम-संस्था' (१९२४), ब्रजगोपाल भटनागर का 'ग्रामीय अर्थशास्त्र' ([illegible]), अच्युतानन्द का 'गाँव' [१९३९ ?] सुखदेवबिहारी माथुर का 'हमारे गाँव' [१९३९ ?] मुख्त्यार सिंह का 'हमारे गाँव और किसान' (१९४०), शङ्करसहाय सक्सेना का 'गाँवों की समस्या' (१९४१) तथा [illegible]नारायण अग्रवाल का 'ग्रामीण अर्थ-शास्त्र और सहकारिता' ([illegible]) इस प्रकार की प्रमुख रचनाएँ हैं।

५. भारतीय संस्कृति—भारतीय संस्कृति के परिचायक ग्रंथ भी

भी देर से निकले, और संख्या में भी इने-गिने ही हैं। कन्नोमल का 'संसार को भारत का सन्देश' (१९२३), महेशचन्द्रप्रसाद का 'हिंदू-सभ्यता' (१९२६), सुरेन्द्रनाथ शास्त्री का 'भारतीय शिक्षा' (१९२६), कृष्णाव्यंकटेश का 'भारतीय लोक-नीति और सभ्यता' (१९३१), तथा रामनारायण यादवेन्दु का 'भारतीय संस्कृति और नागरिक जीवन' (१९४२) इनमें प्रमुख हैं। कुछ ग्रंथ देश में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति पर भी मिलते हैं : सुरेन्द्रनाथ शास्त्री का 'प्राचीन और वर्तमान भारतीय महिला' (१९२७), स्फुर्ना देवी का 'अबलाओं का इन्साफ़' (१९२७), रामनाथलाल 'सुमन' का 'भाई के पत्र' (१९३१), मुकुट-विहारी वर्मा का 'स्त्री-समस्या' (१९३१), सुमित्रादेवी का 'नवीन युग का महिला-समाज' (१९३२), चंद्रावती लखनपाल का 'स्त्रियों की स्थिति' (१९३३) तथा सत्यदेव विद्यालंकार का 'परदा' (१९३६), उनमें से उल्लेखनीय हैं।

६. भारतीय शासन—भारतीय शासन तथा शासन-संस्थाओं पर इस काल में कृतियाँ बाहुल्य से मिलती हैं। शासन-विधान का अध्ययन प्रमुख रूप से दो बार हुआ : एक तो १९१९ के सुधारों के पूर्व तथा पुनः १९३७ के सुधारों के बाद। पहली बार के अध्ययन के प्रमुख ग्रंथ हैं भगवानदास केला का 'भारतीय शासन' (१९१५), अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी का 'भारतीय शासन-पद्धति' (१९१५-), तथा राधाकृष्ण झा का 'भारतीय शासन-पद्धति' (१९१५)। दूसरी बार के अध्ययन के प्रमुख ग्रंथ हैं रामनारायण यादवेन्दु का 'नवीन भारतीय शासन-विधान' (१९३८), हरिश्चन्द्र गोयल का 'भारत का नया शासन-विधान' (१९३८), कन्हैयालाल वर्मा का 'भारतीय राजनीति और शासन-पद्धति' (१९३९), श्रीकान्त ठाकुर का 'भारतीय शासन-व्यवस्था' (१९४०), कन्हैयालाल वर्मा का 'भारतीय-शासन' (१९४२), और बी० एम० शर्मा का 'भारत और संघ-शासन' (१९३९)। इधर पाकिस्तान तथा सांप्रदायिक समस्या पर भी कुछ रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं : उनमें से प्रमुख हैं रुद्रनारायण अग्रवाल की 'हिन्दुस्तान बनाम

पाकिस्तान' (१६४१), रामनारायण यादवेन्दु की 'पाकिस्तान' (१६४१), तथा उन्हीं की 'भारतीय साम्प्रदायिक समस्या' (१६४१)। शासन-विधान संबंधिनी संस्थाओं पर लिखे गए ग्रंथों में से विशेष उल्लेखनीय हैं भगवानदास केला लिखित 'भारतीय राजस्व' (१६२३), तथा दयाशङ्कर दुबे लिखित 'विदेशी विनिमय' (१६२६)। १६१६ के सुधारों से असंतुष्ट जनता को महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग-आंदोलन में सम्मिलित होने के कारण जो जेलयात्रा करनी पड़ी उसके अनुभव पुस्तक-रूप में भी प्रकाशित हुए हैं। इनसे भारतीय जेल-व्यवस्था पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। प्रमुख हैं लक्ष्मीनारायण गर्दे का 'जेल में चार मास' (१६२२), तथा उर्मिला शास्त्री लिखित 'कारागार' (१६३१)। एक और संस्था भारतीय शासन-विधान से विशेष रूप से संबद्ध है; वह है उपनिवेशों में भारतीयों के भेजने की। फ़ीजी, तथा दक्षिण और पूर्व अफ्रीका में इन भारतीयों के साथ वहाँ के गोरे नागरिकों का जो कटु व्यवहार रहा है उसके संबंध में हिंदी में यथेष्ट साहित्य इस युग के प्रारंभ से ही मिलता है: तोताराम सनाढ्य की 'कुली-प्रथा' (१६१५) तथा 'फ़ीजी में मेरे इक्कीस वर्ष' (१६१५) फ़ीजी के संबंध में, और भवानीदयाल सन्यासी के 'प्रवासी भारतवासी' (१६१८), 'नेटाली हिन्दू' (१६२०), 'दक्षिण अफ्रीका के मेरे अनुभव' (१६२६) तथा 'पर्चुगीज़ पूर्व अफ्रीका में हिन्दुस्तानी' (१६४२) दक्षिण और पूर्व अफ्रीका के संबंध में उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। सन्यासी जी को वहाँ सत्याग्रह के सिलसिले में एक बार जेलयात्रा भी करनी पड़ी थी, जिसका परिचय उन्होंने 'हमारी कारावास की कहानी, (१६१८) नामक ग्रंथ में दिया है। औपनिवेशक समस्या पर एक कृति और उल्लेखनीय है: वह है अमरनारायण अग्रवाल की 'प्रवासी भारत की वर्तमान समस्याएँ' (१६३५)।

७. विदेश-दर्शन—विदेशों के अध्ययन में उनकी शासन-संस्थाओं का अध्ययन इस काल में विशेष रूप से हुआ। इस युग के प्रारंभ में जापान के संबंध में एकाध पुस्तकें मिलती हैं—उदाहरणार्थ गदाधरसिंह

की 'जापानी राज्य-व्यवस्था' (१९१२), किंतु वे पिछले युग की परंपरा में हैं; और इधर जो जापान की ओर ध्यान आकृष्ट हुआ है वह बहुत हाल की बात है : राहुल सांकृत्यायन का 'जापान' (१९३६), सुरेन्द्र बालूपुरी का 'आधुनिक जापान' [१९४० ?] और रघुबीरसहाय का 'आज का जापान' (१९४१) इस नवीन दिलचस्पी के परिणाम हैं। प्रस्तुत काल के प्रारंभ में विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट हुआ अमेरिका की ओर : सत्यदेव स्वामी के 'अमेरिका-पथ-प्रदर्शक' (१९११), 'अमेरिका-दिग्दर्शन' (१९१२), तथा 'अमेरिका-भ्रमण' (१९१३), जगन्नाथ खन्ना का 'अमेरिका का व्यवसाय और उसका विकास' (१९१४), 'अमेरिका में डा० केशवदेव जी शास्त्री' (१९१९), देवीप्रसाद 'प्रीतम' का 'अमरीकन संयुक्त राज्य की शासन-प्रणाली' (१९२१), तथा महेन्दुलाल गर्ग का 'अमेरिकन स्त्री-शिक्षा' (१९२८), उसी के परिणाम हैं। रूस की ओर हिन्दी लेखकों का ध्यान गत महायुद्ध के बाद आकृष्ट हुआ, जब वह सोवियत हो चुका था : प्राणनाथ विद्यालङ्कार का 'रूस का पञ्चवर्षीय आयोजन' (१९२३), तथा राजबहादुर सिंह का 'रूस का पञ्चवर्षीय आयोज़न' (१९३२) उसके प्रसिद्ध औद्योगिक आयोजनों के संबंध में हैं; शौकत उस्मानी का 'मेरी रूस-यात्रा' (१९२८), प्रभुदयाल मेहरोत्रा का 'आधुनिक रूस' (१९३४), राहुल सांकृत्यायन की 'सोवियत भूमि' (१९३८), तथा सत्यनारायण का 'रोमाञ्चकारी रूस' (१९३९) उसके जीवन के विविध पक्षों का परिचय कराते हैं। जर्मनी की ओर भी हिन्दी लेखकों का ध्यान गत महायुद्ध के बाद गया : पशुपाल वर्मा का 'जर्मनी में लोक-शिक्षा' (१९१९), हरदयाल लाला का 'जर्मनी और तुर्की में ४४ मास' (१९२१), स्वामी सत्यदेव की 'मेरी जर्मन-यात्रा' (१९२६ द्वितीय), कन्हैयालाल वर्मा की 'नाज़ी जर्मनी' (१९३७), तथा रामनारायण यादवेन्दु का 'पाँचवाँ कालम क्या है ?' (१९४१) जर्मनी-विषयक ग्रंथों में प्रमुख हैं। इटैलियनों के विगत अफ्रीका के शासन के संबंध में भी एक पुस्तक है : वह है सत्यनारायण की 'युद्ध-यात्रा' (१९४०)। स्पेन के संबंध में एक पुस्तक है :

शिवदान सिंह चौहान की 'रक्त-रंजित स्पेन' [१६३६ ?]। यूरोप के संबंध की पुस्तकें हैं, राहुल सांकृत्यायन की 'मेरी यूरोप-यात्रा' (१६३५), धरमचन्द सरावगी की 'यूरोप में सात मास' (१६३७), चन्द्रभाल जौहरी की 'यूरोप की सरकारें' (१६३८), सत्यनारायण की 'यूरोप के झकोरे में' (१६३८), तथा 'आवारे की यूरोप-यात्रा' [१६४० ?], और वेङ्कटेशनारायण तिवारी की 'रणमत्त संसार' (१६४०)। एशिया के देशों में से रूस को छोड़ कर उल्लेखनीय पुस्तकें मिलती हैं केवल ईरान तथा तिब्बत के संबंध में : महेशप्रसाद मौलवी की 'मेरी ईरान-यात्रा' (१६३०), राहुल सांकृत्यायन की 'ईरान' (१६३७), और पुनः राहुल सांकृत्यायन के 'तिब्बत में सवा बरस' (१६३३), तथा 'मेरी तिब्बत-यात्रा' [१६३४ ?] इसी प्रकार के ग्रंथ हैं। अन्य देशों के संबंध का परिचयात्मक साहित्य नगण्य है। इसी प्रसंग में छेदीलाल के 'एशिया निवासियों के प्रति योरोपियनों के बर्ताव' (१६२१) नामक ग्रंथ का भी उल्लेख किया जा सकता है।

८. विश्व-दर्शन—विश्व-दर्शन का साहित्य बहुत थोड़ा है। उल्लेखनीय पुस्तकें हैं : विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक लिखित 'संसार की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ' [१६२४ ?], शिवप्रसाद गुप्त लिखित 'पृथ्वी-प्रदक्षिणा' (१६२४), रामनारायण मिश्र लिखित 'भू-परिचय' [१६३० ?], शङ्करसहाय सकसेना लिखित 'औद्योगिक तथा व्यापारिक भूगोल' (१६३३), राजबहादुर सिंह लिखित 'विश्व-विहार' (१६३३), जगदीशप्रसाद अग्रवाल लिखित 'संसार-शासन' (१६३३), गजानन श्रीपति खैर लिखित 'संसार की समाज-क्रान्ति और हिन्दुस्तान' (१६३६), और यशपाल लिखित 'युद्ध-संकट और भारत' (१६४०)। इसी प्रसंग में कुछ विश्व-कोषों का भी उल्लेख करना आवश्यक होगा: वे हैं नगेन्द्रनाथ बसु संपादित 'हिन्दी विश्वकोष' (१६१५-(- रामप्रसाद त्रिपाठी संपादित 'ज्ञानकोष' (१६३४-) तथा केदारनाथ गुप्त संपादित 'बृहद् विश्व-ज्ञान' (१६४२)।

९. आर्थिक और वैधानिक वाद-प्रवाद—कुछ आधुनिक अर्थ वादों और शासनवादों के संबंध में भी इस युग में रचनाएँ हुई हैं : 'एक ग्रैजुएट' का 'साम्यवाद' (१९२०), विनायक सीताराम सरवती का 'बोल्शेविज़्म' (१९२१), राधामोहन गोकुल जी का 'कम्यूनिज़्म क्या है ?' (१९२७), मुकुन्दीलाल का 'साम्राज्यवाद' (१९३३), राहुल सांकृत्यायन का 'साम्यवाद ही क्यों ?' (१९३५), भूपेन्द्रनाथ सान्याल का 'साम्यवाद की ओर' (१९३६), सम्पूर्णानन्द के 'साम्यवाद का बिगुल' (१९३६), 'समाजवाद' (१९३६), तथा 'व्यक्ति और राज' (१९४०), नरेन्द्र देव का 'समाजवाद' (१९३८), राहुल सांकृत्यायन का 'दिमाग़ी ग़ुलामी' (१९३८), अमरनारायण अग्रवाल का 'समाजवाद की रूपरेखा' [१९३९ ?], हीरालाल पालित की 'समाजवाद की फ़िलासफ़ी' [१३३९ ?], रामनारायण यादवेन्दु का 'समाजवाद और गाँधीवाद' [१९३९ ?], यशपाल का 'न्याय का संघर्ष' [१९४० ?] तथा गोविन्द सहाय का 'संसार की राजनीति में साम्राज्यवाद का नङ्गा नाच' (१९४२), इसी प्रकार का अध्ययन प्रस्तुत करते हैं।

१०. अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था—अन्तर्राष्ट्रीय विधान संबंधी पुस्तकें इनी-गिनी हैं। उल्लेखनीय उनमें से हैं : सम्पूर्णानन्द की 'अन्तर्राष्ट्रीय विधान' (१९२४), तथा 'राष्ट्र-संघ और विश्व-शांति' (१९३६)।

उपर्युक्त निरीक्षण से ज्ञात होगा कि यद्यपि पिछले युग की अपेक्षा इस युग में प्रस्तुत विषय के साहित्य की वृद्धि अवश्य हुई, पर वह नितान्त अपर्याप्त है। वस्तुतः उपर्युक्त अंगों में से प्रत्येक पर कुछ न कुछ अधिकारपूर्ण और 'अप-टु-डेट' ग्रंथ होने चाहिए थे, किन्तु एकाध को छोड़कर किसी के संबंध में यह बात नहीं कही जा सकती।

भाषा-दर्शन

प्रस्तुत विषय के साहित्य का निरीक्षण हम निम्नलिखित शीर्षकों में विभाजित कर सकते हैं : १. हिंदी-आन्दोलन, २. सामान्य भाषा-विज्ञान, ३. लिपि-शास्त्र, ४. हिंदी भाषा का इतिहास, ५. हिंदी भाषा-व्याकरण;

६. पाली-प्राकृत-अपभ्रंश, ७. विभाषा-ज्ञान, ८. सामान्य कोष-ग्रंथ, ९. लोकोक्ति-संग्रह, १०. विशिष्ट विषयों के कोष-ग्रंथ।

१. हिंदी-आन्दोलन—हिंदी-बनाम-उर्दू की समस्या इस युग में भी बनी रही, किंतु वह आगे चल कर एक दूसरे रूप में आई: हिंदी बनाम हिंदुस्तानी के रूप में। इसलिए इस युग में भी उक्त समस्या पर पर्याप्त साहित्य निर्मित हुआ: कमलापति द्विवेदी का 'हिन्दी-स्वप्न' (१९१३), कृष्णशङ्कर तिवारी का 'देशी राज्यों में हिन्दी और इसके प्रचार के उपाय' (१९१४), गौरीशङ्कर शुक्ल का 'राष्ट्र-भाषा हिन्दी' (१९२०), कन्नोमल का 'हिन्दी-प्रचार के उपयोगी साधन' (१९२०), रामजीलाल शर्मा का 'राष्ट्र-भाषा' (१९२०), रामनरेश त्रिपाठी का 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' (१९३२), पद्मसिंह शर्मा का 'हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी' (१९३२), कालेलकर की 'चलती हिन्दी' (१९३८), वेङ्कटेशनारायण तिवारी की 'हिन्दी बनाम उर्दू' (१९३९), चन्द्रबली पाण्डेय के 'कचहरी की भाषा और लिपि' (१९९९), 'भाषा का प्रश्न' (१९३९), 'बिहार की हिन्दुस्तानी' (१९३९), 'उर्दू का रहस्य' (१९४०), तथा 'मुग़ल बादशाहों की हिन्दी' (१९४०), रामनाथ शर्मा की 'ग्वालियर राज्य में हिन्दी का स्थान' (१९४१), इसी समस्या से संबंध रखते हैं। केशवप्रसाद मिश्र तथा पद्मनारायण आचार्य का एक निबंध-संग्रह 'गद्य-भारती' (१९४०) भी इसी समस्या से संबंध रखता है।

२. सामान्य भाषा-विज्ञान—सामान्य भाषा-विज्ञान-विषयक ग्रंथ इसी युग में विशेष रूप से लिखे गए। सूर्यकुमार वर्मा की 'भाषा' [१९०७ ?], श्यामसुन्दरदास का 'भाषा-विज्ञान' (१९२४), मङ्गलदेव शास्त्री का 'तुलनात्मक भाषा-शास्त्र' (१९२६), नलिनी मोहन सान्याल का 'भाषा-विज्ञान' (१९२७), श्यामसुन्दरदास का 'भाषा-रहस्य' (१९३६-) इस विषय के प्रमुख ग्रंथ हैं। इस काल की दो रचनाएँ केवल विराम चिन्हों पर हैं: शालिग्राम द्विवेदी का 'विराम चिन्ह' (१९१८) तथा वेङ्कटेशनारायण तिवारी का 'विराम-संकेत' (१९३३)।

३. लिपि-शास्त्र—लिपि के संबंध में भी कुछ अनुसंधानात्मक ग्रंथ लिखे गए। नगेन्द्रनाथ वसु का 'भारतीय लिपि-तत्व' (१६२४), आर० एन० साहा का 'अक्षरों की उत्पत्ति' (१६२५), गौरीशंकर हीराचन्द ओझा का 'नागरी अङ्क और अक्षर' (१६२६), गौरीशङ्कर भट्ट के 'अक्षरतत्व' (१६३६), 'लिपि-कला' (१६३६), 'लिपि-कला का परिशिष्ट' (१६३६), तथा 'देवनागरी लिपि का विधान-निर्माण-पत्र' (१६३६) इनमें से प्रमुख हैं।

४. हिंदी भाषा का इतिहास—हिंदी भाषा के कुछ इतिहास भी लिखे गए। श्यामसुन्दरदास का 'हिंदी-भाषा का विकास' (१६२४), जो उनके 'भाषा-विज्ञान' के एक अंश का प्रायः रूपान्तर मात्र है, दुनीचन्द लाला का 'पञ्जाबी और हिन्दी का भाषा-विज्ञान' (१६३६), धीरेन्द्र वर्मा के 'हिन्दी-भाषा का इतिहास' (१६३३), तथा 'हिन्दी-भाषा और लिपि' (१६३३), अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी का 'हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव' (१६३७), और गोपाललाल खन्ना का 'हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास' (१६३८) अपने विषयों के उल्लेखनीय ग्रंथ हैं।

५. हिंदी भाषा-व्याकरण—हिंदी के व्याकरण इस काल में भी लिखे गए, किंतु वे भी सामान्यतः शिक्षा-विभाग की आवश्यकताओं के लिए लिखे गए। शेष में से उल्लेखनीय हैं : गोविन्दनारायण मिश्र का 'विभक्ति-विचार' (१६११), चन्द्रमौलि सुकुल का 'भाषा-व्याकरण' (१६१२), तथा कामताप्रसाद गुरु का 'हिन्दी-व्याकरण' (१६२०)। हिन्दी की बोलियों के स्वरूप धीरेन्द्र वर्मा की एक कृति 'ग्रामीण हिंदी' (१६३३) में हमारे सामने आए, और हिंदी की एक सर्वप्रमुख बोली साहित्यिक व्रजभाषा पर उन्होंने अधिकारपूर्ण 'व्रजभाषा-व्याकरण' (१६३७) प्रस्तुत किया।

६. पाली-प्राकृत-अपभ्रंश—प्राकृत तथा पाली के भी कुछ व्याकरण लिखे गए। उनमें से उल्लेखनीय हैं जगमोहन वर्मा का 'आर्ष-प्राकृत व्याकरण' (१६०६), आद्यादत्त ठाकुर का 'पाली-प्रबोध'

(१९२८), और जगदीश काश्यप का 'पालि महाव्याकरण' (१९४०); अंतिम अपने विषय की सर्वोत्कृष्ट रचना है।

७. विभाषा-ज्ञान—विभाषाओं में से केवल आधुनिक भारतीय भाषाओं के ही परिचयात्मक ग्रंथ उल्लेखनीय हैं : पारसमणि प्रधान का 'नेपाली व्याकरण' (१९२०), 'प्रचारक बन्धु' की 'हिन्दी-तेलुगू बाल-बोधिनी' (१९२१), शिवब्रशास्त्री के 'हिन्दी-तेलुगू कोष' (१९२२), तथा 'हिन्दी-तेलुगू व्याकरण' (१९२५), हरिहर शर्मा के 'हिन्दी-तामिल स्वबोधिनी' (१९२१), तथा 'हिन्दी-तामिल कोष' (१९२५), सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की 'हिंदी-बँगला शिक्षा' (१९२८), नारायण तमना जी कटगरे का 'हिन्दी-मराठी कोष' (१९२६), शङ्कर रघुनाथ मुल्कापुर-कर का 'हिन्दी-मराठी शिक्षक' (१९३३), गो० प० नेने का 'हिंदुस्तानी-मराठी शब्दकोष' (१९३९), मुरलीधर सबनीस की 'हिन्दी मराठी स्वबोधिनी' (१९४०), शङ्करलाल मगनलाल का 'गुजराती-हिन्दी टीचर' [१९३७ ?], हेमकान्त भट्टाचार्य का 'असमीया हिन्दी-बोध' [१९३९ ?] और लक्ष्मीपति सिंह का 'हिन्दी-मैथिल-शिक्षक' (१९४०) इसी प्रकार के प्रयास हैं।

८. सामान्य कोष-ग्रंथ—हिंदी के कोष-ग्रंथों में आधुनिक युग की सबसे महत्वपूर्ण कृति 'हिन्दी शब्दसागर' का संपादन श्याम-सुन्दरदास के संपादकत्व में इसी काल में हुआ। इस वृहत्काय कोष के निर्माण के अनंतर इसके संक्षिप्त रूपान्तर अथवा प्रमुख रूप से इसी के आधार पर निर्मित कोष-ग्रन्थ कई निकले, जिनमें से उल्लेखनीय हैं रामनरेश त्रिपाठी का 'हिन्दी शब्दकल्पद्रुम' (१९२५), मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव का 'हिन्दी शब्दसंग्रह' (१९३०), रामचन्द्र वर्मा का 'संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर' (१९३३), तथा डा० रामशङ्कर शुक्ल 'रसाल' का 'भाषा शब्दकोष' (१९३७)। इसी प्रसंग में श्रीकृष्ण शुक्ल के 'हिन्दी पर्यायवाची कोष' (१९३५) का भी उल्लेख किया जा सकता है, जो अपने ढङ्ग की अकेली कृति है। संस्कृत-हिंदी कोषों में जीवाराम शर्मा का 'सरस्वती-कोष' (१९१८) ही उल्लेखनीय है। इसी काल में

प्राकृत का भी एक कोष निकला जो हिंदी के कोष-साहित्य में अद्वितीय स्थान रखता है, वह है हरगोविन्ददास सेठ का 'पाइअ सद्द महान्नवो' (१६२६)। उर्दू और हिन्दुस्तानी-हिन्दी कोषों में प्रमुख हैं दीनानाथ कौल का 'भगीरथ कोष' (१६१३), जम्बुनाथन का 'उर्दू-हिन्दी कोष' (१६३६), तथा रामनरेश त्रिपाठी का 'हिंदुस्तानी-कोष' [१६३१ ?] अन्य भाषाओं के भी कुछ कोष-ग्रंथ मिलते हैं: पर वे अत्यन्त साधारण हैं और उनका उल्लेख ऊपर 'विभाषा-ज्ञान' शीर्षक में किया गया है।

६. लोकोक्तिसंग्रह—लोकोक्तियों और मुहावरों के कुछ कोष स्वतंत्र रूप से तैयार हुए: रामरत्न का 'लोकोक्तिसंग्रह' (१६१५ द्वितीय), रामाधीन मिश्र का 'हिन्दी मुहावरे' (१६२४), बहादुरचन्द्र का 'लोकोक्तियाँ और मुहावरे' (१६३२), जम्बुनाथन का 'हिंदी मुहावरा कोष' (१६३५), आर० जे० सरहिन्दी का 'हिन्दी मुहावरा कोष' (१६३७), ब्रह्मस्वरूप 'दिनकर' का 'हिन्दी मुहावरे' (१६३८), तथा अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी का 'हिंदुस्तानी मुहावरे' (१६४०), उनमें से उल्लेखनीय हैं। एक कोष पहेलियों का भी है: मुन्नालाल मिश्र का 'हज़ारों पहेलियाँ' (१६३८)।

१०. विशिष्ट विषयों के कोष-ग्रंथ—विशिष्ट विषयों के कोष-ग्रंथ भी इस काल में निर्मित हुए। उनमें से प्रमुख हैं: हरिराम वर्मा का 'कृषी-कोष' [१६१० ?], व्रजवल्लभ मिश्र का 'पदार्थ संख्याकोष' (१६११), जिसमें संख्यासूचक पदार्थों का अर्थ दिया हुआ है, ठाकुरप्रसाद खत्री का 'जगत व्यापारिक पदार्थकोष' (१६१८), केशवप्रसाद मिश्र का 'वैद्युत शब्दावली' (१६२५), गुरुप्रसाद का 'रत्नावली' (१६२७), जो संस्कृत के धार्मिक तथा दार्शनिक शब्दों का कोष है, भगवानदास केला की 'राजनीति शब्दावली' (१६२७), गदाधरप्रसाद की 'अर्थशास्त्र शब्दावली' (१६३२), सुखसम्पत्तिराय की 'ट्वेन्टियथ सेन्चुरी डिक्शनरी' (१६४०-), 'एक पत्रकार' का 'अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक शब्दकोष' [१६४०], तथा सत्यप्रकाश का 'वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्द' (१६३०-)। इसी प्रसंग में रामनाथ शर्मा के

'व्यावहारिक शब्दकोष' (१९४२) का भी उल्लेख किया जा सकता है।

ऊपर के निरीक्षण से ज्ञात होगा कि उपयोगी साहित्य में जैसा कार्य भाषा-दर्शन के संबंध में हुआ अन्य किसी के संबंध में नहीं हुआ। यद्यपि निस्संदेह अध्ययन के अनेक पक्ष छूटे हुए हैं और अपूर्ण हैं, किन्तु जिस गति से इस क्षेत्र में कार्य हुआ है उससे आशा करनी चाहिए कि उन पक्षों की पूर्ति शीघ्र हो जावेगी।

ललित कला

इस युग के पूर्वार्द्ध में ललित कला के साहित्य में कोई उन्नति नहीं दिखाई पड़ती। जो कुछ उन्नति हुई—यद्यपि वह भी साधारण ही है—उत्तरार्द्ध में हुई। निरीक्षण के लिए एतत्संबंधी साहित्य को हम निम्न-लिखित शीर्षकों में बाँट सकते हैं: १. संगीत, २. चित्र-लेखन, ३. वक्तृता, ४. चित्रपट, तथा ५. कला का विवेचन।

१. सङ्गीत—भारतीय सङ्गीत के संबंध में सामान्य ग्रंथों में उल्लेखनीय दो-तीन ही हैं: विष्णुदिगंबर पालुस्कर कृत 'सङ्गीत-तत्व-दर्शक' कृत (१९२८), भातखण्डे की 'श्रीमल्लक्ष्य सङ्गीतम्' (१९३४), तथा शिवप्रसाद त्रिपाठी का 'शिव सङ्गीत-प्रकाश' (१९३४-)। विशेष राग-रागिनियों के संबंध में उल्लेखनीय हैं विष्णु दिगंबर पालुस्कर के 'राग-भैरव' (१९१३ द्वितीय), तथा 'राग मालकंस' (१९१९ द्वितीय), और प्रभुदयाल गर्ग का 'राग-दर्शन' (१९४०-), जिसके पहले भाग में राग भैरव का विवेचन है। स्वर-लेखन के संबंध में भी एकाध उल्लेखनीय प्रयास हैं: हरिनारायण मुकर्जी की 'ध्रुपद स्वरलिपि' (१९२९), तथा लक्ष्मीनारायण द्विवेदी की 'विनयपत्रिका स्वर-लिपि' (१९३४)। और विशेष वाद्ययंत्रों की शिक्षण-पुस्तकों में प्रमुख है केवल विष्णु दिगंबर पालुस्कर की 'सतार की पुस्तक' (१९१७)।

२. चित्र-लेखन—चित्र-लेखन-कला पर केवल एक ही पुस्तक उल्लेखनीय है: एच० पी० माहोबिया की 'चित्र-लेखन' (१९३०)। सामान्य चित्रावलियों में से उल्लेखनीय हैं 'रवि वर्मा के प्रसिद्ध चित्र'

(१९११), रामेश्वरप्रसाद वर्मा की 'रमेश-चित्रावली' (१९२२), तथा मोतीलाल शर्मा की 'सौन्दर्य-चित्रावली' (१९२७), जिसमें स्त्री शरीर का सौन्दर्य अनेक मुद्राओं में चित्रित हुआ है। व्यंग्य-चित्रण इस युग की विशेषता है। व्यंग्य चित्रावलियों में से प्रमुख हैं अज्ञात संपादकों के दो चित्र-संकलन 'व्यंग्य-चित्रावली' (१९२५), तथा 'व्यंग्य-चित्रावली' (१९३०), और बैजनाथ केडिया की 'व्यंग्य-चित्रावली' (१९३३-) ।

३. वक्तृता—वक्तृत्व-कला और सभाविज्ञान पर इस युग में भी पुस्तकें निकलीं : कृष्णगोपाल माथुर की 'वक्तृत्व-कला' (१९१८), नंदकुमारदेव शर्मा की 'वक्तृत्व-कला' (१९२०), देवकीनन्दन शर्मा की 'सभाविज्ञान और वक्तृता' (१९२६), तथा विष्णुदत्त शुक्ल की 'सभा-विधान' (१९२९), उनमें प्रमुख है।

४. चित्रपट—इस युग के उत्तरार्द्ध में एक नवीन कला की उन्नति हुई है : वह है भारतीय चित्रपट। मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव की 'सिनेमा-विज्ञान' (१९३५) चित्रपट की सामान्य कला पर, और दीनानाथ व्यास की 'प्रतिन्यास लेखन-कला' (१९३५) उसके दृश्यसङ्केत लेखन पर उल्लेखनीय हैं।

५. कला का विवेचन—कला का विवेचन इस युग में भी नहीं हुआ। केवल एक स्वतंत्र कृति इस संबंध में उल्लेखनीय है : वह है हंसकुमार तिवारी की 'कला' (१९३७)।

स्पष्ट है कि यह साहित्य कैसी हीन दशा में है; ऐसी दयनीय दशा में कदाचित् किसी विषय का साहित्य न होगा।

उपयोगी कला

इस काल में उपयोगी कलाओं के साहित्य में उन्नति अवश्य हुई। कृषि को छोड़कर शेष अंगों के साहित्य में यह उन्नति विशेषरूप से १९२१ के असहयोग आन्दोलन तथा १९३७ के कांग्रेस के प्रांतीय शासन-ग्रहण के अवसरों पर हुई। पहले अवसर पर स्वदेशी और ग्रामो-

द्योग की वस्तुओं के व्यवहार का सामान्य प्रचार हुआ, दूसरे अवसर पर विभिन्न प्रान्तीय शासन-संस्थाओं द्वारा उनको आवश्यक प्रोत्साहन मिला।

प्रस्तुत विषय के साहित्य को हम निरीक्षण के लिए निम्नलिखित वर्गों में विभाजित कर सकते हैं : १. कृषि, २. बाग़बानी, ३. मधुमक्खी-पालन, ४. वस्त्र-शिल्प, ५. मिट्टी का काम, ६. सिलाई तथा कुछ अन्य शिल्प, ७. वास्तु-शिल्प, ८. गृह-शिल्प, ९. आयुध-शिल्प, १०. व्यापार-कला, ११. स्काउट-कला, १२. युद्ध-कला।

१. कृषि—कृषि पर पुस्तकें सबसे अधिक निकलीं : रामप्रसाद की 'गेहूँ की खेती' (१९१४), गयादत्त तिवारी की 'लाख की खेती' (१९१६), पुनः रामप्रसाद की 'मूँगफली तथा मक्का की खेती' (१९१८), तथा 'आलू की खेती' (१९१८), गणेशदत्त की 'अफ़ीम की खेती' (१९१८), गङ्गाशङ्कर नागर के 'कपास की खेती' (१९१९), 'केला' (१९२१), तथा 'आलू' (१९२१), तेजशङ्कर कोचक का 'कपास और भारतवर्ष' (१९२०), शङ्करराव जोशी की 'तरकारी की खेती' (१९२८), हरदयालसिंह की 'सिगरेट की तम्बाकू की कृषि' (१९३७), रामलक्ष्मण सिंह की 'ईख की खेती' [१९३७ ?], लक्ष्मीमोहन मिश्र की 'ऊख की खेती' (१९३७), चारुचन्द्र सान्याल की 'खरबूज़ तथा तरबूज़ की काश्तें' (१९३९), 'मसाले की खेती' (१९३९), तथा 'हल्दी तथा अदरक की खेती' (१९३९), कमलाकर मिश्र की 'आलू और इसकी खेती' [१९४१ ?] तथा 'धान और इसकी खेती' [१९४१ ?], बैजनाथप्रसाद यादव की 'फल तथा साग-भाजियों की खेती' [१९४० ?] विशिष्ट पदार्थों की कृषि से संबंध रखनेवाले उल्लेखनीय अध्ययन हैं। सामान्य कृषि-विज्ञान पर उल्लेखनीय हैं, हेमन्तकुमारी देवी की 'वैज्ञानिक खेती' (१९१४), जे० एम० गहलोत संपादित 'राजस्थान की कृषि-संबंधी कहावतें' (१९१८), मुख्त्यारसिंह की 'खाद' (१९१९) दुर्गाप्रसादसिंह की 'कृषि-कौमुदी' (१९१९) शिवनारायण खत्री लिखित 'भारत में खेती की तरक़्क़ी के तरीक़े' (१९२१), 'पौधों में कड़वा रोग' (१९२१), 'ढोरों के गोबर और पेशाब का

खाद' (१६२१), तथा 'ढोरों में पाता रोग की विशेषता' (१६२१), तेजशङ्कर कोचक का 'कृषि-शास्त्र' (१६२४ तृतीय), शङ्करराव जोशी का 'वर्षा और बनस्पति' (१६२४), शीतलाप्रसाद तिवारी का 'कृषि-विज्ञान' (१६२६), रामानन्द आरोड़ा का 'कृषि-शास्त्र' (१६३४), मुख्त्यारसिंह के 'पौदा और खाद' (१६३५), 'जल और जुताई' (१६३५), 'खेती' (१६३५), तथा 'भूमि' (१६३५), बैजनाथ प्रसाद यादव का 'कृषि-सुधार का मार्ग' [१६४० ?] एस० बी० सिंह का 'संयुक्त प्रान्त में कृषि की उन्नति' [१६४१ ?] तथा शीतला-प्रसाद तिवारी का 'कृषि-कर्म' (१६४१)।

२. बाग़बानी—बाग़बानी पर राजनारायण मिश्र की 'बाग़बानी' (१६२१), शङ्करराव जोशी का 'उद्यान' (१६२४), प्यारेलाल की 'वृक्षावली' (१६२४ तृतीय), शिवशङ्कर मिश्र की 'बाग़बानी' (१६३०), नारायण दुलीचन्द व्यास की 'फलों की खेती और व्यवसाय' (१६३५), गजानन नायक का 'ताड़ का गुड़' (१६३८), के० एन० गुप्त का 'उद्यान-विज्ञान' (१६४०), शङ्करराव जोशी का 'कलम पैवन्द' (१६४०), बैजनाथप्रसाद यादव का 'उद्यान-शास्त्र' (१६४०), द्वारका बाई देव का 'फलों के टिकाऊ पदार्थ' (१६४१) उल्लेखनीय हैं। इसी प्रसंग में इबादुर्रहमान खाँ के 'खेती और बाग़बानी' (१६४१) का भी उल्लेख किया जा सकता है।

३. मधुमक्खी-पालन—मधुमक्खी-पालन पर पुस्तकें प्रायः इधर ही निकली हैं। नारायणप्रसाद अरोड़ा की 'मधुमक्खी' (१६३६), शान्ताराम मोरेश्वर चित्रे का 'मधुमक्खी-पालन' (१६४१ द्वितीय), तथा जुगरार दयाराम का 'मधुमक्खी-पालन' (१६४२) उनमें उल्लेखनीय हैं। इसी विषय पर एक छोटी पर अच्छी कृति इबादु-र्रहमान खाँ की 'मधुमक्खी-पालन' (१६४१), है।

४. वस्त्र-शिल्प—वस्त्र-शिल्प के विशेष अंगों पर इस काल में स्वतंत्र पुस्तकें लिखी गईं: कस्तूरमल बांठिया की 'रूई और उसका मिश्रण' (१६३५), सत्यन की 'ओटना या धुनना' [१६३६], लक्ष्मीचन्द की

'तन्तुकला' (१९२२), मगनलाल खुशालचन्द गांधी का 'चर्खा-शास्त्र' (१९२७), राधाकृष्ण बिड़ला की 'मिलों में रुई की कताई' (१९३३), कृष्णदास गांधी का 'कताई-गणित' (१९४०), बलवन्त दीवान कुँवर की 'तकली' (१९४१), इबादुर्रहमान खाँ की 'कताई' (१९४१), ख्वाजा अब्दुल मजीद का 'वीविङ्ग टीचर' (१९३०), विश्वेश्वर दयाल का 'बुनाई-विज्ञान' (१९४०), जगन्नाथप्रसाद की 'देशी रंगाई' (१९१६), धीरजलाल शर्मा का 'स्वदेशी रंग और रंगना' (१९२५), डी० जी० काले का 'रेशों की रंगाई' (१९३६), तथा शिवचरण पाठक का 'रंगाई-धुलाई-विज्ञान' (१९३८) वस्त्र-शिल्प के विविध अंगों पर उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

५. मिट्टी का काम—मिट्टी के बर्तनों के व्यवसाय पर पुस्तकें बहुत हाल में ही निकली हैं : फूलदेवसहाय वर्मा का 'मिट्टी के बर्तन' (१९३९) डा० इबादुर्रहमान खाँ का 'मिट्टी के काम' (१९४१), तथा मनोहरलाल की 'भारतीय चीनी मिट्टियाँ' (१९४१) इनमें से प्रमुख हैं।

६. सिलाई तथा कुछ अन्य शिल्प—दर्जी के काम की एक पुस्तक उपेन्द्रनाथ दासगुप्त की 'दर्जी' (१९३०), है। सुनारी के संबंध में पुस्तकें गङ्गाशङ्कर नागर की 'सुवर्णकारी' (१९२३), तथा गिरधर सिंह वर्मा की 'स्वर्णकार विद्या' (१९३०) हैं। कनाईलाल देरे का 'मीना विज्ञान' (१९३७) मीनाकारी पर है। चर्मकारी पर उल्लेखनीय ग्रन्थ देवदत्त अरोड़ा का 'चर्म बनाने के सिद्धान्त' (१९३०), तथा चन्दलाल का 'मॉडेल-शूमेकर' (१९४०) हैं। जिल्दसाज़ी पर उल्लेखनीय हैं : रामनारायण मिश्र की जिल्दसाज़ी' (१९४२) और सत्यजीवन वर्मा की 'जिल्दसाजी' (१९४१), तेल- उत्पादन पर झावेर भाई पु० पटेल की 'तेल घानी' (१९४१ द्वितीय) एक उत्तम कृति है। लक्ष्मीचन्द की 'सुगन्धित साबुन बनाने की पुस्तकें,(१९१५), 'रोशनाई बनाने की पुस्तक' (१९१५), 'रंग की पुस्तक'(१९१६) तथा 'तेल की पुस्तक' (१९१६) का भी शिल्पों के साहित्य में उल्लेख किया जा सकता है। कुछ नवीन शिल्पों के संबंध में ओंकारनाथ

शर्मा की 'लोहा और उस पर पानी चढ़ाना' (१६३३), गोरखप्रसाद की 'फ़ोटोग्राफी' (१६३१) तथा 'लकड़ी पर पालिश' (१६४०) ज्योतिस्वरूप सकलानी का 'प्रकाशन-विज्ञान' (१६३२), कृष्णप्रसाद दर की 'आधुनिक छपाई' (१६३६), विष्णुदत्त शुक्ल की 'प्रूफ़रीडिंग' (१६४१), तथा गोवर्धन दास गुप्त की 'हिन्दी टाइपराइटिंग' (१६४०), उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

७. वास्तु-शिल्प—भारतीय वास्तु-कला पर केवल एक ही कृति उल्लेखनीय है: वह है विन्ध्येश्वरीप्रसाद मिश्र की 'भारतीय वास्तु-विज्ञान' (१६३३-)।

८. गृह-शिल्प—गृह-शिल्प पर दामोदर यशवंत त्र्वें की 'चौक पूरने की पुस्तक' (१६१२) तथा रामा तांबे के 'गृह-शास्त्र' (१६४२), का उल्लेख किया जा सकता है।

६. आयुध-शिल्प—आयुध-शिल्प के संबंध में केवल एक ही पुस्तक उल्लेखनीय है, यह है: रामेश्वर पाठक की 'शस्त्र-विवेक' (१६४०), जिसमें देशी शस्त्रों का वर्णन है।

१०. व्यापार-कला—व्यापार-कला पर दामोदरदास खत्री की 'रोज़गार' (१६१२), कन्हैयालाल शर्मा की 'सफल दूकानदारी' [१६२२ ?], नारायणप्रसाद अरोड़ा की 'दूकानदारी' (१६२२), गङ्गाप्रसाद भोतिका की 'विक्रय-कला' (१९२२), कन्हैयालाल शर्मा की 'विज्ञापन-विज्ञान' (१६२२), कस्तूरमल बाँठिया की 'हिन्दी बही-खाता' (१६१६), देवीप्रसाद 'प्रीतम' की 'हिन्दी महाजनी का नया बहीखाता' (१६२२), कस्तूरमल बांठिया की 'व्यापारिक पत्र-व्यवहार' (१६२३) अच्छी पुस्तकें हैं।

११. स्काउट-कला—स्काउट-कला एक नवीन कला है। इसकी उल्लेखनीय पुस्तकें हैं: श्रीराम वाजपेयी की 'ध्रुवपद शिक्षण' (१६२०), तथा 'कोमल पद शिक्षण' (१६२०), और जानकीशरण वर्मा की 'कैम्प फ़ायर' (१६३१), 'पैट्रोल सिस्टम' (१६३१), तथा 'स्काउटमास्टरी और ट्रुप संचालन' (१६३४)। इसी प्रसंग में श्रीराम

वाजपेयी की 'अग्नि-कांड में सेवा' [१६३७ ?] का भी उल्लेख किया जा सकता है।

१२. युद्ध-कला—युद्ध-कला पर पुस्तकों का प्रायः अभाव है। केवल दो पुस्तकें उल्लेखनीय हैं : सत्यनारायण की 'टैंक-युद्ध' (१६४०) तथा 'हवाई युद्ध' (१६४०) 'जो वर्तमान महायुद्ध से संबंध रखती हैं।

इस काल में कृषि के संबंध में निस्संदेह अच्छा कार्य हुआ, किन्तु शेष कलाओं के संबंध में विशेष साहित्य प्रस्तुत न हुआ, और जो कुछ प्रस्तुत हुआ प्रायः वह भी उच्चकोटि का नहीं है।

खेल तथा शरीर-रक्षा

इस विषय के साहित्य को हम निम्न वर्गों में विभाजित कर सकते हैं : १. गोष्ठी खेल, २. बाहरी खेल और व्यायाम—भारतीय, ३. बाहरी खेल और व्यायाम—पाश्चात्य, ४. आयुर्वेद प्रणाली, ५. ऐलोपैथिक, ६. होम्योपैथिक ७. प्राकृतिक, ८. स्वास्थ-रक्षा, ६. मंत्रोपचार, १० पशु चिकित्सा।

१. गोष्ठी खेल—गोष्ठी खेलों पर आलोच्यकाल में केवल एक पुस्तक उल्लेखनीय है : मनोहरलाल चौबे की 'खेल-शतरंज' (१६११)।

२. बाहरी खेल—भारत के बाहरी खेलों पर अच्छी पुस्तकें अवश्य निकलीं, पर प्रायः उत्तरार्द्ध में : रघुनंदन शर्मा का 'देशी खेल' (१६२५), जी० आर० पाण्डेय की 'लाठी' (१६२५), यज्ञदत्त झाकर का 'लाठी-शिक्षण' (१६२८), श्रीपतिसहाय रावत का 'लाठी के दाँव' (१६३७), सीताराम पांडेय का 'लेजिम शिक्षण' (१६३३-) तथा मुनेश्वरप्रसाद त्रिपाठी की 'कबड्डी' (१६३७) इनमें से प्रमुख हैं। भारतीय व्यायाम पर भी साहित्य का यही हाल रहा : कालिदास माणिक का 'राममूर्ति और उनका व्यायाम' (१६१८), गणेशदत्त शर्मा गौड़ का 'स्त्रियों के व्यायाम' (१६३०), श्रीनिवास बालाजी हर्डीकर का 'सूर्य-व्यायाम' (१६३१), 'आनंदस्वरूप का 'आसनों के व्यायाम' (१६३५), भगवान राय श्रीनिवास पंत का 'सूर्य-नमस्कार' (१६३६) तथा ज्योतिर्मयी

ठाकुर का 'खेल और व्यायाम' (१६३५) भारतीय व्यायामों पर प्रमुख कृतियाँ हैं।

३. पाश्चात्य खेल—पाश्चात्य बाहरी खेलों की पुस्तकें थोड़ी ही निकलीं : मदनमोहन तथा अमरनाथ का 'खेल-कूद' (१६२१), प्रो० माणिकराव का 'संघ-व्यायाम' (१६२६), प्रो० नारायणराव का 'जुजुत्सु' (१६३६) और 'स्तूप-निर्माण-कला' (१६३६), जो क्रमशः एक प्रकार की कुश्ती तथा जिम्नास्टिक पर हैं, उनमें से उल्लेखनीय हैं।

४. आयुर्वेद-प्रणाली—आयुर्वैदिक चिकित्सा पर भी पूर्वार्द्ध में ग्रन्थों का प्रायः अभाव रहा, अधिकतर रचनाएँ उत्तरार्द्ध में प्रकाशित हुईं। शिवचन्द्र भरतिया का 'धात्री-कर्म-प्रकाश' (१६१७), तथा शालिग्राम शास्त्री का 'आयुर्वेद-महत्व' (१६२५) पूर्वार्द्ध की रचनाओं में प्रमुख हैं। उत्तरार्द्ध की रचनाओं में धर्मानन्द शास्त्री की 'उपयोगी चिकित्सा' (१६२७) उन्हीं के 'विष-विज्ञान' (१६३२), तथा 'शल्य-तन्त्र' (१६३३), प्रतापसिंह कविराज का 'आयुर्वेद खनिज-विज्ञान' (१६३१), हरिशरणानन्द का 'आसव-विज्ञान' (१६३६), शिवचरण शर्मा के 'फेफड़ों की परीक्षा और उनके रोग' (१६२८) तथा 'व्रण-बन्धन और पट्टियाँ' (१६२६), शङ्करलाल गुप्त का 'क्षय रोग' (१६३३), विश्वनाथ द्विवेदी का 'तैल-संग्रह' (१६३४), अत्रिदेव गुप्त का 'मलावरोध चिकित्सा' (१६३५), रूपलाल वैश्य का 'रूप निघण्टु' (१६३५), प्रभुनारायण त्रिपाठी का 'निद्रा-विज्ञान' (१६३७), रामदत्त का 'प्राचीन हिन्दू रसायन-शास्त्र' [१६३८ ?], विश्वेश्वरदयाल का 'भारतीय रसायन-शास्त्र' (१६३८), आनन्द स्वामी का 'नाड़ी-दर्शन' (१६३६), गङ्गानाथसेन कविराज का 'हिन्दी प्रत्यक्ष शारीर' (१६३६) तथा हरिशरणानन्द का 'ज्वर-मीमांसा' (१६४०) सामान्य वैद्यक के विभिन्न अंगों पर अच्छी रचनाएँ हैं। धात्री-कर्म तथा स्त्री-रोग संबंधी कुछ ग्रंथ स्वतंत्र रूप से उल्लेखनीय हैं : वे हैं दुर्गादेवी का 'शिशु-पालन' (१६२८), कृष्णाकान्त मालवीय का 'मातृत्व' (१६३१), अत्रिदेव गुप्त का 'धात्री-शिक्षा' (१६३२),

कृष्णकुमारी देवी का 'ज़च्चा' (१६३२), धर्मानन्द शास्त्री का 'स्त्री-रोग-विज्ञान' (१६३२), अत्रिदेव गुप्त का 'शिशु-पालन' (१६३६), विमलादेवी का 'गर्भ-निरोध' (१६४०), हरनामदास का 'गर्भवती, प्रसूता और बालक' (१६४०), तथा कान्तिनारायण मिश्र की 'प्रसव-विद्या' (१६४१)। ऊपर के अधिकतर ग्रंथों की रचना आधुनिक विज्ञान तथा ऐलोपैथी के ग्रंथों की सहायता से की गयी है, पर मौलिक अनुसंधान और अनुभव का इनमें प्रायः अभाव है। इसी प्रसंग में रणजीत सिंह के 'आयुर्वेदीय विश्वकोष' (१६४२-), का भी उल्लेख किया जा सकता है।

५. ऐलोपैथिक—ऐलोपैथिक चिकित्सा पर इस काल में एक ही उल्लेखनीय सामान्य ग्रन्थ प्रकाश में आया : महेन्दुलाल गर्ग का 'डाक्टरी चिकित्सा' (१६३१)। विशिष्ट अङ्गों पर उल्लेखनीय हैं : मुकुन्दस्वरूप वर्मा का 'विष-विज्ञान' (१६३२), अम्बालाल गर्ग की 'क्षय रोग और उसकी चिकित्सा (१६३६), त्रिलोकीनाथ वर्मा की 'हमारे शरीर की रचना' (१६२८–), मुकुन्दस्वरूप वर्मा के 'मानव शरीर-रहस्य' (१६२६-), 'मानव शरीर-रचना-विज्ञान' (१६३६), तथा 'संक्षिप्त शल्य-विज्ञान' (१६४०), रामदयाल कपूर की 'रोगी-परिचर्या' (१६३०)। धात्री-कर्म और प्रसव-विद्या पर प्रमुख हैं : मुकुन्दस्वरूप वर्मा का 'शिशु-पालन' (१६१५), हीरालाल का 'माँ और बच्चा' (१६३०), रामदयाल कपूर का 'प्रसूति-तंत्र' (१६३१), तथा रामचन्द्र मिश्र का 'सन्तान-निग्रह-विज्ञान' (१६३७)।

६. होम्योपैथिक—होम्योपैथिक चिकित्सा के संबंध में भी सत्साहित्य प्रायः उत्तरार्द्ध में ही निकला। उसके उल्लेखनीय ग्रन्थ हैं : महेन्द्रनाथ भट्टाचार्य कृत 'पारिवारिक चिकित्सा' (१६३५ पाँचवाँ), जिसके लगभग एक दर्जन संस्करण अब तक हो चुके हैं, उन्हीं के द्वारा प्रस्तुत निघंटु 'पारिवारिक भेषज-तत्व' (१६३२), मनोरञ्जन बैनरजी का एक निघंटु 'बृहत् मैटीरिया मेडिका' (१६३५), प्यारेलाल

की 'छाती के रोगों की चिकित्सा' (१६३७) तथा बलदेवप्रसाद सक्सेना की 'इलेक्ट्रो होम्योपैथी' (१६१६)। बायोकेमिक शाखा पर पुस्तकें हाल में ही प्रायः निकली हैं। उनमें से उल्लेखनीय हैं रामचन्द्र मुनि की 'बायो-केमिक विज्ञान-चिकित्सा' (१६३५), आर० आर० मुकरजी की 'सरल बायोकेमिक चिकित्सा' (१६३८) तथा एन० सी० भादुरी की 'बायो-केमिक मैटिरिया मेडिका एवं रिपार्टरी' (१६४०)।

७. प्राकृतिक—प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणालियों पर भी कुछ ग्रंथ प्रकाशित हुए। केदारनाथ गुप्त की 'प्राकृतिक चिकित्सा' (१६३७), ताराचन्द जोशी का 'दुग्धोपचार' (१६१८), छोटेलाल की 'दुग्ध-चिकित्सा' (१६२४), भगवत शरण की 'दुग्ध-तक्रादि चिकित्सा' (१६३६), देवराज का 'जल-चिकित्सा-विज्ञान' (१६२६), केदारनाथ गुप्त की 'स्वास्थ्य और जल-चिकित्सा' (१६३३), सुधीरकुमार मुकर्जी की 'प्रकाश-चिकित्सा' (१६३८), युगलकिशोर चौधरी की 'मिट्टी सभी रोगों की रामबाण औषधि है' (१६३६ द्वितीय) सामान्य तथा विशिष्ट उपचारों के संबंध में उल्लेखनीय रचनाएँ हैं।

८. स्वास्थ्य-रक्षा—स्वास्थ्य-रक्षा संबंधी अच्छे ग्रंथ थोड़े ही निकले: रामदास गौड़ का 'स्वास्थ्य-साधन' (१६२६–), केदारनाथ गुप्त का 'हम सौ वर्ष कैसे जीवें ?' (१६२६), मुकुन्दस्वरूप वर्मा का 'स्वास्थ्य-विज्ञान' (१६३२), तथा बुद्धिसागर शर्मा का 'स्त्री-सौन्दर्य और स्वास्थ्य' (१६४१) स्वास्थ्य-रक्षा संबंधी सामान्य ग्रंथों में से उल्लेखनीय हैं। आहार के संबंध में हरिनारायण शर्मा का 'भारतीय भोजन' (१६२५), ठाकुरदत्त शर्मा का 'दुग्ध और दुग्ध की वस्तुएँ' (१६[illegible]) जगन्नाथ-प्रसाद शुक्ल का 'आहार-शास्त्र' (१६३३), बालेश्वरप्रसाद सिंह का 'क्या और कैसे खाएँ ?' (१६३६), तथा केदारनाथ गुप्त का 'आदर्श भोजन' (१६३६) विभिन्न प्रणालियों के अनुसार लिखे गए प्रमुख ग्रन्थ हैं।

६. मंत्र-चिकित्सा—मंत्र-चिकित्सा पर भी इस काल में एक उल्लेखनीय कृति मिलती है: राधिकाप्रसाद का 'मंत्र-सागर' (१६२४), जिसमें सर्प-दंश आदि के लिए मंत्रोपचार का विधान है।

१०. पशु-चिकित्सा—पशु-चिकित्सा से संबंधित भी केवल एक ग्रंथ उल्लेखनीय है : गोवर्धन सिंह का 'अश्व-चिकित्सा' (१६३०)।

चिकित्सा और स्वास्थ्य-रक्षा के विषय पर इस युग में भी अधिकार-पूर्ण और वैज्ञानिक अन्वेषण के आधार पर लिखे गए ग्रंथ इने-गिने रहे। चिकित्सा-संबंधी वैज्ञानिक शिक्षा की संस्थाओं में माध्यम हिंदी न होने के कारण निकट भविष्य में भी इस आवश्यक वर्ग के साहित्य की पूर्ति संभव कम दिखलाई पड़ती है।

विज्ञान

विज्ञान के साहित्य की गति इस युग में प्रायः पिछले युग की-सी ही रही, यद्यपि विवेचन की कुछ गुरुता और गम्भीरता उसमें अवश्य आई। निरीक्षण के लिए हम उसके साहित्य को निम्नलिखित शीर्षकों में रख सकते हैं। १. भौतिक, २. गणित, ३. ज्यौतिष, ४. रसायन, ५. वनस्पति-उद्भिज्ज तथा जंतु-शास्त्र, ६. जीव तथा सृष्टि-इतिहास, और ७. स्फुट।

१. भौतिक—भौतिक के कुछ अङ्गों पर इस युग के पूर्वार्द्ध में अच्छा काम हुआ; उत्तरार्द्ध में वैसा काम नहीं हुआ। प्रेमवल्लभ जोशी का 'ताप' (१६१५), सम्पूर्णानन्द का 'ज्योतिर्विनोद' (१६१७), सुखसम्पति राय का 'ज्योतिर्विज्ञान' (१६२०), शालिग्राम भार्गव का 'चुम्बक' तथा निहालकरण सेठी का 'प्रारम्भिक भौतिक विज्ञान' (१६३०) भौतिक-संबंधी उल्लेखनीय ग्रंथ हैं।

२. गणित—गणित पर प्रायः स्कूलों के लिए ही साहित्य लिखा गया। अन्यथा उल्लेखनीय हैं : माधवसिंह मेहता की 'माप-विद्या प्रदर्शिनी' (१६०६), जो 'प्लेन टेबुल सर्वे' पर है, तेजशङ्कर कोचक की 'पैमाइश' (१६१६), नन्दलाल की 'पैमाइश' (१६२७), सत्यप्रकाश की 'बीज-ज्यामिति' (१६३१), शुकदेव पाण्डेय की 'त्रिकोणमिति' (१६३५), जगन्नाथप्रसाद गुप्त की 'सरल त्रिकोणमिति' (१६३६), तथा दुर्गाप्रसाद दुबे की 'सरल त्रिकोणमिति' (१६३६)।

३. ज्यौतिष—नक्षत्रमंडलादि के संबंध में कुछ अच्छी कृतियाँ

प्रकाशित हुईं। उल्लेखनीय हैं : विन्ध्येश्वरीप्रसाद मिश्र का 'सौर-साम्राज्य' (१६२२), जगदानन्दराय का 'ग्रह-नक्षत्र' (१६२५), गोरखप्रसाद का 'सौर-परिवार' (१६३२), तथा रामरत्न भटनागर की 'आकाश की कथा' (१६४२)। इनमें से गोरखप्रसाद की पुस्तक सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। भूमण्डल के संबंध में एक कृति है : रामचन्द्र वर्मा की 'भूकम्प' (१६१८)। वायु-मण्डल पर एक पुस्तक है : कल्याणबख्श माथुर की 'वायु-मण्डल' (१६४०), और हवाई जहाज़ तथा वायु-विज्ञान पर एक कृति है : गिरिजाप्रसाद शर्मा की 'विमान' (१६४१)।

४. रसायन—रसायन पर भी कुछ अच्छी कृतियाँ प्रकाश में आईं, किन्तु प्रायः इस युग के उत्तरार्द्ध में। गोपालस्वरूप भार्गव का 'मनोरञ्जक रसायन' (१६२३), फूलदेवसहाय वर्मा के 'प्रारम्भिक रसायन' (१६२८), तथा 'साधारण रसायन' (१६३२), रामशरणदास सक्सेना का 'गुणात्मक विश्लेषण, क्रियात्मक रसायन' (१६२६), सत्यप्रकाश के 'साधारण रसायन' (१६२६), और 'कारबनिक रसायन' (१६२६), तथा वासुदेव विट्ठल भागवत का 'प्रकाश-रसायन' (१६३२) इनमें से उल्लेखनीय हैं। इसी प्रसङ्ग में आत्माराम के 'रसायन इतिहास-संबंधी कुछ लेख' [१६१८ ?] का भी उल्लेख किया जा सकता है ?

५. वनस्पति आदि—वनस्पति-शास्त्र पर महेशचरण सिंह का 'वनस्पति शास्त्र' (१६२१), सुखसम्पत्तिराय भण्डारी का 'डा० जगदीशचन्द्र बोस और उनके आविष्कार' (१६२४), केशव अनन्त-पटवर्धन का 'वनस्पति-शास्त्र' (१६२८), प्रवासीलाल का 'वृक्ष-विज्ञान' (१६२६), तथा सन्तप्रसाद टण्डन का 'वनस्पति-विज्ञान' (१६४०), उल्लेखनीय हैं। उद्भिज्ज शास्त्र पर उल्लेखनीय हैं एन० के० चैटर्जी का 'उद्भिज्ज का आहार' (१६३१), तथा नोनीलाल पाल का 'नित्य व्यवहार में उद्भिज्ज का स्थान' [१६३८ ?]। जन्तु-शास्त्र पर उल्लेखनीय हैं शालिग्राम भार्गव का 'पशु-पक्षियों का शृङ्गार-रहस्य' (१६२२), ब्रजेशबहादुर का 'जन्तु-जगत' (१६३०), तथा श्यामापद बैनरजी का 'सर्प' (१६३५)।

६. जीव-इतिहास—जीव तथा सृष्टि इतिहास पर भी कुछ ग्रंथ इस काल में सामने आए। पी० ए० श्री० जी० साठे का 'विकास-वाद' (१६१४), मुकुटविहारी वर्मा का 'जीवन-विकास' (१६३०), प्रभुदयाल मिश्र का 'जीवन-विज्ञान' (१६३३), चन्द्रशेखर शास्त्री का 'जीवन शक्ति का विकास' [१६३६ ?], सत्यप्रकाश की 'सृष्टि की कथा' (१६३७), तथा कृष्णानन्द गुप्त की 'जीव की कहानी' (१६४१), उनमें से उल्लेखनीय हैं। इसी प्रसंग में वाइटैमिन्स पर धीरेन्द्रनाथ चक्रवर्ती के 'जीवत्व-जनक' [१६३२ ?] तथा 'हेरेडिटी' पर शचीन्द्रनाथ सान्याल के 'वंशानुक्रम-विज्ञान' [१६३६ ?] का भी उल्लेख किया जा सकता है।

७. स्फुट—विज्ञान के स्फुट विषयों पर कुछ निबंध-संग्रह तथा सामान्य ग्रंथ भी प्रकाशित हुए। उनमें से महत्वपूर्ण हैं : सुखसंपत्तिराय का 'विज्ञान और आविष्कार' (१६१६), कृष्णगोपाल माथुर का 'व्यावहारिक विज्ञान' (१६२०), जगदानन्द राय की 'प्राकृतिकी' (१६२५), महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'विज्ञान-वार्ता' (१६३०), मनोहरकृष्ण का 'विज्ञान-रहस्य' (१६३५), चन्द्रशेखर शास्त्री का 'आधुनिक आविष्कार' (१६३६), यतीन्द्रभूषण मुकर्जी की 'वैज्ञानिकी' (१६३६), रामदास गौड़ का 'विज्ञान-हस्तामलक' (१६३६), तथा भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव का 'विज्ञान के चमत्कार' (१६४०)। इनमें से गौड़ जी की कृति कदाचित् सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

निरीक्षण से ज्ञात हुआ होगा कि यद्यपि विज्ञान में कार्य कुछ अवश्य हो रहा है पर उसकी गति अत्यंत धीमी है। वैज्ञानिक साहित्य के प्रसार में कई बाधाएँ हैं : सामान्य जनता के लिए इसमें वैसा कोई रस या आकर्षण नहीं जैसा कुछ अन्य वर्गों के साहित्य में है; दूसरे, देश के सामान्य जीवन में इसका वैसा उपयोग नहीं जैसा अन्य वर्गों के साहित्य का है; और तीसरे, वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए नित्य ऐसे द्रव्यों और यंत्रों की आवश्यकता होती है जो बहुव्यय-साध्य होते हैं, और ऐसे निर्देशकों की आवश्यकता होती है जो प्रायः सुलभ कम होते हैं।

समाज-शास्त्र [और दर्शन]

समाज-शास्त्र पर साहित्य इस युग में भी विशेष नहीं निर्मित हुआ। निरीक्षण के लिए उसे हम निम्न लिखित शीर्षकों में रख सकते हैं: १. राजनीति, २. अर्थशास्त्र, ३. तर्क शास्त्र, ४. मनोविज्ञान, और ५. नागरिक शास्त्र।

१. राजनीति—सामान्य राजनीति पर अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी की 'हिन्दुओं की राज्य-कल्पना' (१९१३), प्राणनाथ विद्यालङ्कार के 'शासन-पद्धति' (१९२१), तथा 'राजनीति-शास्त्र' (१९२२), देवीप्रसाद 'प्रीतम' की 'हिन्दी भाषा में राजनीति' (१९२५), सुखसम्पतिराय भण्डारी का 'राजनीति-विज्ञान' (१९२९), गोपालदामोदर तामस्कर का 'राज्य-विज्ञान' (१९२९), अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी का 'हिन्दू राज्यशास्त्र' (१९३१), चन्दीप्रसाद का 'राजनीति के मूल सिद्धान्त' (१९३९), तथा रघुनाथ सिंह का 'फ़ासिज़्म' (१९३९), उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

२ अर्थशास्त्र—सामान्य अर्थशास्त्र पर इस काल के महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं बालकृष्ण का 'अर्थशास्त्र' (१९१४), राधामोहन गोकुलजी का 'श्रमोपजीवी समवाय' (१९१८), प्राणनाथ विद्यालङ्कार का 'राष्ट्रीय आय-व्यय-शास्त्र' (१९२२), तथा 'मुद्रा-शास्त्र' (१९२४), गौरीशङ्कर का 'शिल्प-विधान' (१९२४), उमरावसिंह कारुणिक का 'उपयोगितावाद' (१९२४), भगवानदास केला का 'हिन्दी भाषा में अर्थशास्त्र' (१९२५), सुधाकर का 'अमीरी व ग़रीबी' [१९२५ ?], गौरीशङ्कर शुक्ल की 'करेन्सी' [१९२६ ?], ठाकुरप्रसाद सक्सेना का 'आर्थिक सङ्गठन' (१९३९), दयाशङ्कर दुबे की 'धन की उत्पत्ति' (१९३७), शङ्करसहाय सक्सेना का 'प्रारम्भिक अर्थशास्त्र' (१९४०), तथा भगवानदास अवस्थी का 'अर्थ-शास्त्र के मूल सिद्धान्त' (१९४१)।

३. तर्कशास्त्र—तर्कशास्त्र पर प्रमुख रचनाएँ हैं: शिवचन्द्र भरतिया का 'विचार-दर्शन' (१९१६), तथा गुलाबराय का 'तर्कशास्त्र' (१९३६-)।

४. मनोविज्ञान—मनोविज्ञान पर उल्लेखनीय हैं : मुंशीलाल की 'शील और भावनाएँ' (१६०६), जो चरित्र-गठन से संबंध रखता है, कुन्दनलाल गुप्त का 'सरल मनोविज्ञान' (१६२१), प्रो० सुधाकर का 'मनोविज्ञान' (१६२४), चन्द्रमौलि सुकुल का 'मनोविज्ञान' (१६२४), प्रेमवल्लभ जोशी का 'प्राथमिक मनोविज्ञान' (१६३३), तथा महाजोत-सहाय का 'जीववृत्ति-विज्ञान' (१६३६)।

५. नागरिक शास्त्र—नागरिक शास्त्र का विकास इसी युग की विशेषता है। प्रमुख रचनाएँ हैं : सत्यदेव स्वामी का 'मनुष्य के अधिकार' (१६१२), भगवानदास केला का 'समाज-सङ्गठन' (१६२३), चन्द्रराज भण्डारी का 'समाज-विज्ञान' (१६२८), भगवानदास केला का 'नागरिक शास्त्र' (१६३२), भगवानदास केला की 'अपराध-चिकित्सा' (१६३६), वेनीप्रसाद का 'नागरिक शास्त्र' (१६३७), राहुल सांकृत्यायन का 'मानव समाज' [१६३७ ?] भगवानदास केला की 'निर्वाचन-पद्धति' (१६३८), कृष्णानन्द गुप्त का 'नागरिक जीवन' (१६३६), गोरखनाथ चौबे की 'नागरिक शास्त्र की विवेचना' (१६४०), घनश्यामदास बिड़ला का 'बिखरे विचार' (१६४१), तथा श्रीप्रकाश का 'नागरिक शास्त्र' (१६४२)।

आलोच्यकाल में भी इस वर्ग के साहित्य की प्रगति अत्यंत धीमी रही, और जब तक राजनीति, अर्थशास्त्र और नागरिक शास्त्र पूर्णरूप से जनता के जीवन के विषय न हो जावेंगे, इस वर्ग के साहित्य में वास्तविक उन्नति की संभावना नहीं हो सकती। अभी तक देश की जनता का कितना हाथ देश की राजनीतिक, आर्थिक, और नागरिक समस्याओं में है, यह कहने की आवश्यकता नहीं।

शिक्षा

शिक्षा-साहित्य इसी युग की वस्तु है, पिछले युग के अंत में ही एकाध कृतियाँ दिखलाई पड़ी थीं। निरीक्षण के लिए इस युग के साहित्य

को हम निम्नलिखित शीर्षकों में रख सकते हैं : १. शिक्षा-सिद्धान्त, २. शिक्षा-मनोविज्ञान, ३. विशिष्ट शिक्षा-विधान, और ४. भारतीय शिक्षा-संस्थाएँ।

१. शिक्षा-सिद्धान्त—शिक्षा-सिद्धान्त-संबंधी सामान्य ग्रन्थों में उल्लेखनीय हैं महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'शिक्षा' (१६१६), गोपाल-दामोदर तामस्कर की 'शिक्षा-मीमांसा' (१६२५), प्रेमवल्लभ जोशी का 'पाठशाला तथा कक्षा-प्रबन्ध और शिक्षा-सिद्धान्त' (१६३०), गोपी-लाल माथुर की 'शिक्षा-विधि' (१६३०), कालिदास कपूर की 'शिक्षा-मीमांसा' (१६३७), सूर्यभूषण लाल की 'शिक्षण-कला' (१६३६), और सीताराम चतुर्वेदी की 'अध्यापन-कला' (१६४२), विशिष्ट विषयों में से केवल एक की शिक्षा पर उल्लेखनीय रचनाएँ मिलती हैं, वे हैं भाषा-शिक्षण पर : लज्जाशङ्कर झा का 'भाषा-शिक्षण-पद्धति' (१६२६), इन्द्रनारायण अवस्थी का 'भाषा-शिक्षण-विधान' (१६३१) तथा सीताराम चतुर्वेदी का 'भाषा की शिक्षा' (१६३६) इस प्रकार की रचनाओं में प्रमुख हैं।

२. शिक्षा-मनोविज्ञान—शिक्षा-मनोविज्ञान पर प्रमुख हैं हंसराज भाटिया का 'शिक्षा-मनोविज्ञान' [१६३० ?], भैरवनाथ झा का 'मनो-विज्ञान और शिक्षा-शास्त्र' (१६३२), चद्रावती लखनपाल का 'शिक्षा-मनोविज्ञान' (१६३४) तथा लज्जाराम शुक्ल का 'बाल-मनोविज्ञान' (१६३६)।

३. विशिष्ट शिक्षा-विधान—विशिष्ट शिक्षा-विधानों में से, ग्रामीण शिक्षा पर दशरथ बलवन्त पाठक की 'ग्रामीण-शिक्षा' (१६२१), कन्या-शिक्षा पर चन्द्रशेखर शास्त्री की 'कन्या-शिक्षा' (१६२८), प्रौढ़ शिक्षा पर रामेश्वर तिवारी की 'प्रौढ़ शिक्षा-प्रदीपिका' (१६३६), और नवप्रचारित बेसिक शिक्षा पर ज़ाकिर हुसैन की 'बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा' (१६३६ द्वितीय), जो ज़ाकिर हुसैन कमिटी की रिपोर्ट है, तथा लक्ष्मीचन्द की 'बेसिक शिक्षा में समन्वय' (१६४२) उल्लेखनीय रचनाएँ हैं।

४. शिक्षा-समस्याएँ—भारतीय शिक्षा-समस्याओं तथा उनके इतिहास पर रचनाएँ सबसे अधिक हैं, और इस काल के प्रारंभ से ही। मनोहरलाल की 'भारतवर्ष में पश्चिमीय शिक्षा' (१६१०), सत्यदेव स्वामी की 'जातीय शिक्षा' (१६१२), घनश्याम सिंह का 'भारत शिक्षादर्श' (१६१४), हरिदत्त शास्त्री का 'प्राच्य-शिक्षा-रहस्य' (१६२२), हरदयाल लाला का 'अमृत में विष' (१६२२), जिसमें अंग्रेज़ी शिक्षा के बुरे प्रभावों का निदर्शन किया गया है, शेषमणि त्रिपाठी का 'शिक्षा का व्यंग्य' (१६२७), कन्हैयालाल का 'राष्ट्रीय शिक्षा का इतिहास और उसकी वर्त्तमान अवस्था' (१६२६), लज्जा-शङ्कर झा का 'शिक्षा और स्वराज्य' (१६३४), श्रीनारायण चतुर्वेदी का 'शिक्षा-विधान-परिचय' (१६३५) तथा 'ग्राम्य शिक्षा का इतिहास' (१६३८) और हरिभाई त्रिवेदी का 'शिक्षा में नई दृष्टि' [१६४० ?] इस प्रकार के प्रमुख ग्रंथ हैं।

शिक्षा एक नितान्त नवीन विषय था, इस ध्यान से जितना भी कार्य अभी तक हुआ है कम नहीं है। फिर हमारी शिक्षा भी वस्तुतः एक शासन-संस्था है, शिक्षा-विधान में जितना ही कम या अधिक जनता का हाथ रहेगा उतना ही कम या अधिक हम को उसकी साहित्यवृद्धि में उसके सहयोग की आशा भी करनी चाहिए।

धर्म

इस युग में धार्मिक साहित्य का वैसा बाहुल्य नहीं रहा जैसा पिछले युग में रहा, और एक विशेषता इस युग में यह दिखाई पड़ी की धर्म के संबंध में एक व्यापक और उदार भावना के दर्शन हुए। यद्यपि पिछले युग के ढंग का भी साहित्य निकलता रहा, पर उत्तरोत्तर वह कम होता गया। निरीक्षण के लिए समस्त धर्म-विषयक साहित्य को निम्न लिखित शीर्षकों में रख सकते हैं: १. जाति-व्यवस्था, २. संप्रदाय-व्यवस्था, ३. वेदान्त, ४. भक्ति, ५. योग, ६. निर्विशिष्ट धर्म, और ७. नीति-धर्म।

१. जाति-व्यवस्था—जाति-व्यवस्था के संबंध में छोटेलाल सोती

का 'जाति-अन्वेषण' (१६१४), ज्वालाप्रसाद मिश्र का 'जाति-भास्कर' (१६१८), मूलचन्द का 'क्या शिल्प शूद्र-कर्म है ?' (१६११) का उल्लेख किया जा सकता है।

२. संप्रदाय-व्यवस्था—विभिन्न संप्रदायों के संबंध में जो रचनाएँ निकलीं उनमें शीतलप्रसाद ब्रह्मचारी के 'जैन-धर्म का महत्व' (१६११), जैन बौद्ध तत्वज्ञान' (१६३४), तथा 'जैन-धर्म में दैव और पुरुषार्थ' (१६४१), विजयधर्म सूरि का 'जैन तत्वदिग्दर्शन' (१६३६), तथा चम्पतराय जैन का 'धर्म-रहस्य' (१६४१) जैन धर्म के संबंध में, रमानाथ शास्त्री के 'शुद्धाद्वैत दर्शन' (१६१२), तथा 'शुद्धाद्वैत सिद्धान्तसार' (१६१६) वल्लभ-संप्रदाय के संबंध में, आर्यमुनि का 'सद्दर्शनादर्श (१६२५), नारायण स्वामी के 'आत्म-दर्शन' (१६२२), तथा 'मृत्यु और परलोक' (१६२६), नन्दकिशोर विद्यालङ्कार का 'पुनर्जन्म' (१६२५), लेखराम का 'सृष्टि का इतिहास' (१६२८), गङ्गाप्रसाद उपाध्याय के 'आस्तिकवाद' (१६२६), तथा 'जीवात्मा' (१६३३), आर्यसमाज-संबंधी, आनन्दस्वरूप साहब जी महाराज के 'सत्सङ्ग के उपदेश' (१६२७-) तथा 'यथार्थप्रकाश' (१६३७) राधास्वामी संप्रदाय-विषयक, और सत्यानन्द अग्निहोत्री का 'देवशास्त्र' (१६११) देव-समाज विषयक उल्लेखनीय ग्रंथ हैं।

३. वेदान्त—वेदान्त विषय पर स्वतंत्र रचनाएँ अधिक नहीं मिलतीं, यद्यपि वेदान्त ने समस्त संप्रदायों के साहित्य को प्रभावित किया, जैसा ऊपर के ग्रंथों के विषयों से ज्ञात होगा। वेदान्त-विषयक स्वतंत्र ग्रंथों में उल्लेखनीय हैं : भीमसेन शर्मा का 'पुनर्जन्म' (१६१४), शिवानन्द स्वामी का 'आत्मदर्शन' (१६१७), ज्वालाप्रसाद सिंघल का 'कैवल्य-शास्त्र' (१६२४), बलदेवप्रसाद मिश्र का 'जीव-विज्ञान' (१६२८), गङ्गाप्रसाद उपाध्याय का 'अद्वैतवाद' (१६२८), आनन्द भिक्षु सरस्वती की 'भावना' (१६२८) सुधाकर का 'आनन्दामृत' (१६३३), और नारायण स्वामी का 'ब्रह्म-विज्ञान' (१६३३)। भावना-ग्रंथों की इस युग में बड़ी कमी रही।

४. भक्ति—भक्ति-संबंधिनी रचनाएँ अत्यंत अल्प हैं : दुर्गादत्त की 'प्रेमाभक्ति' (१६०६), तथा हरिप्रसाद द्विवेदी 'वियोगी हरि' का प्रेम योग' (१६२६) ही उनमें से उल्लेखनीय हैं। ललित साहित्य की विशेषताओं से संयुक्त भक्ति-साहित्य अन्यत्र ऊपर आ चुका है।

५. योग—योग विषयक रचनाएँ भी अधिक नहीं हैं। प्रसिद्ध-नारायण सिंह के 'योगत्रयी' (१६२०), 'योगशास्त्रान्तर्गत धर्म' (१६२०), 'हठयोग' (१६२३), 'राजयोग' (१६३१), तथा 'जीवन-मरण रहस्य' (१६३३), और वंशीधर सुकुल का 'वाममार्ग' (१६३३) उनमें प्रमुख हैं।

६. निर्विशिष्ट धर्म—धर्म के निर्विशिष्ट रूप पर साहित्य इस युग में यथेष्ट मिलता है, और उसमें एक व्यापक और उदार भावना के दर्शन होते हैं। रामचन्द्र शुक्ल का 'आदर्श-जीवन' (१६१४), मिश्र-बन्धु का 'आत्म-शिक्षण' (१६१८), परमानन्द भाई का 'जीवन-रहस्य' (१६२५), महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'आध्यात्मिकी' (१६२८), गङ्गानाथ झा महामहोपाध्याय का 'धर्म-कर्म-रहस्य' (१६२६), हरिप्रसाद द्विवेदी 'वियोगी हरि' का 'विश्व-धर्म' (१६३०), हरिभाऊ उपाध्याय का 'युग-धर्म' (१६३१), तथा भगवानदास का 'दर्शनों का प्रयोजन' (१६४१) इस प्रकार के साहित्य में प्रमुख हैं।

सामान्य हिंदू-धर्म निम्नलिखित ग्रंथों में विशेष रूप से दिखाई पड़ता है : शीतलासहाय का 'हिन्दू त्योहारों का इतिहास' (१६२७ द्वितीय), कुँवर कन्हैयाजू का 'हिन्दुओं के व्रत और त्योहार' (१६३१), तथा रामदास गौड़ का 'हिन्दुत्व' (१६३८)। ईसाई-धर्म तथा इस्लाम का साहित्य बिल्कुल नहीं निर्मित हुआ। केवल ईसाई-धर्म-संबंधी एक ऐतिहासिक रचना का उल्लेख किया जा सकता है : सन्तराम की 'भारत में बाइबिल' (१६२८-)।

७. नीति-धर्म—नीति-धर्म-संबंधी साहित्य में उल्लेखनीय हैं राधामोहन गोकुलजी का 'नीति-दर्शन' (१६१३), लोचनप्रसाद पाण्डेय की 'नीति-कविता' (१६१४), बालेश्वरप्रसाद का 'लोक-परलोक हितकारी' (१६१६),—जिसमें अनेक महापुरुषों के सदुपदेश

संगृहीत हैं, गुलाबराय का 'कर्त्तव्य-शास्त्र' (१६१६), गोवर्धनलाल का 'नीति-विज्ञान' (१६२३), गुलाबराय का 'मैत्री-धर्म' (१६२७), पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का 'तीर्थरेणु' (१६२६), जिसमें अनेकों महापुरुषों के अनुभव-वाक्य सङ्कलित हैं, नियाज़ मुहम्मद खाँ की 'लोक-सेवा' (१६३३), तथा लक्ष्मणप्रसाद भारद्वाज संगृहीत 'मनन' (१६३२), जिसमें पुनः अनेक महापुरुषों की सदूक्तियाँ दी गई हैं।

धार्मिक-साहित्य पूर्णरूप से नवचेतना का प्रतीक अभी तक नहीं बन सका है; वह अब भी प्रायः अपनी सङ्कुचित भावनाओं का परित्याग नहीं कर सका है; और, न वह सामान्य जीवन के लिए अपनी आवश्यकता प्रमाणित करने में समर्थ हुआ है। आशा है कि आनेवाले युग में वह इन त्रुटियों का परिहार करेगा।

समालोचना*

समालोचना साहित्य को निरीक्षण के लिए हम निम्न लिखित शीर्षकों में रख सकते हैं: १. प्राचीन लेखकों की, २. आधुनिक लेखकों की।

प्राचीन लेखकों में से सबसे अधिक अध्ययन तुलसीदास का हुआ, इसलिए प्राचीन लेखकों से संबंध रखनेवाले साहित्य को तीन भागों में रखने में सुविधा होगी: तुलसी पूर्व, तुलसीदास, तुलसी के अनंतर।

१. प्राचीन लेखक—कबीरदास के संबंध में शम्भुदास महन्त का 'सारदर्शन' (१६१७), जो कबीर के कुछ पदों को लेकर उनका एक रहस्यपूर्ण अर्थ प्रतिपादित करता है, युगलानन्द का 'बृहत् कबीर कसौटी' (१६१६ द्वितीय), रामकुमार वर्मा का 'कबीर का रहस्यवाद' (१६३१), हरिहरनिवास का 'महात्मा कबीर' (१६४० द्वितीय), तथा हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का 'कबीर' (१६४२); मीराबाई के संबन्ध में भगवान प्रसाद 'रूपकला' की 'मीराबाई की जीवनी' (१९२३), भुवनेश्वरप्रसाद

* इस वर्ग में साहित्यकारों के वैयक्तिक अध्ययन से संबंध रखनेवाले उन्हीं ग्रन्थों का उल्लेख हुआ है जो एक-एक साहित्यकार से संबंध रखते हैं, एक से अधिक साहित्यकारों के अध्ययन-ग्रंथ आनेवाले वर्ग में उल्लिखित हुए हैं।

मिश्र की 'मीरा की प्रेम-साधना' (१९३४), श्यामापति पाण्डेय की 'मीरा' (१९३४), तथा मुरलीधर श्रीवास्तव का 'मीराबाई का काव्य' (१९३५); हितहरिवंश के संबंध में गोपालप्रसाद शर्मा का 'हितचरित्र' (१९३९); सूरदास के संबंध में उनके 'सूरसागर' के कुछ संकलन-ग्रंथ बेनीप्रसाद सं० 'संक्षिप्त सूरसागर' (१९२२), हरिप्रसाद द्विवेदी 'वियोगी हरि' सं० 'संक्षिप्त सूरसागर' (१९२२), पं० रामचन्द्र शुक्ल सं० 'भ्रमरगीतसार' (१९२६), भगवानदीन लाला सं० 'सूर-पञ्चरत्न' (१९२७), सत्यजीवन वर्मा सं० सूरदास 'नयन' (१९३७), तथा नन्ददुलारे वाजपेयी सं० 'सूर-संदर्भ' (१९४१), जिनकी भूमिकाओं में भी कुछ समालोनात्मक अध्ययन प्राप्त होता है, हज़ारीप्रसाद द्विवेदी का 'सूर-साहित्य' (१९३६), शिखरचन्द जैन का 'सूर—एक अध्ययन' [१९३९ ?], नलिनीमोहन सान्याल का 'सूरदास' (१९३८),रामरत्न भटनागर का 'सूर-साहित्य की भूमिका' (१९४१), तथा कृष्णदेव शर्मा का 'सूर का एक पद—अथवा सूरवंश निर्णय' (१९४१); नन्ददास के संबंध में पं० उमाशङ्कर शुक्ल सं० 'नन्ददास, (१९४२) जिसमें कवि के काव्य-संग्रह के अतिरिक्त एक खोजपूर्ण भूमिका है; मलिक मुहम्मद जायसी के संबंध में रामचन्द्र शुक्ल संपादित 'जायसी ग्रन्थावली' (१९२४), जिसमें कवि की रचनाओं के अतिरिक्त एक विस्तृत और विशद समालोचनात्मक भूमिका है, महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं।

तुलसीदास के संबंध में शिवनन्दनसहाय का 'गोस्वामी तुलसीदास' (१९१७), रामदास गौड़ की 'रामचरितमानस की भूमिका' (१९२५), विन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंह लिखित 'गोस्वामी तुलसीदास' (१९२६), श्यामलाल लिखित 'बालकाण्ड का नया जन्म' (१९२७), रामचन्द्र द्विवेदी का 'तुलसी-साहित्य-रत्नाकर' (१९२९) श्यामसुन्दरदास का 'गोस्वामी तुलसीदास' (१९३१), रामचन्द्र शुक्ल का 'गोस्वामी तुलसीदास' (१९३३), प्रस्तुत लेखक का 'तुलसी-सन्दर्भ' (१९३६) जिसमें तुलसीदास के संबंध में लिखे गए लेखक के कुछ लेखों का संग्रह है, रामनरेश त्रिपाठी का 'तुलसीदास और उनकी कविता' (१९३८), 'पोल

प्रकाशक' का 'तुलसीदास का मुक़दमा' (१६३८), नाहरसिंह सोलङ्की संपादित 'रत्नावली' (१६३६), रामदत्त भारद्वाज सं० 'रत्नावली' (१६४२), रामदत्त भारद्वाज की 'तुलसी-चर्चा' (१६४१), जिनमें से अन्तिम तीन सोरों को कवि का जन्म-स्थान सिद्ध करने का यत्न करते हैं, महादेव पाण्डेय लिखित 'तुलसी-चरितावली' (१६४२), जो राजापुर को जन्म-स्थान सिद्ध करने का यत्न करती है, तथा प्रस्तुत लेखक का 'तुलसीदास' (१६४२), जिसमें कवि के जीवन तथा कृतियों का एक पूर्ण और वैज्ञानिक अध्ययन है, स्वतंत्र समालोचनात्मक ग्रंथ हैं। 'मानस' के अध्ययन अलग महत्व-पूर्ण हैं। चन्द्रमौलि सुकुल का 'मानस-दर्पण' (१६१३), जिसमें 'मानस' में प्रयुक्त अनेक अलंकारों का दिग्दर्शन कराया गया है, रामजी लाल शर्मा का 'रामायण-रहस्य (१६१५), जिसमें कथा के पात्रों का चरित्र-चित्रण किया गया है, विश्वेश्वरदत्त शर्मा का 'मानस-प्रबोध' (१६२७), जिसमें 'मानस' की भाषा पर विचार किया गया है, राम-प्रसाद शरण का 'मानस-अनुबन्ध' (१६१६), जिसमें 'मानस' की कथा का मूल अभिप्राय अपने ढंग से बतलाने का यत्न किया गया है, बलदेवप्रसाद मिश्र का 'तुलसी-दर्शन (१६३४), जिसमें केवल 'मानस' के आधार पर कवि के आध्मात्मिक विचारों का परिचय कराया गया है, चन्द्रशेखर पाण्डेय का 'रामायण के हास्य-स्थल' (१६३६), जिसका विषय प्रकट है, तथा राजबहादुर लमगोड़ा का 'विश्व-साहित्य में रामचरितमानस' (१६४०-), जिसके प्रथम भाग में—जो अभी तक अकेला ही प्रकाशित है—हास्य-रस के नाते 'मानस' को विश्व-साहित्य में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने का यत्न किया गया है, 'मानस' के विशेष अध्ययन के ग्रंथ हैं। ग्रंथावलियों तथा संकलनों का अलग महत्व है। उनमें से उल्लेखनीय हैं: रामचन्द्र शुक्ल सं० 'तुलसी-ग्रंथावली' जिसके तीसरे भाग में कई विद्वानों के विचारपूर्ण समालोचनात्मक निबंध हैं, महावीरप्रसाद मालवीय सं० 'तुलसी-ग्रन्थावली' (१६२६), बजरङ्गबली 'विशारद' सं० 'तुलसी-रचनावली' (१६३६), तथा भगवानदीन लाला सं० 'तुलसी-पञ्चरत्न (१६२७), जिसमें कवि की पाँच

छोटी कृतियाँ संकलित हैं। इस प्रसंग में दो और ग्रन्थों का भी उल्लेख किया जा सकता है : शीतलासहाय सामन्त सं० 'मानस-पीयूष' (१९३०-) जिसमें 'मानस' के छंदों के वे विभिन्न अर्थ दिए गए हैं जो रामायणी टीकाकार तथा संत प्रायः लगाया करते हैं, महावीरप्रसाद मालवीय का 'विनय-कोष' (१९२४), जिसमें विनयपत्रिका के शब्दों के अर्थ दिए हुए हैं और सूर्यकान्त शास्त्री निर्मित 'तुलसी-रामायण शब्द-सूची' (१९३७)।

रहीम के संबंध में केवल उनकी रचनाओं के संग्रह और संकलन प्राप्त हैं : वे हैं रामनरेश त्रिपाठी सं० 'रहीम' (१९२१), अयोध्या-प्रसाद शर्मा सं० 'रहिमन विनोद' (१९२८), अनूपलाल मण्डल सं० 'रहिमन-सुधा' (१९२८), मायाशङ्कर याज्ञिक सं० 'रहीम-रत्नावली' (१९२८), भगवानदीन लाला सं० 'रहिमन शतक' [१९३० ?] तथा ब्रजरत्नदास सं० 'रहिमन-विलास' [१९३० ?]; केशवदास के संबंध में भगवानदीन लाला सं० 'केशव-पञ्चरत्न' (१९२९), जो संकलन-ग्रंथ है, तथा कृष्णशङ्कर शुक्ल लिखित केशव की काव्य-कला (१९३४), जो स्वतंत्र समालोचना का ग्रंथ है; भूषण के संबंध में मिश्रबंधु सं० भूषण-ग्रन्थावली' (१९१२), जिसमें एक विस्तृत भूमिका भी है, तथा भगीरथ प्रसाद दीक्षित लिखित 'भूषण-विमर्श' (१९३५), मतिराम के संबंध में है कृष्णबिहारी मिश्र सं० 'मतिराम-ग्रंथावली' (१९२६), जिसके प्रारंभ में एक अध्ययनपूर्ण भूमिका है; बिहारी के संबंध में हैं विश्वनाथ प्रसाद मिश्र की 'बिहारी की वाग्विभूति' (१९३६), लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी का 'बिहारी-दर्शन' (१९३७), मिश्रबंधु सं० एक संकलन 'बिहारी सुधा' (१९४१); सुन्दरदास के संबंध में है हरिनारायण सं० 'सुन्दर-सार' (१९१८), देव के संबंध हैं माधव प्रसाद पाठक सं० 'देव-ग्रंथावली' (१९२०), तथा मिश्रबंधु सं० एक संकलन 'देवसुधा' (१९३५), पद्माकर के संबंध में हैं गङ्गाप्रसाद सिंह की 'पद्माकर की काव्य-साधना' (१९३४), तथा विश्वनाथ प्रसाद मिश्र सं० 'पद्माकर-पंचामृत' (१९३५), जिसमें कवि की पाँच रचनाएँ संगृहीत हैं; बाँकीदास के संबंध में है उनका एक काव्य-संग्रह रामकरण सं० 'बाँकीदास-ग्रंथावली', शिवगोविन्द

के संबंध में है : बटुकनाथ शर्मा का 'रसिकगोविन्द और उनकी कविता' (१६२६), तथा दीनदयालु गिरि के संबंध में है श्यामसुन्दर दास सं० 'दीनदयालु गिरि-ग्रंथावली' (१६१६) ।

२. आधुनिक लेखक विषयक—आधुनिक काल के लेखकों में से किसी का अध्ययन ऐसा नहीं है जिसका उल्लेख शेष से अलग करना आवश्यक हो, इस कारण सब का एकत्र उल्लेख यथेष्ट होगा । हरिश्चन्द्र भारतेन्दु के विषय में किशोरीलाल गोस्वामी की 'भारतेन्दु-भारती' (१६२४), गोपाललाल खन्ना की 'भारतेन्दु की भाषा-शैली' (१६४०), ब्रजरत्नदास का 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' (१६३५), रामचन्द्र शुक्ल सं० 'भारतेन्दु-साहित्य' (१६२६) नामक चयन-ग्रंथ, जिसमें एक समालोचनात्मक भूमिका भी है, तथा ब्रजरत्नदास सं० 'भारतेन्दु-ग्रन्थावली' (१६३४), गोविन्द गिल्लाभाई चौहान के विषय में उनकी 'गोविन्द-ग्रन्थमाला' (१६११-), देवीप्रसाद 'पूर्ण' के संबंध में उनके देहावसान पर रामरत्न सनाढ्य सं० 'पूर्ण-वियोग' (१६१६), मनोहरप्रसाद दूबे लिखित 'पूर्ण-प्रवाह' (१६२०), जिसमें उनका जीवन-वृत्त है, तथा लक्ष्मीकान्त तिवारी सं० 'पूर्ण-संग्रह' (१६२५), प्रतापनारायण कविरत्न के संबंध में उनका 'काव्य कानन' (१६३३), राधाकृष्ण दास के विषय में, रामचन्द्र शुक्ल लिखित 'राधाकृष्णदास' (१६१४), तथा श्यामसुन्दरदास सं० 'राधाकृष्ण-ग्रन्थावली' (१६३०), बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' के विषय में प्रभाकरेश्वर उपाध्याय सं० 'प्रेमघन-सर्वस्व' (१६३६) नामक उनका काव्य-संग्रह, अयोध्यासिंह उपाध्याय के संबंध में दयाशङ्कर मिश्र लिखित 'अयोध्या सिंह उपाध्याय' (१६२४), गिरिजादत्त शुक्ल लिखित 'महाकवि हरिऔध' (१६३४), तथा वेनीमाधव शर्मा लिखित 'झलक' (१६३६), महावीरप्रसाद द्विवेदी के विषय में प्रेमनारायण टंडन लिखित 'द्विवेदी-मीमांसा' (१६३६), जगन्नाथदास 'रत्नाकर' के संबंध में कृष्णशङ्कर शुक्ल लिखित 'कविवर रत्नाकर' (१६३५), तथा श्यामसुन्दर-दास सं० 'रत्नाकर' (१६३१-), जो उनका काव्य-संग्रह है, लाला भगवानदीन के विषय में कृष्णकुमारलाल लिखित 'युगल जोड़ी'

(१६३१), जिसमें 'दीन' जी तथा उनकी स्त्री बुन्देलबाला जी की जीवनी है, सत्यनारायण कविरत्न विषयक बनारसीदास चतुर्वेदी लिखित 'कविरत्न सत्यनारायण जी' (१६२८), लज्जाराम शर्मा विषयक उनकी आत्मकथा 'आप बीती' (१६३४), पद्मसिंह शर्मा के संबंध में पारसनाथ सिंह सं० 'पद्म-पराग' (१६२६-), जिसमें उनकी कविताओं और लेखों का संग्रह है, मैथिलीशरण गुप्त के संबंध में गिरिजादत्त शुक्ल लिखित 'गुप्त जी की काव्य-धारा (१६३७), गौरीशङ्कर 'सत्येन्द्र' लिखित 'गुप्त जी की कला' (१६३७), रामदीन पाण्डेय लिखित 'काव्य की उपेक्षिता' (१६४०), जिसमें उनकी 'यशोधरा' पर विचार किया गया है, नगेन्द्र लिखित 'साकेत—एक अध्ययन' (१६४०), और धर्मेन्द्र लिखित 'गुप्त जी के काव्य की कारुण्य-धारा' (१६४२), जयशङ्कर 'प्रसाद' के विषय में, रामकृष्ण शुक्ल 'शिलीमुख' लिखित 'प्रसाद की नाट्य-कला' [१६२६ ?], कृष्णानन्द गुप्त लिखित 'प्रसाद जी के दो नाटक' (१६३३), रामनाथलाल 'सुमन' लिखित 'प्रसाद की काव्य-साधना' (१६३८), गुलाबराय लिखित 'प्रसाद जी की कला' (१६३८), विनोदशङ्कर व्यास लिखित 'प्रसाद और उनका साहित्य' (१६४०), शिखरचन्द जैन लिखित 'प्रसाद का नाट्य-चिन्तन' (१६४१), गङ्गाप्रसाद पाण्डेय लिखित 'कामायनी—एक परिचय' (१६४२), और नन्ददुलारे वाजपेयी लिखित 'जयशङ्कर प्रसाद' (१६४१), सियारामशरण गुप्त के विषय में ब्रह्मदत्त शर्मा लिखित 'बापू-विचार' (१६४२), जो उनकी 'बापू' नामक कृति का एक अध्ययन है, प्रेमचन्द के संबंध में जनार्दनप्रसाद झा की 'प्रेमचन्द की उपन्यास-कला' (१६३४), प्रेमनारायण टंडन की 'प्रेमचन्द और ग्राम-समस्या' (१६४१) तथा रामविलास शर्मा लिखित 'प्रेमचन्द' (१६४१), श्यामसुन्दरदास के संबंध में उनकी लिखी हुई 'मेरी आत्मकथा' (१६४२), महादेवी वर्मा के विषय में उनके 'अतीत के चलचित्र' (१६४१), जिसमें उनके कुछ संस्मरण हैं, जैनेन्द्रकिशोर के संबंध में सकलनारायण पाण्डेय लिखित 'जैनेन्द्रकिशोर की जीवनी' [१६१० ?], सुमित्रानन्दन पन्त

के विषय में नगेन्द्र लिखित 'सुमित्रानन्दन पन्त' (१६३८), मोहन-लाल महतो के संबंध में उनके 'धुँधले चित्र' (१६३०), जिसमें उनके युवावस्था के संस्मरण हैं, गुरुभक्तसिंह के विषय में भगवतशरण उपाध्याय की 'नूरजहाँ' (१६४१), जो उनकी 'नूरजहाँ' का एक अध्ययन है, हरिवंशराय 'बच्चन' पर सत्यप्रकाश मिलिन्द लिखित 'प्रयोग कालीन बच्चन' (१६४२), जैनेन्द्रकुमार के विषय में प्रभाकर माचवे सं० उनके कुछ लेख 'जैनेन्द्र के विचार' (१६३८), और सेठ गोविन्द-दास के विषय में रत्नकुमारी देवी लिखित 'सेठ गोविन्ददास' (१६३६), तथा 'सेठ गोविन्ददास के नाटक' (१६३६) आधुनिक लेखकों के विषय में इस काल के उल्लेखनीय अध्ययन हैं।

उपर्युक्त समालोचात्मक कार्य के दो पक्ष हैं: एक संपादन और दूसरा अध्ययन। कृतियों का संपादन खूब हुआ, किंतु इस युग में भी वह संपादन के सर्वमान्य वैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर नहीं हो पाया। हुआ यही है कि ग्रंथों की कुछ प्रतियों को एकत्र कर सबसे अधिक काव्योचित पाठ प्राप्त करने का प्रयास किया गया है; पाठ-निर्धारण के लिए न कोई निश्चित सिद्धांत हैं, न नियम; केवल संपादक की रुचि ही निर्णायक हुई है। आवश्यकता यह है कि वैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार प्राचीन साहित्य का संपादन हो। अध्ययनों की दशा इससे कुछ भिन्न अवश्य है: कुछ प्राचीन और आधुनिक साहित्यकारों के अच्छे अध्ययन प्रस्तुत हो चुके हैं, यद्यपि अभी बहुत-सा कार्य इस दिशा में भी शेष है।

साहित्य का इतिहास

निरीक्षण के लिए प्रस्तुत विषय के साहित्य को हम निम्नलिखित शीर्षकों में रख सकते हैं: १. प्राचीन काव्य, २. आधुनिक काव्य, ३. मिश्रित, ४. लोकगीत, ५. उपन्यास, ६. कहानी, ७. नाटक, ८. निबंध, ९. चरित्र, १०. समालोचना, ११. साहित्य का सामान्य इतिहास और १२. खोज।

१. प्राचीन काव्य—प्रचीन काव्य-संग्रहों में कुछ विशिष्ट विषयों

के हैं : कृष्ण-काव्य के हैं श्यामदास सं० 'निम्बार्क सम्प्रदाय-प्रकाश' [१९१० ?], ठाकुरदास सूरदास सं० 'पुष्टिमार्गीय पदसंग्रह' (१९११), जो एक बृहद् ग्रंथ है, अज्ञात संपादक का 'श्रीनाथ जी का प्रभातीय-संग्रह' (१९२६), लल्लूभाई मगनलाल देसाई सं० 'कीर्तन-संग्रह' (१९३६) और सोमनाथ गुप्त सं० 'अष्टछाप-पदावली' (१९४०); 'राम-काव्य का एक अध्ययन अनन्तराम शास्त्री के 'रामभक्तिशाखा' (१९४१) में मिलता है; एक ऐतिहासिक काव्य-संग्रह है अगरचन्द नाहटा सं० 'ऐतिहासिक जैनकाव्य-संग्रह' (१९३८), जिसमें बारहवीं से लेकर बीसवीं शताब्दी तक की रचनाओं का संग्रह है; दो संग्रह वीर-काव्य के हैं—भागीरथ प्रसाद दीक्षित सं० 'वीर-काव्य-संग्रह' [१९३१ ?], भीमसेन विद्यालङ्कार सं० 'वीर-काव्य और कवि' (१९४०); सूफ़ी कवियों की रचनाओं के संबंध में एक कृति है— भारतीय' द्वारा सं० 'आख्यानत्रयी' (१९३५), जिसमें 'पद्मावती' 'चित्रावली' तथा 'यूसुफ-जुलेखा' की कथा संक्षेप में दी गई है; एक संग्रहसतसइयों का है—श्यामसुन्दरदास सं० 'सतसई-सप्तक' (१९३१); एक संग्रह स्त्री-कवियों का है—व्रजराज सं० 'मीरा, सहजो तथा दयाबाई का पद्य-संग्रह' (१९२२); कुछ संग्रह निर्विशिष्ट हैं—देवीप्रसाद मुंसिफ सं० 'कविरत्नमाला' (१९११), सीताराम लाला सं० 'सेलेक्शन्स फ्राम हिंदी लिटरेचर' (१९२२-), और गणेशप्रसाद द्विवेदी सं० 'हिंदी के कवि और काव्य' (१९३९-) ।

२. आधुनिक काव्य—आधुनिक काव्य-संग्रहों में से प्रमुख हैं महावीरप्रसाद द्विवेदी संकलित 'कविता-कलाप' (१९०९), लोचनप्रसाद पाण्डेय संकलित 'कविता-कुसुममाला' (१९१०), मन्नन द्विवेदी सं० 'गोरखपुर-विभाग के कवि' (१९१२), मङ्गलप्रसाद सिंह संकलित 'बिहार के नवयुवक हृदय' (१९२८), श्यामसुन्दर उपाध्याय संकलित 'बलिया के कवि और लेखक' (१९२९), ज्योतिप्रसाद निर्मल संकलित 'नवयुग काव्य-विमर्श' (१९३८), धीरेन्द्र वर्मा तथा रामकुमार वर्मा संकलित 'आधुनिक हिन्दी-काव्य' (१९३९) तथा गिरिजादत्त शुक्ल सं० 'हिन्दी के वर्तमान कवि और उनका काव्य' (१९४२) ।

३. मिश्रित—प्राचीन और आधुनिक दोनों कालों के काव्य से संबंध रखनेवाले निर्विशिष्ट अध्ययन-ग्रन्थों में महत्वपूर्ण हैं रामनरेश त्रिपाठी सं० 'कविता-कौमुदी' भाग १-२ (१६२२-), हरिप्रसाद द्विवेदी 'वियोगी हरि' सं० 'ब्रजमाधुरी-सार', जिसमें केवल ब्रजभाषा की कविता का संकलन है तथा 'साहित्य-विहार' (१६२६), जिसमें विषयों के अनुसार कविता का संकलन और विवेचन है, गौरीशङ्कर द्विवेदी सं० 'सुकवि-सरोज' (१६२७-), जिसमें कतिपय प्राचीन और आधुनिक सनाढ्य कवियों की रचनाओं का परिचय है, उन्हीं के द्वारा सं० 'बुन्देल-वैभव' (१६३४-), जिसमें बुन्देलखंड के प्राचीन और आधुनिक कवियों का परिचयात्मक संकलन है, सूर्यबली सिंह सं० 'हिंदी की प्राचीन और नवीन काव्य-धारा' (१६३६), तथा अयोध्यासिंह उपाध्याय संकलित 'विभूतिमती ब्रजभाषा' (१६४०), जो ब्रजभाषा-काव्य का संकलन ग्रन्थ है।

विशिष्ट अध्ययन-ग्रंथों में उल्लेखनीय हैं, श्यामलाल पाठक लिखित 'हिंदी कवियों की अनोखी सूझ' (१६२१), भगवानदीन सं० 'सूक्ति-सरोवर' (१६२३), देवेन्द्रप्रसाद जैन सं० 'प्रेमकली' (१६१७), शिवपूजन सहाय सं० 'प्रेम-पुष्पाञ्जलि' [१६२६ ?], जवाहरलाल चतुर्वेदी सं० 'आँख और कविगण' (१६३२), मूलचन्द जैन लिखित 'जैन कवियों का इतिहास' (१६३७), तथा ब्रजेश्वर वर्मा लिखित 'हिन्दी के वैष्णव कवि' (१६४१)। कुछ ग्रंथ स्त्री-कवियों के संबंध में भी लिखे गए हैं उल्लेखनीय उनमें से हैं ज्योतिप्रसाद 'निर्मल' सं० 'स्त्री-कवि-संग्रह' (१६३०), गिरिजादत्त शुक्ल सं० 'हिन्दी-काव्य की कोकिलाएँ' (१६३३), तथा 'व्यथित-हृदय' लिखित 'हिन्दी-काव्य की कलामयी तारिकाएँ' (१६३६)।

४. लोक-गीत—लोक गीतों के भी कुछ ग्रन्थ इस काल में प्रकाशित हुए : रामनरेश त्रिपाठी सं० 'ग्राम-गीत' (१६२५), 'सोहर' (१६३७), तथा 'हमारा ग्राम-साहित्य' (१६४०), प्रभारानी सं० 'सोहर' (१६४०), तथा चन्द्रसिंह विशारद सं० 'कहमुकरणी' [१६४० ?] उनमें से प्रमुख हैं।

५. उपन्यास—उपन्यास-साहित्य के संबंध में रचनाएँ बहुत ही थोड़ी और बहुत हाल की हैं। उल्लेखनीय हैं रघुवीरसिंह लिखित 'सप्तदीप' (१९३८), जिसमें सात उपन्यासों की समालोचनाएँ हैं, ताराशङ्कर पाठक लिखित 'हिन्दी के सामाजिक उपन्यास' (१९३९), तथा शिवनारायण श्रीवास्तव लिखित 'हिन्दी उपन्यास' (१९४०)।

६. कहानी—कहानी-संबंधी सङ्कलन और समालोचनात्मक रचनाओं में प्रमुख हैं रामकृष्ण शुक्ल सं० 'आधुनिक हिन्दी कहानियाँ' (१९३१), गिरिजादत्त शुक्ल सं० 'हिन्दी की कहानी लेखिकाएँ और उनकी कहानियाँ' (१९३५), भगवतीप्रसाद वाजपेयी की 'हिन्दी की प्रतिनिधि कहानियाँ' (१९४२), तथा राय कृष्णदास सं० 'नई कहानियाँ' (१९४१)।

७. नाटक—नाटक-साहित्य के संबंध की रचनाएँ भी प्रायः इधर की ही हैं। उनमें से उल्लेखनीय हैं विश्वनाथप्रसाद मिश्र लिखित 'हिन्दी नाट्य-साहित्य का विकास' (१९३०), व्रजरत्नदास लिखित 'हिन्दी नाट्य-साहित्य' (१९३०), गुलाबराय लिखित 'हिन्दी नाट्य-विमर्श' (१९४०), नगेन्द्र लिखित 'आधुनिक हिन्दी नाटक' (१९४२), भीमसेन लिखित 'हिन्दी नाटक साहित्य की समालोचना' (१९४२), शिखरचन्द जैन लिखित 'हिन्दी नाट्य-चिन्तन' (१९४१), तथा 'हिन्दी के तीन प्रमुख नाटककार' (१९४१)। इसी प्रसङ्ग में रामकुमार वर्मा सं० 'आठ एकाङ्की नाटक' (१९४१) का भी उल्लेख किया जा सकता है।

८. निबंध—निबंध-साहित्य में सङ्कलन-ग्रन्थ पहले से मिलते हैं, किन्तु इतिहास-ग्रन्थ तो अभी की चीज़ें हैं। सङ्कलन-ग्रन्थों में उल्लेखनीय हैं अम्बिकाप्रसाद गुप्त सं० 'प्रबन्ध-पूर्णिमा' (१९२१), जिसमें 'इन्दु' से सङ्कलित कुछ निबंध हैं, रामावतार पाण्डेय सं० 'प्रबन्ध पुष्पाञ्जलि' (१९२८), जिसमें बिहार के कतिपय साहित्यिकों के निबंध हैं, धीरेन्द्र वर्मा सं० 'परिषद्-निबन्धावली' (१९२९-), जिसमें प्रयाग-विश्वविद्यालय की उच्चतम कक्षाओं के विद्यार्थियों के निबंध हैं, और श्यामसुन्दरदास सं० 'हिन्दी

निबंधमाला' (१६३२-), तथा 'हिन्दी निबन्ध-रत्नावली' (१६४१-), जिसमें हिन्दी के विभिन्न लेखकों के निबंध-सङ्कलित हैं। इसी स्थान पर गद्य-काव्य के एक सङ्कलन जगन्नाथप्रसाद शर्मा सं० 'गद्य-काव्य-तरङ्गिणी' [१६४० ?] का भी उल्लेख किया जा सकता है। निबंध-साहित्य के इतिहास-ग्रन्थों में उल्लेखनीय है केवल ब्रह्मदत्त शर्मा लिखित 'हिन्दी साहित्य में निबन्ध' (१६४६)। इसी प्रसङ्ग में वी० एम० ठाकुर के 'हिन्दी पत्रों के सम्पादक' (१६४०), का भी उल्लेख किया जा सकता है।

६. चरित्र—ऐतिहासिक व्यक्तियों के चरित्रों के सङ्कलन इतिहास शीर्षक में उल्लिखित हैं; केवल एक प्रकार के चरित्र हैं जिनके सङ्कलनों का उल्लेख यहाँ होना आवश्यक होगा : वह हैं भक्तों के चरित्र। ऐसे सङ्कलन-ग्रन्थों में हिम्मतदास कृत 'भक्त-चरितामृत' (१६०६), बालक-राम विनायक रचित 'भक्ति-शरत्-सर्वरीश' (१६११), प्रभुदत्त ब्रह्म-चारी लिखित 'भक्त-चरितावली' (१६२६-), और कन्हैयालाल लिखित 'बृहद् भक्तमाल भाषा' (१६३२) हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन्हीं भक्तों में से कुछ हमारे प्राचीन साहित्यकार भी हैं, जिनके जीवनवृत्त इन संग्रहों में प्राप्त हो जाते हैं।

१०. समालोचना—सामान्य समालोचात्मक साहित्य भी इस काल में कुछ मिलता है : जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी का 'निरंकुशता-निदर्शन' (१६११), मिश्रबन्धु का 'हिन्दी नवरत्न' (१६११), कृष्णबिहारी मिश्र का 'देव और बिहारी' [१६२५ ?], भगवानदीन लाला का 'बिहारी और देव' (१६२६), महावीरप्रसाद द्विवेदी के 'आलोचनाञ्जलि' [१६३२ ?], तथा 'समालोचना समुच्चय' (१६३०), ललिताप्रसाद सुकुल की 'साहित्य-चर्चा' (१६३८), रामकृष्ण शुक्ल लिखित 'आलो-चना समुच्चय' (१६३६), तथा सुब्रह्मण्य गुर्तो संपादित 'हिंदी साहित्य समीक्षा' [१६४० ?], जिसमें हिंदी साहित्य के विभिन्न विषयों पर विभिन्न लेखकों के समालोचनात्मक निबंधों के संग्रह हैं, उसमें प्रमुख हैं।

११. साहित्य का सामान्य इतिहास—साहित्य के वास्तविक इतिहास इसी युग में लिखे गए, किंतु उनमें 'साहित्य' का आशय अधि-

कतर 'ललित साहित्य' से ही है। इस श्रेणी के ग्रंथों की संख्या बड़ी है। महत्वपूर्ण उनमें से हैं : श्यामसुन्दरदास लिखित 'हिंदी कोविद रत्न-माला' (१९०९), नाथूराम प्रेमी लिखित 'दिगम्बर जैन ग्रन्थकर्त्ता और उनके ग्रन्थ' (१९११) तथा 'हिंदी जैन साहित्य का इतिहास' (१९१७), मिश्रबन्धु लिखित 'मिश्रबन्धु-विनोद' (१९१४-), जो वास्तव में हिंदी साहित्य का पहला सुव्यवस्थित इतिहास माना जा सकता है, रामनरेश त्रिपाठी लिखित 'हिन्दी का संक्षिप्त इतिहास' (१९२३), पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी लिखित 'हिंदी साहित्य-विमर्श' (१९२४), बदरीनाथ भट्ट का 'हिंदी' (१९२५), गङ्गाप्रसाद सिंह लिखित 'हिंदी के मुसलमान कवि' (१९२६), रामकान्त त्रिपाठी लिखित 'हिंदी-गद्य-मीमांसा' (१९२६), अवध उपाध्याय लिखित 'हिंदी-साहित्य' (१९३०), रामचन्द्र शुक्ल लिखित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' (१९३०), श्यामसुन्दरदास लिखित 'हिंदी भाषा और साहित्य' (१९३०), जगन्नाथ प्रसाद शर्मा लिखित 'हिंदी गद्य-शैली का विकास' (१९३०), रामशङ्कर शुक्ल लिखित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' (१९३१), श्यामसुन्दरदास लिखित 'हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' (१९३१), गणेशप्रसाद द्विवेदी लिखित 'हिंदी-साहित्य' (१९३१), सूर्यकान्त शास्त्री लिखित 'हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास' (१९३१), व्रजरत्नदास लिखित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' (१९३३), शुकदेव विहारी मिश्र लिखित 'हिंदी साहित्य का भारतीय इतिहास पर प्रभाव' (१९३४), कृष्णशङ्कर शुक्ल लिखित 'आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास' (१९३४), गणेश-प्रसाद द्विवेदी लिखित 'हिंदी साहित्य का गद्य-काल' (१९३४), अयोध्या सिंह उपाध्याय लिखित 'हिंदी भाषा और उसके साहित्य का विकास' (१९३४), शांतिप्रिय द्विवेदी लिखित 'हमारे साहित्य निर्माता' (१९३५), कमलधारी सिंह लिखित 'मुसलमानों की हिन्दी सेवा' (१९३५), गौरी शङ्कर 'सत्येन्द्र' लिखित 'साहित्य की झाँकी' (१९३७), मिश्रबन्धु लिखित 'हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' (१९३७), नरोत्तमदास स्वामी लिखित 'हिंदी गद्य का इतिहास' (१९३८), रामकुमार वर्मा लिखित

'हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' (१९३८), गुलाबराय लिखित 'हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास' (१९३८), सूर्यकान्त शास्त्री लिखित 'हिंदी साहित्य की रूपरेखा' (१९३८), रामकुमार वर्मा लिखित 'हिंदी साहित्य की रूपरेखा' (१९३८), मिश्रबन्धु लिखित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' (१९३९), कृष्णशङ्कर शुक्ल लिखित 'हमारे साहित्य की रूपरेखा (१९३९), हज़ारीप्रसाद द्विवेदी लिखित 'हिंदी साहित्य की भूमिका' (१९४०), सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन लिखित 'आधुनिक हिंदी साहित्य' (१९४०), प्रकाशचन्द्र गुप्त लिखित 'नया हिंदी साहित्य' (१९४१), शांतिप्रिय द्विवेदी लिखित 'युग और साहित्य' (१९४१), श्यामसुन्दरदास लिखित 'हिंदी के निर्माता' (१९४१), लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय लिखित 'आधुनिक हिंदी साहित्य' (१९४१), श्रीकृष्णलाल लिखित 'आधुनिक हिंदी साहित्य का विकास' (१९४२), तथा ब्रजरत्नदास लिखित 'खड़ी बोली हिंदी-साहित्य का इतिहास' (१९४१)। इसी प्रसंग में हम लाला सीताराम सं० 'हिंदी सर्वे कमेटी रिपोर्ट' (१९३०) का भी उल्लेख कर सकते हैं; जो प्रायः समस्त प्रकार के आधुनिक हिंदी के साहित्य से संबंधित है।

१२. खोज—खोज का कार्य हिन्दी में बहुत पिछड़ा हुआ है। नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित पहले वार्षिक और अब त्रैवार्षिक रिपोर्टों के अतिरिक्त, जो अङ्गरेज़ी में हुआ करती हैं उल्लेखनीय हैं केवल देवीप्रसाद मुंसिफ़ लिखित 'राजपूताने में हिन्दी पुस्तकों की खोज' (१९११), श्यामसुन्दरदास सं० 'हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (१९२४-), तथा मोतीलाल मेनारिया लिखित 'राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज' (१९४२)।

उपर्युक्त निरीक्षण से ज्ञात होगा कि यह शिकायत अब नहीं हो सकती कि हिन्दी में साहित्य के इतिहास-ग्रन्थों की कमी है—बल्कि १९१४ में 'मिश्रबन्धु-विनोद' के प्रकाशन से लेकर अभी तक निरंतर यह इतिहास-ग्रन्थ निकलते चले आ रहे हैं। यह बात दूसरी है कि 'विनोद' की तुलना में वे कितने आगे बढ़े हैं—कितनी नई खोज उनमें

सन्निहित हुई है अथवा इतिहास के संबंध में कितनी दृष्टिकोण-संबंधी नवीनता उनमें आई है। दृष्टिकोण-संबंधी नवीनता उपस्थित करना हर एक के बूते की बात नहीं, पर आधुनिकतम खोज का उपयोग तो प्रत्येक इतिहास-लेखक कर ही सकता था। किन्तु, यह भी इने-गिने इतिहास-लेखकों में पाया जाता है। खोज का साहित्य निस्संदेह अभी अत्यन्त अपूर्ण दशा में है, किन्तु जितना वह प्रकाशित है, उसका ही पूर्ण उपयोग अभी तक नहीं हुआ है। फिर भी, इतिहास-लेखन में जो उत्साह इस युग में दिखलाई पड़ा है उससे आशा करनी चाहिए कि यह कमी शीघ्र दूर होगी।

विभाषा साहित्य का अध्ययन

आलोच्यकाल में विभाषा साहित्य का अध्ययन एक विस्तृत भाषा-क्षेत्र पर मिलता है, जिसे हम दो वर्गों में विभाजित सकते हैं:—
१. भारतीय भाषा-साहित्य, २. अ-भारतीय भाषा-साहित्य।

१. भारतीय भाषा-साहित्य—प्रथम वर्ग में सबसे अधिक अध्ययन संस्कृत साहित्य का हुआ। कृतियाँ प्रायः तीन ढंग की हैं: धार्मिक विवेचना, समालोचनात्मक अध्ययन, तथा साहित्यिक इतिहास। धार्मिक विषयों पर प्रमुख कृतियाँ हैं सदानन्द अवस्थी का 'दर्शन-सार-संग्रह' (१९१०), द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी का 'पौराणिक उपाख्यान' (१९१२-), गङ्गाप्रसाद मिश्र सं० 'चतुर्विंशत उपनिषत्सार' (१९१३), इन्द्रवेदालङ्कार की 'उपनिषदों की भूमिका' (१९१३), राधाप्रसाद शास्त्री का 'प्राच्य-दर्शन' (१९१५), आर्यमुनि का 'वेदान्त-तत्व-कौमुदी' (१९१५), अखिलानन्द शर्मा की 'वैदिक वर्ण-व्यवस्था' (१९१६), भवानीदयाल सन्यासी का 'वैदिक धर्म और आर्य सभ्यता' (१९१७), चन्द्रमणि वेदालङ्कार की 'वेदार्थ करने की विधि' (१९१७), सम्पूर्णानन्द की 'भारतीय सृष्टिक्रम विचार' (१९१७), राधाकृष्ण मिश्र का 'भारतीय दर्शन-शास्त्र' (१९१९), रामदेव आचार्य का 'पुराण-मत-पर्यालोचन' (१९१९), गङ्गानाथ झा महामहोपाध्याय का 'वैशेशिक दर्शन' (१९२१), नरदेव शास्त्री का 'गीता-विमर्श' (१९२४), रामगोविन्द त्रिवेदी का 'दर्शन-परिचय' (१९२६), नरदेव शास्त्री का 'ऋग्वेदालोचन' (१९२८),

बुद्धदेव विद्यालङ्कार का 'शतपथ में एकपथ' (१६२६), सोऽहं स्वामी की 'गीता की समालोचना' (१६२६), गङ्गानाथ झा महामहोपाध्याय का 'हिन्दू-धर्म-शास्त्र' (१६३१), रामावतार शास्त्री का 'गीता-परिशीलन' (१६३६), रुलियाराम काश्यप का 'यास्कीय निरुक्तान्तर्गत निर्वचनों का वैदिक आधार' [१६४० ?], हरिमोहन झा का 'भारतीय दर्शन-परिचय' [१६४० ?]. भगवानदास का 'दर्शनों का प्रयोजन' (१६४१), तथा गोपीनाथ कविराज का 'भारतीय दर्शनशास्त्र' (१६४१)। साहित्यकारों के वैयक्तिक अध्ययन से संबंध रखनेवाली प्रमुख कृतियाँ हैं, महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'कालिदास की निरङ्कुशता' (१६१२), बदरीनाथ भट्ट की 'वेणी-संहार की आलोचना' (१६१५), महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'कालिदास और उनकी कविता' (१६२०), माधवराव सप्रे की 'महाभारत-मीमांसा' [१६२० ?], रामदहिन मिश्र का 'मेघदूत-विमर्श' (१६२२), श्रीपाद दामोदर सातवलेकर की 'महाभारत की समालोचना' (१६२८), तथा वासुदेव विष्णु मिराशी की 'कालिदास' (१६३८)। साहित्य के सामूहिक अध्ययन और इतिहास-संबंधी रचनाओं में उल्लेखनीय हैं द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी लिखित 'भारतीय उपाख्यान-माला' (१६११), तथा 'नाटकीय कथा' (१६१२), कपिलदेव द्विवेदी का 'संस्कृत विद्या का इतिहास' (१६१३ , चन्द्रमौलि सुकुल का 'नाट्य कथामृत' (१६१४), कन्नोमल का भारतवर्ष के धुरन्धर कवि' (१६१५), इन्द्र वाचस्पति का 'संस्कृत साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन' (१६१६), जनार्दन भट्ट की 'संस्कृत कवियों की अनोखी सूझ' (१६१८), महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'प्राचीन पंडित और कवि' (१६१६), महेशचन्द्रप्रसाद का 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' (१६२२-) रामनरेश त्रिपाठी की 'कविता-कौमुदी' भाग ३ (१६२३), महावीरप्रसाद द्विवेदी का 'सुकवि सङ्कीर्तन' (१६२४), भगवद्दत्त का 'वैदिक वाङ्मय का इतिहास' (१६२७), वेदव्यास, लाला का 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' (१६२७), महावीरप्रसाद द्विवेदी का 'कोविद-कीर्तन' (१६२८), रामचन्द्र वर्मा का 'रूपक-रत्नावली' (१६२६), बलदेव-

प्रसाद उपाध्याय का 'संस्कृत कवि-चर्चा' (१९३२), सीताराम जयराम जोशी का 'संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' (१९३८), कन्हैयालाल पोद्दार लिखित 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' (१९३८), रामकलानाथ गौड़ की 'संस्कृत प्रेमप्रथा' (१९३७) तथा हंसराज अग्रवाल का संस्कृत 'साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' [१९३७ ?]। उपर्युक्त के अतिरिक्त केवल समाज-शास्त्र पर इनी-गिनी पुस्तकें और हैं : कन्नोमल का 'बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र' (१९२४), तथा गोपाल दामोदर तामस्कर का 'कौटिलीय अर्थशास्त्र मीमांसा' (१९२६) राजनीति और अर्थशास्त्र पर, गङ्गानाथ झा महामहोपाध्याय का 'न्याय-प्रकाश' तर्कशास्त्र पर, और चिन्तामणि की 'मनु और स्त्रियाँ' (१९३५) सामान्य समाजशास्त्र पर उल्लेखनीय रचनाएँ हैं।

उर्दू साहित्य के अध्ययन से संबंध रखनेवाली पुस्तकों में विशेष उल्लेखनीय हैं : ज्वालादत्त शर्मा कृत महाकवि 'दाग़ और उनका काव्य' (१९१७), तथा 'महाकवि ग़ालिब और उनका काव्य' (१९१९), रघुराजकिशोर कृत 'महाकवि नज़ीर और उनका काव्य' (१९२२), उमराव सिंह कृत 'महाकवि अकबर और उनका काव्य' (१९२२), ज्वालादत्त शर्मा कृत 'उस्ताद जौक़ और उनका काव्य' [१९२२ ?], रघुराजकिशोर कृत 'महाकवि अकबर' (१९२५), तथा रामनाथलाल 'सुमन' कृत 'कविरत्न मीर' (१९२६) जो अलग-अलग प्रमुख कवियों के वैयक्तिक अध्ययन प्रस्तुत करती हैं, और रामनरेश त्रिपाठी की 'कविता-कौमुदी' भाग ४ (१९२४), व्रजरत्नदास का 'उर्दू साहित्य का इतिहास' (१९३४), उपेन्द्रनाथ अश्क' की 'उर्दू काव्य की नई धारा' (१९४१) तथा गिरिजादत्त शुक्ल की 'उर्दू के कवि और उनकी कहानियाँ' (१९४२) जो उर्दू के साहित्यिक इतिहास से संबंध रखती हैं।

मैथिल साहित्य से संबंध रखनेवाली पुस्तकों में जनार्दन मिश्र का 'विद्यापति' (१९३२), नरेन्द्रनाथदास का 'विद्यापति काव्यालोक' (१९३७), उमेश मिश्र महामहोपाध्याय का 'विद्यापति ठाकुर' (१९३७), रामचन्द्र मिश्र का 'चन्द्राभरण' (१९३९), जो मैथिली

काव्य पर है, तथा रामइक़बाल सिंह का 'मैथिली लोक़गीत' (१६४२) प्रमुख वैयक्तिक और ऐतिहासिक अध्ययन-ग्रन्थ है।

राजस्थानी साहित्य-संबंधिनी रचनाओं में कुछ तो लोकगीतों के संग्रह हैं: खेतराममाली सं० 'मारवाड़ी गीतसंग्रह' (१६१२), श्रीकृष्णगोपाल सं० 'मारवाड़ी गीतसंग्रह' (१६२७), भागीरथी बाई सं० 'मारवाड़ी गीतसंग्रह' (१६२८) तथा रामसिंह सं० 'राजस्थान के लोकगीत' (१६३८), जिनमें से अन्तिम रचना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, एक राजस्थानी 'बातों' का संग्रह है: सूर्यकरण पारीक सं० 'राजस्थानी बातों' (१६३४); और दो राजस्थानी साहित्य के इतिहास से संबंधित हैं: मोतीलाल मेनारिया के 'राजस्थानी साहित्य की रूपरेखा' (१६३६) तथा 'डिंगल में वीर-रस' (१६४०)। यह तीनों रचनाएं उल्लेखनीय हैं।

बँगला साहित्य के अध्ययन में केवल कुछ साहित्यकारों के वैयक्तिक अध्ययनों का उल्लेख किया जा सकता है: वे हैं रूपनारायण पाण्डेय का 'बङ्किमचन्द्र चटर्जी' (१६२०), सुखसम्पतिराय का 'रवीन्द्र-दर्शन' (१६२०), दुलारेलाल भार्गव लिखित 'द्विजेन्द्रलाल राय' (१६२३), बजरङ्गबली विशारद लिखित 'माइकेल मधुसूदन दत्त' (१६२५), तथा सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' लिखित 'रवीन्द्र-कविता-कानन' (१६२८)।

एक रचना असमीया साहित्य पर है विरञ्चिकुमार बरुआ की 'असमीया साहित्य की रूपरेखा' [१६४०]।

एक रचना कन्नड़ साहित्य-संबंधिनी है: वह है गुरुनाथ योगी सं० 'कन्नड़ गल्प' (१६४१)।

समस्त भारतीय साहित्य से संबंध रखनेवाली रचनाएँ मुख्यतः दो हैं: जयचन्द्र विद्यालङ्कार की 'भारतीय वाङ्मय के अमररत्न' (१६३४), तथा धनीराम का 'भारत का कहानी-साहित्य' (१६३६)।

२. अभारतीय साहित्य—अभारतीय भाषा-साहित्य में कुछ ग्रन्थ फ़ारसी-अरबी के साहित्य से संबंध रखते हैं, जिनमें से प्रेमचन्द का 'महात्मा शेख सादी' (१६१८), तथा जगदीशचन्द्र विद्यालङ्कार का 'मौलाना रूम और उनका काव्य' (१६२३), वैयक्तिक अध्ययन के ग्रंथ हैं

और महेशप्रसाद मौलवी का 'अरबी काव्य-दर्शन' (१६३१), तथा बाँके-बिहारी का 'ईरान के सूफ़ी कवि' (१६४०), साहित्यिक इतिहास के।

कुछ ग्रन्थ योरोपीय साहित्य से संबंध रखते हैं; इनमें से रामावतार पाण्डेय का 'यूरोपीय दर्शन' [१६११ ?], कन्नोमल की 'हर्बर्ट स्पेन्सर की अज्ञेय मीमांसा' (१६१६), तथा उन्हीं की 'हर्बर्ट स्पेन्सर की ज्ञेय मीमांसा' (१६१६ द्वितीय), जनार्दन भट्ट का 'टॉल्स्टॉय के सिद्धान्त' (१६२३), पशुपाल वर्मा का 'बर्कले और कैण्ट का तत्वज्ञान' (१६२४), गुलाबराय का 'पाश्चात्य दर्शनों का इतिहास' (१६२६) कुछ दार्शनिक विषयों से संबंध रखते हैं; लक्ष्मणस्वरूप का 'मोलिएर' (१६२६) एक वैयक्तिक अध्ययन प्रस्तुत करता है, और प्यारेलाल मिश्र का 'विलायती समाचार-पत्रों का इतिहास' (१६१६), विनोदशङ्कर व्यास की 'प्रेमकहानी' [१६३० ?], जो विक्टर ह्यूगो तथा ट्रॉट्स्की के जीवनों से संबंध रखती है, रामचन्द्र टण्डन सं० 'रूसी कहानियाँ' (१६३०), श्रीगोपाल नेवटिया सं० 'यूरोप की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ' (१६३२), तथा ज्ञानचन्द्र जैन सं० 'यूरोप की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ' (१६४२) योरोपीय साहित्य के स्फुट अंगों से संबंध रखती हैं।

कुछ ग्रन्थ विश्व-साहित्य संबंधी हैं, जिनमें से प्रमुख हैं पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का 'विश्व-साहित्य' (१६२३), राजबहादुर सिंह लिखित 'संसार के महान साहित्यिक' [१६४० ?], रामाज्ञा द्विवेदी का 'संसार के साहित्यिक' (१६३२), तथा चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार की 'संसार की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ' (१६३२)।

इस युग में भी विभाषा-साहित्य का जैसा अध्ययन हो सकता था नहीं हुआ। इन अध्ययनों में सबसे अधिक खटकनेवाली कमी अंग्रेज़ी और बँगला साहित्यों के अध्ययन के संबंध की है इस युग के साहित्य पर जिनका प्रभाव सबसे अधिक है। भारत की अन्य समृद्ध भाषाओं के साहित्य का अध्ययन भी अभी तक उपेक्षित रहा है।

---

४. हमारा आगामी कार्य-क्रम ?

ऊपर के सिंहावलोकन से यह अनुमान हो गया होगा कि यद्यपि पिछले पचहत्तर—और उसमें प्रायः पैंतीस वर्षों में निरन्तर हमारी प्रगति में उन्नति हुई है फिर भी आधुनिक युग जिस तेज़ी से आगे बढ़ रहा है हमारी गति में वह तेज़ी नहीं आ पाई है। हमारी आवश्यकताएँ बहु-मुखी हैं। सच पूछिए तो किसी भी विषयवर्ग पर हमारा कार्य इतना नहीं है कि हम उस पर संतुष्ट हो सकें—गर्व करने की तो बात ही नहीं। यह सही है कि ललित साहित्य का सृजन कुछ-न-कुछ अपने ढङ्ग पर चलता है—यद्यपि उसको भी युग की आवश्यकताओं के निकट लाया जा सकता है—किन्तु शेष साहित्य के संबंध में तो यह बात नहीं है। तब, हमारा आगामी कार्य-क्रम क्या होना चाहिए? इस संबंध में अनेक मत हो सकते हैं। प्रस्तुत लेखक केवल अपने कुछ विचार आगे रखना चाहता है।

प्रस्तुत लेखक का ध्यान है कि और बातों के साथ-साथ, इस समय एक आवश्यकता यह है कि प्रत्येक विषय को लेकर हम यह देखने का उद्योग करें कि (१) हिन्दी में उसका विकास किस प्रकार हुआ है, (२) भारतीय संस्कृति और साहित्य के विकास में उसका क्या योग है, और (३) विश्व-साहित्य और संस्कृति में उसका क्या स्थान है; यह उस साहित्य का इतिहास-पक्ष है। दूसरे, हमको यह जानने की आवश्यकता है कि (१) किसी भी विषय के समस्त अङ्गों पर भारतीय सिद्धान्त क्या हैं, (२) उन्हीं अङ्गों पर शेष देशों का क्या योग है, और (३) किन अङ्गों पर और क्या कार्य होना चाहिए; यह उसका शास्त्रीय पक्ष है। तीसरे, हमें प्रत्येक विषय का एक विश्व-कोष निर्मित करना चाहिए, जिससे हमें अविलंब उक्त विषय के किसी भी अङ्ग पर कामचलाऊ जानकारी तथा सहायक साहित्य-सूची प्राप्त हो जावें। चौथे, ललित साहित्य के विशिष्ट विषयों के कुछ संकलन-ग्रन्थ भी प्रस्तुत करने चाहिएँ। अभी तक संकलन ग्रन्थ प्रायः शिक्षा-विभाग के पाठ्य-क्रम की आवश्यकताओं के ही अनुरूप

बने हुए हैं; उक्त विषय के समस्त साहित्य में उत्कृष्टतम क्या है, और कितना है, और वह हमारी किन चिन्ता-धाराओं को व्यक्त करता है इस दृष्टिकोण से प्रस्तुत किए गए संकलन-ग्रन्थ दो चार होंगे। यह संकलन (१) हिन्दी साहित्य से, (२) भारतीय साहित्य से, तथा (३) शेष विश्व-साहित्य से होने चाहिएँ। विभाषाओं के संकलन अनूदित रूप में ही प्रकाशित हों—मूल की आवश्यकता नहीं है, यद्यपि उनकी प्राप्ति का स्थलनिर्देश पूर्ण होना चाहिए। पाँचवें, साहित्य के समस्त अङ्गों का पूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करना अभी हमारे लिए प्रायः असम्भव है, इसलिए प्रत्येक विषय पर प्राप्त उत्कृष्टतम साहित्य का विभाषाओं से अनुवाद को भी प्रकाशित करना चाहिए। और छठें, आवश्यकता हैं अपने प्राचीन साहित्य के पुनरुद्धार की। हमारे साहित्य के सर्वोत्कृष्ट अंश का सुसंपादित रूप में प्रकाशन अब भी शेष है। हिंदी में संपादन-कार्य बहुत हुआ है, किन्तु वह वैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार नहीं हुआ है—यद्यपि ऐसा कहते हुए मुझे भय है कि हिन्दी का सम्पादक-सम्प्रदाय मुझसे रुष्ट होगा। कुछ प्रतियाँ एकत्र कर सबसे अधिक काव्योचित पाठ उन सब में से निकाल कर मूल में रख देना और कुछ पाठांतर दे देना ही आदर्श सम्पादन समझा गया है। किन्तु, संपादन का उत्तरदायित्व कदाचित् वस्तुतः इससे कुछ भिन्न है, और उसे समझने का यत्न करना चाहिए।*

नीचे की तालिका मुख्यतः उपर्युक्त दृष्टिकोणों से तैयार की गई है। आशा है कि उससे हिन्दी-सेवी संस्थाएँ, हिन्दी विद्वान्, और हिन्दी के अन्वेषक कुछ-न-कुछ लाभ अवश्य उठावेंगे। अच्छा यह होता कि इस प्रकार की एक और भी अधिक पूर्ण सूची समस्त विषयों की

---

* संपादन का अर्थ प्रस्तुत लेखक क्या समझता है इसका कुछ अनुमान 'भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयाग से प्रकाशित 'हिंदी-अनुशीलन' की आश्विन-मार्गशीर्ष की संख्या में प्रकाशित 'अर्द्धकथा का पाठ' शीर्षक उसके लेख से किया जा सकता है।

विद्वानों के सहयोग से निर्मित होती, जिसको लेकर हिन्दी-क्षेत्र की समस्त शक्ति एक निश्चित अवधि—जैसे आठ-दस वर्षों—के लिए पारस्परिक सहयोग और कार्य-विभाजन के साथ उसे पूरा करने में जुट जाती, तभी हमारे साहित्य की वास्तविक अभावपूर्ति शीघ्र हो पाती, अन्यथा जैसी ढिलाई हमारी संस्थाओं और हमारे विद्वानों में देख पड़ रही है उससे तो इस अभावपूर्ति में अभी एक युग लग जावे तो आश्चर्य न होगा।

काव्य

१. प्राचीन हिन्दी काव्य का विकास
२. आधुनिक हिन्दी काव्य का विकास
३. हिन्दी महाकाव्य का विकास
४. हिन्दी खंडकाव्य का विकास
५. हिन्दी गीतिकाव्य का विकास
६ हिन्दी मुक्तककाव्य का विकास

उपन्यास

१. हिन्दी के उद्देश्य-प्रधान उपन्यास
२. हिन्दी के रस-प्रधान उपन्यास
३. हिन्दी के कथावस्तु-प्रधान उपन्यास
४. हिन्दी के चरित्र-प्रधान उपन्यास
५. हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास
६. हिन्दी के अतिप्राकृत उपन्यास (ऐयारी, तिलस्मी आदि)
७. हिन्दी के जासूसी उपन्यास
८. हिन्दी उपन्यास में समाज
९. हिन्दी का वर्त्तमान उपन्यास-साहित्य

कहानी

१. हिन्दी का उद्देश्यप्रधान कहानी-साहित्य
२. हिन्दी का रस-प्रधान कहानी-साहित्य
३. हिन्दी का वस्तु-प्रधान कहानी-साहित्य
४. हिन्दी का चरित्र-प्रधान कहानी-साहित्य
५. हिन्दी का भावना-प्रधान कहानी-साहित्य
६. हिन्दी का कार्य-प्रधान कहानी-साहित्य
७. हिन्दी का ऐतिहासिक कहानी-साहित्य
८. हिन्दी का अतिप्राकृत कहानी-साहित्य (ऐयारी, तिलस्मी आदि)

९. हिन्दी का जासूसी कहानी-साहित्य
१०. हिन्दी का वर्त्तमान कहानी-साहित्य
११. हिन्दी कहानी में समाज

नाटक

१. हिन्दी के पौराणिक नाटक
२. हिन्दी के ऐतिहासिक नाटक
३. हिन्दी के शृङ्गार-प्रधान नाटक
४. हिन्दी के सामयिक और सामाजिक नाटक
५. हिन्दी के प्रहसन
६. हिन्दी के एकांकी
७. वर्तमान हिन्दी नाटक
८. हिन्दी नाटकों में कथावस्तु का विकास
९. हिन्दी नाटकों में चरित्र-चित्रण
१०. हिन्दी नाटकों में भारतीय आदर्श
११. हिन्दी नाटकों में पाश्चात्य आदर्श
१२. वर्त्तमान हिन्दी नाटक-साहित्य
१३. हिन्दी नाटक में समाज
१४. भारतीय रंगमंच का इतिहास

निबंध

१. हिन्दी निबंध-साहित्य का विकास
२. वर्त्तमान हिन्दी निबंध

साहित्य-शास्त्र

१. हिन्दी में छंद-शास्त्र का विकास
२. हिन्दी गद्य-लेखन का विकास
३. भारतीय काव्य-शास्त्र
४. भारतीय नाट्य-शास्त्र
५. भारतीय साहित्य के लिए संपादन-सिद्धान्त
६. हिन्दी साहित्य के लिए संपादन-सिद्धान्त
७. पाश्चात्य काव्य-शास्त्र
८. पाश्चात्य नाट्य-शास्त्र
९. हिन्दी काव्य-शास्त्र का विकास
१०. हिन्दी साहित्य-शास्त्र
११. उपन्यास-कला का विवेचन
१२. कहानी-कला का विवेचन
१३. निबंध-कला का विवेचन
१४. चरित्र-लेखन-कला का विवेचन
१५. इतिहास-शास्त्र
१६. संस्कृतियों का अध्ययन
१७. भाषा-शास्त्र
१८. ललित कलाओं का विवेचन

१६. उपयोगी कलाओं का विवेचन
२०. विज्ञान का विवेचन
२१. समाज-शास्त्र का विवेचन
२२. शिक्षा का विवेचन
२३. धर्म का विवेचन
२४. समालोचना-सिद्धान्त
२५. साहित्य के इतिहास की भूमिका
२६. साहित्य-शास्त्र का विश्व-कोष

जीवन-चरित्र

१. हिंदी का जीवनी-साहित्य
२. भारतीय जीवनी-कोष

इतिहास

१. हिन्दी में इतिहास-साहित्य
२. भारतीय इतिहास का अध्ययन
३. भारतीय संस्कृति का इतिहास
४. वृहत्तर भारत का इतिहास
५. विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के उत्थान और पतन का इतिहास
६. ऐतिहासिक विश्व-कोष
७. अमेरिका का इतिहास
८. इग्लैंड का इतिहास
९. जर्मनी का इतिहास
१०. फ्रांस का इतिहास
११. इटली का इतिहास
१२. रूस का इतिहास
१३. स्पेन का इतिहास
१४. ग्रीस का इतिहास
१५. जापान का इतिहास
१६. चीन का इतिहास
१७. विश्व-इतिहास

देश-दर्शन

१. हिंदी में देश-दर्शन तथा भूगोल-साहित्य
२. वर्त्तमान भारत और उसकी संस्कृति
३. वर्त्तमान भारत की साम्पत्तिक अवस्था
४. वर्त्तमान भारत की राजनैतिक अवस्था
५. वर्त्तमान भारत में धर्म और संप्रदायवाद
६. अमेरिका
७. इग्लैंड
८. जर्मनी
९. रूस
१०. फ्रांस
११. इटली

१२. स्पेन
१३. जापान
१४. चीन
१५. अफ्रीका
१६. आस्ट्रेलिया
१७. विश्व-दर्शन
१८. संसार में नारी जाति की स्थिति

भाषा-दर्शन

१. हिन्दी में भाषा-विषयक साहित्य
२. भारत में भाषा का अध्ययन
३. हिन्दी की उत्पत्ति
४. तुलनात्मक भाषा-विज्ञान
५. संस्कृत भाषा का इतिहास
६. प्राकृत भाषाओं का इतिहास
७. पाली भाषा का इतिहास
८. अपभ्रंश भाषाओं का इतिहास
९. आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं का इतिहास
१०. द्रविड़ भाषाओं का इतिहास
११. ईरानी भाषा का इतिहास
१२. वृहत्तर भारत की भाषाओं का इतिहास
१३. हिन्दी भाषा पर विदेशी प्रभाव
१४. बुनियादी हिन्दी और राष्ट्रभाषा
१५. आधुनिक भारतीय आर्यभाषा-कोष
१६. भोजपुरी-अवधी-व्रज-खड़ी-बोली-राजस्थानी-हिन्दी कोष
१७. संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंश-हिन्दी कोष
१८. हिन्दी-अपभ्रंश-प्राकृत-संस्कृत कोष
१९. हिन्दी शब्द-कोष—अर्थ-विकास के इतिहास की दृष्टि से
२०. हिन्दी पर्याय-कोष
२१. हिन्दी लोकोक्ति और अनुभववाक्य-कोष
२२. हिन्दी मुहावरा-कोष
२३. हिन्दी पारिभाषिक शब्द-कोष (हिन्दी-अंग्रेज़ी)
२४. हिन्दी पारिभाषिक शब्द-कोष (अंग्रेज़ी-हिन्दी)
२५. हिन्दी की वर्तमान जन-भाषाएँ
२६. हिन्दी शब्दों, मुहावरों और लोकोक्तियों में सांस्कृतिक इतिहास
२७. हिन्दी के वैदेशिक तत्व में सांस्कृतिक इतिहास
२८. हिन्दी नामों में सांस्कृतिक इतिहास
२९. प्राचीन पिंगल व्याकरण
३०. प्राचीन व्रज व्याकरण

३१. प्राचीन अवधी व्याकरण
३२. प्राचीन खड़ीबोली व्याकरण
३३. प्राचीन भोजपुरी व्याकरण
३४. प्राचीन राजस्थानी व्याकरण
३५. हिन्दी संतकाव्य-शब्दावली—अपनी पृष्ठभूमि में
३६. हिन्दी वीरगाथाकाव्य-शब्दावली—अपनी पृष्ठभूमि में
३७. हिन्दी भक्तिकाव्य-शब्दावली—अपनी पृष्ठभूमि में
३८. हिन्दी रीतिकाव्य शब्दावली—अपनी पृष्ठभूमि में
३९. हिन्दी छायावाद-रहस्यवाद-शब्दावली—अपनी पृष्ठभूमि में
४०. हिन्दी सिद्ध-साहित्य शब्दावली—अपनी पृष्ठभूमि में
४१. ग्रामीण जीवन की शब्दावली
४२. प्राचीन हिन्दी कोष-समुच्चय
४३. अंग्रेज़ी-हिन्दी कोष
४४. भाषा-विश्वकोष
४५. प्राचीन भारतीय आर्यभाषा व्याकरण
४६. आधुनिक आर्यभाषा व्याकरण
४७. द्रविड़ भाषा व्याकरण

ललित कला

१. भारतीय संगीतकला का विकास
२. भारतीय नृत्यकला का विकास
३. भारतीय अभिनयकला का विकास
४. भारतीय लोकसंगीत, लोकनृत्त और लोकाभिनय का विकास
५. हिन्दी में ललित कलाओं का साहित्य
६. भारत में ललित कलाओं का विकास
७. ललित कला-विश्वकोष
८. विदेशों में ललित कलाओं का विकास
९. बृहत्तर भारत में ललित कलाओं का विकास
१०. मंदिर-निर्माण
११. मूर्ति-निर्माण
१२. चित्रण
१३. संगीत
१४. वक्तृत्व
१५. नृत्य
१६. स्फुट ललित कलाएँ

उपयोगी कला

१. भारत में उपयोगी कलाओं का विकास
२. विदेशों में उपयोगी कलाओं का विकास

३. हिन्दी में उपयोगी कला-संबंधी साहित्य
४. उपयोगी कला-विश्वकोष
५. बृहत्तर भारत में उपयोगी कलाओं का विकास
६. आधुनिक युद्ध-कला
७. वास्तु
८. कृषि और बाग़बानी
९. गृह-शिल्प
१०. कार्यालय-संचालन,
११. पुस्तकालय-संचालन
१२. व्यापार-कला
१३. यंत्र-निर्माण
१४. मुद्रण
१५. स्फुट कलाएँ

शरीर-रक्षा

१. हिन्दी का शरीर-रक्षा तथा चिकित्सा-साहित्य
२. भारतीय चिकित्सा का इतिहास
३. संसार की चिकित्सा-प्रणालियों का इतिहास
४. शरीर-रक्षा तथा चिकित्सा-विश्वकोष

विज्ञान

१. हिन्दी में विज्ञान-साहित्य
२. गणित
३. ज्यौतिष
४. भौतिक
५. रसायन
६. भूगर्भ-शास्त्र
७. जीव-विज्ञान
८. वनस्पति-शास्त्र
९. जंतु-शास्त्र
१०. मानव-विज्ञान

समाज-शास्त्र

१. हिन्दी में समाज-शास्त्र और दर्शन का साहित्य
२. भारत में समाज-शास्त्र और दर्शन का विकास
३. तत्व-दर्शन
४. मनोविज्ञान
५. तर्क-शास्त्र
६. आचार-शास्त्र
७. सौन्दर्य-शास्त्र
८. गणना-शास्त्र

९. राजनीति-शास्त्र
१०. धर्म-शास्त्र
११. क़ानून
१२. शासन
१३. अर्थ-शास्त्र
१४. नागरिक शास्त्र
१५. विदेशों में समाज-शास्त्र और दर्शन का विकास
१६. समाज-शास्त्र और दर्शन का विश्वकोष

शिक्षा

१. हिन्दी में शिक्षा-साहित्य
२. भारतीय शिक्षा का इतिहास
३. विदेशों में शिक्षा का इतिहास
४. शिक्षा-शास्त्र
५. शिक्षा-मनोविज्ञान
६. शिक्षा-विश्वकोष

धर्म

१. हिन्दी में धर्म-संबंधी साहित्य
२. भारत में धर्म का विकास
३. वृहत्तर भारत में धर्म का विकास
४. संसार के प्रमुख धर्म
५. धर्म और उसकी आवश्यकता
६. धर्म-संबंधी विश्वकोष

समालोचना

१. हिन्दी का समालोचना-साहित्य
२-२१. बीस सर्वश्रेष्ठ प्राचीन लेखकों पर स्वतन्त्र अध्ययन-ग्रंथ
२२-४१. बीस सर्वश्रेष्ठ प्राचीन लेखकों की कलात्मक कृतियों से सङ्कलन
४२-६१. बीस सर्वश्रेष्ठ प्राचीन लेखकों की कृतियों का वैज्ञानिक सम्पादन
६२-७१. दस आधुनिक सर्वश्रेष्ठ लेखकों पर स्वतंत्र अध्ययन-ग्रंथ

साहित्य का इतिहास

१. हिन्दी के साहित्यिक इतिहास का साहित्य
२. भारतीय साहित्य के इतिहास की भूमिका में हिन्दी साहित्य के इतिहास का अध्ययन
३. भारतीय इतिहास का हिन्दी साहित्य के विकास पर प्रभाव
४. हिन्दी भाषा के साहित्य पर अन्य भाषाओं के साहित्यों का प्रभाव

५. हिन्दी का हस्तलिखित पुस्तक-साहित्य
६. हिन्दी की दुष्प्राप्य पुस्तकों और पत्रिकाओं की प्राप्तिस्थान-निर्देशक सूची
७. पत्रिकाओं में प्रकाशित हिन्दी-साहित्य
८. हिन्दी की सर्वोत्कृष्ट २००० पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण
९. हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रगतिशीलता
१०. हिन्दी साहित्य में छायावाद और रहस्यवाद
११. हिन्दी की वीरगाथा-परंपरा
१२. हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ
१३. हिन्दी का वैष्णव-साहित्य
१४. हिन्दी का सन्त-साहित्य
१५. हिन्दी का सूफ़ी-साहित्य
१६. हिन्दी का रीति-साहित्य
१७. हिन्दी साहित्य में हास्यरस
१८. हिन्दी साहित्य में करुण रस
१९. हिन्दी साहित्य में भक्ति और शान्त रस
२०. हिन्दी में भक्ति और शृङ्गार का अन्योन्याश्रय
२१. हिन्दी में वीर और भयानक का अन्योन्याश्रय
२२. हिन्दी में वात्सल्य रस
२३. हिन्दी साहित्य में 'नारी'
२४. हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'मानव'
२५. हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रकृति
२६. हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'देव' और 'दिव्य'
२७. हिन्दी साहित्य और संस्कृति
२८. अन्य साहित्यों पर हिन्दी साहित्य का प्रभाव
२९. हिन्दी साहित्य में कलापक्ष का विकास
३०. हिन्दी साहित्य में भावपक्ष का विकास
३१. हिन्दी समाचार-पत्रों का इतिहास
३२. हिन्दी पत्रिकाओं का इतिहास
३३. हिन्दी और उर्दू साहित्यों का आदान-प्रदान
३४. हिन्दी साहित्य का विश्व-कोष

विभाषा साहित्य का अध्ययन

१. हिन्दी में विभाषा साहित्य का अध्ययन
२. वैदिक साहित्य का इतिहास
३. संस्कृत साहित्य का इतिहास

४. पाली साहित्य का इतिहास
५. प्राकृत साहित्य का इतिहास
६. अपभ्रंश साहित्य का इतिहास
७. उर्दू साहित्य का इतिहास
८. मैथिली साहित्य का इतिहास
९. उड़िया साहित्य का इतिहास
१०. बंगला साहित्य का इतिहास
११. आसामी साहित्य का इतिहास
१२. राजस्थानी साहित्य का इतिहास
१३. गुजराती साहित्य का इतिहास
१४. महाराष्ट्री साहित्य का इतिहास
१५. द्रविड़ साहित्य का इतिहास
१६. अंग्रेज़ी साहित्य का इतिहास
१७. वृहत्तर भारत के साहित्य का इतिहास
१८. विश्व-साहित्य का इतिहास
१९. विभाषा साहित्य का विश्व-कोष
२०. विभाषाओं के साहित्य में काव्य
२१. विभाषाओं के साहित्य में उपन्यास
२२. विभाषाओं के साहित्य में कहानी
३२. विभाषाओं के साहित्य में नाटक
२४. विभाषाओं के साहित्य में निबंध
२५. विभाषाओं के साहित्य में समालोचना

•

केवल एक बात और कहनी है : इस तालिका में जितना विश्लेषण हिन्दी के ललित साहित्य का मिलेगा उतना उपयोगी और वैज्ञानिक-साहित्य का नहीं। ऐसा अन्य विषयों की मेरी अनभिज्ञता के कारण है, इसलिए नहीं कि उनकी आवश्यकता और उनका महत्व कुछ कम है। आशा है कि प्रस्तुत सूची इसी दृष्टि से देखी जावेगी, और उसको और पूर्ण बनाने के लिए प्रत्येक विषय के विशेषज्ञों का ध्यान आकृष्ट होगा।

१

काव्य—प्राचीन*

नाल्ह नरपति : बीसलदेवरासो
नेमिनाथ : बारहमासा
गोरखनाथ : भरथरी-चरित्र
जागनिक : पद्मावती खंड
,, : आल्ह खंड
चन्द : पृथ्वीराजरासो
अज्ञात : परमालरासो
खुसरो :—की हिन्दी-कविता
नरसी मेहता : प्रेम-कीर्तन
हरिवंश हित : वृन्दावन-शतक
,, : हित-चौरासी
[,, ?] : हित सुधा-सागर
मीराबाई : शब्दावली, भजन
नरोत्तमदास : सुदामा-चरित
हरिदास : रसिक-लहरी
अग्रदास : ध्यान-मञ्जरी
बीरबल : नलबीर पचासा
सूरदास : विनय
,, : दृष्टिकूट
,, : सूर रामायण
,, : बाललीला

सूरदास : भँवरगीत
,, : गोपाल-गारी
,, : निसातिन लीला
,, : सूरसागर
,, : सूर-पचीसी
,, : सूर-साठी
,, : सूरशतक
,, : सूर-संगीत-सार
,, : सूर-सागर-रतन
,, : मयूरध्वज राजा की कथा
नन्ददास : बाँसुरी-लीला
,, : रास-पञ्चाध्यायी
,, : भ्रमर-गीत
,, : श्याम-सगाई
,, : रुक्मिणी-मङ्गल
,, : विरह-मञ्जरी
,, : रस-मञ्जरी
,, : रूप-मञ्जरी
परमानन्ददास : दधिलीला
,, : —सागर
तुलसीदास : रामललानहछू

---

* सूफ़ी प्रेमगाथाएँ 'उपन्यास—प्राचीन', काव्यशास्त्र संबंधी रचनाएँ 'साहित्यशास्त्र—प्राचीन' और संतवाणियाँ 'धर्म—प्राचीन' शीर्षकों में देखिये ।

तुलसीदास : जानकी-मङ्गल
" : रामचरितमानस
" : पार्वती-मङ्गल
" : गीतावली
" : विनयपत्रिका
" : कृष्ण-गीतावली
" : बरवा
" : कवितावली
" : हनुमानबाहुक
" : छप्पय-रामायण
" : छन्दावली रामायण
" : कुण्डलिया रामायण
" : विजय दोहावली
" : बारहमासी
बलभद्र : नखशिख
केशवदास : रामचन्द्रिका
" : वीरसिंहदेव-चरित
" : नखशिख
पद्म भागवत : रुक्मिणी-मङ्गल
नाभादास : रामाष्टयाम
नरहरिदास बारहट : अवतार-चरित्र
रसखान : शतक
" : सुजान रसखान
" : प्रेम-वाटिका
" :—पदावली
जटमल : गोरा बादल की कथा
अली मुहिब्ब खाँ : खटमल बाईसी
धर्मदास : अवध-विलास
मुबारक : अलक-शतक
" : तिल-शतक
सेनापति : कवित्त-रत्नाकर
विहारीलाल : सतसई
" : नखशिख
रसनिधि : रत्नहज़ारा
सबलसिंह : महाभारत
भगवत रसिक :—की बानी
नेवाज : शकुंतला उपाख्यान
सूदन : सुजान-चरित
सुखदेव मिश्र : फ़ाज़िल अलीप्रकाश
देव : अष्टयाम
" : भवानी विलास
भूषण : शिवा बावनी
" : छत्रसाल दशक
रसिकराय : सनेहलीला
आलम : आलम-केलि
नवीन : सुधारस
छत्रसिंह : विजय-मुक्तावली
कालिदास कवि : जंजीरा
वृन्द : भावपंचासिका
श्रीधर : जङ्गनामा
गोरेलाल : छत्र-प्रकाश
घनानन्द : सुजान-सागर
" : विरहलीला
नागरीदास : इश्कचमन
" : नागर-समुच्चय
सोमनाथ : रास-पंचाध्यायी

रसलीन : अङ्गदर्पण
हंसराज बख्शी : सनेह-सागर
रामसखे जी : नृत्य राघव-मिलन
,, : पदावली
रसरूप : उपालंभ शतक
ब्रजवासीदास : गोवर्धन-विलास
,, : ब्रजविलास
दत्त कवि : समस्यापूर्ति-प्रकाश
मधुसूदनदास : रामाश्वमेध
मेरामन जी : प्रवीन-सागर
हलधर : सुदामा-चरित
अलबेली अलि : समय-प्रबंध पदावली
रामचन्द्र पंडित : चरण-चंद्रिका
बोधा : इश्कनामा
,, : विरह-वारीश
नज़ीर : नागलीला
,, : बालपन कन्हैया का
,, : चूहेनामा
पद्माकर : जगद्विनोद
,, : प्रबोध पचासा
,, : गंगालहरी
,, : रामरसायन
,, : हिम्मतबहादुर-बिरदावली
गुमानी कवि : कृष्णचन्द्रिका
मान कवीश्वर : राजविलास
कर्ण कवि : अनुराग-वाटिका
हठी कवि : श्री राधा सुधा-शतक
लल्लूजीलाल : राधारमण-पद-मंजरी
लल्लूजीलाल : माधवविलास
ठाकुर : —शतक
,, : ठसक
रसिकगोविन्द : युगल रस-माधुरी
रामसहायदास : शृङ्गार-सतसई
रुद्रप्रताप सिंह : रामायण
जोधराज : हम्मीर रासो
ग्वाल : यमुना-लहरी
,, : नखशिख
,, : षट्ऋतु-वर्णन
दीनदयालु गिरि : दृष्टान्त तरङ्गिणी
,, : अनुराग बाग
,, : अन्योक्तिकल्पद्रुम
वृन्दावन : —विलास
पजनेस : —प्रकाश
,, : पचासा
गिरिधरदास : प्रेम-तरंग
,, : जरासंधवध
चन्द्रशेखर वाजपेयी : हमीर-हठ
,, ,, : रसिक-विनोद
,, : नखशिख
रामगुलाम द्विवेदी : कवित्त रामायण
,, : पदावली
,, : रहस्य विनयावली
युगलानन्यशरण : उत्सव-विलासिका
,, : मधुर मंजुमाला
,, : अवधविहार
कृपानिवास : पदावली

मानसिंह : शृङ्गार-बत्तीसी
,, : शृङ्गार-तिलक
सेवक : नखशिख
अज्ञात : योगी और यमुनी का गीत

काव्य—तत्कालीन

हरिश्चन्द्र : विरह-शतक '६७
शम्भुराय : रुक्मिणी-मङ्गल '६६
गुलाबसिंह धाऊ : प्रेम-सतसई '७०
गोकुलचन्द : शोक-विनाश '७०
हरिश्चन्द्र : भक्ति-सर्वस्व '७०
उत्तमराम : विवाह-वर्णन '७१
सीताराम : उषा-चरित्र '७१
शिवप्रसाद सिंह : काशी प्रकाश '७२
जगमोहन सिंह : प्रेम-रत्नाकर '७३
मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या : अंग्रेज़-स्तोत्र '७३
सच्चिदानंदस्वरूप : विहार वृन्दाबन '७३
हरिश्चन्द्र : देवी छद्मलीला '७३
,, : फूलों का गुच्छा '७३
,, : प्रेमाश्रु-वर्षण '७३
,, : प्रेम फुलवारी '७३
ईश्वरीप्रतापनारायण राय : रहस्य काव्य-शृङ्गार '७४
जानकीप्रसाद महन्त : इश्क अजायब '७४
माधवसिंह : भक्ति-तरंगिणी '७४
ईश्वरीप्रसादनारायण सिंह : चित्र-चन्द्रिका '७५
विष्णुदास : रुक्मिणी-मंगल '७५
हरिश्चन्द्र : प्रेम-माधुरी
हरिश्चन्द्र : स्वरूप-चिन्तन '७५
छायासिंह : आनन्द-लहरी '७६
राधाकृष्ण : ब्रजविलास भाषा '७६
साजनभाई वलीभाई : साजन-काव्य-रत्न '७६
काशीगिरि : लावनी '७७ द्वि०
जानकीप्रसाद महन्त : सुजस-कदम्ब '७७
,, : बजरङ्ग-बत्तीसी '७७
,, : नाम-पचीसी '७७
बल्देवप्रसाद पं० : शृङ्गार-सुधाकर '७७
रघुनाथप्रसाद : सुलोचनाख्यान '७७
रमणविहारी : जुगल-बिहार '७७
भान जी मोन जी : भानप्रकाश तथा पदावली '७८
लक्ष्मणप्रसाद पाण्डेय : रस-तरंग '७८
हनुमानप्रसाद : शिखनख '७८
रघुराज सिंह : रामस्वयंवर '७६
रघुवंशसहाय : ब्रजवन-यात्रा '७६
कुन्दनलाल : लघुरस-कलिका '७६
नन्दकिशोर दूबे : जलभूलन '७६
भानजी मोनजी : भान-विलास, मणि-रत्नमाला और भान-बावनी '७६

हरिश्चन्द्र : चैती '७६
,, : युगल - सर्वस्व '७६
छत्रदास : मानमंजुचरित्र '८०
मेदीराम : सुन्दरी-विलास '८०
लोकनाथ चतुर्वेदी : पीपाब्रावनी तथा श्याम-सुषमा '८०
श्यामलाल सिंह : ईश्वर-प्रार्थना '८०
मदनगोपाल सिंह : विनयपत्रिका '८१
विष्णुकुमारी देवी : पद-मुक्तावली '८१
विहारी सिंह : नखशिख-भूषण '८१
वीर कवि : सुदामा-चरित्र '८१
हरिश्चन्द्र : राग-संग्रह '८१
'एक विधवा' : स्त्री-विलाप '८२
खड्गबहादुर मल्ल : सुधा-बुन्द '८२
,, : पावस-प्रेम-प्रवाह '८२
,, : पीयूष-धारा '८२
,, : फाग-अनुराग '८२
गोकुलदास साधु : प्रेम-पत्रिका '८२
चुन्नीलाल : रसिक-विनोद '८२
जमशेद जी होरमस जी : कलग़ी के दिलपसन्द ख्याल '८२
राजाराम : शङ्कर-चरित-सुधा '८२
राधाचरण गोस्वामी : नापित-स्तोत्र '८२
,, : दामिनी दूतिका '८२
रामसिंह जू देव : युगल-विलास '८२ द्वि०

विहारीसिंह : मालती-मञ्जरी '८२
हरिश्चन्द्र : विजयिनी - विजय-वैजयंती '८२
श्रीधर पाठक : आगरा '८२
,, : मनोविनोद '८२
कन्हैयालाल, लाला : शारदा-विलास '८३
काशीगिरि : ख्याल '८३
खड्गबहादुर मल्ल : जोगिन लीला '८३
देवकीनन्दन तिवारी : बुढ़िया-बखान शतक '८३
नन्दलाल : तुर्रा राग '८३
नवनीत कवि : श्यामाङ्ग अवयव-भूषण '८३
भागवतप्रसाद शर्मा : प्रेमामृत-सार '८३
रमणविहारी : रामकीर्ति-तरङ्गिणी '८३ रिप्रिंट
राधाचरण गोस्वामी : शिशिर-सुषमा '८३
,, : रेलवे-स्तोत्र '८३
रामचरण : ब्रजयात्रा '८३
शेरसिंह : रस-विनोद '८३
हरिश्चन्द्र : वेश्या - स्तोत्र '८३
,, : प्रेम-प्रलाप '८३
ईश्वरदास जगन्नाथ : द्रौपदी-आख्यान '८४

कृष्णलाल गोस्वामी : हास्य पंच-रत्न '८४
गोवर्धनदास धूसर : ब्रज विलास-सारावली '८४ द्वि०
दलपतिराम दयाभाई कवि : पुरुषोत्तम चरित्र '८४
दिवाकर भट्ट : नखशिख '८४
रघुबरचरण : दोलोत्सव - दीपिका '८४
राधामोहन चतुर्वेदी : रसलहरी '८४
विजयसिंह, लाल : सिया-चन्द्रिका '८४
श्रीराम, मुन्शी : प्रेम-सरोवर '८४
सीताराम, लाला : पार्वती-पाणि-ग्रहण '८४
खड्गबहादुर मल्ल : रसिक-विनोद '८५
जगमोहन सिंह : श्यामालता '८५
,, : प्रेम सम्पत्ति-लता '८५
प्रतापनारायण मिश्र : मन की लहर '८५
बचऊ चौबे : सुरस-तरङ्गिणी '८५
बंशीधर, लाला : प्रेम-लतिका '८५
बलदेवप्रसाद, पं० : सुधा-तरंगिणी '८५
भेंदीराम : ढोलामारू '८५
रामकिशोर व्यास : चन्द्रास्त '८५
श्यामलाल : अनुराग-लतिका '८५
सीताराम, लाला : सीताराम चरित्र-माला '८५
सोहनप्रसाद : हिन्दी और उर्दू की लड़ाई '८५
अम्बिकादत्त व्यास : पावस-पचासा '८६
कृष्णदेवनारायण सिंह : अनुराग-मुकुल '८६
गिरिधरदास हरिकिशनलाल : छंद-रत्नमाला '८६
चण्डी प्रसाद सिंह : पहेली-भूषण '८६
नकंछेदी तिवारी : जगद्विनोद '८६
रमणविहारी : रामचन्द्र संत्योपाख्यान '८६
लोकनाथ चतुर्वेदी : पावस-पचीसी '८६
हरिहरप्रसाद : शृङ्गार-प्रदीप '८६
अम्बिकादत्त व्यास : सुकवि-सतसई '८७
आदितराम जोइतराम : कलगी नी लावनियो '८७
कृष्णदेव नारायण सिंह : सनेह-सुमन '८७
जगमोहनसिंह : श्यामा-सरोजिनी '८७
जगमोहन सिंह, महाराजा : ऋतु-प्रकाश '८७

जवाहरमल्ल : उपालम्भ '८७
नारायण : अष्टयाम '८७
बैजनाथ कुर्मी : षट्ऋतु-वर्णन '८७
मन्नालाल शर्मा: शृङ्गार-सुधाकर '८७
शिवराज मिश्र : अनुरागलतिका '८७
किशन सिंह : सवैयै शतक '८८
गोपीश्वर राजा : गोपीश्वर-विनोद '८८
गोवर्धनप्रसाद शर्मा : मजमूआ ख्यालात मरहठी व तुर्रा '८८
जगमोहन सिंह : मानस-सम्पत्ति '८८
देवतीर्थ स्वामी : श्याम सुधा '८८
प्रेमदास मिश्र : लोकोक्ति शतक '८८
माधवप्रसाद त्रिपाठी : माधव-विलास, '८८
वल्लभराम सूजाराम व्यास : वल्लभ कृत काव्यम् '८८
वामनाचार्य गोस्वामी : वामन-विनोद '८८
शम्भुदयाल : अमसी व लावनी ख्यालात तुर्रा '८८
शिवशरणलाल मिश्र: भक्तिसार '८८
गोविन्दसहाय, लाला : श्याम-केलि '८६
गौरीशङ्कर : प्रेम-प्रकाश '८६
जनमुकुन्ददास : कवित्तावली '८६
जानकीप्रसाद महंत : विरह दिवाकर '८६
,, : रामनिवास-रामायण '८६
तन्त्रधारी सिंह : शिव-उमङ्ग '८६
नवनीतलाल : कुब्जा-पच्चीसी '८६
महावीरप्रसाद द्विवेदी : विद्याविनोद '८६
रघुराज सिंह : रुक्मिणी-परिणय '८६
राधाकान्तशरण, पं० : साहित्य-युगल विलास '८६
राधागोविन्ददास : दोहावली मान-लीला '८६
रामप्रकाश, पं० : कुसुमाकर प्रमोद '८६
रामरत्नदास गोस्वामी : सियावर केलि पदावली '८६
लखपतराय : शशिमौलि '८६
लोकनाथ चतुर्वेदी : राधिका-सुषमा '८६
हरिश्चन्द्र : प्रेम-मालिका '८६
खूबचन्द कुँवर : अङ्ग-चन्द्रिका '६०
गोपालराम गहमरी : बसन्त-विकाश '६०
दुनियामणि त्रिपाठी : कृष्ण-पदावली '६०
दुर्गाप्रसाद वर्मा : माधवी-लता '६०
बदरीनारायण चौधरी : कजली कदम्बिनी '६०

नवनीत कवि : मूर्ख-शतक '६३
प्रभुदयाल : कवितावली '६३
प्रह्लादीराम : हरि पदावली '६३
रघुराज कुंवरि, रानी : रामप्रिया-विलास '६३
रङ्गनारायण पाल : अङ्गादर्श '६३
रामनाथ प्रधान : राम होरी-रहस्य '६३
ललनपिया : होली-शतक '६३
लालताप्रसाद : धनञ्जय-विजय '६३
शंभुनाथ, राजा : नखशिख '६३
शालिग्राम वैश्य : सुदामा-चरित्र '६३
इन्द्रभान, लाला : दंपति-विलास '६४
कृष्णलाल गोस्वामी : खटमल-स्तोत्र '६४
गणेश सिंह : भक्ति-चन्द्रिका '६४
गोविंद गिल्लाभाई : नखशिख '६४
जगन्नाथदास : हिंडोला '६४
प्रभुदयाल : प्रेम-विलास '६४
बसंत जायसी : कृष्ण-चरित्र '६४
बैजनाथ कुर्मी : नख-शिख वर्णन '६४
मुकुन्दलाल नागर : गुलदस्ता-ए-मुंकुन्द '६४
महादेवप्रसाद त्रिपाठी : राघव-रहस्य '६४
रघुराज सिंह : रघुराजविलास '६४
,, : जगन्नाथ-शतक '६४
,, : पदावली '६४
विश्वेश्वरबख्श पाल वर्मा : अङ्गादर्श '६४
सीताराम शर्मा : काव्य-कलापिनी '६४
हफ़ीजुल्ला खाँ : मन-मोहनी '६४ च०
कृष्णलाल गोस्वामी : रससिन्धु-शतक '६५
कालिकाप्रसाद सिंह : राम रसिक-शिरोमनि '६५
गजाधरप्रसाद शुक्ल : जगदीश-विनोद '६५
गोपालराम गहमरी : दंपति-वाक्य-विलास '६५
जियालाल त्रिपाठी : भक्ताम्बुनिधि '६५
बलदेवप्रसाद : शृङ्गार-सरोज '६५
मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या : प्रेम-प्रमोदिनी '६५
,, : बसंत-प्रमोदिनी '६५
रत्न कुँवरि : प्रेमरत्न '६५ ?
श्यामसुन्दर सारस्वत : रसिक-विनोद '६५
सूरकिशोर जी, स्वामी : मिथिला-विलास '६५

बलवन्त सिंह : भक्ति शिरोमणि '९९
मिश्रबंधु : लवकुश-चरित्र '९९
मोहनलाल गुप्त : प्रेम रसामृत '९९
योगेन्द्रनारायण सिंह : शारदा-नखशिख '९९
लक्ष्मीनारायण सिंह : विनोदमाला '९९
लालदास कवि:रामचरणानुराग '९९
अयोध्यासिंह उपाध्याय : प्रेमाम्बु-वारिधि १९००
" : प्रेम-प्रपञ्च १९००
गजाधर शुक्ल:भुवनेन्द्र भूषण १९००
जैनेन्द्र किशोर: शृङ्गार-लता १९००
पतिराम बाबू : कवि भूषण-विनोद १९००
प्रेम सिंह पृथ्वीराजोत: कामकेतु राजा का जस १९००
महेश्वरबख्श सिंह : महेश्वर-प्रकाश १९००
महावीरप्रसाद द्विवेदी : नागरी १९००
मोतीराम भट्ट:मनोद्वेग-प्रवाह १९००
ब्रजविहारी लाल:संगीत-सुधा १९००
शीतलप्रसाद, मुंशी : प्रेम-सरोवर १९००
श्रीधर पाठक : क्लाउंड मेमोरियल (घन-विनय) १९००

श्रीधर पाठक : गुनवंत हेमंत १९००
हरिश्चंद्र : रस बरसात १९००
अयोध्यासिंह उपाध्याय : प्रेमाम्बु-प्रवर्पण '०१
" : प्रेमाम्बु-प्रवाह '०१
अक्षयकुमार : रसिकविलास रामायण '०१
कन्हैयाप्रसाद मिश्र : विद्याशक्ति '०१
करणीदान : भैरव-विनोद '०१
कृष्णदेवनारायण सिंह : अनुराग-मञ्जरी '०१
गणेशप्रसाद शर्मा : गणाधिप-सर्वस्व '०१
गुरुप्रसाद सिंह : भारत-सङ्गीत '०१
महावीर सिंह वर्मा : मानस-लहरी '०१
रामचन्द्र शुक्ल : चारण-विनोद '०१
ललनपिया : ललन-प्रदीपिका '०१
" : ललन-प्रभाकर '०१
ब्रजनन्दनसहाय : ब्रज-विनोद '०१
श्याम जी शर्मा : श्याम-विनोद '०१
हरिचरणदास : चमत्कार चन्द्रिका '०१
किशोरीलाल गोस्वामी : प्रेम रत्न-माला '०२ द्वि०
" : प्रेम-बाटिका '०२
कुञ्जनदास : सुदामा-विनोद '०२

गजाधरप्रसाद शुक्ल: उषा-चरित्र '०२
फ़तेह सिंह वर्मा : ऋतुचन्द्र '०२
युगलप्रिया : युगलप्रिया '०२
रङ्गनारायण पाल: प्रेम-लतिका '०२
लछिराम : हनुमान शतक '०२
ललनपिया : ललन-फाग '०२
,, : ललन-रस-मञ्जरी '०२
,, : ललन-लतिका '०२
,, : ललन-चन्द्रिका '०२
श्यामसुन्दर मिश्र : सुधासिन्धु '०२
अक्षयबट मिश्र : पुष्पोपहार '०३
कन्हैयाप्रसाद : बिहार के गृहस्थों का जीवन-चरित्र '०३
गोवर्धनलाल गोस्वामी : प्रेम-शतक '०३
प्रसिद्ध नारायण सिंह : सावित्री उपाख्यान '०३
बदरीनारायण चौधरी : भारत-बधाई '०३
बालमुकुन्द वर्मा : प्रेम-रत्नावली '०३
महावीरप्रसाद द्विवेदी : काव्य-मञ्जूषा '०३
रघुनाथप्रसाद त्रिपाठी : माला-चतुष्टय '०३
रामदयाल : बलभद्र-विजय '०३
लक्ष्मीनारायण नृसिंहदास: राधिका-मंगल '०३
ललनपिया : अनिरुद्ध-परिणय '०३
,, : ललन-विनोद '०३
शिवपाल सिंह : शिवपाल-विनोद '०३
अम्बिकादत्त व्यास : रसीली कजरी '०४ तृ०
अयोध्यासिंह उपाध्याय : प्रेम-पुष्पोपहार '०४
कार्त्तिकप्रसाद खत्री : कवित्त रत्नाकर '०४
गजराज सिंह : अजिर-विहार '०४
निर्भय : निर्भय-प्रकाश '०४
मोहनलाल शर्मा : माधव यशेन्दु-प्रकाश '०४
रामप्रताप सिंह : भक्ति-विलास '०४ तृ०
लक्ष्मीनारायण नृसिंहदास : नल-दमयंती-चरित्र '०४
ललनपिया : ललन-सागर '०४
शङ्कर : उषा-चरित्र '०४
शिवचन्द्र भरतिया : प्रवास-कुसुमावली '०४
श्रीधर पाठक : काश्मीर-सुषमा '०४
हर्षादराय सुन्दरलाल मुंशी : रसिक-प्रिया '०४
किशोरीलाल गोस्वामी : सावन सुहावन '०५

कार्त्तिकप्रसाद खत्री : शृङ्गारदान '०५
कालीचरण सिंह : अमृहरा '०५ तृ०
गिरिधर शर्मा : मातृवंदना '०५
जयपाल महाराज : रसिक-प्रमोद '०५
तुलसीप्रसाद : हज्जो '०५
प्रतापनारायण मिश्र:तृप्यन्ताम् '०५
बलदेवप्रसाद मिश्र : महा मनमोहिनी '०५
माधवदास : नखशिख '०५
रामकृष्ण वर्मा : सावन-छटा '०५
,, : वर्षा विहार '०५
ललनपिया : ललन-विलास '०५ ?
,, : ललन-शिरोमणि '०५ ?
,, : ललन-रसिया '०५ ?
,, : ललन-रत्नावली '०५ ?
,, : ललन-प्रमोहिनी '०५ ?
,, : ललन-कवितावली '०५ ?
श्याम जी शर्मा : खड़ी बोली पद्यादर्श '०५
ऋषिलाल साहु: पावस प्रेमलता '०६
अक्षयवट मिश्र : आनन्द कुसुमोदय '०६
अयोध्यासिंह उपाध्याय : उद्बोधन '०६
उदयभानुलाल:भानुप्रकाशिका '०६
करन सिंह : कर्णामृत '०६
खुन्नालाल शर्मा : इन्दुमती परिणय '०६
गिरिराज कुँवर:ब्रजराज-विलास '०६
बचनेश मिश्र : नवरत्न '०६
बदरीनारायण चौधरी : आनन्द-अरुणोदय '०६
बालमुकुन्द गुप्त : स्फुट कविता '०६
महादेवलाल : रहस्य पदावली '०६
महादेवप्रसाद : खटकीरा-युद्ध '०६
सूर्यनाथ मिश्र : लोचन पच्चीसी '०६
हीरा सखी जी : अनुभव-रस '०६
ऊमरदान : ऊमर काव्य '०७
खैराशाह : बारहमासा '०७
गदाधरप्रसाद : प्रेम पीयूषधारा '०७
भगवानदीन, लाला : भक्ति-भवानी '०७
राधारमण मैत्र : केशर-मञ्जरी '०७
रामभजन त्रिवेदी - राधा - विषाद मोचनावली '०७
लोचनप्रसाद पाण्डेय : प्रवासी '०७
कमलादेवी : कमला भजन-सरोवर '०८
गदाधरसिंह : भारतमही '०८ ?
चूड़ामणि : समस्यावली '०८
जगन्नाथसहाय:भक्त रसनामृत '०८
देवीप्रसाद शर्मा: प्रभात '०८ ?
प्रतापनारायण मिश्र : संगीत शाकुन्तल '०८

विश्वरूप स्वामी : पदावली '०८ १
अयोध्यासिंह उपाध्याय : काव्योपवन '०६
बचऊ चौवे : सावन-बहार '०६
रामनारायण ठाकुर : हल्दीघाट का युद्ध '०६
गजाधरबख्श सिंह : साहित्य-छटा '१०
जयशङ्कर प्रसाद : प्रेम-राज्य '१०
मैथिलीशरण गुप्त : रङ्ग में भङ्ग '१०
,, : जयद्रथ-वध १०
प्रयागनारायण मिश्र : ऋतु-काव्य '१०
कृष्णप्यारी : प्रेमरत्न '११
देवीप्रसाद 'प्रीतम' : बुन्देलखण्ड का अलबम '११
प्रयागनारायण मिश्र : राघव-गीत '११
ठाकुर पुगारानाइ : अमर कथा '१२
नाथूराम शङ्कर शर्मा : शङ्कर-सरोज '१२ द्वि०
प्रभुसेवक : विनय-सरोज '१२
भगवानदीन, लाला : रामचरणाङ्कमाला '१२
मैथिलीशरण गुप्त : भारत-भारती '१२
,, : पद्य-प्रबंध '१२
श्रीधर पाठक : वनाष्टक '१२
हरिदास माणिक : हल्दीघाटी की लड़ाई '१२
जयशङ्कर प्रसाद : प्रेम-पथिक '१३
,, : कानन - कुसुम '१३
नाथूराम शङ्कर शर्मा : अनुरागरत्न '१३
अमीरअली 'मीर' : बूढ़े का ब्याह '१४
अयोध्यासिंह उपाध्याय : प्रियप्रवास '१४
कृष्णदत्त शर्मा : हरिश्चन्द्रोपाख्यान '१४
कृष्णदेवनारायण सिंह : कनकमञ्जरी '१४
जयशङ्कर प्रसाद : महाराणा का महत्व '१४
माधव शुक्ल : भारत-गीताञ्जलि '१४
रामनरेश त्रिपाठी : कविता-विनोद '१४
लोचनप्रसाद पाण्डेय : मेवाड़-गाथा '१४
,, : माधव-मञ्जरी '१४
श्रीनारायण चतुर्वेदी : चारण '१४
सियारामशरण गुप्त : मौर्य-विजय '१४
गोकुलचन्द्र शर्मा : प्रणवीर प्रताप '१५
मन्नन द्विवेदी : प्रेम '१५

रामचरित उपाध्याय : सूक्ति मुक्तावली '१५
लोचनप्रसाद पाण्डेय : पद्य-पुष्पाञ्जलि '१५
शिवाधार पाण्डेय : पदार्पण '१५
श्रीधर पाठक : देहरादून '१५
,, : गोखले गुणाष्टक '१५
,, : गोखले प्रशस्ति '१५
अयोध्यासिंह उपाध्याय : कर्मवीर '१६
गयाप्रसाद शुक्ल : कृषक-क्रन्दन '१६
मिश्रबंधु : भारत-विनय '१६
मुकुटधर पाण्डेय : पूजा-फूल '१६
श्रीधर पाठक : जगत सचाईसार '१६ नवीन
,, : गोपिका-गीत '१६
अयोध्यासिंह उपाध्याय : ऋतु-मुकुर '१७
,, : पद्य-प्रमोद '१७
मैथिलीशरण गुप्त : किसान '१७
श्रीनारायण चतुर्वेदी ? : चोंच महाकाव्य '१७
जयशङ्कर प्रसाद : चित्राधार '१८
भगवानदीन पाठक : पद्य-पारिजात '१८
रामचरित उपाध्याय : देव-सभा '१८
रामनरेश त्रिपाठी : मिलन '१८
,, : क्या होमरूल लोगे ? '१८
श्रीधर पाठक : भारत-गीत '१८
हरिप्रसाद द्विवेदी : प्रेम-पथिक '१८
गयाप्रसाद शुक्ल : त्रिशूल-तरङ्ग '१९
गोकुलचन्द शर्मा : गांधी-गौरव '१९
जगदीशप्रसाद तिवारी : औरङ्गज़ेब की नङ्गी तलवार '१९
नाथूराम शङ्कर शर्मा : वायस-विजय '१९
मैथिलीशरण गुप्त : वैतालिक '१९
राधेश्याम कथावाचक : रामायण '१९-
रामचरित उपाध्याय : भारत-भक्ति '१९
,, : रामचरित-चन्द्रिका '१९
हनुमन्तप्रसाद जोशी : हृदय-वीणा '१९
ईश्वरीप्रसाद शर्मा : अन्योक्ति-तरङ्गिणी '२०
,, : मातृ-वन्दना '२०
गिरिजादत्त शुक्ल : रसाल-वन '२०
भगवानदीन, लाला : वीर-पञ्चरत्न

रामचरित उपाध्याय : रामचरित-चिन्तामणि '२०
रामनरेश त्रिपाठी : पथिक '२०
सत्यनारायण शर्मा: हृदय-तरङ्ग '२०
सुखदेवप्रसाद सिंह : कुँवर बिजइया का गीत '२०
ईश्वरीप्रसाद शर्मा : सौरभ '२१
कालीप्रसाद : अमहरा '२१
गयाप्रसाद शुक्ल : राष्ट्रीय मन्त्र '२१
रामचरित उपाध्याय : राष्ट्र भारती '२१
रामनारायण चतुर्वेदी : अम्बरीष '२१
शिवदास गुप्त : कीचक-वध '२१
किशनचन्द 'ज़ेबा' : हमारा देश '२२
गयाप्रसाद शुक्ल : राष्ट्रीय-वीणा '२२
देवीप्रसाद 'प्रीतम' : श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव '२२
बुद्धदेव : बिखरे हुए फूल '२२
माधव शुक्ल : जाग्रत भारत २२
रामचन्द्र शुक्ल : बुद्ध-चरित '२२
लोकनाथ द्विवेदी : पद्मिनी '२२
सियारामशरण गुप्त : अनाथ '२२
सुमित्रानन्दन पन्त : उच्छ्वास '२२
अयोध्यासिंह उपाध्याय : चुभते चौपदे, चोखे चौपदे '२३
आनंदिप्रसाद श्रीवास्तव : कुर्बानी '२३
गिरिजादत्त शुक्ल : स्मृति '२३
जगन्नारायण देव शर्मा : मधुप '२३
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी : पञ्च-पात्र '२३
महावीरप्रसाद द्विवेदी : सुमन '२३
मैथिलीशरण गुप्त : शकुन्तला '२३ च०
" : पत्रावली '२३ द्वि०
विद्याभूषण 'विभु' : पद्य-पयोनिधि '२३
सत्यप्रकाश : ब्रह्मविज्ञान '२३
सूर्यकान्त त्रिपाठी : अनामिका '२३
रामकुमार वर्मा : वीर हम्मीर '२३
रूपनारायण पाण्डेय : पराग '२४
सुरेन्द्रनाथ तिवारी : वीराङ्गना तारा '२४
अयोध्यासिंह उपाध्याय : पद्य-प्रसून '२५
गुरुभक्तसिंह : सरस सुमन '२५
चन्द्रभान सिंह : कुसुमावली '२५
दिवाकरप्रसाद वर्मा : वसुमती '२५
मैथिलीशरण गुप्त : पञ्चवटी '२५
" : स्वदेश-संगीत '२५
" : अनघ '२५
मोहनलाल महतो : अछूत '२५
विद्याभूषण 'विभु' : चित्रकूट-चरित्र '२५

शहज़ादसिंह : विश्वामित्र '२५
श्रीनाथसिंह : सती पद्मिनी '२५
कपिलदेवनारायण सिंह : प्रेम-मिलन '२६
कामताप्रसाद गुरु : पद्य-पुष्पाञ्जलि '२६
जगदीशनारायण तिवारी : दुर्योधन-वध '२६
जयशङ्कर प्रसाद : आँसू '२६
दयालुचंद्र विद्यालङ्कार : हिंदी-झङ्कार '२६
नन्हेंलाल वर्मा:नामदेव वंशावली'२६
भगवानदीन, लाला : नवीन बीन '२६
मोहनलाल महतो : निर्माल्य '२६
युगलकिशोर मुख्तार : मेरी भावन '२६
रामनाथलाल : विपञ्ची '२६
श्यामाकान्त पाठक:श्याम-सुधा'२६
,, : उषा '२६
सुभद्राकुमारी चौहान : झाँसी की रानी '२६
सुमित्रानन्दन पन्त : पल्लव '२६
गुरुभक्त सिंह : कुसुम-कुञ्ज '२७
जयशङ्कर प्रसाद : झरना '२७ द्वि०
मैथिलीशरण गुप्त : हिन्दू '२७
मोहनलाल महतो : एक-तारा '२७
रामनरेश त्रिपाठी : मानसी '२७
रामाज्ञा द्विवेदी : सौरभ '२७
सत्यप्रकाश : प्रतिबिम्ब '२७
सुमित्रानन्दन पन्त : वीणा '२७
हरिप्रसाद द्विवेदी : वीर-सतसई '२७
अजमेरी, मुन्शी : हेमला सत्ता '२८
आनन्दिप्रसाद श्रीवास्तव : उषाकाल '२८
जगदीश झा : छाया '२८
जगन्नाथदास : गङ्गावतरण '२८
मैथिलीशरण गुप्त : गुरुकुल '२८
,, : विकट भट '२८
,, : त्रिपथगा '२८
,, : शक्ति '२८
राय कृष्णदास : भावुक '२८
सियारामशरण गुप्त : आर्द्रा '२८
गुलाबरत्न वाजपेयी : लतिका '२९
गोपालशरण सिंह : माधवी '२९
तारा पाण्डेय : वेणुकी '२९
दरब खाँ 'अभिलाषी' : प्रकृति-सौन्दर्य '२९
पद्मकान्त मालवीय : त्रिवेनी '२९
महेन्द्र शास्त्री : हिलोर '२९
मिश्रबन्धु : पद्य-पुष्पाञ्जलि '२९
मैथिलीशरण गुप्त : झङ्कार '२९
रामकुमार वर्मा : चित्तौर की चिता '२९
रामकृष्ण शर्मा : कविता-कुसुम '२९
रामनरेश त्रिपाठी : स्वप्न '२९

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन : मनदूत '३३
सियारामशरण गुप्त : आत्मोत्सर्ग '३३
हरिवंशराय 'बच्चन' : तेरा हार '३३
हरिश्चन्द्र जोशी : जीवन-फूल '३३
गोपाल सिंह नेपाली : पंछी '३४
,, : उमङ्ग '३४
गौरीशङ्कर झा : स्मृति '३४
तारा पाण्डेय : सीकर '३४
दुलारेलाल भार्गव : दुलारे दोहावली '३४
नरेन्द्र : शूल-फूल '३४
महादेवी वर्मा : नीरजा '३४
रत्नकुमारी देवी : अंकुर '३४
रत्नाम्बरदत्त चण्डोला : मधुकोष '३४
रामेश्वर अध्यापक : करुण-सतसई '३४
विद्या ठाकुर : आलोक '३४
विश्वनाथप्रसाद : मोती के दाने '३४
शम्भुदयाल सक्सेना : भिखारिन '३४
शान्तिप्रिय द्विवेदी : हिमानी '३४
श्रीनिधि द्विवेदी : यौवन '३४
सियारामशरण गुप्त : पाथेय '३४
हीरादेवी चतुर्वेदी : नीलम '३४
आनन्दकुमार : मधुवन '३५
,, : मालिनी '३५
उदयशङ्कर भट्ट : राका '३५
गुरुभक्त सिंह : नूरजहाँ '३५
जयशङ्कर प्रसाद : लहर '३५
'पुरुषार्थी' : अन्तर्वेदना '३५
बालकृष्णराव : आभास '३५
ब्रह्मदेव शर्मा : क्रन्दन '३५
भुवनेश्वर सिंह : आषाढ़ '३५
मृत्युञ्जय : प्रलाप '३५
मोहनलाल महतो : कल्पना '३५
युगलवल्लभ गोस्वामी : हितयुगल अष्टयाम '३५
रामकुमारी चौहान : निश्वास '३५
रामकुमार वर्मा : चित्ररेखा '३५
रामधारी सिंह : रेणुका '३५
रामसिंह, राजा : मोहन-विनोद '३५
सरयूप्रसाद शास्त्री : आसव '३५
हरशरण शर्मा : सुषमा '३५
हरिवंशराय : मधुशाला '३५
अशरफ़ महमूद काज़ी : निमन्त्रण '३६
उमाशङ्कर वाजपेयी : व्रजभारती '३६
ओंकारनाथ : उस ओर '३६
केदारनाथ मिश्र : श्वेतनील '३६
नरेन्द्र : कर्णफूल '३६

बचनेश मिश्र : शबरी '३६
भगवतीलाल श्रीवास्तव : अनन्त अतिथि '३६
महादेवी वर्मा : सांध्य-गीत '३६
मैथिलीशरण गुप्त : द्वापर '३६
,, : सिद्धराज '३६
राय कृष्णदास : ब्रजरज '३६
सियारामशरण गुप्त : मृण्मयी '३६
सुभद्रा देवी गुप्त : काकली '३६
सूर्यकान्त त्रिपाठी : गीतिका '३६
हरिवंशराय : मधुबाला '३६
हरिशरण मिश्र : मुक्तक '३६
अनूप शर्मा : सिद्धार्थ '३७
अयोध्यासिंह उपाध्याय : कल्पलता '३७
इलाचन्द्र जोशी : विजनवती '३७
गोपालशरण सिंह : कादम्बिनी '३७
चन्द्रप्रकाश वर्मा : चाँदनी '३७
जयशङ्कर प्रसाद : कामायनी '३७
तारा पाण्डेय : शुकपिक '३७
नाथप्रसाद दीक्षित : माधुरी '३७
भगवतीचरण वर्मा : प्रेम-सङ्गीत '३७
रामकुमार वर्मा : चन्द्रकिरण '३७
रामनाथ जोतिषी : रामचन्द्रोदय '३७
रामानन्द तिवारी : परिणय '३७
रामेश्वरी देवी गोयल : जीवन का स्वप्न '३७
श्रीमन्नारायण अग्रवाल : रोटी का राग '३७
सुमित्रानन्दन पन्त : युगान्त '३७
सूर्यदेवी दीक्षित : निर्झरिणी '३७
हरिवंशराय : मधु-कलश '३७
आनन्दकुमार : पुष्पबाण '३८
आरसीप्रसाद सिंह : कलापी '३८
गङ्गाप्रसाद पाण्डेय : पर्णिका '३८
गोपालशरण सिंह : मानवी '३८
चन्द्रप्रकाश वर्मा : समाधिदीप '३८
नगेन्द्र : वनबाला '३८
राजेश्वरी त्रिवेदी : कुमकुम '३८
रामेश्वर शुक्ल : मधूलिका '३८
सियाशरण गुप्त : बापू '३८
हरिवंशराय : निशा-निमंत्रण '३८
अयोध्यासिंह उपाध्याय : वैदेही-वनवास '३९
अनूप शर्मा : सुमनाञ्जलि '३९
अशरफ़ महमूद क़ाज़ी : अंतिम आशा '३९
आनन्दकुमार : सारिका '३९
उदयशङ्कर भट्ट : मानसी '३९
,, : विसर्जन '३९
कृष्णदेवप्रसाद गौड़ : बेढब की बहक '३९
गोपालशरण सिंह : संचिता '३९
तोरन देवी शुक्ल : जागृति '३९
दीनानाथ व्यास : हृदय का भार '३९

दुर्गाप्रसाद झूँझनूवाला : आरती '३९
" : सौरभ '३९ !
बलदेवप्रसाद मिश्र : जीवन-सङ्गीत '३९
बालकृष्ण शर्मा : कुंकुम '३९
राजेश्वर गुरु : शेफाली '३९
रामकुमार वर्मा : जौहर '३९
रामेश्वर शुक्ल : अपराजिता '३९
रामेश्वरी देवी गोयल : मकरन्द '३९
शकुन्तला श्रीवास्तव : रजकण '३९
शिवमङ्गल सिंह : हिलोर '३९
सर्वदानन्द वर्मा : अर्घ्यदान '३९ !
सुदर्शन : झङ्कार '३९
सुमित्रानन्दन पन्त : युगवाणी '३९
सूर्यकान्त त्रिपाठी : तुलसीदास '३९
सूर्यनारायण जैन : दीपक '३९
हरिवंशराय : एकांत सङ्गीत '३९
होमवती देवी : उद्गार '३९ !
" : अर्घ्य '३९
कपिलदेवनारायण सिंह : वन्दी '४०
केदारनाथ मिश्र : कलापिनी '४०
नरेन्द्र : पलाश-वन '४०
भगवतीचरण वर्मा : मानव '४०
महादेवी वर्मा : यामा '४०
मैथिलीशरण गुप्त : नहुष '४०
राजेश्वर गुरु : दुर्गावती '४०
रामलाल श्रीवास्तव : विभावरी '४०
रामधारीसिंह : द्वन्द्व-गीत '४०
" : रसवन्ती '४०
रामसिंह : मेघमाला '४०
शालिग्राम : 'टी' शाला '४०
श्रीकृष्णराय : हिमांशु '४०
सुधीन्द्र : प्रलय-वीणा '४० !
सुमित्रानन्दन पन्त : ग्राम्या '४०
" : पल्लविनी '४०
हरदयालु सिंह : दैत्य-महावंश '४०
हरिकृष्ण प्रेमी : अग्निगान '४०
हीरादेवी चतुर्वेदी : मधुवन '४०
अमरनाथ कपूर : पत्र-दूत '४१
अयोध्यासिंह उपाध्याय : पुण्य-पर्व '४१
उपेन्द्रनाथ 'अश्क' : ऊर्म्मियाँ '४१
गोपालशरण सिंह : सुमना '४१
चन्द्रमुखी ओझा : पराग '४१
जगदम्बाप्रसाद : वैशाली '४१
पद्मकान्त मालवीय : कूजन '४१
भगवतीप्रसाद वाजपेयी : ओस के बूँद '४१ !
महादेवी वर्मा : (आधुनिक कवि माला में) '४१
रामेश्वर शुक्ल : किरण वेला '४१
शम्भुदयाल सक्सेना : नीहारिका '४१

शम्भुदयाल सक्सेना : रैन बसेरा '४१ ?

शिवमङ्गल सिंह : जीवन के गान '४१ ?

श्यामनारायण पाण्डेय : हल्दी-घाटी '४१

श्रीमन्नारायण अग्रवाल : मानव '४१

सर्वानन्द वर्मा : निर्वासित के गीत '४१

सियारामशरण गुप्त : उन्मुक्त '४१

सुमित्राकुमारी सिन्हा : विहाग '४१

महादेवी वर्मा : दीपशिखा '४२

माखनलाल चतुर्वेदी : हिम-किरीटिनी '४२

मैथिलीशरण गुप्त : कुणाल-गीत '४२

रामकुमार वर्मा : (आधुनिक कवि-माला में) '४२

रामरत्न भटनागर : ताण्डव '४२

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन : चिंता '४२

सुमित्रानन्दन पन्त : (आधुनिक कवि-माला में) '४२

सोहनलाल द्विवेदी : वासवदत्ता '४२

हृदयनारायण : सुषमा '४२

काव्य—बाल

रामलाल : बाल-विनोद रामायण '७६

देवराज : *माता का प्यारा* '०४

" : लोरियाँ '०५

सुन्दरलाल द्विवेदी : बाल-गीताञ्जलि '०८

लोचनप्रसाद पाण्डेय : बाल-विनोद '१३

मन्नन द्विवेदी : विनोद '१४

गयाप्रसाद शुक्ल : कुसुमाञ्जलि '१६

अयोध्यासिंह उपाध्याय : बाल-विनोद '१७

" : विनोदवाटिका '२२

विद्याभूषण : सोहराब और रुस्तम '२३

अयोध्यासिंह उपाध्याय : बाल-विलास '२५

ईश्वरीप्रसाद शर्मा : चना-चबेना '२५

व्रजभूषणप्रसाद : खेल-खिलौना '२५

श्रीनाथसिंह : बाल-कवितावली '२५

अयोध्यासिंह उपाध्याय : बोल-चाल '२८

रामलोचनशरण : चमचम '२८

विद्याभूषण : गोबर गनेश '२८

अयोध्यासिंह उपाध्याय : बाल-विभव '२९

श्रीनारायण चतुर्वेदी : शतदल-कमल '३०

सोहनलाल द्विवेदी: दूध-बताशा '३४
लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी : भैंसासिंह '३४
श्रीनाथ सिंह : पिपिहरी '३५
शम्भुदयाल सक्सेना : पालना '३८?
अयोध्यासिंह उपाध्याय : बाल-कवितावली '३९
श्रीनाथ सिंह : बाल-भारती '४०

काव्य—अनूदित

(संस्कृत-प्राकृत)

वाल्मीकि : रामायण
अश्वघोष : सौन्दरानन्द
कालिदास : ऋतुसंहार
,, : मेघदूत
,, : कुमारसम्भव
: रघुवंश
भारवि : किरातार्जुनीय
भट्टि : —काव्य
माघ : शिशुपाल-वध
श्रीहर्ष : नैषधीय
भर्तृहरि : त्रिशतक
अमरु : — शतक
विल्हण : चौरपञ्चाशिका
जयदेव : गीतगोविन्द
जगन्नाथ पंडितराज : भामिनी-विलास
,, : गङ्गालहरी
विद्यापति : कीर्त्तिलता
अज्ञात : सुभाषित-रत्नाकर
अज्ञात : रामाश्वमेध
चैतन्यदेव : ग्रन्थारम्भकैरवी
धोयी : पवनदूत

(बँगला)

माइकेल मधुसूदनदत्त : विरहिणी-व्रजाङ्गना
,, : मेघनादवध
,, : वीराङ्गना
नवीनचन्द्रसेन : पलासी का युद्ध
रवीन्द्रनाथ टाकुर : माली
,, : गीताञ्जलि
,, : कलरव
रवीन्द्रनाथ ठाकुर : फल-संचय

(मैथली)

विद्यापति : पदावली

हिंदी पुस्तक-साहित्य

(राजस्थानी)

पृथ्वीराज : वेलि कृष्ण-रुक्मिणी री मीतराम त्रिपाठी : मनोहर-प्रकाश

(उर्दू)

अल्ताफ़ हुसैन हाली:विधवा-प्रार्थना सुखदेवप्रसाद सिन्हा:जज़बाते बिस्मिल

(फ़ारसी)

सादी : गुलिस्तां

खैयाम, उमर : रुबाइयां

(यूरोपियन ऐंग्लोइंडियन)

होमर : इलियड

गेटे : फाउस्ट

गोल्डस्मिथ : श्रान्त पथिक

" : ऊजड़ ग्राम

पार्नेल : एकांतवासी योगी

ग्रे:ग्रामस्थ शवागार में लिखितशोकोक्ति

कॉलरिज : वृद्ध नाविक

लॉंगफ़ेलो : इवैंजेलाइन

उपन्यास—प्राचीन

चतुर्भुजदास : मधुमालती नी वार्ता
मुहम्मद जायसी, मलिक : पद्मावत
बोधा : माधवानल-कामकन्दला
उसमान : चित्रावली
नूर मुहम्मद : इन्द्रावती

उपन्यास—तत्कालीन

सदानन्द मिश्र तथा शम्भुनाथ मिश्रसं० : मनोहर उपन्यास '७१
श्यामलाल नलचरितामृत '७६
शालिग्राम मिश्र : मालती और माधव की कथा '८१
श्रीनिवासदास, लाला : परीक्षा-गुरु '८४ द्वि०
बालकृष्णभट्ट : नूतन ब्रह्मचारी '८६
जगमोहन सिंह : श्यामास्वप्न '८८
किशोरीलाल गोस्वामी : लवङ्गलता '८६
,, : स्वर्गीय कुसुम '८६
,, : त्रिवेणी '६०
,, : प्रणयिनी-परिणय '६०
,, : हृदयहारिणी '६०
क्षेत्रपाल शर्मा : कामलता '६०
राधाकृष्णदास : निस्सहाय हिंदू '६०
आदेश्री उन्नदजी कवि : खुशबू कुमारी '६१ रिप्रिन्ट
देवदत्त शर्मा : सच्चा मित्र '६१
बालकृष्ण भट्ट : सौ अजान और एक सुजान '६१
अयोध्यासिंह उपाध्याय : प्रेमकांता '६२
अम्बिकादत्त व्यास : आश्चर्य वृत्तान्त '६३
उदयराम कवि : मोजदीन मेहताब '६३
गङ्गाप्रसाद गुप्त : अब्दुल्ला का खून '६३
गोपालराम गहमरी : चतुर चञ्चला '६३
देवकीनन्दन खत्री : चन्द्रकान्ता '६३-
,, : नरेन्द्र-मोहिनी '६३-

देवीप्रसाद उपाध्याय : सुन्दर सरोजिनी '६३
भवदेव पं० : वचन तरङ्गिणी '६३
रत्नचंद प्लीडर : नूतन-चरित्र '६३
अभयचन्द्र चक्रवर्ती : भावचन्द्र-रहस्य ६४
गोपालरामगहमरी : भानमती भागी '६४
,, : नेमा '६४
,, : नए बाबू '६४
जैनेन्द्रकिशोर : कमलिनी '६४
भुनेश्वर मिश्र : घराऊ घटना '६४
सतीशचन्द्र वसु : चतुरा '६४
देवकीनंदन खत्री : वीरेंद्र वीर '६५
गोपालराम गहमरी : अजब लाश '६६
,, : अद्भुत लाश '६६
जगन्नाथशरण : नीलमणि '६६
तुलसीप्रसाद : इलामती '६६
रामगुलाम राम : सुदामा '६६
देवकीनन्दन खत्री : चंद्रकांता संतति '६६- रिप्रिन्ट
गोपीनाथ पुरोहित : वीरेंद्र '६७
शिवशंकर भट्ट : चन्द्रकला '६७
दुर्गादत्त मिश्र : सरस्वती '६८
रुद्रदत्त शर्मा : अपूर्व सन्यासी '६८
अयोध्यासिंह उपाध्याय : ठेठ हिंदी का ठाठ '६६
कार्तिकप्रसाद खत्री : दीनानाथ '६६
गोपालराम गहमरी : सास-पतोहू '६६
,, : गुप्तचर '६६
जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी : संसार-चक्र '६६
,, : वसंत-मालती '६६
देवकीनंदन खत्री : कुसुमकुमारी '६६
,, : नौलखा हार '६६
मदनमोहन पाठक : माया-विलास '६६
रामस्वरूप शर्मा : सुधामुखी '६६
लज्जाराम शर्मा, मेहता : धूर्त रसिकलाल '६६
,, : स्वतंत्र रमा परतंत्र लक्ष्मी '६६
हरेकृष्ण जौहर : कुसुमलता '६६
कन्हैयालाल त्रिपाठी : उपन्यास-भंडार '१६००
गोपालराम गहमरी : बेक़सूर की फाँसी १६००
,, : सरकती लाश १६००
,, : डबल जासूस १६००
,, : खूनी कौन है १६००
,, : बेगुनाह का खून १६००
,, : जमुना का खून १६००
बलदेवप्रसाद मिश्र : अनारकली १६००
बालमुकुन्द वर्मा : कामिनी १६००

मुरलीधर शर्मा: सत्कुलाचार १९००
रुद्रदत्त शर्मा : वरसिंह दारोगा १९००
सरस्वती गुप्ता : राजकुमार १९००
हनुमानप्रसाद : अपना यथार्थ हक्क १९००
हरेकृष्ण जौहर : भयानक भ्रम १९००
किशोरीलाल गोस्वामी : कुसुम कुमारी '०१
गोपालराम गहमरी : मायाविनी '०१
,, : जादूगरनी मनोरमा '०१
,, : लड़की चोरी '०१
,, : जासूस की भूल '०१
,, : थाना की चोरी '०१
,, : भयङ्कर चोरी '०१
बालमुकुन्द वर्मा : राजेन्द्र मोहिनी '०१
वासुदेव मोरेश्वर पोतदार : प्रणयि माधव '०१
हरिहरप्रसाद जिंजल : शीला '०१
हरेकृष्ण जौहर : नारी पिशाच '०१
,, : मयङ्क मोहिनी '०१
,, : जादूगर '०१
किशोरीलाल गोस्वामी : तारा '०२
,, : राजकुमारी '०२
गङ्गाप्रसाद गुप्त : नूरजहाँ '०२
गोपालराम गहमरी: डबल बीबी '०२
,, : देवरानी-जेठानी '०२
,, : अन्धे की आँख '०२
,, : जाल राजा '०२
,, : जाली काका '०२
,, : जासूस की चोरी '०२
,, : मालगोदाम में चोरी '०२
चुन्नीलाल खत्री : सच्चा बहादुर '०२
देवकीनंदन खत्री : गुप्त गोदना '०२
,, : काजर की कोठरी '०२
बलदेवप्रसाद मिश्र : पृथ्वीराज चौहान '०२
,, : पानीपत '०२
मदनमोहन पाठक : आनंद सुन्दरी '०२
श्याम जी शर्मा : प्रियावल्लभ-प्रेम-मोहिनी '०२
श्यामलाल चक्रवर्ती : चम्पा '०२
हरेकृष्ण जौहर : निराला नक़ाब-पोश '०२
,, : कमल कुमारी '०२
अमृतलाल चक्रवर्ती : सती सुख-देवी '०३
,, : उपन्यास कुसुम '०३
किशोरीलाल गोस्वामी: चपला '०३
,, : कनक कुसुम '०३
गोपालराम गहमरी : दो बहन '०३
,, : घर का भेदी '०३

गोपालराम गहमरी : जासूस पर जासूस '०३
,, : डाक पर डाका '०३
,, : डाक्टर की कहानी '०३
गङ्गाप्रसाद गुप्त : वीर पत्नी '०३
,, : कुमारसिंह सेनापति '०३
,, : पूना में हलचल '०३ द्वि०
मदनमोहन पाठक : चन्द्रिका '०३
रामप्रताप शर्मा : नरदेव '०३
विट्ठलदास नागर : पद्माकुमारी '०३
शारदाप्रसाद वर्मा : प्रेमपथ '०३
हरेकृष्ण जौहर : भयानक खून '०३
हरिहरप्रसाद जिज्जल : कामोद कला '०३
कमलाप्रसाद वर्मा : भयानक भूल '०४
गङ्गाप्रसाद गुप्त : हम्मीर '०४
गिरिजानन्दन तिवारी : विद्याधरी '०४
गोपालराम गहमरी : लाइन पर लाश '०४ ?
,, : चक्करदार चोरी '०४ ?
,, : यारों की लीला '०४ ?
,, : मृत्यु विभीषिका '०४ ?
,, : योग महिमा '०४ ?
,, : देवीसिंह '०४
गोपालराम गहमरी : लड़का गायब '०४
मनोहरलाल : कान्तिमाला '०४
मिट्ठूलाल मिश्र : रणधीर सिंह '०४
रामचीज़ सिंह : कुलवन्ती '०४
लज्जाराम शर्मा, मेहता : आदर्श दम्पति '०४
विनायकलाल दादू : चन्द्रभागा '०४
शिवचन्द्र भरतिया : कनक सुन्दर '०४
श्यामसुन्दर वैद्य : पञ्जाब-पतन '०४
कमलाप्रसाद : कुल-कलङ्किनी '०५
किशोरीलाल गोस्वामी : कटे मूड़ की दो-दो बातें '०५
,, : चन्द्रावली '०५
,, : हीराबाई '०५
,, : चन्द्रिका '०५
,, : लवङ्गलता '०५
,, : मल्लिका देवी '०५
गोपालराम गहमरी : तीन पतोहू '०५
देवकीनन्दन खत्री : अनूठी बेगम '०५
भगवानदास : उरदू बेगम '०५
मथुराप्रसाद शर्मा : नूरजहाँ '०५
रामनारायण दीक्षित : रम्भा '०५
रूपनारायण पाण्डेय : रमा '०५
विट्ठलदास नागर : क़िस्मत का खेल '०५

शीतलप्रसाद : मनमोहिनी '०५
एस० एन० गुप्त जैनी : निर्मला '०५
हज़ारीलाल : तीन बहिन '०५
अम्बिकाप्रसाद गुप्त : सच्चा मित्र '०६
किशोरीलाल गोस्वामी : इन्दुमती '०६
,, : तरुण तपस्विनी '०६
,, : याक़ूती तख्ती '०६
,, : ज़िन्दे की लाश '०६
,, : लखनऊ की क़ब्र '०६
गिरिजानन्दन तिवारी : सुलोचना '०६
गोपालराम गहमरी : जासूस चक्कर में '०६
,, : अद्भुत खून '०६
,, : आँखों देखी घटना '०६ ?
,, : इन्द्रजालिक जासूस '०६ ?
,, : क़िले में खून '०६ ?
,, : केतकी की शादी '०६ ?
,, : खूनी का भेद '०६ ?
,, : खूनी की खोज '०६ ?
,, : लाइन पर लाश '०६ ?
,, : चक्करदार चोरी '०६ ?
,, : यारों की लीला '०६ ?
,, : मृत्यु विभीषिका '०६ ?
चतुर्भुजसहाय : कुमारी चन्द्रकिरन '०६
जयरामलाल रस्तोगी : सौतेली माँ '०६
देवीप्रसाद, मुंशी : रूठी रानी '०६
रामजीदास वैश्य : फूल में काँटा '०६
रूपनारायण पाण्डेय : भयानक भूल '०६
लाल जी सिंह : वीर बाला '०६
लोचनप्रसाद पाण्डेय : दो मित्र '०६
विश्वेश्वरप्रसाद वर्मा : वीरेन्द्र कुमार '०६
वृन्दावनविहारी सिंह : दो नक़ाबपोश '०६
ब्रजनन्दन सहाय : अद्भुत प्रायश्चित '०६
,, : राजेन्द्र मालती '०६
अयोध्यासिंह उपाध्याय : अधखिला फूल '०७
किशोरीलाल गोस्वामी : पुनर्जन्म '०७
गोकुलप्रसाद वर्मा : पवित्र जीवन '०७
जङ्गबहादुर सिंह : राजेन्द्रकुमार '०७
जयरामदास गुप्त : लँगड़ा खूनी '०७
,, : किशोरी '०७
,, : रङ्ग में भंग '०७
,, : काश्मीर पतन '०७
जैनेन्द्रकिशोर : गुलेनार '०७
नवलराय : प्रेम '०७
प्रतिपाल सिंह : वीर बाला '०७
बलदेवप्रसाद मिश्र : संसार '०७
माधव केसीट : अद्भुत रहस्य '०७

राम जी दास वैश्य : धोखे की टट्टी '०७
लज्जाराम शर्मा, मेहता : बिगड़े का सुधार '०७
सकलनारायण पाण्डेय : अपराजिता '०७
हनुमन्तसिंह : चन्द्रकला '०७
ईश्वरीप्रसाद शर्मा : कोकिला '०८
,, : हिरण्मयी '०८
गयाचरण त्रिपाठी : सती '०८
चुन्नीलाल तिवारी : प्रेमी-माहात्म्य '०८
जयरामदास गुप्त : मायारानी '०८
जैनेन्द्रकिशोर : मनोरमा '०८
देवकीनन्दन खत्री : भूतनाथ '०८
महादेव प्रसाद मिश्र : झाड़ूलाल की करतूत '०८
रामलाल वर्मा : गुलबदन उर्फ़ रज़िया बेग़म '०८
,, : पुतली महल '०८
लक्ष्मीनारायण गुप्त : नलिनी '०८
लोलाराम मेहता : सुशीला विधवा '०८
शंकरदयाल : महेन्द्रकुमार '०८द्वि०
किशोरीलाल गोस्वामी : माधवी माधव '०९
जयरामदास गुप्त : कलावती '०९
,, : नवाबी परिस्तान '०९
जयरामदास गुप्त : मल्का चाँदबीबी '०९
जङ्गबहादुर सिंह : विचित्र खून '०९
रामचीज़ सिंह : वन-विहङ्गिनी '०९
रामप्रसाद सत्याल : प्रेमलता '०९
,, : किरण शशी '०९
,, : अनन्त '०९
लज्जाराम शर्मा मेहता : विपत्ति की कसौटी '०९
,, : हिन्दू गृहस्थ '०९
ईश्वरीप्रसाद शर्मा : स्वर्णमयी '१०
किशोरीलाल गोस्वामी : सोना और सुगंधि '१०-
झावरमल्ल दारुका : चन्द्र कुमारी '१०-
बलभद्रसिंह ठाकुर : सौंदर्य कुसुम '१०
ईश्वरीप्रसाद शर्मा : नलिनी बाबू '११
,, : मागधी कुसुम '११
कामताप्रसाद गुरु : पार्वती और यशोदा '११
काशीप्रसाद : गौहर जान '११
केदारनाथ : तारामती '११
गोपालराम गहमरी : भोजपुर की ठगी '११
चन्द्रशेखर पाठक : अमीरअली ठग '११

चन्द्रशेखर पाठक : शशिकला '११
जङ्गबहादुर सिंह : शेरसिंह—विलक्षण जासूस '११
गिरानमल ओझा : चपला '११
बलभद्रसिंह : जयश्री '११
,, : सौन्दर्यप्रभा '११
रामनरेश त्रिपाठी : वीराङ्गना '११
,, : वीर बाला '११
शालिग्राम गुप्त : आदर्श रमणी '११
ओंकारनाथ वाजपेयी : शान्ता '१२
,, : लक्ष्मी '१२ तृ०
किशोरीलाल गोस्वामी : लीलावती '१२ ?
कृष्णलाल गोस्वामी : माधवी '१२
गोपालराम गहमरी : बलिहारी बुद्धि '१२
,, : योग महिमा '१२
जगन्नाथ मिश्र : मधुप-लतिका '१२
जमुनाप्रसाद : दुर्भाग्य-परिवर्तन '१२
निहालचंद वर्मा : मोतीमहल '१२
रामनरेश त्रिपाठी : मारवाड़ी और पिशाचिनी '१२
रूपकिशोर जैन : सूर्यकुमार-संभव '१२
ब्रजनन्दनसहाय : राधाकान्त '१२
शिवनारायण द्विवेदी : चम्पा '१२
किशोरीलाल गोस्वामी : लाल-कुँवर '१३
कुन्दनलाल : सत्यप्रेम '१३
गोपालराम गहमरी : गुप्त भेद '१३
,, : अर्थ का अनर्थ '१३
निहालचंद वर्मा : प्रेम का फल '१३
रामप्रताप गुप्त : महाराष्ट्र वीर '१३
शिवनाथ शर्मा : मिस्टर व्यास की कथा '१३
,, : मृगाङ्क लेखा '१३ ?
अनादिधन बैनरजी : चम्पा फूल '१४
आत्माराम देवकर : मनमोहिनी '१४
गोपालराम गहमरी : गेरुआ बाबा '१४ ?
,, : जाली बीबी और डाकू साहब '१४
,, : जासूस की ऐयारी '१४
चतुर्भुज औदीच्य : हवाई महल '१४
दुर्गाप्रसाद खत्री : अभागे का भाग्य '१४
प्यारेलाल गुप्त : लवङ्गलता '१४
कृष्णप्रकाश सिंह अखौरी : वीर चूड़ामणि '१५
चन्द्रशेखर पाठक : हेमलता '१५
ज्ञानचंद बातल : वीराङ्गना '१५
देवेन्द्र : सुशीला '१५
ब्रजनन्दनसहाय : अरण्यबाला '१५
,, : रज़िया बेगम '१५

लज्जाराम शर्मा, मेहता : आदर्श हिन्दू '१५
शिवनारायण द्विवेदी : कुमारी '१५
" : अमरदत्त '१५
हरस्वरूप पाठक : भारतमाता '१५
कृष्णलाल वर्मा : चम्पा '१६
चाँदकरण सारडा : कालेज हॉस्टल '१६
नवलकिशोर सहाय पाण्डेय : रोहिणी '१६
मुरारीलाल, पं० : विचित्र वीर '१६
व्रजनन्दनसहाय : लाल चीन '१६
शिवनारायण द्विवेदी : प्रतिमा '१६
श्रीधर पाठक : तिलस्माती सुन्दरी '१६
दुर्गाप्रसाद खत्री : अनङ्गपाल '१७
मन्नन द्विवेदी : रामलाल '१७
मिश्रबन्धु : वीरमणि '१७
श्रीकृष्ण मिश्र : प्रेम '१७
रामगोपाल मिश्र : माया '१७
ईश्वरीप्रसाद शर्मा : चन्द्रधर '१८
किशोरीलाल गोस्वामी : अँगूठी का नगीना '१८
चतुरसेन शास्त्री : हृदय की परख '१८
प्रेमचन्द : सेवासदन '१८
राधाप्रसाद सिंह अखौरी : मोहिनी '१८
शेर सिंह : दुर्गा '१८
हरिदास माणिक : चौहानी तलवार '१८
अम्बिकाप्रसाद चतुर्वेदी : कोहेनूर '१९
जयगोपाल : भयानक तूफ़ान '१९
दुर्गाप्रसाद खत्री : बलिदान '१९
व्रजनन्दन सहाय : सौन्दर्योपासक '१९
दुर्गाप्रसाद खत्री : माया '२०
" : प्रोफ़ेसर भोंदू '२० !
शिवदास गुप्त : श्यामा '२०
हरिदास माणिक : राजपूतों की बहादुरी '२०
गोविन्दवल्लभ पन्त : सूर्यास्त '२१
जगदीश झा : खरा सोना '२१
बालदत्त पाण्डेय : वनदेवी '२१
मन्नन द्विवेदी : कल्याणी '२१
राधिकारमणप्रसाद सिंह : तरङ्ग '२१
जगदीश झा : जीवन-ज्योति '२२
प्रेमचन्द : प्रेमाश्रम '२२
शिवनारायण द्विवेदी : छाया '२२
" : माता '२२
अवधनारायण : विमाता '२३ द्वि०
किशोरीलाल गोस्वामी : गुप्त गोदना '२३
गौरीशङ्कर शुक्ल : सरला '२३
चन्द्रशेखर पाठक : भरती '२३
प्रभुदत्त शर्मा : जीवन '२३

बेनीप्रसाद मेहता : मायावती '२३
कल्याणसिंह शेखावत : सत्यानन्द '२४
चण्डीप्रसाद 'हृदयेश : मनोरमा' २४
चतुरसेन शास्त्री : व्यभिचार '२४
नवजादिकलाल श्रीवास्तव : शान्ति-निकेतन '२४
नित्यानन्द देव : भाई-भाई '२४
रामकिशोर मालवीय : शैलकुमारी '२४
रामनरेश त्रिपाठी : लक्ष्मी '२४
गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव : प्राणनाथ '२५
गिरिजादत्त शुक्ल : संदेह '२५
जगदीश झा : आशा पर पानी '२५
प्रेमचन्द : रङ्गभूमि '२५
विश्वम्भरनाथ जिज्जा : तुर्क तरुणी '२५
शिवदास गुप्त : उषा '२५
श्रीनाथ सिंह : क्षमा '२५
चण्डीप्रसाद 'हृदयेश' : मंगल प्रभात '२६
प्रफुल्लचंद्र ओझा : संन्यासिनी '२६
प्रेमचन्द : कायाकल्प '२६
रामकिशोर मालवीय : शान्ता '२६
शिवपूजनसहाय : देहाती दुनिया '२६
उषादेवी मित्रा : पिया '२७
ऋषभचरण जैन : मास्टर साहिब '२७
जगमोहन वर्मा : लोकवृत्ति '२७
बेचन शर्मा, पाण्डेय : चंद हसीनों के खतूत '२७
,, : दिल्ली का दलाल '२७
भगवतीचरण वर्मा : पतन '२७
भगवतीप्रसाद वाजपेयी : मीठी चुटकी '२७
विनोदशंकर व्यास : अशान्त '२७
शीतलासहाय : मालकोस '२७ !
चन्द्रभूषण ठाकुर : नरेन्द्र-मालती '२८
तेजरानी पाठक : हृदय का काँटा '२८
प्रेमचन्द्र : निर्मला '२८
प्रवासीलाल वर्मा : करमादेवी '२८
प्रतापनारायण श्रीवास्तव : विदा '२८
बेचन शर्मा, पाण्डेय : बुधुआ की बेटी '२८
भगवतीचरण वर्मा : पतन '२८
भगवतीप्रसाद वाजपेयी : अनाथ पत्नी '२८
यदुनन्दनप्रसाद : अपराधी '२८
राजेश्वरप्रसाद सिंह : मञ्ञ '२८
रामकृष्ण शुक्ल : अमृत और विष '२८

वृन्दावनलाल वर्मा : लगन '२८
शिवनाथ शास्त्री : मँझली बहू '२८
इलाचन्द्र जोशी : घृणामयी '२९
ऋषभचरण जैन : वेश्यापुत्र '२९
जयशङ्कर प्रसाद : कंकाल '२९
प्रेमचन्द : प्रतिज्ञा '२९
भगवतीप्रसाद वाजपेयी : मुसकान '२९
विश्वनाथ सिंह शर्मा : कसौटी '२९
विश्वम्भरनाथ शर्मा : माँ '२९
ऋषभचरण जैन : ग़दर '३०
,, : बुर्केवाली '३०
,, : सत्याग्रह '३०
कृष्णानन्द गुप्त : केन '३०
गिरिजादत्त शुक्ल : अरुणोदय '३०
,, : प्रेम की पीड़ा '३०
गुलाबरत्न वाजपेयी : मृत्युञ्जय '३०
जनार्दनप्रसाद : मालिका '३०
जैनेन्द्रकुमार : परख '३०
,, : स्पर्द्धा '३०
प्रतापनारायण श्रीवास्तव : पाप की ओर '३०
प्रफुल्लचंद्र ओझा : पतझड़ '३०
,, : पाप और पुण्य '३०
बेचन शर्मा, पाण्डेय : शराबी '३०
रामनरेश त्रिपाठी : स्वप्नों के चित्र '३०

विश्वनाथ सिंह शर्मा : वेदना '३०
वृन्दावनलाल वर्मा : गढ़कुंडार '३०
शम्भुदयाल सक्सेना : बहूरानी '३०
श्रीकृष्ण मिश्र : महाकाल '३०
ऋषभचरण जैन : रहस्यमयी '३१
,, : भाई '३१
,, : भाग्य '३१
गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव : लतखोरीलाल '३१
ज़हूरबख्श : स्फुलिंग '३१
तेजरानी पाठक : अञ्जली '३१
प्रेमचन्द : ग़बन '३१
रामविलास शुक्ल : कसक '३१
राहुल सांकृत्यायन : बीसवीं सदी '३१
वृन्दावनलाल वर्मा : प्रेम की भेंट '३१
,, : कोतवाल की करामात '३१
सूर्यकान्त त्रिपाठी : अप्सरा '३१
कृपानाथ मिश्र : प्यास '३२
चतुरसेन शास्त्री : खवास का ब्याह '३२
,, : हृदय की प्यास '३२
जैनेन्द्र कुमार : तपोभूमि '३२
परिपूर्णानन्द : मेरी आह '३२
प्रफुल्लचंद्र ओझा : तलाक़ '३२
प्रेमचन्द : कर्मभूमि '३२

भगवतीप्रसाद वाजपेयी : त्यागमयी '३२
वृन्दावनलाल वर्मा : कुण्डली चक्र '३२
शिवरानी देवी : नारी-हृदय '३२
आनन्दिप्रसाद श्रीवास्तव : मकरन्द '३३
ऋषभचरण जैन : मधुकरी '३३
कन्हैयालाल : हत्यारे का ब्याह '३३
चन्द्रशेखर शास्त्री : विधवा के पत्र ३३
चतुरसेन शास्त्री : इस्लाम का विषवृक्ष '३३
,, : अमर अभिलाषा '३३
ज्योतिर्मयी ठाकुर : मधुवन '३३
घनीराम प्रेम : वेश्या का हृदय '३३
विश्वम्भरनाथ शर्मा : कल्लोल '३३
शिवमौलि मिश्र : मनसा '३३
सियारामशरण गुप्त : गोद '३३
सूर्यकान्त त्रिपाठी : अलका '३३
गोविन्दवल्लभ पन्त : प्रतिमा '३४
जयशङ्कर प्रसाद : तितली '३४
देवचरण : रक्षाबन्धन '३४
प्रभावती भटनागर : पराजय '३४
भगवतीचरण वर्मा : चित्रलेखा '३४
भगवतीप्रसाद वाजपेयी : प्रेमनिर्वाह '३४ ?
,, : लालिमा '३४
रूपनारायण पाण्डेय : कपटी '३४
वृन्दावन विहारी : मधुवन '३४
शीला मेहता : मोतियों के वन्दनवार '३४
श्रीनाथ सिंह : उलझन '३४
सियारामशरण गुप्त : अन्तिम आकांक्षा '३४
गोविन्दवल्लभ पन्त : मदारी '३५
सुरेन्द्र वर्मा : मालती '३५
उषादेवी मित्रा : वचन का मोल '३६
ऋषभचरण जैन : मन्दिरदीप '३६
,, : बुरादाफ़रोश '३६
गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव : स्वामी चौखटानन्द '३६
चतुरसेन शास्त्री : आत्मदाह '३६
जैनेन्द्रकुमार : सुनीता '३६
घनीराम प्रेम : मेरा देश '३६
प्रेमचन्द : गोदान '३६
भगवतीचरण वर्मा : तीन वर्ष '३६
भगवतीप्रसाद वाजपेयी : पतिता की साधना '३६
रघुनाथ सिंह : इन्द्रजाल '३६ ?
लक्ष्मीनारायण सिंह : भ्रातृ-प्रेम '३६ ?
वृन्दावनलाल वर्मा : विराटा की पद्मिनी '३६
सूर्यकान्त त्रिपाठी : निरुपमा '३६

इन्द्र विद्यालङ्कार : अपराधी कौन ? '३७
ऋषभचरण जैन: चाँदनी रात '३७
,, : चम्पाकली '३७
जैनेन्द्रकुमार : त्यागपत्र '३७
प्रतापनारायण श्रीवास्तव: विजय '३७
बेचन शर्मा, पाण्डेय : सरकार तुम्हारी आँखों में '३७
,, : घण्टा '३७
भगवतीप्रसाद वाजपेयी: पिपासा '३७
मन्मथनाथ गुप्त : जय-यात्रा '३७
राधिकारमणप्रसाद सिंह : राम-रहीम '३७ ?
राहुल सांकृत्यायन : सोने की ढाल '३७
श्रीनाथ सिंह : जागरण '३७
,, : एकाकिनी '३७
ऋषभचरण जैन : मयख़ाना '३८
गोविन्दवल्लभ पन्त : जूनिया '३८
गौरीशङ्कर मिश्र : जीवन-क्रान्ति '३८
प्रेमचन्द : दुर्गादास '३८
रघुनाथ सिंह : एक कोना '३८
राम जी दास : सुघड़ चमेली '३८
,, : सुघड़ गँवारिन '३८
,, : दिल्ली का व्यभिचार '३८
राहुल सांकृत्यायन : जादू का मुल्क '३८
सियारामशरण गुप्त : नारी '३८
उषादेवी मित्रा : जीवन की मुस्कान '३९
ऋषभचरण जैन : हर हाईनेस '३९
,, : तीन इक्के '३९
चतुरसेन शास्त्री: राणा राजसिंह '३९
प्रतापनारायण श्रीवास्तव : विकास '३९
रामरत्न भटनागर : अम्बापाली '३९
निमलाकुमारी : अभिनेत्री जीवन के अनुभव '३९
वृन्दाबनलाल वर्मा : प्रत्यागत '३९
उषादेवी मित्रा : पथचारी '४०
उपेन्द्रनाथ 'अश्क' : सितारों के खेल '४०
ऋषभचरण जैन : दुराचार के अड्डे '४०
गिरिजादत्त शुक्ल : नादिरा '४०
चतुरसेन शास्त्री : नीलमती '४०
जैनेन्द्रकुमार : कल्याणी '४०
भगवतीप्रसाद वाजपेयी : दो बहनें '४०
रामजीदास : सच्ची-झूठी '४०
राधिकारमणप्रसाद सिंह : पुरुष और नारी '४०
,, : सूरदास '४०
राहुल सांकृत्यायन : जीने के लिए '४०

इलाचन्द्र जोशी : सन्यासी '४१
" : पर्दे की रानी '४१
जगदीश झा : ग़रीब '४१
यशपाल : दादा कामरेड '४१
रमाप्रसाद पहाड़ी : चलचित्र '४१
सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन : शेखर '४१
सूर्यकान्त त्रिपाठी : बिल्लेसुर बकरिहा '४१
सर्वदानन्द वर्मा : नरमेध '४१
श्रीनाथ सिंह : प्रजामण्डल '४१
यशपाल : चक्कर क्लब '४२
इन्द्र विद्यावाचस्पति : ज़मींदार '४२
भगवतीप्रसाद वाजपेयी : निमन्त्रण '४२

उपन्यास—बाल

अमीरअली 'मीर' : सदाचारी बालक '१७
बैजनाथ केडिया : काने की करतूत '३०
प्रेमचन्द : सेवा सदन (संक्षित) '३४

उपन्यास—अनूदित

(संस्कृत-प्राकृत)

दण्डी : दशकुमार-चरित
बाण भट्ट : हर्ष-चरित
बाण भट्ट : कादम्बरी

(बँगला)

पंचकौड़ी दे : घटना-घटाटोप
" : जय-पराजय
" : जीवन-रहस्य
" : नीलवसना सुन्दरी
" : मायावी
नगेन्द्रनाथ गुप्त : अमरसिंह
" : ख़ून
चण्डीचरण सिंह : गङ्गा गोविन्द सिंह
" : महाराज नन्दकुमार को फाँसी
बङ्किमचन्द्र : दुर्गेशनन्दिनी
" : युगलाङ्गुलीय
" : राजसिंह
" : आनन्दमठ
" : राधा-रानी
" : सीताराम
" : कृष्णकान्त का दानपत्र
" : चौबे का चिट्ठा
" : कपालकुण्डला

बङ्किमचन्द्र : मृणालिनी
" : चन्द्रशेखर
" : रजनी
" : इन्दिरा
" : देवी
" : देवी चौधरानी
रमेशचन्द्र दत्त : वङ्ग विजेता
" : माधवी कङ्कण
" : महाराष्ट्र जीवन-प्रभात
" : समाज
" : राजपूत जीवन-संध्या
रवीन्द्रनाथ ठाकुर : आँख की किरकिरी
" : मुकुट
" : विचित्रवधू-रहस्य
" : गोरा
" : आश्चर्य घटना
" : पञ्चभूत
" : घर और बाहर
" : चार अध्याय
" : कुमुदिनी
राखालदास बन्द्योपाध्याय : करुणा
" " : शशाङ्क
राखालदास बन्द्योपाध्याय : मयूख
शरचन्द्र चट्टोपाध्याय : चरित्रहीन
" : विजया
" : परिणीता
" : श्रीकान्त
" : बड़ी दीदी
" : पण्डित जी
" : मझली दीदी
" : अरक्षणीया
" : लेन-देन
" : गृहदाह
" : देहाती समाज
" : छुटकारा
" : नवविधान
" : शेष प्रश्न
" : जयमाला
" : देवदास
" : शुभदा
गिरीशचन्द्र घोष : बलिदान
अविनाशचन्द्र दास : प्रतिभा
इन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय : खुदीराम या गरीबदास
योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय : मानवती

(गुजराती)

रमणलाल बसंतलाल देसाई : कोकिल
" : पूर्णिमा
" : स्नेह-यज्ञ
रमणलाल बसंतलाल देसाई : अमर लालसा
इन्द्र वसावड़ा : शोभा

इन्द्र वसावड़ा : घर की राह

कन्हैयालाल मुन्शी : पृथ्वीवल्लभ

कन्हैयालाल मुन्शी: गुजरात के नाथ

इच्छाराम सूर्यराम देसाई : कला-विलास

(मराठी)

वामन मल्हार जोशी : रागिणी

„ : आश्रमहरिणी

हरिनारायण आपटे : सूर्यग्रहण

„ : उषाकाल

हरिनारायण आपटे : रूपनगर की राजकुमारी

(उर्दू)

रतननाथ सरशार : आज़ाद-कथा

हसन, निज़ामी ख्वाजा : अफ़सरों की चिट्ठियाँ

हसन निज़ामी ख्वाजा: बेगमात के आँसू

„ : अश्रुपात

„ : बहादुरशाह का मुक़दमा

अज़ीमबेग चग़ताई : कोलतार

(राजस्थानी)

किलोल : ढोला मारू रा दूहा

(पंजाबी)

अज्ञात : हीर-ओ-राँझा

(यूरोपियन-ऐंग्लोइंडियन)

सरवैंटिस : विचित्र वीर

बनयन : यात्रा-स्वर्णोदय

डिफ़ो : रॉबिन्सन क्रूज़ो

इरविंग : रिपवान विङ्कल

लिटन : समाधि

ड्यूमा : तीन तिलङ्गे

„ : षड्यन्त्रकारी

ह्यूगो : पेरिस का कुबड़ा

„ : प्रेम-कहानी

ह्यूगो : अनोखा

„ : बलिदान

„ : फाँसी

तुर्गनेव : संघर्ष

रेनाल्ड्स : नर-पिशाच

मौपासाँ : यौवन की भूल

„ : स्त्री का हृदय

फ्रान्स, अनातोले : अहंकार

टॉल्स्टॉय : युद्ध और शान्ति

टॉल्स्टॉय : अन्ना
" : महापाप
" : पुनर्जीवन
" : शराबी
" : पवित्र पापी
देलेदा : बेचारी माँ
लेगलाफ़ : प्रेमचक्र
" : बहिष्कार
ओ डॉनेल : क्रांतिचक्र
ग्लादकोव : शक्ति
गोर्की : शेलकश
" : वे तीनो
" : टानिया
" : माँ
दॉस्तॉवॉस्की : पवित्र पापी
पर्लबक : धरती माता

कहानी—प्राचीन

इंशा अल्लाह खाँ : कुँवर उदैभान चरित (रानी केतकी की कहानी)

कृष्णदत्त पं० : बुद्धि-फलोदय

शिवप्रसाद सितारेहिन्द : वामा-मनोरञ्जन

कहानी—तत्कालीन

भोलानाथ : विक्रम-विलास '६७

गौरीदत्त, पं० : तीन देवों की कहानी '७० द्वि०

पराहूदास : दृष्टान्त-कोश '७०

गौरीदत्त पं० : देवरानी जेठानी की कहानी '७१

नजमुद्दीन : सूरजपुर की कहानी '७१ तृ०

रामप्रसाद तिवारी : नीति सुधा-तरङ्गिणी '७५

यामिनी भानःकिस्सा मृगावती '७६

श्यामलाल चक्रवर्ती : कहानी कला-कामी '७६

नवलकिशोर मुंशी सं० : मनोहर कहानी '८०

साहबप्रसाद सिंह : सपने की सम्पत्ति '८२

दुर्गा प्रसाद, मुंशी : फुलवारी की छवि '८५

चण्डीप्रसाद सिंह : हास्य रतन '८६

जगतनारायण शर्मा : अकबर बीर-बल समागम '८६

अम्बिकादत्त व्यास : कथा-कुसुम-कलिका '८८

सूर्यभान : लज्जावती का क़िस्सा '८६

गोपालप्रसाद शर्मा : नेकी का दर्जा बदी '६३

,, : कंजूस चरित्र '६३

,, : ठग-लीला '६३

सूर्यनारायण सिंह : बीरबर अकबर उपहास '६५ रिप्रिंट

रामस्वरूप शर्मा : हास्यरस की मटकी '६७

ज्वालादत्त जोशी:दृष्टांत समुच्चय'६८

भेदीराम : नेकी-बदी '०१

बालकृष्ण : हास्य-सुधाकर '०२

स्वरूपचन्द जैन : भोज और कालिदास '०३

किशनलाल : बीरबल-बिलास '०४
सूर्यनारायण शर्मा : हास्य-रत्नाकर '०६
सूर्यकुमार वर्मा : मित्रलाभ '०७
श्रीकृष्ण ठाकुर : चन्द्रप्रभा '०६
ईश्वरीप्रसाद शर्मा : गल्पमाला '१२
गोपालराम : हत्या और कृष्णा '१२ द्वि०
जयशंकर प्रसाद : छाया '१२
अनादिधन बैनरजी : वन-कुसुम '१४
गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव : लम्बी दाढ़ी '१४ नवीन
प्रियम्वदा देवी : आनन्दमयी रात्रि का स्वप्न '१४
रामलाल वर्मा : जासूसी कहानियाँ '१४
कात्यायनी दत्त त्रिवेदी : गल्पगुच्छ '१६
गुलाबचन्द श्रीवास्तव : नवरत्न '१६
छबीलेलाल गोस्वामी : पञ्चपराग '१६
,, : पञ्चपल्लव '१६
,, : पञ्चपुष्प '१६
उदयनारायण वाजपेयी : स्वदेश-प्रेम '१७
उदयवीर सिंह : राजनैतिक प्रपञ्च '१७
छबीलेलाल गोस्वामी : पञ्च-मञ्जरिका '१७
प्रेमचन्द : सप्तसरोज '१७
बालकृष्ण ठट्टे : अनुताप '१७
प्रेमचन्द : नवनिधि '१८
शङ्करप्रसाद मिश्र : सुलक्षणा '१८
गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव : नोक-झोंक '१६
गोविन्दवल्लभ पन्त : लिली '१६
विश्वम्भरनाथ शर्मा : गल्प-मंदिर '१६
शिवनारायण वर्मा : गल्प-शतक '१६
सुदर्शन : पुष्पलता '१६
अनादिधन बैनरजी : चोट '२०
गिरिजाकुमार घोष : गल्प-लहरी '२०
प्रेमचन्द : प्रेम-पूर्णिमा '२०
लक्ष्मीनारायण गुप्त : हृदय-लहरी '२०
गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव : भड़ामसिंह शर्मा '२१
प्रेमचन्द : बड़े घर की बेटी '२१
,, : लाल फ़ीता '२१
,, : नमक का दारोगा '२१
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी : अञ्जलि '२२
मोहनलाल नेहरू : गल्पाञ्जलि '२२
लक्ष्मीनारायण गुप्त : उपेक्षिता '२२

शिवनारायण द्विवेदी : गल्पाञ्जलि '२२
,, : कलियुगी दृश्य '२२
शिवपूजनसहाय : महिला-महत्व '२२
चण्डीप्रसाद 'हृदयेश' : नन्दन-निकुञ्ज '२३
प्रतापनारायण श्रीवास्तव : निकुञ्ज '२३
प्रेमचन्द : प्रेम-पचीसी '२३
सुदर्शन : सुप्रभात '२३
आत्माराम देवकर : स्नेहलता '२४
गोविंदवल्लभ पन्त : एकादशी '२४
प्रेमचन्द : बैंक का दिवाला '२४
,, : प्रेम-प्रसून '२४
राधिकारमणप्रसाद सिंह : गल्प-कुसुमावली '२४ ?
विश्वम्भरनाथ शर्मा : चित्रशाला '२४—
जयशङ्कर प्रसाद : प्रतिध्वनि '२६
प्रेमचन्द : प्रेम-प्रमोद '२६
,, : प्रेम-प्रतिमा '२६
,, : प्रेम-द्वादशी '२६
सुदर्शन : सुदर्शन-सुधा '२६
,, : परिवर्तन '२६
गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव : गङ्गा-जमुनी '२७
,, : गुदगुदी '२७
गोपालराम गहमरी : जासूस की डाली २७ ?
प्रेमचन्द : शान्ति '२७
बेचन शर्मा, पाण्डेय : चॉकलेट '२७
,, : चिंगारियाँ '२७
महावीरप्रसाद द्विवेदी : आख्यायिका-सप्तक '२७
श्रीगोपाल नेवटिया : यूथिका '२७
सुदर्शन : तीर्थयात्रा '२७
जगदीश झा : वेणी '२८
ज़हूरबख्श : समाज की चिंगारियाँ '२८
बदरीनाथ भट्ट : टटोलूराम टलास्त्री '२८
बेचन शर्मा, पाण्डेय : दोज़ख की आग '२८
,, : बलात्कार '२८
,, : गल्पाञ्जलि '२८
विनोदशङ्कर व्यास : तूलिका '२८
कृष्णानन्द गुप्त : अङ्कुर '२९
चन्द्रगुप्त विद्यालंकार : चन्द्रकला '२९
जयशङ्कर प्रसाद : आकाश दीप '२९
जैनेन्द्र कुमार : फाँसी '२९
प्रेमचन्द : प्रेम-तीर्थ '२९
,, : प्रेम-चतुर्थी '२९
,, : अग्निसमाधि '२९

प्रेमचन्द : पाँच फूल '२६
प्रफुल्लचन्द ओझा : बेलपत्र '२६ ?
भगवतीप्रसाद वाजपेयी : मधुपर्क '२६
मोहनलाल महतो : रेखा '२६
राय कृष्णदास : सुधांशु '२६
" : अनाख्या '२६
लक्ष्मीनारायण सिंह : रस-रंग '२६
विश्वम्भरनाथ शर्मा : मणिमाला '२६
विनोदशङ्कर व्यास : भूली बात '२६
विश्वम्भरनाथ शर्मा : भिखारिणी '२६ ?
श्रीनाथ सिंह : पाथेयिका '२६
सुदर्शन : सुहराब और रुस्तम '२६
प्रेमचन्द : सप्त-सुमन '३०
" : समर-यात्रा '३०
" : प्रेम-पञ्चमी '३०
बैजनाथ केडिया : अस्फुट कलियाँ '३०
हरिशङ्कर शर्मा : चहचहाता चिड़ियाघर '३०
कृष्णाकुमारी देवी : अभागी बहनों की आत्मकहानी '३१
गोविन्दवल्लभ पन्त : संध्या-प्रदीप '३१
चतुरसेन शास्त्री : अक्षत '३१
जयशङ्कर प्रसाद : आंधी '३१
जैनेन्द्र कुमार : वातायन '३१
अन्नपूर्णानन्द : महाकवि चच्चा '३२
गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव : विलायती उल्लू '३२
जनार्दनप्रसाद झा : मृदुदल '३२
धनीराम प्रेम : वल्लरी '३२
प्रफुल्लचंद्र ओझा : जेल-यात्रा '३२
प्रेमचन्द्र : प्रेरणा '३२
" : समरयात्रा, (कहानियाँ) '३२
मङ्गलप्रसाद विश्वकर्मा : अश्रुदल '३२
वाचस्पति पाठक : द्वादशी '३२
विनोदशंकर व्यास : इकतालीस कहानियाँ '३२
" : धूप-दीप '३२
शंभुदयाल सक्सेना : बन्दनवार '३२
श्रीराम शर्मा : शिकार '३२
सुभद्राकुमारी चौहान : बिखरे मोती '३२
चतुरसेन शास्त्री : रज-कण '३३
तेजरानी पाठक : एकादशी '३३
प्रतापनारायण श्रीवास्तव : आशीर्वाद '३३
प्रफुल्लचंन्द्र ओझा : जलधारा '३३
बेनीप्रसाद वाजपेयी : सम्पादिका '३३
बैजनाथ केडिया : दूर्वादल '३३
शम्भुदयाल सक्सेना : चित्रपट '३३

सियारामशरण गुप्त : मानुषी '३३
सूर्यकांत त्रिपाठी : लीली '३३
सुदर्शन : सात कहानियाँ '३३
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी : झलमला '३४
प्रेमचन्द : पंच प्रसून '३४
लक्ष्मीकान्त झा : मैंने कहा '३४
विनोदशङ्कर व्यास : उसकी कहानी '३४
रामनरेश त्रिपाठी : तरकस '३४
सुदर्शन : सुदर्शन-सुमन '३४
सुभद्राकुमारी चौहान : उन्मादिनी '३४
कृष्णदेवप्रसाद गौड़ : बनारसी इक्का '३५
जैनेन्द्रकुमार : एक रात '३५
प्रेमचन्द : नवजीवन '३५
वाचस्पति पाठक : प्रदीप '३५
सत्यजीवन वर्मा : मिस ३५ का पति निर्वाचन '३५
,, : मुनमुन '३५
साधुशरण : जीवन '३५
जयशङ्कर प्रसाद : इन्द्रजाल '३६
प्रेमचंद : मानसरोवर '३६
पृथ्वीनाथ शर्मा : पँखुरियाँ '३६
भगवतीचरण वर्मा : इन्स्टालमेंट '३६
रघुनाथ सिंह : भिखारिणी '३६
राजेश्वरप्रसाद सिंह : गल्प-संसार '३६
सद्गुरुशरण अवस्थी : फूटा शीशा '३६
सुशीला आग़ा : अतीत के चित्र '३६
सुमित्रानन्दन पन्त : पाँच कहानियाँ '३६
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' : प्रभावती '३६
जगदीश झा : क्या वह वेश्या हो गई ? '३७
प्रेमचन्द : कफ़न (और शेष रचनाएँ) '३७
राजेश्वरप्रसाद सिंह : सोने का जाल '३७
शिवरानी देवी : कौमुदी '३७
श्रीनाथ सिंह : नयन-तारा '३७
श्यामसुन्दर द्विवेदी : जीवन-ज्योति '३७
अमृतलाल नागर : अवशेष '३८
गुलाबरत्न वाजपेयी : तारा-मण्डल '३८
चण्डीप्रसाद वर्मा : धन्यवाद '३८
चतुरसेन शास्त्री : मुग़ल बादशाहों की अनोखी बातें '३८
जैनेन्द्रकुमार : नीलम देश की राजकन्या '३८

जैनेन्द्रकुमार : नई कहानियाँ '३८
तारा पाण्डेय : उत्सर्ग '३८
प्रेमचन्द : नारी-जीवन की कहानियाँ '३८
बैजनाथ केडिया : महिला-मण्डल '३८
राधिकारमण प्रसाद सिंह : सावनी समा '३८
सुदर्शन : चार कहानियाँ '३८
कृष्णानन्द गुप्त : पुरस्कार '३९
चतुरसेन शास्त्री : सिंहगढ़-विजय '३९
प्रेमचन्द : की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ '३९ द्वि०
बद्रीनाथ शुक्ल : कुन्दज़ेहन '३९
बेचन शर्मा, पाण्डेय : क्रान्तिकारी कहानियाँ '३९
भगवतीप्रसाद वाजपेयी : पुष्करिणी '३९
,, : हिलोर '३९
यशपाल : पिंजरे का उड़ान '३९
रमाप्रसाद 'पहाड़ी' : सफ़र '३९
,, : यथार्थवादी रोमांस '३९
राहुल सांकृत्यायन : सतमी के बच्चे '३९
वीरेश्वरसिंह : अँगुली का घाव '३९
शौकत उस्मानी : अनमोल कहानियाँ '३९
श्रीगोपाल नेवटिया : वीथिका '३९
सर्वदानन्द वर्मा : तुम क्या हो ? '३९
सुदर्शन : पनघट '३९
होमवती देवी : निसर्ग '३९
चन्द्रधर शर्मा गुलेरी : गुलेरी जी की अमर कहानियाँ '४० ?
भगवतशरण उपाध्याय : सवेरा '४०
रमाप्रसाद पहाड़ी : छाया में '४०
विनोदशङ्कर व्यास : पचास कहानियाँ '४०
सत्यजीवन वर्मा : अलबम '४०
,, : विचित्र अनुभव '४०
सत्यवती : दो फूल '४०
सर्वदानन्द वर्मा : अकबर बीरबल विनोद '४०
भगवती प्रसाद वाजपेयी : ख़ाली बोतल '४०
अमृतलाल नागर : तुलाराम शास्त्री '४१
उषादेवी मित्रा : नीम चमेली '४१
,, : सांध्य पूरबी '४१
गणेश पाण्डेय : देश की आन पर '४१
गोपालराम गहमरी : हंसराज की डायरी '४१
तारादेवी, कुँवरानी : देवीदासी '४१
,, : कर्तव्य की वेदी '४१
प्रेमचन्द : प्रेमपीयूष '४१

भगवतशरण उपाध्याय : सङ्घर्ष '४१
,, : गर्जन '४१
यशपाल : वो दुनिया '४१
रमाप्रसाद पहाड़ी : सड़क पर '४१
,, : अधूरा चित्र '४१
राधिकारमणप्रसाद सिंह : चुनी कलियाँ '४१
रामेश्वर शुक्ल : ये वे बहुतेरे '४१
सुमित्राकुमारी सिन्हा : अञ्चल सुहाग '४१
,, : वर्षगाँठ '४१
सूर्यकान्त त्रिपाठी : सुकुल की बीवी '४१
इन्द्रजीत नारायण : वह जग '४२
कृष्णदेवप्रसाद गौड़ : मसूरीवाली '४२
नरेन्द्र : कड़वी मीठी बातें '४२
बेचन शर्मा, पाण्डेय : रेशमी '४२
भगवतीप्रसाद वाजपेयी : कला की दृष्टि '४२
विश्वम्भरनाथ शर्मा : पेरिस की नर्तकी '४२
यशपाल : ज्ञानदान '४२
रामनाथलाल 'सुमन' : वेदी के फूल '४२

कहानी—बाल

शिवप्रसाद सितारेहिन्द : लड़कों की कहानी '७६
रसिकलाल दत्त : खिलौना '६८
सूर्यनारायण सिंह : बलई मिश्र '६६
सुन्दरलाल द्विवेदी : बाल पञ्च-तन्त्र '०६
द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी : ग्रीस और रोम की दन्तकथाएँ '११
रसिकलाल दत्त : खेल तमाशा '११
सुन्दरलाल द्विवेदी : बाल भोज-प्रबन्ध '११
हनुमन्त सिंह, कुँवर : विनोद '१३
भगवानदीन, लाला : बालकथा-माला '१६
रामनरेश त्रिपाठी : बाल कथा-कहानी '१८-
ज़हूरबख्श : मज़ेदार कहानियाँ '२३
विद्याभूषण : ढपोरशङ्ख '२३
गणेशराम मिश्र : गज्जू और गप्पू '२४
सुजाता देवी : मनोहर कहानियाँ '२४
ज़हूरबख्श : मनोरञ्जक कहानियाँ '२५
भूपनारायण दीक्षित : नटखट पांडे '२५
रामवृक्ष शर्मा : बगुला भगत '२५
,, : सियार पाँड़े '२५

बैजनाथ केडिया: अकड़बेग खाँ '३६
" : चतुर चन्दा '३६
भूपनारायण दीक्षित : खिलवाड़ '३६
" : दिलावर सियार "
'व्यथित हृदय' : रामू-श्यामू '३६
" : तीर गुलेली '३६
बैजनाथ केडिया : मीठी-मीठी कहानियाँ '३७
शम्भुदयाल सक्सेना : राजकुमारी की कहानी '३७
" : सुनहरी कहानियाँ '३७
गुरुचरनदास अग्रवाल : निराला देश '३८
प्रेमचन्द : जङ्गल की कहानियाँ '३८
अमृतलाल दुबे : जमालो के मियाँ '३६
अशोक : देश प्रेम की कहानियाँ '३६
" : सीख की कहानियाँ "
" : कथा-कहानी '३६
गणेशराम मिश्र : अदलू और बदलू '३६
डी० आर० शर्मा : आल्मारी की रामकहानी '३६
" : मौत के धंधे '३६
" : लाल और हीरा '३६
" : गदहा भाई '३६
देव व्रत : हँसाने वाली कहानियाँ '३६

बैजनाथ केडिया : चोखी-चोखी कहानियाँ '३६
" : बाल-हठ '३६
" : कालिया नाग '३६
" : ग्रामीण आदर्श '३६
" : पुजारी की पूजा '३६
श्रीमन्नारायण अग्रवाल : कहानी-संग्रह '३६
सुदर्शन : राजकुमार सागर '३६
अमृतलाल दुबे : चम्पाकली '४०
आत्माराम देवकर : सोने की मछली '४०
नर्मदाप्रसाद मिश्र : हाथी की सवारी '४०
" : भूत का शेर '४०
" : साहसी सुरेश '४०
" : चतरूराम '४०
" : सुरेश की सेवा '४०
" : सुरेश की दयालुता '४०
बैजनाथ केडिया : सफ़ाचट '४०
रामनरेश त्रिपाठी : मौत के सुरङ्ग की कहानी '४०
" : आदमी की क़ीमत '४०
'व्यथित हृदय' : सवारियों की कहानियाँ '४०
सुदर्शन : अँगूठी का मुक़दमा '४०
आत्माराम देवकर : बन्दर की चलनी '४१

धर्मदेव विद्यार्थी : निराली कहानियाँ '४१ द्वि०
,, : सीताफल की चोरी '४१
,, : माखनमाला '४१
रामनरेश त्रिपाठी : बेलकुमारी '४१
,, : बुढ़िया ! बुढ़िया ! किसे खाऊँ ! '४१
,, : भय बिन होय न प्रीति '४१
,, : चटक-मटक की गाड़ी '४१
रामनरेश त्रिपाठी : चुड़ैल रानी '४१
,, : डंकू '४१
,, : पकड़ पुँछकटे को '४१
,, : फूलरानी '४१
,, : रूपा '४१
,, : तीन सुनहले बाल '४१
,, : तीन मेमने '४१
शिवनाथ सिंह शाण्डिल्य : बीरबल की कहानियाँ '४१
,, : शिकारियों की सच्ची कहानियाँ '४२

कहानी—अनूदित

(संस्कृत-प्राकृत)

आर्यशूर : जातक
विष्णु शर्मा : पञ्चतन्त्र
नारायण : हितोपदेश
नारायण : वेताल पचीसी
,, : सिंहासन बत्तीसी
सोमदेव : कथा सरित्सागर
बल्लाल : भोज-प्रबन्ध

(बंगला)

बङ्किमचन्द्र : लोकरहस्य
रवीन्द्रनाथ ठाकुर : गल्प-गुच्छ
,, : मास्टर साहब
,, : मञ्जरी
,, : रवीन्द्र-कथा-कुंज
रवीन्द्रनाथ ठाकुर : षोडसी
रवीन्द्रनाथ मैत्र : त्रिलोचन कविराज
केशवचन्द्र गुप्त : गल्प-पंचदशी
योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय : कुली-कहानी
'परशुराम' : भेड़ियाधसान

(गुजराती)

'धूमकेतु' : सप्तपर्ण
मोहनदास कर्मचन्द गाँधी : तीन रत्न

(मराठी)

कमलाबाई किबे : बालकथा

(मैथिली)

विद्यापति ठाकुर : पुरुष-परीक्षा

(उर्दू)

मुहम्मद हुसैन आज़ाद : क़िसान-ए-अजायब

(फ़ारसी)

अज्ञात : हातिमताई

अज्ञात : चहादरवेश

(यूरोपियन-ऐंग्लो-इंडियन)

ईसप : कहानियाँ

टुंकर : राजा भोज का सपना

,, : स्टैनफोर्ड और मेरटन की कहानी

टेनीसन : प्रेमोपहार

टॉल्स्टॉय : देहाती सुन्दरी

,, : प्रेम-प्रभाकर

,, :—की कहानियाँ

,, : क्या करें ?

तुर्गनेव : चरागाह

,, : अशया

मौपासाँ : की कहानियाँ

,, : मानव-हृदय की कथाएँ

हार्डी : विवाह की कहानियाँ

स्टीवेंसन : कसौटी

चेकॉव : पाप

डॉस्टॉवस्की : अहंवादी की आत्म-कथा

राजगोपालाचार्य : दुखी दुनिया

नाटक—प्राचीन

विश्वनाथ सिंह : आनन्द रघुनन्दन
अमानत : इन्दर सभा
लछिमनदास : प्रह्लाद सङ्गीत

नाटक—तत्कालीन

हरिश्चन्द्र : सत्य-हरिश्चन्द्र '७५
देवकीनन्दन त्रिपाठी : जय नारसिंह की '७६
अन्नाजी गोविन्दजी इनामदार : गोपीचन्द' '७७
केशवराम भट्ट : सज्जाद-सुम्बुल' '७७
बालकृष्ण भट्ट : शिक्षादान '७७
हरिश्चंद्र : श्रीचन्द्रावली '७७
विष्णु-गोविन्द शिवदेकर : कर्ण पर्व '७६
राधाकृष्णदास : दुःखिनी बाला '८० द्वि०
श्रीनिवासदास : रणधीर-प्रेममोहिनी '८० द्वितीय
निद्धूलाल : विवाहिता विलाप' '८३
बैजनाथ : वीर वामा '८३
महादेवप्रसाद : चन्द्रप्रभा मनस्नी '८३
श्रीनिवासदास : तपता-संवरण '८३
सखाराम बालकृष्ण सरनायक : गोपीचन्द '८३
हरिश्चन्द्र : भारत-दुर्दशा '८३
,, : भारतजननी '८३ रिप्रिंट
अम्बिकादत्त व्यास : ललिता '८४
अमन सिंह गोतिया : मदनमञ्जरी '८४
कमलाचरण मिश्र : अद्भुत नाटक '८४
तोताराम, बाबू : विवाह विडम्बन '८४
हरिश्चन्द्र कुलश्रेष्ठ : ठगी की चपेट और बागी की रपेट '८४
हरिहरदत्त दुबे : महारास '८४
खड्गबहादुरमल्ल : महारास '८५
,, : भारत आरत '८५
,, : रति-कुसुमायुध '८५
गजराज सिंह : द्रौपदी-वस्त्रहरण '८५

देवदत्त मिश्र : बाल-विवाह विदूषक '८५
मन्नालाल पं० : हास्यार्णव '८५ द्वि०
राधावल्लभदास : धर्मालाप '८५
रामगरीब चौबे : नागरीविलाप '८५
अम्बिकादत्त व्यास : कलियुग और घी '८६
,, : मन की उमङ्ग '८६
देवकीनन्दन त्रिपाठी : कलियुगी जनेऊ '८६
प्रतापनारायण मिश्र : कलिकौतुक '८६
श्रीनिवासदास : संयोगिता स्वयंवर '८६
सतीशचन्द्र बसु : मैं तुम्हारा ही हूँ '८६
अम्बिकादत्त व्यास : गो-सङ्कट '८७
,, : भारत-सौभाग्य '८७
खड्गबहादुरमल्ल : हरि-तालिका '८७
चन्द्र शर्मा : उषाहरण '८७
राधाचरण गोस्वामी : बूढ़े मुँह मुँहासे '८७
कृष्णदेवशरण सिंह : माधुरी '८८
खड्गबहादुरमल्ल : भारत ललना '८८
खड्गबहादुरमल्ल : कल्पवृक्ष '८८
रामशरण शर्मा : अपूर्व रहस्य '८८
रुद्रदत्त शर्मा : पाखण्डपूर्ति '८८
श्रीनिवासदास : प्रहलाद-चरित्र '८८
हरिश्चन्द्र : वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति '८८
,, : विषस्य विषमौषधम् '८८
जगतनारायण शर्मा : भारत-दुर्दिन '८६
दामोदर शास्त्री : बात खेल '८६
बदरीनारायण चौधरी : भारत-सौभाग्य '८६
खवास डोला जी बाबा जी : रतन-सेन अने रतनावती '६०
दुर्गादत्त पं० : वर्तमान दशा '६०
रघुवीर सिंह वर्मा : मनोरञ्जनी '६०
विन्ध्येश्वरीप्रसाद त्रिपाठी : मिथि-लेश कुमारी '८६
रत्नचन्द, प्लीडर : हिन्दी-उर्दू '६०
राधाचरण गोस्वामी : तन-मन-धन गुसाईं जी के अरपन '६०
शालिग्राम वैश्य : मोरध्वज '६०
कार्तिकप्रसाद खत्री : उषाहरण '६१
किशोरीलाल गोस्वामी : मयङ्क-मञ्जरी '६१
माधवप्रसाद : हास्यार्णव का एक भाण '६१
कालिकाप्रसाद अग्निहोत्री : प्रफुल्ल '६२
गोपालराम गहमरी : विद्या-विनोद '६२

१७

गोपालराम गहमरी : देशदशा '६२
देवकीनन्दन त्रिपाठी : कलियुगी विवाह '६२
राधाचरण गोस्वामी : भङ्गतरङ्ग '६२ ?
रत्नचन्द, प्लीडर : न्याय-सभा '६२
शालिग्राम वैश्य : लावण्यवती-सुदर्शन '६२
हरिश्चन्द्र : सतीप्रताप '६२
अयोध्यासिंह उपाध्याय : प्रद्युम्न विजय '६३
काशीनाथ खत्री : ग्राम-पाठशाला और निकृष्ट नौकरी '६३ द्वि०
गोपालराम गहमरी : यौवन योगिनी '६३
,, : दादा और मैं '६३
बचनेश मिश्र : हास्य '६३
राजवंशसहाय : होली विलास '६३
विजयानन्द त्रिपाठी : महा अन्धेर-नगरी '६३
अयोध्यासिंह उपाध्याय : रुक्मिणी-परिणय '६४
कृष्णानन्द द्विवेदी : विद्या-विनोद '६४
गोकुलनाथ शर्मा औदीच्य : पुष्प-वती '६४
जगतनारायण शर्मा : अकबर गोरक्षा-न्याय '६५
दरियाव सिंह : मृत्युसभा '६५
बालकृष्ण भट्ट : दमयन्ती स्वयंवर '६५
राधाचरण गोस्वामी : अमरसिंह राठौर '६५
रुद्रदत्त शर्मा : आर्यमत-मार्तण्ड '६५
अम्बाप्रसाद : वीर कलङ्क '६६
छगनलाल कासलीवाल : सत्यवती '६६
लाली देवी : गोपीचन्द '६६
शालिग्राम वैश्य : अभिमन्यु '६६
बालमुकुन्द पाण्डेय : गङ्गोत्तरी '६७
कन्हैयालाल, बाबू : शील सावित्री '६८
कृष्णबलदेव : भर्तृहरि-राजत्याग '६८
देवकीनन्दन त्रिपाठी : भारतहरण '६८
राधाकृष्णदास : महाराणा प्रताप सिंह, ६८
ज्ञानानन्द : प्रेमकुसुम '६६
वज्रप्रसाद : मालती-वसन्त '६६
सूर्यनारायण सिंह : श्यामानुराग '६६
जगन्नाथशरण : प्रह्लाद चरितामृत '१६००
देवराज : सावित्री '१६००

बलदेवप्रसाद मिश्र : लाला बाबू '१६००
,, : नन्द-विदा '१६००
कन्हैयालाल : अञ्जना सुन्दरी '०१
सूर्यभान : रूपबसन्त '०१
प्रतापनारायण मिश्र : भारत-दुर्दशा '०२
बलदेवप्रसाद मिश्र : नवीन तपस्विनी '०२
महेन्द्रनाथ : बुद्धदेव-चरित्र '०२
सी० एल्० सिन्हा : विषया-चन्द्रहास '०२
गङ्गाप्रसाद गुप्त : वीर जयमल '०३
पुरनलाल सारस्वत : स्वतन्त्रा बाला '०३
बलदेवप्रसाद मिश्र : प्रभास-मिलन '०३
राधाकृष्णदास : महारानी पद्मिनी '०३ द्वि०
हरिहरप्रसाद जिज्ञल : जया '०३
किशोरीलाल गोस्वामी : नाट्य-सम्भव '०४
देवीप्रसाद, राय : चन्द्रकला-भानुकुमार '०४
बलवन्तराव शिन्दे : उषा '०४
बद्रीदास : रहस्य-प्रकाश '०४
राधाचरण गोस्वामी : श्रीदामा '०४
वामनाचार्य गोस्वामी : वारिदनाद-वध '०४
रुद्रदत्त शर्मा : कण्ठी जनेऊ का विवाह '०६
शालिग्राम वैश्य : पुरु-विक्रम '०६
हरिहरप्रसाद जिज्ञल : राजसिंह '०६
जीवानन्द शर्मा : भारत विजय '०७
परमेश्वर मिश्र : रूपवती '०७
रूपनारायण पाण्डेय : कृष्णलीला '०७
शिवनन्दन सहाय : कृष्ण-सुदामा '०७
हरिहरप्रसाद जिज्ञल : कामिनी-मदन '०७
हरनारायण चौबे : कामिनी-कुसुम '०७
कुशीराम : राजा हरिश्चन्द्र '०८
जसवन्तसिंह : गोबरगणेश '०८
सुदर्शनाचार्य शास्त्री : अनर्घ नल-चरित्र '०८
हरिहरप्रसाद जिज्ञल : भारत पराजय '०८
ब्रजनन्दन सहाय : उद्धव '०६
वृन्दाबनलाल वर्मा : सेनापति उदाल '०६
श्यामनारायण सिंह : वीर सरदार '०६
कन्हैयालाल, बाबू : रत्न-सरोज '१०

लक्ष्मीप्रसाद : उर्वशी '१०
गुरुमुख सिंह : नूतन अंधेरनगरी '११
जयशङ्कर प्रसाद : करुणालय '१२
बदरीनाथ भट्ट : कुरुवन-दहन '१२
बलदेवप्रसाद मिश्र : मीराबाई '१२
रामेश्वरप्रसाद शर्मा : वीर सुन्दरी '१२
अनन्तसहाय अखौरी : ग्रह का फेर '१३
आनन्दप्रसाद खत्री : संसार-स्वप्न '१३
जयशङ्कर प्रसाद : प्रायश्चित्त '१४ ?
प्रयागप्रसाद त्रिपाठी : हिन्दी साहित्य की दुर्दशा '१४
बदरीनाथ भट्ट : चुङ्गी की उम्मीद-वारी '१४
लोचनप्रसाद शर्मा : साहित्य-सेवा '१४
,, : प्रेम-प्रशंसा '१४
शिवनाथ शर्मा : मानवी कमीशन '१४ ?
शिवनाथ शर्मा : नवीन बाबू '१४ ?
,, : बहसी पंडित '१४ ?
,, : दरबारीलाल '१४ ?
,, : कलियुगी प्रह्लाद '१४ ?
,, : नागरी-निरादर '१४ ?
,, : चण्डूलदास '१४ ?
सोमेश्वरदत्त सुकुल : तरल-तरङ्ग '१४
कृष्णप्रकाश सिंह अखौरी : पन्ना '१५
कृष्णानन्द जोशी : उन्नति कहाँ से होगी '१५
जयशङ्करप्रसाद : राज्यश्री '१५
बदरीनाथ भट्ट : चन्द्रगुप्त '१५
मिश्रबन्धु : नेत्रोन्मीलन '१५
लोचनप्रसाद शर्मा : छात्र-दुर्दशा '१५
,, : ग्राम्य विवाह-विधान '१५
हरिदास माणिक : संयोगिता-हरण '१५
भवानीदत्त जोशी : वीर भारत '१६
मैथिलीशरण गुप्त : तिलोत्तमा '१६
,, : चन्द्रहास '१६
माधव शुक्ल : महाभारत पूर्वार्द्ध '१६
मिश्रबन्धु : पूर्व भारत '१६
काशीनाथ वर्मा : समय '१७
सुदर्शन : दयानन्द '१७
दुर्गादत्त पाण्डेय : चन्द्राननी '१७
गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव : उलटा फेर '१८
माखनलाल चतुर्वेदी : कृष्णार्जुन-युद्ध '१८
राधेश्याम कथावाचक : वीर अभिमन्यु '१८

विश्म्वभरनाथ शर्मा : भीष्म '१८
शिवनन्दन मिश्र : उषा '१८
गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव : दुमदार आदमी और गड़बड़झाला '१९
महेश्वरबख्श सिंह : कलावती '१९
गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव : मर्दानी औरत '२०
हरिदास माणिक : श्रवणकुमार '२०
जयशङ्कर प्रसाद : विशाख '२१
जमुनादास मेहरा : विश्वामित्र '२१
द्वारकाप्रसाद गुप्त : अज्ञातवास '२१
आर० एस० शर्मा : सोमाश्रित '२२
किशनचन्द 'ज़ेबा' : भारत उद्धार '२२
,, : ग़रीब हिन्दुस्तान '२२
गोपालदामोदर तामस्कर : राधा-माधव '२२
,, : वैर का बदला '२२
चन्द्रराज भण्डारी : सिद्धार्थ कुमार '२२
जमुनादास मेहरा : हिन्द '२२
,, : देवयानी '२२
जिनेश्वरप्रसाद 'मायल' : भारत-गौरव '२२
जयशङ्कर प्रसाद : अजातशत्रु '२२
बदरीनाथ भट्ट : गोस्वामी तुलसी-दास '२२
,, : वेन-चरित्र '२२
बेचन शर्मा, पाण्डेय : महात्मा ईसा '२२
हरद्वारप्रसाद जालान : घर कट सूम '२२
कन्हैयालाल : देशदशा '२३
किशनचन्द 'ज़ेबा' : पद्मिनी '२३
गोविन्द वल्लभ पन्त : कञ्जूसखोपड़ी '२३
चन्द्रराज भण्डारी : सम्राट् अशोक '२३
जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी : मधुर मिलन, २३
जमुनाप्रसाद मेहरा : विपद कसौटी '२३
दुर्गाप्रसाद गुप्त : भारत रमणी '२३
प्रेमचन्द : संग्राम '२३
सुदर्शन : अञ्जना '२३
सुरेशचंद्र : कमलकिशोर '२३
हरिप्रसाद द्विवेदी : छद्म-योगिनी '२३
जमुनादास मेहरा : कृष्ण-सुदामा '२४
दुर्गाप्रसाद गुप्त : महामाया '२४
पुरुषोत्तमदास गुप्त : तुलसीदास '२४ द्वि०
प्रेमचन्द : कर्बला '२४
राधेश्याम कथावाचक : परिवर्तन '२४ ?
रामनरेश त्रिपाठी : सुभद्रा '२४ द्वि०

लक्ष्मण सिंह : ग़ुलामी का नशा '२४
हरद्वारप्रसाद जालान : क्रूर वेन '२४
ईश्वरीप्रसाद शर्मा : सूर्योदय '२५
कन्हैयालाल : वीर छत्रसाल '२५
गोविन्दवल्लभ पन्त : वरमाला '२५
बलदेवप्रसाद मिश्र : असत्य संकल्प '२५
,, : वासना-वैभव '२५
,, : शङ्कर-दिग्विजय '२५
रामदास गौड़ : ईश्वरीय न्याय '२५
व्रजनन्दनसहाय : ऊषाङ्गिनी '२५
ईश्वरीप्रसाद शर्मा : रंगीली दुनिया '२६
जयशङ्कर प्रसाद : जन्मेजय का नाग-यज्ञ '२६
बदरीनाथ भट्ट : दुर्गावती '२६
बदरीनाथ भट्ट : लबड़धोंधों '२६
बलदेवप्रसाद खरे : प्रणवीर '२६
किशनचन्द 'ज़ेबा' : शहीद सन्यासी '२७
बदरीनाथ भट्ट : विवाह-विज्ञापन '२७
लक्ष्मीधर वाजपेयी : राजकुमार कुन्तल '२७
हरिश्चन्द्र : भारतेन्दु-नाटकावली '२७
'आरज़ू' : झाँसी-पतन '२८
गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव : भूल-चूक '२८
जगन्नाथशरण : कुरुक्षेत्र '२८
जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द' : प्रताप-प्रतिज्ञा '२८
जमुनादास मेहरा : पंजाब-केशरी '२८
जयशङ्कर प्रसाद : स्कन्दगुप्त विक्रमादित्य '२८
मोहन सिंह : स्वरावली '२८
गोपालदामोदर तामस्कर : दिलीप '२९
चतुरसेन शास्त्री : उत्सर्ग '२९
छविनाथ पाण्डेय : समाज '२९
जमुनादास मेहरा : सती चिन्ता '२९
,, : मोरध्वज '२९
जयशङ्कर प्रसाद : एक घूँट '२९
जयशङ्कर प्रसाद : कामना '२९
ठाकुरदत्त शर्मा : ढाई दुम '२९
बदरीनाथ भट्ट : मिस अमेरिकन '२९
बेचन शर्मा, पाण्डेय : चार बेचारे '२९
सुदर्शन : आनरेरी मैजिस्ट्रेट '२९
हरिप्रसाद द्विवेदी : प्रबुद्ध यामुन '२९
आनन्दप्रसाद श्रीवास्तव : अछूत '३०
घनानन्द बहुगुणा : समाज '३०
जमुनादास मेहरा : भारतपुत्र '३०

जयगोपाल : पश्चिमी प्रभाव '३०
उदयशङ्कर भट्ट : चन्द्रगुप्त मौर्य '३१ द्वि०
कामताप्रसाद गुरु : सुदर्शन '३१
कृपानाथ मिश्र : मणि गोस्वामी '३१
जयशङ्कर प्रसाद : चन्द्रगुप्त मौर्य '३१
धनीराम प्रेम : प्राणेश्वरी '३१
नरेन्द्र : नीच '३१
लक्ष्मीनारायण मिश्र : सन्यासी '३१
" : राक्षस का मन्दिर '३१
" : मुक्ति का रहस्य '३१
आनन्दस्वरूप : संसार-चक्र '३२
मिश्रबन्धु : उत्तर भारत '३२
उदयशङ्कर भट्ट : विक्रमादित्य '३३
'कुमार-हृदय' : सरदार बा '३३
कैलाशनाथ भटनागर : नाट्य-सुधा '३३
चन्द्रभान सिंह : चन्द्रिका '३३
प्रेमचन्द : प्रेम की वेदी '३३
सियारामशरण गुप्त : पुण्यपर्व '३३
सीताराम चतुर्वेदी : बेचारा केशव '३३
उदयशङ्कर भट्ट : दाहर '३४
'कुमार-हृदय' : निशीथ '३४
गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव : चोर के घर छिछोर '३४
" : चाल बेढब '३४
जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी : तुलसीदास '३४
जयशङ्कर प्रसाद : ध्रुवस्वामिनी '३४
द्वारकाप्रसाद मौर्य : हैदर अली '३४
धनीराम प्रेम : वीराङ्गना पन्ना '३४
प्रेमसहाय सिंह : नवयुग '३४
रामनरेश त्रिपाठी : प्रेमलोक '३४
" : जयन्त '३४
लक्ष्मीनारायण मिश्र : राजयोग '३४
" : सिन्दूर की होली '३४
श्यामाकान्त पाठक : बुन्देलखण्ड केशरी '३४
सुमित्रानन्दन पन्त : ज्योत्स्ना '३४
उदयशङ्कर भट्ट : अम्बा '३५
गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव : साहित्य का सपूत '३५
गणेशप्रसाद द्विवेदी : सुहाग बिन्दी '३५
गोविन्ददास : तीन नाटक '३५
गोविन्दवल्लभ पन्त : राजमुकुट '३५
चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार : अशोक '३५
भगवतीप्रसाद पन्थारी : काल्पी '३५
भुवनेश्वरप्रसाद : कारवाँ '३५
'कुमार-हृदय' : भग्नावशेष '३६
रामकुमार वर्मा : पृथ्वीराज की आँखें '३६
लक्ष्मीनारायण मिश्र : अशोक '३६

हरिकृष्ण प्रेमी : पाताल-विजय '३६
हरिश्चन्द्र : भारतेन्दु-नाटकावली '३६
कैलाशनाथ भटनागर : कुणाल '३७
गौरीशङ्कर 'सत्येन्द्र' : कुनाल '३७
लक्ष्मीनारायण मिश्र : आधी रात '३७
हरिकृष्ण प्रेमी : शिवासाधन '३७
,, : प्रतिशोध '३७
उदयशङ्कर भट्ट : सागर-विजय '३७
,, : मत्स्यगन्धा '३७
उपेन्द्रनाथ अश्क : जय-पराजय '३७
गोविन्दवल्लभ पन्त : अंगूर की बेटी '३७
जगदीश शास्त्री : बध्य-शिला '३७
बेचन शर्मा, पाण्डेय : डिक्टेटर '३७
'व्यथित हृदय' : पुण्य-फल '३७
उदयशङ्कर भट्ट : विश्वामित्र '३८
उपेन्द्रनाथ, 'अश्क' : स्वर्ग की झलक '३८
गौरीशङ्कर सत्येन्द्र : मुक्तियज्ञ '३८
जनार्दन राय : आधी रात '३८
परिपूर्णानन्द वर्मा : रानी भवानी '३८
बेचन शर्मा, पाण्डेय : चुम्बन '३८
मिश्रबन्धु : शिवाजी '३८
विट्ठलदास पाँचोटिया : कर्मवीर '३८
शिवदत्त ज्ञानी : नीमाड़ केसरी '३८
सर्वदानन्द वर्मा : प्रश्न '३८
हरिकृष्ण प्रेमी : रक्षाबन्धन '३८
उदयशङ्कर भट्ट : कमला '३९
किशोरीदास वाजपेयी : सुदामा '३९
चतुरसेन शास्त्री : सीताराम '३९
पृथ्वीनाथ शर्मा : अपराधी '३९
मायादत्त नैथानी : संयोगिता '३९
राधेश्याम कथावाचक : घण्टापन्थ ३९'
रूपनारायण पाण्डेय : सम्राट् अशोक '३९
लोकनाथ सिलाकारी : वीर ज्योति '३९ द्वि०
वृन्दावनलाल वर्मा : धीरे-धीरे '३९
सद्गुरुशरण अवस्थी : मुद्रिका '३९
सूर्यनारायण शुक्ल : खेतिहर देश '३९
उदयशङ्कर भट्ट : अभिनव एकाङ्की नाटक '४०
गोविन्ददास सेठ : सेवापथ '४०
गोविन्दवल्लभ पन्त : अन्तःपुर का छिद्र '४०
चतुरसेन शास्त्री : श्रीराम '४०
द्वारकाप्रसाद : आदमी '४०
मुरारि माङ्गलिक : मीरा '४०
विश्वम्भर सहाय : बुद्धदेव '४०
सद्गुरुशरण अवस्थी : दो एकाङ्की '४०
हरिकृष्ण प्रेमी : स्वप्नभङ्ग '४०

हरिकृष्ण प्रेमी : आहुति '४०
उदयशङ्कर भट्ट : राधा '४१
कमलाकान्त वर्मा : प्रवासी '४१
कैलाशनाथ भटनागर : श्रीवत्स '४१
गोकलचन्द शास्त्री : सारथी से महारथी '४१
गोन्विददास सेठ : विकास '४१
,, : कुलीनता '४१
,, : सप्तरश्मि '४१
रामकुमार वर्मा : रेशमी टाई '४१
शम्भुदयाल सक्सेना : गङ्गाजली ४१' !
शारदा देवी : विवाह-मण्डप '४१
उदयशङ्कर भट्ट : स्त्री का हृदय '४२
गोविन्ददास : पञ्चभूत '४२
,, : शशिगुप्त '४२
चन्द्रगुप्त : रेवा '४२ द्वि०
प्यारेलाल : माता की सौगात '४२
बेचन शर्मा-पाण्डेय : आवारा '४२
,, : गङ्गा का बेटा '४२
रामकुमार वर्मा : चारुमित्रा '४२
रूपनारायण पाण्डेय : पद्मिनी '४२
हरिकृष्ण प्रेमी : मन्दिर '४२

नाटक—बाल

नर्मदाप्रसाद मिश्र : सरल नाटक-माला '३१ द्वि०
रामनरेश त्रिपाठी : पेखन '३७
शम्भुदयाल सक्सेना : रणबाँकुरा राजकुमार '३७
रामनरेश त्रिपाठी: वफ़ाती चाचा '३९

नाटक—अनूदित

(संस्कृत-प्राकृत)

भास : मध्यम व्यायोग
,, : पञ्चरात्र
,, : प्रतिमा
,, : प्रतिज्ञा यौगन्धरायण
,, : स्वप्नवासवदत्ता
शूद्रक : मृच्छकटिक
कालिदास : मालविकाग्निमित्र
,, : विक्रमोर्वशी
कालिदास : शकुन्तला
दिङ्नाग : कुन्दमाला
हर्ष : रत्नावली
,, : नागानन्द
भवभूति : महावीर-चरित
,, : मालती माधव
भवभूति : उत्तर रामचरित
विशाखदत्त : मुद्राराक्षस

भट्टनारायण : वेणीसंहार
राजशेखर : कर्पूरमञ्जरी
बाणभट्ट : पार्वती-परिणय
कृष्णमिश्र : प्रबोधचन्द्रोदय

हनुमान ? : महानाटक
काञ्चन पण्डित : धनञ्जय-विजय
कुन्दकुन्दाचार्य : समयसार
शंकरानन्द : विज्ञान

(बङ्गला)

यतीन्द्रमोहन ठाकुर : विद्यासुन्दर
ईश्वरचन्द्र विद्यासागर : विधवा-विवाह
माइकेल मधुसूदन दत्त : कृष्ण-कुमारी
,, : पद्मावती
,, : वीरनारी
माइकेल मधुसूदन दत्त : कसौटी
द्विजेन्द्रलाल राय : दुर्गादास
,, : मेवाड़-पतन
,, : शाहजहाँ
,, : उस पार
,, : नूरजहाँ
,, : ताराबाई
,, : भीष्म
,, : चन्द्रगुप्त
,, : सीता

द्विजेन्द्रलाल राय : भारतरमणी
,, : पाषाणी
,, : सिंहल-विजय
,, : राणा प्रतापसिंह
,, : सुहराब-रुस्तम
,, : अहल्या
,, : मूर्ख मण्डली
काशीप्रसाद विद्याविनोद : चाँद बीबी
रवीन्द्रनाथ ठाकुर : राजर्षि
,, : चित्राङ्गदा
,, : डाकघर
,, : विसर्जन
,, : व्यंग्य कौतुक
,, : मुक्तधारा
,, : हास्य कौतुक
,, : राजा-रानी
,, : चिरकुमारसभा

(गुजराती)

कृष्णालाल श्रीधारिणी : बरगद
नानालाल दलपतराम : जया-जयन्त
इन्द्र वसावड़ा : बड़े म्याँ

(मराठी)

शकुन्तला पराञ्जपे : प्रतिस्पर्द्धा

(राजस्थानी)

मनसाराम 'मंछ' : रघुनाथ रूपक गीतांरो

(यूरोपियन-ऐंग्लोइंडियन)

शेक्सपियर : भूलभुलैया, भ्रमजालक
,, : मनमोहन का जाल
,, : रोमियो - जूलियट, प्रेमलीला
,, : रिचार्ड द्वितीय
,, : वेनिस का बाँका, दुर्लभ बंधु
,, : वेनिस का व्यापारी
,, : ऐज़ यू लाइक इट
,, : हैमलेट
,, : ओथेलो
,, : मैकबेथ
,, : शरदऋतु की कहानी
,, : जयन्त
मोलिएर : मार-मार कर हकीम
,, : ठोंक-पीट कर वैद्यराज
मोलिएर : आँखों में धूल
,, : हवाई डाक्टर
,, : साहब बहादुर
,, : नाक में दम
,, : लालबुझक्कड़
,, : प्राणनाथ
मिल्टन : कामुक
ऐडीसन : केटो कृतान्त
मेटरलिङ्क : प्रायश्चित्त
इब्सेन : समाज के स्तम्भ
टॉल्स्टॉय : ज़िन्दा लाश
,, : कलवार की करतूत
,, : अँधेरे में उजाला
गाल्सवर्दी : चाँदी की डिबिया
,, : हड़ताल
,, : न्याय

शा : सृष्टि का आरम्भ

निबन्ध—तत्कालीन

हनुमानप्रसाद : प्रज्ञाबाटिका '८१

हरनाथप्रसाद खत्री : मानव विनोद '८५ द्वि०

हरिश्चन्द्र : ख़ुशी '९७

त्रिलोचन झा : आत्म-विनोद '०३

बालमुकुन्द गुप्त : शिवशम्भु के चिट्ठे '०६

,, : चिट्ठे और खत '०८

रामग़रीब चौबे : पुस्तक-सहवास '०८

,, : कार्य-सम्पादन '०८

सूर्यनारायण सिंह : दिल्लगी की पुड़िया '०८

जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी : गद्यमाला '०९

जयशङ्कर प्रसाद : उर्वशी चम्पू '०९

गोपाललाल खत्री : राष्ट्रसुधार में नाटकों का भाग '१२

'ग्रामीण' : किरण '१२

बालमुकुन्द गुप्त : गुप्त-निबंधावली '१३

सत्यदेव स्वामी : सत्य-निबन्धावली '१३

सोमेश्वरदत्त शुक्ल : विनोद-वैचित्र्य '१५

मिश्रबन्धु : पुष्पाञ्जलि '१६

देवेन्द्रप्रसाद जैन : त्रिवेणी '१७

प्रतापनारायण मिश्र : निबन्ध नवनीत '१९

राय कृष्णदास : साधना '१९

महावीरप्रसाद द्विवेदी : रसज्ञ-रञ्जन '२०

हरिप्रसाद द्विवेदी : तरङ्गिणी '२०

चतुरसेन शास्त्री : अन्तस्तल '२१

बालकृष्ण भट्ट : साहित्य - सुमन '२२ द्वि०

'रेशम' : उन्नति '२२

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी : पञ्चपात्र '२३

महावीरप्रसाद द्विवेदी : अद्भुत आलाप '२४

साधुशरण : प्रेमपुष्प '२४

गोविन्दनारायण मिश्र : गोविन्द-निबन्धावली '२५

जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी : निबंध-निचय '२६

राय कृष्णदास : संलाप '२६
विजयानन्द दुबे : दुबे जी की चिट्ठियाँ '२६
हरिप्रसाद द्विवेदी : अन्तर्नाद '२६
आनन्दभिक्षु सरस्वती : भावना '२८
कैलाशचन्द्र : विदूषक '२८
गुलाबराय : ठलुवा '२८
जगदीश झा : तरङ्गिणी '२८
भगवानदास : समन्वय '२८
महावीरप्रसाद द्विवेदी : लेखाञ्जलि '२८
,, : साहित्य सन्दर्भ '२८
हरिप्रसाद द्विवेदी : पगली '२८
दुर्गाशङ्कर सिंह : ज्वालामुखी '२६
राय कृष्णदास : प्रवाल '२६
सद्गुरुशरण अवस्थी : अमित पथिक '२६
हरिप्रसाद द्विवेदी : भावना '२६
,, : प्रार्थना '२६
महावीरप्रसाद द्विवेदी : साहित्य-सीकर '३०
रामचन्द्र शुक्ल:विचार वीथी '३०
राय कृष्णदास : छायापत्र '३०
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी : मकरन्द बिन्दु '३१
महावीरप्रसाद द्विवेदी : विचार-विमर्श '३१
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी : प्रबन्ध-पारिजात '३२
राधामोहन गोकुल जी : विप्लव '३२
लक्ष्मीनारायण सिंह : वियोग '३२
शान्तिप्रसाद वर्मा : चित्रपट '३२
हरिभाऊ उपाध्याय : बुद्बुद '३२
रघुवीर सिंह : बिखरे फूल '३३
हरिप्रसाद द्विवेदी : ठंडे छींटे '३३
अमीरअली 'मीर' : मातृभाषा की महत्ता '३४
सूर्यकान्त त्रिपाठी : प्रबन्धपद्म '३४
कान्तानाथ 'चोंच' : टाल मटोल '३५
दिनेशनन्दिनी चोरड्या : शबनम '३६
देवशरण विद्यालङ्कार : तरङ्गित हृदय '३६
माधव मिश्र : निबन्धमाला '३६
सरजू पण्डा गौड़: मि० तिवारी का निर्वाचन '३६
दिनेशनन्दिनी चोरड्या : मौक्तिक माल '३७
सरजू पण्डा गौड़:चार चण्डूल '३८
कान्तानाथ 'चोंच' : छड़ी बनाम सोंटा '३६
दिनेशनन्दिनी चोरड्या : शारदीया '३६
प्रेमचन्द : कुछ विचार '३६

रघुवीर सिंह : शेष स्मृतियाँ '३९
रामचन्द्र शुक्ल : चिन्तामणि '३९
सियाराम शरण : झूठ-सच '३९
गुलाबराय : मेरी असफलताएँ '४०
प्रकाशचन्द्र गुप्त : रेखाचित्र '४०
भगवतीचरण वर्मा : एक दिन '४०
सूर्यकान्त त्रिपाठी : प्रबन्ध-प्रतिमा '४०
गङ्गाप्रसाद पाण्डेय:निबन्धिनी'४१!
तारा पाण्डेय : रेखाएँ ४१
नलिनीमोहन सान्याल : उच्च विषयक लेखमाला '४१
मोहनलाल महतो : विचारधारा'४१
रजनीश : आराधना '४१
कान्तानाथ 'चोंच' : चूनाघाटी '४२
धीरेन्द्र वर्मा : विचार-धारा '४२
बालकृष्ण भट्ट:भट्ट निबन्धावली'४२
महादेवी वर्मा : शृङ्खला की कड़ियाँ '४२
हरिप्रसाद द्विवेदी:मेरी हिमाक़त'४२

निबन्ध—बाल

श्यामसुन्दरदास : बालक-विनोद '०८
सोमेश्वरदत्त शुक्ल : गूढ़ विषयों पर सरल विचार '०९

निबन्ध—अनूदित

(बंगला)

बङ्किमचन्द्र चट्टोपाध्याय : निबन्धावली
रवीन्द्रनाथ ठाकुर : स्वदेश
" : समाज
रवीन्द्रनाथ ठाकुर : विचित्र प्रबन्ध
" : रूस की चिट्ठी
अश्विनीकुमार दत्तः प्रेम
अरविन्द घोष : माता

(मराठी)

विष्णुकृष्ण शास्त्री चिपलूणकर : निबन्ध मालादर्श
विष्णुकृष्ण शास्त्री चिपलूणकर : इतिहास
नरसिंह चिन्तामणि कालेलकर : सुभाषित और विनोद

(गुजराती)

कालेलकर : सप्त-सरिता

(यूरोपियन-ऐंग्लोइण्डियन)

सिसरो : मित्रता
बेकन : विचार-रत्नावली

साहित्य-शास्त्र—प्राचीन

कृपाराम : हिततरङ्गिणी
केशवदास : रसिक प्रिया
,, : कविप्रिया
रहीम : बरवै नायिकाभेद
(सेनापति !) : काव्य कल्पद्रुम
मतिराम : रसराज
,, : ललितललाम
चिन्तामणि : कविकुल-कल्पतरु
जसवन्त सिंह : भाषा-भूषण
कुलपति मिश्र : रस-रहस्य
सुखदेव मिश्र : पिङ्गल
भूषण : शिवराज भूषण
प्रद्युम्नदास : काव्य-मञ्जरी
देव : भाव-विलास
,, : रस-विलास
श्रीधर कवि : रसिक-प्रिया
उदयनाथ : रसचन्द्रोदय या रससृष्टि
भिखारीदास : रस-सारांश
,, : छंदोर्णव-पिङ्गल
,, : काव्य-निर्णय
,, : शृङ्गार-निर्णय
तोष : सुधा-निधि
रघुनाथ : रसिक-मोहन
रसलीन : रस-प्रबोध
दूलह : कविकुल कण्ठाभरण
दत्त : लालित्य-लता
ऋषिनाथ : अलङ्कार मणि-मञ्जूषा
पद्माकर : पद्माभरण
गुलाबसिंह कविराव : वृहद् व्यङ्गयार्थ-चन्द्रिका
गिरिधरदास : रस-रत्नाकर
,, : भारती-भूषण
सेवक : वाग्विलास
बेनी : नवरस तरङ्ग

साहित्य शास्त्र—तत्कालीन

ज्वालास्वरूप : रुद्र पिङ्गल '६६
बलवान सिंह, राजा : चित्र-चन्द्रिका '६६
श्रीधर : पिङ्गल '६६
कन्हैयालाल शर्मा : छन्द-प्रदीप '७५

हृषीकेष भट्टाचार्य : छन्दोबोध '७६
काशीनाथ शर्मा : काव्य-संग्रह पञ्चाङ्ग '७७
उमराव सिंह : छन्दोमहोदधि '७८
रूपदास स्वामी : सुरसालङ्कृति-बोधिनी '७६
त्रिलोकीनाथ सिंह : भुवनेश-भूषण '८२
बिहारी सिंह : दूती-दर्पण '८२
कृष्णलाल गोस्वामी : रससिन्धु-विलास '८३
हरिश्चन्द्र : नाटक '८३
लक्ष्मीनाथ सिंह : लक्ष्मी-विलास '८६
जानकी प्रसाद : काव्य-सुधाकर' ८६
गजाधर कवि : छन्दोमञ्जरी '८७
साहबप्रसाद सिंह : रस-रहस्य '८७
शिवसहाय उपाध्याय : नायिका रूपदर्शन '८८
रामप्रसाद : छन्द - प्रकाश '९२
लछिराम : रावणेश्वर कल्प-तरु '९२
जाडेजा श्री उन्नद जी : भागवत पिङ्गल '९३
गोविन्द कवि : कर्णाभरण '९४
जगन्नाथप्रसाद 'भानु' : छन्द-प्रभाकर '९४
प्रतापनारायण सिंह : रस-कुसुमा-कर '९५
बद्रीप्रसाद : प्रबन्ध-अर्कोदय '९५
महावीरप्रसाद राव : मनोदूत '९५
रामकिशोर सिंह : छन्द-भास्कर '९५
गङ्गाप्रसाद अग्निहोत्री : समालोचना '९६
अम्बिकादत्त व्यास : गद्य-काव्य-मीमांसा '९७
गङ्गाधर शर्मा : महेश्वर-भूषण '९७
जगन्नाथदास : घनाक्षरी नियम रत्नाकर '९७
बिहारीलाल भागवतप्रसाद : अलङ्कारादर्श '९७
मुरारिदान : जसवन्त-जसोभूषण '९७
लछिराम : रामचन्द्र-भूषण '९८
रामसिंह जू देव : अलङ्कार-दर्पण '९९
रामकृष्ण वर्मा : विरहा नाइका-भेद '१९००
स्कन्दगिरि कुँवर : रसमोदक हजारा '१९००
कन्हैयालाल पोद्दार : काव्य-कल्प-द्रुम '०१
कालूराम : काव्य भूमिका '०१
नन्दकिशोर मिश्र : गङ्गाभरण '०१
राजेन्द्रप्रसाद : रस-बिहार '०१

कन्हैयालाल पोद्दार : अलङ्कार-प्रकाश '०२
बलदेवप्रसाद मिश्र : नाट्य-प्रबन्ध '०३
गिरिवरस्वरूप पाण्डेय : गिरीश-पिङ्गल '०५
हरदेवदास वैश्य : पिङ्गल '०६
जगन्नाथप्रसाद 'भानु' : काव्य-प्रभाकर '१०
जगन्नाथदास विशारद : कवि-कर्त्तव्य '११
महावीरप्रसाद द्विवेदी : नाट्य-शास्त्र '११
जगन्नाथ गोप : काव्य-प्रभाकर '१४
केवलराम शर्मा : छन्दसार पिंङ्गल '१६
भगवानदीन : अलङ्कार मञ्जूषा '१६
जगन्नाथप्रसाद 'भानु' : छन्द सारावली '१७
सत्यदेव, स्वामी : लेखन-कला '१७
जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी : अनुप्रास का अन्वेषण '१८
जगन्नाथप्रसाद 'भानु' : हिन्दी काव्यालङ्कार '१८
,, 'भानु' : अलङ्कार प्रश्नोत्तरी '१८
,, : रस-रत्नाकर '१६
नारायणप्रसाद 'बेताब' : प्राशपुञ्ज '१६
जगन्नाथप्रसाद 'भानु' : काव्य-प्रबन्ध '२०
गुलाबराय : नवरस '२१
नारायणप्रसाद 'बेताब' : पिङ्गल-सार '२२
हरिहरप्रसाद जिज्ञल : नया ग्रन्थ-कार '२२
श्यामसुन्दरदास : साहित्यालोचन '२३
सीताराम शास्त्री : साहित्य सिद्धान्त '२३
कन्हैयालाल गुप्त : चरित्र-चित्रण '२३
नन्दकुमार देव शर्मा : पत्र सम्पादन-कला '२३
जगन्नाथप्रसाद 'भानु' : अङ्क-विलास '२५
किशोरीदास वाजपेयी : साहित्य-मीमांसा '२७
भगवानदीन लाला : व्यङ्ग्यार्थ-मञ्जूषा '२७
गङ्गानाथ झा : कविरहस्य '२९
गोपाल दामोदर तामस्कर : मौलिकता '२९
रामचन्द्र शुक्ल : काव्य में रहस्यवाद '२९

अर्जुनदास केडिया : भारती-भूषण '३०
कालिदास कपूर : साहित्य-समीक्षा '३०
रामशङ्कर शुक्ल : अलङ्कार-पीयूष '३०
,, : नाट्य-निर्णय '३०
,, : अलङ्कार-कौमुदी '३०
अयोध्यासिंह उपाध्याय : रस-कलश '३१
किशोरीदास वाजपेयी : रस और अलङ्कार '३१
कन्हैयालाल, मुंशी : कहानी कैसे लिखना चाहिए ? '३२
किशोरीदास वाजपेयी : साहित्य की उपक्रमणिका '३२
श्यामसुन्दरदास : रूपक रहस्य '३२
गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव:हास्यरस '३४
गुलाबराय : प्रबन्ध-प्रभाकर '३४
गोविन्ददास, सेठ : नाट्य-कला-मीमांसा '३६
नलिनीमोहन सान्याल : समालोचना तत्व '३६
मोहनलाल महतो : कला का विवेचन '३६
लक्ष्मीनारायण सिंह : काव्य में अभिव्यञ्जनावाद '३६
पुरुषोत्तमलाल : आदर्श और यथार्थ '३७
बिहारीलाल भट्ट : साहित्य-सागर '३७
वेदव्यास, लाला : हिन्दी नाट्यकला '३७
शान्तिप्रिय द्विवेदी : कवि और काव्य '३७
आनन्दकुमार : साहित्य और समाज '३८
गङ्गाप्रसाद पाण्डेय : काव्य-कलना '३८
रामकुमार वर्मा : साहित्य-समालोचना '३८
रामशङ्कर शुक्ल : आलोचनादर्श '३८
लक्ष्मीधर वाजपेयी : काव्य और सङ्गीत '३८
विनोदशङ्कर व्यास : कहानी-कला '३८
गोपाललाल खन्ना : काव्य-कला '३९
जयशङ्कर प्रसाद : काव्य और कला '३९
सूर्यबली सिंह : लवलेटर्स '३९
इलाचन्द्र जोशी : साहित्य सर्जना '४०
विनयमोहन शर्मा : साहित्य-कला '४०
सत्यजीवन वर्मा : लेखनी उठाने से पूर्व '४०

किशोरीदास वाजपेयी: लेखन-कला '४१

गङ्गाप्रसाद पाण्डेय : छायावाद और रहस्यवाद '४१

विनोदशङ्कर व्यास : उपन्यास-कला '४१

सूर्यकान्त शास्त्री : साहित्य-मीमांसा '४१ ?

करुणापति त्रिपाठी : शैली '४२

चन्द्रप्रकाश वर्मा : साहित्यालोक '४२

साहित्य-शास्त्र—बाल

रामनरेश त्रिपाठी : हिन्दी पद्यरचना १८ ?

साहित्य-शास्त्र—अनूदित

(संस्कृत—प्राकृत)

कालिदास : श्रुतबोध

वाग्भट्ट : —अलङ्कार

जयदेव : चन्द्रालोक

विश्वनाथ : साहित्य-दर्पण

भानुदत्त मिश्र : रस-तरङ्गिणी

जगन्नाथ पंडितराज : रस-गङ्गाधर

शिवशर्म सूरि : वासुदेव रसानन्द

(बँगला)

रवीन्द्रनाथ ठाकुर : साहित्य

पूर्णचन्द्र वसु : साहित्य-मीमांसा

(गुजराती)

कालेलकर, काका : जीवन-साहित्य

कालेलकर, काका : कला—एक जीवन दर्शन

जीवन-चरित्र—प्राचीन

वृन्दावनदास : अर्हतपाशा केवली

जीवन-चरित्र—तत्कालीन

जयदत्त जोशी : गोपीचन्द '६८

अगरसिंह : हक़ीकत राय '७५ रिप्रिंट

गोपाल शर्मा सं० : दयानन्द-दिग्विजय '८१

रामशङ्कर व्यास : नैपोलियन बोनापार्ट '८३

दयानन्द :—की कुछ दिनचर्या '८४

जगन्नाथदास : मुहम्मद '८७

जगन्नाथ भारती : दयानन्द '८८

देवीप्रसाद, मुंशी : मानसिंह '८६

,, : मालदेव '८६

शिवकुमार शास्त्री : यतीन्द्र-जीवन-चरित्र '६१ रिप्रिन्ट

कार्त्तिकप्रसाद : महाराज विक्रमादित्य '६३

देवीप्रसाद, मुंशी : महाराणा उदय सिंह '६३

जय महाराज : धना जू को बखान '६५

भगवानप्रसाद 'रूपकला' : पीपा जी की कथा '६६

देवीप्रसाद, मुंशी : जसवन्त सिंह '६६

कार्त्तिकप्रसाद : अहल्याबाई '६७

अम्बिकादत्त व्यास : स्वामी चरितामृत '६६

रामनारायण दूगड़ : पृथ्वीराज-चरित्र '६६

सिद्धेश्वर शर्मा : गैरीबाल्डी '०१

गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा : कर्नल जेम्स टॉड '०२

देवीप्रसाद, मुंशी : महाराणा प्रताप सिंह '०३

माधवप्रसाद मिश्र : स्वामी विशुद्धानन्द '०३

लज्जाराम शर्मा, मेहता : अमीर अब्दुर्रहमान खाँ '०३

कन्हैयालाल शास्त्री : श्रीवल्लभाचार्य दिग्विजय '०४

लज्जाराम शर्मा, मेहता : जुझार तेजा '१४
सत्यानन्द अग्निहोत्री : अपने देव-जीवन के विकास और जीवन-व्रत की सिद्धि के लिए मेरा अद्वितीय त्याग '१४
सम्पूर्णानन्द : धर्मवीर गांधी '१४
सूर्यनारायण त्रिपाठी : रानी दुर्गावती '१४
इन्द्र वेदालङ्कार : प्रिन्स विस्मार्क '१५
द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी : रामानुजाचार्य '१५
जगन्मोहन वर्मा : राणा जङ्गबहादुर '१६
सम्पूर्णानन्द : महाराज छत्रसाल '१६
चन्द्रमौलि सुकुल : अकबर '१०
जगन्मोहन वर्मा : बुद्धदेव '१७
दयानन्द : स्वरचित जीवन-चरित्र '१७
बेनीप्रसाद : महर्षि सुकरात '१७
राधामोहन गोकुल जी : नैपोलियन बोनापार्ट १७'
शिवनारायण द्विवेदी : राजा राममोहन राय '१७
,, : कोलम्बस '१७
पूर्णसिंह वर्मा : भीमसेन शर्मा '१८
लालमणि बाँठिया : पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र '१८
देवराज, लाला : भीमदेव '१६
रामचन्द्र वर्मा : महात्मा गांधी '१६
विश्वम्भरनाथ शर्मा : रूस का राहु '१६
सत्यानन्द स्वामी : दयानन्द-प्रकाश '१६
सम्पूर्णानन्द : चेतसिंह और काशी का विद्रोह '१६
इन्द्र वाचस्पति : महावीर गैरीबाल्डी '२०
एक भारतीय हृदय : केशवचन्द्र सेन '२०
नन्दकुमारदेव शर्मा : पञ्जाब-केसरी महाराजा रणजीत सिंह '२०
बेनीप्रसाद : रणजीतसिंह '२०
शिवचरण द्विवेदी : मुहम्मद '२०
सम्पूर्णानन्द : सम्राट् हर्षवर्धन '२०
,, : महादजी सिंधिया '२०
देवीप्रसाद, मुंशी : न्यायी नौशेरवाँ '२१
परमानन्द भाई : आप बीती '२१
सत्यानन्द अग्निहोत्री : अपने छोटे भाई के संबंध में मेरी सेवाएँ '२१
'एक भारतीय हृदय' : भारत-भक्त ऐंड्रयूज़ '२२
चन्द्रमणि विद्यालङ्कार : स्वामी दयानन्द का वैदिक स्वराज्य '२२

अगरचन्द नाहटा : जिनचन्द्र सूरि '३६
चन्द्रशेखर शास्त्री : हिटलर महान '३६
गोपीनाथ दीक्षित:जवाहरलाल नेहरू '३७
मङ्गल : भक्त नरसिंह मेहता '३७
सत्यदेव विद्यालङ्कार : लाला देवराज '३७
हरिरामचन्द्र दिवेकर : सन्त तुकाराम '३७
गौरीशङ्कर चैटर्जी : हर्षवर्धन '३८
देवव्रत : मुस्तफ़ा कमाल '३८
बलदेवप्रसाद बाह्रीक : नामदेव-चरितावली '३८
भगवानदास केला : गाँव की बात '३८
मन्मथनाथ गुप्त : चन्द्रशेखर आज़ाद '३८
,, : अमर शहीद यतीन्द्र-नाथ दास '३८
द्वारकानाथ त्रिपाठी : रामकृष्ण लीलामृत '३६
प्रेमनारायण अग्रवाल : भवानी-दयाल सन्यासी '३६
बनारसीदास चतुर्वेदी : अराजक-वादी मैलटेस्टा '३६
,, : लुई माइकेल '३६
बनारसीदास चतुर्वेदी : जापान के गाँधी कागावा '३६
भवानीदयाल सन्यासी : प्रवासी की कहानी '३६
राजाराम : मेरी कहानी '३६
रामइक़बाल सिंह : स्टालिन '३६
विश्वनारायण : चीन का क्रान्ति-कारी निर्माता '३६
सूर्यकान्त त्रिपाठी : कुल्ली भाट '३६
घनश्यामदास बिड़ला : बापू '४०
जगदीशनारायण तिवारी सं० : सुभाषचन्द्र बोस '४०
त्रिलोकीनाथ : स्टालिन '४०
बनारसीदास चतुर्वेदी : अराजक-वादी ऐमा गोल्डमैन '४०
हरिश्चन्द्र सेठ : चन्द्रगुप्त मौर्य '४०
घनश्यामदास बिड़ला : डायरी के कुछ पन्ने '४१
जितेन्द्रनाथ सान्याल : च्याँग काई शेक '४१
परमानन्द भाई : मेरे अन्त समय के विचार '४१
रामनारायण यादवेन्दु : हिटलर की विचार-धारा '४१
कल्याण विजय गणि : श्रमण भग-वान महावीर '४२
घनश्यामदास बिड़ला : जमुनालाल बजाज '४२

रामनरेश त्रिपाठी : तीस दिन मालवीय जी के साथ '४२

जीवन-चरित्र—बाल

नन्दकुमारदेव शर्मा : स्वामी रामतीर्थ '०७
" : महाराणा प्रताप सिंह '०७
सतीशचन्द्र मित्र : प्रतापसिंह '०७
नन्दकुमार देव शर्मा : स्वामी विवेकानन्द '१४
नन्दकुमार देव शर्मा : गोखले '१५
इन्द्र विद्यावाचस्पति : जवाहिरलाल नेहरू '३६
शम्भुदयाल सक्सेना : सिकन्दर '३८
जगपति चतुर्वेदी : कार्ल मार्क्स '४१

जीवन-चरित्र—अनूदित

(संस्कृत—प्राकृत)

हरिदास स्वामी : विष्णुप्रिया-चरित्र

(बँगला)

कृष्णदास कविराज : चैतन्य-चरितामृत
विवेकानन्द : मदीय आचार्य देव
अक्षयकुमार मित्र : सिराजुद्दौला

(गुजराती)

मोहनदास क० गांधी : आत्म-कथा
" : पुण्यस्मृतियाँ
किशोरलाल घ० मशरूवाला : गांधी-विचारदोहन

(मराठी)

रानाडे, श्रीमती : महादेव गोविन्द रानाडे
लक्ष्मण रामचन्द्र पाङ्गारकर : तुकाराम-चरित्र
लक्ष्मण रामचन्द्र पाङ्गारकर : एकनाथ-चरित्र
नरसिंह चिन्तामणि केलकर : लोकमान्य तिलक

(फ़ारसी)

बाबर : बाबरनामा
गुलबदन बेगम : हुमायूँनामा
अब्दुल बाक़ी : खानखानानामा
जहाँगीर : जहाँगीरनामा
मुहम्मदसाक़ी मुस्तहइद ख़ाँ : औरङ्गज़ेबनामा

(यूरोपियन-ऐंग्लोइंडियन)

प्लेटो : महात्मा सुकरात
नोटोविच : भारतीय शिष्य ईसा
वाशिङ्गटन : आत्मोद्धार
ट्रॉट्स्की : 'माई लाइफ़'
दत्तात्रेय बलवन्त पारस्नीस : बायजा आई सेंधिया
दत्तात्रेय बलवन्त पारस्नीस : झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई
लाजपतराय : शिवाजी
,, : अशोक
,, : दयानन्द सरस्वती
,, : जोजेफ़मेज़िनी
स्मिथ : अशोक
जवाहरलाल नेहरू : मेरी कहानी
सीताराम कोहली : रञ्जीतसिंह
राधाकुमुद मुकर्जी : श्रीहर्ष
यदुनाथ सरकार : शिवाजी
राधाकृष्णन् सं० : गांधी अभिनन्दन-ग्रन्थ
महादेव हरिभाई देसाई : इङ्गलैंड में महात्मा जी
,, : विनोवा और उनके विचार
मोहनदास क० गांधी : गांधी-वाणी
हिटलर, हर : मेरा जीवन-संग्राम

इतिहास—तत्कालीन

मुहम्मद नज़ीर अली : भारत-वृत्तावली '६८

गोपाललाल शर्मा : इतिहास-कौमुदी '७३

शिवप्रसाद, सितारेहिन्द : इतिहास तिमिर नाशक '७३

भुवनचन्द्र बसक सं० : बँगला देश का इतिहास '७४

निरञ्जन मुकरजी : भारतवर्षीय राजसंग्रह '७५

पूरनचन्द, मुंशी : अवध-समाचार '७६

सन्तसिंह : गुरुचरित्र प्रभाकर '७७

हरिश्चन्द्र : दिल्ली दरबार दर्पण '७७

,, : बूँदी का राजवंश '८२

राधाकृष्णदास : आर्य-चरितामृत '८४

हरिश्चन्द्र : काश्मीर-कुसुम '८४

,, : बादशाह-दर्पण '८४

,, : प्रसिद्ध महात्माओं के जीवन-चरित '८४

जवाहर मल्ल : इतिहास-मुकुर '८६

दामोदर शास्त्री : चित्तौरगढ़ का इतिहास '९१

देवीप्रसाद, मुंशी : आमेर के राजे '९३

प्रतापनारायण मिश्र : चरिताष्टक '९४

रामनारायण मिश्र : पारसियों का संक्षिप्त इतिहास '९५

देवीप्रसाद, मुंशी : मारवाड़ के प्राचीन लेख '९६

महाराज सिंह : इतिहास बुन्देलखंड '९६

राधारमण चौबे : राज्य भरतपुर का इतिहास '९६

हरिश्चन्द्र : कालचक्र '९६

दामोदर शास्त्री : लखनऊ का इतिहास '९७

विद्यातीर्थ स्वामी : महाराष्ट्र कुल-वंशावली '९८

चण्डीप्रसाद सिंह : जीवन-चरित्र '९९

काशीनाथ खत्री : भारतवर्ष की विख्यात स्त्रियों के जीवन-चरित्र '०२ पं०
,, : भारतवर्ष की विख्यात रानियों के जीवन-चरित्र '०२ पं०
गोविन्दसिंह साधु : इतिहास गुरु खालसा '०२
प्यारेलाल सं० : चरित्र-संग्रह '०२ द्वि०
श्यामसुन्दरदास सं० : प्राचीन लेख-मणिमाला '०३
गङ्गाप्रसाद गुप्त : बिहारी वीर '०४
बलदेवप्रसाद मिश्र : नेपाल का इतिहास '०४
रामदयाल : इतिहास-संग्रह '०४
रामनारायण मिश्र : जापान का संक्षिप्त इतिहास '०४
हनुवन्त सिंह कुँवर : मेवाड़ का इतिहास '०४
गदाधरसिंह : रूस-जापान-युद्ध '०५
नटवर चक्रवर्ती : अफ़गानिस्तान का इतिहास '०५
गङ्गाप्रसाद गुप्त : पूना का इतिहास '०६
सूर्यकुमार वर्मा : ग्रीस की स्वाधीनता का इतिहास '०६
गौरीशङ्कर पाठक : जापान का उदय '०७
महेन्दुलाल गर्ग : जापान की कहानी '०७
शिवव्रतलाल : हमारी माताएँ '०७
जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी : स्वदेशी-आन्दोलन '०८
मदनलाल : मदन-कोष '०८
रामचन्द्र वैद्यशास्त्री : भारत नर-रत्न-चरितावली '०८
सुदर्शनाचार्य शास्त्री : आल्वार चरितामृत '०८
सूर्यकुमार वर्मा : कांग्रेस-चरितावली '०८
सोमेश्वरदत्त शुक्ल : फ्रांस का इतिहास '०८
,, : जर्मनी का इतिहास '०८
देवीप्रसाद, मुंशी : हिन्दोस्तान में मुसलमान बादशाह '०८
,, : यवनराज वंशावली '०९
मिश्रबन्धु : रूस का इतिहास '०९
रामनारायण दूगड़ : राजस्थान-रत्नाकर '०९
नारायण पाण्डेय : नेपाल '१०
सकलनारायण पाण्डेय : आरा-पुरातत्व '१०

उदयनारायण वाजपेयी : प्राचीन भारतवासियों की विदेश यात्रा और वैदेशिक व्यापार '११
गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा : सिरोही राज्य का इतिहास '११
जीतन सिंह : रूस-रूम युद्ध '११
देवीप्रसाद, मुंशी : पड़िहाड़ वंश प्रकाश '११
,, : मुगल वंश '११ !
मिश्रबन्धु : जापान का इतिहास '११
रामदेव : भारतवर्ष का इतिहास '११ द्वि०
अमृतलाल चक्रवर्ती : भरतपुर-युद्ध '१२
रामनाथ पाण्डेय: भारत में पोर्चुगीज़ '१२
रामानन्द द्विवेदी : दिल्ली दरबार '१२
लक्ष्मीनारायण गर्दे : महाराष्ट्र-रहस्य '१२
शिवव्रत लाल वर्मा : राजस्थान की वीर रानियाँ '१२
देवेन्द्रप्रसाद जैन : ऐतिहासिक स्त्रियाँ '१३
द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी : आदर्श महिलायें '१३
रघुनन्दनशरण : आर्य-गौरव '१३
रामप्रसाद त्रिपाठी : महाराष्ट्रोदय '१३
बालकृष्ण : भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास '१४
मनोहरचन्द्र मिश्र : स्पेन का इतिहास '१४
शिवनारायण द्विवेदी : युद्ध की झलक '१४
हरिमङ्गल मिश्र : भारतवर्ष का इतिहास '१४
नन्दकुमारदेव शर्मा : इटली की स्वाधीनता का इतिहास '१५
भवानीदयाल सन्यासी : दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास '१६
नन्दकुमारदेव शर्मा : सिक्खों का उत्थान और पतन '१७
भवानीसिंह:सर्विया का इतिहास'१७
शिवनन्दन सहाय : सिक्ख गुरुओं की जीवनी '१७ !
कृष्णबिहारी मिश्र : चीन का इतिहास '१८
पूरनचन्द नाहर सं० : जैन लेख-संग्रह '१८
प्राणनाथ विद्यालङ्कार : सभ्यता का इतिहास '१८
सम्पूर्णानन्द : भारत के देशी राष्ट्र '१८

सूर्यनारायण : भारतीय इतिहास में स्वराज्य की गूँज '१८
गौरीशङ्कर लाल : चित्तौर की चढ़ाइयाँ '१६
मिश्रबन्धु : भारतवर्ष का इतिहास '१६
विश्वेश्वरनाथ रेउ : क्षत्रप वंश का इतिहास '१६
शिवपूजन सहाय : बिहार का बिहार '१६
कृष्णकान्त मालवीय : संसार-सङ्कट '२०
देशव्रत : हिन्दू जाति का स्वातंत्र्य-प्रेम '२०
धर्मदत्त : प्राचीन भारत में स्वराज्य '२०
भगवानदास केला: भारतीय जागृति '२०
मन्नन द्विवेदी : मुसलमानी राज्य का इतिहास '२०
रमाशङ्कर अवस्थी : रूस की राज्य-क्रान्ति '२०
रामदास गौड़ सं० : इटली के विधायक महात्मागण '२०
हरिमङ्गल मिश्र : प्राचीन भारत '२०
उमादत्त शर्मा : भारतीय देश-भक्तों के कारावास की कहानी '२१ द्वि०
देवीप्रसाद, मुंशी : सिन्ध का इतिहास '२१ ?
द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी : हिन्दी चरिताम्बुधि '२१
परमानन्द, भाई : देशपूजा में आत्म-बलिदान '२१
शङ्करराव जोशी : रोम साम्राज्य '२१
शेषमणि त्रिपाठी : अकबर की राज्यव्यवस्था '२१
सम्पूर्णानन्द : चीन की राज्यक्रान्ति '२१
सुखसम्पति राय भण्डारी : जगद्गुरु भारतवर्ष '२१
सोमदत्त विद्यालङ्कार : रूस का पुनर्जन्म '२२
नन्दकुमारदेव शर्मा : पञ्जाब-हरण और महाराजा दलीप सिंह '२२
रमेशप्रसाद वर्मा : लङ्का का इतिहास '२२
वृन्दावन भट्टाचार्य : सारनाथ का इतिहास '२२
शिवनारायण द्विवेदी : १८५७ के ग़दर का इतिहास '२२
सूरजमल जैन : मराठे और अंग्रेज़ '२२
गौरीशङ्कर हीराचंन्द ओझा : अशोक की धर्मलिपियाँ '२३

गङ्गाप्रसाद मेहता : प्राचीन भारत '३३

गोरेलाल तिवारी : बुन्देलखंड का इतिहास '३३

महावीरप्रसाद द्विवेदी : पुरावृत्त '३३

रघुनन्दन शास्त्री : गुप्तवंश का इतिहास '३३

जयचन्द्र विद्यालङ्कार : भारतीय इतिहास की रूपरेखा '३४

नवजादिकलाल श्रीवास्तव : पराधीनों की विजय यात्रा '३४

विश्वेश्वरनाथ रेउ : राठौड़ों का इतिहास '३४

श्रीगोपाल नेवटिया : मुस्लिम सन्तों के चरित्र '३४

नानालाल च० मेहता : भारतीय चित्रकला '३५

परमात्माशरण : मध्यकालीन भारत '३५

श्रीनारायण चतुर्वेदी : संसार का संक्षिप्त इतिहास '३५

रामनारायण पाण्डेय : युद्ध छिड़ने से पहले '३६

रामप्रसाद त्रिपाठी : भारतीय शासन-विकास '३६

आनन्द कौसल्यायन : बुद्ध और उनके अनुचर '३७

गिरीशचन्द्र त्रिपाठी : महापुरुषों की प्रेम कहानियाँ '३७

,, : महापुरुषों की करुण कहानियाँ '३७

बदरीदत्त पाण्डेय : कुमाऊँ का इतिहास '३७

मन्मथनाथ गुप्त : भारत में सशस्त्र क्रान्तिचेष्टा का इतिहास '३७

राहुल सांकृत्यायन : विस्मृति के गर्भ में '३७

,, : पुरातत्व-निबन्धावली '३७

हीरालाल : मध्यप्रदेश का इतिहास '३७

इन्द्र विद्यावाचस्पति : मुग़ल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण '३८

गङ्गाप्रसाद : अंग्रेज़ जाति का इतिहास '३८

गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा : जोधपुर राज्य का इतिहास '३८

जयचन्द्र विद्यालङ्कार : इतिहास-प्रवेश '३८

आर० एम० रावल : अजन्ता के कलामण्डप '३८

विश्वेश्वरनाथ रेउ : मारवाड़ का इतिहास '३८

सत्यकेतु विद्यालङ्कार : अपने देश की कथा '३८

कण्ठमणि शास्त्री : काँकरौली का इतिहास '३९

कालिदास कपूर : भारतीय सभ्यता का विकास '३९

चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार : वृहत्तर भारत '३९

जगदीशसिंह गहलौत : राजपूताना का इतिहास '३९

प्राणनाथ विद्यालङ्कार : हरप्पा तथा मोहनजोदड़ो के प्राचीन लेख '३९

मथुरालाल शर्मा : कोटा राज्य का इतिहास '३९

राजेन्द्रसिंह व्योहार : त्रिपुरी का इतिहास '३९

रामशरण उपाध्याय : मगध का प्राचीन इतिहास '३९

राय कृष्णदास : भारत की मूर्त्ति-कला '३९

,, : भारत की चित्रकला '३९

विश्वनाथ राय : मिश्र की स्वाधीनता का इतिहास '३९

सुरेश्वरानन्द कैकय : कैकय वंश चन्द्रोदय '३९

हीरालाल जैन : जैन इतिहास की पूर्वपीठिका '३९

पृथ्वीसिंह मेहता : बिहार—एक ऐतिहासिक दिग्दर्शन '४०

देवीदयाल चतुर्वेदी : दुनिया के तानशाह '४०

नारायणचन्द लाहडी : स्वाधीनता युद्ध में जनता का विप्लव '४०

बालचन्द मोदी : देश के इतिहास में मारवाड़ी जाति का स्थान '४०

भगवद्दत्त : भारतवर्ष का इतिहास '४०

मोहनलाल महतो : आरती के दीप '४०

राजबहादुर सिंह : वर्तमान युद्ध में पोलैंड का बलिदान '४०

विश्वनाथ शास्त्री : विश्व पर हिंदुत्व का प्रभाव '४०

कामताप्रसाद जैन : संक्षिप्त जैन इतिहास '४१

भगवानदास केला : कौटिल्य की शासनपद्धति '४१

रामकृष्ण सिन्हा : प्राचीन तिब्बत '४१

रामलाल हाला : जाट क्षत्रिय इतिहास '४१

श्री प्रकाश : भारत के समाज और इतिहास पर स्फुट विचार '४१

सतीशचन्द्र काला : मोहनजो दड़ो तथा सिन्धु सभ्यता '४१

सम्पूर्णानन्द : आर्यों का आदि देश '४१

इतिहास—बाल

इतिहास—अनूदित
(संस्कृत)

(बँगला)

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर : चरितावली
रजनीकान्त गुप्त : आर्यकीर्ति
राजकृष्ण मुखोपाध्याय : बङ्गाल का इतिहास
अक्षयकुमार मित्र : जब अंग्रेज़ आए
शचीन्द्रनाथ सान्याल : बन्दी जीवन

(राजस्थानी)

मुहणोत नैणसी : ख्यात
सूर्यमल्ल मिश्रण : वंशभास्कर

(मराठी)

विनायक दामोदर सावरकर : हिन्दू पाद-बादशाही

(गुजराती)

रामचन्द्र मुमुक्षु : पुण्याश्रव कथाकोष

(उर्दू)

मुहम्मद हुसैन 'आज़ाद' : अकबरी दरबार

(फ़ारसी)

अब्दुर्रज्ज़ाक़ : मआसिरुल उमरा

(यूरोपियन-ऐंग्लोइण्डियन)

टॉड : राजस्थान
कनिङ्घम : सिक्ख इतिहास
उइहार : जापान की राजनैतिक प्रगति
एल्बर्ट : पार्ल्यामेण्ट
क्रीन लॉर्ड : कठिनाई में विद्याभ्यास
आल्कट : भारत त्रिकालिक दशा
मॉटेल : नरमेध (राइज़ आव् डच रिपब्लिक)
डॉसन : जर्मनी का विकास
रॉबिन्सन : पश्चिमी यूरोप
नौरोजी : जब अँग्रेज़ नहीं आए थे
ह्यूम : इण्डियन नेशनल कांग्रेस
रमेशचन्द्र दत्त : प्राचीन भारत की सभ्यता का इतिहास
बाल गङ्गाधर तिलक : वेदकाल-निर्णय
दत्तात्रेय बलवन्त पारसनीस : दिल्ली वा इन्द्रप्रस्थ
बी० डी० बसु० : कम्पनी के कारनामे
रमेशचन्द्र दत्त : बृटिश भारत का आर्थिक इतिहास
महादेव गोविन्द रानाडे : मराठों का उत्कर्ष

लेखराम : ऐतिहासिक निरीक्षण
वेल्स : संसार का संक्षिप्त इतिहास
चिन्तामणि विनायक वैद्य : हिन्दू भारत का उत्कर्ष
,, : हिन्दू भारत का अन्त
राखालदास बैनरजी : प्राचीन मुद्रा
पट्टाभि सीतारमैया:कांग्रेस का इतिहास
काशीप्रसाद जायसवाल : हिन्दू राज्यतन्त्र
,, : हण्टर कमिटी रिपोर्ट
काशीप्रसाद जायसवाल : अन्धकार युगीन भारत
गोविन्द सखाराम सर देसाई : भारतवर्ष का आर्वाचीन इतिहास
जवाहरलाल नेहरू : विश्व इतिहास की झलक
सी० वाई० चिन्तामणि : भारतीय राजनीति के ८० वर्ष
योगेन्द्रनाथ सील : मध्यप्रदेश और बरार का इतिहास

देशदर्शन—तत्कालीन

नवलकिशोर : बनयात्रा '६८
हरिश्चन्द्र : तहकीक़ात पुरी की '७१
पानचन्द जी पारीख : आर्य देश-पनता '७५
शिवप्रसाद, सितारेहिन्द : भूगोल हस्तामलक '७७
राधाचरण गोस्वामी : देशोपकारी पुस्तक '८२
खुन्नूलाल, लाला : स्त्री-सुदशा '८३
मुहम्मद हुसैन : भूगोल एशिया '८३
हरिश्चन्द्र : काशी के छाया-चित्र '८४
दामोदर शास्त्री : मेरी पूर्वदिक्-यात्रा '८५
भगवानदास वर्मा : लन्दन-यात्रा '८५
रामप्रसाद लाल : भूतत्व-प्रदीप '८५
दामोदर शास्त्री : मेरी दक्षिणदिक्-यात्रा '८६
भगवानदास वर्मा : पश्चिमोत्तर तथा अवध का प्राकृतिक, ऐतिहासिक तथा राजनैतिक वृत्तान्त '८७
दामोदर शास्त्री : मेरी जन्मभूमि-यात्रा '८८
आलाराम सागर : कांग्रेस पुकार मञ्जरी '९२
हरदेवी : स्त्रियों पर सामाजिक अन्याय '९२
देवीप्रसाद, मुंशी : स्वप्न राजस्थान '९३
अमृतलाल चक्रवर्ती : विलायत की चिट्ठी '९३
देवीप्रसाद, बाबू : रामेश्वरयात्रा '९३
राधारमण चौबे : देशोन्नति '९६
ज्वालानाथ नागर : जगत दर्शन '९९
प्यारेलाल : कस्टम्स ऐंड कॉस्ट्यूम्स '०१
,, : दुनिया की सैर '०१
हरिचरणदास : प्रसिद्ध देशों का वर्णन '०१
गदाधर सिंह : चीन में तेरह मास '०३
महेन्द्रलाल गर्ग : चीना-दर्पण '०३
साधुचरणप्रसाद : भारत-भ्रमण '०३
हरेकृष्ण जौहर : जापान-वृत्तान्त '०४

पशुपाल वर्मा : जर्मनी में लोक-शिक्षा '१६
हीरालाल : जबलपुर-ज्योति '१६
'एक ग्रेजुएट' : साम्यवाद '२०
भगवतीप्रसाद सिंह : बनारस के व्यवसायी '२०
भवानीदयाल सन्यासी : नेटाली हिन्दू '२०
राधाकृष्ण झा : भारत की साम्पत्तिक अवस्था '२०
गणेशदत्त शर्मा : भारत में दुर्भिक्ष '२१
छेदीलाल : एशिया निवासियों के प्रति योरोपियनों के बर्ताव '२१
देवीप्रसाद विद्यार्थी : अमरीकन संयुक्त राज्य की शासन-प्रणाली '२१
प्राणनाथ विद्यालङ्कार : किसानों पर अत्याचार '२१
प्रेमचन्द : स्वराज्य के फ़ायदे '२१
विनायक सीताराम सरवती : बोल्शेविज़्म '२१
सत्यदेव, स्वामी : असहयोग '२१
सुख सम्पत्तिराय भण्डारी : भारत-दर्शन '२१
हरदयाल, लाला : जर्मनी और तुर्की में ४४ मास '२१
कृष्णगोपाल माथुर : अनोखे रीति रिवाज '२२
तीर्थराम सेठी : भारतीय वज़न प्रकाश '२२
लक्ष्मीनारायण गर्दे : जेल में चार मास '२२
हीरालाल : सागर-सरोज '२२
अमरनाथ वली तथा मोहनलाल : भारतीय अर्थशास्त्र '२३
ईश्वरदास जालान : लिमिटेड कम्पनियाँ '२३
कन्नोमल : संसार को भारत का सन्देश '२३
दयाशङ्कर दुबे : भारत में कृषि-सुधार '२३
प्यारेलाल गङ्गराण्डे : आधुनिक भारत '२३
प्राणनाथ विद्यालङ्कार : रूस का पञ्चवर्षीय आयोजन '२३
,, : भारतीय सम्पत्ति-शास्त्र '२३
भगवानदास केला : भारतीय राजस्व '२३
कस्तूमल बाँठिया : कम्पनी व्यापार-प्रवेशिका '२४
जगदीश सिंह गहलौत : मारवाड़ के रीति-रस्म '२४
बालमुकुन्द : बनारस '२४

मुकुटबिहारी वर्मा : स्त्री-समस्या '३१
रामनाथ लाल : भाई के पत्र '३१
कृपानाथ मिश्र : विदेश की बातें '३२
राजबहादुरसिंह : रूस का पञ्चवर्षीय आयोजन '३२
सुमित्रा देवी : नवीन युग का महिला समाज '३२
गणेशदत्त शर्मा : ग्रामसुधार '३३
जगदीश प्रसाद अग्रवाल : संसार-शासन '३३
चन्द्रावती लखनपाल : स्त्रियों की स्थिति '३३
मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव : साम्राज्य-वाद '३३
राजबहादुर सिंह : विश्वविहार '३३
राहुल सांकृत्यायन : तिब्बत में सवा बरस '३३
विजय धर्म सूरि : आबू '३३
ब्रजगोपाल भटनागर : ग्रामीय अर्थशास्त्र '३३
शङ्करसहाय सक्सेना : औद्योगिक तथा व्यापारिक भूगोल '३३
प्रभुदयाल महरोत्रा : आधुनिक रूस '३४
रामप्रसाद त्रिपाठी सं० : ज्ञानकोष '३४
राहुल सांकृत्यायन : मेरी तिब्बत-यात्रा '३४
शिवनन्दन सहाय : कैलाश-दर्शन '३४
श्रीगोपाल नेवटिया : काश्मीर '३४
प्रेमनारायण अग्रवाल : प्रवासी भारत की वर्तमान समस्या '३५
राहुल सांकृत्यायन : लङ्का '३५
,, : साम्यवाद ही क्यों '३५
शङ्करसहाय सक्सेना : भारतीय सहकारिता आन्दोलन '३५
हरिभाऊ उपाध्याय : स्वतन्त्रता की ओर '३५
गजानन श्री० खैर : संसार की समाज क्रान्ति और हिन्दुस्तान '३६
प्रभातचन्द्र बोस : मध्यदेश शिकार '३६
भूपेन्द्रनाथ सान्याल : साम्यवाद की ओर '३६
मनोरञ्जन : उत्तराखण्ड के पथ पर '३६
रामनारायण यादवेन्दु : राष्ट्रसङ्घ और विश्वशान्ति '३६
राहुल सांकृत्यायन : जापान '३६
सत्यदेव विद्यालङ्कार : परदा '३६
सम्पूर्णानन्द : समाजवाद '३६
,, : साम्यवाद का बिगुल '३६
कन्हैयालाल वर्मा : नाज़ी जरमनी '३७

केशरीमल अग्रवाल : दक्षिण तथा पश्चिम के तीर्थस्थान '३७
जितेन्द्रनाथ सान्याल : दूसरा विश्व युद्ध '३७ !
धरमचन्द सरावगी : यूरोप में सात मास '३७
राहुल सांकृत्यायन : ईरान '३७
वासुदेवशरण अग्रवाल : श्रीकृष्ण की जन्मभूमि '३७
शालिग्राम श्रीवास्तव : प्रयाग-प्रदीप '३७
चन्द्रभाल जौहरी : यूरोप की सरकारें '३८
नरेन्द्रदेव आचार्य:समाजवाद '३८
बैजनाथ केडिया : समाज के हृदय की बातें '३८
रामनारायण यादवेन्दु : नवीन भारतीय शासन-विधान '३८
राहुल सांकृत्यायन : सोवियत् भूमि '३८
,, : दिमाग़ी गुलामी '३८
विष्णुदत्त शुक्ल : जापान की बातें '३८
सत्यनारायण : यूरोप के झकोरे में '३८
हरिश्चन्द्र गोयल : भारत का नया शासन-विधान '३८
अच्युतानन्द : गाँव '३९
अमरनारायण अग्रवाल : समाजवाद की रूपरेखा '३९ !
ए. बी० लट्ठे : संसार की संघ शासन प्रणालियाँ '३९ !
कन्हैयालाल वर्मा : भारतीय राजनीति और शासन-पद्धति '३९
गुरुनाथ शर्मा : मैसूर में '३९
बी० एम० शर्मा : भारत और सङ्घ शासन '३९
रामनारायण यादवेन्दु : समाजवाद और गांधीवाद '३९ !
शिवदान सिंह चौहान : रक्तरञ्जित स्पेन '३९ !
सत्यनारायण : रोमाञ्चकारी रूस '३९
सुखदेवबिहारी माथुर : हमारे गाँव '३९ !
हीरालाल पालित : समाजवाद की फ़िलासफ़ी '३९ !
उत्तमचन्द मोहता : भारतीय गोशालाएँ '४०
मुख्तयार सिंह : हमारे गाँव और किसान '४०
यशपाल : न्याय का सङ्घर्ष '४० !
,, : राष्ट्रीय पञ्चायत '४०
,, : युद्धसङ्कट और भारत '४०
वेङ्कटेशनारायण तिवारी : रणमत्त संसार '४०
श्रीकान्त ठाकुर : भारतीय शासन व्यवस्था '४०

सत्यनारायण : आवारे की यूरोप यात्रा '४० ?
,, : युद्ध-यात्रा '४०
सम्पूर्णानन्द : व्यक्ति और राज '४०
सुरेन्द्र बालूपुरी : आधुनिक जापान '४० ?
अमरनारायण अग्रवाल : ग्रामीण अर्थशास्त्र और सहकारिता '४१
गोरखनाथ चौबे : आधुनिक भारतीय शासन '४१
गोविन्दराव कृष्णराव शिन्दे सं० : बाल संरक्षण विधान '४१
,, : साक्ष्य - विधान '४१
,, : सम्पति हस्तान्तर विधान '४१
,, : अनुबन्ध मुआहिदा विधान '४१
,, : अपराध सम्बन्धी विधि-संग्रह '४१
मदनमोहन नागर : सारनाथ का संक्षिप्त परिचय '४१
रघुबीर सहाय : आज का जापान '४१
रामनारायण यादवेन्दु : भारत में साम्प्रदायिक समस्या '४१
,, : पाकिस्तान '४१
,, : पाँचवा कालम क्या है ? '४१
रुद्रनारायण अग्रवाल : हिन्दुस्तान बनाम पाकिस्तान '४१
शम्भुदयाल सक्सेना : गाँवों की समस्या '४१
कन्हैयालाल वर्मा : भारतीय शासन '४२
केदारनाथ गुप्त : बृहद् विश्वज्ञान '४२
गोविन्दसहाय : संसार की राजनीति में साम्राज्यवाद का नङ्गा नाच '४२
भवानीदयाल सन्यासी : पोर्चुगीज़ पूर्व अफ्रीका में हिन्दुस्तानी '४२
रामनारायण यादवेन्दु : भारतीय संस्कृति और नागरिक जीवन '४२

देशदर्शन—बाल

श्रीधर पाठक : बाल-भूगोल '१६
रामनरेश त्रिपाठी : उत्तरी ध्रुव की यात्रा '२१
जगपति चतुर्वेदी : भौगोलिक कहानियाँ '२८
कृपानाथ मिश्र : बालकों का योरोप '३१ ?
श्रीनाथसिंह : परदेश की सैर '३२
ठाकुरदत्त मिश्र : अनजान देश में '३६
,, : प्रसिद्ध यात्राओं की कथा '३६
,, : ध्रुवयात्रा '३७
रामदास गौड़ : हमारे गावों की कहानी '३८

गीजूभाई बधेका : गाँव में '४१ रमेश वर्मा : गाँव की बातें '४१

देशदर्शन—अनूदित

(संस्कृत)

कौटिल्य : अर्थशास्त्र

(बँगला)

अरविन्द घोष : हमारी स्वतन्त्रता कैसी हो ?
अरविन्द घोष : क्या भारत सभ्य है ?
रवीन्द्रनाथ ठाकुर : वैधव्य कठोर दण्ड है या शान्ति ?

(गुजराती)

मोहनदास क० गांधी : हिन्द-स्वराज्य
मोहनदास क० गांधी : राष्ट्र-वाणी

(मराठी)

सखाराम गणेश देउस्कर : देश की बात

(उर्दू)

सुलेमान नदवी : अरब और भारत के संबंध
यूसुफ़ अली : मध्यकालीन भारत की सामाजिक और आर्थिक अवस्था

(फ़ारसी)

अबुलफ़ज़ल : आईन-ए-अकबरी

(जापानी)

कावागुची इकाई : तिब्बत में तीन वर्ष

(यूरोपियन-ऐंग्लोइण्डियन)

टॉल्स्टॉय : हमारे ज़माने की ग़ुलामी
मेज़िनी : —के लेख
काटन, सर हेनरी : नवीन भारत
भारत सरकार : हिन्दुस्तान का दण्ड-संग्रह
इल्बर्ट, सर कोर्टनी : पार्ल्यामेन्ट
लाजपतराय : तरुण भारत
पट्टाभि सीतारामैया : भारत का आर्थिक शोषण
पुंताम्बेकर : भारतीय लोकनीति और सभ्यता
रामतीर्थ स्वामी : राष्ट्रीय संदेश
मोहनदास क० गांधी : मेरे जेल के अनुभव

मोहनदास क० गांधी : स्वाधीन भारत
,, : योरोपीय युद्ध और भारत
,, : ग्रामसेवा
,, : स्वदेशी और ग्रामोद्योग
मदनमोहन मालवीय : मालवीयजी और पञ्जाब
मोतीलाल नेहरू : नेहरू कमिटी-रिपोर्ट
महादेव ह० देसाई : एक धर्मयुद्ध
क्रोपाटकिन, प्रिंस : सङ्घर्ष या सहयोग
,, : रोटी का सवाल
नौरोजी, दादाभाई : भारतवर्ष में चरित्र-दरिद्रता
नित्यनारायण बैनरजी : आज का रूस
शिराज़, फिन्डले : भारत की दरिद्रता
लाजपतराय : दुखी भारत
पट्टाभि सीतारामैया : महात्मा गांधी का समाजवाद
सुभाषचन्द्र बोस : तरुण भारत के स्वप्न
जवाहरलाल नेहरू : रूस की सैर
,, : कुछ समस्याएँ
,, : हम कहाँ हैं ?
,, : हिन्दुस्तानी समस्याएँ
,, : लड़खड़ाती दुनिया
मेगास्थनीज़ :—का भारत विवरण
फाहियान :—का यात्रा-विवरण
हुएनसाङ्ग :—का भारत-भ्रमण
इत्सिङ्ग :—की भारत-यात्रा
सुङ्गयून :—की यात्रा
इब्नबतूता :—की भारत-यात्रा
बर्नियर :—का भारत-यात्रा
अल्बेरुनी :—का भारत
मार्कोपोलो :—का यात्रा-विवरण

भाषादर्शन—प्राचीन

खुसरो : खालिकबारी
चन्दनराम : अनेकार्थ
नन्ददास : नाममाला मानमञ्जरी
चन्दनराम : नामार्णव
नन्ददास : अनेकार्थमञ्जरी

भाषादर्शन—तत्कालीन

टामसन, जे० टी० : हिन्दी-अंग्रेज़ी कोष '७० द्वि०
कलकत्ता सोसाइटी: हिन्दी कोष '७१
भैरवप्रसाद मिश्र : हिन्दी लघु व्याकरण '७१ द्वि०
राधालाल मुंशी सं० : शब्द-कोष '७३
मातादीन शुक्ल : नानार्थ नव संग्रहावली '७४
हुपर, रेवरेण्ड : यवन भाषा का व्याकरण '७४
बेट्स जे० डी० : हिन्दी डिक्शनरी '७५
सदासुखलाल : कोष-रत्नाकर '७६
मङ्गलीलाल, लाला : मङ्गल-कोष '७७
हुपर, रेवरेण्ड : यवन भाषा-कोष '७८
मूलराम साधु : वेदान्त पदार्थ-मञ्जूषा '८१
गौरीदत्त, पण्डित : उर्दू अक्षरों से हानि '८२
देवदत्त तिवारी : देव-कोष '८३ द्वि०
फ़ैलन, एस० डबल्यू०: न्यू इंग्लिश-हिन्दुस्तानी डिक्शनरी '८३
हरिश्चन्द्र : हिन्दी भाषा '८३
अम्बिकाचरण चट्टोपाध्याय : एकाक्षर कोष '८४
फैलन, एस० डबल्यू० : ए डिक-शनरी आव् हिन्दुस्तानी प्रावर्स '८४
काशीनाथ खत्री : मातृभाषा की उन्नति किस विधि करना योग्य है ?' ८५
कैसरबख्श मिर्ज़ा : कैसर-कोष '८५
गौरीदत्त पण्डित : नागरी और उर्दू का स्वांग '८५

गौरीदत्त पण्डित : नागरी प्रचार के उपदेश '८५

शिवप्रसाद, सितारेहिन्द : हिन्दी व्याकरण '८६

अयोध्याप्रसाद खत्री : खड़ी बोली का पद्य '८७

,, : मोलवी स्टाइल की हिन्दी का छन्दभेद '८७

,, : खड़ीबोली आन्दोलन '८८

शिवदास : लोकोक्ति-कौमुदी '९०

गौरीदत्त, पण्डित : देवनागरी स्तोत्र '९२

,, : नागरी का दफ़र '९२

देवीदयाल : भाषा शब्द निरूपण '९२

गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा : प्राचीन लिपिमाला '९४

प्रभाकर शास्त्री : बाल संस्कृत-प्रभाकर '९५

गौरीदत्त, पण्डित : देवनागरी के भजन '९६

रामकर्ण : मारवाड़ी व्याकरण '९६

मोहनलाल कटिहा : अन्वय-दीपका '९७

जगन्नाथ मेहता : पश्चिमोत्तर प्रदेश तथा अवध के दफ्तरों में नागरी अक्षरों का प्रचार '९८

मूलचन्द शर्मा : भाषा-कोष '९८

कामताप्रसाद गुरु : भाषा वाक्य पृथक्करण '१९००

गौरीदत्त, पण्डित : गौरी नागरी कोष '०१

गौरीशङ्कर शर्मा : हिन्दी-उर्दू कोष '०१

श्यामसुन्दरदास सं० : हिन्दी वैज्ञानिक कोष '०१

सन्तप्रसाद : कहावत-संग्रह '०२

हरिश्चन्द्र : हिन्दी लेक्चर '०२ द्वि०

श्रीधर : श्रीधर-भाषा-कोष '०३ द्वि०

पन्नालाल बाकलीवाल : लिङ्गबोध '०४

चन्द्रधर शर्मा, गुलेरी : अङ्क '०५ रिप्रिंट

सुधाकर द्विवेदी : हिन्दी वैज्ञानिक कोष (गणित) '०५

ठाकुरप्रसाद खत्री : हिन्दी वैज्ञानिक परिभाषा (भौतिक) '०६

प्यारेलाल सं० : जापानी बोलचाल '०६

महावीरप्रसाद द्विवेदी : हिन्दी वैज्ञानिक कोष (दर्शन) '०६

लाडिलीप्रसाद : नाममाला '०६

महावीरप्रसाद द्विवेदी : हिन्दी भाषा की उत्पत्ति '०७

सिद्धेश्वर शर्मा सं० : लोकोक्ति या कहावत '०७

सूर्यकुमार वर्मा : भाषा '०७
बालमुकुन्द गुप्त : हिन्दी भाषा '०८
जगमोहन वर्मा : आर्ष प्राकृत व्याकरण '०६
हरिराम वर्मा : कृषि-कोष '१०
गोविन्दनारायण मिश्र : विभक्ति-विचार '११
ब्रजवल्लभ मिश्र : पदार्थ-संख्या कोष '११
चन्द्रमौलि सुकुल : भाषा व्याकरण '१२
जीवाराम शर्मा सं० : सरस्वती कोष '१२
ठाकुरप्रसाद खत्री : जगत व्यापारिक पदार्थ कोष '१२
श्यामसुन्दरदास सं० : हिन्दी शब्द-सागर '१२
कमलापति द्विवेदी : हिन्दी-स्वप्न '१३
दीनानाथ कौल : भागीरथ कोष '१३
कृष्णशङ्कर तिवारी : देशी राज्यों में हिन्दी और उसके प्रचार के उपाय '१४
नगेन्द्रनाथ वसु : भारतीय लिपि-तत्व '१४
ईश्वरीप्रसाद शर्मा : हिन्दी-बँगला कोष '१५
रामरत्न सं० : लोकोक्ति-संग्रह '१५ द्वि०

२०

शालिग्राम द्विवेदी : विराम चिन्ह '१८
कन्नोमल : हिन्दी-प्रचार के उपयोगी साधन '२०
कामताप्रसाद गुरु : हिन्दी व्याकरण '२०
गौरीशङ्कर शुक्ल : राष्ट्रभाषा हिन्दी '२०
पारसमणि प्रधान : नेपाली व्याकरण '२०
रामजीलाल शर्मा : राष्ट्रभाषा '२०
प्रचारक बन्धु : हिन्दी-तेलुगू बाल-बोधिनी '२१
हरिहर शर्मा : हिन्दी-तामिल स्वबोधिनी '२१
शिवन्न शास्त्री : हिन्दी-तैलुगू कोष '२२
रामदहिन मिश्र : हिन्दी मुहावरे '२३
हरगोविन्ददास त्रि० सेठ : पाइअ सद्दमहान्नवो '२३
श्यामसुन्दरदास : हिन्दी भाषा का विकास '२४
,, : भाषा-विज्ञान '२४
केशवप्रसाद मिश्र : वैद्युत शब्दावली '२५
गणेशदत्त शास्त्री : पद्मचन्द्र कोष '२५
रामनरेश त्रिपाठी : हिन्दी शब्द-कल्पद्रुम '२५

धीरेन्द्र वर्मा : ब्रजभाषा-व्याकरण '३७

रामशङ्कर शुक्ल : भाषा शब्दकोष '३७

आर० जे० सरहिन्दी : हिन्दी मुहावरा कोष '३७

शङ्करलाल मगनलाल : गुजराती-हिन्दी टीचर '३७

कालेलकर, काका: चलती हिन्दी '३८

गोपाललाल खन्ना : हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास '३८

ब्रह्मस्वरूप शर्मा: हिन्दी मुहावरे '३८

मुन्नालाल : हज़ारों पहेलियाँ '३८

ओ० प० नेने : हिन्दुस्तानी-मराठी शब्दकोष '३९

चन्द्रबली पाण्डेय : कचहरी की भाषा और लिपि '३९

,, : भाषा का प्रश्न '३९

,, : बिहार की हिन्दुस्तानी '३९

वेङ्कटेश नारायण तिवारी : हिन्दी बनाम उर्दू '३९

हेमकान्त भट्टाचार्य : असमीया-हिन्दी बोध '३९

अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी : हिन्दुस्तानी मुहावरे '४०

'एक पत्रकार' : अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति कोष '४० ?

केशवप्रसाद मिश्र : गद्य-भारती '४०

चन्द्रबली पाण्डेय : उर्दू का रहस्य '४०

,, : मुगल बादशाहों की हिन्दी '४०

जगदीश काश्यप : पालि महाव्याकरण '४०

मुरलीधर सबनीस : हिन्दी-मराठी स्वबोधिनी '४०

लक्ष्मीपति सिंह : हिन्दी-मैथिल शिक्षक '४०

सुखसम्पितिराय : ट्वेन्टीथ सेन्चुरी डिक्शनरी '४० ?

आत्माराम : विभक्ति संवाद '४१

रामनाथ शर्मा : ग्वालियर राज्य में हिन्दी का स्थान '४१

,, : व्यावहारिक शब्द-कोष '४२

भाषा-दर्शन—बाल

श्यामसुन्दरदास सं० : बाल-शब्द सागर '३५

श्रीमन्नारायण अग्रवाल : सहज हिन्दुस्तानी '३९

रमेश वर्मा सं०: गाँव की बोली '४१

भाषादर्शन—अनूदित

(संस्कृत-प्राकृत)

यास्क : (हिन्दी) निरुक्त

याज्ञवल्क्य : शिक्षा

पाणिनि : अष्टाध्यायी

अमरसिंह: अमर-कोष(नामप्रकाश)

वरदराज : लघुसिद्धान्त-कौमुदी

भट्टो जी दीक्षित : सिद्धान्त कौमुदी

(यूरोपियन-ऐंग्लोइण्डियन)

अज्ञात : राष्ट्रभाषा

वुलनर : प्राकृत-प्रवेशिका

ललितकला—प्राचीन

तानसेन : राग-माला

कृष्णानन्द व्यासदेव : रागकल्पद्रुम

ललितकला—तत्कालीन

सौरीन्द्र मोहन ठाकुर : गीतावली '७८

गोपालदास : सङ्गीत सतार्णव-तरङ्ग '८२

माधोसिंह, राजा : राग-प्रकाश '८३

हरिश्चन्द्र : सङ्गीतसार '८३

रामेश्वर हरजी जानी : गायन-सागर '८५

काशीनाथ खत्री : उत्तम वक्तृता देने की विधि '८७

भक्तराम सं० : राग-रत्नाकर '८८

लोकनाथ चौबे : वंशी-रागमाला '८६

आदित्यराम बैकुण्ठराम : सङ्गीतादित्य '८६

मणिराम उस्ताद : सितार-चन्द्रिका '६३

शिवनारायण तुलसीदास : सङ्गीत पञ्चरत्न '६५

बलदेव शर्मा : बलदेव चित्र-रत्नाकर '६८

फतेहसिंह वर्मा, राजा : राग-प्रकाशिका '६६

विष्णु दिगंबर पालुस्कर : मृदङ्ग और तबला वादन-पद्धति '०३

तुलाही राम : राग मालश्री '०५

ललनपिया : ललन वाद्याभरण '०५ ?

रवि वर्मा : —के प्रसिद्ध चित्र '११

विष्णु दिगंबर पालुस्कर : राग भैरव '१३ द्वि०

„ : राग मालकंस '१४ द्वि०

कृष्णगोपाल माथुर : वक्तृत्व-कला '१८

विष्णु दिगंबर पालुस्कर : सितार की पुस्तक '१८

नन्दकुमार देव शर्मा : वक्तृत्व-कला '२०

रामेश्वरप्रसाद वर्मा : रमेश चित्रावली '२२

अज्ञात : व्यंग्य-चित्रावली '२५

देवकीनन्दन शर्मा : सभा-विज्ञान और वक्तृता '२६
मोतीलाल शर्मा : सौन्दर्य-चित्रावली '२७
विष्णु दिगंवर पालुस्कर : सङ्गीत तत्व-दर्शक '२८
हरिनारायण मुकर्जी : ध्रुपद स्वर-लिपि '२६
अज्ञात : व्यंग्य-चित्रावली '३०
एच्० पी० माहोबिया : चित्रलेखन '३०
बैजनाथ केडिया सं० : व्यंग्य-चित्रावली '३३
भातखण्डे : श्रीमल्लक्ष्य-सङ्गीतम् '३४
लक्ष्मीनारायण द्विवेदी : विनय-पत्रिका स्वर-लिपि '३४
शिवप्रसाद त्रिपाठी : शिव सङ्गीत प्रकाश '३४
दीनानाथ व्यास : प्रतिन्यास लेखन-कला '३५
हंसकुमार तिवारी : कला '३७
विष्णुदत्त शुक्ल : सभा-विधान '३६
प्रभुदयाल गर्ग : राग-दर्शन '४०
शैलेन्द्रनाथ दे : भारतीय चित्र-कला '४१

ललितकला—बाल

विष्णुदिगंवर पालुस्कर : सङ्गीत बालबोध '४

ललितकला—अनूदित

(उर्दू)

अज्ञात : चित्रकारीसार

(यूरोपियन-ऐंग्लोइंण्डियन)

आनन्दकुमार स्वामी : भारतीय शिल्पकला का उद्देश्य
दाउस्त : व्यङ्गय-चित्रण

उपयोगी कला—तत्कालीन

शिवनाथ मिश्र : अवाक् वार्तालाप '८५
गणेश सीताराम शास्त्री : रत्न-परीक्षा '८८
उमानाथ मिश्र : खेती-बारी '८६
मोहनलाल, पं० : प्रतिविम्ब चित्र-चिन्तामणि '८६
रामप्रताप शर्मा : मसि-दर्पण '६०
गङ्गाप्रसाद : नलिका आविष्कार '६६
गुरुदास : रत्न-परीक्षा '६६
ओङ्कारलाल शर्मा : नमूना-ए-ज़ेवरात '६७
प्यारेलाल : विटप-विलास '६७
वेणीमाधव त्रिपाठी : मसि-सागर '६७
हरिप्रसाद भागीरथ सं० : वाजीश्रा-प्रकाश '६६
गङ्गाशङ्कर नागर : कृषि-विद्या '१६००
प्यारेलाल : वाण-विद्या '०१
लज्जाराम शर्मा, मेहता : भारत की कारीगरी '०२
कार्त्तिकप्रसाद खत्री : पाकराज '०३
नित्यानन्द पाण्डेय : 'स्लीडिंग्स' '०३
महावीरप्रसाद : मधुमक्षिका '०३
रामजीवन नागर : देशी बटन '०४
गङ्गाप्रसाद गुप्त : देशी कारीगरी की दशा और स्वदेशी वस्तु स्वीकार '०६
पूर्णिमा देवी : ऊन की बुनाई की प्रथम शिक्षा '०६
ठाकुरप्रसाद खत्री : सुनारी '०७
मोहन गिरि : सर्पमन्त्र-भण्डार '०७
वीरविक्रम देव : गजशास्त्र '०७
ठाकुरप्रसाद खत्री : सुघर दर्जिन '०८
,, : देशी करघा '०८
दामोदरदास खत्री : रोज़गार '१२
दामोदर यशवन्त बर्वे : चौक पूरने की पुस्तक '१२
रामप्रसाद : गेहूँ की खेती '१४
हेमन्तकुमारी देवी : वैज्ञानिक खेती '१४
गयादत्त त्रिपाठी : खाद तथा उसका व्यवहार '१५
,, : रोशनाई की पुस्तक '१५

लक्ष्मीचन्द : सुगन्धित साबुन की पुस्तक '१५

गयादत्त त्रिपाठी : लाख की खेती '१६

जगन्नाथप्रसाद : देशी रँगाई '१६

लक्ष्मीचन्द : रङ्ग की पुस्तक '१६

" : तेल की पुस्तक '१६ ?

गणेशदत्त : अफ़ीम की खेती '१८

जे० एस० गहलोत : राजस्थान की कृषि सम्बन्धी कहावतें '१८

रामप्रसाद : मूँगफली की खेती तथा मक्का की खेती '१८

" : आलू की खेती '१८

कस्तूरमल बाँठिया : हिन्दी बही-खाता '१६

गङ्गाशङ्कर नागर : कपास की खेती '१६

दुर्गाप्रसाद सिंह : कृषि-कौमुदी '१६

मुख्त्यार सिंह वकील : खाद '१६

तेजशङ्कर कोचक : कपास और भारतवर्ष '२०

गङ्गाशङ्कर नागर : आलू '२१

" : केला '२१

राजनारायण मिश्र : बाग़बानी '२१

शिवनारायण देरात्री : भारत में खेती की तरक्क़ी के तरीक़े '२१

" : पौधों में कड़वा रोग '२१

" : ढोरों के गोबर और पेशाब का कारबार '२१

शिवनारायण देरात्री : ढोरों में पाता रोग की विशेषता '२१

कन्हैयालाल शर्मा : विज्ञापन-विज्ञान '२२

" : सफल दूकानदारी '२२ ?

गङ्गाप्रसाद भोतिका : विक्रय-कला '२२

नारायणप्रसाद अरोड़ा : दूकानदारी '२२

महावीरप्रसाद द्विवेदी : औद्योगिकी '२२

राजनारायण मिश्र : गिल्टसाज़ी '२२

लक्ष्मीचन्द : तन्तुकला '२३

कस्तूरमल बाँठिया : व्यापारिक पत्र-व्यवहार '२३

गङ्गाशङ्कर नागर : सुवर्णकारी '२३

पन्नालाल : पत्र-लेखन '२३

तेजशङ्कर कोचक : कृषि-शास्त्र '२४ तृ०

प्यारेलाल : वृत्तावली '२४ तृ०

शङ्करराव जोशी : वर्षा और वनस्पति '२४

" : उद्यान '२४

कस्तूरमल बाँठिया : रूई और उसका मिश्रण '२५

गौरीशङ्कर शुक्ल : व्यापार सङ्गठन '२५

सत्यजीवन वर्मा : जिल्दसाज़ी '४१
दयाराम जुगड़ाण : मधुमक्खी पालन '४२
रमा ताम्बे : गृह-शास्त्र '४२

उपयोगी कला—बाल

इबादुर्रहमान खाँ सं० : कताई '४१
,, : मिट्टी का काम '४१
,, : मधुमक्खी-पालन '४१
इबादुर्रहमान खाँ सं० : खेती और बाग़बानी '४१
शीतलाप्रसाद तिवारी : कृषि-प्रवेशिका '४१

उपयोगी कला—अनूदित

(संस्कृत-प्राकृत)

वशिष्ठ : धनुर्वेद - संहिता
अज्ञात : वास्तु - प्रबन्ध
अज्ञात : ताम्बूल पद्धति
,, : लघुशिल्प - संग्रह
(विश्वकर्मा ?) : विश्वकर्मा-प्रकाश

(बँगला)

हेमचन्द्र मित्र : कृषि-दर्पण

(मराठी)

सखाराम गणेश देउस्कर : गोरस और गोधन-शास्त्र
आर० एस० देशपाण्डे : सुलभ वस्तुशास्त्र

(यूरोपियन-ऐंग्लोइंडियन)

ग्रेग, रिचार्ड : खद्दर का सम्पत्ति-शास्त्र
बुनेविया : हिन्दुस्तान में छुहारे की पैदावार
टैनर, हेनरी : खेती की विद्या के मुख्य सिद्धान्त
पुन्ताम्बेकर : हाथ की कताई-बुनाई

१३

शरीर-रक्षा—तत्कालीन

डीमलर, जे० जी० : ए ट्रैक्ट ऑन हार्ट '६७
अम्बिकादत्त व्यास : महाताश कौतुक-पचासा '७२
गङ्गाराम यती : निदान '७७
अम्बिकादत्त व्यास : ताश कौतुक-पच्चीसी '८०
केदारनाथ चैटर्जी : होम्योपैथिक-सार '८२
जनार्दन भट्ट : वैद्यक-रत्न '८२
दामोदर शास्त्री : नियुद्ध शिक्षा' ८२
मदन भट्ट : शतरञ्ज-विलास '८३
अम्बिकादत्त व्यास : चतुरङ्ग चातुरी '८४
जानकीप्रसाद : शतरञ्ज-विनोद '८५
रङ्गीलाल : जर्राही-प्रकाश '८५
श्रीकृष्ण शास्त्री : चिकित्सा धातु-सार '८५
रघुबरदयाल पाठक : तिब्बरत्न '८६
वेलीराम : 'ह्यूमन अनॉटमी' '८७
ब्रजलाल : शस्त्र-चिकित्सा '८७
काशीनाथ पण्डित : सदासुखी '८८
दत्तराम चौबे सं० : बृहत् निघण्टु-रत्नाकर '८९
रविदत्त सं० : निघण्टु-रत्नाकर भाषा '९२
,, : नाड़ी-प्रकाश '९२
शिवचन्द्र मैत्र : पशु-चिकित्सा '९५
महेन्दुलाल गर्ग : दन्तरक्षा '९६
विष्णुदत्त, पं० : शारीरक भाषा '९७८
केशवसिंह : करि-कल्पलता '९८
लल्लयजन सिंह देव : महिषी-चिकित्सा '९९
महेन्दुलाल गर्ग : परिचर्या-प्रणाली '१९००
दत्तराम चौबे सं० : अभिनव निघंटु '०१
नारायणदास, पं० : निदान-विद्या '०१
पत्तनलाल : देशी खेल '०१
प्यारेलाल : कायाकल्प '०१
किशोरीलाल शर्मा सं० : मृत्यु-परीक्षा '०२
सत्यभामा देवी : धात्री-विद्या '०३

कालिदास माणिक : सरल व्यायाम '०७
मनोहरलाल चौबे : खेल शतरंज '११
कालिदास माणिक : राममूर्ति और उनका व्यायाम '१२
चन्द्रमौलि सुकुल : शरीर और शरीर-रक्षा '१३
मुकुन्दस्वरूप वर्मा : शिशुपालन '१५
बलदेवप्रसाद सक्सेना : इलेक्ट्रो-होम्योपैथी '१६
रामचन्द्र वर्मा : मानव जीवन '१७
शिवचन्द्र : धात्रीकर्म-प्रकाश '१८-
ताराचन्द दोशी : दुग्धोपचार '१८
त्रिलोकीनाथ वर्मा : हमारे शरीर की रचना '१८
मदनमोहन : खेलकूद '२१
शिवानन्द स्वामी : ब्रह्मचर्य ही जीवन है '२२
धर्मानन्द शास्त्री : बालरोग-विज्ञान '२३
छोटेलाल जीवनलाल : दुग्ध-चिकित्सा '२४
राधिकाप्रसाद सं० : मन्त्र-सागर '२४
जी० आर० पाण्डेय : लाठी '२५
रघुनन्दन शर्मा : देशी खेल '२५
शालिग्राम शास्त्री : आयुर्वेद महत्व दीपिका '२५
हरिनारायण शर्मा : भारतीय भोजन '२५
केदारनाथ गुप्त : हम सौ वर्ष कैसे जीवें ? '२६
रामदास गौड़ : स्वास्थ्य-साधन '२६
हरिशरणानन्द : आसव-विज्ञान '२६
अत्रिदेव गुप्त : न्याय वैद्यक और विषतन्त्र '२७
ठाकुरदत्त शर्मा : दुग्ध और दुग्ध की वस्तुएँ '२७
लालबहादुर लाल : तात्कालिक चिकित्सा '२७
हरिशरणानन्द : उपयोगी चिकित्सा '२७
दुर्गा देवी : शिशु-पालन '२८
शिवचरण शर्मा : फेफड़ों की परीक्षा और उनके रोग '२८
यज्ञदत्त ओझा : लाठी-शिक्षक '२८
देवराज विद्यावाचस्पति : जल-चिकित्सा-विज्ञान '२६
माणिकराव : सङ्ग व्यायाम '२६
मुकुन्दस्वरूप वर्मा : मानव शरीर-रहस्य '२६
शिवचरण वर्मा : व्रण बन्धन और पट्टियाँ '२६
गणेशदत्त शर्मा : स्त्रियों के व्यायाम '३०
गोवर्धनसिंह : अश्व-चिकित्सा '३०

रामदयाल कपूर : रोगी-परिचर्या '३०
हीरालाल : माँ और बच्चा '३०
कृष्णकान्त मालवीय : मातृत्व '३१
प्रतापसिंह कविराज : आयुर्वेद खनिज-विज्ञान '३१
महेन्दुलाल गर्ग : डॉक्टरी चिकित्सा '३१
रामदयाल कपूर : प्रसूति तन्त्र '३१
श्रीनिवास बालाजी हर्डीकर : सूर्य व्यायाम '३१
अत्रिदेव गुप्त : धात्री-विद्या '३२
कृष्णकुमारी देवी : ज़च्चा '३२
धर्मानन्द शास्त्री : स्त्रीरोग-विज्ञान '३२
,, : विष-विज्ञान '३२
महेन्द्रनाथ भट्टाचार्य : पारिवारिक भैषज्यतत्व '३५
मुकुन्दस्वरूप वर्मा : स्वास्थ्य-विज्ञान '३८
,, : विष-विज्ञान '३२
केदारनाथ गुप्त : स्वास्थ और जल-चिकित्सा '३३
जगन्नाथप्रसाद शुक्ल : आहार-शास्त्र '३३
त्रिलोकीनाथ वर्मा : स्वास्थ्य और रोग '३३
धर्मानन्द शास्त्री : शल्य तन्त्रम् '३३
शङ्करलाल गुप्त : क्षय रोग '३३
सीताराम पाण्डेय : लेजिम शिक्षण '३३
रूपलाल वैश्य : रूप-निघण्टु '३४
विश्वनाथ द्विवेदी : तेल-संग्रह '३४
अत्रिदेव गुप्त : मलावरोध-चिकित्सा '३५
आनन्दस्वरूप : आसनों के व्यायाम '३५
प्रतापसिंह कविराज सं० : आयुर्वेद महामण्डल का रजत-जयन्ती ग्रन्थ '३५
मनोरञ्जन बैनर्जी सं० : वृहत् मैटीरिया मेडिका '३५
महेन्द्रनाथ भट्टाचार्य : व्यापारिक चिकित्सा '३५ सप्तम
रामचन्द्र मुनि : बायोकेमिक विज्ञान चिकित्सा '३५
अम्बालाल शर्मा : क्षयरोग और उसकी चिकित्सा '३६
नारायणराव: स्तूपनिर्माण-कला '३६
,, : जुजुत्सु '३६
मुकुन्दस्वरूप : मानव शरीर-रचना-विज्ञान '३६
केदारनाथ गुप्त सं० : प्राकृतिक चिकित्सा '३७
प्यारेलाल : छाती के रोगों की चिकित्सा '३७

शरीर-रक्षा—बाल

हरिश्चन्द्र : मानलीला '७३ सङ्कठाप्रसाद : बाल-व्यायाम '

शरीर-रक्षा—अनूदित

(संस्कृत-प्राकृत)

अग्निवेश : अञ्जन - निदान
चरक : —संहिता
सुश्रुत : —संहिता
वाग्भट्ट : अष्टाङ्गहृदय
धन्वन्तरि : धन्वन्तरि (निघण्टु)
माधव : —निदान
बङ्गसेन : बङ्गसेन
शार्ङ्गधर : —संहिता
मदनपाल : मदनविनोद निघण्टु
भावमिश्र : भावप्रकाश
लोलिम्बराज : वैद्यजीवन
अज्ञात : नाड़ी-प्रकाश
प्रभाकर गुप्त : अंतःक्षेपण तन्त्र
जयसिंह : अमृतसागर
प्रतापसिंह, सवाई : अमृतसागर
श्रीगोपाल रामचन्द्र ताम्बे : सुश्रूषा
मोहनदास क० गांधी : आरोग्य-दिग्दर्शन
रावण : अर्कप्रकाश
राजवल्लभ : —निघण्टु
वात्स्यायन : कामसूत्र
गोरक्षनाथ : कामशास्त्र
जयदेव : रतिमञ्जरी
अज्ञात : गौरी कञ्चलिका तन्त्र
" : कामतन्त्र
" : पारद-संहिता
" : रसराज-महोदधि

(यूरोपियन-ऐंग्लोइंडियन)

कुहने, लुई : आरोग्यता प्राप्त करने की नवीन विद्या
" : बच्चों की रक्षा
" : जलद्वारा रोगों की चिकित्सा
कुहने, लुई : आकृति-निदान
ब्वायड : वेदना विहीन प्रसव
मैकफैडन : उपवास-चिकित्सा
केण्ट : होम्योपैथिक मैटिरिया-मेडिका

विज्ञान—प्राचीन

विज्ञान—तत्कालीन

पृथ्वीनाथ सिंह : उद्भिज्ज-विद्या '०५
शम्भुसिंह : ज्योतिष कल्पद्रुम ०५
आनन्द बिहारी लाल : 'रसायन शास्त्र '०६
फतेहसिंह वर्मा, राजा : फलित ज्योतिष सिद्धान्त गुटिका '०६
महेशचरण सिंह : रसायन-शास्त्र '०६
माधवसिंह मेहता : माप-विद्या-प्रदर्शिनी '०६
गयाप्रसाद मिश्र : जन्तु-प्रबन्ध '११
महेशचरण सिंह : वनस्पति शास्त्र '११
,, : विद्युत शास्त्र '१२
पी० ए० वी० जी० साठे : विकास-वाद '१४
प्रमवल्लभ जोशी : ताप '१५
सम्पूर्णानन्द : भौतिक-विज्ञान '१६
शालिग्राम भार्गव : चुम्बक '१७
सम्पूर्णानन्द : ज्योतिर्विनोद '१७
आत्माराम : रसायन इतिहास-सम्बन्धी कुछ लेख '१८ ?
रामचन्द्र वर्मा : भूकम्प '१८
तेजशङ्कर कोचक : पैमाइश '१६
सुखसम्पतिराय भण्डारी : विज्ञान और आविष्कार '१६
कृष्णगोपाल माथुर : व्यावहारिक विज्ञान '२०
सुखसम्पतिराय भण्डारी : ज्योति-विज्ञान '२०
जगन्नाथप्रसाद 'भानु' : काल-प्रबन्ध '२१
विन्ध्येश्वरीप्रसाद मिश्र : सौर-साम्राज्य '२२
शालिग्राम भार्गव : पशुपक्षियों का शृङ्गार-रहस्य '२२
गोपालस्वरूप भार्गव : मनोरञ्जक रसायन '२३
सुखसम्पतिराय भण्डारी : डॉ० सर जगदीशचन्द्र बोस और उनके आविष्कार '२४
जगदानन्द राय : ग्रह-नक्षत्र '२५
,, : वैज्ञानिकी '२५
,, : प्राकृतिकी '२५
कल्याण सिंह शेखावत : प्राकृतिक सौन्दर्य '२६
नन्दलाल : पैमाइश '२७
केशव अनन्त पटवर्धन : वनस्पति-शास्त्र '२८
फूलदेवसहाय वर्मा : प्रारम्भिक रसायन '२८
सत्यप्रकाश : वैज्ञानिक परिमाण '२८
प्रवासीलाल : वृक्ष-विज्ञान '२६
रामशरणदास : गुणात्मक विश्लेषण क्रियात्मक रसायन '२६

सत्यप्रकाश : साधारण रसायन '२६
,, : कारबनिक रसायन '२६
निहालकरण सेठी: प्रारम्भिक भौतिक विज्ञान '३०
महावीरप्रसाद द्विवेदी : विज्ञान-वार्ता '३०
मुकुटविहारी वर्मा : जीवन-विकास '३०
ब्रजेशबहादुर : जन्तुजगत '३०
एन० के० चैटर्जी : उद्भिज्ज का आहार '३१
सत्यप्रकाश : बीज-ज्यामिति '३१
गोरखप्रसाद : सौर-परिवार '३२
धीरेन्द्रनाथ चक्रवर्ती : जीवत्व-जनक '३२ ?
फूलदेवसहाय वर्मा : साधारण रसायन '३२
वासुदेव विट्ठल भागवत : प्रकाश-रसायन '३२
शम्भुदयाल मिश्र : जीवन-विज्ञान '३३
मनोहरकृष्ण : विज्ञान-रहस्य '३४
शुकदेव पाण्डेय : त्रिकोणमिति '३५
श्यामापद बैनर्जी : सर्प '३५
गुलाबराय : विज्ञान-वार्ता '३६ ?
चन्द्रशेखर शास्त्री : आधुनिक आविष्कार '३६
,, : पृथ्वी और आकाश '३६
चन्द्रशेखर शास्त्री : जीवनशक्ति का विकास '३६
यतीन्द्रभूषण मुकुर्जी : वैज्ञानिकी '३६
रामदास गौड़ : विज्ञान-हस्तामलक '३६
गोरखप्रसाद : आकाश की सैर '३७
सत्यप्रकाश : सृष्टि की कथा '३७
नोनीलाल पाल : नित्य व्यवहार में उद्भिज्ज का स्थान '३८ ?
जगन्नाथप्रसाद गुप्त : सरल त्रिकोणमिति '३६
दुर्गाप्रसाद दुवे : क्षेत्रमिति '३६
शचीन्द्रनाथ सान्याल : वंशानुक्रम-विज्ञान '३६ ?
कल्याणबख्श माथुर : वायु-मण्डल '४०
भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव : विज्ञान के चमत्कार '४०
सन्तप्रसाद टण्डन : वनस्पति-विज्ञान '४०
कृष्णानन्द गुप्त : जीव की कहानी '४१
गिरिजाप्रसाद शर्मा : विमान '४१
रामरत्न भटनागर : आकाश की कथा '४२

विज्ञान—बाल

शिवप्रसाद सितारेहिन्द : बच्चों का इनाम '६७ तृ०

नारायणप्रसाद, पंडित : पदार्थ-विद्या '०८

वृन्दाप्रसाद शुक्ल : वायुयान '१६

रामदास गौड़ : विज्ञान-प्रवेशिका-'२४

जगपति चतुर्वेदी : समुद्र पर विजय '२६

,, : वायु पर विजय '३१

भगवतीप्रसाद वाजपेयी : आकाश-पाताल की बातें '३२

कन्हैयालाल दीक्षित : विचित्र जीव-जन्तु '३३

सुदर्शन : विज्ञान-वाटिका '३३

जगपति चतुर्वेदी : वायुयान '३४

'व्यथित हृदय' : जीव-जन्तुओं की कहानियाँ '३७

श्यामनारायण कपूर : विज्ञान की कहानियाँ '३७

शम्भुनाथ शुक्ल : गुब्बारे में पाँच सप्ताह '३८

सन्तप्रसाद टण्डन : प्रारम्भिक विज्ञान '४०

जगपति चतुर्वेदी : आग की करामात '४१

,, : वायु के चमत्कार '४१

विज्ञान—अनूदित

(संस्कृत-प्राकृत)

अज्ञात : सूर्य-सिद्धान्त

आर्यभट्ट : आर्यभटीयम्

भास्कर : सिद्धान्त-शिरोमणि

,, : करण-लाघव

,, : लीलावती

मकरन्द : —सारिणी

गर्ग : —मनोरमा

गणेश दैवज्ञ : ग्रहलाघव

मानसागर : मानसागरी

नारद : संहिता

पराशर : वृहत् पाराशरी

,, : लघु पाराशरी

यवनाचार्य : रमल गुलज़ार

वाराहमिहिर : वृहत्संहिता

,, : वृहज्जातक

,, : लघुजातक

राम दैवज्ञ : मुहूर्त-चिन्तामणि

,, : यन्त्र-चिन्तामणि

रामकृष्ण दैवज्ञ :	प्रश्न-चण्डेश्वर	नीलकण्ठ	: ताजिक नीलकण्ठी
गणेश दैवज्ञ :	जातकालङ्कार	रुद्रमणि	: प्रश्न-शिरोमणि
जीवनाथ शर्मा :	भाव-कुतूहल	रहीम	: खेट-कौतुकम्

(मराठी)

सदाशिवनारायण दातार : जीवन-विकास

(बँगला)

रामेन्द्रसुदर त्रिवेदी : प्रकृति　　रवीन्द्रनाथ ठाकुर : विश्वपरिचय

(यूरोपियन-ऐंग्लोइण्डियन)

हैकल :	विश्व-प्रपञ्च	डेशुम्बर्ट	: प्रकृति की नीति
चैम्बर्स :	रुडिमेण्ट्स आव् साइन्स	आवर्बरी	: प्राकृतिक सौन्दर्य

समाजशास्त्र—तत्कालीन

श्रीनिवासदास : राजनीति '६६
जसुराम और देवीदास : राजनीति-संग्रह '७२
देवीदास : राजनीति '७६
सुखदयाल, पण्डित : न्याय-बोधिनी-'८२
गणपति जानकीराम दुवे : मनोविज्ञान '०४
मिश्रबन्धु : व्यय '०५ द्वि०
परमानन्द : तर्कशास्त्र '०६
ब्रजनन्दन सहाय : अर्थशास्त्र '०६
गणेशदत्त पाठक : अर्थशास्त्र-प्रवेशिका '०७
मुन्शीलाल : शील और भावना '०६
सत्यदेव, स्वामी : मनुष्य के अधिकार '१२
अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी : हिन्दुओं की राज्य-कल्पना '१३
बालकृष्ण : अर्थशास्त्र '१४
शिवचन्द्र भरतिया : विचार-दर्शन '१६
राधामोहन गोकुल जी : श्रमोपजीवी समवाय '१८
कुन्दनलाल गुप्त : सरल मनोविज्ञान '२१
प्राणनाथ विद्यालङ्कार : शासन-पद्धति '२१
,, : राष्ट्रीय आय-व्यय-शास्त्र '२२
,, : राजनीति - शास्त्र '२२
भगवानदास केला : समाज-सङ्गठन '२३
सुखसम्पतिराय भण्डारी : राजनीति-विज्ञान '२३
हरिहरनाथ : संस्था-सञ्चालन '२३
उमराव सिंह : उपयोगितावाद '२४
गौरीशङ्कर शुक्ल : शिल्प-विधान '२४
चन्द्रमौलि सुकुल : मनोविज्ञान '२४
प्राणनाथ विद्यालङ्कार : मुद्राशास्त्र '२४
सुधाकर : मनोविज्ञान '२४
देवीप्रसाद 'प्रीतम' : हिन्दी भाषा में राजनीति '२५
भगवानदास केला : हिन्दी भाषा में अर्थशास्त्र '२५
सुधाकर : अमीरी व ग़रीबी '२५
गुलाबराय : तर्कशास्त्र '२६

समाजशास्त्र—बाल

समाजशास्त्र—अनूदित

(संस्कृत प्राकृत)

अन्नम् भट्ट : तर्क-संग्रह

विश्वनाथ पञ्चानन : न्याय-सिद्धान्त-मुक्तावली

(बँगला)

रवीन्द्रनाथ ठाकुर : राजा और प्रजा

(गुजराती)

कालेलकर, काका : लोकजीवन

,, : गांधीवाद-समाजवाद

किशोरीलाल ध० मशरूवाला : सोने की माया

(यूरोपियन—ऐंग्लो इण्डियन)

मिल : स्वाधीनता

,, : प्रतिनिधि शासन

स्माइल्स : मितव्ययिता

,, : स्वावलम्बन

मोरलैण्ड : अर्थविज्ञान

फ़ासेट : अर्थशास्त्र

मैक्स्विनी : स्वाधीनता के सिद्धान्त

टॉड : अच्छी आदतें डालने की शिक्षा

शा, बर्नर्ड : समाजवाद-पूँजीवाद

टी० माधवराव, सर : राज्यप्रबन्ध-शिक्षा

मोहनदास क० गांधी : व्यावहारिक ज्ञान

बी० रा० मोडक : प्रजातन्त्र

ऐलेन जेम्स : उन्नति का मार्ग

,, : शान्ति की ओर

,, : सफलता के सात साधन

क्रोपाटकिन, प्रिन्स : नवयुवकों से दो दो बातें

१६

शिक्षा—तत्कालीन

मुहम्मद हुसैन : पाठशालाओं का प्रबन्ध '८३

मनोहरलाल : भारतवर्ष में पश्चिमीय शिक्षा '१०

सत्यदेव, स्वामीः जातीय शिक्षा '१२

घनश्याम सिंह : भारत-शिक्षादर्श '१४

महावीरप्रसाद द्विवेदी : शिक्षा '१६

[illegible] बलवंत यादव : ग्रामीण शिक्षा '२१

हरदयाल, लालाः अमृत में विष '२२

हरिदत्त शास्त्री : प्राच्य शिक्षा-रहस्य '२२

गोपाल दामोदर तामस्कर : शिक्षा-मीमांसा '२५

शेषमणि त्रिपाठी : शिक्षा का व्यंग्य '२७

चन्द्रशेखर शास्त्रीः कन्या शिक्षा '२८

कन्हैयालाल : राष्ट्रीय शिक्षा का इतिहास और उसकी वर्तमान अवस्था '२९

लज्जाशङ्कर झा : भाषा शिक्षण-पद्धति '२९

गोपीलाल माथुर : शिक्षा-विधि '३०

प्रेमवल्लभ जोशी : पाठशाला तथा कक्षा-प्रबन्ध और शिक्षा-सिद्धान्त '३०

हंसराज भाटिया : शिक्षा-मनोविज्ञान '३१

इन्द्रनारायण अवस्थी : भाषा शिक्षा-विधान '३१

भैरवनाथ झा : मनोविज्ञान और शिक्षाशास्त्र '३२

चन्द्रावती लखनपाल : शिक्षा-मनोविज्ञान '३४

लज्जाशङ्कर झा : शिक्षा और स्वराज्य '३४

श्रीनारायण चतुर्वेदी : शिक्षा विधान परिचय '३५

कालिदास कपूरःशिक्षा-समीक्षा '३७

श्रीनारायण चतुर्वेदी : ग्राम्य शिक्षा का इतिहास '३८

ज़ाकिर हुसेन : बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा '३९ द्वि

रामेश्वरप्रसाद त्रिपाठी : प्रौढ़ शिक्षा-प्रदीपिका '३९

लज्जाराम शुक्लः बाल-मनोविज्ञान '३६

सीताराम चतुर्वेदी : भाषा की शिक्षा '३६

सूर्यभूषण लाल : शिक्षण-कला '३६

हरिभाई त्रिवेदी : शिक्षा में नई दृष्टि '४१

लक्ष्मीचन्द : बेसिक शिक्षा में समन्वय '४२

सीताराम चतुर्वेदी : अध्यापन-कला '४२

शिक्षा—अनूदित

(बँगला)

रवीन्द्रनाथ ठाकुर : शिक्षा

(यूरोपियन-ऐंग्लोइण्डयन)

मोहनदास क० गांधी: विद्यार्थियों से

१७

धर्म—प्राचीन

रैदास :—की बानी
,, :—रामायण
कबीर : अनुरागसागर
,, : आत्मबोध
,, : एकोत्तर-शतक
,, : काफ़ि-रबोध
,, : रमैनी
,, : शब्दावली
,, : साखी
,, : हंस-मुक्तावली
,, : ज्ञान-समाज
,, : अखरावती
,, :—शतक
,, : बोधसागर
,, :—लीलामृत
,, :—सागर
,, :—का ग्रन्थ
,, :—बीजक
,, :—भक्ति-प्रकाश
,, :—वाणी
,, : बीजकसार कबीर पन्थ
,, : ग्रन्थावली
,, : —उपदेश-रत्नावली

कबीर : —दर्पण
धर्मदास :—शब्दावली
नानक : प्राणसांगली
,, : सिद्धगोष्ठ
मुहम्मद जायसी, मलिक : अखरावट
तुलसीदास : वैराग्य सन्दीपिनी
,, : सतसई
,, : दोहावली
,, : रामनीति-शतक
,, : सूरज-पुरान
जमाल :—कृत दोहे
रहीम : नीति-कुण्डल
केशवदास : विज्ञान-गीता
गोकुलनाथ : -वचनामृत
,, : गोवर्धनवासी चिन्तन
,, : वनयात्रा
,, : श्रीपवित्रा एकादशी तूं घोल
मलूकदास :—की बानी
अखा :—वाणी
बनारसीदास :—बनारसी विलास
रामदास, स्वामी :—की वाणी
दादूदयाल :—शब्द

दादूदयाल :—साखी-संग्रह
,, :—की बानी
हरिराय जी : नित्यलीला भावना-प्रकाश
,, : श्रीनाथ जी के प्राकट्य की वार्ता
,, : बड़े शिक्षा-पत्र
भगवानदास साधु : अमृतधारा
वृन्द :—सतसई
सुन्दरदास : सुन्दर-विलास
,, : वेदान्त
,, : विपर्यय के अङ्ग
,, : सुन्दर-शृङ्गार
,, :—कृत सवैया
,, :—कृत काव्य
,, : ज्ञान-समुद्र
धरनीदास :—की बानी
प्रियादास शुक्ल : भक्ति ज्ञानामृत-वर्षिणी
दरिया साहिब (बिहार वाले ?) : दरिया सागर
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले ?) :—की बानी
बुल्ला साहिब :—का शब्द-सागर
गुलाल साहिब :—की बानी
यारी साहब : रत्नावली
केशवदास (सन्त) : अमीघूंट
भिखारीदास : वर्ण-निर्णय

चरणदास : भक्ति सागरादि (१७ ग्रन्थ)
,, : ज्ञान-स्वरोदय
,, :—बानी
,, : नासिकेत भाषा
,, : ब्रह्मविद्यासार
अनन्य (अक्षर) : प्रेम-दीपिका
,, : सुन्दरी चरित्र
,, :—ग्रन्थावली
गिरिधर कविराय : आत्मानुभव-शतक
,, : कुण्डलिया
,, :—काव्य
भीखा साहिब :—की बानी
गरीबदास : रतनसागर
,, :—की बानी
जगजीवनदास :—शब्दावली
दूलनदास :—की बानी
दयाबाई :—की बानी
सहजोबाई (चरणदास तथा—) : ब्रह्मविद्यासार
,, : की बानी
,, : सहज-प्रकाश
बैताल (गिरिधर और) : कुण्डलिया
मान कवीश्वर : नीति-विधान
तुलसीदास (हाथरस वाले) : घट-रामायण

तुलसीदास (हाथरसवाले) : की शब्दावली
,, : रत्नसागर
पलटू साहिब :—की बानी
लल्लू जी लाल : प्रेमसागर
सदल मिश्र : चन्द्रावती (नासिकेतोपाख्यान)
निश्चलदास : विचार-सागर
निश्चलदास : वृत्ति-प्रभाकर
अनाथदास : विचार-माला
दयादास : विचार-प्रकाश
,, : विनय-माला
पूरनदास : निर्णय-सागर
रामदास (कबीर-पन्थी) : पञ्चग्रन्थी
तेग़-बहादुर : नानक-विनय
,, : की वाणी

धर्म—तत्कालीन

गणपतराय : पंजरतन '६७
छत्रधारीशाह : अद्भुत रामायण '६७
रूपनारायण शर्मा : स्त्री-चर्या '६८
व्रजदास : श्री गोस्वामी महाराजकी वंशावली '६८
हरिश्चन्द्र : कार्तिक कर्मविधि '६९
अर्जुनसिंह कुनपाव : वेदान्तसार-संग्रह '७०
जयप्रकाशलाल, पं० : जगोपकारक '७१
ठाकुरप्रसाद : दस्तूरअमल शादी [अहीर, कसेरा, कोइरी, बनिया, हलुवाई] '७१
पालराम शर्मा सं० : शील-रत्नाकर '७१
शिवप्रसाद सितारेहिन्द : जाति की फ़िहरिस्त '७१
श्रद्धाराम शर्मा : आत्म-चिकित्सा '७१
हरिश्चन्द्र : अगरवालों की उत्पत्ति '७१
नवीनचन्द्रराय : आचारादर्श '७२
रामस्वरूप तिवारी : नीतिसुधा-तरंगिणी '७२
गोपालदास : वल्लभाख्यान '७३
नवीनचन्द्रराय : धर्मदीपिका '७३
,, : ब्राह्म धर्म के प्रश्नोत्तर '७३
हरिश्चन्द्र : जैन-कुतूहल '७३
कृष्णचन्द्र धर्माधिकारी : ज्ञान-प्रदीप '७४
,, : सम्यक्त निर्णय '७४
कृष्णदास : ज्ञान-प्रकाश '७४
चम्पाराम : धर्म लावनी '७४
भुवनचन्द्र बसक सं० : महन्त विचार '७४

हरनामचन्द्र:हिन्दू धर्म विवर्धन '७४
दयानन्द सरस्वती : सत्यार्थप्रकाश '७५
नवीनचन्द्रराय : तत्वबोध '७५
भगवत सरन : आत्मज्ञान मञ्जरी'७५
साधूराम : वाक् सुधाकर '७५
हरिदास बाबा : परमार्थ चिन्तन-विधि '७६
तोताराम शर्मा : शांति शतक '७७
पीताम्बर पं०: विचार चन्द्रोदय'७८
ज्ञानानन्द : गीतध्वनि '७६
लक्ष्मीनाथ परमहंस : पदावली '७६
शम्भुनाथ : कलिविजय '७६
दयानन्द सरस्वती : भ्रांति-निवारण '७६
श्यामलालसिंह, कुँवर : ईश्वरोपासना '८०
दयानन्द सरस्वती : गोकरुणानिधि '८१
बालजी बेचर : सोर्सेज़ आव् कबीर रेलिजन '८१
रामावतारदास : सन्तविलास '८१
हरिदयाल : सार उक्तावली '८१
पीताम्बर पं० : बालबोध '८२
काशीनाथ खत्री : बालविवाह की कुरीति '८३
प्रतापसिंह भोंसले : सत्यसागर '८३
,, : ब्रह्मस्मृति '८३
यमुनाशङ्कर नागर : विज्ञान-लहरी '८३
वल्लभराम सूजाराम व्यास : वल्लभ-नीति '८३
हरिश्चन्द्र :खत्रियों की उत्पत्ति'८३
आत्माराम जी आनन्द विजय जी : जैनतत्वादर्श ग्रन्थ '८४
राधास्वामी : सार वचन [नसर] '८४
राधास्वामी : ,, [नज़्म] '८४
श्यामदास साधु : ग्रन्थत्रयम् '८४
हरिश्चन्द्र : कार्त्तिक-स्नान '८४
,, : प्रातःस्मरण मङ्गलपाठ '८४
अम्बिकादत्त व्यास:धर्म की धूम'८५
काशीनाथ खत्री : मनुष्य को सच्चा सुख किसमें है ? '८५ द्वि०
शिवप्रसाद सितारे हिन्द : लेक्चर '८५
हरिश्चन्द्र:बलिया में भारतेन्दु'८५?
चिद्घनानन्द गिरि : तत्वानुसंधान '८६
जगमोहन सिंह : देवबानी '८६
प्रतापनारायण मिश्र : मानस-विनोद- '८६
हरिहरप्रसाद : वैराग्य प्रदीप '८६
रत्नचन्द लीडर:चातुर्य-तार्णव '८७
राधाचरण गोस्वामी : विदेश यात्रा विचार '८७

समर्थदान:आर्यसमाज परिचय '८७
काशीनाथ : तावीज '८८
निर्मलदास : निर्मल-कृति '८८
ब्रह्मानन्द : प्रबोधशतक '८८
रामस्वरूप लाला सं०:ज्ञानाङ्कुर '८८
गयाप्रसाद त्रिपाठी : तिथि रामायण '८६
नृसिंहाचार्य : नृसिंह-वाणीविलास '८६
ब्लैकेट:वल्लभकुल चरित्रदर्पण '८६
ब्रजजीवनदास सं० : वल्लभविलास '८६
हरिश्चन्द्र : कार्त्तिक नैमित्तिक कृत्य '६०
„ : मार्गशीर्ष महिमा '६०
„ : दूषण मालिका '६०
„ : उत्सवावली '६० ?
„ : गो-महिमा '६० ?
गोपालराव हरि : प्रस्ताव-रत्नाकर '६०
नन्दलाल शर्मा : उद्यान-मालिनी '६०
बालाबख्श चारण : उपदेश-पञ्चाशिका '६०
श्रीनारायण शर्मा : भजनामृत '६०
अज्ञात : पुष्टिमार्गीय गुरुपरंपरा-विचार '६१
अम्बिकादत्त व्यास : स्वर्ग सभा '६१
नरसिंह केसरीसिंह : भजनावली '६१
रघुराजसिंह राजा:भक्तिविलास '६१
प्रतापनारायण मिश्र : पञ्चामृत '६२
रामनारायण : नीतिकुसुम '६२
हरिशङ्कर सिंह : नीति-पञ्चाशिका '६२
„ : वेदान्त-शतक '६२
हेमराज स्वामी : शांति-सरोवर '६२
खुशालदास : विचार-रत्नावली '६३
रमाकान्त शरण : प्रेमसुधा-रत्नाकर '६३
बसन्त जायसी : समुद्रलहरी '६४
विष्णुदास : द्वादश-ग्रन्थी '६४
„ :गहिर गम्भीर सुखसागर ग्रन्थ '६४
विशुद्धानन्द बाबा : पक्षपात रहित अनुभव प्रकाश '६५
सेवानन्द ब्रह्मचारी:ब्रह्मसङ्गीत '६५
सियादास:भाषा अवध माहात्म्य '६६
अम्बिकाप्रसाद वर्मा : अम्बिका-भजनावली '६८
भजनदेव स्वामी : क्षेत्रज्ञान '६८
रघुनाथदास रामसनेही : विश्राम-सागर '६८
ब्रजभूषणदास : वल्लभ-विलास '६८
गणेशसिंह : गुरुनानक सूर्योदय '१६००

जगन्नाथदास : धर्म-संताप '१६०० ?
,, : हरिश्चन्द्र कथा '१६००
ज्वालाप्रसाद मिश्र : जाति-निर्णय '१६००
दुर्गाप्रसाद मिश्र: भारत धर्म '१६००
अयोध्यासिंह उपाध्याय : उपदेश-कुसुम '०१
जानकीप्रसाद महंत : रामस्तवराज '०१
तेजनाथ झा : भक्तिप्रकाश '०१
बलदेवप्रसाद मिश्र : महाविद्या '०१
कृष्णानन्द उदासी : नानक सत्य-प्रकाश '०२
देवरतन शर्मा : शिष्टाचार '०२
मुन्शीलाल : पवित्र जीवन और नीति शिक्षा '०२
रामचरणदास : राममाहात्म्य-चन्द्रिका '०२
बैजनाथ : धर्मसार '०३
,, : धर्मविचार '०३
लक्ष्मीशङ्कर मिश्र : महिषापुर '०३
शङ्करदयालु मिश्र : वल्लभाचार्य संप्रदायाष्टकम् '०३
साहबदास : वैराग्य-रत्नाकर '०३
हंसस्वरूप स्वामी : षट्चक्र-निरूपण '०३
अक्षयसिंह वर्मा : अक्षयनीति सुधाकर '०४
अवध बिहारीलाल: वर्ण-निर्णय '०४
जवाहिरलाल: उपखान पचासा '०४
मकन जी कबीरपन्थी : कबीरोपासना-पद्धति '०४
सकलनारायण पाण्डेय : सृष्टितत्व '०४
सीताराम लाला : नीति-वाटिका '०४
ओंकारदास शर्मा : श्री मद्गुपासना तत्वदीपिका '०५
गोपाल जी वर्मन : जीव इतिहास प्रसङ्ग '०५
गोपालदास : भक्तिप्रकाश '०५
बैजनाथ : भारत-विनय '०५
ललनपिया : धर्मध्वजा '०५ ?
शिवनाथ : वैदिक जीवन '०५
सत्यानन्द अग्निहोत्री : नीतिसार '०५ द्वि०
बोधिदास : भक्ति विवेक '०६
ब्रह्मानन्द :—भजनमाला '०६
रघुनाथ जी शिवाजी : वल्लभ पुष्टि-प्रकाश '०६
भक्तानन्द स्वामी : वल्लभकुल छल-कपट-दर्पण '०७
शिवशङ्कर शर्मा : जाति-निर्णय '०७
सत्यानन्द अग्निहोत्री : आत्मपरिचय '०७
गोविन्दशरण त्रिपाठी : कर्त्तव्य-पालन '०८

हनुवन्तसिंह : अबला दुःख कथा '०८
शीतलप्रसाद ब्रह्मचारी : जैनधर्म का महत्व '११
सत्यानन्द अग्निहोत्री : देवशास्त्र '११
जगन्नाथ सहाय : आनन्दसागर '१२
मूलचन्द : क्या शिल्प शूद्र कर्म है ! '१२
रमानाथ शास्त्री : शुद्धाद्वैत-दर्शन '१२
राधामोहन गोकुल जी : नीति-दर्शन '१३
छोटेलाल सोती : जाति-अन्वेषण '१४
भीमसेन शर्मा : पुनर्जन्म '१४
रामचन्द्र शुक्ल : आदर्श जीवन '१४
लोचनप्रसाद पाण्डेय : नीति कविता '१४
शङ्कर बापूजी तालपड़े : मन और उसका बल '१४
श्रीलाल उपाध्याय : विश्राम-सागर '१४
आर्यमुनि, पं० : सद्दर्शनादर्श '१५
गोपालदास : तुलसी शब्दार्थ प्रकाश '१५
वालेश्वरप्रसाद सं० : लोक-परलोक-हितकारी '१६
रमानाथशास्त्री : शुद्धाद्वैतसिद्धांत-सार '१६
शिवानन्द स्वामी : आत्मदर्शन '१७
मिश्रबंधु : आत्म-शिक्षण '१८
ज्वालाप्रसाद मिश्र : जाति-भास्कर '१८
गुलाब राय : कर्त्तव्य शास्त्र '१६
नाथूराम शङ्कर शर्मा : गर्भरंडा-रहस्य '१६
प्रसिद्धनारायणसिंह : योगचर्या '२०
नवजादिकलाल श्रीवास्तव : श्रीकृष्ण '२२
गोवर्धनलाल : नीति-विज्ञान '२३
प्रसिद्धनारायण सिंह : हठयोग '२३
अज्ञात : मुकुन्दराय तथा गोपाल लालकी वार्ता '२४
ज्वालाप्रसाद सिंघल : कैवल्य-शास्त्र '२४
दयानन्द सरस्वती : आर्यगौरव '२४
नन्दकिशोर विद्यालङ्कार : पुनर्जन्म '२५
परमानन्द, भाई : जीवन-रहस्य '२५
गङ्गाप्रसाद उपाध्याय : आस्तिक-वाद '२६
" : विधवाविवाहमीमांसा '२६
नाथूराम प्रेमी : श्रमण नारद '२६
आनन्द स्वरूप : सत्सङ्ग के उपदेश '२७
कृष्णाकान्त मालवीय : सोहागरात '२७

गुलाब राय : मैत्री-धर्म '२७
शीतला सहाय : हिन्दू त्योहारों का इतिहास '२७ द्वि०
कृष्णकान्त मालवीय : मनोरमा के पत्र '२८
गङ्गाप्रसाद उपाध्याय : अद्वैतवाद '२८
दयानन्द सरस्वती : धर्म-सुधाकर '२८
परमानन्द, भाई : हिन्दू जीवन का रहस्य '२८
बलदेवप्रसाद मिश्र : जीव-विज्ञान '२८
महावीरप्रसाद द्विवेदी : आध्यात्मिकी '२८
लेखराम : सृष्टि का इतिहास '२८
सन्तराम : भारत में बाइबिल '२८
गङ्गानाथ झा, महामहोपाध्याय : धर्म-कर्म रहस्य '२६
नारायण स्वामी : मृत्यु और परलोक '२६
पदुमलाल पु० बख्शी : तीर्थरेणु '२६
हरिप्रसाद द्विवेदी : प्रेमयोग '२६
,, : विश्वधर्म '३०
भँवरलाल नाहटा : सती मृगावती '३०
प्रसिद्धनारायण सिंह : राजयोग '३१
हरिभाऊ उपाध्याय : युगधर्म '३१
कुँवरकन्हैया जू : हिन्दुओं के व्रत और त्यौहार '३२
गङ्गाप्रसाद उपाध्याय : जीवात्मा '३३
नारायण स्वामी : ब्रह्म-विज्ञान '३३
नियाज़मुहम्मद खाँ : लोकसेवा '३३
प्रसिद्धनारायण सिंह : जीवन-मरण-रहस्य '३३
वंशीधर सुकुल : वाममार्ग '३३
सुधाकर : आनन्दामृत '३३
अभयानन्द सरस्वती : शरीर-योग '३४
दयाशङ्कर दुबे : नर्मदा-परिक्रमा-मार्ग '३४
शीतलप्रसाद ब्रह्मचारी : जैन-बौद्ध तत्त्वज्ञान '३४
विजयधर्म सूरि : जैनतत्व-दिग्दर्शन '३६
आनन्द स्वरूप : यथार्थ प्रकाश-'३७-
रामदास गौड़ : हिन्दुत्व '३८
चम्पतराय जैन : धर्म-रहस्य '४०
पराशर, शाहजी : सतन्दर्शन '४०
भगवानदास : दर्शन का प्रयोजन '४१
रामदत्त भारद्वाज : व्रत त्योहार और कथाएँ '४१
शीतलप्रसाद ब्रह्मचारी : जैनधर्म में दैव और पुरुषार्थ '४१

धर्म—बाल

धर्म—अनूदित

(संस्कृत-प्राकृत)

वेदव्यास सं०	:	यजुर्वेद
,,	:	ऐतरेय उपनिषद्
,,	:	छांदोग्य ,,
,,	:	बृहदारण्यक ,,
,,	:	तैत्तरीय ,,
,,	:	कौशीतकी ,,
,,	:	केन ,,
,,	:	कठवल्ली ,,
,,	:	श्वेताश्वतर ,,
,,	:	महानारायण ,,
,,	:	ईश ,,
,,	:	मुंडक ,,
,,	:	प्रश्न ,,
,,	:	मैत्रायणीय ,,
,,	:	मांडूक्य ,,
,,	:	रामतापनीय ,,
,,	:	गोपाल तापनीय ,,
,,	:	मुक्तिक ,,
,,	:	उपमिषत् ईषाद्यष्ट
,,	:	देशोपनिषत् भाषान्तरम्
अज्ञात	:	अवस्ता
गोभिल ?	:	गोभिल गृह्यसूत्र
आपस्तंब ?	:	आपस्तंबीय गृह्यसूत्र
मनु ?	:	मानव गृह्यसूत्र
पारस्कर ?	:	पारस्कर गृह्यसूत्र
कौशिक ?	:	कौशिक गृह्यसूत्र
शांडिल्य	:	भक्ति (सूत्र) दर्शन

नारद	:	भक्तिसूत्र
,,	:	तदीय-सर्वस्व
रुद्र ?	:	रुद्री
जैमिनि	:	पूर्व मीमांसा
कणाद	:	वैशेषिक
गौतम	:	न्याय
व्यास, बादरायण	:	ब्रह्मसूत्र
पातञ्जलि	:	योग
कपिल	:	सांख्य
पराशर	:—	स्मृति
याज्ञवल्क्य	:—	स्मृति
मनु	:—	स्मृति
व्यास सं०	:	महाभारत
,,	:	हरिवंश
,,	:	ब्रह्म - पुराण
,,	:	पद्म ,,
,,	:	विष्णु ,,
,,	:	शिव ,,
,,	:	भागवत ,,
,,	:	नारद ,,
,,	:	मार्कण्डेय ,,
,,	:	अग्नि ,,
,,	:	भविष्य ,,
,,	:	ब्रह्मवैवर्त ,,
,,	:	लिङ्ग ,,
,,	:	वाराह ,,
,,	:	स्कन्द ,,
,,	:	वामन ,,

व्यास सं० : कूर्म - पुराण
,, : मत्स्य ,,
,, : गरुड़ ,,
,, : ब्रह्माण्ड ,,
(अध्यात्म रामायण)
,, : देवी-भागवत
व्यास सं० : भगवद्गीता
कपिल : कपिलगीता
दत्तात्रेय : अवधूतगीता
अष्टावक्र :—वेदांत
वशिष्ठ ? : योगवाशिष्ठ
याज्ञवल्क्य :—संहिता
अंगिरा :—संहिता
पराशर :—संहिता
शिव ? : शिवसंहिता
,, ? :—तंत्र
विष्णु ? : विष्णुसंहिता
यम ? : यमसंहिता
रावण : उड्डीशतंत्र
घेरण्ड ? : घेरण्डसंहिता
माहेश्वर भागवत : महानिर्वाण तंत्र
कृष्णानन्द : तंत्रसार
वाल्मीकि (?) : अद्भुत रामायण
,, : वेदांत रामायण
अग्निवेश मुनि : रामायण समयादर्श
वररुचि : योग-शतक
र्षकीर्ति : योगचिंतामणि

गोरक्षनाथ : गोरक्ष-पद्धति
स्वात्माराम योगीन्द्र : हठ-प्रदीपिका
गोविंदपादाचार्य : अद्वैतानुभूति
,, : षट्चक्र
चन्द्र परमहंस : विन्दुयोग
शङ्कराचार्य : सौन्दर्य लहरी
,, : व्रतार्क
,, : अपरोक्षानुभूति
,, : आत्मबोध
,, : तत्वबोध
,, : मोहमुद्गर
,, : मणि-रत्नमाला
,, : आर्यचर्पटपञ्जरिका
,, : प्रश्नोत्तरी
,, : महावाक्य-विवरण
विद्यारण्य स्वामी : पञ्चदशी
धर्मराज अध्वरीन्द्र : वेदान्त परिभाषा
मुक्तानन्द, स्वामी : विवेक-चिन्तामणि
शंकरानन्द, स्वामी : आत्मपुराण
,, : आत्मरामायण
मधुसूदन गोस्वामी : आत्मविद्या
,, : उपासनातत्व
,, : स्मार्त-धर्म
पुष्पदन्त : महिम्नस्तोत्र
रामानुजचार्य : अष्टादश-रहस्य
माधव : सर्वदर्शन-संग्रह
रामानन्द : रामानन्द आदेश

रामानन्द	: सिद्धान्तपटल	अज्ञात	: दीघनिकाय
वल्लभाचार्य	: षोडस-ग्रन्थ	,,	: मज्झिमनिकाय
रूप गोस्वामी	: लघु-भागवतामृत	,,	: धम्मालोकमुखसुत्त
सनातन	: हरिभक्तिविलास	,,	: निर्विकल्पसुत्त
कुबेर उपाध्याय	: दत्तकचन्द्रिका	,,	: बुद्धवचन
कमलाकर भट्ट	: निर्णयसिन्धु	,,	: धम्मपद
दयानन्द सरस्वती	: आर्याभिविनय	,,	: मिलिन्दपन्ह
गिरिधरदास द्विवेदी	: सम्प्रदाय-प्रदीप	,,	: प्रज्ञापारमिता
		,,	: वृहद् जिनवाणीसंग्रह
नरहरि स्वामी	: बोधसार	जिनसेन	: हरिवंशपुराण
अज्ञात	: विनयपिटक	हेमचन्द्र	: जैनरामायण

(बँगला)

राममोहनराय	: वेदान्त-संग्रह	अश्विनी कुमार दत्त	: कर्मयोग
अश्विनी कुमार दत्त	: भक्तियोग	बङ्किमचन्द्र चट्टोपाध्याय	: धर्मतत्त्व

(गुजराती)

मोहनदास क० गांधी	: नीति-धर्म और धर्मनीति	मोहनदास क० गांधी	: धर्मपथ
		,,	: अनासक्तियोग
,,	: हमारा कलङ्क	,,	: अनीति की राह पर

हरिगणेश गॉडबोले : आत्मविद्या

(मराठी)

ज्ञानेश्वर	: ज्ञानेश्वरी	रामदास	: दासबोध

(तामिल)

तिरुवल्लुवर	: तामिल वेद	तिरुवल्लुवर	: श्रीरामचरितामृत

(अरबी)

मुहम्मद, हज़रत सं० : अल्ल् कुरान

(फ़ारसी)

सादी, शेख़	: गुलिस्ताँ	सादी, शेख़	: नीतिवाटिका

(यूरोपियन-ऐंग्लोइंडियन)

समालोचना—प्राचीन

अनन्तदास : नामदेव की परिचयी
,, : रविदास की परिचयी
मीराबाई ? : नरसी को माहेरा
जेठमल ? : हुण्डी नरसी की
वेणीमाधवदास : मूलगोसाईं चरित
शिवलाल पाठक : मानसमयङ्क
,, : मानस-अभिप्राय-दीपक
सरदार कवि : मानस-रहस्य

समालोचना—तत्कालीन

जयगोपालदास : तुलसी-शब्दार्थ-प्रकाश '६६
कृष्णदास उदासी सं० : कबीर-पद-संग्रह '७३
विश्वेश्वरदत्त शर्मा : तुलसीदास चरितप्रकाश '७७
हरिश्चन्द्र : भारतेन्दु-कला '८३
मन्नालाल शर्मा सं० : मानस-शङ्कावली '८३
जानकीदास : मानस-प्रचारिका '८५
बहादुरदास : निर्द्वन्द रामायण '८५
'रसिकेश' : रसकौमुदी ('विहारी सतसई' पर) '८५
रामशङ्कर व्यास : चन्द्रास्त '८५
नवलकिशोर सं० ? : तुलसी-पञ्च-रत्न '८६
श्यामलदास कविराजा : पृथ्वीराज-रहस्य की नवीनता '८६
मोहनलाल वि० पाण्ड्या : पृथ्वी-राजरासो की प्रथम संरक्षा '८७
यमुनाशङ्कर नागर : रामायण-अध्यात्मविचार '८९
रामदीन सिंह सं० : हरिश्चन्द्र-कला
ठाकुरदास सूरदास सं० (नन्ददास कृत) पांचे मंजरिओ '८६
दूधदास, स्वामी : लालदे विहारी का दीवान '८६
देवीप्रसाद शर्मा : कवित्त-रत्नावली (मानस-प्रकाश) '८६
अमीरसिंह : मानस-कोश '९०
कार्त्तिकप्रसाद खत्री : मीराबाई का जीवन-चरित्र '९३
खेमराज श्रीकृष्णदास सं० ? : षोडस रामायणसंग्रह '९४ द्वि०
राधाकृष्णदास : नागरीदास जी का जीवन-चरित्र '९४

कमलकुमारी देवी:गोस्वामी तुलसी-दास जी का जीवन चरित्र '९५
जगन्नाथदास सं० : जयप्रकाश-सर्वस्व '९५
राधाकृष्णदास : कविवर विहारी-लाल '९५
सूर्यनारायण त्रिपाठी सं० : रहिमन-शतक '९५
चण्डीप्रसाद सिंह : दत्त कवि '९६
अम्बिकादत्त व्यास सं० : विहारी-विहार '९८
देवीप्रसाद मुंसिफ़ : मीराबाई का जीवनचरित्र '९८
[illegible]लाल दीक्षित सं० : रहिमन-शतक '९८
सुधाकर द्विवेदी : तुलसी-सुधाकर '९९
नूतविहारी रे सं० ! : भूषण-ग्रन्थावली '१९००
अम्बिकादत्त व्यास : निज वृत्तान्त '०१
गणेशप्रसाद शर्मा : गणाधिप-सर्वस्व '०१
महावीरप्रसाद द्विवेदी : हिन्दी कालिदास की समालोचना '०१
उमराव सिंह सं०:रहीम-रत्नाकर'०२
हरिचरण सिंह : अनङ्गपाल पृथ्वी-राज समय '०२
नूत विहारी रे सं० ! : षोडस रामायण '०३
ब्रजरत्न शर्मा : सूरदास का जीवन चरित्र '०३
लोचनदास : कबीर साहेब का जीवनचरित्र '०३
नकछेदी तिवारी :कविराज लछिराम कवि '०४
नूत विहारी रे सं० : तुलसीदास जू को ग्रन्थावली '०४
बालमुकुन्द वर्मा : बाबू कार्त्तिक-प्रसाद खत्री का जीवनचरित्र'०४
राधाकृष्णदास : भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन-चरित्र '०४
रामकृष्ण वर्मा सं०:ध्रुव-सर्वस्व'०४
शम्भुदास महन्त : कबीरसिद्धान्त-बोधिनी '०४
सहजानन्द स्वामी : आत्मरामायण '०४
सुधाकर द्विवेदी सं० : मानस-पत्रिका '०४
रामस्वरूप शर्मा ! : श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदास का जीवन-चरित्र '०५
शिवनन्दन सहाय : सचित्र हरिश्चन्द्र '०५
कुँवरकन्हैया जू : बुन्देलखण्ड-केसरी '०६

गुरुसहाय लाल : मानस-अभिराम '०६
देवीप्रसाद मुंसिफ़ : सूरदास जी का जीवन-चरित्र '०६
मुन्नीलाल : बाबू तोताराम का जीवन-चरित्र '०६
गङ्गाप्रसाद गुप्तः राधाकृष्णदास' ०७
ब्रजनन्दनसहाय : बलदेवप्रसाद मिश्र '०७
,, : बाबू राधाकृष्णदास की जीवनी '०७
चेतनदास मथुरादास सं० : हरिसागर '०७
महादेव त्रिपाठी : भक्ति-विलास '१०
मिश्रबन्धु सं० : देव-ग्रन्थावली' १०
सकलनारायण पाण्डेय : जैनेन्द्र-किशोर की जीवनी '१० ?
गोविन्द गिल्लाभाई : गोविन्द-ग्रन्थावली '११
मिश्रबन्धु सं० : भूषण-ग्रन्थावली '१२
चन्द्रमौलि सुकुल : मानस-दर्पण '१३
रामचन्द्र शुक्ल : राधाकृष्णदास का जीवन-चरित्र '१३
रामजीलाल शर्मा : रामायण-रहस्य '१५
रणछोड़दास बड़जीवनदास सं० : (नन्ददास कृत) पञ्चमञ्जरी '१६
रामरत्न सनाढ्य : 'पूर्ण'-वियोग' १६
अयोध्यासिंह उपाध्याय सं० कबीर-वचनावली '१७
विश्वेश्वरदत्त शर्मा : मानस-प्रबोध '१७
शम्भुदास महन्त सं० : (कबीर) सारदर्शन '१७
शिवनन्दन सहाय : गोस्वामी तुलसीदास का जीवन-चरित्र '१७
हरिनारायण शर्मा सं० : सुंदर-सार '१८
गोपालप्रसाद शर्मा : हित-चरित्र '१६
युगलानन्द : वृहत् कबीर-कसौटी '१६ द्वि०
रघुनन्दन प्रसाद निगम सं० : रामचरितमानस के पंचतत्व '१६
रामप्रसादशरण : मानस-अनुबंध '१६
श्यामसुंदरदास सं० : दीनदयाल गिरि-ग्रंथावली '१६
मनोहर-प्रसाद दूबे : 'पूर्ण'-प्रवाह '२०
रामनरेश त्रिपाठी सं० : रहीम '२१
वेनीप्रसाद सं० : संक्षिप्त सूरसागर '२२

भगवानदीन, लाला सं० : केशव-पञ्चरत्न '२९
रामकृष्ण शुक्ल : प्रसाद की नाट्य-कला '२९
रामचन्द्र द्विवेदी : तुलसी-साहित्य-रत्नाकर '२९
रामचन्द्र शुक्ल सं० : भारतेन्दु-साहित्य '२९
भगवानदीन, लाला सं० : रहिमन-शतक '३० ।
मोहनलाल महतो:धुँधले चित्र '३०
ब्रजरत्नदास सं० : रहिमन-विलास '३०
शीतलासहाय सामंत सं० : मानस-पीयूष '३०
श्यामसुंदरदास : राधाकृष्ण-ग्रंथावली '३०
सत्यजीवन वर्मा सं० : सूरदास—नयन '३०
कृष्णकुमार लाल:युगल-जोड़ी '३१
रामकुमार वर्मा : कबीर का रहस्यवाद '३१
विश्वनाथप्रसाद मिश्र सं० : भूषण-ग्रंथावली '३१
श्यामसुंदरदास : गोस्वामी तुलसीदास '३१
कृष्णानन्द गुप्त : प्रसाद जी के दो नाटक '३३
जगन्नाथदास : 'रत्नाकर' '३३
प्रतापनारायण मिश्र : काव्य-कानन '३३
रामचन्द्रशुक्ल: गोस्वामी तुलसीदास '३३
कृष्णशङ्कर शुक्ल : केशव की काव्यकला '३४
गङ्गाप्रसाद सिंह : पद्माकर की काव्य-साधना '३४
गिरिजादत्त शुक्ल : महाकवि हरिऔध '३४
जनार्दन प्रसाद झा : प्रेमचन्द की उपन्यास-कला '३४
बलदेवप्रसाद मिश्र:तुलसी-दर्शन '३४
भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र : मीरा की प्रेम साधना '३४
लज्जाराम शर्मा, मेहता : आपबीती '३४
ब्रजरत्नदास सं० : भारतेन्दु-ग्रंथावली '३४
श्यामापति पाण्डेय : मीरा '३४
कृष्णशङ्कर शुक्ल : कविवर रत्नाकर '३५
केदारनाथ गुप्त : प्रियप्रवास की समालोचना '३५
मिश्रबंधु सं० : देव - सुधा '३५
मुरलीधर श्रीवास्तव : मीराबाई का काव्य '३५

समालोचना—अनूदित

(बँगला)

रवीन्द्रनाथ ठाकुरः मेरी आत्म-कथा	सतीशचन्द्र दासगुप्त : तुलसी रामायण की भूमिका '३२
,, : मेरा बचपन	
बङ्किमचन्द्र चट्टोपाध्याय : ग्रंथावली	रामतीर्थ : —ग्रन्थावली
बङ्किमचन्द्र चट्टोपाध्यायः—साहित्य	विवेकानन्द : —ग्रन्थावली

(मराठी)

यादव शङ्कर जामदार : मानस-हंस

(यूरोपियन-ऐंग्लोइंडियन)

टॉल्सटाय : डायरी	लैम्ब : शेक्सपियर के मनोहर नाटक

साहित्य का इतिहास—प्राचीन

नाभादास : भक्तमाल
ध्रुवदास : भक्तनामावाली
(गोकुलनाथ ?) : चौरासी वैष्णवन की वार्ता
,, : दोसौ बावन वैष्णवन की वार्ता
हरिदास(दादूपन्थी):भक्तविरदावली
प्रियादास : भक्तमाल की टीका
दयादास : भक्त नामावाली
तुलसीराम : भक्तमाल
रघुराजसिंह महाराज : भक्तमाला राम-रसिकावली
प्रतापसिंह : भक्तमाल
हरिबख्श जी, मुन्शी : भक्तमाल
गोवर्धनदास धूसर : मोहनमाला ८४ की नामावली
,, : दोहावली २५२ की नामावली
रामनुजदास : भक्तमाल हरिभक्ति प्रकाशि[illegible]
कर्ण कवि सं० : काव्य-कुसुमोद्यान
लल्लू जी लाल सं० : सभाविलास

साहित्य का इतिहास—तत्कालीन

उम्मेदलाल हरगोविन्द सं०:कीर्तनावली '६७
नाथूशर्मा तिलकचन्द सं० : पुष्टिमार्गीय अष्ट सखान कृतीन पद'६८
(श्रीधर शिवलाल सं० ?): छन्दरत्नसंग्रह '७०
वसन जी चतुर्भुज सं० : गुरुस्तुतिसंग्रह '७१
सदानन्द मिश्र सं०:नीतिमाला '७२
सिताबचन्द्र नाहर सं० : जैनस्तवनावली '७४
हरिश्चन्द्र सं० : मलार, हिंडोला, कजली, जयंती '७५
दयाराम सं०:काव्यसंग्रह '७६ तृ०
लछिमन राम लाला सं० : प्रेमरत्नाकर '७६
मन्नालाल शर्मा सं०:प्रेमतरङ्ग '७७
शिवसिंह सेंगर:शिवसिंहसरोज '७८

हरिश्चन्द्र सं० : प्रेमतरङ्ग '७६
दयाराम सं० : कवित्त तथा परचूरन कीर्तन '८०
मन्नालाल शर्मा सं० : शृङ्गार-सरोज '८०
हरिश्चन्द्र सं० : परिहासिनी '८०
,, : सुन्दरीतिलक '८०
बनारसीप्रसाद सं० : सुन्दरी-तिलक '८१
दशो विजय : वैराग्योपदेशक विविध पद-संग्रह '८२
हफ़ीजुल्ला खाँ : नवीन संग्रह '८२
बच्चूराम सं० : अनुराग-शिरोमणि '८३
रामदीन सिंह : विहार-दर्पण '८३ द्वि०
कामताप्रसाद सं० : संगीत-माला '८४
गोगिन्द मारोबा कारलेकर सं० : ललित-संग्रह '८४
नकछेदी तिवारी सं० : विचित्रोपदेश '८४
हरिश्चन्द्र सं० : नई बहार '८४
नानकचन्द सं० : पावस-प्रमोद '८४
साहबप्रसाद सिंह सं० : काव्य-कला '८५
नकछेदी तिवारी सं० : मनोज-मञ्जरी '८५
मन्नालाल शर्मा सं० : सुन्दरी-सर्वस्व '८६
महेश्वर स्वरूप सिंह सं० : कवि-वचनसुधा '८६
राधाचरण गोस्वामी : नवभक्त-माल '८६
रेवाशंकर वेलजी सं० : रासलीला (पुष्टिमार्गीय कवियों की) '८६
हफ़ीजुल्ला खाँ सं० : हज़ारा '८६
जीवाराम : रसिक-प्रकाश भक्तमाल '८७
मन्नालाल शर्मा सं० : शृंगार-सुधाकर '८६
महावीर प्रसाद मुन्शी सं० : कृष्ण-गीतावली '८७ तृ०
विद्याधर त्रिपाठी सं० : नवोढ़ादर्श '८७
ठाकुरदास सूरदास सं० : पुष्टि-मार्गीय पदसंग्रह '८८ रिप्रिंट
वल्लभ सं० : रसिक-रञ्जन रामायण '८८
खूबचन्द कुँवर सं० : प्रेमपत्रिका '८८
त्रिभुवनदास रणछोड़े सं० : नित्य नियम तथा वर्षोत्सव कीर्तन '८६
रामकृष्ण वर्मा सं० : रघुनाथ-शतक '८६
हफ़ीजुल्ला खाँ सं० : षट्ऋतु काव्य-संग्रह '८६

भागवतप्रसाद राव सं० : मदन-सरोज '९०
रामरत्न पाठक सं० : प्रेम-प्रवाह-तरंग '९०
शिवनाथ योगी : मत्स्येन्द्रनाथ तथा गोरखनाथ की उत्पत्ति '९०
हफ़ीज़ुल्ला खाँ सं०:प्रेम तरंगिनी '९०
हरिप्रसाद भागीरथ सं० : वृहद् राग-कल्पद्रुम '९१
छेदीदास : संतमहिमा सनेह-सागर '९२
जगजीवन वीर जी सं० : कीर्तन-संग्रह '९२
नकछेदी तिवारी सं० : विज्ञान-मार्तण्ड '९२
रङ्गीलाल शर्मा सं० : वृहद् राग-रत्नाकर '९२
" : व्रजविहार '९२
सियादास : अवध संतमाला '९२
हरिश्चन्द्र: उत्तरार्द्ध भक्तमाल '९२
परमानन्द सुहाने सं० : नखशिख-हज़ारा '९२
" : पावस-कवित्तरत्नाकर
मेघजी भावजी : भजनसागर '९३ रिप्रिंट
गोबर्धन चतुर्वेदी : काव्यसंग्रह '९४
जगन्नाथदास 'रत्नाकर' : समस्या-पूर्ति '९४
परमानन्द सुहाने : षट्ऋतु हज़ारा '९४
राधाकृष्ण दास : हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास '९४
बलदेव प्रसाद सं० : नीति-रत्नावली '९५
रामरत्न वाजपेयी:सुन्दरी-तिलक '९६
कहानजी धरम सिंह : साहित्य-संग्रह '९७
रामकृष्ण वर्मा : समस्यापूर्ति '९७
हरिश्चन्द्र:पावस कविता-संग्रह '९७
लक्ष्मीचन्द : रामायण आनंदप्रकाश '९८
गौरा देवा ! : गिरिधर व्यास और वैताल की कुण्डलिया १९०
भगवतीप्रसाद सिंह : पावस-मञ्जरी १९००
मकनजी कबीरपंथी सं० : कबीर-स्तुति १९००
चण्डीप्रसाद सिंह सं० : विद्या-विनोद '०१
चन्द्रसेन बाबू : जैनग्रंथसंग्रह '०३
बलदेवप्रसाद मिश्र : व्याख्यान-रत्न-माला '०३
खण्डेराव कवि : भक्त-विरुदावली '०४
रामसरूप शर्मा : व्याख्यान-माला '०४

शिवनन्दन त्रिपाठी : अन्योक्ति-मुक्तावली, भाग १ '०४
देवीप्रसाद मुंसिफ़ सं०: महिला-मृदु-वाणी '०५
माधवराव सप्रे सं० : निबन्ध संग्रह-'०५ द्वि०
देवीप्रसाद, मुंसिफ़ सं० : राजरसना-मृत '०६
विश्वेश्वरप्रसाद : रसिक मुकुन्द '०६
हरिश्चन्द्र : प्रेम-सन्देश '०६
जेठाराम मुकुन्दजी सं०: जमुना जी के पद तथा घोल (अष्ट) सखान कृत '०६
महावीरप्रसाद द्विवेदी : कविता-कलाप '०६
श्यामसुन्दरदास : हिन्दीकोविद रत्न-माला '०६
हिम्मतदास : भक्त-चरितामृत '०६
दीनदयाल सं० : व्याख्यानरत्नमाला '१०
लोचनप्रसाद पाण्डेय सं० : कविता कुसुममाला '१०
श्यामदास सं० : निम्बार्क सम्प्रदाय-प्रकाश '१०
जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी : निरंकुशता निदर्शन '११-
देवीप्रसाद : कविरत्नमाला '११
देवीप्रसाद मुंसिफ़ सं० : राजपूताने में हिन्दी पुस्तकों की खोज '११
बालकराम विनायक : भक्ति शरत् सर्वांश '११
नाथूराम प्रेमी : दिगंबर जैन ग्रंथ-कर्त्ता और उनके ग्रंथ '११
मिश्रबंधु : हिन्दी-नवरत्न '११
मन्नन द्विवेदी : गोरखपुर विभाग के कवि '१२
यू० सी० बैनरजी सं०: विदूषक '१३
मिश्रबन्धु : मिश्रबन्धुविनोद '१४-
देवेन्द्रप्रसाद जैन सं०: प्रेमकली '१७
नाथूराम प्रेमी : हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास '१७
श्रीनारायण चतुर्वेदी ? : चोंच महाकाव्य '१७
रामनरेश त्रिपाठी सं० : कविता-कौमुदी भाग १, २, '१८-
शिवनारायण मिश्र : राष्ट्रीय वीणा १८-
त्रिभुवनदास पीताम्बरदास शाह सं० : कीर्त्तन-रत्नाकर '१६
अम्बिकाप्रसाद गुप्त सं० : प्रबंध-पूर्णिमा '२१
लक्ष्मीसहाय माथुर सं० : मातृभाषा '२१
श्यामलाल पाठक : हिन्दी कवियों की अनोखी सूझ '२१

सीताराम, लाला सं० : सेलेक्शन्स फ्राम हिन्दी लिटरेचर '२१-
व्रजराज सं० : मीरा, सहजो तथा दयाबाई का पद्य संग्रह '२२
भगवानदीन, लाला : सूक्ति-सरोवर '२३
रामनरेश त्रिपाठी : हिंदी का संक्षिप्त इतिहास '२३
हरिप्रसाद द्विवेदी : कवि-कीर्तन '२३
,, : व्रजमाधुरीसार '२३
पदुमलाल पु० बख्शी : हिन्दी साहित्य-विमर्श '२४-
व्रजमोहनलाल सं० : विदूषक '२४
श्यामसुन्दरदास सं० : हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण '२४-
कृष्णबिहारी मिश्र : देव और बिहारी '२५ ?
बदरीनाथ भट्ट : हिन्दी '२५
रामनरेश त्रिपाठी सं० : ग्रामगीत '२५
अज्ञात सं० : श्रीनाथजी का प्रभातीय संग्रह '२६
गङ्गाप्रसाद सिंह : हिन्दी के मुसलमान कवि '२६
जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी : बिहार का साहित्य '२६
प्रेमचन्द सं० : मनमोदक '२६
भगवानदीन, लाला : बिहारी और देव '२६
रमाकान्त त्रिपाठी : हिन्दी गद्य-मीमांसा '२६
हरिप्रसाद द्विवेदी : साहित्य-विहार '२६
कृष्णगोपाल सं० : मारवाड़ी गीत-संग्रह '२७
गौरीशंकर द्विवेदी सं० : सुकवि-सरोज '२७-
बाबूराम बित्थरिया : हिन्दी काव्य में नवरस '२७ ?
शान्तिप्रिय द्विवेदी : परिचय '२७
भागीरथी वर्मा : मारवाड़ी गीत-संग्रह २८-
मङ्गलाप्रसाद सिंह : बिहार के नवयुवक हृदय २८-
रामावतार पाण्डेय : प्रबन्ध-पुष्पाञ्जलि '२८
शिवपूजन सहाय सं० : प्रेमपुष्पाञ्जलि '२८ ?
गङ्गाप्रसाद गुप्त सं० : युवकसाहित्य '२९
गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा सं० : कोशोत्सव स्मारक-संग्रह '२९
धीरेन्द्र वर्मा सं० : गल्पमाला '२९
,, : परिषद्-निबन्धावली '२९
,, : अष्टछाप '२९

प्रभुदत्त ब्रह्मचारी : भक्तचरितावली '२९
प्रेमचन्द सं० : गल्पसमुच्चय '२९
,, : गल्परत्न '२९
विनोदशङ्कर व्यास सं० : मधुकरी '२९
श्यामसुन्दर उपाध्याय सं०:बलिया के कवि और लेखक '२९
अमीर सिंह सं० : रसखान और घनानन्द '३०
अवध उपाध्याय : हिन्दी साहित्य '३०
जगन्नाथ प्रसाद शर्मा : हिन्दी गद्य शैली का विकास '३०
ज्योतिप्रसाद 'निर्मल' : स्त्री-कवि-कौमुदी '३०
महावीरप्रसाद द्विवेदी :समालोचनासमुच्चय '३०
रामचन्द्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास '३०
विश्वनाथ प्रसाद मिश्रः हिंदी नाट्य-साहित्य का विकास '३०
श्यामसुन्दरदास : हिन्दी भाषा और साहित्य '३०
सीताराम, लाला सं० : हिन्दी सर्वे कमिटी रिपोर्ट '३०
गणेशप्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य '३१
'चञ्चरीक' सं०:ग्राम गीताञ्जलि'३१
रामकृष्णशुक्ल : आधुनिक हिन्दी कहानियाँ '३१
रामनरेश त्रिपाठी सं० : घाघ और भड्डरी '३१
रामशङ्कर शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास '३१
श्यामसुन्दरदास : हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास '३१
श्यामसुन्दरदास सं० : सतसई-सप्तक '३१
सूर्यकान्त शास्त्री : हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास '३१
कन्हैयालाल : वृहद् भक्तमाल '३२
जवाहरलाल चतुर्वेदी : आँख और कविगण '३२
महावीरप्रसाद द्विवेदी : आलोचनाञ्जलि '३२
रामचन्द्र टण्डन सं०:तीस कहानियाँ '३२
श्यामसुन्दरदास सं० : हिन्दी-निबंधमाला '३२
गिरजादत्त शुक्ल : हिन्दी काव्य की कोकिलाएँ '३३
ब्रजरत्नदास : हिन्दी साहित्य का इतिहास '३३
रमाकान्त त्रिपाठी : कवियों की ठठोली '३३

हरिनारायण पुरोहित : व्रजनिधि-ग्रन्थावली '३३
अयोध्यासिंह उपाध्याय : हिन्दी भाषा और उसके साहित्य का विकास ३४
कृष्णशङ्कर शुक्ल : आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास '३४
गणेशप्रसाद द्विवेदी: हिन्दी साहित्य का गद्यकाल '३४
गौरीशङ्कर द्विवेदी : बुंदेल-वैभव '३४
शुकदेवविहारी मिश्र : हिन्दी साहित्य का भारतीय इतिहास पर प्रभाव '३४
सुदर्शन सं० : गल्पमञ्जरी '३४ द्वि०
कमलधारी सिंह : मुसलमानों की हिन्दी सेवा '३५
गिरिजादत्त शुक्ल सं० : हिन्दी की कहानी लेखिकाएँ '३५
मिश्रबन्धु : संक्षिप्त हिन्दी-नवरत्न '३५
लक्ष्मणसिंह चौहान : त्रिधारा '३५
विद्याभास्कर शुक्ल सं० : गल्प-लहरी '३५
शांतिप्रिय द्विवेदी : हमारे साहित्य-निर्माता '३५
श्यामसुन्दरदास सं० : हिन्दी निबन्धमाला '३५
सत्यजीवन वर्मा सं०: आख्यानत्रयी '३५
'व्यथित हृदय' : हिन्दी काव्य की कलामयी तारिकाएँ '३६
लल्लूभाई छगनभाई देसाई सं० : कीर्तन-संग्रह '३६
गणेशप्रसाद द्विवेदी : हिन्दी के कवि और काव्य ३७-
गौरीशंकर 'सत्येन्द्र' : साहित्य की झाँकी '३७
प्रेमचन्द सं० : हिन्दी की आदर्श कहानियाँ ३७
मिश्रबन्धु : हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास '३७
मूलचन्द जैन : जैन कवियों का इतिहास '३७
रामनरेश त्रिपाठी : सोहर '३७-
अगरचन्द नाहटा : ऐतिहासिक जैनकाव्य-संग्रह '३८
गुलाबराय : हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास '३८
ज्योतिप्रसाद 'निर्मल' : नवयुग काव्य-विमर्श '३८
नरोत्तमदास स्वामी : हिन्दी गद्य का इतिहास '३८
रघुबीर सिंह : सप्त-दीप '३८
रामकुमार वर्मा : हिन्दी साहित्य की रूपरेखा '३८

रामकुमार वर्मा : हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास '३८
ललिताप्रसाद सुकुल : साहित्य-चर्चा '३८
व्रजरत्नदास : हिन्दी-नाट्यसाहित्य '३८
शान्तिप्रिय द्विवेदी : साहित्यिकी '३८
सूर्यकान्त शास्त्री : हिन्दी साहित्य की रूपरेखा '३८
हरिप्रसाद द्विवेदी सं० : संतवाणी '३८
कृष्णशंकर शुक्ल : हमारे साहित्य की रूपरेखा '३९
ताराशंकर पाठक : हिन्दी के सामाजिक उपन्यास '३९
देवदत्त : साहित्यकारों की आत्म-कथा '३९
धीरेन्द्र वर्मा सं० : आधुनिक हिन्दी काव्य '३९
भागीरथप्रसाद दीक्षित : वीर-काव्यसंग्रह '३९ !
मिश्रबन्धु : हिन्दी साहित्य का इतिहास '३९
रामकृष्ण शुक्ल : आलोचना समुच्चय '३९
श्रीमन्नारायण अग्रवाल सं० : गुल-दस्ता '३९
सूर्यबलीसिंह : हिन्दी की प्राचीन और नवीन काव्यधारा '३९
अयोध्यासिंह उपाध्याय: विभूतिमती व्रजभाषा '४०
गुलाबराय : हिन्दी शास्त्र-विमर्श '४०
जगन्नाथप्रसाद शर्मा : नवकाव्य-तरङ्गिणी '४० !
प्रभारानी सं० : सोहर '४०
बी० एस० ठाकुर : हिन्दी पत्रों के संपादक '४०
भीमसेन विद्यालङ्कार : वीरकाव्य और कवि '४०
रामनरेश त्रिपाठी सं० : हमारा ग्राम-साहित्य '४०
,, : दिमाग़ी ऐयाशी '४०
शिवनारायण श्रीवास्तव : हिन्दी उपन्यास '४०
सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन : आधुनिक हिन्दी साहित्य '४०
सुब्रह्मण्य गुर्ती : हिन्दी साहित्य-समीक्षा '४०
सोमनाथ गुप्त सं० : अष्टछाप पदावली '४०
हज़ारीप्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य की भूमिका '४०
प्रकाशचन्द्र गुप्त : नया हिन्दी साहित्य '४१

ब्रह्मदत्त शर्मा : हिन्दी साहित्य में निबंध '४१

राय कृष्णदास सं० : नई कहानियाँ '४१

,, : इक्कीस कहानियाँ '४१

लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय : आधुनिक हिन्दी साहित्य '४१

शिखरचन्द जैन : हिन्दी नाट्य-चिन्तन '४१

ब्रजेश्वर वर्मा : हिन्दी के वैष्णव कवि '४१

शान्तिप्रिय द्विवेदी : युग और साहित्य '४१

ब्रजरत्नदास : खड़ी बोली हिन्दी साहित्य का इतिहास '४१

शिखरचन्द जैन : हिन्दी के तीन प्रमुख नाटककार '४१

,, :नारी हृदय की अभिव्यक्ति '४१

अनन्तराम शास्त्री : रामभक्ति शाखा '४१

गिरिजादत्त शुक्ल : हिन्दी के वर्त्तमान कवि '४२

नगेन्द्र : आधुनिक हिन्दी नाटक-'४२

नर्मदाप्रसाद खरे सं० : नव-नाटक-निकुञ्ज '४२

भगवतीप्रसाद वाजपेयी : हिन्दी की प्रतिनिधि कहानियाँ '४२

भीमसेन : हिन्दी नाटक-साहित्य की समालोचना '४२

मोतीलाल मेनारिया : राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज '४२

श्रीकृष्णलाल : आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास '४२

श्रीनारायण चतुर्वेदी:छेड़-छाड़' ४२

साहित्य का इतिहास—बाल

अशरफ़ अली सं० : हिन्दुस्तानी पुस्तक -'६७

शिवप्रसाद, बाबू सं० : हिन्दी सेलेक्शन्स '६७

अब्दुल फ़ता सं० : हिन्दुस्तानी, किताब '६८-

चतुर्भुज जेठा सं० : हिन्दुस्तानी किताब '६८-

राधालाल, मुंशी सं० : भाषा बोधिनी '६९-

रामजसन, पं०, सं० : स्त्री-शिक्षा सुबोधिनी '६९-

गङ्गाप्रसाद,मुंशी सं० : कुमारी तत्व-प्रकाशिका '७१

रामकृष्ण सं० : स्त्री-शिक्षा '७१

रामलाल, मुंशी सं० : वनिता-बुद्धि-प्रकाशिनी '७१

राधालाल, मुंशी सं० : हिन्दी किताब '७२-च०

रामलाल, मुंशी सं० : पुत्री शिक्षोपकारी '७३

शिवप्रसाद सितारेहिन्द सं० : गुटका '७४- द्विं०

झम्मन प्रसाद सं० : पद्य-संग्रह '७७

बलवन्तराव गोखले : हिन्दी की पुस्तक '७८-

हरिगोपाल पाधे सं० : हिन्दी की पुस्तक '-८२

शिवदयाल उपाध्याय : हिन्दी की किताब '८३-

गौरीदत्त, पं० सं० : देवनागरी की पुस्तक '८५-

रामशङ्कर मिश्र सं० : हिन्दी की किताब '८६-

बिहारीलाल चौबे सं० : भाषा-बोध '८६-

अम्बिकाप्रसाद सं० : गद्य-पद्य-संग्रह '६० द्वितीय

हरिश्चन्द्र : प्रशस्ति-संग्रह '६४

वृन्दावन सं० : नारीभूषण '६७

सुधाकर द्विवेदी : नया संग्रह '०३

लक्ष्मीशङ्कर मिश्र सं० : लड़कियों की किताब '०५-

साहित्य का इतिहास—अनूदित

(बँगला)

आमोदिनी घोष सं० : शतगान

विभाषा साहित्य का अध्ययन—प्राचीन

गुमानी कवि : काव्य-संग्रह

विभाषा साहित्य का अध्ययन—तत्कालीन

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल सं० : नज़ीर ’७०

नवीनचन्द्र राय : उपनिषत्सार ’७५

महेशदत्त शुक्ल : उमापति दिग्विजय ’८०

अज्ञात सं० : दीवान-ए-नज़ीर ’८१

हरिश्चन्द्र : जयदेव का जीवन-चरित्र ’८२

चिद्घनानन्द गिरि : न्याय-प्रकाश ’८५

भगवानदास वर्मा : गुलदस्ता-ए-बेनज़ीर ’८५ ?

दामोदर शास्त्री : रामायण-समय-विचार ’८८

शिवशंकर : वाशिष्ठसार ’८८ रि०

हरिश्चन्द्र : अष्टादश पुराण उपक्रमणिका ’८६

मिहिरचन्द : अष्टादश स्मृति ’६१

भोलानाथ सं० : मजमूआ-ए-नज़ीर ’६८

महावीर प्रसाद द्विवेदी : नैषध चरित-चर्चा १६०२

लेखराम : पुराण किसने बनाए ? १६०[illegible]

हरिमङ्गल मिश्र : भारतीय संस्कृत कवियों का समय निरूपण ’०१

ज्वालाप्रसाद मिश्र : अष्टादश पुराण-दर्पण ’०५

विश्वेशरानन्द स्वामी : रामायण-समालोचना ’०५

शिवप्रसाद सितारेहिंद : मानव-धर्मसार

शिवनन्दन सहाय सं० : कविता-कुसुम ’०६

महावीरप्रसाद द्विवेदी : विक्रमाङ्कदेव-चरितचर्चा ’०७

सदानन्द अवस्थी : दर्शनसार-संग्रह ’१०

हनुवन्तसिंह, कुँवर : महाभारत-सार '१०
दीवानचन्द्र : पश्चिमी तर्क '११ ?
द्वारिकाप्रसाद चतुर्वेदी : भारतीय अध्ययनमाला '११-
रामावतार पाण्डेय : यूरोपीय दर्शन '११
खेतराम माली सं० : मारवाड़ी गीत-संग्रह '१२
द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी : पौराणिक उपाख्यान '१२?
,, : नाटकीय कथा '१२
महावीरप्रसाद द्विवेदी : कालिदास की निरङ्कुशता '१२
इन्द्र वेदालङ्कार : उपनिषदों की भूमिका '१३
कपिलदेव द्विवेदी : संस्कृत विद्या का इतिहास '१३
गङ्गाप्रसाद मिश्र : चतुर्विंशत उपनिषत्सार '१३
महावीरप्रसाद द्विवेदी : वेणीसंहार नाटक का भावार्थ '१३
चन्द्रमौलि सुकुल : नाट्यकथामृत '१४
नाथूराम प्रेमी : कर्णाटक जैन कवि '१४
आर्यमुनि पंडित : वेदांततत्व कौमुदी- '१५
कन्नोमल : भारतवर्ष के धुरन्धर कवि '१५
बदरीनाथ भट्ट : वेणीसंहार की आलोचना '१५
राधाप्रसाद शास्त्री : प्राच्य-दर्शन '१५
अखिलानन्द शर्मा : वैदिक वर्ण-व्यवस्था '१६
इन्द्र वाचस्पति : संस्कृत साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन '१६
कन्नोमल : हर्बर्ट स्पेन्सर की अज्ञेय मीमांसा '१६
प्यारेलाल मिश्र : विलायती समाचार पत्रों का इतिहास '१६
चन्द्रमणि विद्यालङ्कार : वेदार्थ करने की विधि '१७
ज्वालाप्रसाद शर्मा : महाकवि दाग़ और उनका काव्य '१७
भवानीदयाल सन्यासी : वैदिक धर्म और आर्य-सभ्यता '१७
सम्पूर्णानन्द : भारतीय सृष्टिक्रम-विचार '१७
अखिलानन्द शर्मा : वेदत्रयी समालोचना '१८
जनार्दन भट्ट : संस्कृत कवियों की अनोखी सूझ '१८
प्रेमचन्द : महात्मा शेख़ सादी '१८

कन्नोमल : हर्बर्ट स्पेन्सर की ज्ञेय मीमांसा '१६ द्वि०
ज्वालादत्त शर्मा : महाकवि ग़ालिब और उनका काव्य '१६
महावीरप्रसाद द्विवेदी : प्राचीन पण्डित और कवि '१६
गङ्गानाथ झा, महामहोपाध्याय: न्याय-प्रकाश '२०
महावीरप्रसाद द्विवेदी : कालिदास और उनकी कविता '२०
माधवराव सप्रे : महाभारत मीमांसा '२०
रूपनारायण पाण्डेय : बङ्किमचन्द्र चटर्जी '२०
श्रीपाद दामोदर सातवतेकर : वेद का स्वयंशिक्षक '२०
सुखसम्पतिराय भंडारी : रवीन्द्र-दर्शन '२०
गङ्गानाथ झा, महामहोपाध्याय : वैशेषिक दर्शन '२१
महेशप्रसाद : अरबी काव्य-दर्शन '२१
उमराव सिंह : महाकवि अकबर और उनका काव्य '२२
कन्हैयालाल पोद्दार: हिन्दी मेघदूत-विमर्श '२२ रिप्रिन्ट
ज्वालादत्त शर्मा : उस्ताद ज़ौक़ और उनका काव्य '२२
महेशचन्द्र प्रसाद : संस्कृत साहित्य का इतिहास '२२
रघुराज किशोर : महाकवि नज़ीर और उनका काव्य '२२
रामदहिन मिश्र : मेघदूत-विमर्श '२२
हरिप्रसाद द्विवेदी सं० : योगी अरविन्द की दिव्यवाणी '२२
जगदीशचन्द्र वाचस्पति : मौलाना रूम और उनका काव्य '२३
जनार्दन भट्ट : टॉल्स्टाय के सिद्धान्त '२३
दुलारेलाल भार्गव : द्विजेन्द्रलाल राय '२३
रामनरेश त्रिपाठी : कविता कौमुदी '२३
कन्नोमल : बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र '२४
नरदेव शास्त्री : गीता-विमर्श '२४
पदुमलाल पु० बख्शी : विश्व-साहित्य '२४
पशुपाल वर्मा : बर्कले और कैंट का तत्वज्ञान '२४
बजरङ्गबली विशारद : माइकेल मधुसूदनदत्त '२५
रघुराज किशोर : महाकवि अकबर '२५
रामनाथ लाल 'सुमन' : दाग़े जिगर '२५

गुलाबराय : पाश्चात्य दर्शनों का इतिहास '२६
गोपाल दामोदर तामस्कर : कौटिलीय अर्थशास्त्र की मीमांसा '२६
रामगोविन्द त्रिवेदी : दर्शन-परिचय '२६
रामनाथ लाल : कविरत्न मीर '२६
लक्ष्मण स्वरूप : मोलियर '२६
गोपाल दामोदर तामस्कर : अफ़लातून की सामाजिक व्यवस्था '२६
भगवद्दत्त : वैदिक वाङ्मय का इतिहास '२७
वेदव्यास लाला : संस्कृत साहित्य का इतिहास, भाग १ '२७
श्रीकृष्णगोपाल सं० : मारवाड़ी गीत-संग्रह '२७
नरदेव शास्त्री : ऋग्वेदालोचन '२८
भागीरथी बाई : मारवाड़ी गीत-संग्रह '२८
महावीरप्रसाद द्विवेदी : कोविद-कीर्तन '२८
,, : विदेशीय विद्वान् '२८
श्रीपाद दामोदर सातवलेकर : महाभारत की समालोचना '२८
सूर्यकान्त त्रिपाठी : रवीन्द्र-कविता कानन '२८
बुद्धदेव विद्यालंकार : शतपथ से एक पथ '२६
रामचन्द्र वर्मा : रूपक-रत्नावली '२६
सोऽहं स्वामी : गीता की समालोचना '२६
रामचन्द्र टंडन सं० : रूसी कहानियाँ '३० ई
विनोदशंकर व्यास : प्रेम-कहानी '३० ई
गङ्गानाथ झा, महामहोपाध्याय : हिन्दू धर्मशास्त्र '३१
चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार सं० : संसार की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ '३२
जनार्दन मिश्र : विद्यापति' ३२
बलदेवप्रसाद उपाध्याय : संस्कृत कविचर्चा '३२
रामाज्ञा द्विवेदी : संसार के साहित्यिक ३२
श्रीगोपाल नेवटिया सं० : यूरोप की कहानियाँ '३२
सीताराम ज० जोशी : संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास '३३
जयचन्द्र विद्यालङ्कार : भारतीय वाङ्मय के अमर रत्न '३४
'व्यथित हृदय' : बौद्ध कहानियाँ '३४
व्रजरत्नदास : उर्दू साहित्य का इतिहास '३४
सूर्यकरण पारीक : राजस्थानी वार्ता '३४

चिन्तामणि : मनु और स्त्रियाँ '३५

धनीराम : भारतका कहानी-साहित्य '३६

लक्ष्मीनारायण गर्दे सं० : अरविन्द और उनका योग '३६

उमेश मिश्र, महामहोपाध्याय: विद्यापति ठाकुर '३७

नरेन्द्रनाथदास : विद्यापति काव्यालोक '३७

प्रियरत्न आर्य : वैदिक मनोविज्ञान '३७

रामकलानाथ गौड़ : संस्कृत प्रेम-प्रथा '३७

रामगोपाल मोहता : गीता का व्यवहारदर्शन '३७

हंसराज अग्रवाल : संस्कृत साहित्य का योग '३७

कन्हैयालाल पोद्दार : संस्कृत साहित्य का इतिहास '३८

रामसिंह : राजस्थान के लोकगीत '३८

वासुदेव विष्णु मिराशी : कालिदास '३८

मोतीलाल मेनारिया : राजस्थानी साहित्य की रूपरेख '३९

रामचन्द्र मिश्र : चन्द्राभरण '३९

रामावतार शास्त्री : गीता परिशीलन '३९

बाँकेबिहारी : ईरान के सूफ़ी कवि '४०

मोतीलाल मेनारिया : डिंगल में वीर रस '४०

राजबहादुर सिंह : संसार के महान् साहित्यिक '४०

रुलियाराम कश्यप : यास्कीय निरुक्तान्तर्गत निर्वचनों का वैदिक आधार '४०

विरञ्चिकुमार बरुआ : असमिया साहित्य की रूपरेखा '४०

हरिमोहन झा : भारतीय दर्शन परिचय '४०

उपेन्द्रनाथ अश्क : उर्दू काव्य की नई धारा '४१

गुरुनाथ जोशी : कन्नड गल्प '४१

गोपीनाथ कविराज: भारतीय दर्शन-शास्त्र '४१

भगवानदास : दर्शन का प्रयोजन '४१

भवानीदयाल सन्यासी : वैदिक प्रार्थना '४१

गिरिजादत्त शुक्ल : उर्दू कवि और उनकी कहानियाँ '४२

विभाषा-साहित्य का अध्ययन—बाल

विभाषा-साहित्य का अध्ययन—अनूदित

(संस्कृत-प्राकृत)

(बँगला)

(मराठी)

बालगङ्गाधर तिलक : भगवद्‌गीता, रहस्य

चिन्तामणि विनायक वैद्य : महाभारत मीमांसा,

चिन्तामणि विनायक वैद्य : रामचरित्र

(गुजराती)

किशोरीलाल घ० मशरूवाला : गीता-मंथन

(उर्दू)

आत्माराम : वेदों में शरीर-विज्ञान

(यूरोपियन-ऐंग्लो इंडियन)

बीसेंट : महाभारत की कथा

लेखक-सूची

अक्षयकुमार : रसिक-विलास रामायण (१), लेखक, मुज़फ्फ़रपुर, '०१
अक्षयकुमार मित्र : सिराजुद्दौला (७ अनु०), अभ्युदय प्रेस, प्रयाग, '१८
,, : जब अंग्रेज़ आए [मीर क़ासिम] (८ अनु०)
सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर, '३०
अक्षयवट मिश्र : पुष्पोपहार (१), ग्रन्थकार, विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय, कलकत्ता, '०३
,, : आनन्द-कुसुमोद्यान (१), रङ्गलाल, कलकत्ता, '०६
अक्षयसिंह वर्मा : अक्षय-नीति-सुधाकर (१७), बनेड़ा राजदरबार, '०४
अखा : वाणी (१७ प्रा०), ओरिएण्टल प्रिन्टिङ्ग प्रेस, बम्बई, '८४ रिप्रिन्ट
अखिलानन्द शर्मा : दयानन्द दिग्विजय (७), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '१०
,, : वैदिक वर्ण-व्यवस्था (२०), लेखक, बदायूँ, '१६
,, : वेदत्रयी समालोचना (२०), लेखक, बदायूँ, '१८
अगरचन्द नाहटा, भवँरलाल नाहटा : श्री जिनचन्द सूरि (७), शङ्करदान सुभायराज नाहटा, कलकत्ता, '३६
,, : ऐतिहासिक जैन-काव्य-संग्रह (१६) ,, ,, : '३८
अगर सिंह : [क़िस्सा] हक़ीकतराय (७), मुल्तानी प्रेस, लाहौर, '७५ रि०
अग्निवेश मुनि : रामायण समयादर्श (१७ अनु०), विश्वनाथ पाठक, दशाश्वमेघ, बनारस
,, : अञ्जन-निदान (१३ अनु०), आसफ़ी प्रेस, लखनऊ, '८५
अग्रदास : ध्यानमञ्जरी (१ प्रा०), छोटेलाल लक्ष्मीचन्द, लखनऊ, '६८
,, : राम-ध्यान-मञ्जरी (१ प्रा०), भोलानाथ, अजमर, हमीरपुर, १६००
,, : ध्यानमञ्जरी (१ प्रा०), नीलकण्ठ द्वारकादास, अयोध्या, '०४
अङ्गिरा : संहिता (१७ अनु०), डायमण्ड जुबिली प्रेस, कानपुर, '६६

अमरनाथ कपूर : पत्रदूत (१), लेखक, इलाहाबाद, '४१
अमरनाथ बली प्रो०, मोहनलाल प्रो० : भारतीय अर्थशास्त्र (६), जगतनारायण चोपरा, लाहौर '२३
अमरनारायण अग्रवाल, एम० ए० : समाजवाद की रूपरेखा (६), किताब-महल, ज़ीरो रोड, इलाहाबाद
,, : ग्रामीण अर्थशास्त्र और सहकारिता (६), रामदयाल अगरवाला, इलाहाबाद '४१
अमरसिंह : अमरकोश (१० अनु०) [अनुक्रमणी युक्त] वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '८५
,, : ,, ,, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८२ तृ०
अमरसिंह : नामप्रकाश (१० अनु०), गुलशन-ए-अहमदी प्रेस, परताबगढ़, '६६
अमरु :—शतक (१ अनु०), रामचन्द्र राघव, कल्याण, बम्बई, '१५
अमानत : इन्दर-सभा (४ प्रा०), वज़ीर खाँ मुहम्मद, आगरा, '६८
अमीरअली 'मीर' : बूढ़े का ब्याह (१), नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '१४
,, : सदाचारी बालक (२ बा०) ,, ,, '१७ द्वि०
,, : मातृभाषा की महत्ता (५), उदयनारायण तिवारी, इलाहाबाद '३४
अमीरसिंह सं० : रसखान और घनानन्द (१६), इण्डियन प्रेस इलाहाबाद '३०
अमीरसिंह, कार्तिकप्रसाद खत्री : मानस-कोश (१८), हरिप्रकाश प्रेस, बनारस : '६०
अमृतलाल चक्रवर्ती : विलायत की चिट्ठी (१६), केवलराम चैटरजी, कलकत्ता, '६३
,, : सती सुखदेवी (२), कृष्णानन्द शर्मा, कलकत्ता, '०३
,, : उपन्यास-कुसुम भाग (२), श्रीनारायण चतुर्वेदी, इलाहाबाद, '०३

अमृतलाल चक्रवर्तीः भरतपुर युद्ध (८), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१२
अमृतलाल दुबे : जमालो के मियाँ (३ आ०), मिश्रबन्धु कार्यालय, जबलपुर, '३६
,, : चम्पाकली (३ आ०) ,, ,, '४०
अमृतलाल नागर : अवशेष (३), सरस्वती पुस्तक भण्डार, लखनऊ '३८
,, : तुलाराम शास्त्री (३), लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '४१
अम्बाप्रसाद : वीर-कलङ्क (४) लेखक, मुरादाबाद '६६
अम्बालाल शर्मा, डा० : क्षयरोग और उसकी चिकित्सा (१३) नवजीवन फार्मेसी, अजमेर, '३६
अम्बिकाचरण चट्टोपाध्याय : एकाक्षर कोश (१०), अमर प्रेस, बनारस, '८४
अम्बिकादत्त व्यास : महातास कौतुक पचासा (१३) राधाकुमार व्यास, मानमन्दिर, बनारस '७२
अम्बिकादत्त व्यास (तथा रामकृष्ण वर्मा) : ताश-कौतुक-पच्चीसी (१३) रामकृष्ण वर्मा, बनारस भाग १ : '८०, भाग २ : '८३
,, : ललिता नाटिका (४), हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, '८४
,, : चतुरङ्ग-चातुरी (१३), चेस क्लब, बनारस '८४
,, : धर्म की धूम (१) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर '८५
,, : कलियुग और घी [प्रहसन] (४), नारायण प्रस, मुज़फ़्फ़रपुर, '८६
,, : पावस पचासा (१), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर '८७
,, : मन की उमङ्ग (४), नारायण प्रेस, मुज़फ़्फ़रपुर '८६
,, : भारत सौभाग्य नाटक (४), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर '८७
,, : सुकवि सतसई (१) नारायण प्रेस, मुज़फ़्फ़रपुर '८७
,, : गोसङ्कट नाटक (४) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर '८७
,, : कथाकुसुम कलिका (३) राधाकुमार व्यास, मानमन्दिर, बनारस '८८
,, : स्वर्ग-सभा (१७) ,, ,, '६१

अम्बिकादत्त व्यास : आश्चर्य वृत्तान्त (२), राधाकुमार व्यास, मानमन्दिर, बनारस, '६३
,, : गद्यकाव्य मीमांसा (६), नागरी प्रचारिणी, सभा, बनारस, '६७
,, : ईश्वरइच्छा (१), चन्द्रप्रभा प्रेस, बनारस, '६८
,, : बिहारी-बिहार (१८), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६८
,, : स्वामी चरितामृत (७), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६६
,, : निज वृत्तान्त (१), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०१
,, : रसीली कजरी (१), राधाकुमार व्यास, मानमन्दिर, बनारस, '०४ तृ०

अम्बिकाप्रसाद सं० : गद्य-पद्य-संग्रह (१६ बा०), सम्पादक, लखनऊ, '६० द्वि०

अम्बिकाप्रसाद गुप्त : सच्चा मित्र भाग १-२, (२), रामलाल वर्मा, बनारस, '०६
,, सं० : प्रबन्ध-पूर्णिमा (१६), सम्पादक, बनारस, '३१
अम्बिकाप्रसाद चतुर्वेदी : कोहेनूर (२), हरिदास वैद्य, कलकत्ता, '१६
अम्बिकाप्रसाद वर्मा : अम्बिका-भजनावली (१७), शीतलप्रसाद वर्मा, राँची, '६०
अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी : हिन्दुओं की राज्यकल्पना (१५), भारतमित्र प्रेस, कलकत्ता, '१३
,, : भारतीय शासनपद्धति भाग १, (६), प्रतापनारायण वाजपेयी, कलकत्ता, '१५
,, : हिन्दूराज्य-शास्त्र (१५), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, '३१
,, : हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव (१०), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग '३७
,, : हिन्दुस्तानी मुहावरे (१०), लेखक, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता '४०
अयोध्याप्रसाद खत्री : मोलवी स्टाइल की हिन्दी का छंद-भेद (१०) ग्रन्थकार, मुजफ़्फ़रपुर, '८७

अयोध्याप्रसाद खत्री: खड़ी बोली का पद्य (१०), नारायण प्रेस, मुज़फ़्फ़रपुर, '८७
" : खड़ी बोली आन्दोलन (१०), ग्रन्थकार " '८८
अयोध्याप्रसाद गोयलीय : जैन वीरों का इतिहास और हमारा पतन (८), जैन-मित्र-मण्डल, दरीबा, दिल्ली, '३०
" : मौर्य साम्राज्य के जैन वीर (८) " " " '३२
अयोध्याप्रसाद शर्मा सं० : रहिमन-विनोद (१८), लक्ष्मीधर वाजपेयी, इलाहाबाद, '२८
अयोध्यासिंह उपाध्याय : प्रद्युम्न विजय, (४), भारत जीवन प्रेस, बनारस '९३
" : प्रेमकान्ता (२), " " बनारस '९४
" : रुक्मिणी-परिणय (४), लेखक, निज़ामाबाद, आज़मगढ़, '९४
" : ठेठ हिन्दी का ठाठ (२), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '९९
" : रसिक रहस्य (१), " " " '९९
" : प्रेमम्बुबु-वारिधि (१), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१९००
" : प्रेम-प्रपञ्च (१) " " '१९००
" : प्रेमाम्बु-प्रश्रवण (१) " " '०१
" : प्रेमाम्बु-प्रवाह (१) " " '०१
" : उपदेश-कुसुम (१७), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '०१
" : प्रेम-पुष्पोपहार (१), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०४
" : उद्बोधन (१) " " " '०६
" : अधखिला फूल (२) " " " '०७
" : काव्योपवन (१) " " " '०९
" : प्रिय प्रवास (१) " " " '१४
" : कर्मवीर (१), महादेवप्रसाद सेठ, कलकत्ता, '१६
" : पद्य-प्रमोद (१), रामदहिन मिश्र, बाँकीपुर, '१७
" : बाल-विनोद (१ बा०) " " '१७
" : ऋतु-मुकुर (१), हिन्दी प्रेस, इलाहाबाद, '१७

अयोध्यासिंह उपाध्याय : विनोद-वाटिका (१ बा०), लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '२२

,, : चुभते चौपदे, चोखे चौपदे, (१) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '२३

,, : पद्य-प्रसून (१), पुस्तक भण्डार, लहरियासराय, '२५

,, : बाल-विलास (१ बा०), ,, ,, '२५

,, : बोल-चाल (१ बा०), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '२८

,, : बाल-विभव (१ बा०) जगन्नाथप्रसाद सिन्हा, सारन, '२६

,, : रस-कलश (६), हिन्दी पुस्तक भण्डार, लहरियासराय, '३१

,, : हिन्दी भाषा और उसके साहित्य का विकास (१६), विश्वविद्यालय, पटना, '३४

,, : कल्पलता (१), गङ्गा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३७

,, : बाल-कवितावली (१ बा०). प्रभुदत्त शर्मा, इटावा, '३६

,, : वैदेही वनवास (१), हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस, '३६

,, : विभूतिमती ब्रजभाषा (१६, ब्रज साहित्य ग्रन्थमाला, वृन्दावन, '४०

,, : पवित्र पर्व (१), रामनारायण लाल, इलाहाबाद, '४१

सं० : कबीर-वचनावली (१८), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१७

अरविन्द घोष : गीता की भूमिका (२० अनु०). श्रीकृष्ण पाण्डेय, कलकत्ता, '२३

,, : धर्म और जातीयता (१७ अनु०). जीतमल लूणिया, अजमेर, '२३

,, : माता (५ अनु०), गीता प्रेस, गोरखपुर, '३२

,, : हमारी स्वतन्त्रता कैसी हो ? (६ अनु०), सूर्यबलीसिंह, बनारस, '३५

,, : क्या भारत सभ्य है ? (६ अनु०), ,, ,, '३५

,, : योग-प्रदीप (१७ अनु०), मदनगोपाल गारोदिया, कलकत्ता, '३६

,, : इस जगत की पहेली (१७ अनु०), ,, ,, '३७

अर्जुनदास केडिया, सेठ; भारतीभूषण (६), भारतीभूषण कार्यालय, बनारस, '३०
अर्जुनसिंह कुनपाव : वेदान्तसार-संग्रह (१७), शमशेर बहादुर प्रेस, अहमदाबाद, '७०
अलबेली अलि : समय-प्रबन्ध-पदावली (१ प्रा०), हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, '१६००
अलाराम सागर, स्वामी : कांग्रेस पुकार मञ्जरी (६), धार्मिक प्रेस, इलाहाबाद, '६२
अली मुहिब्ब खाँ : खटमल बाईसी (१ प्रा०), चन्द्रप्रभा प्रेस, बनारस '६६
अल्ताफ़ हुसैन हाली : विधवा-प्रार्थना (१ अनु०), कृष्णलाल वर्मा, लेडी हार्डिंज रोड, बम्बई, '२०
अल्बेरूनी :—का भारत (६ अनु०) भाग १-३, इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '२६
अवध उपाध्याय : हिन्दी साहित्य (१६), रामनारायण लाल, इलाहाबाद, '३०
अवधनारायण : विमाता (२), (पुस्तक-भंडार, लहरियासराय, '२३
अवधविहारीलाल, मुंशी : वर्ण-निर्णय (१७), लेखक, इटावा, '०४
अविनाशचन्द्र दास : प्रतिभा (२ अनु०), नाथूराम प्रेमी, बम्बई,' २२
अशरफ़ अली : हिन्दुस्तानी (१६ बा०), द्वितीय पुस्तक, लेखक, बम्बई '६७
अशरफ़ महमूद काजी : निमन्त्रण (१), लेखक, ऐग्रीकल्चरल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, नागपुर '३६
„ „ : अन्तिम आशा (१) सीताबल्दी, नागपुर. '३६
अशरफ़ी मिश्र: धनकुबेर कारनेगी (७), हिन्दी पुस्तक ऐजेंसी, कलकत्ता, '२४
अश्वघोष : सौन्दरानन्द महाकाव्य (१ अनु०). गंगा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '२८
अश्विनीकुमार दत्त : भक्तियोग (१७ अनु०), हिन्दी पुस्तक ऐजेंसी, कलकत्ता, '२२
: प्रेम (५ अनु०), „ „ '२२

अश्विनीकुमार दत्त : कर्मयोग (१७ अनु०), हिन्दी पुस्तक भण्डार, १८१, हरिसन रोड, कलकत्ता '२१

अष्टावक्र :—वेदांत ग्रंथ (१७ अनु०), ज्ञानसागर प्रेस, बम्बई '८६

" :—(१७ अनु०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ '०३

अशोक, एम० ए० : मिश्र देश की कहानियाँ (३ बा०) सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, '३६

" : सीख की कहानियाँ (३ बा०) "

" : कथा-कहानी (३ बा०) "

आ

आत्माराम : विभक्ति-संवाद (१०), लाला सीताराम जैन, लुधियाना, '४१

आत्माराम : रसायन इतिहास-सम्बन्धी कुछ लेख (१४), विज्ञान परिषद, इलाहाबाद, '१८

आत्माराम : वेदों में शरीर-विज्ञान (२० अनु), बड़ौदा, '१६

आत्माराम जी आनन्दविजय जी, जैन तत्वादर्श ग्रंथ (१७), भीमसी माणिक, बम्बई, '८४

आत्माराम देवकर : मनमोहिनी (२), लहरी ग्रन्थमाला कार्यालय, जबलपुर, '१४

" : स्नेहलता (३), लहरी प्रेस, बनारस, '२४

" : सोने की मछली, बन्दर की चलनी, सीताफल की चोरी, माखनमाला (३ बा०), नर्मदाप्रसाद मिश्र, जबलपुर, '४०

आदितराम जोइतराम तथा जोशी मनसुखराम : कलगीनी लावनियो (१), मोतीलाल मगनलाल, अहमदाबाद, '८७

आदित्यराम भट्टाचार्य, मुहम्मद जकाउल्ला : बीजगणित (१४), भाग १ गवर्नमेंट प्रेस, इलाहाबाद, '७४

आदित्यराम वैकुण्ठराम : संगीतादित्य (११) भाग १, केशवराम आदित्यराम, वाधवान, '६०

आद्यादत्त ठाकुर : पाली-प्रबोध (१०), गंगा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '२८
आनन्दकिशोर मेहता : गुरुगोविंद सिंह जी (७), लेखक, लाहौर, '१४
आनन्दकुमार : जादू की कहानियाँ (३ बा०) हिन्दी मन्दिर प्रेस, इलाहाबाद, '३२
,, : राक्षसों की कहानियाँ (३ बा०), ,, ,, '३३
,, : इतिहासों की कहानियाँ (बा०) ,, ,, ३४
,, : बलभद्दर (३ बा०) ,, ,, ३४
,, : मधुबन (१) ,, ,, ३५
,, : पुष्पबाण (१) ,, ,, ३८
,, : समाज और साहित्य (६) ,, ,, ३६
,, : सारिका (१) ,, ,, ,, ३६
आनन्दकुमार : मालिनी (१) परमेश्वरीलाल गुप्त, आज़मगढ़, '३५
आनन्दकुमार स्वामी : भारतीय शिल्पकला का उद्देश्य (११ अनु०), इण्डियन सोसाइटी आफ ओरिएण्टल आर्ट्स, कलकत्ता, '१३
आनन्द कौसल्यायन, भदन्त : बुद्ध और उनके अनुचर (८), केदारनाथ गुप्त, इलाहाबाद, '३७
आनन्दप्रसाद खत्री : संसार-स्वप्न (४), लेखक, बनारस, '१३
आनन्दभिक्षु सरस्वती : भावना (५) भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन, '२८
आनन्द· विहारीलाल : रसायन शास्त्र (१४), नागरी प्रचारिणी सभा, आरा, '०६
आनन्दस्वरूप (साहब जी महाराज): सत्सङ्ग के उपदेश (१७) भाग १, ब्रजवासीलाल, आगरा, '२७
,, : संसारचक्र (४), राधास्वामी सत्सङ्ग सभा, दयालबाग, आगरा, '३२
आनन्दस्वरूप (साहब जी महाराज) : यथार्थप्रकाश (१७), राधास्वामी सत्सङ्ग सभा, दयालबाग, आगरा, '३६
आनन्दस्वरूप : आसनों के व्यायाम (१३), जगपति चतुर्वेदी, इलाहाबाद, '३५

इन्द्र विद्यावाचस्पतिः राष्ट्रों की उन्नति (६) लेखक, गुरुकुल, कांगड़ी '१४

" : प्रिन्स बिस्मार्क (७) " " " '१५

इन्द्राजी भगवान जी : शिल्प शास्त्रान्तर्गत आयतत्व (१४), पुस्तक प्रसारक मण्डली, प्रभास पाटन, '६७

इंशा अल्लाह खां : कुँवर उदैभान चरित्र (३ प्रचारिणी). ऐंग्लो ओरिएण्टल प्रेस, लखनऊ, '०५ रिप्रिंट

" : रानी केतकी की कहानी (३ प्रा०), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२८

इबादुर्रहमान ख़ाँ, डाक्टर, सं० : कताई (१२ आ०), भाग १-२ रामदयाल अग्रवाला, इलाहाबाद, '४१

" : मिट्टी के काम (१२ आ०) " " '४१

" : खेती और बागबानी (१२ आ०) " " '४१

" : मधुमक्खी पालन (१२ आ०) " " '४१

इब्न बतूता :—की भारतयात्रा (६ अनु०), काशी विद्यापीठ, बनारस, '३१

इब्सेन, हेनरी : समाज के स्तम्भ (४ अनु०), लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '३८

इरविङ्ग, वाशिङ्गटन : रिपवान विङ्कल (२ अनु०) (उपाध्याय) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६६

इलाचन्द्र जोशी : घृणामयी (२), नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '२६

" : विजनवती (१) ज्ञानपाल सेठिया, बीकानेर, '३७

" : साहित्य-सर्जना (६) छात्रहितकारी पुस्तक-माला, प्रयाग, '४०

" : पर्दे की रानी (२), लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '४१

" : सन्यासी, (२) लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '४१

" : ऐतिहासिक कथाएँ (८ आ०) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, '४२

इल्बर्ट, सर कोर्टनी : पार्ल्यामेण्ट (६ अनु०), राजपूताना हिन्दी साहित्य सभा, झालरापाटन, '१७

ई

ईश्वरीप्रसाद शर्मा : सूर्योदय (४), बर्मन प्रेस, कलकत्ता ,, '२५
,, : चना चबेना, (१ ब्रा०), शिवपूजन सहाय, आरा, '२५
,, : रँगीली दुनिया (४), ,, ,, '२६
ईसप :—की कहानियाँ (३ अनु०) भाग १, काशीनाथ गोपाल गोलवालकर, इन्दौर, '१७

उ

उइहार, जी० ई० : जापान की राजनीतिक प्रगति (८ अनु०), मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, बनारस, '२१
उत्तमचन्द मोहता : भारतीय गोशालाएँ (६), युवक समिति, सिरसा, पञ्जाब, '४०
उत्तमराम नवतमराम कवि : विवाह-वर्णन (१), छगनलाल मगनलाल प्रेस, अहमदाबाद, '७१
उदयनाथ तथा शिवनाथ : रसचन्द्रोदय वा रससृष्टि (६ प्रा०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८१
उदयनारायण वाजपेयी : प्राचीन भारतवासियों की विदेश यात्रा और वैदेशिक व्यापार (८), हिन्दी ग्रन्थ-प्रसारक मण्डली, औरैया, इटावा, '११
,, : स्वदेश-प्रेम (३), ओंकार प्रेस, इलाहाबाद, '१७
उदयभानु लाल : भानु-विरहावली (१), जैन प्रेस, लखनऊ, '६७
,, : भानु-प्रकाशिका (१), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '०६
उदयराम कवि : मोजदीन मेहताब (२), जीवाराम, अजरामर, गौड़, भूजानगर, '६३
उदयवीरसिंह : राजनैतिक प्रपञ्च (३), ज्योतिस्वरूप, अलीगढ़, '१७
उदयशङ्कर भट्ट : तक्षशिला (१), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३१
,, : चन्द्रगुप्त मौर्य (४), ,, ,, '३१
,, : विक्रमादित्य (४) हिन्दी भवन, लाहौर, '३३

उमाशङ्कर वाजपेयी, एम० ए०, 'उमेश' : ब्रजभारती (१), गङ्गा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३६

उमाशङ्कर शुक्ल सं० : नन्ददास (१८), प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग, '४०

उमेश मिश्र, डा० : विद्यापति ठाकुर (२), हिन्दुस्तानी एकेडमी यू० पी०, प्रयाग, '३७

उम्मेदलाल हरगोविन्द : कीर्तनावली (१६), गुजरात ट्रैक्ट एण्ड बुक सोसाइटी, सूरत, '६७

उषादेवी मित्रा : पिया (२), सरस्वती प्रेस, बनारस, '२७

" : वचन का मोल (२) " " " '३६

" : जीवन की मुस्कान (२) " " " '३६

" : पथचारी (२) " " " '४०

" : सान्ध्य पूरबी (३), प्रभात साहित्य कुटीर, आजमगढ़ '४१

" : नीम चमेली (३), इण्डियन प्रेस, प्रयाग '४१

उसमान : चित्रावली (२ प्रा०) खण्ड १-३, नागरी प्र० सभा, बनारस '१३

ऊ

ऊमरदान : ऊमर काव्य (१), अर्जुनसिंह, जोधपुर, '०७

ऊर्मिला शास्त्री : कारागार (६), रवि फ़ाइन आर्ट प्रिण्टिङ्ग प्रेस, लाहौर, '३१

ऋ

ऋषभचरण जैन : मास्टर साहिब (२) हिन्दी पुस्तक कार्यालय, दिल्ली '२७

" : वेश्या-पुत्र (२), मुद्रक मराठी प्रेस, दिल्ली (प्रकाशक अज्ञात) '२६

ऋषभचरण जैन : ग़दर (२), मुद्रक जंगीदा ब्राह्मण प्रेस, दिल्ली '३०

" : बुर्केवाली (२) " " " '३०

" : सत्याग्रह (२) " " " '३०

" : रहस्यमयी (२), फ़ाइन आर्ट प्रिण्टिङ्ग काटेज, इलाहाबाद, '३१

" : भाई (२), गङ्गा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ; '३१

" : भाग्य (२) " " " '३१

ए.

ऐ

ओ

क

कन्नोमल, एम० ए० : भारतवर्ष के धुरन्धर कवि (२०), फूलचंद बेलनगंज, आगरा, '१५
,, : हर्बर्ट स्पेन्सर की अज्ञेय मीमांसा (२०), इण्डियन प्रेस, प्रयाग, '१६
,, : हर्बर्ट स्पेसर की ज्ञेय मीमांसा (२०), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '१६ द्वि०
,, : हिन्दी प्रचार के उपयोगी साधन (१०), फूलचन्द, बेलनगञ्ज, आगरा, '२०
,, : संसार को भारत का सन्देश (६), राष्ट्रीय हिन्दी मन्दिर, जबलपुर, '२३
,, : बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र (२०), पञ्जाब संस्कृत पुस्तकालय, सैदमिट्ठा बाज़ार, लाहौर, '२४
कन्हैयाप्रसाद मिश्र : विद्याशक्ति (?), जे० एन० शर्मा, गया, '०१
,, तथा जीवनारायण मिश्र : बिहार के गृहस्थों का जीवन-चरित्र (१), लेखक, गया, '०३
कन्हैयालाल, बी० ए० : देश-दशा (४) शिवरामदास गुप्त, बनारस, '२३
,, : वीर छत्रसाल (४) ,, ,, '२५
,, : राष्ट्रीय शिक्षा का इतिहास और उसकी वर्तमान अवस्था (८), काशी विद्यापीठ, बनारस, '२६
,, : कांग्रेस के प्रस्ताव [१८८५-१९३१] (८), नवयुग प्रकाशन मन्दिर, विद्यापीठ रोड, बनारस, '३१
कन्हैयालाल, बी० ए०, एल्-एल्० बी० : हत्यारे का ब्याह (२), लेखक, इलाहाबाद, '३३
कन्हैयालाल : शील सावित्री (४) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '९८
,, : अञ्जना सुन्दरी (४) ,, ,, ,, '०१
,, : रत्नसरोज (४) ,, ,, ,, '१०
कन्हैयालाल : बृहत् भक्तमाल भाषा (१६), श्रीकृष्ण पब्लिशिङ्ग हाउस, मथुरा '२२

कन्हैयालाल गुप्त : चरित्र-चित्रण (६) हिन्दी साहित्य-प्रचार कार्यालय, १६२-६४ हरीसन रोड, कलकत्ता '२३

कन्हैयालाल दीक्षित : जापानी बाल कहानियाँ (३ बा०), गङ्गा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३३

,, : विचित्र जीवजन्तु (१० बा०) ,, '३३

कन्हैयालाल पोद्दार : काव्य-कल्पद्रुम (६), भाग १-२ वङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०१

,, : अलङ्कार-प्रकाश (६), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०२

,, : संस्कृत साहित्य का इतिहास (दो-भाग) (२०) रामविलास पोद्दार स्मारक ग्रन्थमाला समिति कार्यालय, नवलगढ़, '३८

,, : हिन्दी मेघदूत विमर्श (२०), सम्पादक, कलकत्ता, '२३ रिप्रिन्ट

कन्हैयालाल, पण्डित : छन्द-प्रदीप (६), गवर्नमेएट प्रेस, इलाहाबाद, '७५

कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी : पृथ्वीवल्लभ (२ अनु०), साहित्य प्रेस, चिरगाँव, झाँसी, '३१

,, : गुजरात के नाथ (२ अनु०), नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '४२

कन्हैयालाल, मुंशी : कहानी कैसे लिखनी चाहिए (६), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '३२

कन्हैयालाल; लाला : शारदा विलास (१), आशिक हुसैन, आगरा, '८३

कन्हैयालाल वर्मा, एम० ए० : नाज़ी जर्मनी (६), कैलाशनाथ भार्गव, बनारस, '३७

,, : भारतीय राजनीति और शासन पद्धति (६), एजुकेशनल पब्लिशिङ्ग हाउस, बनारस, '३६

,, : भारतीय शासन (६), नन्दकिशोर ब्रदर्स, बनारस, '४२

कन्हैयालाल शर्मा : विज्ञापन-विज्ञान (१२) लेखक, १४७, हरीसन रोड, कलकत्ता, '२२

कन्हैयालाल शर्मा : सफल दूकानदारी (१२), हिन्दी प्रचार कार्यालय चितरञ्जन एवेन्यू, कलकत्ता, '२२

कन्हैयालाल शास्त्री : वल्लभाचार्य-दिग्विजय (७), भाग १ वङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०४

कन्हैयालाल श्यामसुन्दर त्रिपाठी : उपन्यास-भण्डार (२), प्रेम-सञ्चारक कम्पनी, मुरादाबाद, '१६

कपिल:सांख्य-दिवाकर (१७ अनु०), बापालाल मोतीलाल, अहमदाबाद, '८७

,, : सांख्य-दर्शन (१७ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६५

,, : ,, (१७ अनु०), वैदिक प्रेस, अजमेर, '०३ द्वि०

,, : सांख्य दर्शन [ईश्वरकृष्ण की कारिका सहित], (१७ अनु०), हरियाना शेखावाटी ब्रह्मचर्य्याश्रम, भिवानी '१६

,, : गीता (१७ अनु०), लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण '६५

कपिलदेव द्विवेदी : संस्कृत विद्या का इतिहास (२०), शास्त्रीय ग्रन्थ माला, बनारस, '१३

कपिलदेव नारायणसिंह : निर्झरिणी (१). ज्ञानोदय प्रकाशन मन्दिर, छपरा, '३२

,, : बन्दी (१), विद्याभास्कार बुकडिपो, बनारस, '४०

,, : प्रेममिलन (१), साहित्य-सेवक कार्यालय, बनारस, '२६

कपिलदेव मालवीय : पञ्चात्र-रहस्य (६), अभ्युदय प्रेस. इलाहाबाद, '१६

कबीर : अनुरागसागर (१७ प्रा०), (गुलशन ए-पञ्जाब-प्रेस, रावलपिण्डी, '०२

,, : ,, (१७ प्रा०), लखनऊ प्रिण्टिङ्ग प्रेस, लखनऊ, '०३

,, : ,, (१७ प्रा०), कन्हैयालाल बुक्सेलर, पटना, सिटी, '०७

,, : ,, (१७ प्रा०), लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '२०

,, : ,, (१७ प्रा०), विश्वेश्वर प्रेस, बनारस, '२६

,, : आत्मबोध (१७ प्रा०), सुखरामदास मनधीरसिंह, हैदराबाद (सिन्ध), '०१

कबीर : एकोत्तर शतक [सटीक],(१७ प्रा०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '२०

,, : काफ़िर बोध (१७ प्रा०), भगवानदास राम जी, यवोला, '६२

" : रमैनी (१७ प्रा०), महाराज विश्वनाथसिंह, बनारस '६६

" : शब्दावली (१७ प्रा०), गनपतिदास लछमनदास, तेपाड़ी, (मध्यप्रान्त) द्वि० '२२

" : " (१७ प्रा०), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '१३

" : अखरावती (१७ प्रा०) " "

" : शतक [टीका० अखेराय] (१७ अनु०), लखनदास साधु, कबीरचौरा, बनारस '०१

" : बोधसागर भाग १-६ [सं० युगलानन्द] (१७ प्रा०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई

" :—सागर [सं० युगलानन्द] (१७ प्रा०). वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०६

" : " (१७ प्रा०), भाग १-३, लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '२१

" : साखी (१७ प्रा०) भाग १-८, गङ्गाप्रसाद वर्मा ब्रदर्स प्रेस लखनऊ, '६६,

" : साखी-संग्रह (१७ प्रा०), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '१८

" : हंसमुक्तावली (१७ प्रा०), रामलाल दयालदास, बुलसर, सूरत, '६२

" : हंसमुक्ता-शब्दावली (१७ प्रा०), जगन्नाथदास गुरबखश, बम्बई, '०५

" : ज्ञानसमाज (१७ प्रा०) गुलजारे हिन्द प्रेस, गुड़गाँव, '६६

" : ज्ञानसमाज ग्रन्थ (१७ प्रा०), रामकृष्ण, मुरादाबाद, '११

" : —लीलामृत (१७ प्रा०) भाग १ [दस ग्रन्थ । छगनलाल निगमचन्द, बड़ौदा, '६३

" :—चा ग्रन्थ (१७ प्रा०), डी० बी० पाठक, बम्बई, '३५

" : बीजक (१७ प्रा०) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८२

" : पूरा बीजक (११ प्रा०) प्रेमचन्द, मैक्लियड स्ट्रीट, कलकत्ता, '६०

कबीर : बीजक [पूरनदास कृत तृज्या तथा कुञ्जी सहित] (१७ प्रा०) बाबा देवीदास, लखनऊ, ६२

: बीजक मूल (१७ प्रा०) गङ्गाप्रसाद वर्मा ब्रदर्स, लखनऊ, ६८

,, : बीजक [पूरनदास कृत तृज्या सहित] (१७ प्रा०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०५

,, : बीजक और तृज्या (१७प्रा०) गोवर्धनदास गुरुगणपति साहब, जम्बूसहर '०५

,, : बीजक [सटीक] (१७ प्रा०) बालगोविन्द मिस्त्री, इलाहाबाद, '०५

,, : बीजक [सटीक] (१७ प्रा०) पुरुषोत्तम मावजी, बम्बई '११

,, :—वाणी (१७ प्रा०), बहरामजी फ़ीरोजशाह मदन, बम्बई, '१०

,, : भनित प्रकाश (१७ प्रा०), [सं० परमानन्द साधु] कोहेनूर, लाहौर '८३ रिप्रिंट

,, : बीजकसार कबीर पन्थ (१७ प्रा०), मुं० प्रियालाल, शाहजहाँपुर, '७६

,, : उपदेश-रत्नावली (१७ प्रा०), भारतबन्धु प्रेस, अलीगढ़, '८२

,, : कबीर-दर्पण (१७ प्रा०), सेठ वली मोहम्मद पीर मोहम्मद, बम्बई, '६८

,, : —ग्रन्थावली (१७ प्रा०), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '२८

कमल कुमारी देवी : गोस्वामी तुलसीदास का जीवनचरित्र (१८), लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '६५

कमलधारीसिंह : मुसलमानों की हिन्दी सेवा (१६), साहित्य-भवन लि० इलाहाबाद, '३५

कमलाकर भट्ट : निर्णयसिन्धु [सटीक] (१७ अनु०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६४

,, : निर्णयसिंधु (१७ अनु०) किशनलाल श्रीधर, बम्बई, '०१

कमलाकर मिश्र : आलू और इसकी खेती (१२), ऐग्रीकल्चरल इन्स्टीट्यूट प्रयाग, '४१ !

कमलाकर मिश्र : धान और इसकी खेती (१२) ऐग्रीकल्चरलइंस्टीट्यूट, प्रयाग, '४१

कमलाकान्त : प्रवासी (४), तुलसीप्रसाद, खेतान हाउस, जकरिया स्ट्रीट, कलकत्ता, '४१

कमलाचरण मिश्र : अद्भुत नाटक (४), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '८४

कमला देवी : कमला-भजन-सरोवर (१), गोविन्दसहाय, बिजनौर, '०८

कमलापति त्रिपाठी शास्त्री : मौर्यकालीन भारत का इतिहास, (८), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद '२८

कमलापति द्विवेदी : हिन्दी-स्वप्न (१०), लेखक, लाहौर, '१३

कमला प्रसाद वर्मा : भयानक भूल (७), बिहार-बन्धु प्रेस, बाँकीपुर, '०४

" : कुल-कलङ्किनी (२) बालमुकुन्द वर्मा, कचौड़ी गली, बनारस, '४२

कमलाबाई किबे : बाल-कथा (३ अनु०), हिन्दी-साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '४२

करणीदान : भैरव विनोद (१), महाराज भैरवसिंह, बीकानेर, '०१

कवि किङ्कर सं० : रसखान-रत्नावली (१८), भारतवासी प्रेस, दारागञ्ज, प्रयाग, '४१

" : घनानन्द-रत्नावली (१८) " " '४१

" : पद्माकर-रत्नावली (१८) " " '४१

करनसिंह : कर्णामृत (१), लेखक, चन्दौली, अलीगढ़, '०६

करुणापति त्रिपाठी : शैली (६), सीताराम प्रेस, बनारस, '४२

कर्ण कवि सं० : काव्य-कुसुमोद्यान (१६ प्रा०), द्वारिकाप्रसाद, शाहजहाँपुर, '१२

" : अनुराग-बाटिका (१ प्रा०) विनोद प्रेस, अलीगढ़, '१३

कलकत्ता बुक ऐण्ड लिटरेचर सोसाइटी : हिन्दी कोश (१), ई० ज़े० लाज़रस ऐण्ड कं० बनारस, '७१

कल्याण बख्श माथुर : वायुमण्डल (१४), विज्ञान-परिषद, इलाहाबाद, '४०

कामताप्रसाद गुरु : हिन्दी व्याकरण (१०), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२०
,, : पद्य-पुष्पाञ्जलि (१), नर्मदाप्रसाद मिश्र, जबलपुर, '२६
,, : सुदर्शन (४) रामनारायण लाल, इलाहाबाद, '३६
कामताप्रसाद जैन : संक्षिप्त जैन इतिहास (८), एम० के० कपडिया, सूरत, '४१
,, सं० : प्रतिमा लेख-संग्रह (८), जैन सिद्धान्त भवन, आरा, '४२
कामताप्रसाद तथा गङ्गाराम : सङ्गीतमाला (१६), अमर प्रेस, बनारस,'८४
कामन्दकि : नीतिसार (१५ अनु०), मित्र-विलास प्रेस, लाहौर, '७४
,, : ,, वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०४
कार्त्तिकप्रसाद खत्री : उषाहरण (४), हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, '६१
,, : महाराज विक्रमादित्य (७), नारायण प्रेस, मुज़फ्फ़रपुर, '६३
,, : मीराबाई (१८) ,, ,, ,,
,, : अहल्याबाई (७), लेखक, बनारस, '६७
,, : दीनानाथ (२) फ्रेंड ऐण्ड कम्पनी, मथुरा, '६६
,, : पाकराज या मोहनलाल (१२) ,, ,, '०३
,, : कवित्त रत्नाकर (१) बी० एम० ऐण्ड सन्स, बनारस, '०४
,, : शृङ्गारदान (१) मनोहरलाल, बनारस, '०५ तृ०
कॉलरिज : वृद्ध नाविक (१ अनु०), मोहनलाल वासुदेव, आगरा, '२६
कालिकाप्रसाद : राधा जी का नखशिख (१), मणिराम, इलाहाबाद, '६६
कालिकाप्रसाद अग्निहोत्री : प्रफुल्ल (४), गङ्गाप्रसाद वर्मा ऐण्ड ब्रदर्स, प्रेस, लखनऊ, '६५
कालिकाप्रसाद सिंह : रामरसिकशिरोमनि (१), सारन सुधाकर प्रेस, सारन, '६५
,, : मानस तरङ्गिणी (१), लेखक, छपरा, '६६
कालिदास : ऋतु-संहार [अनु० जगमोहन सिंह] (१ अनु०), अनुवादक, बेतूल (मध्यप्रान्त) '८८ द्वि०
,, : ,, ,, वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६०

कालिदास : ऋतु-तरङ्गिणी [अनु० महावीरप्रसाद द्विवेदी] द्वारिका-नाथ, कलकत्ता, '६१
,, : ऋतु-संहार इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '६३
,, ,, ,, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, '६६
,, : कुमारसम्भव [टी० अनु० कालीचरण], (१ अनु०) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६०
,, : ,, इण्डियन प्रेस इलाहाबाद, '६३
,, : ,, [महावीरप्रसाद द्विवेदी कृत सार मात्र] नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०२
,, : गौरी-गिरीश [अनु० हरिमङ्गल मिश्र], (१ अनु०) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '११
,, : मेघदूत [अनु० लक्ष्मणसिंह] (१ अनु०) इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद
,, : ,, [अनु० जगमोहन सिंह] (१ अनु०) अनुवादक, विजय-राघवगढ़, बिलासपुर (मध्यप्रान्त) '८४
,, : ,, [अनु० लाला सीताराम] (१ अनु०) अनुवादक, फ़ैज़ाबाद, '९३
,, : ,, [मल्लिनाथ की टीका समेत] (१ अनु०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१९००
,, : धाराधर-धावन,, भाग १ [राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' अनु०] (१ अनु०) अनुवादक, कानपुर
,, : ,, भाग २ (१ अनु०) रसिक समाज, कानपुर, '०२
,, : मेघदूत [अनु० लक्ष्मीधर वाजपेयी] (१ अनु०) इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '११
,, : ,, [अनु० महावीरप्रसाद द्विवेदी] (१ अनु०) '१६
,, : ,, [अनु० केशवप्रसाद मिश्र] (१ अनु०) साहित्य प्रेस, चिरगाँव, झाँसी, '२४
,, : रघुवंश (१ अनु०) [अनु० लाला सीताराम] (२ अनु०) अनुवादक, फ़ैज़ाबाद, '८६

कालिदास : „ „ [टीका० ज्वालाप्रसाद मिश्र] (१ अनु०
वेङ्कटेश्वर प्रेस बम्बई, '६५
„ : „ „ मधुमङ्गल मिश्र, जबलपुर, '१२
„ : „ „ इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '१३
„ : रघुवंश (१ अनु०), रघुनन्दन सारस्वत, आगरा, '३६
„ : मालविकाग्निमित्र [अनु० लाला सीताराम] (४ अनु०)
अनुवादक, कानपुर, '६६
„ : „ „ „ गौरीशङ्कर व्यास, इन्दरगढ़,
कोटा रियासत, '०६
„ : „ „ „ जगदेव पाण्डेय, बबुरा आरा, '२५
„ : विक्रमोर्वशी (४ अनु०). गवर्नमेंट प्रेस, इलाहाबाद, '७३
„ : शकुन्तला (४ अनु०) एजुकेशन सोसायटी प्रेस, बम्बई, '८८
„ : „ [अनु० लक्ष्मणसिंह] (४ अनु०) ई० जे० लाज़रस,
बनारस, '८८
„ : श्रुतबोध (६ अनु०) नर्मदाप्रसाद माणिक, लहरियाराय, '२८
कालिदास ; जंजीरा [सं० रामस्वरूप शर्मा], (१ प्रा०) आर्य-भास्कर
प्रेस, मुरादाबाद, '६८
कालिदास कपूर सं० : साहित्य समीक्षा (६). इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '३०
„ : „ शिक्षा-समीक्षा (१६), नवलकिशोर, लखनऊ, '३७
कालिदास माणिक : सरल व्यायाम (१३), नागरी प्रचारिणी सभा, काशी,
'०७
„ : राममूर्ति और उनका व्यायाम (१३), लेखक, मिश्र
पोखरा, बनारस, '०२
कालीचरणसिंह : अमहरा (१), लेखक, अमहरा जि० पटना, '०५
कालीप्रसाद : दिल्ली पतन (१) लेखक दालमण्डी, कानपुर, '२१
कालूराम : काव्य, भूमिका (६), सद्धर्म प्रचारक प्रेस, जलन्धर, '०१
कालेलकर काका : जीवन साहित्य (६ अनु०) जीतमल लूणिया, अजमेर,
'२७

काशीप्रसाद : गौहर जान (२) बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस, '११
काशीप्रसाद जायसवाल : हिंदू राज्यतंत्र, भाग १ (८ अनु०) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२७
,, : अंधकार युगीन भारत (८ अनु०) ,, '३८
काशीप्रसाद विद्याविनोद : चाँद बीबी (४ अनु०) उदयलाल कासलीवाल, बम्बई, '२०
(किलोल ?) : ढोला मारूरा दूहा (२ अनु०) [सं० रामसिंह, सूर्यकरण पारीक तथा नरोत्तमदास स्वामी] नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२४
किशनचन्द 'ज़ेबा' : भारत-उद्धार (४) मुद्रक, बेताब प्रिंटिंग वर्क्स, दिल्ली '२२
,, : हमारा देश (१) लाजपतराय साहनी, लाहौरी गेट, लाहौर, '२२
,, : ग़रीब हिन्दुस्तान (१) संतसिंह एँड सन्स, लाहौर, '२[illegible]
,, : पद्मिनी (४) मुद्रक—बेताब प्रिंटिंग वर्क्स, दिल्ली, '२३
,, : शहीद सन्यासी, (४) लाजपतराय एँड सन्स, लाहौर '२७
किशनलाल : बीरबल विलास (३) किशनलाल श्रीधर, बम्बई '०४
किशन सिंह : सवैया-शतक (गुरुमुखी अक्षर) (१) अमर प्रेस, अमृतसर, '८७
किशोरीदास वाजपेयी : साहित्य-मीमांसा (६) साहित्यरत्न-भंडार, आगरा, '२८
,, : रस और अलङ्कार (६) नाथूराम प्रेमी, बम्बई '३१
,, : साहित्य की उपक्रमणिका (६) नाथूराम प्रेमी, बम्बई '३[illegible]
,, : सुदामा (४) पटना पब्लिशर्स, पटना, '३६
,, : लेखन कला (६) हिमालय एजेन्सी, कनखल '४१
किशोरी लाल : सोने की माया (१५ अनु०) ,, ,, '४१
,, : गोस्वामी : त्रिवेणी (२) लेखक, वृन्दावन, '६०

„ : स्वर्गीय कुसुम (२) „ „ '८६
„ : प्रणयिनी-परिणय (२) भारतजीवन प्रेस, बनारस, '६०
„ : हृदय-हारिणी (२) लेखक, वृन्दावन, '६० ?
„ : लवङ्गलता (२) „ „ '६० ?
„ : मयङ्क-मञ्जरी (४) [महानाटक] नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६१
„ : कुसुम कुमारी (२) लेखक, वृन्दावन '०१
„ : लीलावती (२) „ „ '०१
„ : प्रेम-रत्नमाला (१) „ „ '०२ द्वि०
„ : प्रेम-वाटिका (१) „ „ '०२
„ : राजकुमारी (२) „ „ '०२
„ : तारा, भाग १-२ (२) „ „ '०२
„ : कनक-कुसुम (२) „ „ '०३
„ : चपला, भाग १-४ (२) „ '०३-४
„ : नाट्य सम्भव (४) देवकीनन्दन खत्री, बनारस '०४
„ : चन्द्रावती (२) „ „ '०५
„ : हीराबाई (२) „ „ '०५
„ : चन्द्रिका (२) „ „ '०५
„ : कटे मूँड की दो-दो बातें (२) बालमुकुन्द वर्मा, बनारस, '०५
„ : मल्लिका देवी (२) „ „ '०५
„ : सावन सुहावन (१) „ „ '०५
„ : इन्दुमती वा वनविहङ्गिनी (२) „ „ '०६
„ : तरुण तपस्विनी वा कुटीर तपस्विनी (२) „ „ '०६
„ : याकूती तख्ती या यमज सहोदर (२) „ „ '०६
किशोरीलाल गोस्वामी : ज़िन्दे की लाश (२) लेखक, वृन्दावन, '०६
„ : लखनऊ की क़ब्र या शाहीमहल (२) भाग १-३ „ „ '०६-७
„ : पुनर्जन्म या सौतियाडाह (२) '०७
„ : माधवी-माधव, भाग १-२ (२) „ „ '०६-१०

किशोरीलाल गोस्वामीः नन्हेलाल गोस्वामी (७) लेखक, वृंदावन '१०
,, : सोना और सुगन्धि वा पन्नाबाई (२) भाग १-२ '१०-१२
,, : लालकुँवर वा शाही रङ्गमहल (२) रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद, '१३
,, : रज़िया बेगम (२) लेखक, वृन्दावन '१५
,, : अँगूठी का नगीना (२) ,, ,, '१८
,, : गुप्त गोदना, भाग १-२, (२) छबीलेलाल गोस्वामी, मथुरा, '२३
,, : भारतेन्दु भारती (१८) ,, ,, '२४
किशोरीलाल घ० मशरूवाला: गीता-मंथन (२० अनु०) सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, '३६
किशोरीलाल घ० मशरूवाला : गाँधी-विचार-दोहन (७ अनु०) सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर, '३३
किशोरीलाल शर्मा सं०: मृत्यु-परीक्षा (१३) लेखक, हापुड़, मेरठ, '०३
कुञ्जनदास : सुदामा-विनोद (१) लेखक, पटना, '०२
कुन्दकुन्दाचार्य : समयसार नाटक (४ अनु०) [अनु० बनारसीदास जैन] सूर्यभान, मुरादाबाद, '६६
,, : ,, ,, ज्ञानी रामचन्द्र नागा, कम्बोज, '२४
,, : ,, ,, छगनलाल बाकलीवाल, बम्बई, '२६
कुन्दनलाल : लघुरस कलिका (१) बैजनाथ शर्मा, लखनऊ, '७६
कुन्दनलाल और जगतचन्द रामोला : सत्यप्रेम (२) गढ़वाली प्रेस, देहरादून, '६३
कुन्दनलाल गुप्त : सरल मनोविज्ञान (१५) नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '२१
कुमारप्पा : राजस्व और हमारी दरिद्रता (६) शुद्ध खादी भण्डार, कलकत्ता, '३०
कुमार हृदय : सरदार (४) एल० डी० वाजपेयी, इलाहाबाद, '३३
,, : निशीथ (४) ,, ,, '३४
,, : भग्नावशेष (४) केदारनाथ गुप्त, इलाहाबाद, '३६

कुबेर उपाध्याय : दत्तक-चन्द्रिका (१७ अनु०) अलबर्ट प्रेस, लाहौर, '८२
कुलपति मिश्र : रसरहस्य (६ प्रा०) [सं० बलदेव प्रसाद, मिश्र] इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '९७
कुंवर कन्हैया जू : बुन्देलखण्ड केसरी (१८) भारत प्रेस, बनारस, '०६-८
,, : हिन्दुओं के व्रत और त्योहार (१७) हिन्दी मन्दिर प्रेस, इलाहाबाद, '३१
,, : वीरों की कहानियाँ (८ बा०) नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '३५
कुशीराम : राजा हरिश्चन्द्र (४) महादेव शर्मा, पटना, '०८
कुह्ने लुई : जलद्वारा रोगों की चिकित्सा (१३ अनु०) काशीनाथ खत्री, सिरसा, इलाहाबाद, '८७
,, : आरोग्यता प्राप्त करने की नवीन विद्या (१३ अनु०) श्रोत्रिय ब्रह्मस्वरूप, बिजनौर, '०४
,, : बच्चों की रक्षा (१३ अनु०) महावीरप्रसाद पोद्दार, कलकत्ता, '२१
,, : आकृति-निदान (१३ अनु०) हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '२३
कृपानाथ मिश्र : मणि गोस्वामी (४) पुस्तक भण्डार, लहरियासराय, दरभङ्गा, '३१
,, : बालकों का योरोप (६ बा०) ,, ,, ,, '३१ ?
,, : विदेश की बातें (६) इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '३२
,, : व्यास (२) रामेश प्रिन्टिङ्ग वर्क्स, पटना, '३२
कृपानिवास : पदावली (१ प्रा०) छोटेलाल लक्ष्मीचन्द, लखनऊ, '०१
कृपाराम : हित-तरङ्गिणी (६ प्रा०) भारत-जीवन प्रेस, बनारस, '१५
कृष्णकान्त मालवीय : संसार-सङ्कट (८) अभ्युदय प्रेस, इलाहाबाद, '२०
,, ,, : सोहागरात (१७) पद्मकान्त मालवीय, ,, '२७
,, ,, : मनोरमा के पत्र (१७),, ,, '२८
,, ,, : मातृत्व (१३) ,, ,, ,, '३१
कृष्णकुमार लाल : युगल जोड़ी (१८) लेखक, बरेली, '३१
कृष्णकुमारी देवी : अभागी बहनों की आत्म-कहानी (३) आदर्श हिन्द पुस्तकालय, चितरञ्जन एवेन्यू, कलकत्ता, '३०

कृष्णाकुमारी देवी : ज़च्चा (१३) गङ्गा पुस्तकमाला, कार्यालय लखनऊ, '३२
कृष्णगोपाल माथुर : वक्तृत्व-कला (११) नर्मदाप्रसाद मिश्र जबलपुर, '१८
,, : व्यावहारिक विज्ञान (१४) [मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति ?] झालरापाटन, '२०
कृष्णगोपाल माथुर : अनोखे रीति-रिवाज (६) नर्मदाप्रसाद मिश्र, जबलपुर, '२२
कृष्णचन्द धर्माधिकारी : ज्ञान-प्रदीप (१७), महेन्द्रनाथ भट्टाचार्य, कलकत्ता, '७४
,, : सम्यक्त निर्णय (१७) ,, '७४
कृष्णदत्त : भाषाभूषण (१४। अहमदी प्रेस, दिल्ली, '८७
कृष्णदत्त शर्मा : बुद्धि फलोदय (३ प्रा०) गवर्नमेण्ट प्रेस, इलाहाबाद, '१८ प०
,, : हरिश्चन्द्रोपाख्यान (१) श्रीदत्त शर्मा, इलाहाबाद, '१४
कृष्णदास : ज्ञान-प्रकाश (१७) कानजी भीमजी, बम्बई, '७५
कृष्णदास उदासी सं० : कबीर पदसंग्रह (१८) सम्पादक, बम्बई, '६८
कृष्णदास कविराज : चैतन्य चरितामृत (७ अनु०) गौड़ीश्वर वैष्णव प्रेस, वृन्दावन, '०१
,, : ,, नित्यस्वरूप ब्रह्मचारी, वृन्दावन, '०२
कृष्णदास गांधी : कताई-गणित (१२) हिन्दुस्तान तालीमी सङ्घ, वर्धा, '४०
कृष्णदेव नारायण सिंह 'कनकलता' : अनुराग-मुकुल (१) लेखक, अयोध्या, '८६
,, : सनेह-सुमन (१) लेखक, छपरा, '८७
,, : अनुराग-मञ्जरी (१) महन्त, लक्ष्मण किला, अयोध्या, '०१
,, : कनक-मञ्जरी (१) लेखक, अयोध्या '१४
कृष्णदेव प्रसाद गौड़ 'बेढब' : बनारसी एक्का (३) बजरङ्गबली, बनारस, '३५
,, : बेढब की बहक (१) रणजीतसिंह, बनारस, '३६
,, : मसूरीवाली (३) कलाकुञ्ज, बनारस, '४२

कृष्णदेव शरणसिंह 'गोप' : माधुरी (४) खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर, '८८
कृष्णदेव शर्मा : सूर का एक पद अथवा सूरवंश निर्णय (१८) लेखक, देहरादून, '४१
कृष्णप्यारी : प्रेमरत्न (१) ब्रजमोहनलाल, अलीगढ़, '११
कृष्णप्रकाश सिंह अखौरी : पन्ना (४) हरिदास ऐण्ड कं०, कलकत्ता, '१५
,, : वीर चूड़ामणि (२) ,, ,, '१५
कृष्णप्रसाद दर : आधुनिक छपाई (१२) लेखक, इलाहाबाद, '३९
कृष्णबलदेव : भर्तृहरि-राजत्याग (१) विद्याविनोद प्रेस, लखनऊ, '९८
कृष्णबिहारी मिश्र : चीन का इतिहास (८) रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद, '१८
,, सं० : पूर्ण-संग्रह (१८) गङ्गा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२५
,, : देव और बिहारी (१६) गङ्गा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२५
,, सं० : मतिराम-ग्रन्थावली (१८) ,, ,, '२६
कृष्ण मिश्र : पाखण्ड-विडम्बन (४ अनु०) [अनु० हरिश्चन्द] अनुवादक, बनारस, '७३
,, : प्रबोध-चन्द्रोदय (अनु०) [अनु० अनाथदास] नवल-किशोर प्रेस, लखनऊ, '८३
,, : ,, ,, [अनु० कवि गुलाबसिंह] परमानन्द स्वामी, द्वारिका, ०५
,, : ,, ,, [अनु० महेशचन्द्रप्रसाद] अनुवादक, पटना, '३५
कृष्णलाल : खटमल स्तोत्र (१) लेखक, मथुरा, '९४
कृष्णलाल गोस्वामी : रससिन्धु-विलास (६) अंजुमन प्रेस, बनारस, '८३
,, : हास्य पञ्चरत्न (१) ,, ,, '८४
,, : रससिन्धु-प्रकाश [सटीक] (१ गोपाल मन्दिर, बनारस, '९३
कृष्णलाल गोस्वामी : पञ्चऋतु-वर्णन (१) गोपाल मन्दिर, बनारस, '९३
,, : रससिन्धु-शतक (२) ,, ,, बनारस, '९५

कृष्णलाल गोस्वामी : माधवी (२) बालमुकुन्द वर्मा, बनारस, '१२
कृष्णलाल वर्मा : चम्पा (२) अमीचन्द जैन, गोपन, '१६
,, : अनंतमती (१७ बा०) लेखक, बम्बई, '२०
कृष्ण व्यंकटेश : भारतीय लोक-नीति और सभ्यता (६) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, '३१
कृष्णलाल श्रीधारिणी : बरगद (४ अनु०) सरस्वती प्रेस, बनारस, '३८
कृष्णशङ्कर त्रिपाठी, बी० ए० : देशी राज्यों में हिन्दी और उसके प्रचार के उपाय (१०) जुबिली नागरी भण्डार कार्यालय सभा, बीकानेर, '१४
कृष्णशङ्कर शुक्ल, एम० ए० : केशव की काव्य-कला (१८) सीताराम प्रेस, बनारस, '३४
,, : आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास (१६) द्वारिकादास, बनारस, '३५
,, : कविवर रत्नाकर (१८) देवेन्द्रचन्द्र, बनारस, '३५
,, : हमारे साहित्य की रूपरेखा (१६) नन्दकिशोर भार्गव, बनारस, '३६
कृष्णानन्द : तन्त्रसार (१७ अनु०) [अनु० ज्वालाप्रसाद मिश्र], जगदीशप्रसाद मिश्र, किसरौल, मुरादाबाद, '२३
कृष्णानन्द उदासी : नानक सत्यप्रकाश (१७) लेखक, पटना, '०२
कृष्णानन्द गुप्त : अङ्कुर (३) साहित्य प्रेस, चिरगाँव, '२६
,, : केन (२) गङ्गा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३०
,, : प्रसाद जी के दो नाटक (१८) ,, ,, '३३
,, : पुरस्कार (३) सरस्वती पब्लिशिङ्ग हाउस, इलाहाबाद, '३६
,, : नागरिक जीवन (१५) ,, ,, इलाहाबाद, '३६
,, : जीव की कहानी (१४) ,, ,, '४१
कृष्णानन्द जोशी : उन्नति कहाँ से होगी ? (४) हरिदास ऐण्ड कं०, कलकत्ता, '१५
कृष्णानन्द द्विवेदी : विद्या-विनोद (४) लेखक, कलकत्ता, '६४

कृष्णानन्द व्यासदेव 'रागसागर' : रागकल्पद्रुम (११।प्रा०) [सं० नगेन्द्रनाथ गुप्त] रामकमलसिंह, कलकत्ता, '१४ द्वि०

केएट, जेम्स टेलर : होम्यो केएट मैटिरिया मेडिका (१३ अनु०) भट्टाचार्य ऐंड कं० कलकत्ता, '४०

केदारनाथ : तारामती (२) लेखक, मथुरा, '११

केदारनाथ गुप्त, एम० ए० : हम सौ वर्ष कैसे जीवें ! (१३) लेखक, इलाहाबाद, '२६

: स्वास्थ्य और जलचिकित्सा (१३) ,, ,, '३३

,, : प्राकृतिक चिकित्सा (१३) लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '३७

,, आदर्श भोजन (१३) छात्र हितकारी पुस्तकमाला, दारागञ्ज, इलाहाबाद '३६

केदारनाथ गुप्त, बी० ए०, एल० टी तथा लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी : प्रियप्रवास की समालोचना तथा टीका (१८) विश्वविद्यालय-परीक्षा बुकडिपो, पानदरीबा, इलाहाबाद, '३७

केदारनाथ गुप्त, बी० ए०, एल-एल० बी० : बृहद् विश्वज्ञान (६) केशरवानी पब्लिसर्श, दारागञ्ज, इलाहाबाद, '४२

केदारनाथ चैटरजी : होम्योपैथिक-सार (१३), लेखक, बनारस, '८२

केदारनाथ पाठक : नीम के उपयोग, भाग १ (१३) श्यामसुन्दर रसायनशाला, गायघाट, बनारस, '३८

केदारनाथ मिश्र, बी० ए० 'प्रभात' : श्वेत-नील (१) राजेश्वरप्रसाद पटना, '३६

,, : कलापिनी (१) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '४०

केवलराम शर्मा : छन्दसार पिङ्गल (६) ब्रजवल्लभ हरिप्रसाद बम्बई, '२७

केशरीमल अग्रवाल : दक्षिण तथा पश्चिम के तीर्थस्थान (६) गङ्गा-पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२६

केशव अनन्त पटवर्धन, एम० एस-सी० : वनस्पति-शास्त्र (१४) मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर, '२८

केशवचन्द्र गुप्त : गल्प पञ्चदशी (३ अनु०) [अनु० ज्वालादत्त शर्मा] लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद, '१६

केशवदास : रसिकप्रिया (६ प्रा०) [गुजराती अनु० सहित] नारायण भारती जसवन्त भारती, रानूज, '७७

" : " " वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '००

" : " " [टीका० सरदार कवि की टीका सहित] नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६८

" : " " ["] वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई '१४

" : कविप्रिया (६ प्रा०) [सटीक] नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८६

" : " " [टीका० हरिचरणदास नवलकिशोर, प्रेस, लखनऊ, '६०

" : प्रिया-प्रकाश " [टीका लाला भगवानदीन] टीकाकार, बनारस, '२[illegible]

" : रामचन्द्रिका (१ प्रा०) [सटीक] नवलकिशोर, प्रेस, लखनऊ, '८२

" : " " [टीका० जानकीप्रसाद] वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०७

" : " " [सं० लाला भगवानदीन] नागरी प्रचारिणी सभा बनारस, '२२

" : केशव-कौमुदी [टीका० लाला भगवानदीन] टीकाकार, बनारस, '२३

" : नखशिख भाग १-२ (१ प्रा०) [सं० जगन्नाथदास 'रत्नाकर'] भारत जीवन प्रेस, बनारस, '२३

" : वीरसिंह [देव] चरित (१ प्रा०) ओरछा दरबार, '०४

" : विज्ञान गीता (१७ प्रा०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६४

केशवदास संत : अमीघूँट (१७ अनु०) वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '१०

केशवदेव डा० : अमेरिका में डा० केशवदेव (६) द्वारिका प्रसाद सेवक, इन्दौर, '१६
केशवदेव शर्मा : भगवान राम की कथा (१७ बाल०) लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '४०
केशवप्रसाद मिश्र तथा रामनाथसिंह : वैद्युत शब्दावली (१०) रामनाथसिंह, भदैनी, बनारस, '१५
,, पद्मनारायणाचार्य : गद्य-भारती (१०) एजुकेशन पब्लिशिंग हाउस, बनारस '४०
केशवराम भट्ट : सज्जाद-सुम्बुल (४) बिहार बन्धु प्रेस, बाँकीपुर, '७७
,, : शमसाद-सौसन (४) ,, ,, '८१
केशवसिंह : करि-कल्पलता (१३) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६८
कैलाशचन्द्र : विदूषक (५) चाँद प्रेस, इलाहाबाद, '२८
कैलाशनाथ भटनागर, एम० ए० : नाट्य-सुधा (४) इण्डियन प्रेस, लाहौर, '३३
,, : कुणाल (४) ,, ,, '३७
,, : श्रीवत्स (४) लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '४१
कैसरबख्श मिर्ज़ा : कैसर कोश (१०) प्रयाग प्रेस, इलाहाबाद, '८५
कौटिल्य : अर्थशास्त्र (६ अनु०) मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास, संस्कृत पुस्तकालय, लाहौर, '२७
कौशिक : गृह्य सूत्रम् (१७ अनु०) उदयनारायणसिंह, माधवपुर, विधुपुर बाज़ार, मुज़फ़्फ़रपुर, '२७
क्रीन, लॉर्ड : कठिनाई में विद्याभ्यास (८ अनु०) एस० पी० ब्रदर्स ऐंड कं०, झालरापाटन, '१५
क्रोपाटकिन, प्रिन्स : रोटी का सवाल (६ अनु०) सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर, '३२
,, : संघर्ष या सहयोग (६ अनु०) ,, ,, '३३
,, : नवयुवकों से दो-दो बातें (१५ अनु०),, नई दिल्ली, '३३
क्षेत्रपाल शर्मा : कामलता (२) महावीर प्रसाद, कलकत्ता, '६०

क्षितिमोहन सेन, एम० ए० : भारतवर्ष में जाति-भेद, (६ अनु०) अभिनव भारती ग्रन्थमाला, १७-१६ हरीसन रोड, कलकत्ता, '४१
के० एन० गुप्त : उद्यान-विज्ञान (१२) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '४०

ख

खड्गबहादुर मल्ल : सुधा-बुंद (१) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '८२
" : पावस प्रेम-प्रवाह (६) " " "
" : पीयूष-धारा (१) " " "
" : जोगिन लीला (१) " " "
" : फाग अनुराग (१) " " "
" : महारास नाटक (४) " " "
" : भारत आरत (४) " " "
" : रति-कुसुमायुध (४) " " "
" : रसिक विनोद (१) " " "
" : हरितालिका नाटिका (४) " " '८७
" : कल्पवृक्ष (४) " " '८८
" : भारत ललना (४) " " '८८
खण्डेराव कवि : भक्त-विरुदावली (१६) ठा० गोपालसिंह, रायपुर (मध्य प्रान्त) '०४
खवासडोलाजी बाबाजी : रतनसेन अने रतनावती (४) लेखक, मोरवी, '६०
खुन्नालाल शर्मा : इन्दुमती परिणय (१) लेखक, गोरखपुर, '०१
खुन्नूलाल लाला : स्त्री-सुदशा (६) लेखक, फ़र्रुखाबाद, '८३
खुशालदास : विचार-रत्नावली (१७) [सटीक] मुफ़ीद-ए-आम प्रेस, लाहौर, '६३
खुसरो, अमीर : ख़ालिकबारी (१० प्रा०) मुफ़ीद-ए-ख़ालिक प्रेस, आगरा, '६६
" : " " सूरजमल, कमरुद्दीन खाँ, पटना, '७०
" : हिन्दी कविता (१ प्रा०) नागरी प्रचारिणी सभा बनारस, '२२

गङ्गाप्रसाद, एम० ए० : नलिका-आविष्कार (१२) स्वामी प्रेस, मेरठ, '६६

" : अँग्रेज़ जाति का इतिहास (८) ज्ञान मण्डल प्रेस, काशी, '२८

गङ्गाप्रसाद अग्निहोत्री : समालोचना (६) नागरी-प्रचारिणी सभा, बनारस, '६६

गङ्गाप्रसाद अवस्थी : राग बहार (१) रसिक प्रेस, कानपुर, '६७

गङ्गाप्रसाद उपाध्याय, एम० ए० : विधवा विवाह मीमांसा (१७) चाँद कार्यालय, इलाहाबाद, '२६

" : आस्तिकवाद (१७) कला प्रेस, इलाहाबाद '२६

" : अद्वैतवाद (१७) " " '२८

" : जीवात्मा (१७) " " '३३

" : राजा राममोहनराय, केशवचन्द्र सेन, तथा स्वामी दयानन्द (७) कला प्रेस, इलाहाबाद, '३४

गङ्गाप्रसाद गुप्त : अब्दुल्ला का खून (२) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '८२

" : नूरजहाँ (२) बालमुकुन्द वर्मा, नैपाली खपरा, बनारस, '०२

" : वीर पत्नी (२) विश्वशेश्वर प्रसाद वर्मा, बनारस, ०३

" : पूना में हलचल (२) " " '०३ द्वि०

" : कुमारसिंह सेनापति, भाग १-२(२) '०३

" : वीर जयमल (४) बालमुकुन्द वर्मा, बनारस, '०३

" : हमीर (२) " " '०४

" : रानी भवानी (७) कृष्णानन्द शर्मा, कलकत्ता, '०४

" : बिहारी वीर (८) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '०४

" : तिब्बत वृत्तान्त (८) " '०५

" : पूना का इतिहास (८) कल्पतरु प्रेस, बनारस, '०६

" : दादाभाई नौरोजी (७) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '०६

" : देशी कारीगरी की दशा और स्वदेशी वस्तु स्वीकार (१२) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '०६

गङ्गाप्रसाद गुप्त : राधाकृष्णदास (१८) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '०७
" सं० : युवक-साहित्य (१६) संपादक, लहरियासराय, दरभङ्गा, '२१
गङ्गाप्रसाद पाण्डेय : पर्णिका, भाग १ (१) प्रमोद प्रेस, इलाहाबाद, '३८
" : छायावाद और रहस्यवाद (६) रामनारायणलाल, इलाहाबाद '४१
" : काव्य-कलना (६) केदारनाथ गुप्त, इलाहाबाद '३८
" : निबंधिनी (५) छात्रहितकारी पुस्तकमाला, इलाहाबाद, '४१ ?
" : कामायनी—एक परिचय (१८) रामनारायणलाल, इलाहाबाद, '४२
गङ्गाप्रसाद भोतिका : विक्रयकला (१२) हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '२२
गङ्गाप्रसाद मिश्र : चतुर्विंशति उपनिषत्सार (२०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '१३
गङ्गाप्रसाद मुंशी : कुमारी तत्व-प्रकाशिका (१६ ना०) लेखक, मिर्जापुर, '७१
गङ्गाप्रसाद मेहता, एम० ए० : चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वितीय (७) हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '३३
" : प्राचीन भारत (८) के० के० माथुर, बनारस, '३३
गङ्गाप्रसाद (जी० पी०) श्रीवास्तव : लंबी दाढ़ी (३) लेखक, गोंडा '१४
" : उलट फेर (४) " " '१८
" : नोक-झोंक (३) " " '१६
" : दुमदार आदमी और गड़बड़झाला (४) " '१६
" : मर्दानी औरत (४) " " '२०
" : महाशयसिंह शर्मा (३) " " '२०
" : गुदगुदी (३) फाइन आर्ट प्रिंटिङ्ग काटेज, इलाहाबाद, '२७

गङ्गाप्रसाद (जी० पी०) श्रीवास्तव : गङ्गा-जमुनी (३) हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता '२७
,, : भूल-चूक (४) जी० पी० सिन्हा, गोंडा, '२८
,, : लतखोरीलाल (२) फ़ाइन आर्ट प्रिंटिंग काटेज, इलाहाबाद, '३१
,, : विलायती उल्लू (३) हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '३२
,, : हास्यरस (६), गङ्गा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३४
,, : चाल बेढब (४) आर० सैगल, चुनार, '३४
,, : चोर के घर छिछोर (४) मुद्रक—रूपवाणी प्रिंटिंग हाउस, दिल्ली, '३४
,, : साहित्य का सपूत (४) फ़ाइन आर्ट प्रिंटिंग काटेज, इलाहाबाद, '३५
,, : स्वामी चौखटानन्द (२) ,, ,, '३६
गङ्गाप्रसादसिंह अखौरी : हिन्दी के मुसलमान कवि (१६) लहरी बुक-डिपो, बनारस, '२६
,, : पद्माकर की काव्य-साधना (१८) साहित्य सेवा सदन, बनारस, '३४
गङ्गाराम यती : निदान (१३) खुरशेद-ए-आलम प्रेस, लाहौर, '७७
गङ्गाशङ्कर नागर पंचोली : कृषि-विद्या (१२) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१६००
,, : कपास की खेती (१२), राधारमण तिवारी, इलाहाबाद, '१६
,, : आलू (१२) विज्ञान-परिषद् इलाहाबाद, '२१
,, : केला (१२) ,, ,,
,, : सुवर्णकारी (१२) ,, ,, '२३

गङ्गाशङ्कर मिश्र एम० ए० : भारत में वृटिश साम्राज्य (८) हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, '३०
गजराजसिंह : द्रौपदीवस्त्र हरण (४) नीलमणि सील, कलकत्ता, '८५
,, : श्री अजिरविहार (१) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०४
गजाधर कवि : छन्दोमञ्जरी (६) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '८७
गजाधरप्रसाद शुक्ल : जगदीशविनोद (१) लखनऊ प्रिन्टिङ्ग प्रेस, लखनऊ, '६६
,, : भुवनेन्द्र भूषण (१) शुक्ल पुस्तकालय, रियासत पाताञोफ़, महोली, सीतापुर, १६००
,, : उषा चरित्र (१) लखनऊ प्रिन्टिङ्ग प्रेस, लखनऊ, '०२
गजाधर बख्श सिंह : साहित्य छटा (१) लेखक, सीतापुर, '१०
गजानन नायक : ताड़ का गुड़ (१२) कुमारप्पा, वर्धा, '३८
गजानन श्रीपति खैर : संसार की समाज-क्रान्ति और हिन्दुस्तान (६) काशी विद्यापीठ, बनारस, '३६
गणपत जानकीराम दुबे : मनोविज्ञान (१५) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०४
गणपत राय : पञ्जरतन (१७) कोहेनूर प्रेस, लाहौर, '६७
गणेशदत्त : अफ़ीम की खेती (१२) रामप्रसाद, ग्वालियर, '१८
गणेशदत्त पाठक : अर्थ-शास्त्र प्रवेशिका (१५) इण्डियन प्रेस, प्रयाग, '०७
गणेशदत्त मिश्र : नखशिख बत्तीसी (१) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६२
गणेशदत्त शर्मा गौड़ : भारत में दुर्भिक्ष (६) गांधी हिन्दी पुस्तक भण्डार, बम्बई, '२१
,, : ग्राम-सुधार (६) मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर, '३३
,, : स्त्रियों के व्यायाम (१३) गङ्गा पुस्तकमाला, लखनऊ, '३०
गणेशदत्त शास्त्री : पद्मचन्द्र कोश [संस्कृत-हिन्दी] (१०) मेहरचन्द लक्ष्मणदास, सैदमिट्ठा बाज़ार, लाहौर, '२५
गणेश दैवज्ञ : जातकालङ्कार (१४ अनु०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०५
,, : ग्रहलाघव ,, लक्ष्मी-वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '१४

गणेश पाण्डेय : देश की आन पर (३) केदारनाथ गुप्त, इलाहाबाद, '४१
गणेशप्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य (१६) हिन्दी प्रेस, इलाहाबाद, '३१
,, : हिन्दी साहित्य का गद्यकाल (१६) रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद, '३४
,, : हिन्दी के कवि और काव्य, भाग १-३ (१६) हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '४१
गणेशराम मिश्र : गज्जू और गप्पू की कहानियाँ (३ बा०) मिश्रबन्धु कार्यालय, जबलपुर, '२४
,, : खटपट स्वर्ग (३ बा०) ,, ,, '३३
,, : लम्बी नाक (३ बा०) ,, ,, '३३
,, : अदलू और बदलू (३ बा०) ,, ,, '३६
गणेशसिंह : भक्ति-चन्द्रिका (१) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६४
,, : गुरु नानक सूर्योदय भाग १-२ (१७) भारत जीवन प्रेस बनारस, '१६००
गणेश सीताराम शास्त्री : रत्न-परीक्षा (१२) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '८८
गदाधरप्रसाद तथा भगवानदास : अर्थशास्त्र-शब्दावली (१०) भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन, '३२
गदाधरप्रसाद 'मोहिनीदास' : प्रेम पीयूष-धारा (१) लेखक, बनारस '७०
गदाधर सिंह : चीन में तेरह मास (६) लेखक, लखनऊ, '०३
,, : रूस-जापान-युद्ध भाग १-३ (८) ,, ,, '०५
,, : ,, भाग २ (८) पुस्तक प्रचारक कं०, अजमेर, '०८
,, : भारतमही (१) प्रकाश पुस्तकालय, केशरगञ्ज, अजमेर, '०८
,, : जापानी राज्य-व्यवस्था (६) लेखक, लखनऊ, '१२
गयाचरण त्रिपाठी : सती (२) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०८
गयादत्त त्रिपाठी बी० ए० : खाद और उनका व्यवहार (१२) राधारमण त्रिपाठी, १४, जौहरी मुहल्ला, इलाहाबाद, '१५
,, : लाख की खेती (१२) ,, ,, '१६

„ तथा ब्रजभूषण शुक्ल : हिन्दी काव्य की कोकिलाएँ (१६) साहित्य भूषण प्रेस, इलाहाबाद, '३३

„ : हिन्दी की कहानी लेखिकाएँ और उनकी कहानियाँ (१६) बी० एस० शुक्ल, इलाहाबाद, ३५

„ : गुप्त जी की काव्यधारा (१८ केदारनाथ गुप्त, इलाहाबाद, '३७

„ : नादिरा (३) गङ्गा ग्रन्थागार, लखनऊ, '४०

„ : हिन्दी के वर्त्तमान कवि और उनका काव्य (१६) काशी-पुस्तक भंडार, चौक, बनारस, '४२

„ : उर्दू के कवि और उनका काव्य (२०) „ '४२

गिरिजानन्दन तिवारी : विद्याधरी (२) भारत जीवन प्रेस, बनारस, ०६

„ : सुलोचना (२) „ „ '०६

गिरिजाप्रसाद शर्मा : विमान (१४) ऐंग्लो ओरिएटल प्रेस, बनारस '४१

गिरिधर कविराय : आत्मानुभव शतक (१७ प्रा०) स्वामी विरक्तानन्द, अहमदाबाद, '६४ रिप्रिंट

„ : कुण्डलिया (१७ प्रा०) मुस्तफ़ा-ए-प्रेस, लाहौर, '७४ रिप्रिंट

„ : „ (१७ प्रा०) नवलकिशोर, लखनऊ, '८३

„ : गिरिधर-काव्य (१७ प्रा०) गुलशन-ए-पञ्जाब प्रेस, रावलपिंडी, '६६

„ : कुण्डलिया (१७ प्रा०) जैन प्रेस, लखनऊ, '६७

„ : कुण्डलिया-संग्रह (१७ प्रा०) किशनलाल श्रीधर, बंम्बई, '०२

„ : कुण्डलिया (१७ प्रा०) भार्गव बुकडिपो, बनारस, '०४

गिरिधरदास गोपालचन्द्र : जरासन्ध वध (१ प्रा०) हरिश्चन्द्र, चौखम्भा, लखनऊ, '७४

„ : भारती-भूषण (६ प्रा०) नवलकिशोर, लखनऊ, '८१

„ : रस-रत्नाकर (६ प्रा०) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०६

गिरिधरदास तथा हरिश्चन्द्र : प्रेम-तरङ्ग (१ प्रा०) हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, '८४

गिरिधरदास द्विवेदी : संप्रदाय-प्रदीप (१० अनु०) टीका, कण्ठमणि शास्त्री, विद्याविभाग, कांकरौली, '३५

गिरिधरलाल हरिकिशनदास कवि : छन्द-रत्नमाला (१) लेखक, सूरत, '८६

गिरिधर शर्मा : मातृवन्दना (१) श्रीधर शिवलाल, बम्बई, '०६

गिरिधरसिंह वर्मा : स्वर्णकार-विद्या (१२) चन्दूलाल वर्मा, भिवानी, '३०

गिरिराज कुँवर : ब्रजराज विलास (१) लेखक, बम्बई, '०६

गिरिधरस्वरूप पाण्डेय : गिरीश पिङ्गल (६), गिरीश पुस्तकालय, अकबरपुर, फर्रुखाबाद, '०५

गिरीशचन्द्र घोष : बलिदान (२ अनु०) उदयलाल कासलीवाल, बम्बई, '२०

गिरीशचन्द्र त्रिपाठी : महापुरुषों की प्रेम-कहानियाँ (४) हिन्दी भवन, सलकिया, हवड़ा, '३७

,, : महापुरुषों की करुण कहानियाँ (८) ,, '३७

गीजूभाई बधेका : गाँव में (६ बा०) सदानन्द अवस्थी, जोधपुर, '४१

गुमानी कवि : काव्य-संग्रह [सटीक] (२० प्रा०) पूरनचंद देवीप्रसाद, इटावा, '६७

,, : कृष्ण-चन्द्रिका (१ प्रा०) मेहरचन्द लक्ष्मणदास, सैदमिट्ठा बाज़ार, लाहौर, '३५

गुरुचरनदास अग्रवाल : निराला देश (३ बा०) शिशु प्रेस, इलाहाबाद, '३८

गुरुदास : रत्न-परीक्षा (१२) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६६

गुरुनाथ जोशी सं० : कन्नड़ गल्प ['गल्प संसारमाला' में] (२०) सरस्वती प्रेस, बनारस, '४१

गुरुनाथ शर्मा : मैसूर में (६) देशी राज्य साहित्य मंदिर, मद्रास '३६

गुरुप्रसाद सं० : रत्नावली (१०) संपादक, बन्नू, '२७

गुरुप्रसादसिंह : भारत-संगीत (१) लेखक, गिधापुर '०१
गुरुभक्तसिंह : सरस-सुमन (१) लेखक, बलिया, '२५
" : कुसुमकुञ्ज (१) छात्रहितकारी पुस्तकमाला, इलाहाबाद, '२७
" : वनश्री (१) सरस्वती मन्दिर, काशी, '३२
" : वंशीध्वनि (१) इंडियन प्रेस, प्रयाग, '३२
" : नूरजहाँ, (१) लेखक, बलिया, '३५
गुरुमुखसिंह : नूतन अंधेर नगरी (४), प्रह्लाददास, पटना सिटी, '११
गुरुसहाय लाल : मानस-अभिराम (१८) राधेकृष्ण, फ़तेहगंज, गया, '०६
गुलबदन बेगम : हुमायूँ नामा (७ अनु०) [अनु० देवीप्रसाद मुंसिफ़], कालीपद घोष, कलकत्ता, '१३
" : " " नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२३
गुलाबचन्द श्रीवास्तव : नवरत्न (३) गोपाल प्रिंटिंग वर्क्स, बनारस, '१६
गुलाबरत्न वाजपेयी 'गुलाब' : लतिका (१) गङ्गा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२६
" : मृत्युञ्जय (२) " " '३४
" : तारामण्डल (३), विज्ञान मन्दिर, कलकत्ता, '३८
गुलाबराय : कर्त्तव्य-शास्त्र (१७) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१६
" : नवरस (६) आरा नागरी प्रचारिणी सभा, आरा, '२१
" : तर्कशास्त्र भाग १-३ (१५) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२६-२६
" : पाश्चात्य दर्शनों का इतिहास (२०) " " '२६
" : मैत्रीधर्म (१७) पुस्तक भण्डार, लहरियासराय, '२७
" : ठलुआ क्लब (५) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '२८
" : प्रबन्ध-प्रभाकर (६) हिन्दी भवन अनारकली, लाहौर, '३४
" : विज्ञान-वार्ता (१४) गयाप्रसाद ऐंड सन्स, आगरा, '३६
" : फिर निराशा क्यों (१५) गङ्गापुस्तकमाला, लखनऊ, '३६
" : प्रसाद जी की कला (१८) साहित्य रत्न भण्डार, आगरा, ३८'

गुलाबराय : हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास (१६) साहित्य प्रेस, आगरा, '३८

,, : हिन्दी नाट्य विमर्श (१६) मेहरचन्द लक्ष्मणदास, सेदमिट्ठा बाज़ार, लाहौर, '४०

,, : मेरी असफलताएँ (५) साहित्य रत्न भण्डार, आगरा, '४०

गुलाबसिंह : अध्यात्म रामायण (१७ प्रा०) [सं० संगीतदास] लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '८५

गुलाब सिंह (कविराव) : बृहद् व्यङ्ग्यार्थ-चन्द्रिका (६ प्रा०) रामकृष्ण वर्मा, बनारस, '६७

गुलाबसिंह धाऊ : प्रेम-सतसई (१) केशवप्रसाद, आगरा, '७०

गुलाल साहेब : बानी (१७ प्रा०) वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '१०

गेटे : फाउस्ट (१ अनु०) [अनु० भोलानाथ शर्मा] वैश्य बुक-डिपो, दर्ज़ी चौक, बरेली, '२६

गोकलचन्द, एम० ए० : नारी-महत्त्व (६) लेखक, लाहौर, '०७

गोकलचन्द शास्त्री, बी० ए० : सारथी से महारथी (४) हिन्दी भवन, अनारकली, लाहौर, '४१

गोकुलचन्द : शोक-विनाश (१) प्रियालाल, बलरामपुर, '७०

गोकुलचन्द्र शर्मा : गांधी गौरव (१) कामर्शल प्रेस, कानपुर, '१६

,, : मानसी (१) विद्यामन्दिर, अलीगढ़, '३०

गोकुलदास साधु : प्रेम-पत्रिका (१) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '८२

गोकुलनाथ : वचनामृत (१७ प्रा०), अङ्गद शास्त्री, अलीगढ़, '७०

,, : चौबीस ,, ,, माणिकलाल छोटेलाल का प्रेस, अहमदाबाद, '८७

,, : वचनामृत ,, हरीदास तेवरदास वैष्णव, अहमदाबाद, '०६

,, : चौबीस ,, ,, लल्लूभाई छगनलाल देसाई, अहमदाबाद, '२६

,, : गोवर्धनवासी-चिन्तन (१७ प्रा०) हरीदास तेवरदास वैष्णव, अहमदाबाद, '०६

गोकुलनाथ : वनयात्रा (१७ प्रा०) हरीदास तेवरदास वैष्णव, अहमदाबाद, '०६
" : पवित्रा एकादशी नूं घौल (१७ प्रा०) " " '०६
" ? : चौरासी वैष्णवन की वार्ता (१७ प्रा०) (गुजराती अक्षर) जगजीवनदास दलपतराम, अहमदाबाद, '८१
" ? : " " गोवर्धनदास लक्ष्मीदास, बम्बई, '६५
" ? : " " रणछोड़ पुस्तकालय, डाकोर, '०३
" ? : दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता (१६ प्रा०) " '०३
" ? : प्राचीन वार्ता-रहस्य (१६ प्रा०) [सं० द्वारकादास पारीख] विद्याविभाग, काँकरौली, '४२
गोकुलनाथ शर्मा औदीच्य : पुष्पवती (४) हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, '६४
गोकुलप्रसाद वर्मा : पवित्र जीवन (२) कायस्थ इन्स्टीट्यूट हिन्द, लखनऊ, '०७
गोकुलानन्दप्रसाद : मोती (६) " " पटना, '०६
गोपाल जी वर्मन : जीव इतिहास-प्रसङ्ग, भाग १-३ (१७), लेखक, पटना, '०५-०७
गोपाल दामोदर तामस्कर, एम० ए०, एल० टी० : राधा-माधव अर्थात् कर्मयोग (४) कृष्णराव भावे, जबलपुर, '२२
" : बैर का बदला (४) " " '२२
" : यूरप के राजकीय आदर्शों का विकास (८) मध्यभारत हिन्दी साहित्य-समिति, इन्दौर, '२४
" : शिक्षा-मीमांसा (१६) कनछेदीलाल पाठक, जबलपुर, '२५
" : कौटिलीय-अर्थशास्त्र, मीमांसा भाग १ (२०) इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '२६
" : शिवाजी की योग्यता (७) जीतमल लूणिया, अजमेर, '२६
" : अफ़लातून की सामाजिक व्यवस्था (२०) काशी विद्यापीठ, बनारस, '२७
" : राज्य-विज्ञान (१५) इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '२६
" : दिलीप (४) इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '२६

गोपाल दामोदर तामस्कर एम० ए०, एल० टी० : मौलिकता (६) इंडियन प्रेस, इलाहाबाद '२६
,, : मराठों का उत्थान और पतन (८) सस्ता साहित्य मण्डल अजमेर, '३१
गोपालदास : सङ्गीत समार्णव-तरङ्ग (११) ज्ञान उत्तेजक सोसाइटी, बम्बई, '८३
गोपालदास : वज्रभाख्यान, (१७) गिरिजाप्रसाद सिंह, बिसवाँ, '७३
,, : ,, अने मूल पुरुष (१७), जमुनादास लल्लूभाई, अहमदाबाद, '८६
गोपालदासः भक्तिप्रकाश (१६), सेठ रामरघुवीर, फैज़ाबाद, '०५
,, : तुलसी-शब्दार्थ प्रकाश (१७) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '१५
गोपालप्रसाद शर्मा : नेकी का दर्जा बदी (३) छन्नोमल, आगरा, '६३
,, : कंजूस-चरित्र (३) ,, ,, '६३
,, : ठग-लीला (३) ,, ,, '६३
,, : श्रीहित-चरित्र (१८), मूलचन्द गोस्वामी, कलकत्ता, '१६
गोपालराम गहमरी : बसंत-विकाश (१) यूनियन प्रेस, जबलपुर, '६०
,, : विद्या-विनोद (४) लेखक, गहमर, गाज़ीपुर '६२
,, : देश-दशा (४) भारतभ्राता प्रेस, रीवां, '६२
,, : यौवन योगिनी (४) मुंशी लालबहादुर, बम्बई, '६३
,, : चतुरचञ्चला (२) लाल रघुवीरसिंह, रीवां हाई स्कूल, रीवां, '६३
,, : दादा और मैं (४) एस० एस० मिश्र, बम्बई, '६३
,, : भानमती (२), मैनेजर, 'जासूस', गहमर, गाजीपुर '६४
,, : नेमा (२) } ,, ,, ,, '६४
,, : नए बाबू (२) } ,, ,, ,, '४६

गोपालराम गहमरी : दम्पत्ति वाक्य-विलास (१) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६५

" तथा ज्वालाप्रसाद मिश्र : अद्भुत लाश (२) प्रयागदास गुप्त, मेरठ, '६६

गोपालराम गहमरी : सास-पतोहू (२) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६६

" : गुप्तचर (२) भारतमित्र प्रेस, कलकत्ता, '६६

" : बेकसूर की फाँसी, (२) मैनेजर 'जासूस', गहमर, गाज़ीपुर, '१६००

" : बेगुनाह का ख़ून (२) " " " १६००

" : सरकती लाश (२) " " " १६००

" : ख़ूनी कौन है ! (२) " " " १६००

" : डबल जासूस (२) हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, १६००

" : चक्करदार चोरी (२) मैनेजर 'जासूस', गहमर, गाजीपुर, '०१

" : जमुना का ख़ून (२) " " " '०१

" : जासूस की भूल (२) " " '०१

" : भयङ्कर चोरी (२) " " '०१

" : मायाविनी (२) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '०१

" : लड़की चोरी (२) मैनेजर, 'जासूस', गहमर, गाजीपुर, '०१

" : थाना की चोरी (२) " " " '०१

" : जादूगरनी मनोरमा (२) भारतजीवन प्रेस, बनारस, '०१

" : जमुना का खून (२) मैनेजर 'जासूस' गहमर, गाज़ीपुर, "

" : जाल राजा (२) " " " '०२

" : मालगोदाम में चोरी (२) " " " '०२

" : डबल बीबी (२) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०२

गोपालराम गहमरी : गश्ती काका (२) मैनेजर 'जासूस', गहमर, गाजीपुर, '०२
" : जासूस की चोरी (२) " " " '०२
" : देवरानी जेठानी (२) " " " '०२
" : अंधे की आँख (२) " " " '०२
" : अद्भुत खून (२) " " " '०२
" : दो बहन (२) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०३
" : घर का भेदी (२) मैनेजर, जासूस, गहमर, गाजीपुर, '०३
" : जासूस पर जासूसी (२) " " " '०४
" : डाके पर डाका (२) " " " '०४
" : डाक्टर की कहानी (२) " " " '०४
" : लड़का ग़ायब (२) " " " '०४
" : देवीसिंह (२) " " " '०४
" : तीन पतोह (२) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०५
" : जासूस चक्कर में (२) मैनेजर 'जासूस', गहमर, गाजीपुर, '०६
" : खूनी का भेद (२) " " '१०
" : आँखों देखी घटना (२)
" : इन्द्रजालिक जासूस (२)
" : किले में खून (२)
" : केतकी की शादी (२)
" : खूनी की खोज (२)
" : लाइन पर लाश (२)
" : यारों की लीला (२)
" : मृत्यु विभीषिका (२) } " " '१० ?
" : भोजपुर की ठगी (२), उपन्यास बहार आफ़िस, बनारस, '११
" : हत्या और कृष्णा (२) मैनेजर 'जासूस', गहमर, गाजीपुर, '१२ द्वि०

गोपालराम गहमरी : योग महिमा (२) मैनेजर 'जासूस', गहमर, गाज़ीपुर, '१२
,, : बलिहारीबुद्धि (२) मीठालाल व्यास, व्यावर, राजपूताना, '१२
,, : गुप्त भेद (२) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१३
,, : जासूस की ऐयारी (२) मैनेजर 'जासूस', गहमर, ग़ाज़ीपुर, '१४
,, : जाली बीबी और डाकू साहब (२) ,, ,, ,, '१४
,, : गेरुआ बाबा (२) एस० एस० मेहता ऐण्ड ब्रदर्स, बनारस, '१४
,, : जासूस की डाली (३) गङ्गा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२७
,, : हंसराज की डायरी (३) इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '४१
,, : भंडा डाकू (२) ,, ,, '४१
गोपालराव हरि : प्रस्ताव-रत्नाकर (१७) चिन्तामणि प्रेस, फ़र्रुखाबाद, '६०
गोपाल लाल खत्री : राष्ट्र-सुधार में नाटकों का भाग (५) लेखक, चौक लखनऊ, '१६
गोपाल लाल खन्ना : भारतेन्दु जी की भाषा-शैली (१८) बनारस ! '३७
गोपाल लाल शर्मा : इतिहास कौमुदी (८) लाइट प्रेस, बनारस, '७३
,, : हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास (१०) इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '३८
,, : काव्य-कला (६) इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '३६
गोपालशरणसिंह : माधवी (१) इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '२६
,, : कादम्बिनी (१) ,, ,, '३७
,, : मानवी (१) ,, ,, '३८
,, : सञ्चिता (१) ,, ,, '३६
,, : सुमना (१) ,, ,, '४१
गोपाल शर्मा सं० : दयानन्द-दिग्विजय (७) सम्पादक, आगरा, '८१
गोपालस्वरूप भार्गव : मनोरञ्जक रसायन (१५) विज्ञान परिषद, प्रयाग '२३

गोपालसिंह नैपाली : पछी (१) गङ्गा ग्रन्थागार, लखनऊ, '३४
,, : उमङ्ग (१) साहित्यमण्डल, बाज़ार सीताराम, दिल्ली, '३४
गोपीनाथ दीक्षित : पं० जवाहरलाल नेहरू, जीवनी तथा व्याख्यान (१) नेशनल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, '०७
गोपीनाथ पुरोहित एम० ए० : वीरेन्द्र (२) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई '६७
गोपीलाल माथुर, बी० ए०, सी-टी० : शिक्षा-विधि (१६) परमहंसलाल, लखनऊ, '३०
गोपीश्वर राजा : गोपीश्वर-विनोद (१) लेखक, दरभङ्गा '८८
गोभिल : गृह्यसूत्रम् (१७ अनु०) [समूल] शास्त्र पब्लिशिंग आफ़िस, मथुरापुर, मुज़फ़्फ़रपुर, '०६
गोरखनाथ : गोरक्षपद्धति (१७ अनु०) [टीका० महीधर शर्मा] लक्ष्मी-वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '६८
,, : भरथरी-चरित्र (१ प्रा०) गौरा वेवा, कलकत्ता, ६६
,, : कामशास्त्र (१३ अनु०) [अनु० शङ्करलाल जैन] लक्ष्मी-नारायण प्रेस, मुरादाबाद, ६६
गोरखनाथ चौबे : नागरिक शास्त्र की विवेचना (१५) रामनारायणलाल, इलाहाबाद, '४०
,, : आधुनिक भारतीय शासन (६) ,, ,, '४१
गोरखप्रसाद डा० : फोटोग्राफ़ी (१२) इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '३१
,, : सौर परिवार (१४) हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '३२
,, : आकाश की सैर (१४) इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३७
,, : तथा रामरत्न भटनागर : लकड़ी पर पॉलिश (१२) विज्ञान-परिषद्, इलाहाबाद, '४०
गोरेलाल : छत्रप्रकाश (५ प्रा०) नागरी प्रचारिणी सभा बनारस, '०३
गोरेलाल तिवारी : बुन्देलखण्ड का इतिहास (८) ,, ,, '३३
गोर्की, मैक्सिम : वे तीनों (२ अनु०) प्रमोदशङ्कर व्यास, बनारस, '३१

गोर्की, मैक्सिम : टानिया (२ अनु०) सीताराम प्रेस, बनारस, '३२
,, : माँ, भाग १-२ (२ अनु०) चन्द्रकला प्रेस, इलाहाबाद, '४०
गोवर्धनदास गुप्त : हिन्दी टाइप राइटिङ्ग (१२) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '४०
गोल्डस्मिथ : ऊजड़ ग्राम (१ अनु०) [अनु० श्रीधर पाठक] अनुवादक, इलाहाबाद, '६०
,, : श्रान्त पथिक (१ अनु०) ,, ,, '०२
,, : तथा पार्नेल : पद्यावली ['हरमिट', 'डिज़र्टेड विलेज' तथा 'ट्रावेलर'] (१ अनु० प०) के० भट्टाचार्य, बनारस, '८१
गोवर्धन चतुर्वेदी सं० : काव्य-संग्रह भाग १ (१६) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६४
गोवर्धनदास धूसर : व्रजविलास सारावली (१) नवलकिशोर, प्रेस, लखनऊ, '८४ द्वि०
,, : मोहनमाला चौरासी की नामावली (१६ प्रा०) ,, ,, '८४
,, : दोहावली दो सौ बावन की नामावली (१६ प्रा०) ,, ,, '८४
गोवर्धनलाल : नीति-विज्ञान (१७) नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '२३
गोवर्धनप्रसाद शर्मा : मज़मुए ख्यालात मरहठी व तुर्रा (१) ग्रन्थकार आगरा '८८
गोवर्धनलाल गोस्वामी : प्रेम-शतक (१) लेखक, गोपाल मन्दिर बनारस, '०३
गोवर्धन सिंह : अश्व-चिकित्सा (१३) लेखक, अर्णोद, '३०
गोविन्द कवि : कर्णाभरण (६) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '९९
गोविन्द गिल्लाभाई चौहान : शिखनख (१) ग्रन्थकार, सिहोर, भावनगर '९१
,, : गोविन्द-ग्रन्थावली, भाग १ (१८) ,, ,, '१९
गोविन्ददास, सेठ : तीन नाटक ['हर्ष', 'प्रकाश' तथा 'कर्तव्य'] (४) एम० पी० विश्वकर्मा, जबलपुर, '३१

गोविन्दवल्लभ पन्त : प्रतिमा (२) ,, ,, '३४
,, : राजमुकुट (४) ,, ,, '३५
,, : मदारी (२) ,, ,, '३५
,, : अंगूर की बेटी (४) ,, ,, '३७
,, : जूनिया (२) ,, ,, '३८
,, : अंतःपुर का छिद्र (४) ,, ,, '४०
गोविन्दशरण त्रिपाठी : कर्त्तव्य पालन (१७) खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर, '०८
गोविन्द सखाराम सरदेसाई : भारतवर्ष का अर्वाचीन इतिहास, भाग १ (८ अनु०), हिन्दी ग्रन्थ प्रसारक मंडली, खंडवा, '११
गोविन्द सहाय, लाला : श्यामकेलि (१) नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, '८६
गोविन्द सहाय : संसार की राजनीति में साम्राज्यवाद का नङ्गा नाच (६) साहित्य मन्दिर, लखनऊ, '४२
गोविन्द सिंह साधु : इतिहास गुरु खालसा (८) लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '०२
गो० प० नेने : हिन्दुस्तानी-मराठी शब्दकोष (१०) अखिल महाराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति, पूना, '३६
गौतम : न्याय तत्वबोधिनी (१७ अनु०) [सं० शालिग्राम, शास्त्री], संपादक, अजमेर, '६४
,, : न्याय-दर्शन (१७ अनु०) [समूल] शास्त्र पब्लिशिंग आफ़िस, मधुरापुर, मुजफ़्फ़रपुर, '०६ रिप्रिंट
गौरचरण गोस्वामी : गौराङ्ग-चरित्र (७) लेखक, वृन्दावन, '०६
[गौरा बेवा सं० ?] : गिरिधर व्यास और बैताल कृत कुण्डलिया (१६), संपादक, कलकत्ता, '१६००
गौरीदत्त शर्मा : तीन देवों की कहानी (३); हकीम अली, मेरठ, '७० द्वि०

,, : अक्षर तत्व (१०) इन्तज़ामी प्रेस, कानपुर, '३६
गौरीशङ्कर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी० : जीवन-क्रांति (२) इंडियन प्रेस, इलाहाबाद '३८
गौरीशङ्कर लाल : चित्तौर की चढ़ाइयाँ (८) आत्माराम जैन, लखनऊ, '१६
गौरीशङ्कर शर्मा : हिन्दी-उर्दू कोश (१०) जैन प्रेस, लखनऊ, '०१
गौरीशङ्कर शुक्ल : मनरञ्जन प्रकाश (१) रामकृष्ण वर्मा, बनारस, '६७
,, : राष्ट्रभाषा हिन्दी (१०) सरस्वती ग्रन्थमाला आफ़िस, आगरा, '२०
गौरीशङ्कर शुक्ल 'पथिक' : सरला (२) दीनानाथ सिंधिया, कलकत्ता, '२३
,, : शिल्प-विधान (१५), गङ्गाप्रसाद मोतिका, हिन्दी पुस्तक भवन, कलकत्ता, '२४
,, : व्यापार-संगठन (१२) हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '२५
,, : स्टॉक इक्सचेञ्ज (६) सरस्वती पुस्तकालय, ग्वालियर, '२६
,, : करन्सी (१५) सरस्वती ग्रंथमाला कार्लालय, बेलनगंज, आगरा, '२६
गौरीशङ्कर 'सत्येन्द्र', एम० ए० : गुप्त जी की कला (१८) महेन्द्र, आगरा, '३७
,, : साहित्य की झाँकी (१६) भगवानदास केला, वृन्दावन, '३७
,, : मुक्ति-यज्ञ (४) महेन्द्र, आगरा, '३८
गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा : सिरोही राज्य का इतिहास (८) लेखक, अजमेर, '११
,, : भारतीय प्राचीन लिपिमाला (१०) लेखक, उदयपुर, '६४
,, : कर्नल जेम्स टॉड (७) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०२
,, : अशोक की धर्मलिपियाँ (१८) नागरी-प्रचारिणी सभा बनारस, '२३
,, : राजपूताना का इतिहास [क्रमशः] (८), लेखक, अजमेर, '२४

गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा : नागरी अङ्क और अक्षर (१०) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '२६

,, : मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, (८) हिन्दुस्तानी ऐकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '२८

,, सं० : कोशोत्सव, स्मारक, संग्रह (१६) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२६

'ग्रामीण' : किरण (५) देवराज मिश्र, कुनरी, ज़िला बनारस, '१६

ग्रे : ग्रामस्थ शवागार में लिखित शोकोक्ति ['ऐलेजी रिटेन इन ए कन्ट्री चर्चयार्ड' अनू० (१ अनु०)] [अनु० गोपीनाथ पुरोहित, एम० ए०] वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६७

ग्रेग, रिचार्ड बी० : खद्दर का सम्पत्तिशास्त्र (१२ अनु०) सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर, '२८

ग्लादकोव : शक्ति (२ अनु०) बलदेवदास, बनारस, '३४

ग्वाल कवि : यमुना लहरी (१ प्रा०) नवलकिशोर, लखनऊ, '८१ द्वि०

,, : षट्ऋतु वर्णन (१ प्रा०) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६३

,, : नखशिख (१ प्रा०) लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद, '०३

जी० आर० पाण्डेय : लाठी (१३) लेखक, अजमेर, '२५

घनश्यामदास बिड़ला : बापू (७) सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, '४०

,, : बिखरे विचार (१५) ,, ,, '४१

,, : डायरी के कुछ पन्ने (७) ,, ,, '४१

,, : श्रीजमुनालाल जी (७) मुद्रक—हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नई दिल्ली, '४२

घनश्यामसिंह, बी० एस-सी०, एल-एल० बी० : भारत-शिक्षादर्श (१६) लेखक, गुरुकुल, कांगड़ी, '१४

घनानन्द : सुजान-सागर भाग १ (१ प्रा०) हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, '६७

,, : विरह-लीला (१ प्रा०) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०७

घनानन्द बहुगुण, एम० ए०, एल-एल० बी० : समाज (४) गङ्गा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३०

च

'चञ्चरीक' : ग्राम-गीताञ्जलि (१६) लेखक, गोरखपुर, '३१

चण्डीचरण सेन : गङ्गागोविंदसिंह (२ अनु०) सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर, '२७

,, : महाराज नन्दकुमार को फाँसी (२ अनु०) प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर, '३० ।

चण्डीप्रसाद वर्मा : धन्यवाद (३), आदर्श पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '३६

चण्डीप्रसाद सिंह : हास्य-रतन (३) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '८६

,, : पहेली भूषण भाग १ (१) ,, ,, ,, '८६

,, : दत्त कवि (दुर्गादत्त व्यास) (१८) ,, ,, '६६

,, : जीवनचरित्र, भाग १ (८) ,, ,, '६६

,, सं० : विद्या-विनोद (१६) ,, ,, '०१

चण्डीप्रसाद 'हृदयेश', बी० ए० : नन्दन, निकुंज (३), गङ्गा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ, '२३

,, : मनोरमा (२) चाँद आफ़िस, इलाहाबाद, '२४

,, : मङ्गल प्रभात (२) ,, ,, ,, '२६

चतुरसेन शास्त्री : हृदय की परख (२), नाथूराम प्रेमी, बम्बई '१८

,, : अन्तस्तल (५) ,, ,, '२१

,, : व्यभिचार (२) भद्रसेन वर्मा, बुलन्दशहर, '२४

,, : उत्सर्ग (४) गङ्गा पुस्तकमाला कर्यालय, लखनऊ, '२८

,, : अक्षत (३) ,, ,, '३१

,, : हृदय की प्यास (२) ,, ,, '३३

,, : खवास का व्याह (२) ,, ,, '३२

,, : इस्लाम का विष-वृक्ष (२) मुद्रक—भारत प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली, '३३

, : रजकण (३) फ़ाइन आर्ट प्रिंटिंग काटेज, इलाहाबाद, '३[illegible]

चंद : पृथ्वीराज रासो (१ प्रा०) नागरी-प्रचारिणी सभा, बनारस, '०५
'१३ रिप्रिन्ट

,, : असली पृथ्वीराज रासो (१ प्रा०) मोतीलाल बनारसीदास, सेद मिट्ठा बाज़ार, लाहौर, '३८

,, : पृथ्वीराज रासो के दो समय (रेवातट तथा पद्मावती विवाह) (१ प्रा०) गङ्गा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '४२

चन्दनराम कवि : अनेकार्थ (१० प्रा० खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '८०

,, : नामार्णव (१० प्रा० ,, खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '८२

चन्दलाल, बी० ए० : मॉडेल शू-मेकर (१२) लेखक, दयालबाग, आगरा, '४०

चन्दीप्रसाद : राजनीति के मूल सिद्धान्त (१५) सरस्वती पुस्तक भण्डार, लखनऊ, '३६

चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार : चन्द्रकला (३) नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '२६

,, : संसार की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (२०) विश्व-साहित्य ग्रन्थमाला, लाहौर, '३२

चन्द्रगुप्त वेदालङ्कार : बृहत्तर भारत (८) गुरुकुल, कांगड़ी, '३६

,, : रेवा (४) ओरिएंटल बुकडिपो अनारकली, लाहौर, '४२ द्वि०

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी : अङ्क (१०) लेखक, जयपुर, '०५ रिप्रिन्ट

,, : गुलेरी जी की अमर कहानियाँ (३) [सं० शक्तिधर गुलेरी] सम्पादक, ओरिएन्टल विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय '४० ?

चन्द्र परमहंस : विन्दुयोग (१७ अनु०) [टीका-ज्वालाप्रसाद मिश्र] वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०५

चन्द्रप्रकाश वर्मा : चाँदनी (१) नेशनिलिस्ट न्यूज़पेपर्स लि०, इलाहाबाद, '३७

,, : समाधि-दीप (१) प्रमोद प्रेस, इलाहाबाद, '३८

साहित्यालोक (६) सरस्वती पब्लिशिङ्ग-हाउस, प्रयाग, '४२

चन्द्रराज भण्डारी : समाज-विज्ञान (१५), सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर, '२८

चन्द्र शर्मा : उषाहरण (४) पूरनचन्द्र घोष, दरभङ्गा, '८७

चन्द्रशेखर पाठक : अमीरअली ठग या ठग वृत्तान्त (२) हिन्दी दारोगा दफ़र, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता, '११

,, : शशिबाला या भयङ्कर मठ (२) ,, ,, '११

,, : हेमलता भाग १, २ (२) लेखक, कलकत्ता, '१५

,, : भरती (२), आर० आर० बेरी, कलकत्ता, '२३

चन्द्रशेखर पाण्डेय : रामायण के हास्य स्थल (१८) कैलाशनाथ भार्गव, बनारस, '३६

चन्द्रशेखर वाजपेयी : नख-शिख (१ प्रा०) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६४

,, : रसिक विनोद (१ प्रा०) ,, ,, '६४

,, : हमीर हठ (१ प्रा०) हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, '६४

,, : ,, नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०४

,, : ,, इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '२८

चन्द्रशेखर शास्त्री : कन्या-शिक्षा (१६) सस्ता साहित्य-मण्डल, अजमेर, '२८

,, : विधवा के पत्र (२) लेखक, इलाहाबाद, '३३

,, : आधुनिक आविष्कार (१४) साहित्य-मण्डल, बाज़ार सीताराम, दिल्ली, '३६

,, : हिटलर महान (७) भारतीय साहित्य मन्दिर, चाँदनी चौक, दिल्ली, '३६

,, : पृथ्वी और आकाश (१४) साहित्य-मण्डल, बाज़ार, सीताराम दिल्ली, '३६

,, : जीवन शक्ति का विकास (१४) इण्डियन प्रेस, प्रयाग, '३६

चन्द्रसिंह विशारद सं० : कहमुकरणी (१६) नवयुगग्रंथ कुटीर, बीकानेर, '०३

चन्द्रसेन बाबू सं० : जैन ग्रंथ-संग्रह (१६) संपादक, इटावा, '०३

चन्द्रावती लखनपाल : स्त्रियों की स्थिति (६) गङ्गा ग्रंथागार, लखनऊ, '३३

" : शिक्षा-मनोविज्ञान (१६) लेखिका, गुरुकुल, कांगड़ी, '३४

चंपतराय जैन, बार-एट्-ला : आत्मिक मनोविनोद (१७ अनु०) साहित्य-मण्डल, बाज़ार सीताराम, दिल्ली, '३२

" : धर्म-रहस्य (१७) लेखक, हीराबाग़, बम्बई, '४०

चम्पाराम : धर्म लावनी (१) सितावचन्द नाहर, कलकत्ता, '७४

चरक : चरक संहिता भाग १-२ (१३ अनु०) श्रीकृष्णलाल, मथुरा ?, '६८

" : (११ अनु०) (दो खंड) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६८

" : " भाग १-८ (१३ अनु०) दत्तनारायण चौवे, मथुरा, १६००

" : " (१३ अनु०) ब्रजवल्लभ-हरिप्रसाद, बम्बई, '११

चरणदास : नासिकेत (१७ प्रा०) फीनिक्स प्रेस, दिल्ली, '६६

" : नासिकेत भाषा (१७ प्रा०) मोरेश्वर बापूजी, बम्बई, '८६

" : भक्ति सागरादि १७ ग्रंथ (१७ प्रा०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६३

" तथा सहजोबाई : ब्रह्मविद्यासार (१७ प्रा०) तत्त्वज्ञान सभा पुस्तकालय, लाहौर, '६७

" : भक्ति सागरादि (१७ प्रा०) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६८

" : चरणदास जी की बानी, भाग १-२ (१७ प्रा०) बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '०८

" : ज्ञान स्वरोदय (१७ प्रा०) विश्वेश्वर प्रेस, बनारस, '२८

चाणक्य : चाणक्य-नीति का भाषानुवाद (१५ अनु०) अम्बिकाचरण चैटरजी, बनारस, '८३
" : चाणक्य-नीति दर्पण (१५ अनु०) भारतजीवन प्रेस, बनारस, '९०
" : " (१५ अनु०) छोटेलाल लक्ष्मीचन्द, अयोध्या ? '९०
चाँदकरण सारडा : कॉलेज हॉस्टल (२) लेखक, अजमेर ? '१६
चारुचन्द्र सान्याल : हल्दी तथा अदरक की खेती (१२) गाँव सुधार पुस्तकमाला, नयागंज, लखनऊ, '३८
" : मसालों की खेती (१२) " " " '३९
" : खरबूज़ तथा तरबूज़ की काश्त (१२) " '३९
चिद्‌घानानन्द गिरि : न्याय-प्रकाश (१०) नारायणजी विक्रमजी, बंबई, '८५
: तत्त्वानुसंधान (१७) लेखक, भावनगर, '८६
चिंतामणि : कविकुल कल्पतरु (६ प्रा०) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ,

चिंतामणि : मनु और स्त्रियाँ (२०) सेवा प्रेस, प्रयाग, '३५
चिंतामणि विनायक वैद्य : महाभारत मीमांसा (२० अनु०) बालकृष्ण पांडुरंगा ठकार बुधवार पेठ, पूना, '२०
" " : रामचरित्र (२० अनु०, सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर, '२८ प्रथम
" " : हिन्दू भारत का उत्कर्ष (८ अनु०) काशी विद्यापीठ, बनारस, '२६
" " : हिन्दू भारत का अन्त [१०००-१२००] (८ अनु०) लेखक, पूना, '२९
चिम्मनलाल वैश्य : स्वामी दयानन्द का जीवन-चरित्र (७) लेखक, कासगंज, '०७
चुन्नीलाल : रसिक विनोद (६) गोपीनाथ पाठक, बनारस, '८२
चुन्नीलाल खत्री : सच्चा बहादुर भाग १-२ (२) देवकीनन्दन खत्री, बनारस, '०२

छबीलेलाल गोस्वामी : पञ्चपराग (३) सुदर्शन प्रेस, वृन्दावन, '१६
,, : पञ्चपल्लव (३) ,, ,, '१६
,, : पञ्चपुष्प (३) ,, ,, '१६
,, : पञ्चमंजरिका (३) ,, ,, '१७
छायासिंह : आनन्द लहरी (१) इन्द्रजीतसिंह, बनारस, '७६
छेदीदास : संत महिमा सनेह सागर (१६) नवलकिशोर, लखनऊ, '६२
छेदीलाल : एशिया निवासियों के प्रति योरोपियनों के बर्ताव (६) प्रताप पुस्तकालय, कानपुर, '२२
छोटेलालजी जीवनलालजी : दुग्ध-चिकित्सा (१३) नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '२४
छोटेलाल सोती : जाति-अन्वेषण (१७) लेखक, फुलेरा, जयपुर, '१४

ज

ज़काउल्लाह मौलवी : क्षेत्रमाप प्रक्रिया (१४) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८५
जगजीवन वीर जी सं० : कीर्तन-संग्रह (१९), संपादक, भावनगर, '६१ रिप्रिंट
जगजीवन साहिब : जगजीवन साहिब की शब्दावली (१० प्रा०), भाग १-२ बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '०६-११
जगतनारायण शर्मा : अकबर वीरबल समागम (३) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '८६
,, : भारत दुर्दिन (४) लेखक, बनारस, '८६
,, : अकबर गौरक्षा-न्याय (४) ग्रंथकार गौसेवक प्रेस, बम्बई, '६५
जगदम्बाप्रसाद मिश्र 'हितैषी' : वैशाली (१), लेखक, लखनऊ, '४१
जगदानन्द राय : प्राकृतिकी (१४), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '२५
,, : वैज्ञानिकी (१४) ,, ,, '२५ ?
,, : ग्रह-नक्षत्र (१४) ,, ,, '२५

जगन्नाथ गोप : काव्य-प्रभाकर (६) लेखक, भुज, '१४
जगन्नाथदास : मुहम्मद (७) सुदर्शन प्रेस, मेरठ, '८७
" : हरिश्चन्द्र कथा (१७) मु० गौरा वेवा, कलकत्ता, १९०६
जगन्नाथदास 'रत्नाकर', बी० ए० : समस्यापूर्ति (१), हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, '९४
" : हिडोला (१) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '९४
" सं० : जयप्रकाश-सर्वस्व भाग १, भारत जीवन प्रेस, बनारस, '९५
" : समालोचनादर्श (६) नागरी-प्रचारिणी सभा, बनारस, '९६
" : घनाक्षरी नियम-रत्नाकर (६) " '९७
" : हरिचन्द्र (१) नागरी-प्रचारिणी सभा, बनारस, '९९
" : धर्म संताप (१७) ब्रह्म प्रेस, इटावा '१९०[illegible]
" : गङ्गावतरण (१) इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '२८
" : उद्धव-शतक (१) " " '३१
जगन्नाथदास अधिकारी : कवि-कर्त्तव्य (६) ग्रन्थकार, बड़ौदा, '११
जगन्नाथ पण्डितराज : गङ्गालहरी (१ अनु०) (अनु० अम्बाशङ्कर व्यास) टीकाकार, मानमन्दिर, बनारस, '८४
" : भामिनी-विलास (१ अनु०) (अनु० महावीरप्रसाद द्विवेदी) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '९३
" : (हिन्दी) रस गङ्गाधर (६ अनु०) इण्डियन प्रेस लि०, इलाहाबाद, '३०
जगन्नाथप्रसाद : देशी रँगाई (१२), नवलकिशोर, बनारस, (?), '१६
जगन्नाथप्रसाद गुप्त : सरल त्रिकोणमिति (१४) दुर्गाप्रसाद गुप्त, मारिसगञ्ज, कटनी, '३६
जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी : संसार-चक्र (२) हित प्रकाश प्रेस, बनारस, '९९

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल : नज़ीर (चयन) (२०) भुवनचन्द्र वसक, कलकत्ता, '७०

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल : आहार शास्त्र (१३) लेखक, इलाहाबाद '३३

जगन्नाथप्रसाद सिंह : घरौंदा (३ बा०), लेखक, सारन, '२६

जगन्नाथ भारती : दयानन्द सरस्वती (७) ग्रन्थकार, दिल्ली, '२८

जगन्नाथ मिश्र : मधुप-लतिका भाग १ (२), लेखक, बनारस, '१२

जगन्नाथ मेहता : पश्चिमोत्तर प्रदेश तथा अवध के न्यायालयों और

: सर्कारी दफ्तरों में नागरी अक्षरों का प्रचार (१०), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '९८

जगन्नाथ शरण, बी० ए० : नीलमणि (२) सारन सुधाकर प्रेस, छपरा, '१६

„ : प्रह्लाद चरितामृत (४) लेखक, रतनपुरा, छपरा, १९००

„ : कुरुक्षेत्र (४) „ „ '२८

जगन्नाथ सहाय : भक्त रसनामृत (१) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '०८

„ : आनन्द सागर (१७) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '१३

जगन्नारायणदेव शर्मा : मधुप (१), बी० श्री० गुप्त ऐण्ड कं०, कलकत्ता, '२३

„ : आर्ष प्रकृत व्याकरण (१०) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०९

जगन्मोहन वर्मा : राणा जंगबहादुर (७) नागरी-प्रचारिणी सभा, बनारस, '१६

: बुद्धदेव (७) „ „ '१७

जगपति चतुर्वेदी : भौगोलिक कहानियाँ (९ बा०) „ '२८

„ : समुद्र पर विजय (१४ बा०) रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद, '२९

„ : आकाश पर विजय (१४) „ „ '३१

„ : आविष्कार की कहानियाँ (८ बा०) भारत पब्लिशर्स लि०, पटना, '३२

जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' : प्रेमचन्द की उपन्यास-कला (१८), मङ्गल-प्रसाद सिंह, छपरा, ,, '३४

जनार्दन भट्ट : वैद्यक-रत्न (१३), मुहम्मदी प्रेस, लखनऊ, '८२

जनार्दन भट्ट, एम० ए० : संस्कृत कवियों की अनोखी सूझ (२०) लेखक, माहेश्वरी विद्यालय, कलकत्ता, '१८

,, : टॉल्सटॉय के सिद्धान्त (२०), प्रताप पुस्तकालय, कानपुर, '२३

,, : अशोक के धर्मलेख (८), ज्ञान मंडल प्रेस, बनारस, '२४

,, : बुद्धकालीन भारत (८) रामचन्द्र वर्मा, बनारस, '२६

जनार्दन मिश्र, डॉ० : विद्यापति (२०), अर्जुन मिश्र, मिश्रपुर, असरगंज, भागलपुर, '३२

जनार्दन राय : आधी रात (४), सरस्वती प्रेस, बनारस, '३८

जमशेदजी होरमसजी पीरान : कलशी के दिलपसंद ख्याल (१), लेखक, बम्बई, '८३

जमाल :-कृत दोहे (१७ प्रा०) [टीका० समर्थदान], राजस्थान प्रेस, अजमेर, '०७

जमुनादास मेहरा : विश्वामित्र (४), रिखबदास बाहिती ऐंड कं०, चोर बगान, कलकत्ता, '२१

,, : देवयानी (४) ,, ,, ,, '२२

,, : हिन्द (४), श्रीराम ऐण्ड कं०, कलकत्ता, '२२

,, : विपद कसौटी (४), रिखबदास बाहिती ऐण्ड क०, चोर बगान, कलकत्ता, '२३

,, : कृष्ण-सुदामा (४) ,, ,, ,, '२४

,, : पंजाब केशरी (४), नारायणदत्त सैगल ऐण्ड सन्०, लाहौर, '२६

,, : मोरध्वज (४), चाँद कार्यालय, प्रयाग, '२६

,, : सती चिंता (४), ,, ,, '२६

,, : भारत-पुत्र, (४), कृपालसिंह बलबीरसिंह, अमृतसर, '३०

जमुनाप्रसाद : दुर्भाग्य-परिवर्तन (२), आर० एन० श्रीवास्तव ब्रदर्स, नरसिंहपुर '१३

जम्बुनाथन : हिन्दी मुहाविरा कोष (१०), एम० बी० शेषाद्रि ऐंड कं०, क्लेवेट, बंगलौर सिटी, '३५

,, : उर्दू-हिन्दी कोष (१०) ,, ,, ,, '३६

जयगोपाल कविराज : पश्चिमी प्रभाव (४), संतराम ब्रदर्स, लाहौर, '३०

जयगोपाल बोस : तुलसी शब्दार्थ प्रकाश (१८), हिन्द सुलतान प्रेस, बनारस, '६६

जयगोपाल, लाला : भयानक तूफ़ान (२), आर्य बुकडिपो, '१६

जयचन्द्र विद्यालंकार : भारतीय इतिहास का भोगौलिक आधार (८), धर्मचंद-लाहौर, '२५

,, : भारतभूमि और उसके निवासी (६), लेखक, कमालिया, पंजाब, '३१

,, : भारतीय इतिहास की रूपरेखा (८), हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी० इलाहाबाद, '३४

,, : भारतीय वाङ्मय के अमर रत्न (२०), एम० सुधाकर, नई दिल्ली, '३४

,, : इतिहास-प्रवेश (८), सरस्वती पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद '३८

जयदत्त जोशी : गोपीचन्द (७), नैनीताल प्रेस, कुमाऊँ, '६६

जयदेव : गीतगोविन्द (१ अनु०), [अनु० हरिश्चन्द्र] खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '८२ द्वि०

,, : ,, (१ अनु०) (सानु०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई '६२

,, : ,, (१ अनु०) बंगवासी फ़र्म, कलकत्ता, '६७

,, : ,, (१ अनु०), [अनु० रूपनारायण पाण्डेय] प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ, '०५

जयदेव : रतिमञ्जरी (१३ अनु०), कन्हैयालाल मिश्र, मुरादाबाद, '०६ रिप्रिन्ट

जयदेव : चन्द्रालोक (द अनु०), ब्रजरत्नदास, बनारस, '२७
जयपाल महाराज : रसिक प्रमोद (१), यूनियन प्रेस, दरभंगा, '०५
जयप्रकाश लाल : जगोपकारक (१७), सूरजमल, पटना, '७१
जय महाराज : घना जू को बखान (७), उदयचन्द जती, कलकत्ता, '६५
जयरामदास गुप्त : लँगड़ा ख़ूनी (१), नागेश्वर प्रेस, बनारस, '०७
,, : किशोरी वा वीरबाला (२), विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा, बनारस, '०७
,, : रङ्ग में भङ्ग (२) ,, ,, ,, '०७
,, : काश्मीर-पतन (२), ग्रन्थकार, राजघाट, काशी, '०७
,, : मायारानी (२), ,, ,, '०८
,, : नवाबी परिस्तान (२), ,, ,, '०६
,, : कलावती (२), ,, ,, '०६
,, : मल्का चाँदबीबी (२) विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा, नैपाली खपरा, बनारस '०६
जयरामलाल रस्तोगी : सौतेली माँ या अन्तिम युवराज (२), रामकृष्ण वर्मा, बनारस, '०६
जयशङ्कर 'प्रसाद' : उर्वशी (५) [चम्पू], लेखक, बनारस, '०६
,, : प्रेम-राज्य (१) ,, ,, '१०
,, : करुणालय (४), गीतिनाटय, भारती भण्डार, बनारस, '१२
,, : चन्द्रगुप्त मौर्य (७), अम्बिकाप्रसाद गुप्त, गोवर्धन सराय, काशी, '१२
,, : छाया, (३), ,, ,, '१२
,, : कानन-कुसुम (१), इन्दु कार्यालय, बनारस, '१२
,, : प्रेम पथिक (१), ,, ,, '१३
,, : महाराणा का महत्व (१) भारती भण्डार, बनारस, '१४
,, : प्रायश्चित्त (४) ,, ,, '१४

जवाहरलाल चतुर्वेदी : आँख और कविगण (१६), साहित्य-सेवासदन, काशी, '३२

जवाहरलाल नेहरू : रूस की सैर (६ अनु०), हिन्दुस्तान प्रेस, प्रयाग स्ट्रीट, इलाहाबाद, '२६

,, : पिता के पत्र पुत्री के नाम (१७ अनु०), लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद, '३१

,, : विश्व इतिहास की झलक, भाग १-५ (८ अनु०), साहित्य मन्दिर प्रेस, लखनऊ, '३५

,, : मेरी कहानी (७ अनु०), सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, '३६

,, : कुछ समस्याएँ (६ अनु०), युगान्तर प्रकाशन समिति, पटना, '३७

,, : हम कहाँ हैं ! (६ अनु०), सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, '३६

,, : हिन्दुस्तान की समस्याएँ (६ अनु०) सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, '३६

,, : लड़खड़ाती दुनिया (६ अनु०), सस्ता साहित्य मंडल दिल्ली, '४१

जवाहरलाल शर्मा : उपखान पचासा (१), लहिरी प्रेस, बनारस, '०४

जसवन्त सिंह : भाषा-भूषण (६ प्रा०), मन्नालाल, बनारस, '८६

,, : ,, (६ प्रा०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६४

,, : ,, (६ प्रा०), रामचन्द्र पाठक, बनारस, '२५

जसवन्त सिंह : गोबर गणेश (४), लेखक, झालावाड़ '०८

जसुराम और देवीदास कवि : राजनीति-संग्रह (१५), हरिजी सामजी, बम्बई, '७२

ज़हूरबख्श : मज़ेदार कहानियाँ (३ बा०), मिश्रबन्धु कार्यालय, जबलपुर, २३

ज़हूर बख्श : मनोरञ्जक कहानियाँ (२ बा०), चाँद ऑफ़िस, इलाहाबाद, '२५

" : इतिहास की कहानियाँ (८ बा०), गंगा पुस्तकमाला कार्यालय लखनऊ, '२५

" : देवी पार्वती (१७ बा०), गंगा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '२७

" : देवी सती (१७ बा०) " " " '२८

" : समाज की चिनगारियाँ (३), फ़ाइन आर्ट प्रिंटिंग कॉटेज, इलाहाबाद, '२८

" : मीठी कहानियाँ (३ बा०), शिशु प्रेस, इलाहाबाद, '२६

" : स्फुलिंग (२) " " '३१

" : हवाई कहानियाँ (३ बा०) " " '३५

ज़ाकिर हुसैन : बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा (१६), हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, '३६ द्वि०

जागनिक : पद्मावती खंड तथा आल्हखंड (१ प्रा०), केशव प्रसाद, आगरा, '७१

" : " (१ प्रा०), [सं० हरदेव सहाय] घासीराम, मेरठ '८०

" : " (१ प्रा०) [सं० इलियट] मुं० रामस्वरूप, फतेहगढ़, '८१ तृतीय,

जाडेजा श्री उत्तड जी : खुशबू कुमारी (२), जीवाराम अजरामर भूज, (गुजरात) '६१ रिप्रिंट

" : भागवत पिङ्गल (६), " " '६३

जानकीदास : तुलसीकृत रामायण की मानस-प्रचारिका (१८), नवल किशोर, लखनऊ, '८५

जानकी प्रसाद : शतरञ्ज-विनोद (१३), रघुनाथ प्रसाद सीताराम शुक्ल, निर्विवाद सद्धर्म प्रचारक सभा, अहमदाबाद, '८५

" : काव्य-सुधाकर (६) " " " '८६

जानकीप्रसाद महन्त 'रसिक बिहारी' : इश्क अजायब (१), जगन्नाथ प्रसाद खन्ना, ब्रह्मनाल, बनारस '७४

,, : सुजस-कदम्ब (१), रघुनाथप्रसाद सीताराम शुक्ल, निर्विवाद सद्धर्म प्रचारक सभा, अहमदाबाद '७७

,, : बजरङ्ग-बत्तीसी वा राम-पचीसी (१) ,, ,, '७७

,, : विरह-दिवाकर (१) जगन्नाथ प्रसाद खन्ना, ब्रह्मनाल, बनारस '८७

,, : रामनिवास रामायण (१), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८६

,, : कवित्त वर्णावली (१), जगन्नाथ प्रसाद खन्ना, ब्रह्मनाल बनारस, '६६

,, : रामस्तवराज (१७), छोटेलाल लक्ष्मीचंद, बुकसेलर, अयोध्या'०१

जानकीप्रसाद [रामगुलाम] द्विवेदी : जानकी-सतसई (१), लक्ष्मी-वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६६

जानकीशरण वर्मा, बी० ए० : कैम्प फायर (१२), सेवा समिति, इलाहाबाद '३१

,, : पैट्रोल सिस्टम या टोलीविधि (१२) ,, ,, '३१

,, : स्काउट मास्टरी और ट्रुप संचालन (१२), इंडियन प्रेस, प्रयाग, '३४

जाहिरसिंह वर्मा : नल-दमयन्ती की कथा (१७ बा०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६३

जितेन्द्रनाथ सान्याल : दूसरा विश्व-युद्ध (६), ओरियेण्टल पब्लिशिंग हाउस, बनारस, '३७

,, : च्यांग काई शेक (७), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '४१

जिनसेन आचार्य सं० : हरिवंश पुराण (१७ अनु०), लाला ज्ञानचंद, लाहौर, '१०

(१७ अनु०) पन्नालाल वाकलीवाल, बिश्वकोष लेन, बाघबाजार, कलकत्ता, '१६

जैनेन्द्र कुमार : नई कहानियाँ (३), विश्वसाहित्य माला, हॉसपिटल रोड, लाहौर, '३८
" : कल्याणी (७) " " '४०
जैमिनि : मीमांसा [आर्य भाष्य] भाग १-२ (१७ अनु०), [टीकाकार आर्यमुनि], देवदत्त शर्मा, शाहआलमी दरवाज़ा, लाहौर, '०७
जोधराज : हम्मीर रासो (१ प्रा०), नागरी-प्रचारिणी सभा, बनारस, '०६
ज्ञानचंद जैन सं० : योरप की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (२०), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '४२
ज्ञानचन्द्र बातल : बीराङ्गना (२), लेखक, दिल्ली, '१५
ज्ञानानन्द : गीतध्वनि (१), शेख इमानुद्दीन अहमद, आगरा, '७६
" : प्रेम-कुसुम (४), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६६
ज्ञानेश्वर : ज्ञानेश्वरी (१७ अनु०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '२४
ज्योतिप्रसाद 'निर्मल' : स्त्री कवि-कौमुदी (१६), साहित्य-भवन इलाहाबाद, '३०
" : नवयुग काव्य-विमर्श (१६), गंगा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ '३८
ज्योतिर्मयी ठाकुर : मधुवन (२), रामकलीदेवी, इलाहाबाद '३३
" : खेल और व्यायाम (१३), मातृभाषा मंदिर, प्रयाग, '३६
ज्योतिस्वरूप सकलानी : प्रकाशन-विज्ञान (१२), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '३८
ज्वालादत्त जोशी : दृष्टांत-समुच्चय (३), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '६८
ज्वालादत्त शर्मा : महाकवि दाग़ और उनका काव्य (२०), हरिदास ऐंड कं०, कलकत्ता, '१७
" : महाकवि ग़ालिब और उनका काव्य (२०) " " " '१६
" : महाकवि हाली और उनका काव्य (२०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '२१
" : उस्ताद जौक़ और उनका काव्य (२०) हरिदास ऐंड कं०, कलकत्ता, '२२
ज्वालानाथ नागर : जगतदर्शन, भाग १, (६) लेखक, कलकत्ता, '६६

ज्वालाप्रसाद : रोम का इतिहास (८), तरुण भारत ग्रन्थावली, इलाहाबाद, '२७

ज्वालाप्रसाद मिश्र : जाति-निर्णय (१७), लक्ष्मी-वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '१६००

,, : अष्टादशपुराण-दर्पण (२०), शिवदुलारे वाजपेयी, कल्याण, '०५

,, : जाति-भास्कर (१७), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१८

ज्वालाप्रसाद सिंघल : कैवल्यशास्त्र (१७), लेखक, अलीगढ़, '२२

ज्वालास्वरूप : रुद्र-पिङ्गल (६), शिवप्रसाद, बुलन्दशहर, '६६

जे० एस० गहलोत सं० : राजस्थान की कृषि संबंधी कहावतें (१२), लेखक, इनचार्ज, ऐग्रीकल्चर फार्म, जोधपुर, '१८

झ

झम्मनप्रसाद : पद्य-संग्रह (१६ बा०), नवलकिशोर, लखनऊ, '७७

झाबरमल दारुका : चन्द्रकुमारी (२), गजानन्द मोदी, बम्बई, '१०

झाबरमल्ल शर्मा : भारतीय गोधन (६), राजस्थान एजेन्सी चीनीपट्टी, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता, '१६

,, : सीकर का इतिहास (८), ,, ,, '३१

झावेर भाई पुरुषोत्तमदास पटेल : तेल घानी (१२), अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ, वर्धा '४१ द्वि०

झूमकलाल : नवरस विहार (१), गयाप्रसाद, गोरखपुर, '६०

ट

टॉड : अच्छी आदतें डालने की शिक्षा (१५ अनु०), नाथूराम, प्रेमी बम्बई '१५

टॉड, कर्नल जेम्स, : राजस्थान, जिल्द १-५ (८ अनु०), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०६-१६

,, : ,, भाग १-२ (८ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०६-१०

टॉमसन, जे० डी० : हिन्दी-अंग्रेज़ी कोष (१०), सेक्रेटरी, फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता '७० द्वि०

टॉल्स्टॉय : प्रेम-प्रभाकर (३ अनु०), [अनु० आत्माराम] अनुवादक, सिविल इंजिनियर, पटियाला स्टेट, '१३
,, : आत्मकहानी (१८ अनु०) ज्ञान प्रकाश मन्दिर, माछरा, मेरठ, '२१
,, : टॉलस्टॉय की कहानियाँ (३ अनु०) [सं० प्रेमचंद] हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '२३
,, : कलवार की करतूत (४ अनु०), सस्ता साहित्य-मण्डल, अजमेर, '२६
,, : स्त्री और पुरुष (१७ अनु०) ,, ,, '२७
,, : अँधेरे में उजाला (४ अनु०) ,, ,, '२८
,, : ज़िन्दा लाश (४ अनु०) ,, ,, '२६
,, : टॉलस्टॉय की कहानियाँ (३ अनु०), [सं० रामचन्द्र टण्डन] इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '२६
,, : क्या करें ? (३ अनु०), सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर, '३०
,, : देहाती सुन्दरी (३ अनु०), साहित्य-मण्डल, दिल्ली, '३१
,, : महापाप (२ अनु०) ,, ,, '३१
,, : पुनर्जीवन (२ अनु०), फ़ाइन आर्ट प्रिंटिङ्ग कॉटेज, इलाहाबाद, '३१
,, : हमारे ज़माने की ग़ुलामी (६ अनु०) ,, ,, '३२
,, :-की डायरी (१८ अनु०), साहित्य-मण्डल, दिल्ली, '३२
,, : अन्ना (२ अनु०), प्रमोदशङ्कर व्यास, बनारस, '३३
,, : शराबी (२ अनु०), एम० एस० मेहता, बनारस, '३४
,, : युद्ध और शांति (२ अनु०), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '४०
,, : अन्ना कारनीना (२ अनु०) ,, ,, '४१
,, : पुनर्जीवन (२ अनु०), ज्ञानमण्डल, प्रेस, बनारस, '४२
डुक्कर : स्टैनफोर्ड और मेरटन की कहानी (३) [अनु० शिवप्रसाद], गवर्नमेण्ट प्रेस, इलाहाबाद, '७७
,, : राजा भोज का सपना (३) [अनु० शिवप्रसाद], नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ '८८

टेकनाराण प्रसाद : शाक्त-मनोरञ्जन (१), बिहारबन्धु प्रेस, बाँकीपुर, '६१
टेनीसन : प्रेमोपहार (३ अनु०) [अनु० कृष्णबिहारी मिश्र], हिन्दी-साहित्य भण्डार, लखनऊ, '१६
टेलर, हेनरी : खेती विद्या के मुख्य सिद्धान्त (१२ अनु०), [अनु० काशीनाथ खत्री], अनुवादक, सिरसा, इलाहाबाद, '८३
ट्राट्स्की : माइ लाइफ़ (७ अनु०), मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, बनारस, '३४
टी० माधवराव, सर : राज्य-प्रबंध शिक्षा १५ अनु०) [अनु० रामचन्द्र शुक्ल] नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१३

ठ

ठाकुर :-शतक (१ प्रा०) [सं० काशीप्रसाद], भारत जीवन प्रेस, बनारस, '०४
,, :-ठसक (१ प्रा०) [सं० भगवानदीन] साहित्य-सेवक कार्यालय, बनारस, '२६
ठाकुरदत्त मिश्र : अनजान देश में (६ बा०) इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '३६
,, : प्रसिद्ध यात्राओं की कथा (६ बा०) ,, ,, '३६
,, : ध्रुव-यात्रा (६ बा०) ,, ,, '३७
ठाकुरदत्त शर्मा : दुग्ध और दुग्ध की वस्तुएँ (१३), देश-उपकारक बुकडिपो, लाहौर, '२७
,, : ढाई दुम (४), लेखक, कलकत्ता, '२६
ठाकुरदास सूरदास सं० : पुष्टिमार्गीय पद-संग्रह, भाग १, २-३, (१६), सम्पादक, बम्बई, '८८ रिप्रिन्ट
ठाकुरदीन मिश्र : प्रेम-तरङ्ग दोहावली (१), जगन्नाथ प्रसाद, इलाहाबाद, '६७
ठाकुर पुगारानाइ : अमर कथा (१), धन्नामल चेलाराम, बम्बई, '११
ठाकुरप्रसाद : दस्तूर अमल शादी (१७), [अहीर] लाइट प्रेस, बनारस, '७१
,, ,, : ,, (१७) [कसेरा] ,, ,, '७१
,, ,, : ,, (१७) [कोइरी] ,, ,, '७१

तुलसीदास : ,, (१ प्रा०), उमाचरण बैनरजी; लखनऊ, '०६ रिप्रिन्ट

,, : ,, (१ प्रा०), [टीका० वामदेव शर्मा] रामनारायणलाल इलाहाबाद '२६ रिप्रिन्ट

,, : वैराग्य-संदीपनी (१७ प्रा०), [टीका० बैजनाथ] नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, '९२

,, : ,, (१७ प्रा०), [टीका० वन्दन पाठक का] खड्गविलास प्रेस बाँकीपुर '९३

,, : ,, (१७ प्रा०), रामरत्न वाजपेयी, लखनऊ, '९६

,, : ,, (१७ प्रा०। रामसरूप शर्मा, मुरादाबाद,' ९९

,, : ,, (१७ प्रा०) सटीक [टीका० वामदेव शर्मा] रामनारायण लाल, इलाहाबाद, '२६

,, : रामाशा-प्रश्न (१४ प्रा०) सटीक [टीका० बैजनाथ] नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, '९२

,, : सगुनावली रामायण (१४ प्रा०) रामेश्वर एण्ड कं०, गया, '९६

,, : रामाशा-प्रश्न (१४ प्रा०) ज्ञानभास्कर प्रेस, बाराबंकी, '०६ रिप्रिन्ट

,, : मानस-मयंक अर्थात् रामशलाका (१४ प्रा०) लक्ष्मी-वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '१७

,, : रामाशा प्रश्न (१४ प्रा०), [टीका० वामदेव शर्मा] राम-नारायणलाल, इलाहाबाद, '२८

,, : जानकीमंगल (१ प्रा०) हुसैनी प्रेस, दिल्ली, '९७

,, : ,, (१ प्रा०) सटीक [टीका० बैजनाथ कुर्मी ?] नवलकिशोर लखनऊ '९१

,, : ,, (१ प्रा०) आफ़ताबे हिंद प्रेस, (संयुक्त प्रा०) '९८

,, : रामायण (१ प्रा०), [सं० सदासुखलाल] नूरुल, अब्सार प्रेस, इलाहाबाद, '६९

तुलसीदास : रामायण (१ प्रा०) (सटीक), हसनी प्रेस, दिल्ली, '६८
" : " (१ प्रा०) [अयोध्याकाण्ड], (टी० हरिहरप्रसाद) गोपीनाथ पाठक, बनारस, '६६
" : " (१ प्रा०) गणपति कृष्णाजी प्रेस, बम्बई, '७०
" : " (१ प्रा०) रामचन्द्रसिंह, भिकना पहाड़ी, पटना, '७०
" : " (१ प्रा०) (सं० विश्वेश्वर पाण्डेय) लाइट प्रेस, बनारस, '७३
" : " (१ प्रा०) [अयो०, अरण्य०, किष्किन्धाकाण्ड] (टी० हरिहरप्रसाद), आर्य यंत्रालय, बनारस, '७५
" : " (१ प्रा०) (टी० सुखदेवलाल) नवलकिशोर, लखनऊ '८१
" : " (१ प्रा०) पं० ज्योतिप्रसाद, इलाहाबाद, '८४
" : " (१ प्रा०) भाग १-२ (टी० रामचरणदास) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, ८४
" : " (१ प्रा०) (सं० रामदीनसिंह) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '८६
" : " (१ प्रा०) (टी० बैजनाथ कुर्मी) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६०
" : " रामायण (१ प्रा०) (कोष सहित), चरण प्रकाश प्रेस, दिल्ली, '६१
" : " (१ प्रा०) (मानस से भिन्न) गङ्गाप्रसाद वर्मा ब्रदर्स प्रेस, लखनऊ, ६६
" : " (१ प्रा०) [परिचर्या परिशिष्ट प्रकाश सहित] (टी० ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह तथा हरिहरप्रसाद) [बाल०, अयोध्या काण्ड] खड्गविलासप्रेस, बाँकीपुर, '६८
" : मानस [भावप्रकाश] (१ प्रा०) (टी० संतसिंह ज्ञानी)" '६८
" : मानस अभिप्राय दीपक (१ प्रा०) (टी० शिवलाल पाठक), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०१

तुलसीदास : रामायण (१ प्रा०) नूल बिहारी रे, हिन्दी बङ्गवासी आफ़िस, कलकत्ता, '०३
" : रामचरितमानस (१ प्रा०) इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '०३
" : मानस मयङ्क (१ प्रा०) (टी० शिवलाल पाठक), खड्ग-विलास प्रेस, बाँकीपुर, '०५
" : रामचरितमानस (१ प्रा०) [किष्किन्धाकांड] (टी० रामकुमार) कन्हैयालाल, कृष्णदास, दरभंगा, '०७
" : रामायण (१ प्रा०) (गुजराती अनुवाद सहित) तुलसीदास जयराम रघुनाथ, बम्बई, '६२
" : (१ प्रा०) (" ") ज्येष्ठाराम मुकुन्दजी, बम्बई, '१२
" : रामचरितमानस (१ प्रा०) [बाल०, अयोध्या०, अरण्य काण्ड] सेवाराम, इटावा, '१२
" : " (१ प्रा०) (मराठी अनुवाद सहित) गोपाल हरि पुरोहित, पूना, '१३
" : " (१ प्रा०) (टी० श्यामसुन्दरदास) इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '१६
" : " (१ प्रा०) (सं० रामवल्लभशरण) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '२५
" : " (१ प्रा०) (सं० विजयानन्द त्रिपाठी) लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '३६
" : " (१ प्रा०) गीता प्रेस, गोरखपुर, '४१
" : सतसई (१७ प्रा०) गोपीनाथ पाठक, बनारस, '७०
" : " (१७ प्रा०) (टी० बैजनाथ कुर्मी) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८६
" : " (१७ प्रा०) रायल एशियाटिक सोसाइटी ऑव बंगाल, कलकत्ता, '८८
: " (१७ प्रा०) भार्गव भूषण प्रेस, बनारस, '३०

तुलसीदास : जानकीमङ्गल पार्वतीमङ्गल (१ प्रा०) ब्रह्मशङ्कर मिश्र, बनारस, '८१
,, : गीतावली (१ प्रा०) चन्द्रशेखर प्रेस, बनारस, '६७
,, : ,, (१ प्रा०) इन्द्रनारायण घोष, कलकत्ता, '६८
,, : ,, (१ प्रा०) नृत्यलाल सील, कलकत्ता, '७३
,, : ,, (१ प्रा०) (टी० बैजनाथ कुर्मी) नवलकिशोर लखनऊ, '७८
,, : रामायण विशनपदों का (१ प्रा०) गोपीप्रकाश प्रेस, अमृतसर, '८८
,, : पदावली रामायण (१ प्रा०) हिन्दी प्रभा प्रेस, लखीमपुर, '८६
,, : गीतावली (१ प्रा०) रामरत्न वाजपेयी, लखनऊ, '६६
,, : ,, (१ प्रा०) जैन प्रेस, लखनऊ, '६६
,, : ,, (१ प्रा०) (टी० बिहारीलाल ठाकुर) लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१९००
,, : ,, (१ प्रा०) ज्ञानभास्कर प्रेस, बाराबंकी, '०४
,, : ,, (१ प्रा०) (टी० हरिहरप्रसाद) [प्रथम सं० लाइट प्रेस, बनारस, '६० ?] खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०६
,, : कृष्णावली (१ प्रा०) [तथा रामसगुनावली], रामकुमार मिश्र, बुलानाला, बनारस, '६७
,, : कृष्ण गीतावली (१ प्रा०) (सं० महावीरप्रसाद), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८७
,, : ,, (१ प्रा०) (सं० दामोदर शर्मा) संपादक, अमीलहा, मिर्ज़ापुर, '८८
,, : विनयपत्रिका (१ प्रा०) (टी० शिव प्रकाश सिंह) टीकाकार, बनारस, '६८
,, : ,, (१ प्रा०) इंद्रनारायण घोष, कलकत्ता, '६६
,, : ,, (१ प्रा०) पं० सुखदेव, आगरा, '७५

तुलसीदास : विनयपत्रिका (१ प्रा०) गुंचए हिन्द प्रेस, लखनऊ, '७६
,, : ,, (१ प्रा०) सूर्योदय प्रेस, कलकत्ता, '७६
,, : ,, (१ प्रा०) नृत्यलाल सील, कलकत्ता, '८० द्वि०
,, : ,, (१ प्रा०) अंजुमन प्रेस, बनारस, '८४ रिप्रिन्ट
,, : ,, (१ प्रा०) सटीक (टी० बैजनाथ कुर्मी) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६१
,, : ,, (१ प्रा०) भारतजीवन प्रेस, बनारस, '६१
,, : ,, (१ प्रा०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६२ रिप्रिन्ट
,, : ,, (१ प्रा०) बङ्गवासी फ़र्म, कलकत्ता, '६४
,, : ,, (१ प्रा०) लखनऊ प्रिन्टिंग प्रेस, लखनऊ, '६५
,, : ,, (१ प्रा०) सटीक, (टी० बिहारीलाल ठाकुर) लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६७
,, : ,, (१ प्रा०) ज्ञान भास्कर प्रेस, बाराबंकी, '०३
,, : ,, (१ प्रा०) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०५
,, : ,, (१ प्रा०) (टी० गयाप्रसाद चित्रगुप्त) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१०
,, : (१ प्रा०) (टी० रामेश्वर भट्ट) इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '१३ रिप्रिन्ट
,, : (१ प्रा०) ,, (टी० 'वियोगीहरि') साहित्य-सेवासदन, बनारस, '२३
,, : ,, (१ प्रा०) (टी० भगवानदीन) टीकाकार, बनारस, '२६
,, : बरवा (१ प्रा०) (टी० बैजनाथ कुर्मी) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६१
,, : ,, (१ प्रा०) (टी० वंदन पाठक) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६६
,, : बरवा रामायण (१ प्रा०) उमाचरण बैनर्जी, लखनऊ, '०६
,, : दोहावली रामायण (१७ प्रा०) जहाँगीर खाँ, आगरा, '६८

तुलसीदास : दोहावली (१७ प्रा०) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८२ द्वि०
" : " (१७ प्रा०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '८४ रिप्रिंट
" : " (१७ प्रा०) श्रीनाथ लाहा, कलकत्ता, '८४
" : " (१७ प्रा०) (टी० वन्दन पाठक) सुधानिवास प्रेस, बनारस, '६६
" : " (१७ प्रा०) लक्ष्मी नारायण प्रेस, मुरादाबाद, '०३
" : " (१७ प्रा०) भाषा-संस्कृत बुकडिपो, बनारस, '०४
" : " (१७ प्रा०) भार्गव बुकडिपो, बनारस, '०६ रिप्रिन्ट
" : " (१७ प्रा०) सटीक (टी० भगवानदीन) साहित्य भूषण कार्यालय, बनारस, '२६
" : " (१७ प्रा०) (टी० शीतलाप्रसाद द्विवेदी), सरस्वती भण्डार, मुरादपुर पटना, '२७
" : " (१७ प्रा०) (सं० परमेश्वर दत्त त्रिपाठी) बंगवासी फ़र्म, कलकत्ता, '२८
" : " (१७ प्रा०) (टी० द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी), हिन्दी प्रेस, इलाहाबाद, '३१
" : कवित्त रामायण (१ प्रा०) मधुसूदन सील, कलकत्ता, '६८
" : " (१ प्रा०) वज़ीर खाँ, आगरा, ७०
" : " (१ प्रा०) नादिर हुसैन खाँ, लखनऊ, '७७
" : " (१ प्रा०) सूर्य प्रेस, कलकत्ता, '७६
" : कवितावली रामायण (१ प्रा०) अब्दुल अज़ीज, कानपुर, '७६
" : कवित्त रामायण (१ प्रा०) नृत्यलाल सील, कलकत्ता, '८० द्वि०
" : " (१ प्रा०) अश्विनी लाल, बनारस, '८०
" : कवितावली (१ प्रा०) (टी० बैजनाथ कुर्मी) नवलकिशोर, प्रेस, लखनऊ, '८१

तुलसीदास : कवित्त रामायण (१ प्रा०) सरस्वती प्रेस, बनारस, '८६
,, : कवितावली रामायण (१ प्रा०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६० रिप्रिन्ट
,, : कवित्त रामायण, (१ प्रा०) चन्द्रप्रभा प्रेस, बनारस, '६४
,, : कवितावली रामायण (१ प्रा०) लखनऊ प्रिन्टिंग प्रेस, लखनऊ, '६५
,, : कवितावली (१ प्रा०) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६५
,, : ,, (१ प्रा०) (टी० हरिहर प्रसाद) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६७
,, : कवितावली रामायण (१ प्रा०) जैन प्रेस, लखनऊ, '६६
,, : ,, (१ प्रा०) ज्ञानभास्कर प्रेस, बाराबंकी, '०३
,, : कवितावली (१ प्रा०) (टी० भगवानदीन), रामनारायण लाल, इलाहाबाद, '२५
,, : ,, (१ प्रा०) (टी० विद्याभूषण शर्मा), रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद, '२६
,, : कवित्त रामायण (१ प्रा०) (टी० चंपाराम मिश्र), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३१
,, : हनुमान बाहुक (१ प्रा०) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८३ द्वि०
,, : ,, (१ प्रा० नामी प्रेस, कानपुर, '८७
,, : ,, (१ प्रा०) जेब-ए-काशी प्रेस, दिल्ली, '८८ रिप्रिन्ट
,, : ,, (१ प्रा०) हरिप्रसाद भागीरथ, बम्बई, '६२ रिप्रिन्ट
,, : ,, (१ प्रा०) (टी० बैजनाथ कुर्मी) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६२
,, : ,, (१ प्रा०) (टी० बिहारीलाल ठाकुर) लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६५

तुलसीदास : हनुमान बाहुक (१ प्रा०) (टी० रामगुलाम) जैन प्रेस, लखनऊ, '६७
" : " (१ प्रा०) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६८
" : " (१ प्रा०) साहित्य रत्नाकर प्रेस, कन्नौज, '०३
" : बृहत् हनुमान बाहुक (१ प्रा०) लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद, '०४
" : हनुमान बाहुक (१ प्रा०) उमाचरण बैनर्जी, लखनऊ, '६ रिप्रिन्ट
" : सप्तकांड रामायण (१ प्रा०) इंदुनारायण घोष, कलकत्ता, '६८
" : " (१ प्रा०) नृत्यलाल सील, कलकत्ता, '७४
" : छप्पय रामायण (१ प्रा०) (टी० बैजनाथ कुर्मी) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६१
" : छंदावली रामायण (१ प्रा०) (टी० बैजनाथ कुर्मी) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६१
" : कुण्डलिया रामायण (१ प्रा०) (टी० बैजनाथ कुर्मी) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६२
" : विनय दोहावली (१ प्रा०) (टी० ब्रजरत्न भट्टाचार्य) लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१७
" : सूर्यपुराण, (१० प्रा०) नारायण भिक्षेत खातू प्रेस, बम्बई, '२२ रिप्रिन्ट
" : बारहमासी (१ प्रा०) बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '०६
" : रामनीति शतक (१७ प्रा०) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६३
तुलसीप्रसाद : इलामती (२), सारन सुधाकर प्रेस, छपरा, '६६
" : हज्जो (१) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०५
तुलसीराम : भक्तमाल (१६ प्र०) मम्बा उल उलूम प्रेस, सोहाना, '६७
" : " (१६ प्रा०) पंजाब इकानोमिकल प्रेस, लाहौर, '६५
तुलसी साहब : घट रामायण (१७ प्रा०) गङ्गाप्रसाद वर्मा ब्रदर्स प्रेस, लखनऊ, '६६

तुलसी साहब : घटरामायण (१७ प्रा०) भाग १-२, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '११

" : रत्नसागर (१७ प्रा०) भाग १, २, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '०६

" : शब्दावली (१७ प्रा०) वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '१४

तुलाहीराम : राग मालश्री (११) नेमानंद उपाध्याय, देहरादून, '०५

तेग़बहादुर : नानक विनय (१७ प्रा०) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६३

" : वाणी (१७ प्रा०) (सं० ओंकारनाथ भारद्वाज) रायल प्रिंटिंग प्रेस, लाहौर, '१६

तेज़नाथ झा : भक्ति प्रकाश (१७) के० वी० मेहता, दरभंगा, '०१

तेजबहादुर राना : फाग धमाल (१) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६१

तेजरानी पाठक : हृदय का काँटा (२) लक्ष्मीधर वाजपेयी, इलाहाबाद, '२१

" : अञ्जली (२) फ़ाइन आर्ट प्रिंटिंग काटेज, इलाहाबाद '३१

" : एकादशी (३) सरला देवी पाठक, जगतनिवास, जबलपुर, '३३

तेजशङ्कर कोचक : पैमाइश (१४) विज्ञान परिषद, इलाहाबाद, '१६

" : कपास और भारतवर्ष (१२) विज्ञान परिषद, इलाहाबाद, '२०

" : कृषिशास्त्र (१२) लेखक, बुलन्दशहर, '२४ तृ०

तोताराम, पण्डित : शान्तिशतक, (१) व्यापारपद प्रकाशक प्रेस, अलीगढ़, '७७

तोताराम, वकील : विवाह विडम्बन (४) भारतबन्धु प्रेस, अलीगढ़, '८४

तोताराम सनाढ्य : फ़िजी में मेरे इक्कीस वर्ष (६) हरप्रसाद चौबे, फ़िरोज़ाबाद, '[illegible]

" : कुली प्रथा (६) " " '१५

तोरनदेवी शुक्ल 'लली' : जागृति (१) रत्नावली देवी, कानपुर, '३६

तोष : सुधानिधि (६ प्रा०) (सं० रामकृष्ण वर्मा) भारतजीवन प्रेस, बनारस, '९२

दत्तात्रेय : अवधूत गीता (१७ अनु०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१२

दत्तात्रेय बलवंत पारस्नीस : बायजाबाई सेंधिया (७ अनु०) (अनु० सूर्यकुमार वर्मा) मनोरंजक हिंन्दी ग्रन्थ पुस्तक मंडली, ग्वालियर, '१६

,, ,, : झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई (७ अनु०) उदयलाल कासलीवाल, बम्बई, '१४

,, : दिल्ली या इंद्रप्रस्थ (८ अनु०) छात्र-हितकारी पुस्तक माला इलाहाबाद, '२८

दयाचन्द्र गोयलीय, बी० ए० : कांग्रेस के पिता—ए० ओ० ह्यूम (७) हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, '१०

,, : मितव्ययिता (१५ बा०) हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, '१४

दयादास स्वामी : विचार प्रकाश (७ प्रा०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '८२

,, : विनयमाला (१७ प्रा० नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६

,, : भक्तनामावली (१६ प्रा०) दुर्गाप्रसाद बुकसेलर, सागर (मध्य प्रान्त) '१३ च०

,, : ,, (१६ प्रा० रामसेवक दुबे : सागर (मध्यप्रान्त) '३१

दयानन्द सरस्वती : सत्यार्थप्रकाश (१७) वैदिक यंत्रालय, अजमेर, '७५

,, : आर्य्याभिविनय (१७ अनु०) लालजी, वंशनाथ, बम्बई, '७६

,, : ऋग्वेद-भाष्य-भूमिका (२०) वैदिक यंत्रालय, अजमेर '७७

,, : भ्रांति निवारण (१७) बख्तावरसिंह, शाहजहाँपुर, '८०

,, : गो-करुणानिधि (१९) लेखक, बनारस, '८१

,, : कुछ दिनचर्या ७) दिलकुशा प्रेस, फ़तेहगढ़, '[illegible]

,, : स्वरचित जीवन-चरित्र (७) वैदिक पुस्तकालय, लाहौर, '१७

,, : आर्य गौरव (१७) भारत धर्म महामंडल, बनारस, '२४

,, : धर्म सुधाकर (१७) भारत धर्म सिन्डिकेट लिमिटेड, बनारस, '२८

दयाबाई : बानी, (१७ प्रा०) बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '०६
दयाराम सं० : काव्यसंग्रह (१६), १-२ भाग, उम्मेदराय हरगोविन्ददास, अहमदाबाद '७६ द्वि०
,, : कवित्त तथा परचून कीर्तन (१६) त्रिभुवनदास रनछोड़, अहमदाबाद, '८१
,, ,, : दयानन्द-चरितामृत (७) भाग १-२, स्वामी प्रेस, मेरठ, '०४
दयाराम जुगड़ाण : मधुमक्खी पालन, (१२) विज्ञान परिषद, इलाहाबाद, '४२
दयालुचन्द्र विद्यालङ्कार : हिन्दी झंकार (१) लेखक, मुल्तान, '२६
दयाशङ्कर दुबे : भारत में कृषिसुधार (६) हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '२६
,, : विदेशी विनिमय (६) गङ्गा पुस्तक माला, लखनऊ, '२६
,, : नर्मदापरिक्रमा-मार्ग (१७), धर्म-ग्रन्थावली कार्यालय, दारागञ्ज, इलाहाबाद, '३४
,, तथा भगवानदास केला : धन की उत्पत्ति (१५) रामनारायण लाल, इलाहाबाद, '३७
दयाशङ्कर मिश्र : अयोध्यासिंह उपाध्याय की जीवनी (१८) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '२४
दरब खाँ 'अभिलाषी' : प्रकृति सौंदर्य (१) साहित्य प्रेस, चिरगाँव, '२६
दरयावसिंह मदनराज : मृत्यु-सभा (४), लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '६५
,, : कृषि-चन्द्रिका (१२) ग्रन्थकार, सेन्ट्रल कालेज, तिलाम, '६६
दरिया साहब : दरिया सागर (१७ प्रा०) बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १६ ?
दरयावसिंह :-बानी (१७ प्रा०) ,, ,, '०६ द्वि०
दलपतिराम दयाभाई कवि : पुरुषोत्तम चरित्र (१) अभयसिंह जी भाई, बम्बई, '८४
दलपतिराम दयाभाई कवि : श्रवणाख्यान (१) जटाधर लीलाधर शास्त्री, अहमदाबाद, '६३

दुर्गादत्त पन्त : प्रेमा भक्ति (१७) लेखक, हरिद्वार, '०२
दुर्गादत्त पाण्डेय : चन्द्राननी (४) लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१७
दुर्गादत्त मिश्र : सरस्वती (२) लेखक, बनारस, '६८
दुर्गा देवी : शिशु-पालन (१३) इण्डियन प्रेस, प्रयाग, '२४
दुर्गाप्रसाद खत्री : अभागे का भाग्य (२) लेखक, बनारस, '१४
" : अनङ्गपाल (२) " " '१७
" : बलिदान (२) " " '१६
" : प्रोफ़ेसर भोंदू (२) " " '२०
" : माया (२) " " '२०
दुर्गाप्रसाद गुप्त : भारत रमणी (४) निहालचंद वर्मा, कलकत्ता, '२३
" : महामाया, (४) आर० आर० बेरी, कलकत्ता, '२४
दुर्गाप्रसाद झूंझनूवाला : मानस-प्रतिमा (३) लक्ष्मीधर वाजपेयी, इलाहाबाद, '३८
" : आरती (१) " " '३९
" : सौरभ (१) नवराजस्थान ग्रंथमाला कार्यालय कलकत्ता, '३६
दुर्गाप्रसाद दुवे : क्षेत्रमिति (१४) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '३६
दुर्गाप्रसाद मिश्र : भारत धर्म (१७) कृष्णानंद शर्मा, कलकत्ता, १९००
दुर्गाप्रसाद मुंशी : फुलवारी की छवि, अर्थात् मनफूल की कहानी (३) लेखक, इलाहाबाद, '८५
दुर्गाप्रसाद वर्मा : माधवी लता (१) गोरख प्रेस, बनारस, '६०
दुर्गाप्रसाद सिंह : कृषिकौमुदी (१२) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१६
दुर्गाशङ्कर प्रसाद सिंह : ज्वालामुखी (५) सरस्वती प्रेस, बनारस, '३६
दुलारेलाल भार्गव : द्विजेन्द्रलाल राय (२०) गङ्गा पुस्तकमाला, कार्यालय लखनऊ, '२३
" : दुलारे-दोहावली (१) " " '३४
दूधदास स्वामी : लाल दे बिहारी का दीवान (१८) गणपति कृष्ण जी

देवकीनन्दन शर्मा : सभा-विज्ञान और वक्तृता (११) आनंद प्रकाशनालय, खुर्जा, '२६
देवचरण, बी० ए० : रक्षाबन्धन (२) भदावर प्रेस, दिल्ली, '३४
देवतीर्थ स्वामी : श्यामसुधा (१) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '८८
देवदत्त : साहित्यकारों की आत्मकथा (१६) नवशक्ति प्रकाशन मंदिर, पटना, '३६
देवदत्त अरोड़ा : चर्म बनाने के सिद्धान्त (१२) हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद' ३०
देवदत्त तिवारी : देवकोश (१) मेडिकल हाल प्रेस, बनारस, '८३ द्वि०
देवदत्त मिश्र : बालविवाह दूषक (४) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '८५
देवदत्त शर्मा : सच्चा मित्र (२) चिन्तामणि प्रेस, फ़र्रुखाबाद, '६१
" : अति अंधेरनगरी (४) रामनारायण शुक्ल, फ़र्रुखाबाद, '६५
देवदास : अद्भुत वृन्दावन (१) मनोहर लाल मिश्र, कानपुर, '६७
देवरतन, पंडित : शिष्टाचार (१७) पंजाब इकानोमिकल प्रेस, लाहौर, '०२
देवराज, लाला : सावित्री (४) " " ००
" " : लोरियाँ (१ बा०) १६ कन्या-महाविद्यालय, जालंधर, '०५
" " : माता का प्यारा (१ बा०) " " '०५
" " : भीमदेव (७) " " '१६
देवराज विद्यावाचस्पति : जल-चिकित्सा-विज्ञान (१३) गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी, '२६
देवव्रत : मुस्तफ़ा कमाल (७), नवशक्ति प्रकाशन मंदिर, पटना, '३८
" : हँसाने वाली कहानियाँ (३ बा०) " " '३६
देवशरण विद्यालङ्कार : तरङ्गित हृदय (५) मुद्रक—आदर्श प्रेस, अजमेर, '३६
देवीदयाल : भाषा शब्दनिरूपण (१०) लेखक, प्रतापगढ़, '६२

देवीदयाल चतुर्वेदी : दुनिया के तानाशाह (८), साहित्य प्रेस, जबलपुर, '४०
देवीदास : राजनीति (१५), बालशंकर उल्लासराम, नड़ियाद, '७६
देवीप्रसाद : रामेश्वर-यात्रा (९), नारायण प्रेस, मुजफ़्फ़रपुर '९३
देवीप्रसाद उपाध्याय : सुंदर सरोजिनी (२), लेखक, रामनगर चम्पारन '९३
देवीप्रसाद, पण्डित : कवित्त रत्नावली (१८), [मानस प्रकाश] लेखक, लखनऊ, '८९
देवीप्रसाद 'प्रियतम' : बुंदेलखंड का अलबम (१), लाला भगवानदीन, गया, '११
: अमरीकन संयुक्त राज्य की शासन-प्रणाली (९), शुभचिंतक प्रेस, जबलपुर, '२१
: हिंदी भाषा में राजनीति (१५), भारतीय ग्रंथ-माला, वृन्दावन, '२५
: श्रीकृष्ण जन्मोत्सव (१), साहित्य-सेवासदन, बनारस, '२२
: हिंदी महाजनी का नया बहीखाता (१२), लेखक, पिलानी, जयपुर, '३२
देवीप्रसाद, मुंशी : मानसिंह (७), लेखक, जोधपुर, '८९
" : मालदेव (७) " " '८९
" : महाराणा उदयसिंह (७) " " '९३
" : आमेर के राजे (८), " " '९३
" : स्वप्न-राजस्थान (९), बनवारीलाल मिश्र, मुरादाबाद, '९३
" : जसवंत सिंह (७), लेखक, जोधपुर, '९६
" : मारवाड़ के प्राचीन लेख (८), " " '९६
" : मीराबाई का जीवन-चरित (१८), जैन प्रेस, लखनऊ, '९८
" : महाराणा प्रतापसिंह (७), लेखक जोधपुर, '०३
" : महाराणा संग्रामसिंह (७), मतबए-रिजवी, दिल्ली, '०४

देवीप्रसाद, मुंशी : महिला मृदुवाणी (१६), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी, '०५
,, : रूठी रानी (२), भारतमित्र प्रेस, कलकत्ता, '०६
,, : सूरदास जी का जीवन-चरित (१८), रामकृष्ण वर्मा, बनारस, '०६
,, : राज रसनामृत (१६), कृष्णानंद शर्मा, कलकत्ता, '०६
,, : हिंदोस्तान में मुसलमान बादशाह (८), लेखक, जोधपुर, '०६
,, : यवनराज वंशावली (८), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '०६
,, : कविरत्नमाला (१६), भाग १ नवलकिशोर गुप्त, कलकत्ता, '११
,, : पड़िहार वंश-प्रकाश (८), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '११
,, : राजपूताने में हिंदी पुस्तकों की खोज (१६), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद '११
,, : मुग़लवंश (८), सिद्धेश्वर प्रेस, बनारस, '११ !
,, : न्यायी नौशेरवाँ (७), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस,
,, : सिंध का इतिहास (८) [अज्ञात] '२१ ! '२१
देवीप्रसाद राय 'पूर्ण', बी० ए०, बी० एल : चंद्रकला भानुकुमार (४), रसिक समाज, कानपुर, '०४
देवीप्रसाद शर्मा : प्रभात (१), इंदु कार्यालय, गोवर्धनसराय, काशी, '०८ !
देवेन्द्र : सुशीला (२), इंद्रप्रस्थ आर्य ऐजेन्सी, दिल्ली, '१५
देवेन्द्रप्रसाद जैन : त्रिवेणी (५), लेखक, आरा, '१३
,, सं० : ऐतिहासिक स्त्रियाँ (८), संपादक, आरा, '१३ प्र०
,, सं० : प्रेमकली (१६), संपादक, आरा, '१७
देशव्रत : हिंदूजाति का स्वातंत्र्य-प्रेम (८), उदयलाल कासलीवाल, बम्बई, '२०
दौलतराम कवि : महेश्वर रसमौर (१), लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ, '६६

द्विजेन्द्रलाल राय : मेवाड़-पतन (४ अनु०) नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '१७
" : शाहजहाँ (४ अनु०) " '१७
" : उस पार (४ अनु०) " '१७
" : नूरजहाँ (४ अनु०) " '१८
" : ताराबाई (४ अनु०) " '१८
" : भीष्म (४ अनु०) " '१८
" : चन्द्रगुप्त (४ अनु०) " '१८
" : सीता (४ अनु०) " '१८
" : मूर्ख मण्डली (४ अनु०) " '१८
" : भारतरमणी (४ अनु०) " '१९
" : पाषाणी (४अनु०) " '२०
" : सिंहल-विजय (४ अनु०) " '२०
" : राणा प्रतापसिंह (४ अनु०) " '२१
" : कालिदास और भवभूति (२० अनु०) " '२२
" : सुहराब और रुस्तम (४ अनु०) " '२५
" : अहल्या (४ अनु०) " '३६
डी० जी० काले : रेशों की रंगाई (१२) लेखक, कानपुर, '३६
डी० टी० शाह : आर्द्र कुमार (१७ बा०) ऊँझा फ़ार्मेसी, अहमदाबाद, '३४
" : अर्जुनमाली (१७ बा०) " '३४
" : भरत बाहुबलि (१७ बा०) " '३४
" : चक्रवर्ती सनत्कार (१७ बा०) " '३४
" : चन्दन मलयागिरि (१७ बा०) " '३४
" : काना लकड़हारा (१७ बा०) " '३४
" : महामंत्री उदयन (१७ बा०) " '३४
" : महाराजा सम्प्रति (१७ बा०) " '३४
" : महाराजा श्रेणिक (१७ बा०) " '३४
" : मुनि श्री हरिकेश (१७ बा०) " '३४
" : प्रभु महावीर के दस श्रावक (१७ बा०) " '३४

धर्मदत्त विद्यालङ्कार : प्राचीन भारत में स्वराज्य (८), गुरुकुल प्रेस, कांगड़ी '२०

धर्मदास : अवध-विलास (१ प्रा०), लक्ष्मीविलास काशीखण्ड प्रेस, लखनऊ, '८७

धर्मदेव विद्यार्थी : निराली कहानियाँ (३ बा०), शिशु ज्ञानमंदिर इलाहाबाद, '४१ तृ०

धर्मराज अखवीन्द्र :—वेदान्त परिभाषा (१७ अनु०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०१

धर्मानन्द शास्त्री : बालरोग विज्ञान (१३), चाँद कार्यालय, इलाहाबाद '२३
,, : उपयोगी चिकित्सा (१३), ,, ,, '२७
,, : स्त्रीरोग विज्ञान (१३), ,, ,, '३२
,, : विषविज्ञान (१३), प्रकाश प्रेस, कानपुर, '३२
,, : शल्यतंत्रम् (१३), धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़, '३३

धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री : गुप्त जी काव्य की कारुण्यधारा (१८), पुस्तक भंडार, लहरिया सराय, '४१

धीरजलाल शर्मा : स्वदेशी रंग और रंगना (१२), शिवप्रसाद, मथुरा, '२५

धीरेन्द्रनाथ चक्रवर्ती, एम० ए० : जीवत्व जनक (१४), विज्ञान परिषद्, इलाहाबाद, '३२

धीरेन्द्र वर्मा, एम-ए०, डी० लिट, सं० : परिषद-निबन्धावली (१६) भाग १, रामनारायण लाल, इलाहाबाद, '१६
,, सं० : ,, (१६) भाग २, भगवती प्रसाद वाजपेयी, इलाहाबाद '३१
,, सं० : अष्टछाप (१६), रामनारायणलाल, इलाहाबाद, '२६
,, सं० : गल्पमाला (१६), भाग १, हिन्दी परिषद, प्रयाग विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, '२६ १
,, : हिन्दी राष्ट्र या सूबा हिन्दुस्तान (६), लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '३०

नगेन्द्र, एम० ए० : साकेत—एक अध्ययन (१८), महेन्द्र, आगरा, '४०
,, : आधुनिक हिन्दी नाटक (१६), ,, '४२
नगेंद्रनाथ गुप्त : अमरसिंह (२ अनु०), (अनु० प्रताप नारायण मिश्र), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०७
,, : खून (२ अनु०), (अनु० गोपालराम), धार्मिक प्रेस, इलाहाबाद, '०७
नगेन्द्रनाथ बसु : भारतीय-लिपितत्व (१०), विश्वकोष प्रेस, बाग़बाज़ार, कलकत्ता, '१४
,, : हिन्दी विश्वकोष (६) ,, ,, '१५—
नजमुद्दीन : सूरजपुर की कहानी (३), भाग १, २, गवर्नमेन्ट प्रेस, इलाहाबाद, '७१
नज़ीर : नागलीला (१ प्रा०), हसनी प्रेस, दिल्ली, '६८
,, : बालपन कन्हैय्या का (१ प्रा०), ज्ञान प्रेस, दिल्ली, '७४ रिप्रिन्ट
,, : चूहेनामा (१ प्रा०), वंशीधर कन्हैयालाल, कसेरठ बाज़ार, आगरा, '७४
नटवर चक्रवर्ती : अफ़ग़ानिस्तान का इतिहास (८), लेखक, बङ्गवासी प्रेस, कलकत्ता, '०५
,, : हिन्दू तीर्थ (६), लेखक, कलकत्ता, '०६
नन्दकिशोर झा : प्रिया-मिलन (१), लेखक, श्रीनगर, चम्पारन, '३२
नन्दकिशोर दुवे : जल-झूलन (१), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '७६
नन्दकिशोर मिश्र : गङ्गाभरण, (६) सूर्यबली लाल, गंधोली, सिधौली, सीतापुर, '११
नन्दकिशोर विद्यालङ्कार : पुनर्जन्म (१७), लेखक, कलकत्ता, '२५
नन्दकुमार देव शर्मा : महाराणा प्रतापसिंह (७ बा०), ओंकार प्रेस, इलाहाबाद, '०९
,, : स्वामी रामतीर्थ (७ बा०), ,, ,, '०९
,, : स्वामी विवेकानन्द (७ बा०) ,, ,, '१४

नन्ददास, : मानस मञ्जरी (१० प्रा०), [द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी सं०], इलाहाबाद, '०७

,, : अनेकार्थ और नाममाला (१० प्रा०) अमीरसिंह, बनारस, '७५

,, : अनेकार्थ मञ्जरी और नाममाला (१० प्रा०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१०

,, : ,, ,, (१० प्रा०), [सं० बलभद्र प्रसाद मिश्र, एम० ए० और विश्वंभरनाथ महेरोत्रा, एम० ए०] प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग '४०

,, : रासपञ्चाध्यायी (१ प्रा०), रामसरूप शर्मा, मुरादाबाद, '६६

,, : ,, (१ प्रा०), [सं० राधाकृष्णदास], नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०३

,, : भ्रमर गीत (१ प्रा०), गोवर्धनदास लक्ष्मीदास, बम्बई, '६० रिप्रिन्ट

,, : ,, (१ प्रा०), रामसरूप शर्मा, मुरादाबाद, '६६

,, : ,, (१ प्रा०), [सं० रामाज्ञा द्विवेदी], ओंकार प्रेस, इलाहाबाद, '२६

,, : ,, (१ प्रा०), गोपालदास गुजराती, बनारस, '३१ रिप्रिन्ट

,, : भँवरगीत (१ प्रा०), [सं० विश्वंभरनाथ मेहरोत्रा, एम० ए०] रामनारायणलाल, इलाहाबाद, '३८

,, : रास पञ्चाध्यायी तथा भंवरगीत, (१ प्रा०), भारतमित्र प्रेस, कलकत्ता, '०४

,, ,, ,, (१ प्रा०), कृष्णानंद शर्मा, कलकत्ता '०५

नन्ददास गोस्वामी : ,, (१ प्रा०), परीक्षितसिंह, मेरठ, '१८ रिप्रिन्ट

,, : ,, (१ प्रा०) बृजमोहनलाल, इलाहाबाद, '१८

,, : ,, (१ प्रा०) लक्ष्मी आर्ट प्रेस, इलाहाबाद, '३७

नरेन्द्र, एम० ए० : कड़वी मीठी बात (३), प्रकाशगृह, इलाहाबाद '४२
नरेन्द्र देव, आचार्य : समाजवाद (१५), संघर्ष पब्लिशिंग प्रेस, लखनऊ, '३८
नरेन्द्रनाथदास विद्यालङ्कार : विद्यापति काव्यालंङ्कार (२०), पुस्तक भंडार, लहरिया सराय, '३७
नरोत्तमदास : सुदामा-चरित्र (१ प्रा०), फौके काशी प्रेस, दिल्ली, '८२
" : " (१ प्रा०), गङ्गाप्रसाद वर्मा, बनारस, '०४
" : " (१ प्रा०), यूनिवर्सिटी बुकडिपो, आगरा, '३३
" : " (१ प्रा०), [सं० ललिताप्रसाद सुकुल, एम० ए०], हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '३६
नरोत्तमदास स्वामी : हिन्दी गद्य का इतिहास (१६), शम्भूदयाल सक्सेना, आगरा, '३८
नर्मदाप्रसाद खरे, सं० : नव नाटक निकुञ्ज (१६), त्रिलोकीनाथ, बनारस, '४१
नर्मदाप्रसाद मिश्र सं० : सरल नाटकमाला (४ बा०), संपादक जबलपुर, '३१ द्वि०
" : हाथी की सवारी (३ बा०) " " '४०
" : भूत का शेर (३ बा०) " " '४०
" : साहसी लुटेरा (३ बा०) " " '४०
" : चतरूराम (३ बा०) " " '४०
" : सुरेश की सेवा (३ बा०) " " '४०
" : सुरेश की दयालुता (३ बा०) " " '४०
नलिनी मोहन सान्याल : भाषा-विज्ञान (१०), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '२७
" : समालोचना तत्व (६), रामनारायण लाल, इलाहाबाद, '३६
" : सूरदास (१८) " " '३७
" : उच्चविषयक लेखमाला (५), " " '४१

नागरीदास, महाराजा : इश्क चमन (१ प्रा०), राधाचरण गोस्वामी, वृन्दावन, '७०

" : नागर समुच्चय (१ प्रा०), श्रीधर शिवलाल, ज्ञानसागर प्रेस, बम्बई, '९८

नागेश्वर मिश्र : चटपटे चुटकुले (३ बा०), दक्षिणभारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, '३३

नाथप्रसाद दीक्षित : माधुरी (१), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३७

नाथूभाई तिलकचंद सं० : पुष्टिमार्गीय वैष्णव भागवतन अष्टसरवान कृतीन पदमार्ग तथा गोवर्धनलीला अने दानलीला (१६) संपादक, बम्बई, '६८

नाथूराम प्रेमी : दिगम्बर जैन ग्रंथकर्त्ता और उनके ग्रंथ (१६), जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, '११ प्र०

" : जान स्टुअर्ट मिल (७), हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, '१६

" : कर्णाटक जैन कवि (२०), जैन ग्रंथ रत्नाकर, कार्यालय, बम्बई, '१४

" : हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास (१६), लेखक, बम्बई, '१७

" : श्रमण नारद (१७), " " '१७

नाथूराम शङ्कर शर्मा : शङ्करसरोज (१), आर्यसमाज, अलीगढ़, '१२ द्वि०

" : अनुराग रत्न (१), हरिशङ्कर शर्मा, " " '१३

" : गर्भरण्डा रहस्य (१७), " " '१६

" : वायस-विजय (१) शंकरसदन, हरदुआगंज, '१६

नानक : सिद्ध गोष्ट (१७ प्रा०), नूर प्रेस, लाहौर, '७४

" : प्राण सङ्गली (१७ प्रा०), भाग १-२, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '१३

नानकचन्द्र सं० : पावस प्रमोद (१६), (टी० सम्पूर्ण सिंह) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '८५

नारायण पाण्डेय, बी० ए० : नेपाल (८), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१०

नारायणप्रसाद अरोड़ा : डी० वेलेराका जीवन-चरित्र, (७), लेखक कानपुर, '३०

" : दूकानदारी (१२), गाँधी हिन्दी पुस्तक भण्डार, बम्बई, '२२

" : मधुमक्खी (१२), भीष्म एण्ड ब्रदर्स, पटकापुर, कानपुर, '२६

नारायणप्रसाद शर्मा : पदार्थ विद्या (१४ ग्रा०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०८

नारायणप्रसाद 'बेताब' : प्राशपुंज (६), हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '१६

" " : पिङ्गलसार (६), बेताब प्रिन्टिङ्ग वर्क्स, दिल्ली, '२२

नारायणराव प्रो० : युयुत्सु (१३), मुद्रक, चन्द्र प्रिन्टिग प्रेस, दिल्ली, '३६

" : स्तूप निर्माण-कला (१३), गुरुकुल, काँगड़ी, '३६

नारायण स्वामी : आत्मदर्शन (१७), आर्य पुस्तकालय, लाहौर, '२२

" : मृत्यु और परलोक (१७) " " '२६

" : ब्रह्मविज्ञान (१७), गिरीश पुस्तक-भण्डार, माईथान, आगरा, '३२

" : जीवन-चरित श्रीरामतीर्थ महाराज (७), लेखक, लखनऊ, '३४

नाल्ह नरपति : बीसलदेव रासो (१ प्रा०), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२६

नाहरसिंह सोलङ्की, सं० : रत्नावली (१८), संपादक, कासगञ्ज, एटा, '१६

नित्यनारायण बैनर्जी : आज का रूस (६ अनु०), विशालभारत बुकडिपो, कलकत्ता, '३४

नित्यानन्द देव : भाई-भाई (२), लेखक, डुमराँव, '२४

नित्यानन्द पाण्डेय, बी० ए०, एल-एल० बी० : 'ब्रीडिंग्स' (१२) लक्ष्मी-नारायण प्रेस, मुरादाबाद, '०३

निद्धलाल मिश्र : विवाहिता विलाप (४), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '८३

नेवाज कवि : शकुन्तला उपाख्यान (१ प्रा०), ब्रह्मशङ्कर मिश्र, बनारस, '८३

नोटोविच, एन० : भारतीय शिष्य—ईसा (७ अनु०), पुस्तक भण्डार, महाविद्यालय, ज्वालापुर, सहारनपुर, '१४

नोनीलाल पाल, डी० एस-सी० : नित्य व्यवहार में उद्भिज्ज का स्थान (१४), लेखक, लेक्चरर ढाका वि० वि०, '३८

नौरोजी, दादाभाई : भारतवर्ष में चरित्र की दरिद्रता और अँग्रेज़ों की वर्तमान नीति के विषय में देशियों के विचार (८ अनु०), [अनु० काशीनाथ खत्री], अनुवादक, सिरसा, इलाहाबाद, '८५

नौरोजी, दादाभाई : जब अंग्रेज़ नहीं आये थे (८ अनु०), सस्ता साहित्य-मण्डल, अजमेर, '२८

एन० सी० भादुरी : बायोकेमिकल मेटीरिया मेडिका (१३), बी० तथा बी० भादुरी, मुरादाबाद, '४०

एन० के० चैटर्जी : उद्भिज्ज का आहार (१४), विज्ञान परिषद्, इलाहाबाद, '३१

प

पँचकौड़ी दे : घटना घटाटोप (२ अनु०), [अनु० गोपालराम] फ्रेंड ऐंड कंपनी, मथुरा, '१३

" : जय पराजय (२ अनु०), [अनु० गोपालराम], मैनेजर, जासूस, गहमर, ग़ाज़ीपुर, '१३

" : जीवन रहस्य (२ अनु०) [अनु० गोपालराम], भारत मित्र प्रेस, कलकत्ता, '१३

" : नीलवसना सुंदरी (२ अनु०), [अनु० गोपालराम], मैनेजर, जासूस, गहमर, ग़ाज़ीपुर, '१३

" : मायावी (२ अनु०), [अनु० गोपालराम], " '१३

पजनेस : पजनेस-पचासा (१ प्रा०), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६२

" : पजनेस-प्रकाश (१ प्रा०) " " '६४

पटवर्धन, पंडित : मृदंग वा तबला वादन पद्धति (११) लेखक, बंबई, '१०
पट्टाभि सीतारामैया, डॉ० : काँग्रेस का इतिहास (८ अनु०), मुद्रक—
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, दिल्ली, '३५
" : भारत का आर्थिक शोषण (६ अनु०), मातृभाषा मंदिर,
इलाहाबाद, '४०
" : महात्मा गांधी का समाजवाद (६ अनु०), मातृभाषा-
मंदिर, इलाहाबाद, '४०
पतिराम बाबू : कवि भूषण-विनोद (१), डायमंड जुबिली प्रेस,
कानपुर, १९००
पत्तनलाल : देशी खेल (१३), भाग १-२, खड्गविलास प्रेस,
बाँकीपुर, '०१
पदम भागवत : रुक्मिणी मङ्गल (१ प्रा०), हिन्दू प्रेस, दिल्ली, '६७
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी : अञ्जलि (३), हरिदास ऐण्ड कंपनी,
कलकत्ता, '२२
" : पञ्चपात्र (५), साहित्य भवन लि०
इलाहाबाद, '२३
" : हिन्दी साहित्य-विमर्श (१६), हिन्दी पुस्तक-
एजेंसी, कलकत्ता, '२४
" : विश्व-साहित्य (२०), गङ्गा पुस्तकमाला
कार्यालय, लखनऊ, '२४
" : तीर्थ रेणु (१७), वैदेहीशरण, लहरिया-
सराय, दरभंगा, '३०
" : मकरन्द-बिन्दु (५), " " '३१
" : प्रबन्ध-पारिजात (५), साहित्य भवन लि०,
प्रयाग, '३२
" : झलमला (३), नाथूराम प्रेमी, बंबई, '३४
पद्मकान्त मालवीय : त्रिवेणी (१), अभ्युदयप्रेस, इलाहाबाद, '२६
" : प्याला (१), लेखक, इलाहाबाद, '३२

पद्मकान्त मालवीय : आत्मवेदना (१), लेखक, इलाहाबाद, '३२
" : आत्म-विस्मृति (१), " '३२
" : कूजन (१), " " '४१

पद्मसिंह शर्मा : पद्म-पराग—भाग १ (१८), भारत पब्लिशर्स लि०, मुरादपुर, '२६
" : हिंदी उर्दू और हिन्दुस्तानी (१०), हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी० इलाहाबाद, '३२

पद्माकर : पद्माभरण (६ प्रा०), [रामकृष्ण वर्मा सं०] भारत जीवन प्रेस, बनारस, १६००
" : गङ्गालहरी (१ प्रा०), श्रीधर शिवलाल, बंबई, '७४
" : " (१ प्रा०), दिलकुशा प्रेस, फ़तेहगढ़, '८६ द्वि०
" : " (१ प्रा०), रामसरूप शर्मा, मुरादाबाद, '६६
" : " (१ प्रा०), जैन प्रेस, लखनऊ, '६६
" : " (१ प्रा०), शिवदुलारे वाजपेयी, कल्याण, '[illegible]
" : जगद्विनोद (१ प्रा०), नवलकिशोर, लखनऊ, '७६
" : " (१ प्रा०), लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ, '६५
" : राम रसायन, बाल काण्ड (१ प्रा०), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६४
" : " अयोध्या काण्ड (१ प्रा०), " '६५
" : " अरण्य काण्ड (१ प्रा०), " '६५
" : प्रबोध-पचासा (१ प्रा०), भारतजीवन प्रेस, बनारस, '६२
" : " (१ प्रा०), रामरत्न वाजपेयी, लखनऊ, '६६
" : हिम्मतबहादुर विरदावली (१ प्रा०), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०८

पन्नालाल : पत्र-लेखन (१२), पाल ब्रदर्स, अलीगढ़, '२१
" : हिन्दी रीडिंग्स (१२), रामनारायण लाल, इलाहाबाद, '२६

पन्नालाल बाकलीवाल : लिङ्गबोध (१०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०४

परमेश्वरीदयाल : तुलसीकृत रामायण का अध्ययन (१८), वैदहीशरण, लहरियासराय, दरभंगा '२४

परमेश्वरीप्रसाद गुप्त, बी० एस०-सी० : चारादाना और उनके खिलाने की रीति (१२), सस्ता साहित्य-मंडल, नई दिल्ली, '३७

परमेश्वरीलाल गुप्त : अग्रवाल जाति का विकास (८), काशी पेपर स्टोर्स, २१ बुलानाला, बनारस, '४२

परशुराम : भेड़ियाधसान (३ अनु०), विशाल भारत कार्यालय, कलकत्ता,

परानमल सारस्वत ओझा : चपला (२), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '११

पराशर :—स्मृति (१७ अनु०) रघुनंदनप्रसाद बुकसेलर, बनारस, '६१

" : " (१७ अनु०), लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद, '६८

" :—संहिता (१७ अनु०), बङ्गवासी फ़र्म, कलकत्ता, '०५

" : बृहत् पाराशरी (१४ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '७५

" : लघु पाराशरी (१४ अनु०) " " '२१

पराशर, शाहजी : सन्त-दर्शन (१७) मुद्रक-गंगेश्वरी प्रिंटिंग वर्क्स, दिल्ली, '४०

पराहूदास : दृष्टान्तकोश (३), मिशन प्रेस, इलाहाबाद, '७०

परिपूर्णानन्द वर्मा : मेरी आह (२), बल्देवदास, बनारस, '३२

" : निठल्लू की रामकहानी (३ बा०) गङ्गा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३३

" : रानी भवानी (४), रामचन्द्र त्रिपाठी, पटना पब्लिशर्स, पटना '३८

" : संयुक्तप्रान्त की कुछ विभूतियाँ (८ बा) मैकमिलन, ऐण्ड कम्पनी, बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता, '४१

पर्लबक : धरती माता (२ अनु०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '४२

पलटू साहिब : पलटू साहिब की बानी—भाग १ (१७ प्रा०), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '०७

पशुपाल वर्मा : जर्मनी में लोकशिक्षा (६), मध्यभारत हिन्दी साहित्य-समिति, इन्दौर, '१६
,, : योरप का आधुनिक इतिहास (८) ,, ,, '२३
,, : बर्कले और केण्ट का तत्वज्ञान (२०) ,, ,, '२४
पाटेश्वरीप्रसाद लाला : प्रेम प्रकाशिका २ भाग (१), गयाप्रसाद, गोरखपुर, '६१
पाणिनि : पाणिनीय अष्टकम् (१० अनु०), सरस्वती प्रेस, इटावा, '६८
,, : अष्टाध्यायी (१० अनु०), (टीका ब्रजरत्न भट्टाचार्य), ज्ञानसागर प्रेस, बम्बई, '०१
पातञ्जलि : योगदर्शन (१७ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६४
,, : ,, (१७ अनु०) रामसरूप, मुरादाबाद, '६८
,, : ,, (१७ अनु०), स्वामी प्रेस, मेरठ, '०७
,, : ,, (१७ अनु०), आर्यदर्पण प्रेस, शाहजहाँपुर, '६५
,, : ,, तथा राजमार्तण्ड (१७ अनु०), शर्मा मैशीन प्रिंटिंग प्रेस, मुरादाबाद, '१५ रिप्रिंट
,, : ,, (१७ अनु०), (टीका० आर्यमुनि), देवदत्त, शाह आलमी दरवाज़ा, लाहौर, '१५
पातेश्वर प्रसाद : अनुराग-प्रकाश (१), लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६६
पानचन्द आनन्दजी पारीख : आर्य देशपनता (६), ओरिएन्टल प्रेस, बम्बई, '७१
[illegible]तनाथ द्विवेदी : देश की दशा (६), विश्वविद्या, प्रचारक महामंडल, चन्दौसी, '१५
पारसमणि प्रधान : नेपाली व्याकरण (१०), लेखक, लक्ष्मीनिवास-कालिम्पांग, '२०
पारस्कर : गृह्यसूत्र (१७ अनु०), [अनु० सुखदेव शर्मा], अनुवादक, हीवेट क्षत्रिय स्कूल, बनारस, '१४

पार्नेल : एकांतवासी योगी (१ अनु०), [अनु० श्रीधरपाठक], अनुवादक, इलाहाबाद '८६
,, तथा गोल्डस्मिथ : पद्यावली (१ अनु०) ['हरमिट', डेज़र्डविलेज' तथा 'ट्रैवेलर'], ए० के० भट्टाचार्य, बनारस, '८१
पालराम, सं० : शील-रत्नाकर (१७), जमालुद्दीन, मेरठ, '७१
पीताम्बर पंडित : विचार-चन्द्रोदय (१७), शरीफ़ साले मुहम्मद, बंबई, '७८
,, : बालबोध सटीक (१७) ,, ,, '८२
पुत्तनलाल सारस्वत : स्वतंत्रा बाला (४), लेखक, कन्नौज, '०३
पुरुषार्थी : अन्तर्वेदना (१), विश्वसाहित्य ग्रंथमाला, लाहौर, '३३
पुरुषोत्तमदास गुप्त : तुलसीदास (४), लेखक, अयोध्या, '२४ द्वि०
पुरुषोत्तमलाल, एम० ए० : आदर्श और यथार्थ (६), गीताधर्म प्रेस, बनारस, '३७
पुष्पदन्त : महिम्न स्तोत्र (१७ अनु०), लाइट प्रेस, बनारस, '७७
पूरनचन्द नाहर, एम० ए०, बी० एल्० : जैन लेख-संग्रह—भाग १ (८), जैन विविध साहित्य शास्त्रमाला कार्यालय, बनारस, '१८
,, ,, : भाग २-३ (८) संग्रहकार, कलकत्ता, '२६
,, : जैसलमेर (६) विश्वाभिनन्दन प्रेस, कलकत्ता, '२८
पूरनचंद मुंशी : अवध-समाचार (८), तमन्नाए प्रेस, लखनऊ, '७६
पूरनदास कबीरपंथी : निर्णयसागर (१७ प्रा०), शिवदुलारे वाजपेयी, कल्याण, '२३
पूर्णचन्द्र वसु : साहित्य-मीमांसा (६ अनु०), नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '२१
पूर्णसिंह वर्मा : भीमसेन शर्माजी का जीवन-चरित्र (७), ब्रह्म प्रेस, इटावा, '१८
पूर्णिमा देवी : ऊन की बुनाई की प्रथम शिक्षा (१२), लेखिका, एटा '०६
पृथ्वीनाथ शर्मा : पँखुरियाँ (३), हिन्दी भवन, लाहौर, '३६
,, अपराधी : (४), ,, ,, '३६

प्रकाशचन्द्र गुप्त : रेखा चित्र (५), शारदा प्रेस, इलाहाबाद, '४०
,, : नया हिन्दी साहित्य—एक दृष्टि (१६), सरस्वती प्रेस, बनारस, '४१

'प्रचारक बन्धु' : हिन्दी-तेलगू बालबोधिनी (१०), हिन्दी साहित्य सम्मेलन-प्रचार कार्यालय, मद्रास, '२१

प्रतापनारायण चतुर्वेदी, सं० : सेनापति-रत्नावली (१८), भारतवासी प्रेस, दारागञ्ज, इलाहाबाद '४१

प्रतापनारायण पुरोहित : नल नरेश (१), गङ्गा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३३

प्रतापनारायण मिश्र : मन की लहर (१), भारतीय प्रेस, बनारस, '८५
,, : कलि कौतुक (४) ,, ,, '८६
,, : मानस विनोद (१७) ,, ,, '८६
,, : मन की लहर (१) ,, ,, '८८ द्वि०
,, : मन की लहर (१) ,, ,, '८५
,, : कथामाला (३), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६०
,, : पञ्चामृत (१७ प्रा०) ,, ,, '६२
,, : चरिताष्टक (८), भाग १ ,, ,, '६४
,, : लोकोक्ति-शतक (१) ,, ,, '६६
,, : भारत दुर्दशा (४) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०२
,, : तृप्यन्ताम् (१) ,, ,, '०५
,, : सङ्गीत शाकुन्तल (१), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०८
,, : निबन्ध-नवनीत—भाग १ (५), अभ्युदय प्रेस, इलाहाबाद, '१६
,, : काव्य-कानन (१८), हिन्दी प्रेस, इलाहाबाद, '३३

प्रतापनारायण श्रीवास्तव : निकुञ्ज (३), अम्बिकाप्रसाद गुप्त, हिन्दी ग्रंथ-भण्डार, बनारस, '२३

प्रतापनारायण श्रीवास्तव : विदा (३), गङ्गा फ़ाइन आर्ट प्रेस. लखनऊ, '२८

" : पाप की ओर (२) " " '३०

" : आशीर्वाद (३), " " '३३

" : विजय (२) " " '३७

" : विकास (२) भाग १-२ " " '३६

प्रतापनारायण सिंह, महाराज : रस-कुसुमाकर (६), लेखक, अयोध्या, '६५

प्रतापसिंह, भक्तमाल (१२ प्रा०) नवलकिशोर, लखनऊ, '८४ च०

प्रतापसिंह, कविराज : आयुर्वेद खनिज विज्ञान (१३), प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर, '३१

" सं० : आयुर्वेद महामण्डल का रजत-जयन्ती ग्रन्थ (१३), आयुर्वेद महामण्डल, बनारस, '३५

प्रतापसिंह भोंसले, सतारकर : ब्रह्म-स्मृति (१५, लेखक, पूना, '८३

" : सत्यसागर (१७), कृष्णराव बापूजी माण्डे, पूना, '८३

प्रतापसिंह, सवाई : अमृतसागर (१३ अनु०), ज्ञानसागर प्रेस, बम्बई, '६८

प्रतिपाल सिंह, कुमार : वीर बाला वा अपूर्व नारीरत्न (२), लेखक, पहरा, छतरपुर, '०७

" : बुन्देलखण्ड का इतिहास (८), कुँवर पृथ्वीसिंह, " " '२८

" : आर्यदेव कुल का इतिहास (८) लेखक " " '२८

प्रद्युम्नदास : काव्य-मञ्जरी (६ प्रा०), लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६७

प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त' : सन्यासिनी (२), ओझा-बन्धु आश्रम, इलाहाबाद, '२६

" : बेलपत्र (३) " " '२६

" : पतझड़ (२), लेखक, इलाहाबाद, '३०

" : पाप और पुण्य (२), ओझा-बन्धु आश्रम, इलाहाबाद, '३०

प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त' : तलाक़ (२), मुद्रक—देवीदयाल, प्रिन्टिंग वर्क्स, दिल्ली, '३२
,, : जेलयात्रा (३) मुद्रक—भारत प्रिन्टिंग वर्क्स दिल्ली, '३२
,, : जलधारा (३), मध्यभारत हिन्दी-साहित्य समिति, इन्दौर, '३३
प्रभाकर गुप्त, आयुर्वेदाचार्य : प्राच्य इंजेक्शन-चिकित्सा (१३ अनु०), रामचरण भट्ट, झाँसी, '४२
प्रभाकर माचवे, सं० : जैनेन्द्र के विचार (१८), नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '३८
प्रभाकर शास्त्री : बाल संस्कृत-प्रभाकर (१०), लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '६५
प्रभाकरेश्वर उपाध्याय, सं० : प्रेमघन-सर्वस्व (१८), हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, इलाहाबाद, '३९
प्रभातचन्द्र बोस : मध्यप्रदेश में शिकार (६), इण्डियन प्रेस, जबलपुर, '३६
प्रभारानी, सं० : सोहर (१६), सम्पादिका, गड़रवारा (मध्यप्रान्त) '४०
प्रभावती भटनागर : पराजय (३) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '३४
प्रभुदत्त ब्रह्मचारी : भक्त-चरितावली—भाग १-२ (१६), हिन्दी प्रेस, इलाहाबाद, '२६
,, : चैतन्य-चरितावली (७), भाग १-३, गीता प्रेस, गोरखपुर, '३४
प्रभुदत्त शर्मा : जीवन (२), अम्बिकाप्रसाद गुप्त, बनारस, '११
प्रभुदयाल : कवितावली (१), लाला छन्नोमल, आगरा, '६३
,, : प्रेम-विलास (१), मथुरा प्रेस, आगरा, '६४
प्रभुदयाल गर्ग : राग-दर्शन—भाग १ (११) (राग भैरव), लेखक, हाथरस, '४०
प्रभुदयाल मेहरोत्रा : आधुनिक रूस (६), आर० सहगल, चुनार, '३४

प्राणनाथ विद्यालङ्कार, डॉ० : राष्ट्रीय आय-व्यय शास्त्र (१५), नागरी प्रचारिणी सभा बनारस, '२२

" : राजनीति शास्त्र (१५), " " '२२

" : रूस का पञ्चवर्षीय आयोजन (६), हिन्दी पुस्तक-एजेन्सी, कलकत्ता, '२३

" : मुद्राशास्त्र (१५), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२४

" : भारतीय सम्पत्तिशास्त्र (६), शिवनारायण मिश्र, कानपुर, '२४

" : इंगलैंड का इतिहास (८), भाग १, गङ्गा पुस्तक-माला कार्यालय, लखनऊ, '२६

" : हरप्पा तथा मोहेनजो दड़ो के प्राचीन लेख (८), लेखक, बनारस, '३६

प्रियंवदा देवी : आनन्दमयी रात्रि का स्वप्न (३), चुन्नीलाल, तिलहर, शाहजहाँपुर, '१४

प्रियरत्न आर्य : वैदिक मनोविज्ञान (२०), आर्य साहित्य-मण्डल, अजमेर, '३७

प्रियादास शुक्ल : भक्ति ज्ञानामृतवर्षिणी (१७ प्रा०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६५

प्रेमचन्द, बी० ए० : सप्तसरोज (३), हिन्दी पुस्तक-एजेन्सी, गोरखपुर, '१७

" : नवनिधि (३), नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '१८

" : महात्मा शेख सादी (२०), हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, गोरखपुर, '१८

" : सेवासदन (२), हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '१८

" : प्रेम-पूर्णिमा (३), " " '१८

" : सुखदास (२ अनु०), नाथूराम प्रेमी, बंबई, '२०

प्रेमचन्द, बी० ए० : समरयात्रा (३), सीताराम सेकसरिया, कलकत्ता, '३०
" : प्रेम-पञ्चमी (३) गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '३०
" : ग़बन (२) सरस्वती प्रेस, बनारस, '३१
" : प्रेम-प्रतिमा (३), गंगा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३१
" : प्रेरणा (३), सरस्वती प्रेस, बनारस, '३२
" : कर्मभूमि (२) " " '३२
" : समरयात्रा—(तथा अन्य कहानियाँ) '३२
" : प्रेम की वेदी (४) " '३३
" : सेवासदन संक्षिप्त (२ बा०) " '३४
" : पंच प्रसून (३), हिन्दी पुस्तक-एजेन्सी, कलकत्ता, '३४
" : नवजीवन (३), " " '३५
" : गोदान (२), सरस्वती प्रेस, बनारस, '३६
" : मानसरोवर (३), " " '३६
" : कुत्ते की कहानी (३ बा०), " " '३६
" : हिन्दी की आदर्श कहानियाँ (१६), ब्रजकिशोर, इलाहाबाद '३७
" : कफ़न और शेष रचनाएँ (३), सरस्वती प्रेस, बनारस, '३७
" : नारीजीवन की कहानियाँ (३), " " '३८
" : दुर्गादास (२), " " '३८
" : जङ्गल की कहानियाँ (३ बा०) " " '३८
" : कुछ विचार (५), " " '३९
" : प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (३), विश्वसाहित्य ग्रंथमाला, लाहौर, '३९ द्वि०
" : राम-चर्चा (१७ बा०), सरस्वती प्रेस, बनारस, '४१
" : प्रेम-पीयूष (३) " " '४१

प्रेमदास 'प्रताप' मिश्र : लोकोक्ति-शतक (१) जे० एम० प्रसाद, मिर्ज़ापुर, '८८

फ

फ़ाह्यान : चीनी यात्री फ़ाह्यान का यात्रा-विवरण (६ अनु०), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२०

फूलदेव सहाय वर्मा : प्रारम्भिक रसायन (१४), नन्दकिशोर ऐण्ड ब्रदर्स, बनारस, '३६

" : साधारण रसायन (१४), हिंदू विश्व-विद्यालय, बनारस, '३२

" : मिट्टी के बर्त्तन (१२), कला प्रेस, इलाहाबाद, '३६

फ़ैलन, एस० बी०, पी-एच० डी० : न्यू इंगलिश-हिंदुस्तानी डिक्शनरी (१०), लेखक, दिल्ली, '८३—

" : ए डिक्शनरी ऑव हिन्दुस्तानी प्रावर्ब्स (१०), मिस एम० डी० फ़ैलन, दिल्ली, '८४—

फ्रांस, अनातोले : अहंकार (थायस अनू०), (२ अनु०), राधाकृष्ण नेवटिया, कलकत्ता, '२३

ब

बङ्किमचन्द्र चट्टोपाध्याय : दुर्गेशनंदिनी भाग १-२, (२ अनु०), गदाधरसिंह, आज़मगढ़, '८२

" : " (२ अनु०), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०१

" : धर्मतत्त्व (१७ अनु०), (अनु० महाबीरप्रसाद), भारत मित्र प्रेस, कलकत्ता '८३ !

" : राधारानी (२ अनु०), (अनु० हरिश्चंद्र), अनुवादक, बनारस, '८३

" : युगलाङ्गुलीय (२ अनु०), (अनु० प्रतापनारायण मिश्र), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर '६४

: राजसिंह (२ अनु०), (अनु० प्रताप नारायण मिश्र) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर '६४

" : " (२ अनु०), (अनु० किशोरीलाल गोस्वामी) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर '१०

बचऊ चौबे 'रसीले' : सावन-बहार (१) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '०६
बचनेश मिश्र तथा देवदत्त शर्मा : हास्य (४), चिन्तामणि प्रेस, फर्रुखाबाद, '६३
" : नवरत्न (१), देवदत्त शर्मा, कालाकांकर, (अवध) '०६
" : शबरी (१),रामकुमार, कालाकांकर (अवध) '३६
बच्चूराम, सं० :-अनुराग-शिरोमणि (१), संपादक नार्मल स्कूल, इलाहाबाद, '८३
बजरङ्गबली-विशारद : माइकेल मधुसूदनदत्त (२०), साहित्य-सेवक कार्यालय, बनारस, '२५
" सं० : तुलसी-रचनावली (१८), सीताराम प्रेस, बनारस, '३६
बटुकनाथ शर्मा तथा बल्देव उपाध्याय : रसिक गोविन्द और उनकी कविता (१८), लेखक, बलिया, '२५
बदरीदत्त पाडेण्य : कुमाऊँ का इतिहास (८),लेखक, प्रेम-कुटीर, अल्मोड़ा, '३७
बदरीनाथ भट्ट : कुरुवन-दहन (४), रामभूषण प्रेस, आगरा, '१२
" : चुङ्गी की उम्मीदवारी (४) " " '१४
" : चंद्रगुप्त (४), लेखक, आगरा '१५
" : वेणीसंहार की आलोचना (२०), रामभूषण प्रेस, आगरा, '१५
" : गोस्वामी तुलसीदास (४) " " '२२
" : बेनचरित (४), रामप्रसाद ऐंड सन्स, आगरा, '२२
" : हिन्दी (१६), गंगा पुस्तकमाला कार्यालय लखनऊ, '२५
" : दुर्गावती (४) " " '२६
" : लबड़धोंधों (४) " " '२६
" : विवाह-विज्ञापन (४) " " '२७

बर्नियर, फ्रैंकिस : बर्नियर की भारतयात्रा भाग १-२ (९ अनु०), (अनु० गंगाप्रसाद गुप्त), कल्पतरु प्रेस, बनारस, '०६

,, : ,, (९ अनु०) गंगाप्रसाद अरोरा, बनारस, '१७ द्वि०

बलदेवदास : प्रभात-शतक (१), बाबूलाल, आगरा, '९७

बलदेवप्रसाद उपाध्याय, एम० ए० : संस्कृत कविचर्चा (२०), मास्टर खेलाड़ीलाल, बनारस, '३२

बलदेवप्रसाद खरे : प्रणवीर (४), निहालचंद्र वर्मा, कलकत्ता, '२६

बलदेवप्रसाद, पण्डित : शृङ्गार-सुधाकर (१), सुब्हे सादिक प्रेस, थोमेसनगंज, '७७

,, : ,, (१), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८५

,, : सुधा-तरङ्गिणी (१), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '८५

,, : शृंगार-सरोज (१), लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ, '९५

बलदेवप्रसाद बाबू, सं० : नीति-रत्नावली (१९), धार्मिक प्रेस, इलाहाबाद, '९५

बलदेवप्रसाद बाह्लीक : नामदेव-चरितावली (७), रामकृष्ण पाण्डेय, बिलासपुर, '३८

बलदेवप्रसाद मिश्र : कीमिया (१४), लेखक, मुरादाबाद, '९९

,, : लल्ला बाबू प्रहसन (४), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१९००

,, : नन्द विदा (४), इंडिया लिटरेचर सोसाइटी, मुरादाबाद '१९००

,, : अनारकली (२), तंत्र प्रभाकर प्रेस, मुरादाबाद, '१९००

,, : महाविद्या (१७) ,, ,, '०१

,, : नवीन तपस्विनी (४), कृष्णलाल श्रीधर, बम्बई, '०२

,, : पानीपत (२), के० एन० शर्मा, कलकत्ता, '०२

बलवन्त दीवान, कुँवर : तकली (१२), मुद्रक—आदर्श प्रिन्टिंग प्रेस, अजमेर '४१

बलवन्तराव गोखले तथा डोरीलाल मुंशी : हिन्दी की तीसरी पुस्तक (१६ बा०), एजुकेशन विभाग, नागपुर, '७८

बलवन्तराव भैया साहब शिन्दे : उषा (४), लक्ष्मीनारायण ज्योतिषी, इलाहाबाद, '०४

बलवन्त सिंह : भक्ति शिरोमणि (१), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६६

बलवान सिंह, राजा : चित्र-चन्द्रिका (६), इलाही प्रेस, आगरा, '६६

बलवीर : राधिका-शतक (१), श्यामकाशी प्रेस, मथुरा, '६२

बल्लाल : भोज-प्रबन्ध-सार (३ अनु०), गवर्नमेंट प्रेस, इलाहाबाद, '६७

,, : भोज-प्रबन्ध (३ अनु०), लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '६५

,, : भोज-प्रबन्ध (३ अनु०), रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद, '१५

बसनजी चतुर्भुज सं० : गुरुस्तुति-संग्रह (१६), आकाभाई शिवाजी, बम्बई, '७१

बसन्त जायसी : समुद्र-लहरी (१७), भारत-जीवन प्रेस, बनारस, '६४

,, : कृष्ण-चरित्र (१), ,, ,, '६४

बहादुरचन्द्र : लोकोक्तियाँ और मुहावरे (१०) हिन्दी-भवन, हॉस्पिटल रोड, लाहौर, '३२

बहादुरदास : निर्द्वन्द रामायण (१८) शिवदास जी, डुमराँव, '८५

बाँकेबिहारी तथा कन्हैयालाल सं० : ईरान के सूफ़ी कवि (२०), लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '४०

बाण भट्ट : कादम्बरी (२ अनु०), [बँगला रूपान्तर से अनू०] गदाधर सिंह, आजमगढ़, '८६ द्वि०

,, : ,, (२ अनु०), (अनु० ऋषीश्वरनाथ भट्ट), गांधी हिन्दी पुस्तक भण्डार, बम्बई, '२२

,, : पार्वती-परिणय (४ अनु०), (अनु०रामदहिन काव्यतीर्थ) भारतमित्र प्रेस, कलकत्ता, '१०

बाण भट्ट : हर्ष-चरित (२ अनु०), (अनु० प्यारेलाल दीक्षित), रामकिशोर गुप्त, धनौरा, मुरादाबाद, '१४

बाबर : बाबरनामा (७ अनु०), देवीप्रसाद मुंसिफ़, जोधपुर, '१२

बाबूराम वित्थरिया : हिन्दी काव्य में नवरस (१६), हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, इलाहाबाद, '२७ ?

बाबूलाल : परियों का दरबार (२ बा०) गङ्गा पुस्तकमाला कर्यालय लखनऊ, '३४

" : लोमड़ी रानी (३ बा०) " " '३५

बालकराम विनायक : भक्ति शरतशर्वरीश (१६), तुलसी-आश्रम, वधौली, हरदोई, '११

बालकृष्ण, एम० ए० : अर्थ-शास्त्र (१५), भारत लिटरेचर कम्पनी, लाहौर, '१४

" : भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास (८), भाग १, '१४

बालकृष्ण ठट्ठे : अनुताप (३), दुर्गाप्रसाद लहरी, बनारस, '१७

बालकृष्ण तथा बलदेव शर्मा : हास्य-सुधाकर (३), लेखक, पटना, '०२

बालकृष्ण भट्ट : शिक्षादान (४), लेखक, इलाहाबाद, '७७ ?

" : " (४), महादेव भट्ट यहियापुर इलाहाबाद, '१२ रिप्रिंट

" : साहित्य-सुमन (५), प्रयाग प्रेस कंपनी लि०, '८६

" : " (५), लक्ष्मीकान्त भट्ट, कलकत्ता,' २२ द्वि०

" : " (५), गंगा फाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '२८

" : दमयन्ती-स्वयंवर (४), छेदीलाल, इलाहाबाद, '६५

" : सौ अजान एक सुजान (२), लेखक, इलाहाबाद '७८ रिप्रिंट

" : नूतन ब्रह्मचारी (२), महादेव भट्ट, यहियापुर, इलाहाबाद, '११ द्वि०

" : भट्ट निबन्धावली (५), [सं० देवीदत्त शुक्ल, तथा धनञ्जय भट्ट] हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, इलाहाबाद, '४२

बालकृष्ण राव : कौमुदी (१), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '३१
" : आभास (१), लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '३५
बालकृष्ण शर्मा, 'नवीन' : कुंकुम (१), गणेशशंकर विद्यार्थी, कानपुर, '३६
बालगङ्गाधर तिलक : भगवद्गीता-रहस्य (२० अनु०), लेखक, पूना, '१६
" : वेदकाल-निर्णय (८ अनु०), रामचन्द्र शर्मा, एम० ए०, जलन्धर, '२६
बालचन्द मोदी : देश के इतिहास में मारवाड़ी जाति का स्थान (८), रघुनाथप्रसाद सिंघानियाँ, ७३९, चासा धोबी पाड़ा स्ट्रीट, कलकत्ता, '४०
बालदत्त पाण्डेय : वनदेवी (२), देवनारायण द्विवेदी, कलकत्ता, '२१
बालमुकुन्द : बनारस (६), लेखक, बनारस, '२४
बालमुकुन्द गुप्त : शिवशम्भु के चिट्ठे (५), मकसूदनदास, कलकत्ता, '०६
" : स्फुट कविता (१) " " '०६
" : हिन्दी भाषा (१०), कृष्णान्द शर्मा, कलकत्ता, '०८
" : चिट्ठे और खत (५) " " '०८
" : गुप्त-निबन्धावली (५), नवलकिशोर गुप्त, कलकत्ता, '१३
बालमुकुन्द पाण्डेय : गङ्गोत्तरी (४), लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ, '६७
बालमुकुन्द वर्मा : कामिनी (२), लेखक, कचौड़ीगली, बनारस, १९००
" : राजेन्द्र-मोहिनी (२), लक्ष्मी-वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '०१
" : प्रेम-रत्नावली (१), कल्पतरु प्रेस, बनारस, '०३
" : बाबू कार्त्तिक प्रसाद खत्री का जीवन-चरित्र (१८), लेखक, बनारस, '०४

बेकन : बेकन विचार-रत्नावली (५ अनु०), (अनु० महावीरप्रसाद द्विवेदी), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '२०

बेचन शर्मा पाण्डेय, 'उग्र' : महात्मा ईसा (४), मनमोहन पुस्तकालय, नीची बाग, बनारस, '२२

" : चन्द हसीनों के खतूत (२), नवजादिकलाल श्रीवास्तव, कलकत्ता, '२७

" : दिल्ली का दलाल (२), " " '२७

" : चॉकलेट (३) " " '२७

" : चिंगारियाँ (३), महादेवप्रसाद सेठ, कलकत्ता, '२७

" : दोजख की आग (३) " " '२८

" : बलात्कार (३) " " '२८

" : बुधुआ की बेटी (२) " " '२८

" : गल्पाञ्जलि (३), श्यामबाबू अग्रवाल, मैनपुरी, '२८

" : चार बेचारे (४), महादेवप्रसाद सेठ, कलकत्ता '२९

" : शराबी (२), विनोदशंकर व्यास, बनारस, '३०

" : घंटा (२), हिन्दी पुस्तक-एजेंसी, कलकत्ता, '३७

" : डिक्टेटर (४), हरिशंकर शर्मा, बी० कॉम०, कलकत्ता, '३७

" : सरकार तुम्हारी आँखों में (२), श्रीनिवास रामप्रसाद लोहिया, कलकत्ता, '३७

" : चुम्बन (२ , हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, '३८

" : क्रान्तिकारी कहानियाँ (३), सीताराम प्रेस, बनारस, '३९

" : गङ्गा का बेटा (४), स्वरूप ब्रदर्स, खजूरी बाजार, इन्दौर, '४०

" : आवारा (४), सत्साहित्यिक सेवक समाज, भारती भवन, उज्जैन (मालवा), '४२

" : रेशमी (३), गङ्गा फाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '४२

बेट्स, जे० डी० : हिन्दी डिक्शनरी (१०), लाज़रस ऐन्ड कं०, बनारस, '७५

वेनी : नवरस तरंग (६ प्रा०), [सं० कृष्णविहारी मिश्र] एस० एस० मेहता, बनारस, '२५

वेनीप्रसाद, डी० एस-सी० : गुरु गोविन्दसिंह जी (७), नागरी प्रचारिणी सभा बनारस, '१४

" : महर्षि सुकरात (७) " " '१७

" : रणजीतसिंह (७) " " '२०

" सं० : संक्षिप्त सूरसागर (१८), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '२२

" : हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता (८), हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '३१

" : नागरिक शास्त्र (१५), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३७

बेनीप्रसाद तिवारी : अनुराग-मञ्जरी (१), ग्रन्थकार, आनन्द मण्डली मिर्जापुर, '६६

बेनीप्रसाद मेहरा : मायावती (२), दुर्गाप्रसाद खत्री, बनारस, '२३

बेनीप्रसाद वाजपेयी : सम्पादिका (३), रामेश्वर प्रेस, इलाहाबाद, '३३

वेनीमाधव शर्मा : झलक—'हरिऔध' की जीवनी (१८), प्रभुदत्त शर्मा, इटावा, '३६

वेलीराम, डॉ०: ह्यूमन ऐनॉटोमी (१३), देवीप्रकाश प्रेस, लाहौर, '८७

बैजनाथ : वीर बामा (४), लेखक, काशो, ज़िला मथुरा, '८३

बैजनाथ, बी० ए० : धर्म-विचार (१७), वैश्यहितकारी कार्यालय, मेरठ, '०३

" : धर्म-सार (१७) " " '०३

" : भारत-विनय (१७), " " '०५

बैजनाथ कुर्मी : षड्ऋतु-वर्णन (१), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८७

" : नखशिख-वर्णन (१) " " '१४

बैजनाथ केडिया : अस्फुट कलियाँ (३), हिन्दी पुस्तक-एजेन्सी, कलकत्ता, '३०
,, : काने की करतूत (२ बा०) ,, ,, '३०
,, : पुजारी जी की पूजा (३ बा०) ,, ,, '३१
,, : व्यङ्ग्य-चित्रावली, भाग १ (११) ,, ,, '३३
,, : दूर्वादल (३) ,, ,, '३३
,, : देखो और हँसो (३ बा०) ,, ,, '३३
,, : पण्डित पुत्तूमल (३ बा०) ,, ,, '३३
,, : शेर का शिकारी (३ बा०) ,, ,, '३३
,, : तीन तिकड़मी (३ बा०) ,, ,, '३३
,, : चौपट चपेट (३ बा०) ,, ,, '३३
,, : नटखट नाथू (३ बा०) ,, ,, '३३
,, : सवा तीसमार खाँ (३ बा०) ,, ,, '३३
,, : चतुर चन्द्रा (३ बा०) ,, ,, '३६
,, : अकड़बेग खाँ (३ बा०) ,, ,, '३६
,, : काला साहब (३ बा०) ,, ,, '३६
,, : मीठी मीठी कहानियाँ (३ बा०) ,, ,, '३७
,, : महिला-मण्डल (३) ,, ,, '३८
,, : समाज के हृदय की बातें (६) ,, '३८
,, : चोखी चोखी कहानियाँ (३ बा०) ,, '३६
,, : ग्रामीण आदर्श (३ बा०) ,, ,, '३६
,, : बालहठ (३ बा०) लेखक, बनारस, '३६
,, : कालिया नाग (३ बा०) ,, ,, '३६
,, : सफाचट (३ बा०) ,, ,, '४०
बैजनाथ प्रसाद यादव : फलों तथा साग-भाजियों की खेती, (१८) कृषिसुधार कार्यालय, गौरा, बरेली '४०
,, : उद्यानशास्त्र (१८) ,, ,, '४०
,, : कृषिसुधार का मार्ग (१८) ,, ,, '४०

बी० डी० बसु : कम्पनी के कारनामे (अनु०) टी० पी० भटनागर, इलाहाबाद, '३९

बी० एम० शर्मा डी० लिट्० : भारत और संघ शासन (९), अपर इंडिया पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ '३९

बी० एस० ठाकुर : हिन्दी पत्रों के सम्पादक (१६) स्वतंत्र प्रकाशन मंडल, लखनऊ, '४०

ब्वॉयड मेरी, तथा मारगैरेट ट्रैसी : वेदना विहीन प्रसव (१३ अनु०) क्षेत्रपाल शर्मा, मथुरा '२७

भ

भक्तराम, सं० : राग रत्नाकर (११), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '८८

भक्तानन्द स्वामी : वल्लभकुल छल-कपट दर्पण (१७), लेखक, इलाहाबाद, '०७

भगवतरसिक : भगवतरसिक की बानी (१ प्रा०) केदारनाथ, लखनऊ, '१५ द्वि०

भगवतशरण : तुलसी-चिकित्सा (१३) साहित्यसेवा सदन, बनारस, '३६

भगवतशरण : दुग्ध तक्रादि चिकित्सा (१३) „ „ '३६

भगवतशरण उपाध्याय, एम० ए० :सवेरा (३) सरस्वती-मंदिर, बनारस, '४०

„ : गर्जन (३) „ „ '४१

„ : संघर्ष (३) „ „ '४१

„ : नूरजहाँ (गुरुभक्तसिंह कृत की समालोचना) (१८), रामलोचनशरण, लहरिया सराय, '४१

भगवत सरन : आत्मज्ञान मञ्जरी (१७) नूरुल अनवर प्रेस, आरा, '७१

भगवती शरण वर्मा : पतन (२) गङ्गा पुस्तक-माला कार्यालय लखनऊ, '२८

„ : मधुकण (१), चन्द्रशेखर शास्त्री, इलाहाबाद, '३२

„ : चित्रलेखा (२) साहित्यभवन मिलि०, इलाहाबाद, '३४

भगवतीप्रसाद वाजपेयी : ओस के बूँद (१) सुखजीवन ग्रंथमाला, दारागञ्ज, इलाहाबाद, '४१

" सं० : हिन्दी की प्रतिनिधि कहानियाँ (१६), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '४२

" : निमन्त्रण (२), कलामंदिर, इलाहाबाद, '४२

" : कला की दृष्टि (३), मोतीलाल बनारसीदास, सैदमिट्ठा बाज़ार, लाहौर, '४२

भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव : विज्ञान के चमत्कार (१४), ज्ञानमंडल लिमिटेड, बनारस, '४०

भगवतीप्रसाद सिंह, सं० : पावस-मञ्जरी (१६), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१६००

भगवतीप्रसाद सिंह : बनारस के व्यवसायी (६), ज्ञानमंडल कार्यालय, बनारस, '३०

भगवतीलाल श्रीवास्तव, 'पुष्प' : अनन्त-अतिथि (१), लेखक, बनारस, '३६

भगवद्दत्त : वैदिक वाङ्मय का इतिहास (२०) रिसर्च डिपार्टमेंट, डी० ए० वी० कालेज, लाहौर, '२७

" : भारतवर्ष का इतिहास (८), वैदिक रिसर्च इंस्टीट्यूट, माडेलटाउन, लाहौर, '४०

भगवानदास, बी० ए० : उर्दू बेगम (२), लेखक, मिर्ज़ापुर, '०५

भगवानदास, डॉक्टर : समन्वय (५), भारती भंडार, बनारस, '२८

" : दर्शन का प्रयोजन (१७), हिन्दुस्तानी एकैडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '४१

भगवानदास अवस्थी : अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्त (१५) " " '४१

भगवानदास केला : भारतीय शासन (६), शङ्करलाल शर्मा, अलीगढ़, '१५

भगवानदीन, लाला : अलङ्कार-मञ्जूषा (६), रामसहायलाल बुकसेलर, गया, '१६

„ : बाल-कथामाला (३ बा०) „ „ '१६

„ : वीर-पञ्चरत्न (१), बर्मन प्रेस, कलकत्ता, '२०

„ सं० : सूक्ति-सरोवर (१६), मिश्रबंधु कार्यालये, जबलपुर, '२३

„ : बिहारी और देव (१६), लेखक, बनारस, '२६

„ : नवीन बीन (१), हिन्दी पुस्तक-भंडार, लहरियासराय, '२६

„ : सूर-पञ्चरत्न (१८), रामनारायण लाल, इलाहाबाद, '२७

„ : व्यङ्ग्यार्थ-मञ्जूषा (६), विश्वनाथप्रसाद, बनारस, '२७

„ सं० : तुलसी-पञ्चरत्न (१८), नंदकिशोर, बनारस, '२७

„ सं० : केशव पंचरत्न (१८), रामनारायणलाल, इलाहाबाद, '२६

„ सं० : रहिमन-शतक (१८), साहित्यभूषण कार्यालय, बनारस, '३०

भगवानप्रसाद, 'रूपकला' : श्री पीपाजी की कथा, भाग १ (७), लेखक, अयोध्या, '६६

„ : मीराबाई की जीवनी (१८), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६७

भगीरथप्रसाद दीक्षित : भूषण-विमर्श (१८), सरस्वती प्रकाशन मंदिर, प्रयाग, '३८

„ तथा उदयनारायण तिवारी, सं० : वीरकाव्य-संग्रह (६), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '३६

भजनदेव स्वामी : क्षेत्रज्ञान (१७), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६८

भट्टनारायण : वेणीसंहार (४ अनु०), गंगाधर मालवीय, मिर्ज़ापुर, '७३

„ : „ (४ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६२

„ : „ (४ अनु०), साहित्य भवन, ११ टेम्पुल रोड, लाहौर, '४०

भट्टि : भट्टिकाव्य (१ अनु०), ईश्वरप्रसाद लाल, गया, '१२

भँवरलाल नाहटा : सती मृगावती (१७), शङ्करदान भैरवदान नाहटा, बीकानेर, '३०

भवानराय श्रीनिवास पन्त : सूर्यनमस्कार (१३), स्वाध्याय मण्डल, औंध; सतारा, '३६

भवानीदत्त जोशी : वीर भारत (४), लेखक, इलाहाबाद, '१६

भवानीदयाल संन्यासी : दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास (८), द्वारकाप्रसाद सेवक, इन्दौर, '१६

" : वैदिक धर्म और आर्य-सभ्यता (२०), रघुवीरशरण, मेरठ, '१७

" : हमारी कारावास-कहानी (६), द्वारकाप्रसाद सेवक, इन्दौर, '१८

" : प्रवासी भारतवासी (६), " " '१८

" : नेटाली हिन्दू (६), " " '२०

" : दक्षिण अफ्रीका के मेरे अनुभव (६), चाँद कार्यालय, इलाहाबाद, '२७

" : प्रवासी की कहानी (७), बाल-साहित्य प्रकाशन समिति, कलकत्ता, '३६

" : वैदिक प्रार्थना (२०), प्रवासी-भवन, आदर्शनगर, अजमेर, '४१

" : पोर्चुगीज पूर्व अफ्रीका में हिन्दुस्थानी (६) प्रवासी भवन, आदर्शनगर, अजमेर, '४२

भवानी सिंह : सर्विया का इतिहास (८), राजपूताना हिन्दी साहित्य-सभा, झालरापाटन, '१७

भागवतप्रसाद राव : मदन-सरोज (१६), लेखक, ज़िला मुजफ़्फ़रपुर, '६०

प्रसाद शर्मा : प्रेमामृतसार (१), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८३

भागीरथी बाई : मारवाड़ी गीत-संग्रह (२०), हिन्दी पुस्तक-एजेन्सी, कलकत्ता, '२८-३३
भातखण्डे : श्रीमल्लक्ष्य सङ्गीतम् (११), लेखक, पूना, '३४
भानजी मोनजी : भानप्रकाश तथा पदावली (१), लेखक, बम्बई, '७८
,, : भानविलास, मणि-रत्नमाला और भान-भवानी (१), लेखक, बम्बई, '७६
भानुदत्त मिश्र : रसतरङ्गिणी (६ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१४
भारवि : किरातार्जुनीय (१ अनु०), (अनु० सीताराम, बी० ए०) अनुवादक, मुट्ठीगञ्ज, इलाहाबाद, '०१
,, : ,, (१ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१६
,, : ,, (१ अनु०), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '१७
भाव मिश्र : भावप्रकाश, पूर्वखण्ड, (१३ अनु०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६५
,, : ,, (१३ अनु०), (नुअ० शालिग्राम वैश्य) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '२१
भास : स्वप्नवासवदत्ता (४ अनु०), मायाशङ्कर दूबे, राजनाँदगाँव, बस्तर स्टेट, '१४
,, : ,, (४ अनु०), साहित्य प्रेस, चिरगाँव, '२६
,, : ,, (४ अनु०), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '३०
,, : मध्यम व्यायोग (४ अनु०), गङ्गा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२५
,, : ,, (४ अनु०), गौरशङ्कर शर्मा, राँची, '२८
,, : पाञ्चरात्र (४ अनु०), ,, ,, '२८
,, : नाटकावली, भाग १ (४ अनु०), व्रजरत्नदास, बनारस, '२६
,, : प्रतिमा और पाञ्चरात्र (४ अनु०), उत्तरचन्द कपूरचन्द, लाहौर, '३०

भास्कराचार्य : सिद्धान्त शिरोमणि (१४ अनु०), (विष्णु भाष्य सहित), श्री वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०६

,, : ,, (१४ अनु०), (वासनाभाष्य सहित), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '११

,, : करण लाघव (१४ अनु०), गङ्गाशंकर नागर पञ्चोली, भरतपुर, '१२

,, : लीलावती (१४ अनु०), म्योर प्रेस, दिल्ली, '७३

,, : ,, (१४ अनु०), गङ्गा काग़ज़ी बुकडिपो, आगरा, '८६

,, : ,, (१४ अनु०), (अनु० रामस्वरूप शर्मा) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६७ द्वि०

,, : ,, भाग १ (१४ अनु०), तुकाराम जावजी, बम्बई, '१४

भिखारीदास : छन्दोर्णव (६ प्रा०), गोपीनाथ पाठक, बनारस, '६६

,, : छन्दोर्णव पिंगल (६ प्रा०), लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ, '६४

,, : ,, (६ प्रा०) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '७५

,, : वर्ण-निर्णय (१७ प्रा०), जगतनारायन, भरनई, इटावा, '१५

,, : रस-सारांश (६ प्रा०) राजा प्रतापबहादुर सिंह, किला प्रतावगढ़, '६३

,, : ,, (६ प्रा०) गुलशन-ए-अहमदी प्रेस, प्रतापगढ़, '६१

,, : शृङ्गार-निर्णय (६ प्रा०) ,, ,, ,, '६२

,, : ,, (६ प्रा०), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६५

,, : ,, (६ प्रा०), बिहारबंधु प्रेस, बाँकीपुर, '६६

,, : काव्य-निर्णय (६ प्रा०), गुलशन-ए-अहमदी प्रेस, प्रतावगढ़, '६२

,, (६ प्रा०), [सं० नकछेदी तिवारी] श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '६

भिखारीदास : काव्य-निर्णय (६ प्रा०), भारतजीवन प्रेस, बनारस, '६६
भीखा साहिब :-बानी (१७ प्रा०), वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '०६
भीमसेन विद्यालङ्कार : वीर-काव्य और कवि (१६), साहित्य-भवन, ११ टेम्पुल रोड, लाहौर, '४०
,, : हिन्दी नाटक-साहित्य की समालोचना (१६), ओरिएंटल बुकडिपो, अनारकली, लाहौर, '४२
भीमसेन शर्मा : पुनर्जन्म (१७), धर्म प्रेस, इटावा, '१४
भुवनचन्द्र बसक : दिग्विजय वा आश्चर्य-चन्द्रिका (१४), लेखक, कलकत्ता, '६६
,, सं० : बँगला देश का इतिहास (८) ,, ,, '७४
,, ,, : महन्त-विचार (१७) ,, ,, '७४
भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र एम० ए० : मीरा की प्रेम-साधना (१८), मङ्गलप्रसादसिंह, वाणी-मंदिर, छपरा, '३४
,, : कारवाँ (४), लीडर प्रेस, इलाहाबाद '३५
भुवनेश्वर मिश्र : घराऊ घटना (२), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६४
भुवनेश्वरसिंह 'भुवन' : आषाढ़ (१), वैशाली प्रेस, मुज़फ्फरपुर '३५?
भूदेव विद्यालङ्कार : स्वाधीनता के पुजारी (८), प्रताप प्रेस, कानपुर, '२५
भूपनारायण दीक्षित : नटखट पांडे (३ बा०), गङ्गा पुस्तकमाला कर्यालय लखनऊ, '२५
,, : गधे की कहानी (३ बा०) ,, ,, '३३
,, : खिलवाड़ (३ बा०) ,, ,, '३६
,, : दिलावर सियार (३ बा०), गङ्गा ग्रंथागार लखनऊ, '३६
भूपेन्द्रनाथ सान्याल : साम्यवाद की ओर (६), लेखक, इलाहाबाद, '३६
भूषण : शिवा-बावनी और छत्रसाल-दशक (१ प्रा०), गोवर्धनदास, लक्ष्मणदास, बम्बई '६० रिप्रिंट

भूषण : शिवराज-बावनी (१ प्रा०), व्रजजीवन मुरारजी त्रिपाठी, भूजनगर '९३ रिप्रिंट
,, : शिवा-बावनी सटीक (१ प्रा०), हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '२६
,, : शिवराज-भूषण (६ प्रा०), परमानंद सुहाने, लखनऊ, '९४
,, : ,, (६ प्रा०) गोबर्धनदास लक्ष्मणदास, बंबई, '९८
,, : ,, (६ प्रा०) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०८
भेदीराम : सुन्दरी विलास (१), किशनलाल, आगरा, '८०
,, : ढोला-मारू (१), खुरशेद-ए-आलम प्रेस, आगरा, '८५
,, : नेकीबदी (३), अबुलउलाई प्रेस, आगरा, '०१
भैरवनाथ झा : मनोविज्ञान और शिक्षाशास्त्र (१६), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३२
भैरवप्रसाद मिश्र : हिंदी लघु व्याकरण (१०), लेखक, बंबई, '७१ द्वि०
भोलानाथ : विक्रम-विलास (३), मुंशी बिहारीलाल, मैनपुरी, '६७
,, : मजमुआ-ए-नज़ीर, भाग १, (२०), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '९२
भोपालदास : भारत-भजनावली (१), हरदिल अज़ीज़ प्रेस, मथुरा, '६७

म

मकनजी कबीरपंथी, सं० : कबीर-स्तुति (१९), संपादक, फोर्ट, बम्बई, १९००
,, : कबीरोपासना पद्धति (१७), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०४
मकरन्द : —सारिणी (१४ अनु०), गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, कल्याण, '३६
मगनलाल खुशालचन्द गांधी : चर्खा शास्त्र (१२), लेखक, सत्याग्रहाश्रम, साबरमती '२५—
मङ्गल : भक्त नरसिंह मेहता (७), गीताप्रेस, गोरखपुर, '३७

मदनमोहन नागर, एम० ए० : सारनाथ का संक्षिप्त परिचय (६), मैनेजर, गवर्नमेंट ऑव इंडिया पब्लिकेशन्स, दिल्ली, '४१

मदनमोहन पाठक : माया विलास, भाग १-६, (२), राजराजेश्वरी प्रेस, बनारस, '६६

,, : आनन्द सुन्दरी, भाग १ (२), विश्वेश्वरप्रसाद वर्मा, बनारस, '०२

,, : चन्द्रिका (२) ,, ,, '०३

मदनमोहन मालवीय : मालवीय जी और पञ्जाब (६ अनु०), अभ्युदय प्रेस, इलाहाबाद, '१२

मदनलाल तिवारी : मदन-कोष (८), लेखक, इटावा, '०६

मधुर अली : युगल विनोद पदावली (१), जैन प्रेस, लखनऊ, '६७

मधुसूदन गोस्वामी : उपासना तत्त्व (१७ अनु०) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '८६

,, : आत्मविद्या (१७ अनु०) ,, ,, '८८

,, : स्मार्त-धर्म (१७ अनु०), राय नारायणदास, इलाहाबाद, '०६

मधुसूदनदास : रामाश्वमेध (१ प्रा०), मन्नालाल, मान मन्दिर, बनारस, '८३

मनु : —स्मृति (१७ अनु०) श्री वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६२

,, : —स्मृति भाषा दोहावली (१७ अनु०), लखनऊ प्रिंटिङ्ग प्रेस, लखनऊ, '६४

,, : मानव गृह्यसूत्र (१७ अनु०), (अनु० भीमसेन शर्मा), वेदप्रकाश प्रेस, इटावा, '०५

मनोरञ्जन, प्रोफ़सर : उत्तराखण्ड के पथ पर (६), पुस्तक-भंडार, लहरियासराय, '३६

मनोरञ्जन बैनर्जी, एम० ए० : बृहत् मैटिरिया मेडिका (२३), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३५

मन्मनाथ गुप्त : चन्द्रशेखर आज़ाद (७), लेखक, बनारस, '३८
,, : अमर शहीद यतीन्द्रनाथ दास (७), लेखक, बनारस, '३८
मलूकदास : —बानी (१७ प्रा०), वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '१२
महादेव गोविन्द रानाडे : मराठों का उत्कर्ष (८ अनु०), लक्ष्मीधर वाज-पेयी, इलाहाबाद, '२२
महाजोत सहाय, पी०-एच० डी० : जीववृत्तिविज्ञान (१५) हिन्दुस्तानी एकेडमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '३६
महादेव पाण्डेय : तुलसी-चरितावली (१८), भोलानाथ पाण्डेय, तुलसी-पुस्तकालय, राजापुर, बाँदा, '४२
महादेवप्रसाद : चन्द्रप्रभा-मनस्नी (४), लेखक, बालमगञ्ज, पटना, '८४
महादेवप्रसाद : खटकीरा युद्ध (१) बर्मेन्द्र प्रेस, नागौद, '०६
महादेवप्रसाद कानोदिया : नानी की कहानी (३ बा०), हिन्दी पुस्तक-एजेन्सी, कलकत्ता, '३३
महादेवप्रसाद त्रिपाठी : राघव रहस्य (१), रघुनाथदास, बनारस, '६४
महादेवप्रसाद त्रिपाठी : भक्ति-विलास (१६), हनुमान प्रसाद, बनारस सेमिनरी, बनारस, '६४
महादेवप्रसाद मिश्र : झाडूलाल की करतूत (२), रामलाल नेमानी, कलकत्ता, '०८
महादेव भट्ट : लाजपत महिमा (७), लेखक, अहियापुर, इलाहाबाद, '०७
,, : अरविन्द महिमा (७), ,, ,, '०८
महादेवलाल : रहस्य पदावली (१) लेखक, पलामू, '०६
महादेव शास्त्री दिवेकर : आर्य संस्कृति का उत्कर्षापकर्ष (८), अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता, '३१
महादेव हरिभाई देसाई : विनोबा और उनके विचार (७ अनु०), सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, '४०
,, : एक धर्मयुद्ध (६ अनु०), मुद्रक—नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद, '४१

महावीरप्रसाद द्विवेदी : हिन्दी भाषा की उत्पत्ति (१०) ,, '०७
,, : कविता-कलाप (१६) ,, ,, '०६
,, : नाट्यशास्त्र (६) ,, ,, '१२
,, : कालिदास की निरङ्कुशता (२०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '१२
,, : वेणीसंहार नाटक का आख्यायिका के रूप में भावार्थ (२०), कामर्शल प्रेस, जूही, कानपुर, '१३
,, : शिक्षा (१६), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '१६
,, : प्राचीन पण्डित और कवि (२०), कामर्शल प्रेस, जूही, कानपुर, '१८
,, : वनिता-विलास (८ त्रा०) ,, ,, '१६
,, : रसज्ञ-रञ्जन (५), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '२०
,, : औद्योगिकी (१२), राष्ट्रीय हिंदी मंदिर, जबलपुर, '२२
,, : कालिदास और उनकी कविता (२०) ,, ,, '२०
,, : सुमन (१), साहित्य प्रेस, चिरगाँव, '२३
,, : अतीत स्मृति (८), रामकिशोर शुक्ल, मुरादाबाद, '२४
,, : सुकवि-संकीर्तन (२०), गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२४
,, : आख्यायिका सप्तक (३), इंडियन प्रेस, इलाहबाद, '२७
,, : अद्भुत आलाप (५), गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२४
,, : साहित्य-सन्दर्भ (५), गंगा फाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '२८
,, : लेखाञ्जलि (५), हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '२८
,, : दृश्य-दर्शन (६), सुलभ ग्रंथ प्रचारक मंडल, ३६ शंकर घोष लेन, कलकत्ता, '२८
,, : कोविद-कीर्तन (२०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '२८
,, : आध्यात्मिकी (१७), ,, ,, '२८

महावीरप्रसाद द्विवेदी : विदेशीय विद्वान (२०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '२८
" : प्राचीन चिह्न (८) " " '२९
" : समालोचना-समुच्चय (१९), " " '३०
" : विज्ञानवार्त्ता (१४), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '३०
" : पुरातत्त्व-प्रसंग (८), साहित्य प्रेस, चिरगाँव, '३०
" : चरित-चर्चा (८), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३०
" : साहित्य-सीकर (५), लक्ष्मीधर वाजपेयी, इलाहाबाद, '३०
" : विचार-विमर्श (५), भारती भंडार, बनारस, '३१
" : आलोचनाञ्जलि (१९), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, ३२१
" : पुरावृत्त (८) " " '३३
महावीरप्रसाद मालवीय : विनय-कोष (१८), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद '३४
" सं० : तुलसी-ग्रंथावली (१८) " " '३६
महावीरप्रसाद, मुंशी, सं० : श्रीकृष्ण गीतावली (१९), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८७ तृ०
महावीरप्रसाद राव तथा नारायणसिंह : मनोदूत (६), भारतजीवन प्रेस, बनारस, '९५
महावीरसिंह वर्मा : मानस-लहरी (१), नवलकिशोर पांडेय, वेतिया, '०१
महाराजसिंह : इतिहास बुंदेलखंड (८), सरस्वती विलास प्रेस, नरसिंहपुर '९६
महेन्दुलाल गर्ग, डा० : दन्त-रक्षा (१३), क्षेत्रपाल शर्मा, मथुरा, '९६
" : परिचर्या-प्रणाली (१३), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१९००
" : चीन-दर्पण (९), लेखक, मथुरा, '०३
" : जापान-दर्पण (९), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '०७
" : जापान की कहानी (८), एस० एल० आर्य ऐंड कंपनी, अलीगढ़, '०७

महेन्दुलाल गर्ग, डा० : जापानीय स्त्री-शिक्षा (६), सुख संचारक कंपनी, मथुरा, '०७

" : अमरीकन स्त्री शिक्षा (६) " " '२८

" : डाक्टरी चिकित्सा (१३), क्षेत्रपाल शर्मा, मथुरा, '३१

महेन्द्रनाथ : बुद्धदेव चरित्र (४), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '०२

महेन्द्रनाथ भट्टाचार्य : पदार्थदर्शन (१४), कैलाशचंद्र बैनरजी, कलकत्ता, '७३

महेन्द्रनाथ भट्टाचार्य : पारिवारिक भैषज्य-तत्त्व (१३), लेखक, '८४ क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता, '३२

" : पारिवारिक-चिकित्सा (१३) " " '३५ स०

महेन्द्र शास्त्री : हिलोर (१), रामचन्द्रसिंह, सारन, '२६

महेशचन्द्र प्रसाद, एम० ए० : संस्कृत साहित्य का इतिहास (२०), भाग १-२, लेखक, पटना, '२२

" : हिन्दू सभ्यता (६), भाग १-२ " " '२६

महेशचरण सिंह : रसायन शास्त्र (१४), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद '०६

" : वनस्पति शास्त्र (१४), गुरुकुल, कांगड़ी, '११

" : विद्युत् शास्त्र (१४) " " '१२

महेशदत्त शुक्ल : उमापति दिग्विजय (२०), नवलकिशोर, लखनऊ, '८१

महेशप्रसाद, मौलवी : अरबी काव्य-दर्शन (२०), नाथूराम प्रेमी, बंबई, '२१

" : मेरी ईरान-यात्रा (६), लेखक, बनारस, '३०

महेश्वरबखश सिंह तथा गणेश्वरबखश सिंह : प्रिया-प्रियतम विलास (१), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६१

महेश्वरबखश सिंह : महेश्वरचंद्र-चंद्रिका (१), लेखक, ताल्लुकदार रामपुर मथुरा, सीतापुर, '६६

" : महेश्वर-विनोद (१), रामकृष्ण वर्मा, बनारस, '६७

मातादीन शुक्ल : नानार्थ नवसंग्रहावली (१०), अजीतसिंह, मुद्रक, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '७४

माताप्रसाद गुप्त, डी० लिट्० : तुलसी-संदर्भ (१८), रामचन्द्र टंडन, इलाहाबाद, '३६

,, : तुलसीदास (१८), हिंदी परिषद, प्रयाग विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, '४२

माधव : सर्वदर्शन-संग्रह (१७ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०६

,, : ,, (१७ अनु०), (अनु०—उदयनारायणसिंह) लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '२५

,, : माधव निदान (१३ अनु०), हरिप्रसाद भगीरथ, बम्बई, '८४

माधव केसीट : अद्भुत रहस्य वा विचित्र वाराङ्गना, भाग १-८ (२), लेखक, जयपुर स्टेट, '०७

माधवदास : नखशिख (१), अर्जुनदास, मुजफ़्फ़रपुर, '०५

माधवप्रसाद : हास्यार्णव का एकमाण-वैसाखीनन्दन (४), खिचड़ी समाचार प्रेस, मिर्ज़ापुर, '६१

,, : सुन्दरी-सौदामिनी (१) ,, ,, '६१

माधवप्रसाद त्रिपाठी : माधव-विलास (१), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८८

माधवप्रसाद मिश्र : स्वामी विशुद्धानन्द का जीवन-चरित्र (७), लहरी प्रेस, बनारस, '०३

माधव मिश्र :— निबंधमाला, भाग १, (५), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३६

माधवराव सप्रे, बी० ए०, सं० : निबंध-संग्रह (१६), देशसेवक प्रेस, नागपुर, '०५ द्वि०

,, : महाभारत-मीमांसा (२०), ग० वि० चिपलूणकर ऐण्ड कम्पनी, पूना' २०१

माधव शुक्ल : भारत-गीताञ्जलि (१), रामचन्द्र शुक्ल वैद्य, कूचा श्यामदास, इलाहाबाद, '१८

मिल, जॉन स्टुअर्ट : प्रतिनिधि शासन (१५ अनु०), शिवरामदास गुप्त, बनारस, '१८

मिल्टन : कुसुम (४ अनु०), हरिदास ऐंड कं०, कलकत्ता, '१५

" : कामुक (४ अनु०), सत्यभक्त, इलाहाबाद '३६

मिश्रबंधु : लवकुश-चरित्र (१), राजकिशोर, गोलागंज, लखनऊ, '६६

" : व्यय (१५), नीलकंठ द्वारकादास, लखनऊ '०१ द्वि०

" : रूस का इतिहास (८), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद '०६

" सं० : देव ग्रंथावली (प्रेमचन्द्रिका, राजविलास) (१८), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१०

" : हिन्दी नवरत्न (१६), हिन्दी ग्रन्थ प्रसारक मण्डली, खँडवा, '११

" : भूषण-ग्रंथावली (१८), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१२

" : जापान का इतिहास (८), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '१२

" : मिश्रबंधु विनोद, भाग १-३ (१६) हिंदी ग्रंथ प्रसारक मंडली, खँडवा, '१४

" : " भाग ४, (१६) गंगा फाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३५

" : नेत्रोन्मीलन (४), साहित्य संवर्धिनी समिति, कलकत्ता, '१५

" : पुष्पाञ्जलि (५), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '१६

" : भारत-विनय (१), मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति, इंदौर, '१६

" : पूर्व भारत (४), गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '१६

" : वीर मणि (२), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१७

" : आत्म-शिक्षण (१७), " " '१८

" : भारतवर्ष का इतिहास, भाग १-२ (८), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '१६

" : सुमनाञ्जलि (५), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '२७

" : पद्य-पुष्पांजलि (१), गंगा पुस्तकमाला, कार्यालय लखनऊ, '२६
" : उत्तर भारत (४), " " '३२
" सं० : देव-सुधा (१८), गंगा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३५
" : संक्षिप्त हिन्दी नवरत्न (१६), " " '३६
" : हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास (१६), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '३८
" : शिवाजी (४), गंगा फाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३८
" : हिन्दी साहित्य का इतिहास (१६), " " '३६
" सं० : बिहारी-सुधा (१८) " " '४१

मिहिरचंद, सं० : अष्टादश स्मृति (२०), अलीगढ़ भाषा संवर्द्धिनी सभा, '६१

मीतराम त्रिपाठी : मनोहर प्रकाश (१ प्रा०) (टीका०—हरदान कवि), राजस्थान प्रेस, अजमेर, '६६

मीराबाई : — भजन (१ प्रा०), सिद्धेश्वर प्रेस, बनारस, '०५
" : — " (१ प्रा०), भारतीय व्यापारिक कंपनी, कानपुर, '१०
" : — शब्दावली और जीवन चरित्र (१ प्रा०) वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '१०
" : मीरा-मंदाकिनी (१ प्रा०), [सं० नरोत्तमदास स्वामी] यूनिवर्सिटी बुकडिपो, आगरा, '३०
" : — पदावली (१ प्रा०), [सं० परशुराम चतुर्वेदी], हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, '४२

(मीराबाई !) : नरसी को माहेरो (१८ प्रा०), श्याम काशी प्रेस, मथुरा, '११
" : " (१८ प्रा०) आत्मानंद शर्मा, मथुरा, '३२

मुकुटधर पाण्डेय तथा मुरलीधर पाण्डेय : पूजा-फूल (१), ब्रह्म प्रेस, इटावा, '१६

मुकुटविहारी वर्मा : जीवन विकास (१४), सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर, '३०

,, : स्त्री-समस्या (६), ,, ,, '३१

मुकुन्दलाल, डॉ०, सं० : मैटिरिया मेडिका (१३), संपादक, आगरा, '८६

मुकुन्दलाल नागर : गुलदस्ता-ए-मुकुन्द (१), ग्रंथकार, उदयपुर, '६४

मुकुन्दलाल, बी० ए० : सिनेमा-विज्ञान (१२), दुर्गाप्रसाद खत्री, बनारस, '३५

मुकुन्दस्वरूप वर्मा, डॉ० : शिशु-पालन (१३), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१५

,, : मानव शरीर रहस्य (१३), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '२६

,, : स्वास्थ्य-विज्ञान (१३), हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, '३१

,, : विष-विज्ञान (१३), असुरारिचंद्र, बनारस, '३२

,, : मानव शरीररचना-विज्ञान (१३), हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, '३६

,, : संक्षिप्त शल्य-विज्ञान (१३), नंदकिशोर ऐंड ब्रदर्स, बनारस, '४०

मुकुन्दीलाल वर्मा : कर्मवीर गान्धी (७), अभ्युदय प्रेस, इलाहाबाद, '१३

मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव तथा राजवल्लभ : हिन्दी-शब्द-संग्रह (१०), ज्ञान-मंडल पुस्तक भंडार, बनारस, '३०

मुकुन्दी लाल श्रीवास्तव : साम्राज्यवाद (६) ,, ,, '३३

मुक्तानन्द स्वामी : विवेक चिन्तामणि (१० अनु०), बाजीभाई अमीचंद, अहमदाबाद, '६८

मुख्त्यारसिंह, वकील : खाद (१२), महावीरप्रसाद पोद्दार, कलकत्ता, '१६

मुरारीलाल, पंडित : विचित्र वीर (२), रुद्रदत्त चंडाना, जगाधरी, '१६

मुहणौत नैणसी : ख्यात भाग १-२ (८), [सं० रामनारायण दूगड़] नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२५

मुहम्मद, हज़रत, सं० : कुरान शरीफ (१७ अनु०), (अनु०–हरिश्चंद्र), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६७

,, सं० : हिन्दी कुरान (१७ अनु०), रघुवंशप्रसाद मिश्र, इटावा, '२४

,, : अलकुरान (१७ अनु०), (अनु०–पादरी अहमदशाह) अनुवादक, हमीरपुर, '१५

,, : कुरआन (१७ अनु०) (अनु० -प्रेमशरण आर्य प्रचारक), प्रेम पुस्तकालय, आगरा, '२५

मुहम्मद जायसी, मलिक : पदमावत (२ प्रा०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८१

,, : ,, (२ प्रा०), [सं० लक्ष्मीशंकर मिश्र, एम० ए०] चंद्रप्रभा प्रेस, बनारस, '८४

,, : ,, (२ प्रा०), बंगवासी फर्म, कलकत्ता, '६६

,, : पदुमावति (२ प्रा०), [सं० ग्रियर्सन तथा सुधाकर द्विवेदी], रायल एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता, '११

,, : पदुमावती (२ प्रा०) [सं० सूर्यकांत शास्त्री] पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर, '३४

,, : अखरावट (१७ प्रा०), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०४

मुहम्मद नज़ीर अली : भारत वृत्तावली (८), नूरुल इल्म प्रेस, आगरा, '६८

मुहम्मद साक़ी मुस्तइद खाँ : औरङ्गजेबनामा (७ अनु०), भाग १-३,

['मआसिर आलमगीरी' का अनु०]–(अनु० देवीप्रसाद मुंसिफ़), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०६

मुहम्मद हुसैन : पाठशालाओं का प्रबन्ध (१६), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८३

,, : भूगोल एशिया (६), हनुमान प्रसाद रईस, चुनार, ज़िला मिर्ज़ापुर, '८३

मुहम्मद हुसैन, आज़ाद : फिसान-ए-अजाएब (३ अनु०), (अनु०—श्रीधर भट्ट), श्रीनाथ लाहा '२८५, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता, '७२

,, ,, : ,, (३ अनु०) (अनु० रामरत्न वाजपेयी), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६२ च०

,, ,, : ,, (३ अनु०) महादेव शर्मा, पटना, '०७

,, ,, : ,, अकबरी दरबार (८ अनु०) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२८

मूलचन्द : क्या शिल्प शूद्र कर्म है ? (१७) लेखक, ज़िला मेरठ, '११

मूलचन्द जैन : जैन कवियों का इतिहास (१६), लेखक, दमोह, '३७

मूलचन्द-शर्मा : भाषा कोश (१०), चिन्तामणि प्रेस, फ़र्रुखाबाद, '६८ च०

मूलराम साधु : वेदान्त पदार्थ मंजूषा (१०), पीताम्बर जी, बम्बई, '८१ रिप्रिन्ट

मृत्युञ्जय : प्रलाप (१) लेखक, बनारस, '३५

मेगास्थनीज़ : —का भारत विवरण (६ अनु०), खड्गविलास प्रेस, प्रेस, बाँकीपुर '०६

मेघजी मावजी, सं० : भजन-सागर (१६), सम्पादक, बम्बई, '६२ रिप्रिन्ट

मेज़िनी : देशभक्त मेज़िनी के लेख (६ अनु०), हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '२२

मेटरलिंक : प्रायश्चित्त (४ अनु०), नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '१६

मेरामन जी : प्रवीन-सागर (१ प्रा०), चतुर्भुज प्राणजीवन, राजकोट, '८३

मेरुतुङ्ग : प्रबन्ध-चिन्तामणि (२० अनु०), ४८, गढ़ियाघाट रोड, बाली-गञ्ज, कलकत्ता, '४०

मैकफेडेन, वर्नर : उपवास-चिकित्सा (१३ अनु०), नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '१६

मैक्स्विनी, टैरन्स : स्वाधीनता के सिद्धान्त (१५ अनु०), गङ्गाप्रसाद भोतिका, कलकत्ता, '२५?

मैथलीशरण गुप्त : रङ्ग में भङ्ग (१), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '१०
" : जयद्रथ-वध (१) लेखक, चिरगाँव, '१०
" : भारत-भारती (१) साहित्य प्रेस, चिरगाँव, '१२
" : पद्य-प्रबन्ध (१) " " '१२
" : तिलोत्तमा (४) " " '१६
" : चन्द्रहास (४) " " '१६
" : किसान (१) " " '१७
" : वैतालिक (१) रामकिशोर गुप्त, झाँसी, '१६
" : शकुन्तला (१) " " '२३ च०
" : पत्रावली (१) " " '२३ द्वि०
" : पञ्चवटी (१) साहित्य प्रेस, चिरगाँव, '२५
" : अनघ (१) " " '२५
" : स्वदेश-संगीत (१) " " '२५
" : हिन्दू (१) " " '२७
" : त्रिपथगा (१) (वकसंहार, वनवैभव तथा सैरिंध्री) साहित्य प्रेस, चिरगाँव, '२८
" : शक्ति (१), साहित्य प्रेस, चिरगाँव '२८
" : गुरुकुल (१) " " '२६
" : विकट भट (१) " " '२६
" : झंकार (१) " " '२६
" : साकेत (१) " " '३२
" : यशोधरा (१) " " '३३

मोलिएर : नाक में दम (४ अनु०), (अनु--जी० पी० श्रीवास्तव, हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '१८

" : साहब बहादुर (४ अनु०), (अनु०--जी० पी० श्रीवास्तव) हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '१५

" : लालबुझक्कड़ (४ अनु०), (अनु०—जी० पी० श्रीवास्तव, चाँद कार्यालय, इलाहाबाद, '३०

मोहनगिरि गोसाई, सं० : सर्पमंत्र भंडार (१२), कन्हैयालाल कृष्णदास, दरभंगा, '०७

मोहनदास कर्मचन्द गांधी : मेरे जेल के अनुभव (६ अनु०), अनू० शिवनारायण मिश्र, कानपुर, '१७

" : नीति धर्म और धर्मनीति (१७ अनु०), उदयलाल काशलीवाल, बंबई, '२०

" : हिन्द-स्वराज्य (६ अनु०), गंगाप्रसाद गुप्त, लहरियासराय, '२१

" : तीन रत्न (३ अनु०), कृष्णलाल वर्मा, बम्बई, '२१

" : आरोग्य-दिग्दर्शन (१३), नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '२१

" : व्यावहारिक ज्ञान (१५ अनु०), हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '२१

" : आत्मकथा (७ अनु०), भाग १-२, सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर, '२८

" : स्वाधीन भारत (६ अनु०), साहित्य भवन, इलाहाबाद, '३०

" : अनासक्ति योग (१७ अनु०), सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर, '३०

" : अनीति की राह पर (१७ अनु०) " " '३१

" : हमारा कलङ्क (१७ अनु०), " '३२

मोहनदास कर्मचन्द गान्धी : राष्ट्रवाणी (६ अनु०) सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर, '३२
,, : धर्मपथ (१७ अनु०) ,, ,, '३३
,, : पुण्य स्मृतियाँ (१७ अनु०), केदारनाथ गुप्त, इलाहाबाद, '३७
,, और जवाहर लाल नेहरू : योरोपीय युद्ध और भारत (६) सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, '३८
,, : गांधी वाणी (७), [सं० रामनाथलाल सुमन] साधना-सदन, लूकरगंज इलाहाबाद '४२
,, : गान्धी ग्रन्थावली, भाग १—विद्यार्थियों से (१६ अनु०) रामशंकरलाल, बलिया, '४२
,, : ग्राम सेवा (६ अनु०), सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, '३८
,, : स्वदेशी और ग्रामोद्योग (६ अनु०) ,, ,, '३६
,, : रचनात्मक कार्यक्रम (६ अनु०) ,, ,, '३६
मोहनलाल कटिहा : अन्वयदीपिका (१०), लेखक, दियरा, जिला सुल्तानपुर, '१७
मोहनलाल गुप्त : प्रेम रसामृत (१), हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, '६६
मोहनलाल नेहरू : गल्पाञ्जलि (२), इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद, '१२
,, : प्रेत नगर (३ बा०), ,, ,, '३२
मोहनलाल, पंडित : प्रतिबिंब चित्र-चिन्तामणि (१२), सरस्वती प्रकाश प्रेस, बनारस, '८६
मोहनलाल, महतो : अछूत (१), बजरंगदत्त शर्मा, गया, '२५
,, : निर्माल्य (१), नर्मदा प्रसाद माणिक, लहरिया सराय, '२६
,, : एक तारा (१), वैदेही शरण, लहरिया सराय, '२७
,, : रेखा (३), चन्द्रशेखर, इलाहाबाद, '२६

मोहनलाल महतो : धुँधले चित्र (१८) चन्द्रशेखर, इलाहाबाद, '३०
„ : कल्पना (१), विश्व साहित्य ग्रंथमाला, लाहौर, '३५
„ सं० : कला का विवेचन (६), श्रीपतिनारायण शर्मा, ज़िला सारन, '३६
„ : आरती के दीप (८), साहित्य निकेतन, दारागंज इलाहाबाद, '४०
„ : विचारधारा (५), साहित्य निकेतन, दारागंज, इलाहाबाद, '४१
मोहनलाल विष्णुलाल पांड्या, सं० : अंग्रेज स्तोत्र (१), हरिश्चंद्र, बनारस, '७३
„ : चंदबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो की प्रथम संरक्षा (१८), ग्रंथकार, उदयपुर, '८७
„ : प्रेम-प्रमोदिनी (१) „ „ '६५
„ : बसंन्त-प्रमोदिनी (१), „ „ '६५
मोहनलाल शर्मा : माधव यशेन्दु प्रकाश (१), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '०४
मोहनसिंह, एम० ए० : स्वरावली (४), रामलाल सूर, लाहौर, '२८
मौपासाँ, गाई डी० : स्त्री का हृदय (२ अनु०), मेहता एन्ड ब्रदर्स, बनारस '३२
„ : मानव हृदय की कथाएँ (३ अनु०), नाथूराम प्रेमी, बंबई, '३२
„ : यौवन की भूल (२ अनु०), विनोदशंकर व्यास, बनारस, '३६
„ : — की कहानियाँ (३ अनु०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '४१

य

यज्ञदत्त झाकर : लाठी-शिक्षक (१३), लेखक, अजमेर, '२८
यतीन्द्रभूषण मुकरजी : वैज्ञानिकी (१४), लेखक, इलाहाबाद, '३८

यादवशङ्कर जामदार : मानस हंस (१८ अनु०), लेखक, महाल, नागपुर, '२६

यामिमी भान : किस्सा मृगावती (३) ईंदू जमादार, बड़ा बाज़ार कलकत्ता, '७६

यारी साहब : रत्नावली (१७ प्रा०), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '२१

यास्क : हिन्दी निरुक्त (१० अनु०), रामरूप शर्मा, भिवानी, पञ्जाब, '१६

,, : निरुक्त (१० अनु०), (अनु०—चन्द्रमणि विद्यालङ्कार) अनुवादक, गुरुकुल, काँगड़ी, '२४

युगलकिशोर चौधरी : मिट्टी सब रोगों की रामबाण औषधि है (१३), मुद्रक—आदर्श प्रिन्टिंग प्रेस, अजमेर, '३६ द्वि०

युगलकिशोर मुख्तार : मेरी भावना (१), शान्तिचन्द्र, बिजनौर, '२६

युगल प्रिया : युगल-प्रिया (१), छोटेलाल लक्ष्मीचन्द, अयोध्या, '०२

युगलवल्लभ गोस्वामी : हित युगल अष्टयाम वा निकुञ्जविलास (१), रामजीदास मङ्गामल, वृन्दावन, '३५

युगलानन्द, बिहारी : वृहत् कबीर कसौटी (१८), ब्रजवल्लभ हरिप्रसाद, बम्बई, '१६ द्वि०

युगलानन्यशरण स्वामी : उत्सव-विलासिका (१ प्रा०), ब्रजवल्लभ, आगरा, '६०

,, : मधुर मञ्जुमाला (१ प्रा०), लखनऊ प्रिन्टिङ्ग प्रेस, लखनऊ, '०४

,, : अवध-विहार (१ प्रा०), कौशलकिशोर, कानपुर, '११

यूसुफ़ अली : मध्यकालीन भारत की सामाजिक और आर्थिक अवस्था (६ अनु०), हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, '२६

योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय : कुली-कहानी (३ अनु०), (अनु०—गङ्गाप्रसाद गुप्त), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '०४

,, ,, : मानवती (२ अनु०), संद्धर्म प्रचारक प्रेस, दिल्ली, '१४

र

रघुनाथ सिंह, एम० ए०, एल्-एल्० बी० : भिखारिणी (३), सीताराम प्रेस, बनारस, '३६
,, : इन्द्रजाल (२), नवीन प्रकाशन मन्दिर, बनारस, '३६ ?
,, : फासिज़्म (१५), काशी पुस्तक, भण्डार, '३६
,, : एक कोना (३), हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, बनारस, '३८
रघुराजकिशोर, बी० ए० : महाकवि नज़ीर और उनका काव्य (२०), हरिदास वैद्य, कलकत्ता, '२२
,, : महाकवि अकबर (२०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '२५
रघुराजकुँवरि, रानी : रामप्रिया विलास (१), (संगीत) जैन प्रेस, लखनऊ, '६३
रघुराजसिंह, महाराजा : राम-स्वयंबर (१), जगन्नाथप्रसाद, बनारस '७६
,, : ,, (१), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६८ द्वि०
,, : भक्तमाला-रामरसकावली (१६ प्रा०), ,, ,, '८६
,, : रुक्मिणी-परिणय (१), लाल बलदेवसिंह, भारतमाता प्रेस, रीवाँ '८६
,, : भक्ति-विलास (१) ,, ,, '६१
,, : जगन्नाथ-शतकम् (१), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६४
,, : पदावली (१), ,, ,, '६५
,, : रघुराज विलास (१) ,, ,, '६५
,, : रघुराज पचासा (१), रामरत्न वाजपेयी, लखनऊ, '६६
रघुवर चरण : दोलोत्सवदीपिका (१), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '८४
रघुवंशभूषणशरण : रूपकला प्रकाश (७), लेखक, छपरा, '३२
रघुवंश सहाय : ब्रजबन यात्रा (१), लेखक, छपरा, '७६
रघुवरदयाल : रस-प्रकाश (१), नज़ीर क़ानून हिन्द प्रेस, इलाहाबाद, '६७
रघुवरदयाल पाठक : तिब्बरत्न (१३) हरिप्रसाद बुकसेलर, मथुरा, '८६

रतनसिंह, महाराजकुमार : नटनागर-विनोद (१), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६७ द्वि०

रत्नकुमारी देवी : अङ्कुर (१), बलभद्रप्रसाद मिश्र, जबलपुर, '३४

,, : सेठ गोविन्ददास (१८), महाकोशल साहित्य मंदिर, जबलपुर, '३८

,, : सेठ गोविन्ददास के नाटक (१८), सेठ गोविंददास, जबलपुर, '३६

रत्न कुँवरि : प्रेमरत्न (१ प्रा०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '२५ च०

रत्नचन्द प्लीडर : चातुर्य-सार्णव (१७), भाग १, प्रयाग प्रेस, इलाहाबाद, '८७

,, : हिंदी उर्दू का नाटक (४), हुकुमचंद, इलाहाबाद, '६०

,, : न्याय सभा, भाग १, (४), लेखक, इलाहाबाद, '६२

,, : नूतन चरित्र, भाग १ (२), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '६३

रत्नांबरदत्त चंडोला : मधु-कोष (१), भगवतीप्रसाद चंडोला, देहरादून, '३४

रमण महर्षि : मैं कौन हूँ ? (१७ अनु०) निरण्यानंद, तिरुवन्नमलय, '३१

रमणलाल बसन्तलाल देसाई : पूर्णिमा (२ अनु०) प्रमोदशंकर व्यास, बनारस, '३६

,, : अमर लालसा ('पत्र लालसा') (२ अनु०), हिंदी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '३७

,, : कोकिला (२ अनु०) सरस्वती प्रेस, बनारस, '४०

,, : स्नेहयज्ञ (२ अनु०) ,, ,, '४०

रमणविहारी : युगल-बिहार (१), रघुनाथप्रसाद, बनारस, '७७

,, : रामकीर्ति-तरङ्गिणी (१), जगदीश्वर प्रेस, बंबई, '८३ रिप्रिंट

,, : रामचंद्र-सत्योपाख्यान (१), रघुनाथप्रसाद सीताराम शुक्ल, बनारस, '८६ रिप्रिंट

रमेशचन्द्र दत्तः समाज (२ अनु०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '१३
" : वृटिश भारत का आर्थिक इतिहास (८ अनु०), ज्ञानमंडल प्रेस, बनारस, '२२
" : बङ्ग-विजेता (२ अनु०) (अनु०—गदाधरसिंह), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '८६ रिप्रिंट
रमेशप्रसाद शर्मा : लङ्का का इतिहास (८), सरस्वती ग्रंथमाला कार्यालय आगरा, '२२ द्वि०
रमेश वर्मा, सं० : गाँव की बातें (६ बा०) भारत पब्लिशिंग हाउस, आगरा, '४१
" " : गाँव की बोली (१० बा०) " " '४१
रविदत्त वैद्य, सं० : निघण्टु रत्नाकर (१३), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६२
रवि वर्मा :—के प्रसिद्ध चित्र (११), शंकर नरहर ज्योतिषी, चित्रशाला प्रेस, पूना, '११
रवीन्द्रनाथ ठाकुर : चित्राङ्गदा (४ अनु०) (अनु०—गोपालराम गहमरी), एम० पी० ऐंड कं० बंबई, '६५
" : (४ अनु०), जीतमल लूनिया, अजमेर, '१६
" : राजर्षि (४ अनु०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '१०
" : मुकुट (२ अनु०) " " '१०
" : आश्चर्य घटना ('नौकाडूबी') (२ अनु०) " " '१३
" : आँख की किरकिरी (२ अनु०) " " '१६
" : स्वदेश (५ अनु०), नाथूराम प्रेमी, बंबई, '१४
" : शिक्षा (१६ अनु०) " " '१८
" : शिक्षा कैसी हो ? (१६ अनु०), प्रवासी प्रेस, कलकत्ता, '३६
" : वैधव्य कठोर दण्ड है या शान्ति (६ अनु०), उदयलाल काशलीवाल, बंबई, '१६

रवीन्द्रनाथ ठाकुर : रवीन्द्र-कथाकुञ्ज (३ अनु०), नाथूराम प्रेमी, बंबई, '२६
,, : मञ्जरी (३ अनु०), गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२६
,, : चार अध्याय (२ अनु०), प्रवासी प्रेस, कलकत्ता, '२५
,, : मास्टर साहब (३ अनु०), इंडियन प्रेस, प्रयाग, '२६
,, : फल-संचय (१ अनु०), ईश्वरलाल शर्मा, सरस्वती भवन झालरापाटन, '२७
,, : चिरकुमार सभा (४ अनु०), नाथूराम प्रेमी, बंबई, '२८
,, : साहित्य (६ अनु०), हिंदी ग्रंथरत्नाकर कार्यालय, बम्बई, '२९
,, : कुमुदिनी (२ अनु०), प्रवासी प्रेस, कलकत्ता, '३०
,, : रूस की चिट्ठी (५ अनु०) ,, ,, '३१
,, : कलरव १ अनु०), भारती भंडार, बनारस, '३२
,, : षोडशी (३ अनु०), प्रवासी प्रेस, कलकत्ता, '३२
,, : माली (१ अनु०) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '३५
,, : मेरा बचपन (१८ अनु०), पुलिन विहारी सेन, द्वारकानाथ ठाकुर लेन, कलकत्ता, '३७
,, : विश्व-परिचय (१४ अनु०), विश्वभारती ग्रंथान विभाग, कलकत्ता, '३८
,, : नटी की पूजा (४ अनु०), विश्वभारती ग्रंथ विभाग, २१०, कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता, '३९
,, : मेरी आत्म-कथा (१८ अनु०), मेहता फाइन आर्ट प्रेस, बनारस, '३९

रवीन्द्रनाथ मैत्र : त्रिलोचन कविराज (३ अनु०), विशाल भारत बुकडिपो, कलकत्ता, '३६

रसखान : श्री रसखान-शतक (१ प्रा०), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '९२
,, : सुजान-रसखान (१ प्रा०), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '९२

राखालदास बैनरजी : शशाङ्क (२ अनु०), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२१
" : प्राचीन मुद्रा (८ अनु०) " " '२४
" : मयूख (२ अनु०), एस० एस० मेहता ऍड सं, बनारस, '२६
राजकृष्ण मुखोपाध्याय : बंगाल का इतिहास (८ अनु०), (अनु०—गोकरणसिंह) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६७ द्वि०
राजगोपालाचार्य : दुखी दुनिया (३ अनु०), सस्ता साहित्य-मण्डल, अजमेर, '३० !
राजनारायण मिश्र : बाग़बानी (१२), हिन्दी प्रेस, प्रयाग, '२१
" : जिल्दसाज़ी (१२), व्यापार कार्यालय, लखनऊ, '२२
राजबहादुर लमगोड़ा : विश्वसाहित्य में रामचरितमानस (हास्यरस) (१८) लेखक, फतेहपुर, '४०
राजबहादुर सिंह, ठाकुर : रूस का पञ्चवर्षीय आयोजन (६), मुद्रक—भारत इलेक्ट्रिक प्रेस, दिल्ली, '३२
" : संसार के महान साहित्यिक (२०), नवयुग साहित्य-मन्दिर, पोस्ट बाक्स ७८, दिल्ली, '४० !
" : वर्तमान युद्ध में पौलैंड का बलिदान (८), मुद्रक—सेठ प्रिन्टिंग प्रेस, दिल्ली, '४०
" : विश्व-विहार (६) मुद्रक—रूपवाणी प्रिन्टिङ्ग हाउस, दिल्ली, '३३
राजवल्लभ : राजवल्लभ निघण्टु (१३ अनु०), लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६६
राजवंश सहाय : होली-विलास (४), नारायण प्रेस, मुजफ़्फ़रपुर, '६३
राजशेखर : कर्पूर मञ्जरी (४ अनु०), (अनु०—हरिश्चन्द्र), मलिकचन्द्र ऐण्ड कंपनी, बनारस, '८३ द्वि०
राजाराम : मेरी कहानी (७) मुद्रक—सेठ प्रिन्टिंग प्रेस, दिल्ली, '३६
राजाराम : शङ्कर-चरित-सुधा (१), नवलकिशोर, लखनऊ, '८२

„ : हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (१६), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '६४

„ : नागरीदास जी का जीवन-चरित्र (१८), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६४

„ : कविवर बिहारीलाल (१८), चन्द्रप्रभा प्रेस, बनारस, '६६

„ : महाराणा प्रतापसिंह (४), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '६८

„ : महारानी पद्मिनी (४), देवकीनन्दन खत्री, बनारस, '०२ द्वि०

„ : भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन-चरित्र (१८), लेखक, बनारस, '०४

राधाकृष्णन्, सं० : गान्धी-अभिनन्दन-ग्रन्थ (७ अनु०), सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली, '३६

राधाकृष्ण बिड़ला : मिलों में रुई की कताई (१२) शिल्प-साहित्य कार्यालय, दिल्ली, '३२

राधाकृष्ण मिश्र, सं० : भारतीय दर्शनशास्त्र (२०), [उपक्रमणिका खंड] देवीराम मिश्र, भिवानी, पंजाब, '१६

राधागोविन्ददास : दोहावली मानलीला (१), लेखक, बनारस, '८६

राधाचरण गोस्वामी : यमलोक की यात्रा (४), लेखक, वृन्दावन, '८१

„ : नापित स्तोत्र (१), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '८२

„ : दामिनी दूतिका (१) „ „ '८२

„ : देशोपकारी पुस्तक (६), लेखक, वृन्दावन, '८२

„ : शिशिर सुषमा (१), „ „ '८३

„ : रेलवे स्तोत्र (१) „ „ '८३

„ : नव-भक्तमाल (१६), „ „ '८६

„ : बूढ़े मुँह मुहासे (४), भारतजीवन प्रेस, बनारस, '८७

„ सं० : विदेश यात्रा-विचार (१७), लेखक, वृन्दावन, '८७

„ : तन मन धन गुसाईं जी के अर्पण (४) „ „ '६०

राधाचरण गोस्वामी : भङ्गतरङ्ग (४), लेखक, वृन्दावन, '६२ !
,, : अमरसिंह राठौर (४), मथुरा भूषण प्रेस, मथुरा '६४
,, : श्रीदामा (४), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०४
राधाप्रसाद शास्त्री : प्राच्य दर्शन (२०), लेखक, लाहौर, '१५
राधामोहन गोकुल जी : देशका धन (६), लेखक, २०१, हरिसन रोड, कलकत्ता, '१०
,, : देश-भक्त लाजपत (७) ,, ,, '१२
,, : नीति-दर्शन, भाग १-२, (१६), ,, ,, '१३
,, : नेपोलियन बोनापार्ट (७), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१७
,, : श्रमोपजीवी समवाय (१५), लेखक, २०१, हरीसन रोड, कलकत्ता, '१८
,, : जोज़ेफ़ गैरीवाल्डी (७), प्रणवीर पुस्तकमाला, नागपुर '२२
: कम्यूनिज्म क्या है ? (६), सोशलिस्ट बुकशाप, पटकापुर, कानपुर, '२७
,, : विप्लव (५), नारायणप्रसाद अरोड़ा, कानपुर, '३२
राधामोहन चतुर्वेदी : रस-लहरी, भाग १-२, (१), भारतजीवन प्रेस, बनारस, '८४
राधारमण चौबे : देशोन्नति (६), लेखक, इटावा, '६६ द्वि०
,, : राज्य भरतपुर का संक्षिप्त इतिहास (८) ,, ,, '६६
राधारमण मैत्र : केशर-मञ्जरी (१), लेखक, कालाकाँकर, '०७
राधालाल मुंशी, सं० : भाषा-बोधिनी, भाग १-४, (१६ बा०), गोपीनाथ पाठक, बनारस, '६६-७०
,, : हिन्दी किताब (१६ बा०), संपादक, गया, '७२ च०
,, : शब्दकोष (१०) ,, ,, '७३
राधास्वामी साहिब : सारवचन राधास्वामी—नज़्म (१७), राय सालिगराम बहादुर, इलाहाबाद, '८४
,, : ,, ,, —नसर (१७) ,, ,, '८४

राधिकाप्रसाद : मंत्र-सागर (१३), लेखक, हज़ारीबाग, '२४

राधिकाप्रसाद सिंह अखौरी : मोहिनी (२), सच्चिदानंद सिन्हा, बाँकीपुर, '१८

राधिकारमणप्रसाद सिंह, एम० ए० : तरङ्ग (२), बिहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन, मुजफ़्फ़रपुर, '२१

" : गल्प-कुसुमावली (३), आरा नागरी प्रचारिणी सभा, आरा, '२४ !

" : राम-रहीम (२), राजराजेश्वरी साहित्य मंदिर, सूरजपुरा, शाहाबाद, '३७

" : सावनी समा (३) " " '३८

" : पुरुष और नारी (२) " " '४०

" : चुनी कलियाँ (३) " " '४१

" : सूरदास (२) " " '४२

राधेश्याम : रामायण (१), (कई भागों में), लेखक, बरेली, '१५

" : वीर अभिमन्यु (४) " " '१८

" : परिवर्तन (४) " " '२४!

" : घंटा पंथ (४) " " '३६

रानाडे, श्रीमती : महादेव गोविन्द रानाडे (७ अनु०) (अनु०—रामचंद्र वर्मा), राजपूत प्रेस, आगरा, '१४

रॉबिन्सन, जेम्स हार्वी : पश्चिमी यूरोप (८ अनु०) ज्ञान मंडल प्रेस, बनारस, '२६

राम इक़बालसिंह : स्टालिन (७) ग्रन्थमाला कार्यालय, बाँकीपुर, '२६

" सं० : मैथिल लोक-गीत (२०), हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '४२

रामकरण, सं० : बाँकीदास-ग्रंथावली (१८), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२५

" : मारवाड़ी व्याकरण (१०), मारवाड़ स्टेट प्रेस, जोधपुर, '६६

रामकुमार वर्मा: हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (१६) राम नारायण लाल, इलाहाबाद, '३८

,, : हिन्दी साहित्य की रूपरेखा (१६) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '३८

,, : जौहर (१), हिन्दी भवन, लाहौर, '३६

,, : रेशमी टाई (४), लीडर प्रेस, इलाहाबद, '४१

,, सं० : आठ एकांकी नाटक (१६), हिंदी भवन, लाहौर, '४१

,, : हिम-हास (१) इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद, '४२

,, : चारुमित्रा (४), साधना-सदन, इलाहाबाद, '४२

,, : (आधुनिक कवि माला में) (१), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '४३

रामकुमारी चौहान : निःश्वास (१), तरुण भारत-ग्रंथावली, इलाहाबाद, '३५

रामकृष्ण दैवज्ञ : प्रश्न-चंडेश्वर (१४ अनु०), (अनु०— वष्णुदत्त शर्मा) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '६४

रामकृष्ण, सं० : स्त्री-शिक्षा (१६ ना०), गवर्नमेंट प्रेस, इलाहाबाद, '७१

रामकृष्ण वर्मा, सं० : श्रीरघुनाथ-शतक (१६), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '८

,, सं० : समस्या-पूर्ति (१६) ,, ,, '६७-६८

,, : विरहा नायिकाभेद (६) ,, ,, '१६००

,, सं० : ध्रुव-सर्वस्व (ध्रुवदास कृत)(१८) ,, ,, '०४

,, : वर्षा बिहार (१) ,, ,, '०५

,, : सावन छटा (१) ,, ,, '०५

रामकृष्ण शर्मा : विदाई मोसी (३ ना०), नर्मदाप्रसाद माणिक, लहरिया-सराय, '२८

,, : कविता-कुसुम (१) ,, ,, '२६

रामकृष्ण शुक्ल : अमृत और विष (२), फाइन आर्ट प्रिन्टिंग कॉटेज, इलाहाबाद, '२८

रामकृष्ण शुक्ल : प्रसाद की नाट्यकला (१८), मानस-मुक्ता कार्यालय, किसरौल, मुरादाबाद, '२६ ?
,, : आधुनिक हिन्दी कहानियाँ (१६), लेखक, मुरादाबाद, '३१
,, : आलोचना-समुच्चय (१६), हिन्दी भवन, लाहौर, '३६
रामकृष्ण सिन्हा, बी० ए०, विशारद : प्राचीन तिब्बत (८), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '४१
रामकृष्ण, स्वामी : रामकृष्ण-वाक्यसुधा (१७ अनु०), शंकर नाहर जोशी, पूना, '१६
,, : रामकृष्ण-कथामृत, भाग १, (१७ अनु०) मर्चेन्ट प्रेस, कानपुर, '१६
रामग़रीब चौबे : नागरी-विलाप (४), रामबख्श चतुर्वेदी, पाली, सहजनवाँ, गोरखपुर, '८५
,, : पुस्तक-सहवास (५), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०८
,, : कार्य-सम्पादन (५) ,, ,, '०८
रामगुलाम द्विवेदी : कवित्त रामायण (१ प्रा०), ब्रजचन्द प्रेस, बनारस, '८१
,, : पदावली और रहस्य विनयावली (१ प्रा०), द्वारका-प्रसाद, बनारस, '२४ रिप्रिंट
रामगुलाम राम : सुदामा (२), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '६६
रामगोपाल मिश्र : माया (२), लेखक, गोरखपुर, '१७
रामगोपाल मोहता : गीता का व्यवहार-दर्शन (२०), सत्यनारायण प्रिंटिंग प्रेस, मीयर रोड, करांची, '३७
रामगोविन्द त्रिवेदी : दर्शन-परिचय, भाग १, (२०), निहालचंद वर्मा, कलकत्ता, '२६
रामचन्द्र आरोड़ा : कृषिशास्त्र, (१२), यूनीक लिटरेचर पब्लिशिंग हाउस, अलीगढ़, '२४
रामचन्द्र टंडन : सरोजिनी नायडू (७), लेखक, अकबरपुर (फ़ैज़ाबाद), '२५
,, सं० : रूसी कहानियाँ (२०), भारतीय भंडार, बनारस, '३०

रामचन्द्र टंडन सं० : बीस कहानियाँ (१९), हिंदी मंदिर, इलाहाबाद, '३२
रामचन्द्र द्विवेदी : तुलसी साहित्य-रत्नाकर (१८), लेखक, अगरौली, बलिया, '२६
रामचन्द्र, पण्डित : चरणचन्द्रिका (१ प्रा०), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६०
रामचन्द्र 'प्रदीप' : परीदेश (३ बा०) जगपति चतुर्वेदी, इलाहाबाद, '३२
,, : सोने का हंस (३ बा०) ,, ,, '३२
,, : जादू का देश (३ बा०) ,, ,, '३२
,, : सोने का तोता (३ बा०) ,, ,, '३२
रामचन्द्र मिश्र, बी० एस०, एम० बी० : सन्तानानिग्रह-विज्ञान (१३), लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद, '३६
रामचन्द्र मिश्र : चन्द्राभरण (२०), मुद्रक—ओंकार प्रिन्टिङ्ग प्रेस, अजमेर '३६
रामचन्द्र मुनि, डॉक्टर : बायोकेमिक विज्ञान चिकित्सा (१३), मुद्रक— जामिया प्रेस, दिल्ली, '३५
रामचन्द्र मुमुक्षु : पुण्याश्रव कथाकोष (८ अनु०), मानकचन्द पानाचन्द, बम्बई, '०७
रामचन्द्र वर्मा : मानव-जीवन (१३), नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '१७
,, : भूकम्प (१४), गङ्गा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '१८
,, : महात्मा गान्धी (७), उदयलाल काशलीवाल, बम्बई, '१६
,, : रूपक-रत्नावली, भाग १, (२०), लेखक, बनारस, '२६
,, सं० : संक्षिप्त हिन्दी-शब्दसागर (१०), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद '३३
रामचन्द्र वैद्यशास्त्री : भारत-नररत्न चरितावली (८) लेखक, अलीगढ़, '०८
,, : तुलसी-समाचार (१८), सुधावर्षक प्रेस, अलीगढ़, '४१
रामचन्द्र शुक्ल : चारण-विनोद (१), मुद्रक—इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '०१

रामचरित उपाध्याय : रामचरित-चिन्तामणि (१) ग्रंथमाला कार्यालय, बाँकीपुर, '२०

,, : राष्ट्र भारती (१) राष्ट्रीय शिक्षा-ग्रन्थमाला कार्यालय, आरा, '२१

,, : देवी द्रौपदी (१७ बा०), गङ्गा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२२

,, : अञ्जना सुन्दरी (१७ बा०), आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी, अम्बाला, '२४

रामचीज़ सिंह : कुलवन्ती (२), लेखक, चक्रधरपुर, सिंहभूमि, '०४

,, : बन-विहङ्गिनी (२), देवकीनंदन खत्री, बनारस, '०६

रामजसन, पंडित, सं० : स्त्री-शिक्षा सुबोधिनी, भाग १-३ (१६ बा०) लाज़रस ऐण्ड कंपनी, बनारस, '६६

रामजीदास वैश्य : फूल में काँटा (२), लेखक, लश्कर, ग्वालियर स्टेट, '०६

,, : धोखे की टट्टी (२), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '०७

रामजीलाल शर्मा : बाल भागवत (१७ बा०) ,, ,, '०७

,, : बाल मनुस्मृति (१७ बा०) ,, ,, '०७

,, : बाल रामायण (१७ बा०) ,, ,, '०७

,, : बाल गीता (१७ बा०) ,, ,, '०८

,, : बाल विष्णुपुराण (१७ बा०) ,, ,, '०६

,, : बाल पुराण (१७ बा०) ,, ,, '११

,, : रामायण-रहस्य (१८), हिन्दी प्रेस, इलाहाबाद, '१५

,, : राष्ट्रभाषा (१०), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '२०

रामजीवन नागर : देशी बटन (१२), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '०४

रामतीर्थ, स्वामी : राष्ट्रीय संदेश (६ अनु०), (अनु०—नारायणप्रसाद, बी० ए०), नवजीवन सभा, कानपुर, '१२

रामतीर्थ स्वामी : रामतीर्थ-ग्रंथावली (१६ अनु०), (कई खंडों में), रामतीर्थ लीग, लखनऊ, '१६-२४
,, : रामहृदय (१७ अनु०) ,, ,, '२४
रामदत्त : प्राचीन हिंदू रसायन शास्त्र (१३), रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद, '३८ ?
रामदत्त भारद्वाज, एम० ए० : व्रत त्यौहार और कथाएँ (१७), लक्ष्मी प्रेस, कासगंज, '४१
,, सं० : रत्नावली (१८), गंगा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '४२
,, तथा भद्रदत्त शर्मा : तुलसी-चर्चा (१८), लक्ष्मी प्रेस, कासगंज, '४१
रामदयाल : बलभद्र-विजय (१), किशनलाल श्रीधर, बंबई, '०३
रामदयाल : इतिहास-संग्रह (८), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '०४
रामदयाल कपूर, एम० ए०, बी० एस-सी० : रोगी-परिचर्या (१३), हिंदी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '३०
,, : प्रसूति-तंत्र (१३), गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '३१
रामदयाल नेवटिया : प्रेमाङ्कुर (१), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '६६
रामदयाल साधु : दादू-सार (१८), लेखक, मुरादाबाद, '३७
रामदहिन मिश्र : मेघदूत-विमर्श (२०), मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इंदौर, '२२
,, : हिंदी मुहावरे (१०), ग्रंथमाला कार्यालय, बाँकीपुर, '२३
रामदास गौड़ तथा शालिग्राम भार्गव : विज्ञान-प्रवेशिका (१४ बा०), विज्ञान परिषद्, इलाहाबाद, '१४
रामदास गौड़ : वैज्ञानिक अद्वैतवाद (१४), ज्ञानमंडल कार्यालय, बनारस, '२०
,, : इटली के विधायक महात्मागण (८) ,, ,, '२०

रामदास गौड़ : ईश्वरीय न्याय (४), गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२५

„ : रामचरितमानस की भूमिका (१८), हिन्दी पुस्तक-एजेन्सी, कलकत्ता, '२५

„ : स्वास्थ्य साधन, भाग „ „ '२६

„ : विज्ञान-हस्तामलक (१४), हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी० इलाहाबाद, '३६

„ : हिन्दुत्व (१७), शिवप्रसाद गुप्त, बनारस, '३८

„ : हमारे गाँवों की कहानी (६ बा०), सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, '३८

रामदास समर्थ, स्वामी : दासबोध (१७ अनु०), (अनु०—माधवराव सप्रे तथा लक्ष्मीधर वाजपेयी) एस० एन० जोशी, पूना, '१३

„ : हिंदी दासबोध (१७ अनु०) हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, '३[illegible]

रामदास साहिब : —वाणी (१७ प्रा०) (टीका०—चरणदास), सरस्वती विलास प्रेस, नरसिंहपुर, '०७

„ : पञ्चग्रन्थी (१७ प्रा०), शिवदुलारे वाजपेयी, कल्याण, '२३

रामदीन पाण्डेय, एम० ए० : काव्य की उपेक्षिता (यशोधरा) (१८), साहित्य भवन लिमिटेट, इलाहाबाद, '४०

रामदीनसिंह : बिहारदर्पण (१६) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '८३ द्वि०

„ सं० : हरिश्चन्द्र-कला, जिल्द १-६ (१८), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '८७-०१

रामदेव : भारतवर्ष का इतिहास, खण्ड १ (८), गुरुकुल, काँगड़ी, '११ द्वि०

„ : „ खण्ड २, ३ „ „ '२६, '३३

„ : पुराणमत-पर्यालोचन (२०) „ „ '१६

रामनरेश त्रिपाठी : मानसी (१), हिन्दी मन्दिर इलाहाबाद, '२७
,, : स्वप्न (१), ,, ,, '२६
,, : स्वप्नों के चित्र (३) ,, ,, '३०
,, : घाघ और भड्डरी (१४), हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '३१
,, : हिन्दुस्तानी कोष (१०), हिन्दी मन्दिर, इलाहाबाद, '३१
,, : हिन्दी-हिन्दुस्तानी (१०) दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, '३२
,, : जयन्त (४), हिन्दी मन्दिर प्रेस, इलाहाबाद, '३४
,, : प्रेम-लोक (४) ,, ,, '३४
,, : तरकस (३) ,, ,, '३४
,, : सोहर (१६) ,, ,, '३७
,, : पेखन (४ बा०) ,, ,, '३७
,, : तुलसीदास और उनकी कविता, भाग १-२, (१८) हिन्दी मन्दिर प्रेस इलाहाबाद, '३८
,, : बफ़ाती चाचा (४ बा०) ,, ,, '३६
,, : दिमागी ऐयाशी (१६) ,, ,, '४०
,, : हमारा ग्राम-साहित्य (१६) ,, ,, '४०
,, : मौत के सुरङ्ग की कहानी (३ बा०) ,, ,, '४०
,, : आदमी की क़ीमत (३ बा०) ,, ,, '४१
,, : बेलकुमारी (३ बा०) ,, ,, '४१
,, : बुढ़िया-बुढ़िया किसे खाऊँ (३ बा०) ,, ,, '४१
,, : भय बिन होय न प्रीत (३ बा०) ,, ,, '४१
,, : चटक-मटक की गाड़ी (३ बा०) ,, ,, '४१
,, : चुड़ैल रानी (३ बा०) ,, ,, '४१
,, : डंकू (३ बा०) ,, ,, '४१
,, : पकड़ पुछकटे को (३ बा०) ,, ,, '४१
,, : फूल रानी (३ बा०) ,, ,, '४१

रामनरेश त्रिपाठी : रूपा (३ बा०) हिन्दी मन्दिर प्रेस, इलाहाबाद, '४१

" : तीन सुनहले बाल (३ बा०) " " '४१

" : तीन मेमने (३ बा०) " " '४१

" : तीस दिन मालवीय जी के साथ (७), सस्ता साहित्य-मण्डल, नई दिल्ली, '४२

रामनाथ पाण्डेय : भारत में पोर्चुगीज़ (८), हरिदास ऐण्ड कम्पनी, कलकत्ता, '१२

" : बाल कथा-कुञ्ज, भाग १ (३ बा०), बाल साहित्य प्रकाशन समिति, कलकत्ता, '३०

रामनाथ प्रधान : राम होरी-रहस्य (१), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '९३

रामनाथ लाल 'सुमन' : दाग़े जिगर (२०) हिन्दी पुस्तक-भण्डार, लहरियासराय, '२५

" : विपञ्ची (१), वैदेहीशरण, लहरियासराय '२६

" : कविरत्न मीर (२०), हिन्दी पुस्तक भण्डार, लहरियासराय, '२६

" : बालिका (१), लेखक, बनारस, '२६

" : भाई के पत्र (६), सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर, '३१

" : कवि प्रसाद की काव्य-साधना (१८), छात्रहितकारी पुस्तकमाला, दारागञ्ज, इलाहाबाद, '३८

" : वेदी के फूल (३), साधना-सदन, इलाहाबाद, '४२

" : हमारे नेता (८ बा०) लेखक, इलाहाबाद, '४२

रामनाथ शर्मा : ग्वालियर राज्य में हिन्दी का स्थान (१०), देसाई आर्ट प्रिन्टिङ्ग प्रेस, ग्वालियर, '४१

" : व्यावहारिक शब्दकोष (१०), ग्वालियर राज्य हिन्दी साहित्य सभा, '४२

रामनारायण : नीति-कुसुम (१७), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '९२

रामनारायण चतुर्वेदी : अम्बरीष (१) लेखक, बादशाही मण्डी, इलाहाबाद, '२१

रामनारायण ठाकुर : हल्दीघाटी का युद्ध (१), लालबहादुर अनेई, बनारस, '०६

रामनारायण दीक्षित : रम्भा, भाग १-३ (२) विश्वेश्वरप्रसाद वर्मा, बनारस, '०५

रमनारायण दूगड़ : पृथ्वीराज चरित्र (७) लेखक, उदयपुर, '६६
" : राजस्थान-रत्नाकर (६) " " '०६

रामनारायण मिश्र : भू-परिचय (६), इण्डयन प्रेस, इलाहाबाद, '३०

रामनारायण मिश्र, बी० ए० : पारसियों का संक्षिप्त इतिहास (८), लेखक, भुतही इमली, बनारस, '६५
" : जापान का संक्षिप्त इतिहास (८), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०४

रामनारायण यादवेन्दु : राष्ट्रसंघ और विश्वशान्ति (६) मानसरोवर साहित्व निकेतन, मुरादाबाद '३६
" : पाकिस्तान (६) " " '३६
" : नवीन भारतीय शासन विधान (६), नवयुग साहित्य-निकेतन, आगरा, '३८
" : समाजवाद और गांधीवाद (६) " " '३६
" : हिटलर की विचार धारा (७) मानसरोवर साहित्य निकेतन, मुरादाबाद '४१
" : भारतवर्ष में साम्प्रदायिक समस्या (६) " " '४१
" : पाँचवा कालम क्या है ? (६) " " '४१
" : युद्ध छिड़ने से पहले (८) " " '४१
" : यदुवंश का इतिहास (८), लेखक, आगरा, '४२
" : भारतीय संस्कृति और नागरिक जीवन (६) सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली '४२

रामनिवास पोद्दार : भारत में रेल-पथ (६) आदर्श पुस्तकालय, चौक, आगरा, '२४

रामप्रकाश, पंडित : कुसुमाकर-प्रमोद (१) बनवारीलाल, बनारस, '८६

रामबिलास सारडा : आर्यधर्मेंद्र जीवन महर्षि (७), वैदिक प्रेस, अजमेर, '०४

रामभगत बंसल, बी० ए०, एल्-एल्० बी० : हिन्दी में जिरह करने का इल्म (१२), लेखक, अजमेर, '३२

रामभजन त्रिवेदी : राधा-विषादमोचनावली (१), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '०७

राममोहन राय, राजा : वेदान्त-संग्रह (१७ अनु०), मम्बाउल उलूम प्रेस सोहाना, मुड़गाँव, '६६

रामरत्नदास, गोस्वामी : सियावर केलि पदावली भाग १, (१) शालिग्राम प्रेस, आगरा '७६

रामरत्न अध्यापक, सं० : लोकोक्ति-संग्रह (१०), रत्नाश्रम, सिविल लाइन्स, आगरा, '१५ द्वि०

रामरत्न पाठक, सं० : प्रेम प्रवाह तरंग (१६), छेदीलाल, बनारस, '८

रामरत्न भटनागर, एम० ए० : अम्बापाली (२), बुक इम्पोरियम, ज़ीरोरोड, इलाहाबाद, '३६

" : आकाश की कथा (१४), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '४१

" : ताण्डव (१), किताब महल, इलाहाबाद, '४२

" तथा वाचस्पति त्रिपाठी, एम० ए० : सूर-साहित्य की भूमिका (१८), रामनारायणलाल, इलाहाबाद, '४१

रामरत्न वाजपेयी, सं० : सुन्दरी-तिलक (१६), संपादक, लखनऊ, '४६

रामरत्न सनाढ्य, सं० : पूर्ण-वियोग (१८), संपादक, कानपुर, '१६

रामलक्ष्मणसिंह : ईख की खेती (१२), वाणी मंदिर, छपरा, '३७

रामलाल : बुद्धि-प्रकाशिनी (१६ बा०) गवर्नमेंट प्रेस, इलाहाबाद, '७१

रामलाल, चौधरी : जाटक्षत्रिय इतिहास (८), जाटक्षत्रिय भंडार-संघ, आगरा, '४१

रामलाल दीक्षित, सं० : रहिमन-शतक (१८), हिन्दी-प्रभा प्रेस, लखीमपुर, '६८

रामशङ्कर शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास (१६), रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद, '३१
,, : भाषा शब्दकोष (१०), रामनारायणलाल, इलाहाबाद, '३७
,, : आलोचनादर्श (६), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३८
रामशरण उपाध्याय : मगध का इतिहास (८), यंग ब्रदर्स ऐंड कम्पनी, कल्याणी, मुजफ्फरपुर, '३६
रामशरणदास सक्सेना : गुणात्मक विश्लेषण : क्रियात्मक रसायन (१४), गुरुकुल, कांगड़ी, '२६
रामशरण शर्मा : अपूर्व रहस्य नाटक (४), हुसेनी प्रेस, आगरा, '८७
रामसखे जी : नृत्य राघव मिलन (१ प्रा०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६२
,, : पदावली (१ प्रा०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६४
रामसहायदास : शृङ्गार-सतसई (१ प्रा०), भारतजीवन प्रेस, बनारस, '६६
रामसिंह : मेघमाला (१) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '४०
रामसिंह सं० : राजस्थान के लोकगीत (२०), राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, कलकत्ता, '३८
रामसिंह जू देव : युगल-विलास (१) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८२ द्वि०
,, : अलङ्कार-दर्पण (६), भारतजीवन प्रेस, बनारस, '६६
,, : मोहनविनोद (१), [सं० कृष्ण बिहारी मिश्र], इलाहाबाद, '३५
रामसुख : कवितावली (४), छोटेलाल लक्ष्मीचंद, अयोध्या, '६७
रामसरूप तिवारी : नीति-सुधा तरंगिणी (१७), गवर्नमेंट प्रेस, इलाहाबाद, '७२
रामसरूप, लाला : ज्ञानाङ्कुर (१७), काशीप्रकाश प्रेस, मेरठ, '८८
रामसरूप शर्मा : हास्यरस की मटकी (३), लेखक, मुरादाबाद, '६७

रामस्वरूप शर्मा : मुखामुखी (२), लेखक, मुरादाबाद, '६६
,, सं० : व्याख्यानमाला (१६), मिश्रीलाल शर्मा, मुरादाबाद, '०४

,, ?] : गोस्वामी तुलसीदास का जीवन-चरित्र (१८), लक्ष्मी-नारायण प्रेस, मुरादाबाद, '०५

रामाज्ञा द्विवेदी, 'समीर' : सौरभ (१), नर्वदाप्रसाद माणिक, लहरिया-सराय, '२७

,, : संसार के साहित्यिक (२०), इलाहाबाद, '३२

रामा तांबे : गृहशास्त्र (१२), कर्णाटक पब्लिशिंग हाउस, बम्बई, '४२

रामानन्द (सोहाना निवासी) : हिंडोला (१), श्यामकाशी प्रेस, मथुरा, '६२

रामानन्द तिवारी : परिणय (१), लेखक, इलाहाबाद, '३७

रामानन्द द्विवेदी : दिल्ली दरबार (सचित्र) (८) वीरभारत कार्यालय, १६६, बहू बाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता, '१२

रामानन्द, महात्मा: सिद्धान्त-पटल (१७ अनु०), वैष्णव रामदासजी, गुरु श्री गोकुलदासजी, बम्बई, '६०

,, : रामानन्द-आदेश (१७ अनु०) मोहनदास आत्माराम, अहमदाबाद, '१६

रामानुज, आचार्य : अष्टादश रहस्य—भाषा (१७ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०५

रामानुजदास : भक्तमाल हरिभक्ति-प्रकाशिका (१६ प्रा०), लक्ष्मी-वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, १६००

रामावतारदास : सन्त-विलास (१), विष्णुस्वरूप, मुरादाबाद, '८१

रामावतार पाण्डेय, एम०ए० : यूरोपीय दर्शन (२०), नागरी प्रचारिणी सभा बनारस, '११ ?

,, सं० : प्रबन्ध-पुष्पाञ्जलि (१६), जे० एन० बसु, बाँकीपुर, '२८-

रामावतार शास्त्री : गीता-परिशीलन—मूल, भाष्य तथा समालोचना, (२०) तत्त्व ज्ञानमन्दिर, अमलनेर, पूर्वखानदेश '३६

रामेन्द्रसुन्दर त्रिवेदी : प्रकृति (१४ अनु०) इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '११

रामेश्वर अध्यापक, 'करुण' : करुण-सतसई (१), करुण-काव्य कुटीर, कृष्णनगर, लाहौर, '३४

रामेश्वर पाठक : शस्त्र-विवेक (१२), तुलसीराम अग्रवाल, झरिया, '४०

रामेश्वरप्रसाद त्रिपाठी, एम० ए०, एल० टी० तथा विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी बी० ए०, सी० टी० : प्रौढ़शिक्षा-प्रदीपिका (१६), ओंकारसहाय श्रीवास्तव, लखनऊ, '३६

रामेश्वर प्रसाद, बी० ए० तथा कुँवर कन्हैया जू : कथा-कुञ्ज (३ बा०), रामशरण खंडेलवाल, इलाहाबाद, '३४

रामेश्वरप्रसाद वर्मा : रमेश चित्रावली (११), लेखक, कलकत्ता, '२२

रामेश्वर शर्मा चौमुवाई : वीर सुन्दरी (४), राधाकृष्ण तेवड़ेवाला, कलकत्ता, '२१

रामेश्वर शुक्ल 'अञ्चल' : मधूलिका (१) लेखक, इलाहाबाद, '३८

,, : अपराजिता (१), केदारनाथ गुप्त, इलाहाबाद, '३६

,, : किरणवेला (१) सुखी-जीवन ग्रंथमाला, दारागंज, इलाहाबाद, '४१

,, : ये वे बहुतेरे (३), साहित्य निकेतन, दारागंज, इलाहाबाद, '४१

रामेश्वर हरजी जानी : गायन-सागर (११), लेखक, नड़ियाद, '८५

रामेश्वरी देवी गोयल, एम० ए० : जीवन का स्वप्न (१), प्रभात प्रिंटिंग काटेज, आज़मगढ़, '३७

रामेश्वरी देवी, 'चकोरी' : किञ्जल्क (१), गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '३३

,, : मकरन्द (१) ,, ,, '३६

राय कृष्णदास : साधना (५), साहित्य प्रेस, चिरगावँ, '१६

,, : संलाप (५) ,, ,, '२६

राय कृष्णदास : भावुक (१), भारती भंडार, बनारस, '२८
,, : प्रवाल (५) ,, ,, '२९
,, : सुधांशु (३) ,, ,, '२९
,, : अनाख्या (३) ,, ,, '२९
,, : छायापथ (५), साहित्य प्रेस, चिरगाँव, '३०
,, : ब्रजरज (१), भारती भंडार, बनारस, '३६
,, : भारत की चित्रकला (८), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '३९
,, : भारत की मूर्तिकला (८) ,, ,, '३९
,, तथा वाचस्पति पाठक, सं० : इक्कीस कहानियाँ (१६), लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '४१
,, तथा पद्मनारायण आचार्य, सं० : नई कहानियाँ (१६), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '४१

रावण : अर्क-प्रकाश (१३ अनु०), (अनु०—शालिग्राम वैश्य), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '९६
,, : ,, (१३ अनु०), हरिप्रसाद भागीरथ, बम्बई, '१९००
,, : उड्डीश तंत्र (१७ अनु०), (अनु०—बलदेवप्रसाद मिश्र), प्रयागनारायण मिश्र, कानपुर, '९८
,, : ,, (१७ अनु०), (अनु०—ज्वालाप्रसाद मिश्र) ज्ञानसागर प्रेस, बम्बई, '०२

राहुल सांकृत्यायन : बीसवीं सदी (२), चन्द्रावती देवी, महेन्द्रू, पटना, '३१
,, : तिब्बत में सवा बरस (९), शारदा मन्दिर, नई दिल्ली, '३३
,, : मेरी तिब्बत-यात्रा (९), छात्र-हितकारी पुस्तकमाला, इलाहाबाद, '३४ ?

राहुल सांकृत्यायन : साम्यवाद, हो क्यों (६) चंद्रावती देवी, महेन्द्र, पटना '३५
" : लङ्का (६) अच्युतानन्द सिंह, छपरा, '३५
" : मेरी यूरोप-यात्रा (६), साहित्य सेवक संघ, छपरा, '३५
" : जापान (६) " " '३६
" : विस्मृति के गर्भ में (८), पटना, '३७
" : मानव समाज (१५) ग्रंथमाला कार्यालय, बाँकीपुर, पटना, '३७ ?
" : ईरान (६), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३७
" : पुरातत्व निबंधावली (८), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '३७
" : दिमाग़ी ग़ुलामी (६), रामनाथ त्रिवेदी, हिन्दी कुटिया, पटना, '३८
" : जादू का मुल्क (२), छात्रहितकारी पुस्तकमाला, इलाहाबाद, '३८
" : सोने की ढाल (२) छात्र-हितकारी पुस्तकमाला, इलाहाबाद '३८
" : सोवियत भूमि (६), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '३८
" : सतमी के बच्चे (३), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '३६
" : जीने के लिए (२), वाणी मन्दिर, छपरा, '४०
" : वैज्ञानिक भौतिकवाद (१५), सोशलिस्ट लिटरेचर पब्लिशिंग कम्पनी, आगरा, '४०

रुद्रदत्त शर्मा : पाखण्डपूर्ति (४), गोकुलचन्द्र शर्मा, कलकत्ता, '८८
" : आर्यमत-मार्तण्ड (४), आर्यावर्त प्रेस, गया, '६५
" : अपूर्व सन्यासी (२), ठाकुरप्रसाद साहा, दीनापुर, '६८
" : वीरसिंह दारोगा (२), " " '१६००

रूपलाल वैश्य : रूप निघण्टु (३), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१४

रेनाल्ड : नर-पिशाच, भाग १-४ (२ अनु०) (अनु०—हरेकृष्ण जौहर), भारत जीवन प्रेस, बनारस, १६००-'०४

रेवाशङ्कर वेलजी सं०, : रासलीला (सूरदास तथा अन्य पुष्टिमार्गीय कविकृत) (१६) सम्पादक, बम्बई, '८६

रेशम : उन्नति (५), साहित्य निकेतन कार्यालय, इंदौर, '२२

रैदास :—बाणी (१७ प्रा०) वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '०६

,, :—रामायण (१७ प्रा०), स्वामी सुखानन्दजी गिरि, आगरा, '२५

आर० जे० सरहिन्दी : हिन्दी मुहावरा-कोष (१०), रामनारायणलाल इलाहाबाद, '३७

आर० एम० रावल : अजन्ता के कला-मण्डप (८), कुमार कार्यालय, अहमदाबाद, '३८

आर० एन० साहा, डाक्टर : अक्षरों की उत्पत्ति (१०), लेखक, बनारस, '२५

आर० आर० मुकर्जी : सरल बायोकेमिक चिकित्सा (१३) प्रफुल्लचंद्र भार, कलकत्ता, '२८

आर० एस० देशपाण्डे : सुलभ वास्तुशास्त्र (१२ अनु०), लेखक, संगमनेर, '३३

आर० एस० शर्मा : सोमाश्रित (४), लेखक, बंबई, '२२

ल

लक्ष्मणप्रसाद पाण्डेय : रस-तरङ्ग (१), मुन्नालाल, बनारस, '७८

लक्ष्मणप्रसाद भारद्वाज, सं० : मनन (१५), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '३२

लक्ष्मण रामचन्द्र पांगारकर, बी० ए० : एकनाथ-चरित्र (७ अनु०), गीता प्रेस, गोरखपुर, '३२

लक्ष्मीनाथसिंह : जीव-जन्तु, भाग १-२ (१४), बिहार बंधु प्रेस, बाँकीपुर, '६५

लक्ष्मीनारायण गर्दे : महाराष्ट्र-रहस्य (८), ग्रंथकार प्रकाशक समित, बनारस, '१२

,, : जेल में चार मास (६), यशोदानन्दन अखौरी, कलकत्ता, '२२

,, : एशिया का जागरण (६), गंगाप्रसाद भोतिका, कलकत्ता, '२४

,, सं० : अरविन्द और उनका योग (२०), मदनगोपाल गारोदिया, कलकत्ता, '३६

लक्ष्मीनारायण गुप्त : नलिनी वा चितचोर (२), व्रजलाल विश्वंभर-दयाल, अलीगढ़, '०८

,, : हृदय-लहरी (३), गोकुलचंद, अलीगढ़, '२०

,, : उपेक्षिता (३), सुधावर्षक प्रेस, अलीगढ़, '२२

लक्ष्मीनारायण द्विवेदी : विनयपत्रिका-स्वरलिपि (११), लेखक, मिर्ज़ापुर, '३४

लक्ष्मीनारायण नृसिंहदास : राधिका-मङ्गल (१), किशनलाल श्रीधर, बंबई, '०३

,, : नल-दमयंती-चरित्र (१), श्रीधर शिवलाल बम्बई, '०४

लक्ष्मीनारायण मिश्र : सन्यासी (४), साहित्य भवन लिमि०, इलाहाबाद, '३१

,, : राक्षस का मंदिर (४) ,, ,, '३१

,, : त्रिदिव (१), प्रभुदत्त शर्मा, इटावा, '३२

,, : मुक्ति का रहस्य (४), साहित्य भवन लिमिटेड इलाहाबाद, '३२

,, : राजयोग (४), भारती भंडार, बनारस, '३४

,, : सिन्दूर की होली (४) ,, ,, '३४

लक्ष्मीसहाय माथुर, सं० : मातृभाषा (५), साहित्य निकेतन, झालावाड़, '२१

,, : बेंजामिन फ्रैंकलिन (७), मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति, इंदौर, '३८

लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, डी० फिल् : आधुनिक हिंदी साहित्य (१८५०-१९००) (१६), विश्वविद्यालय हिन्दी परिषद्, इलाहाबाद, '४१

लखपतराय : शशिमौलि (१), नवलकिशोर, लखनऊ, '८६

लछिमनदास : प्रह्लाद संगीत (४ प्रा०), हिंदू प्रेस, दिल्ली, '६८

लछिमनराम लाला, सं० : प्रेम-रत्नाकर (१६), राजा महेश शीतलाबख्श सिंह, बस्ती, '७६

लछिराम कवि : रावणेश्वर कल्पतरु (६), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६२

,, : महेश्वर-विलास महेश्वरबख्श सिंह, तालुकेदार, रामपुर मथुरा, सीतापुर, '६३

,, : रामचन्द्र भूषण (६), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६८

,, : हनुमान-शतक (१) ,, ,, '०२

लज्जाराम शर्मा, मेहता : धूर्त रसिकलाल (२), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '६६

,, : स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी (२) ,, ,, '६६

,, : भारत की कारीगरी (१२) ,, ,, '०२

,, : अमीर अब्दुर्रहमान खाँ (७) ,, ,, '०३

,, : आदर्श दम्पति (२) ,, ,, '०४

,, : बिगड़े का सुधार अथवा सती सुखदेवी (२) ,, '०७

,, : हिंदू गृहस्थ (२) ,, ,, '०६

,, : विपत्ति की कसौटी (२) ,, ,, '०६

,, : उम्मेदसिंह चरित (७), ,, ,, '१३

,, : जुझार तेजा (७), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१४

लज्जाराम शर्मा, मेहता : आदर्श हिंदू, भाग १-३ (२) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस '१५

" : आप बीती (१८) " " '३४

लज्जाराम शुक्ल : बाल-मनोविज्ञान (१६), रामबहोरी शुक्ल, बनारस, '३६

लज्जाशङ्कर झा, एम० ए०, आई० ई० एस० : भाषा शिक्षण पद्धति (१६), लेखक, बनारस, '२६

" : शिक्षा और स्वराज्य (१६), राय कृष्णदास, बनारस, '२४

ललनपिया सारस्वत : होली शतक (१), चिन्तामणि प्रेस, फर्रुखाबाद, '६३

" : ललन प्रदीपिका (१), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '०१

" : ललन प्रभाकर (१) " " '०१

" : ललन फाग (१) " " '०२

" : ललन चन्द्रिका (१) " " '०२

" : ललन रसमञ्जरी (१) " " '०२

" : ललन लतिका (१) " " '०२

" : अनिरुद्ध-परिणय (१) " " '०३

" : ललन विनोद (१), " " '०३

" : ललन सागर (१), " " '०४

" : ललन विलास (१), " " '०५ ?

" : ललन शिरोमणि (१) " " '०५ ?

" : ललन रसिया (१) " " '०५ ?

" : ललन रत्नाकर (१) " " '०५ ?

" : ललन प्रमोहिनी (१) " " '०५ ?

" : ललन वाद्याभरण (११), " " '०५ ?

" : धर्मध्वजा (१७) " " '०५ ?

" : ललन प्रबोधिनी (१७) " " '०५ ?

" : ललन कवितावली (१) " " '०५ ?

ललिताप्रसाद सुकुल : साहित्य-चर्चा (१६), हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '३८

लक्ष्मयजन सिंह देव, रावराजा : महिषी चिकित्सा (१२), डायमंड जुबिली प्रेस, आजमगढ़, '६६

लल्लूजी लाल : प्रेमसागर (१७ प्रा०), भुवनचंद्र बसक, कलकत्ता, '६७
,, : ,, (१७ प्रा०), इन्द्रनारायण घोष, कलकत्ता, '६८
,, : ,, (१७ प्रा०), महादेव गोपाल शास्त्री, बंबई '६८
,, : ,, (१७ प्रा०), नारायणी प्रेस, दिल्ली, '७३ रिंप्रिंट
,, : ,, (१७ प्रा०), नृत्यलाल सील, बंगवासी आफ़िस, कलकत्ता, '७३
,, : ,, (१७ प्रा०) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२२
,, : ,, (१७ प्रा०), हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '२४
,, : राधारमण पद-मञ्जरी (१ प्रा०), राधाचरण गोस्वामी, बृन्दाबन, '८५ ?
,, सं० : सभा-विलास (१६ प्रा०), लाइट प्रेस, बनारस, '६७
,, : माधव-विलास (१ प्रा०), भुवनचन्द बसक, कलकत्ता, '६८

लल्लूभाई छगनलाल देसाई, सं० : कीर्तन-संग्रह, भाग १-३ (१६) संपादक, अहमदाबाद, '३६

लांगफ़लो : इवैंजेलाइन (१ अनु०) (अनु०—श्रीधर पाठक), अनुवादक, इलाहाबाद '८६

लाजपतराय, लाला : दयानन्द सरस्वती और उनका काम (७ अनु०), पंजाब एकोनामिकल प्रेस, लाहौर, '६८
,, : जोसेफ़ मेज़िनी (७ अनु०), माधवप्रसाद मिस्त्री, धर्मकूप, बनारस, '१६००

लैम्ब : शेक्सपियर के मनोहर नाटक (१८ अनु०) काशीनाथ खत्री, सरसा, इलाहाबाद, '८३-'८६

लोकनाथ चतुर्वेदी : पीपा-बावनी तथा श्यामसुखमा (१) नाथ प्रेस, कर्णघंटा, बनारस, '८६

" : पावस-पचीसी (१) सरस्वती प्रकाश प्रेस, बनारस, '८६

" : राधिका-सुखमा (१), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८६

" : बंशी रागमाला (११) " " '८६

लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी : पद्मिनी (१), दुर्गाप्रसाद बालमुकुन्द, सागर, '२२

" : बिहारी-दर्शन (१८), गंगा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३७

" : वीर ज्योति (४) " " '३६ द्वि०

लोचनदास ज्योतिषी : कबीर साहेब का जीवन-चरित्र (१८), भगवान-दास जैन, लखनऊ, '७३

लोचनप्रसाद पाण्डेय : दो मित्र (२), लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद, '०६

" : प्रवासी (१), लेखक, बालपुर, चन्द्रपुर (मध्यप्रान्त) '०७

" सं० : कविता-कुसुममाला (१६), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '१०

" : बाल-विनोद (१ बा०), रामभद्र ओझा, अलवर स्टेट, '१३

" : नीति-कविता (१७) हरिदास ऐण्ड कंपनी, कलकत्ता, '१४

" : साहित्य-सेवा (४), " " '१४

" : मेवाड़-गाथा (१) " " '१४

" : माधव-मञ्जरी (१) " " '१४

" : पद्य-पुष्पाञ्जलि (१) नारायणदास आरोड़ा, कानपुर, '१५

" : छात्र-दुर्दशा (४), हरिदास ऐण्ड कंपनी, कलकत्ता, '१५

" : ग्राम्य विवाह-विधान (४) " " '१५

लोचनप्रसाद पाण्डेय, : प्रेम प्रशंसा वा गृहस्थदशा दर्पण, हरिदास (४) ऐण्ड कंपनी कलकत्ता, '१४

लोलाराम मेहता : सुशीला विधवा (२), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०८

लोलिम्बराज : वैद्य जीवन (१३ अनु०) . „ „ '६०

व

वङ्गसेन : वङ्गसेन (१३ अनु०), (अनु०—लाला शालिग्राम), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०५

वज्रप्रसाद, पण्डित : मालती-बसंत (४) लेखक, बनारस, '६६

वरदराज : लघु सिद्धान्त कौमुदी (१० अनु०), (अनु०—ज्वालाप्रसाद मिश्र) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६३

वररुचि: योग शतक (१७ अनु०),(अनु०—ज्वालाप्रसाद मिश्र) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१६००

वल्लभ : षोडस ग्रन्थ (१७ अनु०) रमानाथ शास्त्री, बम्बई, '१४

वल्लभ, सं० : रसिक रञ्जन रामायण (१६), भारत जीवन प्रेस,बनारस,'८८

वल्लभराम सूजाराम व्यास : वल्लभ-नीति (१७) (गुजराती तथा हिन्दी), लेखक, अहमदाबाद, '८३

„ : वल्लभकृत काव्यम् (१) भाग १-२, (गुजराती तथा हिन्दी) रणछोड़लाल, मोतीराम ठक्कर, बड़ौदा, '८८

वशिष्ठ : योगवाशिष्ठ सार (१७ अनु०), (अनु०—शिवराखन शुक्ल) अनुवादक, पानदरीबा, इलाहाबाद, '८७ द्वि०

„ : योगवाशिष्ठ (१७ अनु०), (अनु०—रामप्रसाद निरञ्जनी), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०४

„ : धनुर्वेद संहिता (१२ अनु०) प्यारेलाल बरौठा, अलीगढ़, '०२

„ : „ (१२ अनु०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०२

वाग्भट्ट : अष्टाङ्ग-हृदय (१३ अनु०), „ „ '६०

वाग्भट्ट : वाग्भट्टालङ्कार (६ अनु०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '०७
वाचस्पति पाठक : द्वादशी (३), भारती भंडार, बनारस, '३२
,, : प्रदीप (३), कृष्णदास, बनारस, '३५
वात्स्यायन : कामसूत्र (१३ अनु०), मुद्रक—गयादत्त प्रेस, दिल्ली, '२६
वामन मल्हार जोशी : रागिणी (२ अनु०), हिन्दी पुस्तक-एजेन्सी, कलकत्ता, '२३
,, : आश्रमहरिणी (२ अनु०), सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर, '२८
वामनाचार्य, गोस्वामी : वामन विनोद (१), जे० एम० प्रसाद, मिर्ज़ापुर, '८६
,, : वारिदनाद-वध व्यायोग (४), देवकीनंदन खत्री, बनारस, '०४
वाराह मिहिर : बृहत्संहिता (१४ अनु०), लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '२६
,, : बृहज्जातक (१४ अनु०), (अनु०—महीधर शर्मा), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '६८
,, : लघु जातक (१४ अनु०), (अनु०—काशीराम पाठक) लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, १६००
वालजी बेचर : सोर्सेज़ आव कबीर रिलीजन (१७), (हिंदी और गुजराती) सूरत मिशन, '८१
वाल्मीकि : रामायण (१ अनु०), विश्वनाथ पाठक, बनारस, '८०
,, : ,, (१ अनु०), हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, '८४
,, : ,, (रामविलास रामायण) (१ अनु०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८४
,, : ,, (पद्यानुवाद) (१ अनु०), साहित्य सहायिनी सभा, विद्या धर्मवर्धक प्रेस, इलाहाबाद, '६२-०१
,, : ,, (१ अनु०) रामनारायण लाल, इलाहाबाद, '२७

विजयसिंह, महाराजा : विजयरस-चंद्रिका (१), लेखक, बरौदा, '६३

विजयसिंह, लाल : सिया-चन्द्रिका (१), श्रीकुमार सिंह, इलाहाबाद, '८४

विजयानन्द त्रिपाठी : महा अन्धेरनगरी (४), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६३

विजयानन्द दुबे : दुबे जी की चिट्ठियाँ (५), चाँद कार्यालय, इलाहाबाद, '२६

विज्ञानानन्द स्वामी सं० : रामकृष्ण परमहंस और उनके उपदेश (७), ब्रह्मवादिन क्लब ६०, जानसेनगंज, इलाहाबाद, '०४

विट्ठलदास नागर : पद्माकुमारी, भाग १-२ (२), जगन्नाथ भोगीलाल, लखनऊ, '०३-०५

,, : किस्मत का खेल (२) ,, ,, '०५

विट्ठलदास पाँचोटिया : कर्मवीर (४), लेखक, कलकत्ता, '३८

विद्या ठाकुर, कुमारी : आलोक (१), मेहता फाइन आर्ट प्रेस, बनारस, '३४

विद्यातीर्थ स्वामी : महाराष्ट्र कुल वंशावली (८), लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '६८

विद्याधर त्रिपाठी, सं० : नवोढ़ादर्श (१६), राजा जगमोहन सिंह, विजय राघवगढ़, '८७

विद्यापति ठाकुर : मैथिल कोकिल-विद्यापति (१ अनु०), [सं० ब्रजनंदन सहाय], नागरी प्रचारिणी सभा, आरा, '०६

,, : विद्यापति ठाकुर की पदावली (१ अनु०), नगेन्द्रनाथ गुप्त, लाहौर, '१०

,, : ,, (१ अनु०), नर्बदाप्रसाद माणिक, हिन्दी पुस्तक भंडार, लहरियासराय, '२६

,, : पुरुष-परीक्षा (३ अनु०), रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद, '१२

विद्यापति : पुरुष-परीक्षा (३ अनु०), नर्मदाप्रसाद माणिक, हिंदी, पुस्तक भंडार, लहरियासराय, '२७
" : कीर्त्तिलता (१ अनु०) [सं० बाबूराम सक्सेना], नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२६
विद्याभास्कर शुक्ल : प्राचीन भारतीय युद्ध और युद्ध सामग्री (८), लेखक, दारागंज, इलाहाबाद, '३१
" सं० : गल्प-लहरी (१६), हर्षवर्धन शुक्ल, इलाहाबाद, '३५
विद्याभूषण, 'विभु' : सोहराब और रुस्तम (१ बा०), कला कार्यालय, इलाहाबाद, '२३
" : पद्य-पयोनिधि (१६) " " '२३
" : दपोलशंख तथा अन्य कहानियाँ (३ बा०), कला कार्यालय, इलाहाबाद, '२३
" : चित्रकूट-चित्रण (१), लेखक, इलाहाबाद, '२५
" : गोबर गणेश (१ बा०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '२८
" : ज्योत्स्ना (१), रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद, '२६
विद्याभूषण सिंह : खेलो भैया (३बा०) " " '२६
" : शेखचिल्ली (३ बा०) " " '३०
" : गुड़िया (३ बा०) " " '३४
विद्यारण्य स्वामी : पञ्चदशी (१७ अनु०), (अनु०—आत्मस्वरूप स्वामी) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '८८
" : (१७ अनु०) (अनु०—मिहिरचंद्र), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई '०४
विनयमोहन शर्मा, एम० ए०, एल-एल० बी० : साहित्य-कला (६), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '४०
विनायक दामोदर सावरकर : हिंदू पाद-पादशाही (८ अनु०) कलकत्ता पुस्तकभंडार, हरिसनरोड, कलकत्ता, '२६
विनायकलाल दादू : चन्द्रभागा (२), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '०४

विनायक सीताराम सरवती : बोल्शेविज़्म (६), जीतमल लूणिया, आगरा, '२१

विनोदशङ्कर व्यास : अशांत (२), वैदेहीशरण, लहरियासराय, '२७

" : तूलिका (३), गंगा फाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '२८

" सं० : मधुकरी (१६), महादेवप्रसाद सेठ, मिर्ज़ापुर, '२६

" : भूली बात (३), लेखक, बनारस, '२६

" : प्रेम-कहानी (२०) (विक्टर ह्यूगो तथा डॉस्टाव्स्की के जीवनों की) बलदेव मंडल, राजादरवाजा, बनारस '३० !

" : धूप-दीप (३) लेखक, बनारस, '३२

" : इकतालीस कहानियाँ (३) " " '३२

" : उसकी कहानी (३), प्रमोदकुमार व्यास, बनारस, '३४

" *तथा ज्ञानचंद जैन : कहानी-कला (६), साहित्य-कुटीर, बनारस,* '३८

" : पचास कहानियाँ (३), लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '४[illegible]

" : प्रसाद और उनका साहित्य (१८) शिक्षासदन, बनारस, '४०

" : उपन्यास-कला (६) " " '४१

विन्ध्येश्वरीप्रसाद त्रिपाठी : मिथिलेश कुमारी (४), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '८८

विन्ध्येश्वरीप्रसाद मिश्र : सौर-साम्राज्य (१४), गृहलक्ष्मी कार्यालय, इलाहाबाद '२२

" : भारतीय वास्तुविज्ञान (१२) लेखक, ग्वालियर, '३[illegible]

विन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंह, विशारद : गोस्वामी तुलसीदास (१८), कालिका-सदन, बलिया, '२६

विमल विनय जी : मृगाङ्क-लेखा (१७ बा०), आत्मानन्द जैन ट्रेक्ट सोसाइटी, अंबाला, '१६

विश्वनाथ कविराज : साहित्य-दर्पण (६ अनु०) [सं० शालिग्राम शास्त्री] मृत्युञ्जय औषधालय, लखनऊ, '२२

विश्वनाथ द्विवेदी : तैल संग्रह (१३), कृष्ण औषधालय, पकरिया, पीलीभीत, '३४

विश्वनाथ पञ्चानन : न्याय सिद्धान्त-मुक्तावली (१५ अनु०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '१६००

विश्वनाथप्रसाद : मोती के दाने (१), हिंदी पुस्तक भण्डार, लहरियासराय, '३४

विश्वनाथप्रसाद मिश्र, एम० ए० : हिन्दी नाट्य-साहित्य का विकास (१६), सीताराम प्रेस, बनारस, '३०

,, सं० : भूषण-ग्रन्थावली (सटीक) (१८), साहित्य-सेवक कार्यालय, बनारस, '३१

,, सं० : पद्माकर-पञ्चामृत ('हिम्मत बहादुर-विरदावली', 'पद्माभरण', 'जगद्विनोद', 'प्रबोध-पचासा', 'गंगालहरी') रामरत्न पुस्तक भवन, बनारस, '३५

,, : बिहारी की वाग्विभूति (१८), द्वारकादास, बनारस, '३६

विश्वनाथ राय, एम० ए०, एल-एल० बी० : मिश्र की स्वाधीनता का इतिहास (८), चौधरी ऐण्ड संस, बनारस, '३६

,, : चीन का क्रान्तिकारी राष्ट्र निर्माता—डा० सनयातसेन (७), विद्याभास्कर बुकडिपो, बनारस, '३६

विश्वनाथ विद्यालङ्कार : बाल सत्यार्थप्रकाश (१७ बा०), राजपाल, सरस्वती आश्रम, लाहौर, '३०

विश्वनाथ शास्त्री : विश्व पर हिन्दुत्व का प्रभाव (८), अखिल भारतीय हिन्दू महासभा, कलकत्ता, '४०

विश्वनाथ सिंह : आनन्द रघुनन्दन (४ प्रा०), लाइट प्रेस, बनारस, '७१

विश्वनाथसिंह शर्मा : कसौटी (२), हिन्दी पुस्तक-एजेन्सी, कलकत्ता, '२६

: वेदना (२) शत्रुघ्नप्रसाद, कलकत्ता, '३०

विश्वम्भरनाथ जिज्जा : रूस में युगान्तर (८), श्रीराम बेरी, कलकत्ता, '२३
" : तुर्क तरुणी (२) शिवरामदास गुप्त, बनारस, '२५
विश्वम्भरनाथ शर्मा, 'कौशिक' : भीष्म (४), प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर, '१८
" : रूस का राहु (७), प्रताप आफ़िस, कानपुर, '१९
" : गल्प-मंदिर (३) बीसवीं सदी पुस्तकमाला आफ़िस, कानपुर, '१९
" : ससार की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ (९) प्रकाश पुस्तकालय कानपुर, '२४ !
" : चित्रशाला (३), गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२४
" : मणिमाला (३) " " '२९
" : माँ (२) " " '२९
" : भिखारिणी (३) " " '२९ !
" : कल्लोल (२), बीसवीं सदी प्रेस, मिर्जापुर, '३३
" : पेरिस की नर्तकी (३), साहित्य भवन लिमि०, इलाहाबाद, '४२
विश्वम्भर सहाय, 'व्याकुल' : बुद्धदेव (४), लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '४०
विश्वरूप स्वामी : पदावली (१), लाइट प्रेस, बनारस, '०८ !
विश्वेश्वरदत्त, पण्डित : तुलसीदास-चरित प्रकाश (१८), बनारसीप्रसाद, बनारस, '७७
विश्वेश्वरदत्त शर्मा : मानस-प्रबोध (१८), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '१७
विश्वेश्वरदयाल पाठक : बुनाई-विज्ञान (१२) साहित्य-निकेतन, दारागंज, इलाहाबाद, '४०
विश्वेश्वरदयाल, मुंशी : प्रेमोद्रेक (१), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '९१
विश्वेश्वरदयाल वैद्य : भारतीय रसायनशास्त्र (१३) लेखक, बरालोकपुर, इटावा, '३८

विश्वेश्वरदयाल वैद्य : यूनानी शब्दकोष (१३) लेखक, बरालोक, इटावा, '३९

विश्वेश्वरनाथ रेउ, महामहोपाध्याय : क्षत्रप वंश का इतिहास (८), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '१६

„ : भारत के प्राचीन राजवंश, भाग १-३, (८), नाथूराम प्रेमी, बंबई '२६

„ : राजा भोज (७), हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू०पी०, इलाहाबाद, '३२

„ : राठोड़ों का इतिहास (८), आर्कियालॉजिकल डिपार्टमेंट, जोधपुर, '३४

„ : मारवाड़ का इतिहास (८), „ „ '३८

विश्वेश्वरप्रसाद, सं० : रसिक मुकुन्द (१६) सम्पादक, पटना, '०६

विश्वेश्वरप्रसाद वर्मा : वीरेन्द्रकुमार वा चाँदी का तिलिस्म, भाग १-४, (२), हितचिंतक प्रेस, बनारस, '०७

विश्वेश्वरबख्शपाल वर्मा : अङ्गादर्श (१), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '९४

विश्वेश्वरानन्द स्वामी : रामायण-समालोचना (२०), वैद्यनाथ गुप्त, मिर्ज़ापुर, '०५

[विष्णु ?] : विष्णु-संहिता (१७ अनु०), नटवर चक्रवर्ती, कलकत्ता, '०७

विष्णुकान्त शास्त्री : निबंधमालादर्श (५ अनु०) (अनु०—गंगाप्रसाद अग्निहोत्री), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८९

विष्णुकृष्ण शास्त्री चिपलूणकर : इतिहास (५ अनु०) (अनु०—गंगाप्रसाद अग्निहोत्री), हिंदी साहित्य-सम्मेलन, इलाहाबाद, '२५

विष्णुकुमारी देवी : पदमुक्तावली (१), रामनाथ घोष, कलकत्ता, '८१

विष्णुगोविन्द शिवदिकर : कर्णपर्व (४), लेखक, व्यग्रोला, '७९

विष्णुदत्त, पंडित : शारीरक भाषा (१३), पंजाब इकोनामिकल प्रेस, लाहौर, '९७

विष्णुदत्त शुक्ल : पत्रकार कला (१२), शुक्ल-सदन-द्वारा, उन्नाव, '३०
,, : जापान की बातें (६), नवयुग प्रकाशन-मंदिर, पटना, '३८
,, : सभा-विज्ञान (११), साहित्य प्रकाशन, मंदिर, बाबूलाल लेन, कलकत्ता, '४१
,, : प्रूफ़-रीडिंग (१२), लेखक, शुक्ल प्रेस, बाबूलाल लेन, कलकत्ता, '४१
विष्णुदास : रुक्मिणी-मङ्गल (६), ज्वाला प्रकाश प्रेस, मेरठ, '७५
विष्णुदास स्वामी (नानकपंथान्तर्गत गहिर-गंभीर संप्रदाय के) : द्वादश ग्रंथ (१७), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '६४
,, : गहिर-गंभीर सुखसागर ग्रंथ (१७) ,, ,, '६४
विष्णु दिगंबर पालुस्कर : मृदङ्ग और तबला-वादनपद्धति (११), गंधर्व महाविद्यालय, लाहौर, '०३
,, : राग भैरव (११), लेखक, बंबई, '१३ द्वि०
,, : राग मालकोस (११) ,, ,, '१४ द्वि०
,, : सतार की पुस्तक (११) ,, ,, '१७
,, : सङ्गीततत्व दर्शक (११), लेखक, पंचवटी, नासिक, '२८
,, : सङ्गीत बालबोध (११ बा०) ,, ,, ,, '३१
विष्णु शर्मा : पञ्चतन्त्र (३ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '६८
,, : राजनीति (३ अनु०) (अनु०—लल्लूजी लाल), लाइट प्रेस, बनारस, '६७
,, : राजनीतीय पञ्चोपाख्यान (३ अनु०), सखाराम मिस्त्रेत प्रेस, बंबई, '७६
,, : ,, (३ अनु०) नृत्यलाल सीलका प्रेस, कलकत्ता, '८०
विहारीलाल : नखशिख (१ प्रा०), कैलाश प्रेस, कानपुर, '६२
,, : सतसई (१ प्रा०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८२ तृ०
,, : ,, (१ प्रा०) (टीका०—हरिप्रसाद) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६३

विहारीलाल : सतसई (१ प्रा०) सुपरिंटेंडेन्ट, गवर्नमेंट प्रिंटिंग, इंडिया, कलकत्ता, '९६
„ : „ (२ प्रा०) (टीका०—लाल कवि) छोटेलाल लक्ष्मीचंद, लखनऊ '०६
„ : बिहारी बोधिनी (१ प्रा०) (टीका० भगवानदीन), साहित्य-सेवा प्रेस, बुलानाला, बनारस, '२१
„ : सतसई (१ प्रा०) काशीनाथ शर्मा, चाँदपुर, बिजनौर, '२५
„ : बिहारी-रत्नाकर (१ प्रा०) (टीका०-जगन्नाथदास रत्नाकर) गंगा पुस्तकमाला कर्यालय, लखनऊ, '२६
„ : बिहारी की सतसई (१ प्रा०), (टीका०—पद्मसिंह शर्मा) काव्यकुटीर, दिल्ली, '२६

विहारीलाल भट्ट : साहित्य-सागर (६), बिजावर नरेश, '३७

विहारीलाल भागवतप्रसाद आचार्य : अलङ्कारादश (६), (गुजराती और हिंदी), मगनलाल बीकम भाई, सूरत, '६७

वीरबल : बलबीर-पचासा (१ प्रा०) [सं० रामकृष्ण वर्मा] भारत जीवन प्रेस, बनारस, '०७

वीर विक्रमदेव : गजशास्त्र (१३), लेखक, रायपुर, '०६

वीरेश्वर सिंह : अँगुली का घाव (३), रणजीतसिंह, बनारस, '३६

वुलनर, ए० सी० : प्राकृत-प्रवेशिका (१० अनु०) (अनु०—डा० बनारसीदास जैन) पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर, '३६

वृन्द कवि : वृन्द-सतसई (१७ प्रा०) खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६०
„ : वृन्दविनोद-सतसई (१७ प्रा०), भारत जीवन प्रेस, काशी, '६१
„ : वृन्द-सतसई (१७ प्रा०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '६७
„ : सतसई (१७ प्रा०), शिवदुलारे बाजपेयी, कल्याण, '२४
„ : „ (सटीक) (१७ प्रा०), दास ब्रदर्स, लाहौर, '२४
„ : „ (१७ प्रा०), मेहरचंद लक्ष्मणदास, लाहौर, '२६

वेङ्कटेशनारायण तिवारी : राजनीति-प्रवेशिका (१५ बा०), अभ्युदय प्रेस, इलाहाबाद' १७

,, : विराम-संकेत (१०) साहित्य मन्दिर, लखनऊ, '३?

,, : चारु चरितावली (८ बा०), लीडर प्रेस, इलाहाबाद'३४

,, : रणमत्त संसार (६) इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '४०

वेणीमाधव अग्निहोत्री : बृन्दावन-आमोद (१), राजा महेवा, खीरी, '६२

वेणीमाधव त्रिपाठी : मसि-सागर (१२), लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '६७

बेणीमाधवदास : मूल गोसाईं चरित (१इ प्रा०), गीताप्रेस, गोरखपुर, '३४

वेदव्यास लाला, एम० ए० : संस्कृत साहित्य का इतिहास (२०), लालजीदास, लाहौर, '२७

,, : हिन्दी नाट्य कला (६), साहित्य भवन, लाहौर, '३७

वेल्स, एच० जी० : संसार का संक्षिप्त इतिहास (८ अनु०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३५

वैद्यनाथ शर्मा : गोपी विरह-छंदावली (१) मातावदल गुप्त, इलाहाबाद, '६१

'व्यथितहृदय', सं० : बौद्ध कहानियाँ (२०), केदारनाथ गुप्त, इलाहाबाद, '३४

,, : जीव जन्तुओं की कहानियाँ (१४ बा०)' साहित्य-निकेतन, दारागंज, इलाहाबाद, '३६

,, : रामू-श्यामू (३ बा०) ,, ,, '३६

,, : तीरगुलेली (३ बा०) ,, ,, '३६

,, : हिंन्दी काव्य की कलामयी तारिकाएँ (१६), प्रमोद पुस्तक-माला, कटरा, इलाहाबाद '३६

,, : नेताओं का बचपन (८ बा०), वैजनाथ केडिया, बनारस, '३६

'व्यथित हृदय' : सवारियों की कहानियाँ (३ बा०) भार्गव भूषण प्रेस, बनारस, '४०

,, : पुण्यफल, (४) बालशिक्षा समिति, बाँकीपुर, '३७

व्यास : देवी भागवत (१७ अनु०)(अनु०—ज्वालाप्रसादशर्मा) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '१०

,, : आन्दाम्बुनिधि (१७ अनु० ('भागवत' पद्य में) (अनु०—महाराजा रघुराजसिंह), अनुवादक, बनारस, '६८

,, : आनन्दसिन्धु (१७ अनु०) ('भागवत') (अनु०—मुंशी हरनारायण), कोहेनूर प्रेस, लाहौर, '६८

,, : भागवत भाषा—एकादश स्कंध (१७ अनु०) (अनु०—चतुरदास), कायजी भीमजी, बंबई, '७४

,, : भागवत (१७ अनु०)(पद्यानुवाद) अनु०—जयसुख), अनुवादक, मुरादाबाद, '७८

,, : ,, —टीका सहित (१७ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '८५

,, : शुकसागर ('भागवत') (१७ अनु०) ,, ,, '८६

,, : भागवत (१७ अनु०)(अनु०—नित्यस्वरूप ब्रह्मचारी), सुखी प्रेस, मथुरा, '६६

,, : शुकोक्ति सुधासागर ('भागवत') (१७ अनु०) (अनु०—रूपनारायण पाण्डेय), निर्णयसागर प्रेस, बंबई, '०६

,, : भागवत (१७ अनु०), बंगवासी प्रेस, कलकत्ता, '१०

,, : भक्तचिन्तामणि ('भागवत' से) (१७ अनु०) हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, '८५

,, : रुक्मिणी-मङ्गल ('भागवत' से) (१७ अनु०) लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ, '६५

,, : पञ्चगीत ('भागवत' से) (१७ अनु०) (अनु०—कन्हैयालाल पोद्दार), अनुवादक, बंबई, '०६

व्यास : पुरञ्जनाख्यान 'भागवत' से) (१७ अनु०) (अनु०—नारायण शास्त्री) लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '६५

" : भक्ति-रत्नावली ('भागवत' से) (१७ अनु०), पाणिनि आफ़िस, इलाहाबाद, '१४ रिप्रिंट

" : लिङ्गपुराण (१७ अनु०) (अनु०—दुर्गाप्रसाद शर्मा), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८६ रिप्रिंट

" : मार्कंडेय पुराण (१७ अनु०) (अनु०—कन्हैयालाल शर्मा), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '०२

" : " (१७ अनु०), बंगवासी प्रेस, कलकत्ता, '०८

" : विष्णुपुराण (१७ अनु०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८१

" : विष्णुपुराण (पद्यानुवाद) (१७ अनु०) (अनु०—भिखारीदास), नवल किशोर, प्रेस, लखनऊ, '६४

" : " (१७ अनु०) बंगवासी फ़र्म, कलकत्ता, '१६००

" : वाराह, लिङ्ग तथा विष्णुपुराण, (१७ अनु०) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८३

" : हरिवंश—भाषा (१७ अनु०), लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, ६७'

" : हरिवंश पुराण—भाषा (१७ अनु०), पन्नालाल बाकलीवाल, कलकत्ता, '१७

" : पद्म पुराण (१७ अनु०) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६३

" : गरुड़ पुराण—भाषा (१७ अनु०), श्रीधर शिवलाल बम्बई, '१४

" : वामन पुराण—भाषा (१७ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०४

" : आदि पुराण (१७ अनु०) " " '०८

" : ऋग्वेद भाष्य (१७ अनु०) [सं० शिवशङ्कर शर्मा] आर्यमण्डल, अजमेर, '२४
" : ऋग्वेद संहिता (१७ अनु०) [सं० जयदेव शर्मा], आर्य साहित्य-मण्डल अजमेर, '३५
" : " (१७ अनु०) (टीका०—माध्व तथा अन्य प्राचीन) सं० डॉ० लक्ष्मणस्वरूप], मोतीलाल बनारसीदास, सैद मिट्ठा बाज़ार लाहौर, '४०
" : शुक्ल यजुर्वेद भाष्यम् (१७ अनु०) (भाष्य०—ज्वालाप्रसाद मिश्र), ज्वालाप्रकाश प्रेस, आगरा, '८६
" : यजुर्वेद भाषाभाष्य भाग १-४ (१७ अनु०), (भाष्य०—दयानन्द सरस्वती) वैदिक प्रेस, अजमेर, '६०
" : वाजसनेयी शुक्ल यजुर्वेद संहिता (१७ अनु०) (भाष्य०—ज्वालाप्रसाद मिश्र), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०३
" : यजुर्वेद संहिता-भाषाभाष्य (१७ अनु०) [सं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार], आर्य साहित्य-मण्डल, अजमेर, '३०
" : सामवेद भाष्य (१७ अनु०) (भाष्य०—ज्वालाप्रसाद) सत्यप्रकाश प्रेस, आगरा, '६१
" : " (१७ अनु०) (भाष्य०—तुलसीराम स्वामी) स्वामी प्रेस, मेरठ, '६८
" : सामवेद संहिता (१७ अनु०) [सं० रामस्वरूप शर्मा] संपादक, मुरादाबाद, '०५ ?
" : " (१७ अनु०) [सं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार], आर्य साहित्य-मंडल, अजमेर, '२८
" : अथर्ववेद भाष्यम् (१७ अनु०) (भाष्य०—गिरिधारीलाल शास्त्री), भाष्यकार, फर्रुखाबाद, '०४
" : अथर्ववेद संहिता—भाषाभाष्य (१७ अनु०) [सं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार], आर्य साहित्य-मंडल, अजमेर, '२८

व्यास, वेद—सं० : मुण्डक और माण्डूक्य उपनिषद् (१७ अनु०), (अनु०—राजाराम), आर्ष ग्रंथावली कार्यालय, लाहौर, '०६

,, : ,, (१७ अनु०), (अनु०—यमुनाशङ्कर पञ्चोली), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६०

,, : तैत्तरीय उपनिषद् (१७ अनु०), (अनु०—भीमसेन शर्मा), बलदेवप्रसाद, फैज़ाबाद, '६५

,, : ,, (१७ अनु०), (अनु०—राजाराम), आर्ष ग्रंथावली कार्यालय, लाहौर, '०६

व्यास बादरायण : श्वेताश्वतर उपनिषद् (१७ अनु०) (अनु० तुलसीराम स्वामी), स्वामी प्रेस, मेरठ, '६८

,, : ,, (१७ अनु०) (अनु०—राजाराम), आर्ष ग्रंथावली कार्यालय, लाहौर, '०७

,, : ,, (१७ अनु०) (अनु०—रामस्वरूप शर्मा) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '१२

,, : बृहदारण्यक उपनिषत्—शांकर भाष्य समेत (१७ अनु०) (अनु०—पीतांबर पुरुषोत्तमजी) कराकबंदर, '१०१

,, : ,, (अनु०—शिवशंकर शर्मा) वैदिक प्रेस, अजमेर, '१२

,, : गोपालतापनी उपनिषद् (१७ अनु०), (अनु० कन्हैयालाल), लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद, '६८

,, : रामतापनी उपनिषद् (१७ अनु०) (अनु०—श्रीराम नारायणदास) छोटेलाल लक्ष्मीचंद, अयोध्या, '०३

,, : कठ, ईशावास्य, केन, मुण्डक तथा प्रश्नोपनिषत—शांकर भाष्य सहित (१७ अनु०) गीता प्रेस, गोरखपुर, '३५

,, : पुरुष सूक्त (१७ अनु०) वैदिक पुस्तक प्रचारक फंड, मेरठ, '६६

व्यास, वेद, सं० : ईशाद्यष्ट उपनिषद् (१७ अनु०), (अनु०—पीताम्बर शर्मा) निर्णय सागर प्रेस, बंबई, '७६
,, : मुक्तिक उपनिषद् (अनु०—हरिशंकर शर्मा), लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '६६
,, : दशोपनिषद् भाषान्तर (१७ अनु०), (अनु०—अच्युतानंद गिरि), विजयशंकर जी, भावनगर, '८७
,, : ,, ब्रह्मसूत्र—वेदान्त प्रकाशिका (१७ अनु०), (अनु०—अनन्तलाल टीकमलाल वैष्णव) दशरथलाल व्यास, पटना, '१०
,, : ,, (१७ अनु०), (अनु०—मौलिकनाथ) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '०३
,, : रुद्री (१७ अनु०) (अनु०—बलदेवप्रसाद मिश्र) संस्कृत पुस्तकालय, सदर दरवाज़ा, मेरठ, '६५
,, : ,, वेदान्त दर्शन (१७ अनु०) (अनु०—रामस्वरूप), अनुवादक, मुरादाबाद, '०६ रिप्रिंट
व्यास, बादरायण : ,, वेदान्त दर्शन (१७ अनु०) (भाष्य०—दयानन्द सरस्वती), दिल्ली '३७
,, : ,, —प्रथम अध्याय, (१७ अनु०) भाई गोविंद सावकार, पूना, '६५
,, : ,,—शांकरभाष्य (१७ अनु०), चोखानन्द जिज्ञासु, डेरागाजी खाँ, '११
,, : ,, —शांकरभाष्य (१७ अनु०) केशरी प्रेस, आगरा, '३३
व्यास, सं० ? : अध्यात्मरामायण (१७ अनु०) (अनु०—उमादत्त), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८५
,, : ,, (१७ अनु०) (अनु०—बैजनाथ) ,, ,, '६५
,, ? : अध्यात्म रामायण (पद्यानुवाद), (१७ अनु०), (अनु०—गोकुलनाथ), लाइट प्रेस, बनारस, '७०

ब्रजगोपाल भटनागर : ग्रामीय अर्थशास्त्र (६), हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '३३

ब्रजजीवनदास गुजराती, सं० : वल्लभविलास (१७), विक्टोरिया प्रेस, बनारस, '८६

ब्रजदास : गोस्वामी जी महाराज नी बंसावली (१७), लेखक, बंबई, '६८

ब्रजनन्दन सहाय : ब्रजविनोद (१), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०१
" : अद्भुत प्रायश्चित (२), लेखक, आरा, '०६
" : अर्थशास्त्र (१५), नागरी प्रचारिणी सभा, आरा, '०६
" : राजेन्द्र-मालती (२), सिद्धेश्वरनाथ, बी० ए०, एल्-एल्० बी०, आरा, '०६
" : पण्डित बलदेवप्रसाद मिश्र की जीवनी (१८), नागरी प्रचारिणी सभा, आरा, '०७
" : बाबू राधाकृष्णदास की जीवनी (१८) " " '०७
" : उद्धव (४), रामरणविजयसिंह, बाँकीपुर, '०६
" : राधाकान्त (२), हरिदास ऐन्ड कंपनी, कलकत्ता, '१२
" : अरण्यबाला (२), राय रामदास, बनारस, '१५
" : लाल चीन (२), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१६
" : सौन्दर्योपासक (२), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '१६
" : ऊषाङ्गिनी (४) " " '२५

ब्रजनाथ शर्मा धौचक : सर विलियम वेडरबर्न (७), लेखक, आगरा, '१०

ब्रजभूषणदास : वल्लभविलास, भाग १-४ (१७), लेखक, बनारस, '६८-०२

ब्रजभूषणप्रसाद : खेल-खिलौना (१ बा०), हिंदी पुस्तक-एजेन्सी, कलकत्ता, '२५

ब्रजमोहनलाल, सं० : विदूषक (१६), हिमालय प्रेस, मुरादाबाद, '२४

ब्रजरत्नदास, बी० ए०, एल्-एल्० बी०, सं० : रहिमन-विलास (१८), रामनारायणलाल, इलाहाबाद, '३०

,, : बादशाह हुमायूँ (७), लेखक, बनारस, '३१

,, : हिन्दी साहित्य का इतिहास (१६), ,, ,, '३३

,, : उर्दू साहित्य का इतिहास (२०), लेखक, बनारस, '३४

,, सं० : भारतेन्दु-ग्रंथावली, भाग १-२ (१८) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '३४

,, : भारतेन्दु हरिश्चंद्र (१८) हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '३५

,, : हिन्दी-नाट्यसाहित्य (१६, हिन्दी साहित्य-कुटीर, बनारस, '३८

,, : खड़ीबोली हिन्दी साहित्य का इतिहास (१६), द्वारकादास, बनारस, '४१

ब्रजरत्न, पण्डित : सूरदास का जीवन-चरित्र (१८), साहिबलाल गनेशीलाल, मुरादाबाद, '०३

ब्रजराज तथा 'वियोगी हरि', सं० : मीरा, सहजो, दयाबाई का पद्यसंग्रह (१८), साहित्य-भवन लिमि०, इलाहाबाद, '२२

ब्रजलाल, डॉ० : शस्त्र चिकित्सा (१३), रघुनाथ प्रसाद, लाहौर, '८७

ब्रजवल्लभ मिश्र : पदार्थ संख्या कोष (१०), वल्लभ प्रेस, अलीगढ़, '११

ब्रजवासीदास : ब्रजविलास (१ प्रा०), ज्ञानसागर प्रेस, बंबई, '६६ ई०

,, : ,, (१ प्रा०), शिवनारायण, आगरा, '६६

,, : ,, (१ प्रा०) जदुनाथदत्त, कलकत्ता, '८०

,, : ,, (१ प्रा०) डायमंड जुबिली प्रेस, कानपुर, '६६

,, : ,, (१ प्रा०) अरुणोदय प्रेस, कलकत्ता, '०१

,, : गोवर्धन विलास (१ प्रा०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८८

ब्रजबिहारी लाल : सङ्गीत-सुधा (१), लेखक, बनारस, '१६००

ब्रजेशबहादुर : जन्तु-जगत (१४), हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '३०

ब्रजेश्वर वर्मा, एम० ए० : हिंदी के वैष्णव कवि (१६), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '४१

श

शकुन्तला परांजपे और राजेन्द्र नागर : प्रतिस्पर्धा (४ अनु०), वाई० जोशी, लखनऊ, '३७

शकुन्तला श्रीवास्तव : रजकण (१), पटना पब्लिशर्स, पटना, '३६

शङ्कर : उषा-चरित्र (१), पं० सतीदीन सीताराम, कानपुर, '०४

शङ्कर आचार्य : आत्मबोध तथा तत्त्वबोध (१७ अनु०), जावजी दादाजी, बंबई, '८४

„ : आत्मबोध (१७ अनु०) (अनु०—माधवानंद), निर्णय-सागर प्रेस, बंबई, '८४

„ : तत्वबोध (१७ अनु०) „ „ '८४

„ : मोह-मुद्गर (१७ अनु०) (अनु०—शिवप्रसाद सितारे-हिंद), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८७

„ : अपरोक्षानुभूतिं (१७ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '६२

„ : प्रश्नोत्तरी (१७ अनु०), (अनु०—गौरीशङ्कर शर्मा), लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '६५

„ : आर्य चर्पटमंजरिका (१७ अनु०) (अनु०—तुलसीराम स्वामी), स्वामी प्रेस, मेरठ, '६६

„ : मणिरत्नमाला (१७ अनु०), (अनु०—हरिशंकर शास्त्री), संस्कृत पुस्तकालय, हरिद्वार, '६६

„ : महावाक्य विवरण (१७ अनु०), (अनु०—रामकृष्णानंद गिरि), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '०३

„ : सौंदर्य-लहरी (१७ अनु०), गौरीशंकर पाण्डेय, रीवा, '१०

„ : अतार्क (१७ अनु०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '२८

शङ्करसहाय सक्सेना : भारतीय सहकारिता आन्दोलन (६) एम० एस० सक्सेना, बरेली कॉलेज, बरेली, '३५
,, : प्रारम्भिक अर्थशास्त्र (१५), श्रीराम मेहरा, आगरा, '४०
,, : गाँवों की समस्या (६) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '४१

शङ्करानन्द सरस्वती : आत्मपुराण (१७ अनु०), हरिप्रसाद भागीरथ जी, बम्बई, '८५ द्वि०
,, : ,, (१७ अनु०) (अनु०—चिद्घनानन्द गिरि) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६५ ?
,, : विज्ञान नाटक (४ अनु०), शिवलाल, मुरादाबाद, '६८
,, : आत्मरामायण (१७ अनु०), लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद, '६६
,, : ,, दीपिका (१७ अनु०), कुन्दनलाल बलभद्र प्रसाद त्रिपाठी, कानपुर, '०४
,, : ,, (१७ अनु०) [सं० चेतराम स्वामी तथा चूड़ामणि मास्टर], सम्पादक, अम्बाला, '१८

शचीन्द्रनाथ सान्याल : बन्दी जीवन (८ अनु० भाग १-२,) जितेन्द्रनाथ सान्याल, इलाहाबाद, '२३
,, : वंशानुक्रम विज्ञान (१४) इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, ['३६ ?]

शम्भुदयाल : असली व लावनी ख्यालात तुर्रा (१), गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास, बम्बई, '८८

शम्भुदयाल मिश्र : जीवन-विज्ञान (१४), विजय प्रेस, इलाहाबाद, '३३

शम्भुदयाल सक्सेना : उत्सर्ग (१), रमेशचन्द्र वर्मा, फर्रुखाबाद, '३१
,, : बहूरानी (२), रामकली देवी, इलाहाबाद, '३०
,, : बन्दनवार (३), रमेशचन्द्र वर्मा, फर्रुखाबाद, '३२
,, : अमरलता (१), नवयुग ग्रन्थकुटीर, फर्रुखाबाद, '३३
,, : चित्रपट (३), भारत पब्लिशर्स लिमि०, पटना, '३३
,, : भिखारिन (१), रमेशचन्द्र वर्मा, फर्रुखाबाद, '३४

शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय : पण्डित जी (२ अनु०) इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '२५

" : बड़ी दीदी (२ अनु०) " " '२५

" : जयमाला (२ अनु०), हिन्दी पुस्तक भण्डार, लहरिया सराय '२६

" : मझली दीदी (२ अनु०), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद '२६

" : नवविधान (२ अनु०), " " '२७

" : अरक्षणीया (२ अनु०) " " '२७

" : देहाती समाज (२ अनु०) " " '२७

" : लेनदेन (२ अनु०) " " '३०

" : गृहदाह (२ अनु०) " " '३२

" : छुटकारा (२ अनु०) " " '३२

" : देवदास (२ अनु०), शङ्करसिंह, बनारस, '४१

" : शुभदा (२ अनु०), पुस्तक मंदिर, १७७, हरिसन रोड, कलकत्ता, '४०

" : शेष प्रश्न (२ अनु०), नाथूराम प्रेमी, बंबई, '४१

शहज़ादसिंह : विश्वामित्र (१), नरसिंह, लखनऊ, '२५

शा, जॉर्ज बर्नार्ड : सृष्टि का आरम्भ (४ अनु०), सरस्वती प्रेस, बनारस, '३६

" : समाजवाद-पूँजीवाद (१५ अनु०), सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, '४०

शाण्डिल्य : भक्तिदर्शन ('भक्तिसूत्र' सटीक), (१७ अनु०), भारतधर्म महामंडल कार्यालय, बनारस, '६८

" : " ('भक्तिसूत्र' सटीक), (१७ अनु०), (टीका०—रामस्वरूप शर्मा) सनातनधर्म प्रेस, मुरादाबाद, '१२

शन्ताराम मोरेश्वर चित्रे : मधुमक्खी-पालन (१२), अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ, वारधा, '४१ द्वि०

शालिग्राम शर्मा : हरियश गायन (१), लाइटनिंग प्रेस, मेरठ, '९८
शालिग्राम शास्त्री : आयुर्वेद महत्व (१३) मृत्युञ्जय औषधालय, लखनऊ, '२५
,, : रामायण में राजनीति (८), ,, ,, '३१
शालिग्राम श्रीवास्तव : प्रयाग प्रदीप (६), हिंदुस्तानी एकेडमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '३७
शिखरचंद जैन, साहित्यरत्न : कविवर भूधरदास और जैन-शतक (१८), वीर सार्वजनिक वाचनालय, इंदौर, '३७
,, : सूर—एक अध्ययन (१८) नरेन्द्र साहित्य कुटीर, दीतवरिया, इंदौर, '३६ ?
,, : हिंदी के तीन प्रमुख नाटककार (१६) ,, ,, '४१
,, : प्रसाद का नाट्य-चिन्तन (१८) ,, ,, '४१
,, : हिंदी नाट्य-चिन्तन, (१६) ,, ,, '४१
,, : नारी हृदय की अभिव्यक्ति (१६) ,, ,, '४१
शिराज़, फिडले : भारत की दरिद्रता (६ अनु०) मुद्रक—नेशनल जनरल्स प्रेस, दिल्ली, '३७ तृ०
[शिव ?] : शिव-संहिता (१७ अनु०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '६१
,, : शिव-तन्त्र (१७ अनु०), जैन प्रेस, लखनऊ, '१६००
शिवकुमार शास्त्री : यतीन्द्र जीवनचरित (७), चौधरी महादेव प्रसाद, इलाहाबाद, '६१ रिप्रिंट
,, : नेलसन की जीवनी (७), रामनारायण लाल, इलाहाबाद, '२८
शिवकुमार सिंह : कालबोध (१४), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '६५
शिवचन्द्र : धात्रीकर्म प्रकाश (१३), लेखक, हरद्वार, '६७
शिवचन्द्र भरतिया : कनक सुन्दर (२) लेखक, कलकत्ता, '०४
,, : प्रवास कुसुमावली भाग १ (१) ,, ,, '०४
,, : प्रवास कुसुमावली (सम्पूर्ण) (१), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१३

शिवचन्द्र भरतिया : विचारदर्शन (१५) ब्रजवल्लभ हरिप्रसाद, रामबाड़ी, कालबादेवी रोड, बंबई, '१६

शिवचंद्र मैत्र, डॉ० : पशु-चिकित्सा (१३) गोधर्म प्रकाश प्रेस, फर्रुखाबाद, '६५

शिवचरण पाठक शास्त्री : रंगाई-धुलाई विज्ञान (१२), हिन्दी पुस्तक-एजेन्सी, गनपत रोड, लाहौर, '३८

शिवचरण शर्मा : फेफड़ों की परीक्षा व उनके रोग (१३) लेखक, फैज फगवाड़ा, कपूरथला स्टेट, '२८

„ : व्रण बन्धन या पट्टियाँ (१३) „ „ '२६

शिवचरन लाल : क्षेत्रमिति प्रकाश (१४) लेखक, आगरा '७५

शिवदत्त ज्ञानी : नीमाड़ केसरी (४) नानामुकुन्द नवले, हारदा, '३८

शिवदयाल उपाध्याय : हिन्दी की किताब (१६ बा०), लेखक, मेयो कालेज अजमेर, '८३

शिवदानसिंह चौहान : रक्तरञ्जित स्पेन (६), लक्ष्मी आर्ट प्रेस, दारागंज, प्रयाग, '३६

शिवदास : लोकोक्ति-कौमुदी (१०), [सं० सुधाकर द्विवेदी], भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६०

„ : सुधा-सिन्धु (१), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६६

शिवदास गुप्त, 'कुसुम' : श्यामा (२), श्यामलाल गुप्त, बरहज, गोरखपुर, '२०

„ : कीचक-बध (१), वर्मन प्रेस, कलकत्ता, '२१

„ : ऊषा (२), गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२५

शिवनन्दन त्रिपाठी (सं०) : अन्योक्ति मुक्तावली (१६) विहार बंधु प्रेस, बाँकीपुर, '०४

शिवनन्दन मिश्र : उषा (४) कन्हैयालाल बुकसेलर, पटना सिटी, '१८

शिवनन्दन सहाय : सचित्र हरिश्चन्द्र (१८), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर '०५

शिवनन्दन सहाय,, सं० : कविता कुसुम (२०), (शेली, टेनीसन आदि की कुछ कविताओं के अनुवाद), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०६

,, : स्वर्गीय बाबू साहिबप्रसाद सिंह (७) ,, ,, '७८

,, : कृष्ण सुदामा (४) सिद्धनाथ सिंह, आरा, '७०

,, : भगवानप्रसादजी (७), गोविन्ददेव नारायणशरण, छपरा, '०८

,, : सिक्ख गुरुओं की जीवनी (८), नागरी प्रचारिणी सभा, आरा, '१७ ?

,, : गोस्वामी तुलसीदास का जीवन-चरित (१८), बिहार स्टोर, आरा, '१७

,, : गौराङ्ग महाप्रभु (७), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '२७

,, : कैलाश-दर्शन (६), हिंदी पुस्तकभंडार, लहरियासराय, '३१

शिवनन्दन सिंह : देश-दर्शन (६), नाथूराम प्रेमी, बंबई, '१८

शिवनाथ : वैदिक जीवन (१७), पं० राजाराम, लाहौर, '०५

शिवनाथ मिश्र : अवाक् वार्तालाप (१२), रसिकपंथ, चौक, लखनऊ, '८५

शिवनाथ योगी : मत्स्येन्द्रनाथ और गोरखनाथ की उत्पत्ति (१८) ऐंग्लो संस्कृत प्रेस, लाहौर, '६०

शिवनाथ शर्मा : मानवी कमीशन (४), [दामोदर प्रेस ?] लखनऊ, '१४ ?

,, : नवीन बाबू (४) ,, ,, '१४

,, : बहसी पंडित (४) ,, ,, '१४

,, : दरबारी लाल (४) ,, ,, '१४

,, : कलियुगी प्रह्लाद (४) ,, ,, '१४

,, : नागरी-निरादर (४) ,, ,, '१४

,, : चण्डूलदास (४) ,, ,, '१४

शिवनारायण द्विवेदी : सन् १८५७ के गदर का इतिहास (८), हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '२२

शिवनारायण मिश्र, सं० : राष्ट्रीय वीणा (१८) संपादक, कानपुर, '१८

शिवनारायण वर्मा : गल्प-शतक (३), प्रभुदयाल शर्मा, इटावा, '१६

शिवनारायण श्रीवास्तव : हिन्दी उपन्यास (१६), सरस्वती मन्दिर, बनारस, '४०

शिवन्न शास्त्री : हिन्दी-तैलुगू कोष (१०) हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रचार कार्यालय, ट्रिप्लिकेन, मद्रास, '२२

,, : हिन्दी-तैलुगू व्याकरण (१०) ,, ,, '२५

शिवपालसिंह : शिवपाल विनोद (१) लेखक, लखनऊ, '०३

शिवपूजन सहाय : बिहार का बिहार (८), ग्रन्थमाला ऑफ़िस, बाँकीपुर, '१८

,, : महिला-महत्व (३), हिन्दी पुस्तक भण्डार, लहरियासराय, '२२

,, : देहाती दुनियाँ (२) नर्बदाप्रसाद माणिक, लहरियासराय दरभंगा, '२६

,, : अर्जुन (१७ बा०), चन्द्रशेखर पाठक, कलकत्ता, '२६

,, सं० : प्रेम-पुष्पाञ्जलि (१६), वीर मन्दिर, आरा, '२८ ?

शिवप्रसाद गुप्त : पृथ्वी-प्रदक्षिणा (६), मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, बनारस, '२४

शिवप्रसाद त्रिपाठी : शिव सङ्गीत प्रकाश (११), शारदा संगीत भवन, अस्सी, काशी, '२४

शिवप्रसाद सितारेहिन्द : बच्चों का इनाम (१४ बा०), गवर्नमेंट प्रेस, इलाहाबाद, '६७ तृ०

,, सं० : बामा मनोरञ्जन (३ प्रा०) ,, ,, '६७ तृ०

,, सं० : मानव-धर्मसार (२०) ,, ,, '६७ तृ०

,, सं० : हिन्दी सेलेक्शन्स (१६ बा०) इ० जे० लाज़रस ऐन्ड कम्पनी, बनारस, '६७

शिवशङ्कर : वाशिष्टसार (२०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '८८ रिप्रिन्ट
शिवशङ्कर भट्ट : चन्द्रकला (२) भार्गव बुक कम्पनी, जबलपुर, '६७
शिवशङ्कर मिश्र : भारत का धार्मिक इतिहास (८), रिखबदास वाहिती, ४, चोरबगान, कलकत्ता, '२३
" : सचित्र बाग़वानी (१३), यामिनी मोहन बैनर्जी, कलकत्ता, '३०
शिवशङ्कर शर्मा : जाति-निर्णय (१७), वैदिक प्रेस, अजमेर, '०७
शिवशरणलाल मिश्र : भक्तिसार (१), लेखक, इलाहाबाद, '८८
शिवशर्मा सूरि : वासुदेव रसानन्द (६ अनु०), शिवशर्मा संस्कृत पाठशाला, इलाहाबाद, '३७
शिवसहाय उपाध्याय : नायिका रूप दर्शन (६), लेखक, बंबई, '८८
शिवसिंह सेंगर : शिवसिंह सरोज (१६), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '७८
शिवाधार पाण्डेय, प्रोफ़ेसर : पदार्पण (१) लेखक, इलाहाबाद, '१५
शिवानन्द : आत्मदर्शन (१७), पूना, '१७
शिवानन्द स्वामी : ब्रह्मचर्य ही जीवन है (१२), छात्रहितकारी पुस्तकमाला कार्यालय, इलाहाबाद, '२२
शीतलप्रसाद : मनमोहिनी (२), रामरत्न वाजपेयी, लखनऊ, '०५
शीतलप्रसाद ब्रह्मचारी : जैनधर्म का महत्व (१७), 'जैनमित्र' कार्यालय, बम्बई, '११
" : मध्य प्रान्त, मध्य भारत और राजपूताने के प्राचीन जैन स्मारक (८), जैन विजय प्रिंटिंग प्रेस, सूरत, '२६
" : जैन-बौद्ध तत्त्वज्ञान (१७), लेखक, चंदावाड़ी, सूरत, '३४
" : जैनधर्म में दैव और पुरुषार्थ (१७), वीरसार्वजनिक वाचनालय, इंदौर, '४१
शीतलप्रसाद, मुंशी : प्रेम-सरोवर (१) लेखक, मेरठ, १९००
शीतलाप्रसाद तिवारी : कृषि विज्ञान (१२), रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद, '२६
: कृषि-प्रवेशिका (१२ बा०), हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '४१

शीतलाप्रसाद तिवारी : कृषि कर्म (१२), रामनारायण लाल, इलाहाबाद, '४१

शीतलासहाय : हिन्दू त्यौहारों का इतिहास (१७), चाँद कार्यालय, इलाहाबाद, '२७ द्वि०

,, : मालकोस (२) ,, ,, '२७ !

शीतलासहाय सामंत, सं० : मानस-पीयूष (१८), संपादक, अयोध्या, '३०

शीला मेहता तथा लीला मेहता : मोतियों के बन्दनवार (२), वी० एन० मेहता, एलगिन रोड, इलाहाबाद, '३४

शुकदेव पाण्डेय : त्रिकोणमिति (४), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, '३५

शुकदेव विहारी मिश्र : हिन्दी साहित्य का भारतीय इतिहास पर प्रभाव (१६), पटना विश्वविद्यालय, '३४

शूद्रक : मृच्छकटिक (४ अनु०), लाला सीताराम, कानपुर, '९६

शेक्सपियर : भ्रमजालक (४ अनु०) मुन्शी इमदाद अली, इलाहाबाद, '७६

,, : शरद ऋतु की कहानी (४ अनु०) मित्र विलास प्रेस, लाहौर, '८१

,, : वेनिस का व्यापारी (४ अनु०) ,, ,, '८१

,, : वेनिस का बाँका (४ अनु०), गोकुलचंद्र शर्मा, कलकत्ता, '८८

,, : दुर्लभ बंधु (४ अनु०) (अनु०—हरिश्चंद्र), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '८८

,, : प्रेमलीला (४ अनु०) (अनु०—गोपीनाथ पुरोहित), अनुवादक, जयपुर, '८६

,, : रोमियो जूलियट (४ अनु०) (अनु०—चतुर्भुज औदीच्य) रामलाल वर्मा, अपरचितपुर रोड, कलकत्ता, '११

,, : मनमोहन का जाल (४ अनु०) (अनु०—सीताराम, बी० ए०) रामनारायण लाल, इलाहाबाद, '१२

,, : भूलभुलैयाँ (४ अनु०), (अनु०—लाला सीताराम), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '१५

शेक्सपियर— : ऐज़ यू लाइक इट (४ अनु०) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '६७

" : जयन्त (४ अनु०) (अनु०—गणपति कृष्ण गुर्जर), ग्रंथ प्रकाशन समिति, बनारस, '१२

" : ओथेलो (४ अनु०) (अनु०—गदाधरसिंह), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '६४

" : " (४ अनु०) (अनू०) लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद, '१५

" : हैमलेट (४ अनु०) (अनु०—लाला सीताराम), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '१५

" : रिचर्ड द्वितीय (४ अनु०) (") " " '१५

" : मैकवेथ (४ अनु०) (") " "

" : हिंदी शेक्सपियर, भाग १-६ (अनु०—गंगाप्रसाद उपाध्याय), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '१६

शेरसिंह : रस-विनोद (१), यूसूफ़ी प्रेस, दिल्ली, '८३

" : दुर्गा (२), लेखक, मेरठ, '८८

शेरसिंह वर्मा कुँवर : संताप-चालीसा (१), लेखक, बुलन्दशहर, '६२

शेषमणि त्रिपाठी : अकबर की राज्य-व्यवस्था (८), हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '२१

" : शिक्षा का ध्वय (१६), 'हिंदू मित्र' कार्यालय, गोरखपुर, '२७

शैलेन्द्रनाथ दे : भारतीय चित्रकला (११), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '४१

शौकत उस्मानी : मेरी रूस-यात्रा (६) प्रताप कार्यालय, कानपुर, '२८

" : अनमोल कहानियाँ (३) श्रमजीवी साहित्य सदन, केसरगंज, अजमेर, '३६

श्यामजी शर्मा, काव्यतीर्थ : श्याम-विनोद (१) माखनलाल बसु, मोतिहारी, '०१

श्यामसुन्दर : राधा-विहार १), श्यामकाशी प्रेस, मथुरा, '६२

,, : महेश्वर सुधाकर (१), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६८

श्यामसुन्दर उपाध्याय : बलिया के कवि और लेखक (१६), लेखक, बलिया, '२६

श्यामसुन्दरदास, सं० : हिन्दी वैज्ञानिक कोष (भूगोल, रसायन, गणित, अर्थशास्त्र) (१०), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०१-०२

,, : प्राचीन लेख मणिमाला (८) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०३

,, : बालक-विनोद (५ बा०) थियोसोफीकल सोसाइटी, बनारस, '०८

,, : हिन्दी कोविद रत्नमाला, भाग १-३, (१६), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '०६-'१४

,, सं० : हिन्दी शब्दसागर (१०), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१२-'२६

,, सं० : दीनदयालु गिरि-ग्रन्थावली (१८), ,, ,, '१६

,, : साहित्यालोचन (६), रामचंद्र वर्मा, बनारस, '२३

,, सं० : हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का खोजविवरण, भाग १ (१६) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२४

,, : हिन्दी भाषा का विकास (१०), रामचंद्र वर्मा, बनारस, '२४

,, : भाषा विज्ञान (१०) ,, ,, '२४

,, : हिंदी भाषा और साहित्य (१६), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३०

,, सं० : राधाकृष्ण-ग्रन्थावली (१८) ,, ,, '३०

,, तथा पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल : गोस्वामी तुलसीदास (१८), हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '३१

श्यामसुन्दरदास, सं० : सतसई-सप्तक (१६), हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '३१

,, : हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास (१६), [सं० नंददुलारे बाजपेयी] इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३१

,, तथा पीताम्बरदत्त बड़्थवाल : रूपक रहस्य (६), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३२

,, सं० : हिन्दी निबन्धमाला, भाग १-२ (१६) ,, ,, '३२

,, सं० : रत्नाकर (१८) ,, ,, '३३

,, सं० : बाल शब्दसागर (१० बा०) ,, ,, '३५

,, तथा पद्मनारायण : भाषा-रहस्य, भाग १ (१०) ,, ,, '३६

,, सं० : हिन्दी निबंधावली (१६) ,, ,, '४१

,, : हिन्दी के निर्माता (१६) ,, ,, '४१

,, : तुलसीदास (१८) ,, ,, '४१

,, : मेरी आत्मकथा (१८) ,, ,, '४२

श्यामसुन्दर द्विवेदी : जीवन ज्योति (३), बल्देवप्रसाद मोहता, कलकत्ता, '३७

श्यामसुन्दर मिश्र : सुधासिन्धु (१), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०२

श्यामसुन्दर वैद्य : पञ्जाब-पतन (२), लेखक, लखनऊ, '०४

श्यामसुन्दर सारस्वत : रसिक विनोद (१), लखनऊ प्रिन्टिङ्ग प्रेस, लखनऊ, '६५

श्यामाकान्त पाठक : उषा (१) मध्य-प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, जबलपुर, '२६

,, : श्यामसुधा (१), राष्ट्रीय हिन्दी मंदिर, जबलपुर, '२६

,, : बुन्देल केशरी (४), कर्मवीर प्रेस, जबलपुर, '३४

श्यामापद बैनर्जी : सर्प (१४), विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, '३५

श्यामापति पाण्डेय : मीरा (१८) मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर, '३४

श्रद्धाराम, पण्डित : आत्म-चिकित्सा (१७), मिशन प्रेस, लुधियाना, '७१

श्रीकान्त, ठाकुर : भारती शासन-व्यवस्था (६), पुस्तक मन्दिर, १७६, हरिसन रोड, कलकत्ता, '४०

श्रीकृष्ण गोपाल, सं० : मारवाड़ी गीतसंग्रह (२०) सम्पादक, १०३, हरिसन रोड, कलकत्ता, '२७

श्रीकृष्ण, ठाकुर : चन्द्रप्रभा (३), मैथिल बंधु कार्यालय, अजमेर, '०६

श्रीकृष्णदत्त पालीवाल : सेवाधर्म और सेवामार्ग (१५), महेन्द्र, आगरा, '३८

श्रीकृष्ण मिश्र : प्रेम (२), हरिनारायण चौधुरी, नाथनगर, भागलपुर, '१७

,, : महाकाल (२), वाणीमंदिर, मुँगेर, '३०

श्रीकृष्ण राय, 'हृदयेश' : हिमांशु (१), बैजनाथ केडिया, बनारस, '४०

श्रीकृष्णलाल, डी० फ़िल्० : आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास (१६) विश्वविद्यालय हिन्दी परिषद्, इलाहाबाद, '४२

श्रीकृष्ण शास्त्री : चिकित्सा धातुसार (१३), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '८५

श्रीकृष्ण शुक्ल, विशारद : हिन्दी पर्यायवाची कोष (१०), कैलाशनाथ भार्गव, बनारस, '३५

श्रीगोपाल नेवटिया : यूथिका (३), वैदेहीशरण, लहरियासराय, '२७

,, सं० : यूरोप की कहानियाँ (२०), हिंदी मंदिर प्रेस, इलाहाबाद, '३२

,, : मुस्लिम संतों के चरित्र (८), ,, ,, '३४

,, : काश्मीर (६), ,, ,, '३४

,, : वीथिका (३) ,, ,, '३६

श्रीगोपाल रामचंद्र ताम्बे : सुश्रूषा (१२ अनु०), एस० पी० ब्रदर्स ऐण्ड कम्पनी, झालरापाटन, राजपूताना, '१०

श्रीधर कवि : रसिक-प्रिया (६ प्रा०), बनारस लाइट प्रेस, बनारस, '६७

श्रीधर कवि : जङ्गनामा (१ प्रा०) [सं० राधाकृष्णदास, तथा क़िशोरी-लाल गोस्वामी], नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०४
श्रीधर तथा नारायणदास : पिङ्गल (६), गोपीनाथ पाठक, बनारस, '६६
श्रीधर त्रिपाठी : श्रीधर भाषाकोष (१०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '०३ द्वि०
श्रीधर पाठक : मनोविनोद, भाग १-३ (१) हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, क्रमशः '८२, '०५, '१२
,, : बाल भूगोल (६ बा०), गिरिधर पाठक, पद्मकोट, इलाहाबाद, '८५
,, : जगत सचाईसार, (१) गङ्गाधर पाठक, इलाहाबाद, '८७
,, : क्लाउड मेमोरियल (घनविनय) (१), राजपूत ऐंग्लो ओरियंटल प्रेस, आगरा, '१६००
,, : गुमवन्त हेमन्त (१) ,, ,, '१६००
,, : काश्मीर सुखमा (१), लेखक, पद्मकोट, इलाहाबाद, '०४
,, : वनाष्टक (१) ,, ,, '१२
,, : देहरादून (१) ,, ,, '१५
,, : गोखले गुणाष्टक (१) ,, ,, '१५
,, : गोखले प्रशस्ति (१) ,, ,, '१५
,, : गोपिका गीत (१) ,, ,, '१६
,, : तिलस्माती सुन्दरी (२) ,, ,, '१६
,, : भारतगीत (१), रामजीलाल शर्मा, इलाहाबाद, '१८
श्रीधर शिवलाल सं० ?] छन्द रत्नसंग्रह (१६), सम्पादक, बम्बई, '७०
श्रीनाथसिंह : क्षमा (२), सुदर्शनाचार्य, इलाहाबाद, '२५
,, : सती पद्मिनी (१) ,, ,, '२५
,, : बाल कवितावली (१ बा०) सुदर्शन प्रेस, इलाहाबाद, '२५
,, : पाथेयिका (३), लक्ष्मीधर वाजपेयी, इलाहाबाद, २६'
,, : चूड़ियाँ (१), सिद्धिनाथ दीक्षित, दारागञ्ज, इलाहाबाद, '३०

श्रीनाथसिंह : परदेश की सैर (६ बा०), साहित्यभवन लिमिटेड, इलाहाबाद, '३२
" : आविष्कारों की कथा (८ बा०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३३
" : उलझन (२) " " '३४
" : दोनों भाई (३ बा०), शिशु कार्यालय, प्रयाग, '३५
" : पिपिहरी (१ बा०), साहित्यभवन लिमिटेड, इलाहाबाद, '३५
" : नयनतारा (३), हिंदी साहित्य भंडार, इलाहाबाद, '३७
" : एकाकिनी (२), हिंदी साहित्य ग्रंथावली, कटरा, इलाहाबाद, '३७
" : जागरण (२), गंगा फाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३७
" : बाल भारती (१ बा०), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '४०
" : प्रजामण्डल (२), 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद, '४१
श्रीनारायण चतुर्वेदी, 'श्रीवर' : चारण (१), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '१४
" : चौंच महाकाव्य (१६), सिद्धिनाथ दीक्षित, दारागंज, इलाहाबाद, '१७
" : शतदल कमल (१ बा०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३०
" : शिक्षा विधान परिचय (१६) " " '३५
" : संसार का संक्षिप्त इतिहास (८) " " '३५
" : रत्नदीप (१) " " '३६
" : ग्राम्यशिक्षा का इतिहास (१६), सरस्वती पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, '३८
" 'विनोद शर्मा' : छेड़छाड़ (१६), प्रतापनारायण चतुर्वेदी, इलाहाबाद, '४२

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर	: देवता-विचार (२० बा०)	,,	,,	'२१
,,	: तैंतीस देवता-विचार (२० बा०)	,,	,,	'२१
,,	: शतपथ-बोधामृत (२० बा०)	,,	,,	'२[illegible]
,,	: वेद में चरखा (२० बा०)	,,	,,	'२२
,,	: मृत्यु को दूर करने का उपाय (२० बा०)	,,	,,	'२२
,,	: ब्रह्मचर्य (२० बा०)	,,	,,	'२२
,,	: वैदिक सर्पविद्या (२० बा०)	,,	,,	'२२
,,	: शिव संकल्प या विजय (२० बा०)	,,	,,	'२२
,,	: वेद में कृषिविद्या (२० बा०)	,,	,,	'२३
,,	: वेद में लोहे के कारखाने (२० बा०)	,,	,,	'२३
,,	: बालकों की धर्मशिक्षा (२० बा०)	,,	,,	'२३
,,	: वैदिक राज्यपद्धति (२० बा०)	,,	,,	'२३
,,	: वैदिक जलविद्या (२० बा०)	,,	,,	'२३
,,	: वेद में रोगजन्तुशास्त्र (२० बा०)	,,	,,	'[illegible]३
,,	: आत्म-शक्ति का विकास (२० बा०)	,,	,,	'२३
,,	: तर्क से वेद का अर्थ (२० बा०)	,,	,,	'२३
,,	: वैदिक सभ्यता (२० बा०)	,,	,,	'२३
,,	: वैदिक धर्म की विशेषता (२० बा०)	,,	,,	'२३
,,	: सन्ध्या का अनुष्ठान (२० बा०)	,,	,,	'२४
,,	: मानवी आयुष्य (२० बा०)	,,	,,	'२४
,,	: योगसाधन की तैयारी (२० बा०)	,,	,,	'२४
,,	: सूर्यभेदन का व्यायाम (२० बा०)	,,	,,	'२६
,,	: महाभारत की समालोचना (२० बा०)	,,	,,	'२८
,,	: भगवद्गीता लेखमाला (२० बा०)	,,	,,	'३६
,,	: भगवद्गीता का समन्वय (२० बा०)	,,	,,	'३६
श्रीप्रकाश	: भारत के समाज और इतिहास पर स्फुट विचार (८),	ज्ञानमंडल कार्यालय	बनारस	'४१
,,	: नागरिक शास्त्र (१५)	,,	,,	'४२

स

सखाराम बालकृष्ण सरनायक : गोपीचन्द (४), रामजी श्रीधर गोधलेकर, पूना, '८३

सङ्कठाप्रसाद : बाल-व्यायाम (१३ बा०), लेखक, वर्नाक्युलर स्कूल, लई, पटना, '७३

सच्चिदानन्द सरस्वती : निर्भय प्रकाश (१६), सम्पादक, बम्बई, '०४

सच्चिदानन्द सिन्हा : एकान्त (१), कमला बुकस्टोर, पटना, '३०

सच्चिदानन्द स्वरूप : विहार वृन्दावन (१), लखनऊ, '७३

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन, 'अज्ञेय' : मनदूत (१) बी० एच० वात्स्यायन, लाहौर, '३३

,, : विपथगा (१), लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '३८

,, : आधुनिक हिन्दी साहित्य (१६), अभिनव भारती ग्रंथ-माला, हरिसन रोड, कलकत्ता, '४०

,, : शेखर—एक जीवनी (२), सरस्वती प्रेस, बनारस, '४१

,, : चिन्ता (१), लेखक, दिल्ली, '४२

सज्जन सिंह महाराणा : रसिक विनोद (१), कुँवर वर्मा, बिजनौर, '६२

सतीशचन्द्र काला : मोहनजोदड़ो तथा सिन्धु-सभ्यता (८), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '४१

सतीशचन्द्रदास गुप्त : तुलसीरामायण की भूमिका (१८ अनु०), खादी प्रतिष्ठान, कलकत्ता, '३३

सतीशचन्द्र बसु : मैं तुम्हारा ही हूँ (४), लेखक, आगरा, '८६

,, : चतुरा (२), मून प्रेस, आगरा, '६४

सतीशचन्द्र मित्र, बी० ए० : प्रतापसिंह (७), व्रजेन्द्र मोहनदत्त, कलकत्ता, '०७

सतीशचन्द्र विद्याभूषण : भवभूति (२० अनु०), गङ्गा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२४

सत्यकेतु विद्यालङ्कार : मौर्य साम्राज्य का इतिहास (८), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '२८

,, : अपने देश की कथा (८), लेखक, गुरुकुल, कांगड़ी, '२८

सत्यदेव, स्वामीः हमारी सदियों की ग़ुलामी के कारण (८), लवानियाँ पब्लिशिङ्ग हाउस, आगरा, '२३
„ : मेरी जर्मन यात्रा (६), सत्य ग्रंथमाला आफ़िस, राजपुर, देहरादून, '२६ द्वि०
सत्यन : ओटना या धुनना (१२), हिन्दुस्तान तालीमी संघ, सेगाँव, वर्धा, '४०

सत्यनारायण डा० : यूरोप के झकोरे में (६), 'वर्त्तमान संसार' कार्यालय, चितरंजन एवेन्यू, कलकत्ता, '३८
„ : आवारे की यूरोप यात्रा (६), हिन्दी पुस्तक-भंडार, लहरिया सराय, '४० ?
„ : टैंकयुद्ध (१२), पुस्तक मंदिर, हरिसन रोड, कलकत्ता, '४० ?
„ : हवाई युद्ध (१२), „ „ '४०
„ : रोमाञ्चकारी रूस (६), नाथूराम प्रेमी, बंबई, '३६
„ : युद्ध यात्रा (६), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '४०
सत्यनारायण शर्मा, कविरत्न : हृदय तरङ्ग (१), राजपूत ऐंग्लो ओरियंटल प्रेस, आगरा, '२०

सत्यप्रकाश, डी० एस-सी० : ब्रह्म विज्ञान (१), कला कार्यालय, इलाहाबाद, '२३
„ : प्रतिबिंब (१) „ „ '२७
„ तथा निहालकरण सेठी : वैज्ञानिक परिमाण (१४), [विज्ञान परिषद् ?] इलाहाबाद, '२८
„ : साधारण रसायन (१४), विज्ञान परिषद्, इलाहाबाद, '२६
„ : कारबनिक रसायन (१४) „ „ '२६
„ : वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्द, भाग १, (१०), शालिग्राम भार्गव, इलाहाबाद, '३०
„ : बीज ज्यामिति (१४) विज्ञान परिषद्, इलाहाबाद, '३१
„ : सृष्टि की कथा (१४) „ „ '३७

सत्यप्रकाश मिलिंद : प्रयोग कालीन बच्चन (१८), प्रमोद पुस्तकमाला, इलाहाबाद, '४२
सत्यभक्त : आयर्लैंड के ग़दर की कहानियाँ (८), सोशलिस्ट बुकशॉप, कानपुर, '२७
„ : कार्ल मार्क्स (७), भारत पब्लिशर्स लि०, पटना, '३३
सत्यभामा देवी : धात्री विद्या (१३), श्री धर्मशिक्षक कार्यालय, इलाहाबाद, '०३
सत्यवती : दो फूल (२), नाथूराम प्रेमी, बंबई, '४०
सत्यव्रत : अब्राहम लिंकन (७), अभ्युदय प्रेस, इलाहाबाद, '२८
सत्यानन्द अग्निहोत्री : नीतिसार (१७), देव समाज, लाहौर, '०५ द्वि०
„ : आत्म-परिचय (१७), पं० देवरतन, लाहौर, '०७
„ : मुझमें देव-जीवन का विकास (७) अमरसिंह लाहौर, '१०-'१६
„ : देवशास्त्र, भाग १-२ (१७) „ „ '११
„ : अपने देव जीवन के विकास और जीवनव्रत की सिद्धि के लिए मेरा अद्वितीय त्याग, भाग १-७, (७), अमरसिंह, लाहौर, '१४-'२२
„ : अपने छोटे भाई के संबंध में मेरी सेवाएं (७), अमरसिंह, लाहौर, '२१
सत्यानन्द स्वामी : दयानन्द प्रकाश (७) लेखक, लुधियाना, '१६
सदल मिश्र : चन्द्रावती या नासिकेतोपाख्यान (१७ प्रा०), [संपादक श्यामसुन्दरदास, बी० ए०], नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०१
सदानन्द अवस्थी : दर्शनसार-संग्रह (२०), भारतजीवन प्रेस, बनारस, '१०
सदानन्द भारती : महात्मा लेनिन (७), मेहता फाइन आर्ट प्रेस, बनारस, '३४
सदानन्द मिश्र तथा शम्भुनाथ मिश्र, सं० : मनोहर उपन्यास (२), संपादक, कलकत्ता, '७१
„ सं० : नीतिमाला (१६), संपादक, कलकत्ता, '७३

सदाशिवनारायण दातार, एम० ए० : जीवन-विकास (१४ अनु०) सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर, '३०
सदासुखलाल : कोष-रत्नाकर (१०), लेखक, नूरुल अबसार प्रेस, इलाहाबाद, '७६
सद्गुरुशरण अवस्थी : भ्रमित पथिक (५), अभ्युदय प्रेस, प्रयाग, '२६
,, : तुलसी के चार दल (१८), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३५
,, : फूटा शीशा (३), भवानीप्रसाद गुप्त, इलाहाबाद, '३६
,, : मुद्रिका (४), केदारनाथ गुप्त, इलाहाबाद, '४०
,, : दो एकाङ्की नाटक (४), लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '४०
सनातन : हरिभक्ति-विलास, भाग १-२ (१७ अनु०) मदनगोपाल प्रेस, वृन्दावन, '०६-'१०
सन्तप्रसाद : कहावत-संग्रह (१०) जीवानन्द शर्मा, गया, '०२
सन्तप्रसाद टंडन, डी० फिल्० : वनस्पति विज्ञान (१४), नेशनल प्रेस, इलाहाबाद, '४[illegible]
,, : प्रारम्भक जीव विज्ञान (१४ वा०) ,, ,, '४०
सन्तबहादुर सिंह, डा० : संयुक्त प्रान्त में कृषि की उन्नति (१२), लेखक, डिपुटी डाइरेक्टर, अग्रिकल्चर डिपार्टमेंट, यू० पी०, '४०!
सन्तराम : भारत में बाइबिल (१७), गंगा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '२८
सन्तसिंह : गुरु-चरित्र-प्रभाकर (८), चश्म-ए-नूर प्रेस, अमृतसर, '७७
सबलसिंह चौहान : महाभारत (१ प्रा०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८१
समर्थदान : आर्यसमाज-परिचय (१७) लेखक, रामगढ़, सीकर (राजपूताना), '[illegible]
सम्पूर्णानन्द : धर्मवीर गान्धी (७), ग्रंथप्रकाशक समिति, बनारस, '१४
,, : महाराज छत्रसाल (७) ,, ,, '१६
,, : भौतिक विज्ञान (१४), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१६

सरदार कवि : मानस-रहस्य (१८ प्रा०), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६५
सरवैंटिस : विचित्र वीर ('डॉनक्विक्ज़ोटी'), (२ अनु०), गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२६
सरयूप्रसाद शास्त्री : आसव (१), लेखक, बनारस, '३५
सरस्वती गुप्ता : राजकुमार (२), लेखिका, कलकत्ता, '१६००
सर्वदानन्द वर्मा : प्रश्न (४), गङ्गाफ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३६
,, : तुम क्या हो ! (३), रामचन्द्र त्रिवेदी, पटना, '३६
,, : अर्घ्यदान (१), कला मंदिर, इलाहाबाद, '३६ !
,, : अकबर बीरबल विनोद (३), लीडर प्रेस, इलाहाबाद, '४०
,, : निर्वासित के गीत (१), गङ्गा फाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '४१
,, : नरमेघ (८) ,, ,, '४१
सहजानन्द स्वामी : आत्मरामायण (१८), हरदयालसिंह मुरादाबाद, '०४
सहजोबाई : सहजप्रकाश (१७ प्रा०), वेङ्कटेश्वर, प्रेस, बंबई, '०१
,, :—की बानी (१७ प्रा०), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '१३
साजनभाई वलीभाई खोजा : साजन-काव्यरत्न (१), फूलचन्द खूबचन्द, बंबई, '७६
सादी, शेख : नीति-वाटिका (१७ अनु०), (अनु०—सीताराम, बी० ए०), भारतमित्र प्रेस, कलकत्ता, '०४
,, : गुलिस्ताँ (१ अनु०), हरिदास ऐंड कम्पनी, कलकत्ता, '१२
सादी : ,, (१७ अनु०), (अनु०—बेनीप्रसाद), इलाहाबाद, '१३
साधुचरणप्रसाद : भारत-भ्रमण, जिल्द १-५, (६), लेखक, बलिया, '०१-५
साधुशरण : प्रेम-पुष्प (५), आर० आर० बेरी, कलकत्ता, '२४
,, : जीवन (३), लेखक, लखनऊ, '३५

सियारामशरण गुप्त : बापू (१) साहित्य प्रेस, चिरगाँव, झाँसी '३८
,, : नारी (२) ,, ,, '३८
,, : झूठ-सच (५) ,, ,, '३९
,, : उन्मुक्त (१) ,, ,, '४१
सिसरो : मित्रता (५ अनु०), (अनु०—गोपीनाथ शर्मा, एम० ए०), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '१९००
सीताराम : उषा-चरित्र (१), लेखक, ललितपुर, '७१
सीताराम कोहली : रंजीतसिंह (७ अनु०), हिन्दुस्तानी एकैडेमी, यू० पी० इलाहाबाद, '३१
सीताराम चतुर्वेदी, एम० ए०, बी० टी० : बेचारा केशव (४), लेखक, बनारस, '३३
,, : भाषा की शिक्षा (१६), हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, '३६
,, तथा शिवप्रसाद मिश्र : अध्यापन कला (१६), सीताराम प्रेस, बनारस, '४२
सीताराम जयराम जोशी, एम० ए० तथा विश्वनाथ शास्त्री भारद्वाज, एम० ए० : संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास (२०), परमानंद खत्री, बनारस, '३२
सीताराम पाण्डेय : लेजिम-शिक्षण (१३), नरसिंह नारायण पाण्डेय, बनारस, '३३
सीताराम, लाला, बी० ए० : पार्वती-पाणिग्रहण (१), कौशलकिशोर, मुरादाबाद, '८
,, : सीताराम-चरित्रमाला (१), लेखक, बनारस, '८५
,, : नीति-वाटिका (१७), कृष्णानंद शर्मा, कलकत्ता, '०७
,, : सलेक्शन्स फ्राम हिन्दी लिटरेचर, भाग १-६ (१६), कलकत्ता विश्वविद्यालय, '२०-'२४
,, : अयोध्या का इतिहास (८), इलाहाबाद, '२९

सीताराम, लाला, बी० ए० : चित्रकूट की झाँकी (९), गीता प्रेस, गोरखपुर, '३०
,, : हिन्दी सर्वे कमिटी की रिपोर्ट (१९), हिन्दुस्तानी एकैडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '३०
सीताराम शर्मा : काव्य-कलापिनी (१), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '६४
सीताराम शास्त्री : साहित्य-सिद्धान्त (६), हिन्दी निरुक्त कार्यालय, भिवानी, (पञ्जाब) '२३
सुखदयाल, पण्डित : न्याय-बोधिनी (१५), अंजुमन-ए-पञ्जाब प्रेस, लाहौर, '८२
सुखदेवप्रसाद सिंह : कुँवर बिजइया का गीत-बीस भागों में (१), ठाकुरप्रसाद गुप्त, कचौड़ी गली, बनारस, '२०
सुखदेवप्रसाद सिन्हा 'बिस्मिल' : जज़्बाते बिस्मिल (१ अनु०), अभ्युदय प्रेस, इलाहाबाद, '७५
सुखदेव मिश्र : पिङ्गल (६ प्रा०), गोपीनाथ पाठक, बनारस, '६६
,, : फ़ाजिल अली प्रकाश (१ प्रा०), जैन प्रेस, लखनऊ, '९८
सुखदेवबिहारी माथुर : हमारे गाँव (९), मुद्रक—अर्जुन प्रेस, दिल्ली, '४१
सुखसम्पतिराय भण्डारी : विज्ञान और आविष्कार (१४), हिन्दी साहित्य मन्दिर, इंदौर, '१६
,, : रवीन्द्र-दर्शन (२०), राष्ट्रीय हिन्दी मन्दिर, जबलपुर, '२०
,, : ज्योति विज्ञान (१४), हरिदास ऐंड कंपनी, कलकत्ता, '२०
,, : जगद्गुरु भारतवर्ष (८), मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर, '२१
,, : भारत-दर्शन (९) हिन्दी साहित्य मंदिर, इंदौर, '२१
,, : संसार की क्रान्तियाँ (८), राष्ट्रीय साहित्य भंडार, अजमेर, '२३

सुखसम्पत्ति राय भण्डारी : राजनीति-विज्ञान (१५), हिन्दी पुस्तक-एजेन्सी, कलकत्ता, '२३

" : डा० सर जगदीशचन्द्र बोस और उनके आविष्कार (१४), मोतीलाल बनारसीदास, लाहौर, '२४

" : भारतके देशी राज्य (८), भँवरलाल सोनी, इन्दौर, '२७

" : टूवेन्टियथ सेंचुरी इंग्लिश-हिन्दी डिक्शनरी (१०), डिक्शनरी पब्लिशिंग हाउस, ब्रह्मपुरा, अजमेर, '४०।

सुङ्गयून :—की यात्रा (६ अनु०) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२०

सुजाता देवी : मनोहर कहानियाँ (३ बा०), हेमंतकुमारी चौधरानी, विक्टोरिया कन्या विद्यालय, पटियाला स्टेट, '२४

सुदर्शन : दयानन्द (४), राम कुटिया, लाहौर, '१७

" : पुष्पलता (३) नाथूराम प्रेमी, बंबई, '१६

" : सुप्रभात (३) नारायणदत्त सहगल ऐन्ड सन्स, लाहौर, '२३

" : अञ्जना (४), नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '२३

" : परिवर्तन (३), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '२६

" : सुदर्शन-सुधा (२) " " '२६

" : तीर्थयात्रा (३) " " '२७

" : फूलवती (३ बा०) " " '२७

" : सुहराब और रुस्तम (३) " " '२६

" : आनरेरी मैजिस्ट्रेट (४) " " '२६

" : सात कहानियाँ (३), हिन्दी भवन, लाहौर, '३३

" : विज्ञान-वाटिका (१४बा०), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '३३

" : सुदर्शन सुमन (३), पञ्जाब संस्कृत पुस्तकालय, लाहौर, '३४

सुदर्शन, ८० : गल्प-मञ्जरी (१६), मोतीलाल बनारसीदास, लाहौर, '३४ द्वि०
,, : चार कहानियाँ (३), नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '३८
,, : पनघट (३) ,, ,, '३६
,, : राजकुमार सागर (२ बा०) ,, ,, '३६
,, : अँगूठी का मुक़दमा (३ बा०) ,, ,, '४०
,, : झङ्कार (१) ,, ,, '३६
सुदर्शनाचार्य शास्त्री : अनर्घ नल-चरित्र (४), लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '०८
,, : आलवार-चरितामृत (८), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०८ ?
सुदर्शनाचार्य, सं० : अनूठी कहानियाँ (३ बा०), शिशु प्रेस, इलाहाबाद, '२८
,, : डल्लू और मल्लू (३ बा०) ,, ,, '२८
,, : चुन्नू मुन्नू (३ बा०) ,, ,, '३२
सुधाकर, एम० ए० : मनोविज्ञान (१५), इण्डियन प्रिन्टिङ्ग वर्क्स, ग्वालमंडी, लाहौर, '२४
,, : अमीरी व ग़रीबी (१७) ,, ,, '२५ ?
सुधाकर, एम० ए० : आनन्दामृत (१७), लेखक, दिल्ली, '३३
सुधाकर द्विवेदी : चलन-कलन (१४), मेडिकल हाल प्रेस, बनारस, '८६
,, : चल राशिकलन (१४), (गवर्नमेंट, यू० पी० ?) इलाहाबाद, '८६ ?
,, : तुलसी-सुधाकर (१८), चन्द्रप्रभा प्रेस, बनारस, '६६
,, तथा राधाकृष्णदास, सं० : नया संग्रह (१६ बा०), चन्द्रप्रभा प्रेस, बनारस, '०३
,, तथा सूर्यप्रसाद मिश्र सं० : मानस-पत्रिका (अंशतः बालकाण्ड), (१८), भार्गव बुकडिपो, बनारस, '०४
,, सं० : हिन्दी वैज्ञानिक कोष—गणित (१०), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०५

सुधाकर द्विवेदी : रामकहानी का बालकाण्ड (१७ बा०), लेखक, खजुही, बनारस, '०८

" : समीकरण मीमांसा, भाग १-२, (१४) विज्ञान परिषद्, इलाहाबाद, '२८ ! नवीन

सुधीन्द्र : प्रलय-वीणा (१), सस्ता साहित्य मंडल, नई, दिल्ली, '४० !

सुधीरकुमार मुकर्जी : प्रकाश-चिकित्सा (१३) विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, '३८

सुन्दरदास :—कृत सवैया (१७ प्रा०), श्रीधर शिवलाल, बम्बई, '७०

" :—का सवैया (१७ प्रा०), नारायणी प्रेस, दिल्ली, '७५

" : " (१७ प्रा०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८२

" : " (१७ प्रा०), रश्क-ए-काशी प्रेस, दिल्ली, '६०

" : " (१७ प्रा०), ज्ञान भास्कर प्रेस, बाराबंकी, '०४

" : " (१७ प्रा०), लखनऊ प्रिन्टिङ्ग प्रेस, लखनऊ, '०५

" :—कृत काव्य (१७ प्रा०), तुकाराम लाध्या, बम्बई, '६० रिप्रिन्ट,

" : " काव्य-संग्रह (१७ प्रा०), तत्वविवेक ग्रन्थ प्रसारक सभा, बम्बई, '६०

" : सुन्दर शृङ्गार (१७ प्रा०), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६०

" : वेदान्त (१७ प्रा०), विद्याप्रकाश प्रेस, लाहौर, '६४

" : सुन्दर-विलास (१७ प्रा०), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, '१४ रिप्रिन्ट

" : विपर्यय के अङ्ग (१७ प्रा०), एल० मणि, बनारस, '३५

" : सुन्दर-विलास, ज्ञानसमुद्र और सुन्दर-काव्यविपर्यय (१७ प्रा०), [सटीक] शरीफ़ साले मुहम्मद, बंबई, '८५ रिप्रिंट

सुन्दरलाल द्विवेदी : बाल गीतावलि (१ बा०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '०८

" बाल भोजप्रबन्ध (३ बा०) " " '११

सुमित्रानन्दन पन्त : [आधुनिक कविमाला में] (१), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '४२
सुरेन्द्रनाथ तिवारी : वेदज्ञ मैक्समूलर (७), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '२१
" : वीराङ्गना तारा (१), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '२४
सुरेन्द्रनाथ शास्त्री : भारतीय शिक्षा (६), विलास प्रिंटिंग प्रेस, इंदौर, '२६
" : प्राचीन और वर्तमान भारतीय महिला (६), " " '२७
सुरेन्द्र बालूपुरी : आधुनिक जापान (६), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '४०
सुरेन्द्र वर्मा : मालती (७), फ़ाइन आर्ट प्रिंटिङ्ग काटेज, इलाहाबाद, '३५
सुरेशचन्द्र : कमल किशोर (४), लेखक, आगरा, '२३
सुरेश्वरानन्द कैकेय : कैकेय वंश-चन्द्रोदय (८), विद्यापति प्रेस, लहरिया-सराय, '३६
सुलेमान नदवी, मौलवी : अरब और भारत के संबंध (६ अनु०), हिन्दुस्तानी एकैडेमी, यू० पी० इलाहाबाद, '३०
सुशीला आग़ा, बी० ए० : अतीत के चित्र (३), गङ्गा फ़ाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '३६
सुश्रुत : सुश्रुत (१३ अनु०), श्यामलाल कृष्णलाल, मथुरा, '६६
" :—संहिता, भाग १-३ (१३ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '६६-६६
सूदन : सुजान चरित्र (१ प्रा०), [सं० राधाकृष्णदास), नागरी-प्रचारिणी सभा, बनारस, '०२
सूरकिशोर जी, स्वामी : मिथिला विलास (१), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६५
सूरजमल जैन : मराठे और अंग्रेज़ (८), राष्ट्रीय हिन्दी मन्दिर, जबलपुर, '२२
सूरदास : सूरसागर-रतन (१ प्रा०), बनारस लाइट प्रेस, बनारस, '६७
" : सूर संगीत सार (१ प्रा०), अरुणोदय प्रेस, कलकत्ता, '०२

सूरदास : —कृत विनयपत्रिका (१ प्रा०), ज्ञानसागर प्रेस, बम्बई, '६६
„ : सूरविनय (१ प्रा०), गोपीनाथ पाठक, बनारस, '७०
„ : —दृष्टिकूट (१ प्रा०) (टीका०—सरदार कवि) गोपीनाथ पाठक, बनारस, '६६
„ : —कृत दृष्टिकूट (१ प्रा०), (टीका०—सरदार कवि), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ '६०
„ : सूर-शतक (१ प्रा०), गोपीनाथ पाठक, बनारस, '६६
„ : „ पूर्वार्द्ध (१ प्रा०), [सं० हरिश्चंद्र], 'खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '८६
„ : सूर-रामायण (१ प्रा०), गोपीनाथ पाठक, बनारस, '६६
„ : „ (१ प्रा०) शिवलाल गनेशीलाल, मुरादाबाद, '६८
„ : बिसातिन लीला (१ प्रा०) हुसेनबख्श, फतेहगढ़, '७६
„ : गोपाल गारी (१ प्रा०), श्रीनाथ, ३१६, चितपुर रोड, कलकत्ता, '६३ वंगीय
„ : भँवरगीत (१ प्रा०), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '७८
„ : मयूरध्वज राजा की कथा (१ प्रा०), हरिप्रसाद भागीरथ, बंबई, '८३ रिप्रिंट
„ : मोरध्वज कथा (१ प्रा०), नन्दराम नवलराम, बंबई, '६० रिप्रिंट
„ : बाललीला (१ प्रा०), जीवनदास रघुनाथजी, बंबई, '८७ रिप्रिंट
„ : सूर-पच्चीसी, सूर-साठी तथा सूर वैराग्य-शतक (१ प्रा०), मनसुख शिवलाल, मथुरा, '३०
„ : सूर-सागर (१ प्रा०), नवलकिशोर, लखनऊ प्रेस, '८२ पञ्चम
„ : „ (१ प्रा०), कृष्णलाल, आगरा, '८२
„ : „ (१ प्रा०), ईजाद्-ए-किशन प्रेस, आगरा, '८६
„ : „ (१ प्रा०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '६७ रिप्रिंट

सूर्यकान्त, एम० ए०, डी० लिट्० : तुलसी रामायण शब्द सूची (१८), पञ्जाब विश्वविद्यालय, लाहौर, '३७
: हिन्दी साहित्य की रूपरेखा (१६), मेहरचन्द लक्ष्मणदास, लाहौर, '३८
" : साहित्य मीमांसा (६), हिन्दी भवन, लाहौर, '४१
सूर्यकुमार वर्मा, ठाकुर : बाल भारत, भाग १-२, (१७ बा०), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '०४
" : ग्रीस की स्वाधीनता (८), भारत मित्र प्रेस, कलकत्ता, '०६
" : भाषा (१०), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०७
" : मित्रलाभ (३), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०७
" : कांग्रेस-चरितावली (८), शीतलप्रसाद त्रिपाठी, इलाहाबाद, '०८
" : मुगल सम्राट् बाबर (७), रामलाल वर्मा, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता, '०६
सूर्यदेवी दीक्षित, 'उषा' : निर्झरिणी (१), शिवशङ्कर दीक्षित, कानपुर, '३७
सूर्यनाथ मिश्र : लोचन पच्चीसी, (१), नन्दप्रसाद मिश्र, गया, '०६
सूर्यनारायण, बी० ए० : भारतीय इतिहास में स्वराज की गूँज (८), प्रताप प्रेस, कानपुर, '१८
सूर्यनारायण जैन : दीपक (१), देवदत्त शास्त्री, इलाहाबाद, '३६
सूर्यनारायण त्रिपाठी : रहिमन-शतक (१८), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६५
" : रानी दुर्गावती (७), सेठ नत्थूमल पारख, सदर बाज़ार, जबलपुर, '१४
सूर्यनारायण शर्मा : हास्य-रत्नाकर (३), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०६
सूर्यनारायण शुक्ल : खेतिहर देश (४), जगदीशनारायण मिश्र, कानपुर, '३६

सूर्यनारायण सिंह : बीरबल-अकबर उपहास (३), लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '६५ रिप्रिन्ट
" : बजई मिश्र (३ बा०) " " '६६
" : श्यामानुराग-नाटिका (४) " " '६६
" : दिल्लगी की पुड़िया (५) " " '०८
सूर्यबली सिंह : लव लेटर्स (६), खगेश प्रेस, बनारस, '३६
" : हिन्दी की प्राचीन और नवीन काव्यधारा (१६), नन्द-किशोर ब्रदर्स, बनारस, '३६
सूर्यभान, वकील : लज्जावती का किस्सा (३), लेखक, सहारनपुर, '८६
" : रूप-बसंत (४), सुखदयाल प्रेस, आगरा, '०१
सूर्यभूषणलाल : शिक्षण कला (१६), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '३६
सूर्यमल्ल मिश्रण : वंश भास्कर—कई भागो में (८ अनु०), (टीका०—कृष्णसिंह), प्रताप प्रेस, जोधपुर, '६६
(सेनापति ?) : काव्य-कल्पद्रुम (६ प्रा०), (टीका०—बैजनाथ कुर्मी) नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८८
सेनापति : कवित्त-रत्नाकर (१ प्रा०), हिन्दी परिषद्, विश्व-विद्यालय, इलाहाबाद, '३६
सेवक कवि : नखशिख (१ प्रा०), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '६३
" : वाग्विलास (६ प्रा०), राजा कमलानन्द सिंह, पूर्निया, '०२
सेवानन्द ब्रह्मचारी : ब्रह्मसंगीत (१) बिरादरान प्रेस, लखनऊ, '६५
सोऽहं स्वामी : गीता की समालोचना (२०), स्वयंभाति पुस्तकालय, ३८, सदानन्द बाजार, कलकत्ता, '२६
सोमदत्त विद्यालङ्कार : रूस का पुनर्जन्म (८), ज्ञानमंडल कार्यालय, बनारस, '२१
सोमदेव भट्ट : कथा-सरित्सागर (३ अनु०), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '०४-१२
सोमनाथ : रास पञ्चाध्यायी (१ प्रा०), भारतवासी प्रेस, इलाहाबाद, '३६
सोमनाथ गुप्त सं० : अष्टछाप-पदावली (१६), हिन्दी भवन, लाहौर, '४०

सोमनाथ शर्मा : वर्तमान भारत (१), लेखक, श्रीनगर, काश्मीर, '३०
सोमेश्वरदत्त शुक्ल एम० ए०, : फ्रांस का इतिहास (८), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '०८
,, : जर्मनी का इतिहास (८) ,, ,, '०८
,, : गूढ़ विषयों पर सरल विचार (५ बा०), अभ्युदय, प्रेस, इलाहाबाद, '०६
,, : इंग्लैंड का इतिहास (८), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '११
,, : तरल तरङ्ग (४) ,, ,, '१४
,, : विनोद-वैचित्र्य (५) ,, ,, '१५
सोहनलाल द्विवेदी : दूध-बताशा (१ बा०), कृष्णदास, बनारस, '३४
,, : वासवदत्ता (१), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '४२
सोहनलाल, राय : दौत बिजलीबल (१४), लेखक, पटना, '७१
,, : रगड़ बिजलीबल (१४) ,, ,, '७१
सौरीन्द्रमोहन ठाकुर : गीतावली (११), लेखक, कलकत्ता, '७८
स्कन्दगिरि, कुँवर : रसमोदक हजारा (६) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१९००
स्टीवेन्सन, राबर्ट लुई : कसौटी (३ अनु०), भारती भंडार, बनारस, '३२
स्फुर्ना देवी : अबलाओं का इन्साफ (६), फ्राइन आर्ट प्रिंटिंग काटेज, इलाहाबाद, '२७
स्माइल्स, सैम्युअल : मितव्ययिता (१५ अनु०), ('थ्रिफ्ट') नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '१४
: मितव्यय (१५ अनु०), (अनु०—रामचन्द्र वर्मा), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१६
,, : स्वावलम्बन (१५ अनु०), नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '१६
स्वरूपचन्द्र जैन : भोज और कालिदास (३), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०३
स्वात्माराम योगीन्द्र : हठ प्रदीपिका (१७ अनु०), श्रीधर जयशंकर, बम्बई, '८२
,, : ,, (१७ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६५

एस० एन० जैनी : निर्मला (२), जे० एन० गुप्त, कारा बाजार, छपरा, '०५

एस० एन० जोशी : एशिया की पराधीनता का इतिहास (८), चित्रशाला प्रेस, पूना, '३०

एस० वी० पुन्ताम्बेकर तथा एन० एस० वरदाचारी : भारतीय लोकनीति और सभ्यता (६ अनु०), हिन्दू-विश्वविद्यालय, बनारस, '३१

स्मिथ, वी० ए० : अशोक (७ अनु०), (अनु०—सूर्यकुमार वर्मा), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस '०८ ।

ह

हज़ारीप्रसाद द्विवेदी : सूर-साहित्य (१८), मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर, '३६

" : हिन्दी साहित्य की भूमिका (१६), नाथूराम प्रेमी, बम्बई, '४०

" : कबीर (१८) " " '४२

हज़ारीलाल : तीन बहिन (२), कन्हैयालाल बुकसेलर, पटना, '०५

हठी : राधासुधा-शतक (१ प्रा०), हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, '७३

" : (१ प्रा०) [सं० हरिश्चंद्र] गदाधरसिंह, बनारस, '८२ रिप्रिंट

हनुमन्त प्रसाद जोशी : हृदय वीणा (१), लेखक, बम्बई, '१६

हनुमान : —नाटक (४ अनु०), (अनु०—हृदयराम), गहमरी प्रेस, लाहौर, '७६ रिप्रिंट

" : " " (४ अनु०) सुलतानी प्रेस, लाहौर, '७८ रिप्रिंट

" : " " (४ अनु०) विद्याप्रकाश प्रेस, लाहौर, '६[illegible]

" : महानाटक (४ अनु०), लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '१३

हनुमानकिशोर शर्मा : गुरुसारणी (१४), विद्याविलास प्रेस, बनारस, '८१

हरगोविन्ददास त्रिकमचन्द सेठ : पाइअ सद्द महन्नवो (१०), लेखक, कलकत्ता, '२३—

हरदयाल लाला, एम० ए० : जर्मनी और तुर्की में ४४ मास (६), सरस्वती ग्रंथमाला कार्यालय, बेलनगंज, आगरा, '२१

" : अमृत में विष (१६), लाजपतराय साहनी, लाहौर, '२२

हरदयालसिंह गुप्त : सिगरेट की तम्बाकू की कृषि और उसका पकाना (१२), प्रिंटिंग ऐन्ड स्टेशनरी, यू० पी०, इलाहाबाद, '३७

हरदयालुसिंह : दैत्यवंश महाकाव्य (१), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '४०

हरदेवदास वैश्य : पिङ्गल वा छन्दपयोनिधि (६), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '०६

हरदेवी : स्त्रियों पर सामाजिक अन्याय (६), संपादक, 'भारत भगिनी', इलाहाबाद, '६२

हरद्वारप्रसाद जालान : परकट सूम (४), कलकत्ता, '२२

" : क्रूर वेरण (४), लेखक, आरा, '२४

हरनाथप्रसाद खत्री : मानव विनोद (५), बिहारबंधु प्रेस, बाँकीपुर, '८५ रिप्रिंट

हरनाम चन्द : हिन्दू धर्म-विवर्धन (१७), मित्रविलास प्रेस, लाहौर, '७४

हरनामदास कविराज : गर्भवती, प्रसूता और बालक (१३), लेखक, लाहौर, '४०

" : स्वास्थ्य-साधन (१३) " " '४०

हरनारायण चौबे : कामिनी-कुसुम (४), एच० बी० एच० ऐण्ड फ्रेण्ड्स, बनारस, '०७

हरशरण शर्मा : सुषमा (१), प्रफुल्ल ओझा, इलाहाबाद, '३५

हरिकृष्ण प्रेमी : स्वर्ण विहान (१), सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर, '३०

" : आँखों में (१), रमाशङ्कर शुक्ल, इलाहाबाद, '३०

" : अनन्त के पथ पर (१), भारती प्रिंटिंग प्रेस, लाहौर, '३२

हरिदास माणिक : संयोगिता-हरण (४), लेखक बनारस, '१५
,, : चौहानी तलवार, (२), माणिक कार्यालय, बनारस, '१८
,, : राजपूतों की बहादुरी (२), लेखक, बनारस, '२०
,, : श्रवणकुमार (४) ,, ,, '२०

हरिदास, स्वामी : रसिक लहरी (१ प्रा०), दुर्गाप्रसाद बालमुकुन्द, सागर, '०५
,, : प्रेम-तरङ्ग (१ प्रा०) ,, ,, '१४

हरिदास, स्वामी (बंगाल) : विष्णुप्रिया चरित्र (७ अनु०), इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '२४

हरिनारायण : रुक्मिणी मङ्गल (१), लाला छन्नूमल का प्रेस, आगरा, '६२

हरिनारायण आपटे : सूर्य ग्रहण (२ अनु०), बनारस, '२२
,, : उषाकाल (२ अनु०) हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, '२४
,, : रूपनगर की राजकुमारी (२ अनु०), हिन्दी साहित्य कार्यालय, लहरिया सराय, '२८

हरिनारायण टंडन : भारतीय वाणिज्य की डायरेक्टरी—सं० १९२७ (९), लेखक, लखनऊ, '१०

हरिनारायण मुकर्जी : ध्रुपद स्वरलिपि (११), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '२९

हरिनारायण शर्मा : भारतीय भोजन (१३), धन्वतरि प्रेस, विजयगढ़, अलीगढ़, '२५

हरिनारायण शर्मा, पुरोहित, सं० : सुन्दर-सार (१८) नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१८
,, सं० : ब्रजनिधि-ग्रन्थावली (१९), ,, ,, '३३
,, सं० : सुन्दर-ग्रन्थावली (१८) ,, ,, '३६

हरिप्रसन्न बैनर्जी : यंत्री शतवार्षिकी (१४), गौरी प्रेस, लखनऊ, '६७

हरिप्रसाद भागीरथ, सं० : बृहद् रागकल्पद्रुम (१६) संपादक, बम्बई, '६१
,, सं० : वाजीबा प्रकाश (१२), ,, ,, '६६
हरिबख्श जी, मुंशी : भक्तमाल (१७ प्रा०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '८४ रिप्रिन्ट
हरिभाई त्रिवेदी : शिक्षा में नई दृष्टि (१६), साहित्य सदन, अबोहर, पञ्जाब, '४१ !
हरिभाऊ उपाध्याय : युगधर्म (१७), सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर '३१
,, : बुद्‌बुद (५) ,, ,, '३२
,, : स्वतन्त्रता की ओर (६) ,, नई दिल्ली, '३५
हरिमङ्गल मिश्र : भारतीय संस्कृत कवियों का समय निरूपण (२०), खड्गविलास, प्रेस, बाँकीपुर, '०१
,, : भारतवर्ष का इतिहास (८) ,, ,, '१४
,, : प्राचीन भारत [१००० ई० तक] (८), ज्ञानमंडल कार्यालय, बनारस, '२०
हरिमोहन झा : भारतीय दर्शन परिचय (२०), हिन्दी पुस्तक भंडार, लहरिया सराय, '४० !
हरिरामचन्द्र दिवेकर, एम० ए०, डी० लिट्० : सन्त, तुकाराम (७), हिन्दुस्तानी एकैडेमी, यू० पी०, इलाहाबाद, '३७
चेतनदास मथुरादास, सं० : हरिसागर (हरिरामजी महाराज कृत) (१८) चेतनदास मथुरादास, बीकानेर, '०८
हरिराम वर्मा : कृषीकोष (१०), आर्मी प्रेस, जुही, कानपुर, '१०!
हरिराय जी : गोवर्धननाथजी के प्राकट्य की वार्ता (१७ प्रा०), मोहन-लाल विष्णुलाल पाण्ड्या, बम्बई, '७६
,, : नित्यलीला भावना प्रकाश (१७ प्रा०), जोशी मूलचंद, बम्बई, '८६ रिप्रिंट
,, : बड़े शिक्षा पत्र (१७ प्रा०), सुबोधिनी पाठशाला, बम्बई, '६१ रिप्रिंट

हरिश्चन्द्र, भारतेन्दु : भक्ति-सर्वस्व (१) ई० जे० लाजरस ऐण्ड कम्पनी, बनारस, '७०
,, : तहकीकात पुरी की (६), लेखक, चौखंभा, बनारस, '७१
,, : अगरवालों की उत्पत्ति (१७), ,, ,, '७१
,, : देवीछद्म-लीला (१), छन्नूलाल, बनारस, '७३
,, : फूलों का गुच्छा (१) लेखक, चौखंभा, बनारस, '७३
,, : मानलीला (१३ बा०), ढुण्ढिराज शास्त्री ऐण्ड कम्पनी, बनारस, '७३
,, : प्रेम फुलवारी (१), मेडिकल हाल प्रेस, बनारस, '७३
,, : प्रेमाश्रु वर्षण (१) ,, ,, '७३
,, : जैन-कुतूहल (१७), मलिकचन्द्र ऐण्ड कंपनी, बनारस, '७३
,, : प्रेम माधुरी (१) चन्द्रप्रभा प्रेस, बनारस, '७५
,, : सत्य हरिश्चन्द्र (४), हरिप्रकाश प्रेस बनारस, '७५
,, : स्वरूप-चिन्तन (१), लेखक, चौखंभा, बनारस, '७५
,, सं० : मलार, हिंडोला, कजली, जयंती (१६), ब्रजचंद प्रेस, बनारस, '७५
,, : दिल्ली दरबार दर्पण (८), लेखक, चौखंभा, बनारस, '७७
,, : चन्द्रावली नाटिका (४), ब्रजभूषणदास, बनारस, '७७
,, : युगल-सर्वस्व (१), पी० सी० चौधरी ऐन्ड कम्पनी, बनारस, '७६
,, : चैती (१), लाइट प्रेस, बनारस, '७६
,, सं० : प्रेम तरङ्ग (१६), गोपीनाथ पाठक, बनारस, '७६
,, सं० : सुन्दरी तिलक (१६), फ्रौके काशी प्रेस, दिल्ली, '८०
,, सं० : परिहासिनी (१६) हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, '८०
,, : रागसंग्रह (१), नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '८१
,, : नीलदेवी (४), लेखक, चौखंभा बनारस, '८२

हरिश्चन्द्र भारतेन्दु : वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (४), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '८८
" : विषस्य विषमौषधम् (४) " " '८८
" : उत्तरार्द्ध भक्तमाल (१६), " " '८६
" : अष्टादश पुराण की उपक्रमणिका (२०), " " '८६
" : प्रेममालिका (१) " " '८६
" : वेणुगीत (१) " " '६०
" : उत्सवावली (१७), हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, '६० ?
" : कार्त्तिक नैमित्तिक कृत्य (१७) " " '६०
" : गो-महिमा (१७), लाइट प्रेस, बनारस, '६० ?
" : दूषण मालिका (१७), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६०
" : सती प्रताप (४) " " '६२
" सं० : प्रशस्ति-संग्रह (१६), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६४
" : कालचक्र (८), हरिप्रकाश प्रेस बनारस, '६६
" : खुशी (५), " " '६७
" सं० : पावस कविता संग्रह (१६), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६७
" सं० : रस बरसात (१), हरिप्रकाश प्रेस, बनारस, '१६००
" : हिन्दी लेक्चर (१०) नागरी प्रचरिणी सभा बनारस, '०२ द्वि०
" सं० : प्रेम-सन्देश (१६), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०६
" : मान-चरित्र (१६) " " '०६
" : भारतेन्दु-नाटकावली (४), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '२७
" : " भाग १-२, (४), रामनारायणलाल, इलाहाबाद, '३६-३७

हरेकृष्ण जौहर : नारी पिशाच (२) भारत जीवन प्रेस, बनारस, '०१
,, : मयङ्क मोहिनी या मायामहल (२), हितचिन्तक प्रेस, बनारस, '०१
,, : जादूगर, (२), ,, ,, '०१
,, : कमलकुमारी, भाग १-२ (२), ,, ,, '०२
,, : निराला नक़ाबपोश (२) ,, ,, '०२
,, : भयानक खून (२), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '०३
,, : सचित्र जापान वृत्तान्त (६), नूतबिहारी रे, कलकत्ता, '०४
,, : भारत के देशी राज्य (६), बंगवासी प्रेस, कलकत्ता, '०६

हर्ष, श्री : नैषध-काव्य (१ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई '६५
,, : रत्नावली (४ अनु०), गवर्नमेंट प्रेस, इलाहाबाद, '६५
,, : ,, (४ अनु०), निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, '६५
,, : ,, (४ अनु०), (अनु०—बालमुकुन्द गुप्त), बंगवासी ऑफिस, कलकत्ता, '६६
,, : नागानन्द (४ अनु०), (अनु०—लाला सीताराम, बी० ए०), अनुवादक, बनारस, '८८
,, : ,, (४ अनु०), लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, '२७

हर्षकीर्ति : योग चिन्तामणि (१७ अनु०), (अनु०—बालकृष्ण वर्मा), देवीदास खत्री, नयाबाज़ार, मथुरा '१०

हर्षादराय सुन्दरलाल मुन्शी : रसिक प्रिया (१), हरगोविंददास हरजीवनदास, अहमदाबाद, '३४

हलधरदास : सुदामा-चरित्र (१ प्रा०), सुधानिधि प्रेस, कलकत्ता, '६६
,, : ,, (१ प्रा०), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '०२

हसन निज़ामी, ख्वाजा : अश्रुपात ('बेग़मात के आँसू' का अनु०), (२ अनु०), गङ्गा फाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, '२७
,, : बेग़मों के आँसू (२ अनु० रामरखसिंह सैगल, इलाहाबाद, '३४

हुएत्सांग : भारत भ्रमण (६ अनु०), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '२८
हुपर, रेवरेण्ड : यवन (यूनानी) भाषा का व्याकरण (१०), मुफीदुल अरबा प्रेस, अमृतसर, '७४
,, तथा कल्वारूलाल : यवन (यूनानी) भाषा का कोष (१० इलाहाबाद मिशन प्रेस, इलाहाबाद, '७८
हृदयनारायण पाण्डेय 'हृदयेश', : सुषमा (१), लेखक, इलाहाबाद, '४०
हृषीकेश भट्टाचार्य : छन्दोबोध (६), लेखक, लाहौर, '७६
हेमकान्त भट्टाचार्य : असमीया-हिन्दी बोध (१०), हलधर शर्मा, उरिया-गाँव, नौगांव, आसाम '३३ ?
हेमचन्द्र : जैन रामायण (१७ अनु०), कृष्णलाल वर्मा, बम्बई, '२०
हेमचन्द्र मित्र : कृषि दर्पण, भाग १-४ (१२ अनु०), लेखक, काशीपुर, कृषिशाला, कलकत्ता, '०२
हेमन्तकुमारी चौधरानी : नवीन शिल्पमाला, (१२), लेखक, चंद्ररोड, देहरादून, '३२
हेमन्तकुमारी देवी : वैज्ञानिक खेती (१२), लखनऊ प्रिन्टिंग प्रेस, लखनऊ, '८४
हेमराज, स्वामी : शान्ति-सरोवर (१), मालिक चन्दराम चिदाकाशी, मॉंटगोमरी '६२ रिप्रिंट
हैकल : विश्वप्रपञ्च (१४ अनु०), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '२०
होमर : इलियड काव्यसार (१ अनु०), (अनु०—उदयनारायण वाजपेयी) ओंकार प्रेस, इलाहाबाद, '१७
होमवतीदेवी : उद्गार (१), मुद्रक—विकास प्रिंटिंग प्रेस, सहारनपुर, '३६?
,, : अर्घ्य (१) किताब महल, इलाहाबाद, '३६
,, : निसर्ग (३), महेन्द्र, आगरा, '३६
ह्यूगो, विक्टर : बलिदान (२ अनु०), (अनु०—गणेशशङ्कर विद्यार्थी) प्रताप प्रेस, कानपुर, '२२

ह्यूगो विक्टर : अनोखा (२ अनु०), सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर, '२८
,, : फाँसी (२ अनु०) ,, ,, '३१
,, : पेरिस का कुबड़ा (२ अनु०), विनोदशङ्कर व्यास, बनारस, '३१
,, : प्रेम कहानी (२ अनु०) ,, ,, '३२
ह्यूम, ए० ओ० : इण्डियन नेशनल कांग्रेस (८ अनु०), (अनु०—काशीनाथ खत्री), अनुवादक, सिरसा, इलाहाबाद, '८७ ?
एच० पी० माहोश्विया और डी० बी० गॉडबोले : चित्र-लेखन (११), नर्बदाप्रसाद मिश्र, जबलपुर, '३०

विषयानुक्रम से अज्ञात लेखकों के ग्रंथ

योगी और यमुनी का गीत (१ प्रा०), [सं० महादेवप्रसाद सिंह], दूधनाथ प्रेस, सलकिया, हवड़ा, '३७
रामाश्वमेध (१ अनु०), [अनु०—काशीराम पाठक], वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '६४
,, (१ अनु०), [अनु०—सुन्दरलाल त्रिवेदी], इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, '२३
परमाल रासो (१ प्रा०), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१४
सुभाषित रत्नाकर (१ अनु०), [अनु०—नारायणप्रसाद मिश्र], व्रजवल्लभ हरिप्रसाद, बम्बई, '१५
हीर ओ-राँझा (२ अनु०), अम्बाप्रसाद, मेरठ, '७४
,, (२ अनु०) ज्ञान प्रेस, दिल्ली, '७४
सुखदास (२ अनु०), [अनु०—प्रेमचन्द], नाथूराम प्रेमी, बंबई, '२०
बैताल पच्चीसी (३ अनु०), [अनु०—सूरति मिश्र], शौकतुल मताब्री प्रेस, मेरठ, '८७ रिप्रिन्ट
,, (३ अनु०), फीनिक्स प्रेस, दिल्ली, '६६
,, (३ अनु०), [अनु०—लल्लूजी लाल] मधुसूदन सील, कलकत्ता, '६७

बैताल पच्चीसी (३ अनु०), इन्द्रनारायण घोष, सुधानिधि प्रेस, बरतोला, कलकत्ता, '६६
,, (३ अनु०), नृत्यलाल सील का प्रेस, कलकत्ता, '६६
,, (३ अनु०), [अनु०—सूरत कवि], नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, '७४
सिंहासन बत्तीसी (३ अनु०),—[अनु० लल्लूजी लाल] इन्द्रनारायण घोष, सुधानिधि प्रेस, बरतोला, कलकत्ता, '६६
,, (३ अनु०), [अनु०—लल्लूजी लाल] लाला नथमलदास, मेरठ, '८०
हातिमताई (३ अनु०), [अनु०—कृष्णानन्द व्यासदेव], इन्द्रनारायण घोष सुधानिधि प्रेस, बरतोला, कलकत्ता, '६८
चहारदरवेश (३ अनु०), [अनु०—श्रीधर भट्ट] ,, ,, '७४
प्रपन्नामृत (८ अनु०), [अनु०—बद्रीदास], मुंशी रामसरूप, फर्रुखाबाद, '७५
वृहद् रत्न समुच्चय (६) भुवनेश्वरी प्रेस, मुरादाबाद, '०७
भारतीय व्यापारियों का परिचय (६), कामर्शल बुक पब्लिशिंग हाउस, भानपुरा, इन्दौर, '२६
राष्ट्रभाषा (१० अनु०), [अनु०—गङ्गाप्रसाद अग्निहोत्री] नागरी प्रचारिणी, सभा, बनारस, '६६
व्यङ्गय चित्रावली (११), प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर, '२५
,, (११), फ़ाइन आर्ट प्रिंटिंग काटेज, इलाहाबाद, '३०
चित्रकारीसार (११ अनु०), गवर्नमेंट प्रेस, इलाहाबाद, '६७ तृ०
वास्तुप्रबन्ध (१२ अनु०), [अनु०—राजकिशोर], अनुवादक, लखनऊ, '०५
लघु शिल्प संग्रह (१२ अनु०), [अनु०—रामबखश], वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०१
ताम्बूल-पद्धति (१२ अनु०), [अनु०—बाबूनन्दन दीक्षित], अनुवादक, बनारस, '०६

नाड़ी प्रकाश (१३ अनु०), [अनु०—नानकराम] ज्वालाप्रकाश प्रेस, मेरठ, '९०

नाड़ी प्रकाश (१३ अनु०), [अनु०—श्यामलाल अग्रवाल], अनुवादक, मथुरा, '०८

पारद-संहिता (१३ अनु०), [अनु०—निरञ्जनप्रसाद गुप्त], वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '१६

गौरीकञ्चलिका तन्त्र (१३ अनु०), [अनु०—बलदेवप्रसाद मिश्र] प्रयाग नारायण मिश्र, कानपुर, '९८

रसराज महोदधि (१३ अनु०), [अनु०—नारायणप्रसाद मुकुन्दराम], श्रीधर शिवलाल बम्बई, '०२

,, (१३ अनु०), खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, '९५

कामतन्त्र (१३ अनु०), [अनु०—बलदेवप्रसाद मिश्र], प्रयागनारायण मिश्र कानपुर, '९८

सूर्यसिद्धान्त (१४ अनु०) शास्त्र पब्लिशिंग आफिस, मुजफ्फरपुर, '०३

,, (१४ अनु०) स्वामी प्रेस, मेरठ, '०३

,, (पूर्वोत्तर खंड) (१४ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '०६

,, (त्रिप्रश्नाधिकार, तथा मध्यमाधिकार) (१४ अनु०), विज्ञान परिषद्, इलाहाबाद, '३२

पुष्टिमार्गीय गुरु परम्परा विचार (१७), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई, '९१

मुकुन्दराय तथा गोपाललाल जी की वार्ता (१७), छुन्नीलाल, बनारस, '२४

अवेस्ता (१७ अनु०), [सं०—प्रो० राजाराम], दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज, लाहौर, '३४

विनयपिटक (१७ अनु०), [अनु०—राहुल सांकृत्यायन], महाबोधि सभा, सारनाथ, '३४

दीघनिकाय (१७ अनु०), ,, ,, ,, '३७

मज्झिमनिकाय (१७ अनु०), ,, ,, ,, '३३

धम्मालोक मुखसुत्त (१७ अनु०), [अनु०—खुन्नीलाल शास्त्री], टीकाकार, बरेली, '०१

निर्विकल्पसुत्त (१७ अनु०) [अनु०—खुन्नीलाल शास्त्री], अनुवादक बरेली, '०१

बुद्ध वचन (१७ अनु०), महाबोधि सभा, सारनाथ, '३७

धम्मपद (१७ अनु०), [अनु०—ठा० सूर्यकुमार वर्मा], नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '०५

,, (१७ अनु०), [अनु०—गंगाप्रसाद उपाध्याय], कला प्रेस, इलाहाबाद, '३२

उदान (१७ अनु०), [अनु०—जगदीश काश्यप], महाबोधि सभा, सारनाथ, '२०

प्रज्ञापारमिता (१७ अनु०), [अनु०—खुन्नीलाल शास्त्री], अनुवादक, बरेली, '६६ तृ०

मिलिन्द पन्ह (१७ अनु०), यू० कित्तिम, सारनाथ, '३७

मानस-कोष (१८), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '०६

श्रीनाथजी का प्रभातीय संग्रह (१६) नाथद्वारा, मेवाड़, '२६

दीवान-ए-नज़ीर (२०) मुहम्मदी प्रेस, धनकोट, आगरा, '८१

पुस्तक-अनुक्रमणिका

परिशिष्ट (अ)

निम्नलिखित सूचनाएँ कृपया यथास्थान बढ़ा लें—

विषय-सूची

१४

भुवनचन्द्र बसक : दिग्विजय वा आश्चर्य-चन्द्रिका '८६

१७ प्रा०

दादू : दादू-पद-संग्रह

१७

गुलाबसिंह : अध्यात्म रामायण '६५

लक्ष्मणानन्द योगी : ध्यान योग-प्रकाश '०१

ललनपिया : ललन-प्रबोधिनी '०५

दुर्गादत्त पन्त : प्रेमाभक्ति '०६

प्रसिद्धनारायण सिंह : योगशास्त्रान्तर्गत धर्म '२०

नारायण स्वामी : आत्मदर्शन '२२

१७ बा०

डी० टी० शाह : महाराजा सम्प्रति

१७ अनु०

व्यास सं० : आदिपुराण

अज्ञात : उदान

१८

अज्ञात सं० : मानस-कोष '०६

माधवप्रसाद पाठक सं० : देव-ग्रंथावली '१०

रामचन्द्र शुक्ल : त्रिवेणी '३६

कृष्णदेव शर्मा : सूर का एक पद '४१

१६

रामकुमार वर्मा : हिंदी साहित्य की रूपरेखा '३८

चन्द्रसिंह सं० : कह-मुकरणी '४०

रामकुमार वर्मा सं० : आठ एकाङ्की नाटक '४१

वासुदेव शर्मा सं० : आदर्श निबंध-माला '४१

श्यामसुन्दरदास : हिंदी के निर्माता '४१

,, : हिंदी निबंधावली '४१

२०

दयानन्द सरस्वती : ऋग्वेद भाष्य की भूमिका '७७

रामदेव : पुराणमत - पर्यालोचन '१६

राधाकृष्ण मिश्र : भारतीय दर्शन शास्त्र '६६

ज्वालादत्त शर्मा : महाकवि हाली और उनका काव्य '२१

महावीर प्रसाद द्विवेदी : सुकवि-संकीर्तन '२४

रामइक़बाल सिंह सं० : मैथिली-लोकगीत '४२

ज्ञानचन्द्र जैन सं० : यूरोप की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ '४२

२० बा०

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर : वेद का स्वयंशिक्षक '२०

लेखक-सूची

अब्दुल बाक़ी : खानखाना-नामा (७ अनु०), भारतमित्र प्रेस, कलकत्ता, '०७

इंडियन नेशनल कांग्रेस : हण्टर कमिटी रिपोर्ट (८ अनु०), निहाल चन्द्र वर्मा, कलकत्ता, '२२

उदयशंकर भट्ट : अभिनव एकांकी नाटक (४), लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, शफ़ाखाना रोड, आगरा, '४०

,, : स्त्री का हृदय (४), हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, '४२

यू० सी० वैनर्जी : विदूषक (१६), ओरिएंटल प्रेस, लखनऊ, '१३

कालिदास कपूर : भारतीय सभ्यता का विकास (८), नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, '३६

किशोरी लाल घ० मशरूवाला : सोने की माया (१५ अनु०), सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, '४१

गङ्गाप्रसाद श्रीवास्तव : प्राणनाथ (२), फ़ाइन आर्ट प्रिंटिंग काटेज, इलाहाबाद, '२५

गणेशप्रसाद द्विवेदी : सुहाग-बिन्दी (४), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '३५

गणेशप्रसाद शर्मा : गणाधिप-सर्वस्व, भाग १ (१८), लेखक, बलसिंहपुर, बिसवाँ, सीतापुर, '०१

गोकुलचन्द्र शर्मा : प्रणवीर प्रताप (१), लेखक, अलीगढ़, '१५

गोपालराम गहमरी : अजब लाश (२), 'जासूस' आफ़िस, गहमर, गाज़ीपुर, '६५

,, : कटा शिर (२) ,, ,, ,, '१०१

,, : अर्थ का अनर्थ (२ ,, ,, ,, '१३

,, : प्रेम-मूल (२) ,, ,, ,, '१४

गोर्की, मैक्सिम : शेलकश (२ अनु०), साहित्य प्रेस, चिरगाँव, '२६

गोविन्ददास, सेठ : पञ्चभूत (४), रामप्रसाद एंड सन्स, आगरा, '४२

गौरीशङ्कर 'सत्येन्द्र' : कुनाल (४), रामप्रसाद एंड सन्स, आगरा, '३७

घेरण्ड :—संहिता (१७ अनु०), लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर प्रेस, कल्याण, '६८

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार : अशोक (४), विश्व साहित्य ग्रंथमाला, लाहौर, '३५

जगन्नाथ शर्मा : अकबर-बीरबल समागम (३), मुन्शी लालबहादुर, बंबई '९७

जयकृष्ण : भीमसेन शर्मा से दो-दो बातें (७), जंगीदा ब्राह्मण प्रेस, कलकत्ता '२४

जहाँगीर : जहाँगीर-नामा (७ अनु०), भारतमित्र प्रेस, कलकत्ता '०६

टी० एल० वास्वानी : सञ्जीवन-सन्देश (१७अनु०), नाथूराम प्रेमी, बंबई'२७

ठाकुरदत्त शर्मा : भूल-चूक (४), लेखक, ५२ काटन स्ट्रीट, कलकत्ता, '२६

ठाकुरदास सूरदास सं० : पाँचे मञ्जरिओ (१८), संपादक, बंबई, '८६

देवराज : भारतीय दर्शन शास्त्र का इतिहास (२०), हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०; इलाहाबाद, '४१

नटवर चक्रवर्ती : रूस-जापान-युद्ध (८), लेखक, कलकत्ता, '०६

नन्हेंलाल वर्मा : नामदेव-वंशावली (१), लेखक, साठिया कुआँ, जबलपुर, '२६

निर्भय : निर्भय-प्रकाश (१), सच्चिदानन्द सरस्वती, बंबई, '०४

पृथ्वीसिंह मेहता : बिहार—एक ऐतिहासिक दिग्दर्शन (८), हिन्दी पुस्तक भंडार, लहरिया सराय '४०

प्यारेलाल : वृत्तावली (१२), विद्यासागर बुकडिपो, अलीगढ़, '४०

बलदेवप्रसाद मिश्र, डो० लिट्० : असत्य संकल्प (४), बलभद्रप्रसाद मिश्र, राजनाँद गाँव, बस्तर स्टेट (मध्यप्रांत) '२५

" : वासना-वैभव (४) " " " '२५

" : कौशल किशोर (१), कालीचरण त्रिवेदी, साहित्य भवन, इलाहाबाद, '३५

" : शङ्कर-दिग्विजय (४), फ़ाइन आर्ट प्रिंटिंग काटेज, इलाहाबाद, '३६ द्वि०

भारत सरकार : हिंदुस्तान का दण्ड-संग्रह (६ अनु०); हीरालाल, मथुरा, '२३

माधवप्रसाद पाठक सं० : देव-ग्रंथावली [प्रेमचंद्रिका तथा राजविलास] (१८), नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, '१०

मोहनदास क० गांधी : यूरोपीय युद्ध और भारत (९ अनु०), सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, '३८

यशपाल : ज्ञानदान (३), विप्लव कार्यालय, लखनऊ, '४२

रामजी दासःसुघड़ गँवारिन (२), गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '३८

,, : सुघड़ चमेली (२) ,, ,, ,, '३८

,, : सच्ची-झूठी (२), पुस्तक भवन, बनारस सिटी, '४०

रामनाथ जोतिषी : राम-चन्द्रोदय (१), हिंदी मंदिर, इलाहाबाद '३६

लक्ष्मीकान्त तिवारी सं० : पूर्ण-संग्रह (१८), गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, '२५

वंशीधर सुकुल : वाममार्ग (१७), साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, '३३

व्यास सं० : कूर्मपुराण (१७ अनु०), वेङ्कटेश्वर प्रेस, बंबई, '३३

श्यामनारायण पाण्डेय : हल्दीघाटी (१), इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, '४१

श्रीधर पाठक : आगरा (१), छोटेलाल मिश्र, कलकत्ता, '८२

सोहनप्रसाद : हिंदी और उर्दू की लड़ाई (१), भारत जीवन प्रेस, बनारस, '८५

एस० वी० पुन्ताम्बेकर : हाथ की कताई-बुनाई (१२ अनु०), सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर, '२७

हरस्वरूप पाठक : भारतमाता (२), लेखक, शाहजहाँपुर, '१५

हरिशङ्करसिंह : नीति-पञ्चाशिका (१७), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर '२६

,, : वेदान्त-शतक (१७) ,, ,, ,, '६२

,, : शृङ्गार-शतक (१) ,, ,, ,, '६२

हरिश्चन्द्र : भारत जननी (४), लेखक, बनारस, '८३ रिप्रिंट

,, : मार्गशीर्ष-महिमा (१७), खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, '६०

हरिहरप्रसाद जिज्जल : जया (४), लेखक, गया, '०३

पुस्तक-अनुक्रमणिका

परिशिष्ट (आ)

निम्नलिखित पुस्तकों के संबंध की सूचनाएँ कृपया निकाल दें। नीचे के प्रत्येक कालम में बाएँ सिरे की संख्याएँ क्रमशः पृष्ठों और पंक्तियों की हैं :—

१७।१२ 'उपालम्भ-शतक'
२२।२४ 'कांग्रेस-पुकार मञ्जरी'
२३।२७ 'जगद्विनोद'
२४। ६ 'रसिक-विनोद'
४१। ५ 'प्रणयिनी परिणय'
४१।२६ 'विज्ञान'
४७।२३ 'रस-लहरी'
४६।१४ 'स्वामी रामतीर्थ'
५०। २ 'अर्हतपाशा केवली'
५०।१४ 'आर्य-चरितामृत'
५०।१६ 'महाराणा प्रतापसिंह'
५५। ५ 'आश्चर्य वृत्तान्त'
६४। १ 'निघण्टु-रत्नाकर'
७२। ३ 'नीति-वाटिका'
६२।२५ 'छेड़-छाड़'
६४।२५ 'प्रवासी'
६८। ८ 'मानवती'
६६।२१ 'गङ्गा-जमुनी'
१०३।११ 'लिली'
१०६। ८ 'खूनी का भेद'
१२४।२४ 'जैनेन्द्र के विचार'
१२८। १ 'नवरस-तरङ्ग'
१३८। ८ 'जब अँग्रेज़ आये'

१४१।२७ 'संसार का संक्षिप्त इतिहास'
१४५। ४ 'भारतीय लोक-नीति और सभ्यता'
१५८।२२ 'जिल्द-साज़ी'
१६६। ३ 'जीवन-विकास'
१७३। ५ 'मनन'
१८०। २ 'पुष्टिवार्गीय पद-संग्रह'
१८७। ६ 'दर्शनों का प्रयोजन'
१६०।१२ 'प्रेम कहानी'
२०७।१७ 'प्रेम-तरङ्ग'
२१२। १ 'उपालम्भ-शतक'
२१५।१३ 'गणाधिप-सर्वस्व'
२२०। ४ 'पत्र-पात्र'
२३२।२२ 'लाइन पर लाश'
२३२।२४ 'चक्करदार चोरी'
२३२।२५ 'यारों की लीला'
२३२।२६ 'मृत्यु-विभीषिका'
२३२।२७ 'योग-महिमा'
२३३।१७ 'लवङ्गलता'
२३५।१२ 'लीलावती'
२३७। ७ 'पतन'
२४४। ५ 'पवित्र पापी'

शुद्धि-पत्र

नीचे शुद्ध पाठ दिया गया है। प्रत्येक कालम में बाएँ सिरे की संख्याएँ क्रमशः पृष्ठों और पंक्तियों की हैं :—

११।११ हरिहर प्रसाद
११।१२ रामरत्न दास गोस्वामी
१३। ८ श्यामसुन्दर सारस्वत
१४।१४ 'लवकुश चरित्र' (१८६६)
१४।१७ ललन पिया
१४।२० वीर कवि
१५।१८ 'इश्क अजायब' (१८७४)
१७। ७ 'रहस्य काव्य शृङ्गार' (१८७४)
१७।२४ रङ्गनारायण पाल
१८। ८ 'प्रेमाम्बु-प्रश्रवण'
१८।१५ 'शिखनख'
१८।१६ रङ्ग नारायण पाल
१८।२० 'नखशिख' (१८६३)
१८।२१ 'नख-शिख वर्णन' (१८६४)
१६। ६ 'पञ्च ऋतु-वर्णन' (१८६३)
१६।१० 'हिंडोला' (१८६४)
१६।२२ काशीगिरि 'बनारसी'
२३।२४ 'मान-विलास,' 'मणि-रत्नमाला'
२३।२१ गजाधरप्रसाद शुक्ल
३३।१६ 'डाक पर डाका'
३८।२७ 'दमयंती-स्वयंवर'
४०। १ जगतनारायण शर्मा
४०।१० 'रूपवती'
४१।११ 'पुष्पवती' (१८६४)
४१।१२ सूर्यभान
४१।२४ 'यमलोक की यात्रा' (१८८१)
४६।१६ गजाधर
४६। ५ रामविलास सारडा
४६।२८ 'पीपा जी की कथा'
५०।२२ सिद्धेश्वर शर्मा
५१।१६ शिवव्रत लाल
५३। २ महाराजसिंह
५४।१४ अलाराम सागर
५६। २ 'पश्चिमोत्तर तथा अवध का संक्षिप्त वृत्तान्त'
५८।१० अनुवादित 'राष्ट्रभाषा'
६०।१७ 'राग-रत्नाकर' (१८८८)

६३।१३ 'शतरंज विनोद'
६३।२६ 'नाड़ी प्रकाश' (१८८६)
६४। ७ ब्रजलाल
६४।१८ काशीनाथ शर्मा
६६। १ ब्रजदास
६६। ४ ब्रजजीवनदास
६६। ६ 'वल्लभकुल चरित्र-दर्पण' (१८८६)
६६।२१ 'सत्य-सागर' (१८८३)
७१।२६ 'सार उक्तावली' (१८८१ रिप्रिंट)
७३। ८ मीराबाई का जीवन-चरित्र (१८१८)
७३।१६ 'तुलसी-पञ्चरत्न'
७३।२५ देवीप्रसाद पंडित
७४।१० 'तुलसी-सुधाकर'
७६।२४ 'रघुनाथ - शतक' (१८८६)
७८।२४ 'काव्य-संग्रह' (१८६४)
८०।१० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल
६८। ७ कुन्दनलाल और जगतचन्द
१०२। २ 'चम्पा' (१६१२)
१०२। ३ 'माधवी' (१६१२)
१०६।१७ 'खूनी का भेद'
१०६।१८ 'यारों की लीला'
११३।१५ 'सागर-विजय'
११३।२३ 'कुरुवन-दहन' (१६१२)
११४। ४ 'पूर्व भारत' (१६१६)
११४।१६ 'शङ्कर-दिग्विजय' (१६२५)
११४ ६ 'मीराबाई' (१६१२)
११७।१३ तथा बदरीनाथ भट्ट कृत
११७।२५ 'प्रताप-प्रतिज्ञा' (१६२८)
१२१। ५ 'ग्रह का फेर'
१२२।७७ 'तरल तरङ्ग' (१६१४)
१३२।१० 'राजा राममोहन राय' —(१६३४)
१३२।११ 'रामतीर्थ महाराज') (१६३४)
१३५। ४ त्रिलोकी नाथ लिखित
१३५।२६ 'चरित-चर्चा'
१३६। ६ 'जैन इतिहास की पूर्व-पीठिका' (१६३६)
१३६।१४ रामलाल चौधरी कृत
१३६।२४ रमेशप्रसाद वर्मा
१४४।१६ 'मातृभूमि शब्द-कोष'
१४४।१७ १६२६ से
१४४।२२ ब्रजगोपाल भटनागर
१५०।१४ '—भाषा और लिपि (१६३६)
१५१। २ 'भारतीय लिपितत्व' (१६१४)
१५१।२७ जगन्मोहन वर्मा
१५३।१० रामदहिन मिश्र
१५३।१८ ब्रजवल्लभ मिश्र
१५५।११ 'सभा-विधान' (१६३६)

१५५।१४ मुकुन्दलाल
१५७। ४ रामचन्द्र अरोड़ा
१५७। ४ सन्तबहादुर सिंह
१५७।२७ 'रुई और उसका मिश्रण' (१६२६)
१५६।२२ '—नया बहीखाता' (१६३२)
१६०।२७ भवान राय—
१६१। १ 'खेल और व्यायाम' (१६३६)
१६१।१५ 'आसव-विज्ञान' (१२६)
१६२।१५ 'हमारे शरीर की रचना' (१६१८)
१६५।१६ 'वनस्पति शास्त्र' (१६११)
१६७।१० 'राजनीति-विज्ञान' (१६२३)
१६७।२७ 'तर्कशास्त्र' (१६२६)
१६६। ६ 'शिक्षा-समीक्षा'
१७२। ८ वंशीधर
१७४। ३ 'हित-चरित्र' (१६१६)
१७४। ८ 'सूरदास—नयन' (१६३०)
१७५।१२ 'मानस-प्रबोध' (१६१७)
१७८।२४ रामविलास शर्मा
१८१।२० 'स्त्री-कवि-कौमुदी'
१८२।१४ 'हिंदी नाट्य-साहित्य' (१६३८)
१८३। ६ बी० एम० ठाकुर
१८७। ७ देवराज का' भारतीय दर्शन शास्त्र'
१८८।२३ 'उर्दू के कवि और उनका काव्य'
१८६।२० गुरुनाथ जोशी
१६०। १ 'अरबी काव्य दर्शन' (१६२१)
२१२।१६ 'गोपी-विरह-छन्दावली
२१५।१३ गजाधर प्रसाद शुक्ल
२१५। ४ 'प्रेमाम्बु-प्रश्रवण'
२१७।१८ 'ललन रत्नाकर'
२२०। ८ कालीप्रसाद: दिल्ली-पतन
२२०।२७ 'चित्रकूट-चित्रण'
२२२।२६ 'मधुकर शाह' '३८
२२३। २ 'भग्नदूत' '३२
२२५।११ 'दैत्यवंश'
२२५।११ 'पवित्र पर्व'
२२५।२० 'वैकाली'
२२७।१६ हर्ष, श्री
२२७। ८ बिल्हण
२३०। ७ 'भानमती' '६४
२३०।२० 'सुदामा'
२३०।१७ कन्हैयालाल श्यामसुंदर त्रिपाठी
२३१। १ 'सत्कुलाचरण'
२३४। ७ हनुवन्त सिंह
२३५। १ 'शशिबाला'

२३५।२८ किशोरीलाल गोस्वामीः रज़िया बेगम
२३६।२८ राधिकाप्रसाद सिंह अखौरी
२३७। १ बेनीप्रसाद मेहरा
२३८।१६ जनार्दन प्रसाद झा
२३८।१३ रामविलास शुक्ल
२४०।२५ ऋषभचरण जैन : दिल्ली का व्यभिचार
२४१।२६ चण्डीचरण सेन
२४३। २ कन्हैयालाल मा० मुंशी
२४७। ७ महावीरप्रसाद द्विवेदी
२४८।२१ 'चिड़ियाघर'
२४६। २ सूर्यकान्त त्रिपाठीः 'पद्मा और लिली'
२५०।१५ बदरीनाथ शुक्ल
२५१। ६ 'अचल सुहाग'
२५२। ४ 'फूलवती'
२५३।१० 'राजकुमारों की कहानियाँ'
२५४। ३ आत्माराम देवकर : सीताफल की चोरी
२५५।१७ दॉस्तॉव्स्की
२५७। ३ राधाकृष्णदास
२६०। ७ रामेश्वर शर्मा
२६०।१८ लोचनप्रसाद पांडेय,
२६०।१० लोचनप्रसाद पांडेय
२६४।१२ लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी
२६७। २ 'मंछ' कवि
२६८।२१ 'किरण' '१६
२६६। ८ 'ठलुवा क्लब'
२६६।१५ दुर्गाशङ्कर प्रसाद सिंह
२६६।१६ 'मि० तिवारी का टेलीफ़ोन'
२७२।१० बिहारी सिंह
२७२।२४ जादेश्री उन्नद जी
२७२।१३ विहारीलाल
२७८।१८ 'अकबर' '१७
२७८।१८ शिवनारायण द्विवेदी
२८०। ७ विश्वनाथ राय
२८१।१६ किशोरी लाल घ० मशरूँवाला
२८८। ३ 'मध्य प्रदेश का इतिहास'
२८६।२३ रामनारायण यादवेन्दुः युद्ध छिड़ने से पहले '४१
२६०।२१ रामलाल चौधरी
२६१।२८ अज्ञात : प्रपन्नामृत
२६२।२४ मोटले
२६३।१० इंडियन नेशनल कांग्रेस : हण्टर कमेटी रिपोर्ट
२६६।१५ देवीप्रसाद 'प्रीतम'
२६७। ६ 'दृश्य-दर्शन'
२६७।१८ महेन्दुलाल गर्ग
२६८।१६ ब्रजगोपाल भटनागर

१४ 'मध्य प्रदेश में शिकार'
।५ एस० बी० पुन्ताम्बेकर
६। ८ माधव सिंह
।२५ लक्ष्मीचन्द : रोशनाई की पुस्तक
१३ सन्त बहादुर सिंह
२२ बलवन्त दीवान कुंवर
३ रामा ताम्बे
।८ 'सुलभ वास्तुशास्त्र'
।० टेलर, हेनरी
।२३ ब्रजलाल
।१३ धर्मानन्द
।१८ यज्ञदत्त भाकर
।२४ 'व्रण-बंधन और पट्टियाँ'
।१५ 'पारिवारिक चिकित्सा'
।११ वङ्गसेन : वङ्गसेन
२। ३ आनन्द बिहारी लाल
२।१७ प्रेमवल्लभ जोशी
३। ६ ब्रजेश बहादुर
३।१८ वासुदेव विट्ठल भागवत
४।११ 'आकाश पर विजय'
४।१२ 'प्रारम्भिक जीव-विज्ञान'
७। ६ चन्द्रीप्रसाद
८।१३ बा० रा० मोडक
१। ४ धरमदास
१।१६ 'पवित्रा एकादशीनूं धोल'
२।२६ नीति-निधान
३।२७ तुलसी साहिब

३३३। १ तुलसी साहिब
३३४।२२ बाल जी बेचर
३३५। २ काशीनाथ खत्री
३३५।२५ श्रीरामशरण
३३५।२६ ब्रजभूषणदास
३३७। ८ 'योगत्रयी'
३३६।१५ 'अनन्तमती'
३४०। ३ वेद व्यास सं० : रुद्री
३४२। ६ पन्नालाल बाकलीवाल सं० : वृहद् जिन वाणी-संग्रह
३४४। ८ जयगोपाल घोष
३४६।१२ हरिराम जी : हरिसागर
३४६।१३ महादेव प्रसाद त्रिपाठी
३४७।१७ लक्ष्मीकान्त तिवारी सं० : पूर्ण-संग्रह
३४८। १ श्यामसुंदर दास सं० : रत्नाकर
३४६। ३ ब्रजरत्नदास
३५०। ६ '—हास्यरस'
३५०।१६ 'गुप्तजी के काव्य की कारुण्य-धारा'
३५३।२३ त्रिभुवनदास रणछोड़ सं०
३५४। ४ बलदेव प्रसाद बाबू सं०
३५४।१२ लक्ष्मीचन्द दत्त
३५४।२७ रामस्वरूप शर्मा सं०
३५५।१३ '—पद तथा धोल'
३५६।१४ भागीरथी बाई

३५६। ५ 'हिंदी नाट्य-विमर्श'	३८६।२५ '३१ द्वि०
३५६। ७ 'गद्य-काव्य-तरङ्गिणी'	३९७।२० कात्यायनी दत्त त्रि
३६०।१४ ब्रजरत्नदास	३९९।११ लेखक, आगरा,
३६३। ४ द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी : व्याख्यान-रत्नमाला	३९९।२० कानपुर '०२
३६४।१६ 'कविता-कौमुदी', भाग ३, '२३	४०३।१६ 'चन्द्रावली'
	४०४।१२ '१३
३६५।२७ 'शतपथ में एक पथ'	४०४।२६ 'सरदार बा'
३६५।१७ 'यूरोप की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ'	४०५।१९ 'प्यास'
	४०६।२४ '१६
३६६।१७ 'संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास'	४१३। ६ '१२
	४२१।१० गिरवर स्वरूप
३६६।२० देवराज : भारतीय दर्शन-शास्त्र	४२५।२८ '६४
	४२६।१४ '१० !
३६६।२७ 'उर्दू के कवि और उनका काव्य'	४२७। १ 'जाली काका'
	४२७।१७ '१० !
३६७।१७ 'मानवी आयुष्य'	४२८।१५ '१२
३६७।१९ 'सूर्यभेदन का व्यायाम'	४२८।१६ '४०
३६७।२४ दीनेशचन्द्र सेन	४२९। ४ '३७ !
३७२। ४ '३८	४३१।२४ उपन्यास बहार आ...
३७२।१८ '४० !	
३७४। ५ '३९ !	४३९।१७ चन्द्रमौलि सुकु... भाषा-व्या...
३७६।१३ '२१	
३७७।१५ 'प्रेमाम्बु-वारिधि'	४३१। २ '४० !
३८०। ५ 'देश-प्रेम की कहानियाँ'	४४२।२६ (६)
३८१। ७ 'इतिहास की कहानियाँ' (८ बा०)	४४३।२१ 'विजय-मुक्तावली'
	४४५।२३ हिंदी साहित्य
३८२।१४ 'खोटा सिक्का' (३)	